

# الذی المنصوب

(لِحَاجَتِهِ)

## سُنَنُ أَبِي دَاوُدَ

(أَفَادَات)

حَضَرَتْهُ قَوْلَانَا الْحَقِيقَا قُلْ صَدِيق

صَدْرُهُ مَدْرُوسٌ مَقَالُهُ الْفَلَاوِمُ نَجْدَانُ نَبْرُورِ عَمْدِ

(مَجْمُوعَات)

- ① دَکْتَابِیہ اَقَالِیہ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ
- ② دَکْتَابِیہ اَلْجَوَابِیہ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ
- ③ دَکْتَابِیہ اَلْجَوَابِیہ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ
- ④ دَکْتَابِیہ اَلْجَوَابِیہ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ
- ⑤ دَکْتَابِیہ اَلْجَوَابِیہ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ
- ⑥ دَکْتَابِیہ اَلْجَوَابِیہ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ
- ⑦ دَکْتَابِیہ اَلْجَوَابِیہ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ
- ⑧ دَکْتَابِیہ اَلْجَوَابِیہ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ مَکْتُوبِ





www

Maktaba Tul Ishaat .com



تمام فنون کے کتب کے پی-ڈی-ایف ہمارے ویب سائٹ سے اور پلے سٹور سے فری ڈاؤن لوڈ کریں۔ ہم روزانہ کی بنیاد پر اس میں مزید کتب شامل کر رہے ہیں اس لیے آپ ہفتے میں ایک بار ضرور ہمارے پلے سٹور اور ویب سائٹ کو چیک کیا کریں۔

## ابھی مطلوبہ پی-ڈی-ایف مفت ڈاؤن لوڈ کریں

|            |       |              |
|------------|-------|--------------|
| تفاسیر     | خطبات | منطق         |
| احیث       | سیرت  | معانی        |
| فقہ        | تاریخ | تصوف         |
| سوانح حیات | صرف   | تقابل ادیان  |
| درس نظامی  | نحو   | تجوید        |
| لغت        | فلسفہ | نعت          |
| فتاوی      | حکمت  | تراجم        |
| اصلاحی     | بلاغت | تبلیغ و دعوت |
| تمام فنون  |       |              |



# الدر المنضود

فی حل

## سنن أبي داود

افادات:- حضرت مولانا محمد عاقل صیب

صدر مدرس مظاهر العلوم سہارنپور (ہند)

مترجمین:

[ رفقاء ] دار التصنیف والتحقیق

زیر نگرانی

مولانا شاہ فیصل فاضل وفاق المدارس

پیشگو.....اووم جلد

### خصوصیات

- ① د کتاب پہ اول کنبی د اصول حدیث مفیدہ مقدمہ
- ② د بذل المجهود شرح أبي داود عربی شرحی خلاصہ اونچور
- ③ د متن تولو احادیث تہ اعراب ورکول
- ④ د هر کتاب پہ اول کنبی هغی سره متعلقه ضروری مباحث
- ⑤ د هر حدیث تخریج د مصدر، کتاب او رقم پہ حولي سره
- ⑥ د مشکلو لغاتو حل
- ⑦ په فقهی مباحثو کنبی د مذاہبو بیان
- ⑧ د فریق مخالف دلائل
- ⑨ د فریق مخالف د دلائلو څخه جوابونه
- ⑩ د مذهب حنفی دلائل او وجوه ترجیح

### خوړونکي

فیصل کتب خانہ محلہ جنگی پیشور

## د چټاپ حقوق صرف ناشر سره محفوظ دی

د کتاب نوم: **الدر المنضود فی حل سنن أبی داؤد**  
 مؤلف: **حضرت مولانا محمد عاقل صاحب دامت برکاتهم**  
 زیر نگرانی: **مولانا شاه فیصل فاضل وفاق المدارس**  
 خپرونکی: **فیصل کتب خانہ محلہ جنگی پېښور**

### د ملایو ډیو ټی

- |                                                           |   |
|-----------------------------------------------------------|---|
| مکتبه فخر الدین رازی هرات [نمائنده فیصل کتب خانہ در هرات] | ➡ |
| جدید اسلامی کتب خانہ خوست                                 | ➡ |
| المصباح کتب خانہ کابل                                     | ➡ |
| روغانیوال کتب خانہ جلال آباد                              | ➡ |
| رحیمی کتب خانہ خوست                                       | ➡ |
| حرم کتب خانہ کابل                                         | ➡ |
| فلاح کتب خانہ جلال آباد                                   | ➡ |
| مومے مبارک کتب خانہ غزنی                                  | ➡ |
| مکتبه خواجه عبدالله انصاری غزنی                           | ➡ |
| واحدی کتب خانہ خوست                                       | ➡ |
| مکتبه رحمانیه قندهار                                      | ➡ |
| دعوت کتب خانہ جلال آباد                                   | ➡ |
| تقوی کتب خانہ جلال آباد                                   | ➡ |
| نعمت کتب خانہ کابل                                        | ➡ |
| شریف الله کتب خانہ کابل                                   | ➡ |
| حقانیه کتب خانہ گردیز                                     | ➡ |
| مسلم کتب خانہ جلال آباد                                   | ➡ |
| مکتبه نعمانیه غزنی                                        | ➡ |
| گودر کتب خانہ جلال آباد                                   | ➡ |
| مسلم کتب خانہ خوست                                        | ➡ |
| حاجی سردار کتب خانہ کابل                                  | ➡ |
| مکتبه رشیدیہ کابل                                         | ➡ |

### خپرونکی

## فیصل کتب خانہ

مدینه ټاور محلہ جنگی پېښور قصه خوانی پېښور  
 موبائیل ۰۳۲۱۹۰۹۱۸۳۵

## فهرست ابواب و مضامین

| شمار    | مضمون                                                                                   | صفحه    |
|---------|-----------------------------------------------------------------------------------------|---------|
| ۲۴..... | کِتَابُ الْإِيمَانِ وَالتَّوْبَةِ.....                                                  | ۲۴..... |
| ۲۴..... | مباحث اربعه علمیه مفیده.....                                                            | ۲۴..... |
| ۲۴..... | بحث اول :.....                                                                          | ۲۴..... |
| ۲۴..... | بحث ثانی :.....                                                                         | ۲۴..... |
| ۲۴..... | بحث ثالث :.....                                                                         | ۲۴..... |
| ۲۵..... | بحث رابع :.....                                                                         | ۲۵..... |
| ۲۵..... | باب التَّغْلِيظِ فِي الْإِيمَانِ الْفَاجِرَةِ.....                                      | ۲۵..... |
| ۲۵..... | په یمین غموس کښي د کفارې وجوب شته که نه؟.....                                           | ۲۵..... |
| ۲۶..... | باب فِيمَنْ حَلَفَ يَمِينًا لِيَقْتَطَعَ بِهَا مَالًا لِأَحَدٍ.....                     | ۲۶..... |
| ۲۸..... | دلته مصنف درې روایتونه ذکر کړي دي :.....                                                | ۲۸..... |
| ۲۸..... | په روایات ثلاثه کښي تطبیق :.....                                                        | ۲۸..... |
| ۳۰..... | باب مَا جَاءَ فِي تَعْظِيمِ الْيَمِينِ عِنْدَ مَنْبَرِ النَّبِيِّ.....                  | ۳۰..... |
| ۳۰..... | تغلیظ الیمین بالزمان والمکان :.....                                                     | ۳۰..... |
| ۳۰..... | باب الْخَلْفِ بِالْأَنْدَادِ.....                                                       | ۳۰..... |
| ۳۱..... | باب فِي كَرَاهِيَةِ الْخَلْفِ بِالْأَبَاءِ.....                                         | ۳۱..... |
| ۳۲..... | شرح الحديث :.....                                                                       | ۳۲..... |
| ۳۳..... | باب فِي كَرَاهِيَةِ الْخَلْفِ بِالْأَمَانَةِ.....                                       | ۳۳..... |
| ۳۴..... | باب الْمَعَارِضِ فِي الْيَمِينِ.....                                                    | ۳۴..... |
| ۳۵..... | باب مَا جَاءَ فِي الْخَلْفِ بِالْبَرَاءَةِ وَبِمِلَّةٍ غَيْرِ الْإِسْلَامِ.....         | ۳۵..... |
| ۳۵..... | د ترجمه الباب تشریح او ذکر د اختلاف النسخ :.....                                        | ۳۵..... |
| ۳۷..... | باب الرَّجُلِ يَخْلِفُ أَنْ لَا يَتَأَدَّمَ.....                                        | ۳۷..... |
| ۳۷..... | الكلام على الحديث من حيث الفقه :.....                                                   | ۳۷..... |
| ۳۸..... | باب الْإِسْتِثْنَاءِ فِي الْيَمِينِ.....                                                | ۳۸..... |
| ۳۸..... | باب مَا جَاءَ فِي يَمِينِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا كَانَتْ..... | ۳۸..... |
| ۴۰..... | د سند تحقیق :.....                                                                      | ۴۰..... |
| ۴۱..... | باب الرَّجُلِ يُكْفَرُ قَبْلَ أَنْ يَخْنَثَ.....                                        | ۴۱..... |
| ۴۱..... | باب: په بیان دهغه کس کښي چه کفار وړکړي مخکښي د حانث کیدونه.....                         | ۴۱..... |
| ۴۱..... | بابُ الْحِنْثِ إِذَا كَانَ خَيْرًا.....                                                 | ۴۱..... |
| ۴۲..... | تقديم الكفارة على الحنث :.....                                                          | ۴۲..... |



| شمار | مضمون                                                                                         | صفحه |
|------|-----------------------------------------------------------------------------------------------|------|
| ٤٢   | باب فِي الْقَسَمِ هَلْ يَكُونُ يَمِينًا                                                       | ٤٢   |
| ٤٢   | تفصيل مذاهب الائمة في مسئلة الباب :                                                           | ٤٢   |
| ٤٤   | مضمون حديث :                                                                                  | ٤٤   |
| ٤٤   | حديث الباب استدل به الفريقان :                                                                | ٤٤   |
| ٤٥   | باب فِيمَنْ يَخْلِفُ كَاذِبًا مُتَعَمِّدًا                                                    | ٤٥   |
| ٤٥   | استفيد بالحديث امران :                                                                        | ٤٥   |
| ٤٦   | باب كَمِ الصَّاعُ فِي الْكَفَّارَةِ                                                           | ٤٦   |
| ٤٦   | په كفاره يمين كښي تفصيل سره د مذاهب ائمة :                                                    | ٤٦   |
| ٤٧   | د مد هشام مقدار او دهغي تحقيق :                                                               | ٤٧   |
| ٤٨   | باب فِي الرَّقَبَةِ الْمُؤْمِنَةِ                                                             | ٤٨   |
| ٥٠   | باب النَّهْيِ عَنِ التَّنْذِيرِ                                                               | ٥٠   |
| ٥٠   | د نذر په حكم كښي مذاهب ائمة :                                                                 | ٥٠   |
| ٥١   | شرح الحديث :                                                                                  | ٥١   |
| ٥٢   | باب مَا جَاءَ فِي التَّنْذِيرِ فِي الْمَعْصِيَةِ                                              | ٥٢   |
| ٥٢   | نذر معصيت منعقد كيري يانه، مذاهب اربعة :                                                      | ٥٢   |
| ٥٤   | باب مَنْ رَأَى عَلَيْهِ كَفَّارَةً إِذَا كَانَ فِي مَعْصِيَةٍ                                 | ٥٤   |
| ٥٥   | د قال ابوداؤد تشریح او تنقيح :                                                                | ٥٥   |
| ٥٦   | تشریح الحديث :                                                                                | ٥٦   |
| ٥٨   | د عائشي <small>رضي الله عنها</small> په حديث باندي د محدثينو نقد او د احنافو د طرف نه دهغي رد | ٥٨   |
| ٥٩   | د روايات الباب تجزيه                                                                          | ٥٩   |
| ٦٠   | الكلام على الحديث من حيث الفقه :                                                              | ٦٠   |
| ٦٣   | باب مَنْ نَذَرَ أَنْ يُصَلِّيَ فِي بَيْتِ الْمَقْدِسِ                                         | ٦٣   |
| ٦٥   | شرح السند :                                                                                   | ٦٥   |
| ٦٥   | باب فِي قَضَاءِ التَّنْذِيرِ عَنِ الْمَيِّتِ                                                  | ٦٥   |
| ٦٥   | په مسئلة الباب كښي مذاهب د ائمة :                                                             | ٦٥   |
| ٦٧   | باب مَا جَاءَ فِيمَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ صِيَامٌ عَنْهُ وَلِيُّهُ                               | ٦٧   |
| ٦٨   | باب مَا يُؤْمَرُ بِهِ مِنَ الْوَفَاءِ بِالتَّنْذِيرِ                                          | ٦٨   |
| ٦٨   | شرح الحديث :                                                                                  | ٦٨   |
| ٧٠   | باب فِي التَّنْذِيرِ فِيمَا لَا يَمْلِكُ                                                      | ٧٠   |
| ٧٠   | ترجمة الباب والا مسئلة كښي مذاهب ائمة :                                                       | ٧٠   |

| شمار | مضمون                                                         | صفحه |
|------|---------------------------------------------------------------|------|
| ۷۳   | د ناقة غضباء يوه قصه :                                        | ۷۳   |
| ۷۴   | د استيلاء الكافر على مال المسلم متعلق يو سوال او د هغې جواب   | ۷۴   |
| ۷۵   | باب فِيمَنْ نَذَرَ أَنْ يَتَصَدَّقَ بِمَالِهِ                 | ۷۵   |
| ۷۵   | په تصدق بجمع المال كښې مذاهب ائمة :                           | ۷۵   |
| ۷۶   | شرح الحديث من حيث الفقه :                                     | ۷۶   |
| ۷۸   | باب مَنْ نَذَرَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ ثُمَّ أَذَرَ الْإِسْلَامَ | ۷۸   |
| ۷۸   | باب مَنْ نَذَرَ نَذْرًا لَمْ يُسَمِّهِ                        | ۷۸   |
| ۷۹   | د حديث الباب محمل او په هغې كښې اختلاف د علماء كرامو          | ۷۹   |
| ۷۹   | د نذر لجاج تعريف او د هغې په حكم كښې اختلاف ائمة :            | ۷۹   |
| ۸۰   | خلاصة المذاهب :                                               | ۸۰   |
| ۸۱   | باب لَعُوَ الْيَمِينِ                                         | ۸۱   |
| ۸۱   | د يمين اقسام ثلاثه او د يمين لغو په تعريف كښې اختلاف :        | ۸۱   |
| ۸۲   | د ابراهيم صائغ يو خاص خصلت :                                  | ۸۲   |
| ۸۲   | باب فِيمَنْ حَلَفَ عَلَى الطَّعَامِ لَا يَأْكُلُهُ            | ۸۲   |
| ۸۳   | د ضيفان ابى بكر صديق <small>رضي الله عنه</small> قصه :        | ۸۳   |
| ۸۵   | باب الْيَمِينِ فِي قَطِيعَةِ الرَّحِمِ                        | ۸۵   |
| ۸۵   | شرح الحديث وفيه بيان نذر اللجاج :                             | ۸۵   |
| ۸۷   | باب الْإِسْتِثْنَاءِ فِي الْيَمِينِ بَعْدَ السُّكُوتِ         | ۸۷   |
| ۸۷   | په استثناء كښې د اتصال قيد، او ذكر د مذاهبو :                 | ۸۷   |
| ۸۷   | (دامام اعظم <small>رحمه الله</small> د ذهانت دلچسپه واقعه)    | ۸۷   |
| ۸۸   | باب مَنْ نَذَرَ نَذْرًا لَا يُطِيقُهُ                         | ۸۸   |
| ۸۹   | كِتَابُ الْبُيُوعِ                                            | ۸۹   |
| ۸۹   | د ماقبل سره مناسبت :                                          | ۸۹   |
| ۹۰   | (د بيع اصطلاحى تعريف)                                         | ۹۰   |
| ۹۰   | (په بيع او شراء كښې فرق)                                      | ۹۰   |
| ۹۰   | د بيع انواع :                                                 | ۹۰   |
| ۹۱   | په دين كښې د معاملاتو د برابرولو اهميت :                      | ۹۱   |
| ۹۱   | باب فِي التَّجَارَةِ يُخَالِطُهَا الْخَلِيفُ وَاللَّغْوُ      | ۹۱   |
| ۹۲   | باب فِي اسْتِخْرَاجِ الْمَعَادِنِ                             | ۹۲   |
| ۹۳   | شرح الحديث :                                                  | ۹۳   |

| شمار | مضمون                                                                                              | صفحه |
|------|----------------------------------------------------------------------------------------------------|------|
| ٩٣   | باب في اجتناب الشُّبُهَاتِ                                                                         | ٩٣   |
| ٩٤   | شرح الحديث :                                                                                       | ٩٤   |
| ٩٥   | د حديث الباب په ظاهر كښي معارض يو بل روايت :                                                       | ٩٥   |
| ٩٦   | شرح الحديث :                                                                                       | ٩٦   |
| ٩٧   | مضمون حديث :                                                                                       | ٩٧   |
| ٩٨   | باب في آكل الرِّبَا وَمُوكِلِهِ                                                                    | ٩٨   |
| ٩٩   | باب في وَضْع الرِّبَا                                                                              | ٩٩   |
| ٩٩   | باب في كَرَاهِيَّةِ اليمِينِ فِي الْبَيْعِ                                                         | ٩٩   |
| ١٠٠  | باب في الرَّجْحَانِ فِي الْوَزْنِ وَالْوَزْنِ بِالْأَجْرِ                                          | ١٠٠  |
| ١٠٠  | مضمون حديث :                                                                                       | ١٠٠  |
| ١٠١  | آيا د رسول الله ﷺ د پاره لبس سراويل ثابت دي؟                                                       | ١٠١  |
| ١٠١  | شرح السند :                                                                                        | ١٠١  |
| ١٠٣  | باب في قَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ " الْمِكْيَالُ مِكْيَالُ الْمَدِينَةِ " | ١٠٣  |
| ١٠٤  | باب في التَّشْدِيدِ فِي الدِّينِ                                                                   | ١٠٤  |
| ١٠٥  | شرح الحديث :                                                                                       | ١٠٥  |
| ١٠٧  | صحة الكفالة عن المية كښي مذاهب ائمة :                                                              | ١٠٧  |
| ١٠٨  | باب في الْمَطْلِ                                                                                   | ١٠٨  |
| ١٠٩  | باب في حُسْنِ الْقَضَاءِ                                                                           | ١٠٩  |
| ١١٠  | باب في الصَّرْفِ                                                                                   | ١١٠  |
| ١١٠  | د بيع الصرف تعريف او حكم :                                                                         | ١١٠  |
| ١١١  | د ربا الفضل په عدم جواز كښي د بعض صحابه كرامو رضی اللہ عنہم اختلاف :                               | ١١١  |
| ١١١  | د ربا تعريف او د هغي دوه قسمونه :                                                                  | ١١١  |
| ١١٢  | شرح الحديث على اكمل وجه انشاء الله تعالى :                                                         | ١١٢  |
| ١١٣  | په اشياء سته مذكوره كښي علة ربا د ائمة اربعة په نزد :                                              | ١١٣  |
| ١١٣  | د فقهاء كرامو په امت بادي احسان                                                                    | ١١٣  |
| ١١٤  | غنم او اوربشي په اعتبار د جنس متحد دي يا مختلف :                                                   | ١١٤  |
| ١١٥  | باب في حِلْيَةِ السَّيْفِ تَبَاغٌ بِالذَّرَاهِمِ                                                   | ١١٥  |
| ١١٦  | د مال ربوي وغير ربوي مخلوط د بيع حكم :                                                             | ١١٦  |
| ١١٦  | مسئلة ثابتة بالحديث كښي مذاهب ائمة :                                                               | ١١٦  |
| ١١٧  | مسئلة مد عجوه او د هغي شرح او مثال                                                                 | ١١٧  |



| شمار | مضمون                                                     | صفحه |
|------|-----------------------------------------------------------|------|
| ۱۱۸  | باب فِي اقْتِضَاءِ الذَّهَبِ مِنَ الْوَرِقِ               | ۱۱۸  |
| ۱۱۸  | د مسئله مترجم بها شرح او بیان مذاهب:                      | ۱۱۸  |
| ۱۴۰  | باب فِي الْحَيَوَانِ بِالْحَيَوَانِ نَسِئَةً              | ۱۴۰  |
| ۱۴۰  | مسئله الباب کښې مذاهب ائمه:                               | ۱۴۰  |
| ۱۴۱  | باب فِي الرُّخْصَةِ فِي ذَلِكَ                            | ۱۴۱  |
| ۱۴۱  | د حديث الباب د احنافو او حنابله د طرف نه جواب:            | ۱۴۱  |
| ۱۴۲  | باب فِي ذَلِكَ إِذَا كَانَ يَدًا بِيَدٍ                   | ۱۴۲  |
| ۱۴۲  | باب فِي التَّمْرِ بِالتَّمْرِ                             | ۱۴۲  |
| ۱۴۳  | شرح الحديث من حيث الفقه:                                  | ۱۴۳  |
| ۱۴۳  | بيع الرطب بالتمر کښې د امام صاحب اختلاف او دليل:          | ۱۴۳  |
| ۱۴۴  | باب فِي الْمَزَابِنَةِ                                    | ۱۴۴  |
| ۱۴۴  | د بيع مزابنه تعريف او وجه تسميه:                          | ۱۴۴  |
| ۱۴۵  | شرح الحديث:                                               | ۱۴۵  |
| ۱۴۵  | باب فِي بَيْعِ الْعَرَايَا                                | ۱۴۵  |
| ۱۴۶  | د عرايا حقيقت او مصداق کښې اختلاف ائمه:                   | ۱۴۶  |
| ۱۴۸  | باب فِي مِقْدَارِ الْعَرِيَّةِ                            | ۱۴۸  |
| ۱۴۸  | په مسئله الباب کښې تشريح او په هغې کښې اختلاف ائمه:       | ۱۴۸  |
| ۱۴۹  | باب تَفْسِيرِ الْعَرَايَا                                 | ۱۴۹  |
| ۱۳۰  | باب فِي بَيْعِ الثَّمَارِ قَبْلَ أَنْ يَبْدُوَ صَلَاحُهَا | ۱۳۰  |
| ۱۳۰  | مسئله مترجم بها صور مختلفه مع بيان الحكم:                 | ۱۳۰  |
| ۱۳۳  | شرح كلام الراوى:                                          | ۱۳۳  |
| ۱۳۳  | باب فِي بَيْعِ السَّنِينَ                                 | ۱۳۳  |
| ۱۳۵  | باب فِي بَيْعِ الْغَرَرِ                                  | ۱۳۵  |
| ۱۳۶  | شرح الحديث:                                               | ۱۳۶  |
| ۱۳۷  | شرح الحديث وفيه اربعة اوجه:                               | ۱۳۷  |
| ۱۳۸  | باب فِي بَيْعِ الْمُضْطَرِّ                               | ۱۳۸  |
| ۱۳۸  | د بيع المضطر مصداق او حكم:                                | ۱۳۸  |
| ۱۳۹  | باب فِي الشَّرِكَةِ                                       | ۱۳۹  |
| ۱۳۹  | اقسام شركت:                                               | ۱۳۹  |
| ۱۴۰  | باب فِي الْمُضَارِبِ يُخَالِفُ                            | ۱۴۰  |

| شمار | مضمون                                                                                            | صفحه |
|------|--------------------------------------------------------------------------------------------------|------|
| ۱۴۱  | په مسئله مترجم بها کښي مذاهب ائمه :                                                              | ۱۴۱  |
| ۱۴۱  | بيع فضولى کښي مذاهب ائمه :                                                                       | ۱۴۱  |
| ۱۴۱  | حديث الباب د احنافو او مالکيانو دليل دې :                                                        | ۱۴۱  |
| ۱۴۱  | د شوافعو د طرف نه جواب :                                                                         | ۱۴۱  |
| ۱۴۳  | باب فِي الرَّجُلِ يَتَجَرُّ فِي مَالِ الرَّجُلِ بِغَيْرِ إِذْنِهِ                                | ۱۴۳  |
| ۱۴۴  | د حديث الغاريوه حصه :                                                                            | ۱۴۴  |
| ۱۴۵  | باب فِي الشَّرِكَةِ عَلَى غَيْرِ رَأْسِ مَالٍ                                                    | ۱۴۵  |
| ۱۴۵  | د ترجمه الباب تشريح او مذاهب ائمه :                                                              | ۱۴۵  |
| ۱۴۶  | په حديث الباب باندې يو اشکال سره د جواب :                                                        | ۱۴۶  |
| ۱۴۶  | باب فِي الْمَزَارَعَةِ                                                                           | ۱۴۶  |
| ۱۴۶  | د مزارعة ذکر په کتاب البيوع کښي :                                                                | ۱۴۶  |
| ۱۴۶  | د مزارعت اقسام سره د بيان د مذاهب ائمه :                                                         | ۱۴۶  |
| ۱۴۷  | د مساقات حکم د ائمه اربعه په نزد :                                                               | ۱۴۷  |
| ۱۴۸  | د مزارعت د جواز حديث متفق عليه دې :                                                              | ۱۴۸  |
| ۱۴۸  | د مزارعت د عدم جواز حديث او په هغې کښي اضطراب سندا او متنا :                                     | ۱۴۸  |
| ۱۴۸  | د رافع بن خديج <small>رضي الله عنه</small> په حديث کښي متنا اضطراب :                             | ۱۴۸  |
| ۱۵۰  | د رافع بن خديج حديث هم په صحيحينو کښي موجود دې :                                                 | ۱۵۰  |
| ۱۵۲  | باب فِي التَّشْدِيدِ فِي ذَلِكَ                                                                  | ۱۵۲  |
| ۱۵۴  | د امام مالک <small>رحمه الله</small> د مسلک نائيد :                                              | ۱۵۴  |
| ۱۵۷  | باب فِي زَرْعِ الْأَرْضِ بِغَيْرِ إِذْنِ صَاحِبِهَا                                              | ۱۵۷  |
| ۱۵۸  | باب فِي الْمُخَابَرَةِ                                                                           | ۱۵۸  |
| ۱۵۹  | باب فِي الْمُسَاقَاةِ                                                                            | ۱۵۹  |
| ۱۶۰  | د رسول الله <small>صلی الله علیه و آله</small> معامله د خيبر د يهودو سره د مزارعت وه که د خراج ؟ | ۱۶۰  |
| ۱۶۲  | باب فِي الْخَرْصِ                                                                                | ۱۶۲  |
| ۱۶۲  | په ونو کښي د ميوو د اندازې لکولو بيان                                                            | ۱۶۲  |
| ۱۶۳  | عدم جواز الخرص في المزارعة وكذا في المساقاة وجوازه في الزكوة عند الجمهور دون الحنفية.            | ۱۶۳  |
| ۱۶۴  | كِتَابُ الْإِجَارَةِ                                                                             | ۱۶۴  |
| ۱۶۴  | د اجاري بيان                                                                                     | ۱۶۴  |
| ۱۶۵  | باب فِي كَسْبِ الْمُعَلِّمِ                                                                      | ۱۶۵  |
| ۱۶۵  | استئجار على الطاعات کښي اختلاف ائمه :                                                            | ۱۶۵  |



| شمار | مضمون                                                | صفحه |
|------|------------------------------------------------------|------|
| ۱۶۶  | توجيه الحديث عن الشافعية :                           | ۱۶۶  |
| ۱۶۷  | باب في كَسْبِ الْأَطِبَّاءِ .....                    | ۱۶۷  |
| ۱۶۸  | مضمون حديث د دمولو يوه قصه :                         | ۱۶۸  |
| ۱۶۹  | دويمه قصه :                                          | ۱۶۹  |
| ۱۶۹  | استنباط المصنف بحديث الباب :                         | ۱۶۹  |
| ۱۷۰  | باب في كَسْبِ الْحُجَّامِ .....                      | ۱۷۰  |
| ۱۷۰  | ايضاح المسئلة :                                      | ۱۷۰  |
| ۱۷۰  | شرح الحديث :                                         | ۱۷۰  |
| ۱۷۲  | باب في كَسْبِ الْإِمَاءِ .....                       | ۱۷۲  |
| ۱۷۳  | باب في عَسْبِ الْفَخْلِ .....                        | ۱۷۳  |
| ۱۷۴  | شرح الحديث :                                         | ۱۷۴  |
| ۱۷۴  | باب في الصَّائِغِ .....                              | ۱۷۴  |
| ۱۷۴  | (د صائغ لغوی تحقیق) .....                            | ۱۷۴  |
| ۱۷۵  | شرح الحديث :                                         | ۱۷۵  |
| ۱۷۶  | باب في الْعَبْدِ يُبَاعُ وَلَهُ مَالٌ .....          | ۱۷۶  |
| ۱۷۶  | شرح الحديث مع استنباط المسئلة :                      | ۱۷۶  |
| ۱۷۸  | باب في التَّلْقِي .....                              | ۱۷۸  |
| ۱۷۸  | د مسئلة الباب تشريح مع اختلاف ائمة :                 | ۱۷۸  |
| ۱۷۹  | د بيع على بيع اخيه، وضاحت :                          | ۱۷۹  |
| ۱۸۰  | باب في التَّهْيِ عَنِ النَّجْشِ .....                | ۱۸۰  |
| ۱۸۰  | د مسئلة الباب تشريح عند الفقهاء :                    | ۱۸۰  |
| ۱۸۰  | باب في التَّهْيِ أَنْ يَبِيعَ حَاضِرٌ لِبَادٍ .....  | ۱۸۰  |
| ۱۸۱  | د مسئلة الباب تشريح :                                | ۱۸۱  |
| ۱۸۱  | په مسئلة الباب كښې مذاهب ائمة :                      | ۱۸۱  |
| ۱۸۱  | (د امام بخاری <small>رحمته الله</small> مسلك) .....  | ۱۸۱  |
| ۱۸۳  | باب مَنِ اشْتَرَى مُصْرَاةً فَكَرِهَهَا .....        | ۱۸۳  |
| ۱۸۳  | د حديث المصرة شرح او په دې باندي كلام من حيث الفقه : | ۱۸۳  |
| ۱۸۴  | مذاهب ائمة :                                         | ۱۸۴  |
| ۱۸۴  | حديث المصرة د اصولو مخالف دې د اتو وجونه :           | ۱۸۴  |
| ۱۸۶  | باب في التَّهْيِ عَنِ الْحُكْرَةِ .....              | ۱۸۶  |



| شمار | مضمون                                            | صفحه |
|------|--------------------------------------------------|------|
| ۱۸۶  | د احتکار حقیقت او تعریف :                        | ۱۸۶  |
| ۱۸۷  | احتکار په کومو کومو څیزونو کېښې منع دي :         | ۱۸۷  |
| ۱۸۹  | باب في كَسْرِ الدَّرَاهِمِ                       | ۱۸۹  |
| ۱۸۹  | شرح الحديث :                                     | ۱۸۹  |
| ۱۸۹  | باب في التَّسْعِيرِ                              | ۱۸۹  |
| ۱۹۰  | شرح الحديث او مذاهب الائمة په مسئله الباب کېښې : | ۱۹۰  |
| ۱۹۰  | باب في التَّهْيِ عَنِ الْغَشِّ                   | ۱۹۰  |
| ۱۹۱  | باب في خِيَارِ الْمُتَبَايَعِينَ                 | ۱۹۱  |
| ۱۹۲  | د خيار مجلس په ثبوت کېښې د علماء کرامو اختلاف :  | ۱۹۲  |
| ۱۹۴  | د حديث نه د مسلک احناف تائيد :                   | ۱۹۴  |
| ۱۹۵  | مضمون حديث :                                     | ۱۹۵  |
| ۱۹۷  | باب في فَضْلِ الْإِقَالَةِ                       | ۱۹۷  |
| ۱۹۷  | باب في مَنْ بَاعَ بَيْعَتَيْنِ فِي بَيْعَةٍ      | ۱۹۷  |
| ۱۹۸  | حديث الباب او د دي مقام كامله تشریح :            | ۱۹۸  |
| ۲۰۰  | باب في التَّهْيِ عَنِ الْعَيْنَةِ                | ۲۰۰  |
| ۲۰۰  | د بيع عینه تعريف او حکم :                        | ۲۰۰  |
| ۲۰۱  | د مسلمانانو دپاره په ترک جهاد باندې سخت وعيد :   | ۲۰۱  |
| ۲۰۱  | باب في السَّلَفِ                                 | ۲۰۱  |
| ۲۰۱  | د صحت سلم دپاره شرائط :                          | ۲۰۱  |
| ۲۰۳  | شرح السند :                                      | ۲۰۳  |
| ۲۰۴  | د مسئله سلم في المنقطع تفصيل :                   | ۲۰۴  |
| ۲۰۵  | باب في السَّلَامِ فِي ثَمَرَةِ بَيْعَتَيْنِ      | ۲۰۵  |
| ۲۰۵  | باب السَّلَفِ لَا يُحَوَّلُ                      | ۲۰۵  |
| ۲۰۶  | شرح الحديث مع بيان المذاهب :                     | ۲۰۶  |
| ۲۰۶  | باب في وَضْعِ الْجَائِحَةِ                       | ۲۰۶  |
| ۲۰۶  | مسئله اختلافيه :                                 | ۲۰۶  |
| ۲۰۷  | باب في تَفْسِيرِ الْجَائِحَةِ                    | ۲۰۷  |
| ۲۰۸  | باب في مَنْعِ الْمَاءِ                           | ۲۰۸  |
| ۲۰۹  | شرح الحديث :                                     | ۲۰۹  |
| ۲۱۱  | باب في بَيْعِ فَضْلِ الْمَاءِ                    | ۲۱۱  |

| شمار | مضمون                                                                   | صفحه |
|------|-------------------------------------------------------------------------|------|
| ۲۱۱  | باب فِي ثَمَنِ السَّنَوْرِ                                              | ۲۱۱  |
| ۲۱۲  | باب فِي أَثْمَانِ الْكِلَابِ                                            | ۲۱۲  |
| ۲۱۲  | مذاهب ائمة :                                                            | ۲۱۲  |
| ۲۱۴  | باب فِي ثَمَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْتَةِ                                  | ۲۱۴  |
| ۲۱۴  | شرح الحديث من حيث الفقه :                                               | ۲۱۴  |
| ۲۱۵  | شرح الحديث :                                                            | ۲۱۵  |
| ۲۱۸  | شرح الحديث :                                                            | ۲۱۸  |
| ۲۱۸  | په ظاهر د حديث باندي يو اشكال او د هغې جواب :                           | ۲۱۸  |
| ۲۱۹  | باب فِي بَيْعِ الطَّعَامِ قَبْلَ أَنْ يُسْتَوْفَى                       | ۲۱۹  |
| ۲۲۰  | د بيع قبل القبض نه نهی په کومو څيزونه کښې ده :                          | ۲۲۰  |
| ۲۲۱  | د امام مالک او جمهورو يو بل اختلاف :                                    | ۲۲۱  |
| ۲۲۳  | باب فِي الرَّجُلِ يَقُولُ فِي الْبَيْعِ لَا خِلَابَةَ                   | ۲۲۳  |
| ۲۲۴  | شرح الحديث :                                                            | ۲۲۴  |
| ۲۲۴  | الكلام على الحديث من حيث الفقه وبيان مذاهب الاثمة في خيار المغبون       | ۲۲۴  |
| ۲۲۶  | باب فِي الْعُرْبَانِ                                                    | ۲۲۶  |
| ۲۲۶  | د بيع عربان تعريف او بيان مذاهب :                                       | ۲۲۶  |
| ۲۲۷  | باب فِي الرَّجُلِ يَبِيعُ مَا لَيْسَ عِنْدَهُ                           | ۲۲۷  |
| ۲۲۸  | شرح الحديث :                                                            | ۲۲۸  |
| ۲۲۹  | باب فِي شَرْطِ فِي بَيْعِ                                               | ۲۲۹  |
| ۲۲۹  | د جابر <small>رضي الله عنه</small> د شراء جمل والا حديث :               | ۲۲۹  |
| ۲۳۰  | باب فِي عَهْدَةِ الرَّقِيقِ                                             | ۲۳۰  |
| ۲۳۰  | د مسئله مترجم بها تشریح سره د بیان المذاهب او دليل :                    | ۲۳۰  |
| ۲۳۲  | باب فِي مَنْ اشْتَرَى عَبْدًا فَاسْتَعْمَلَهُ ثُمَّ وَجَدَ بِهِ عَيْبًا | ۲۳۲  |
| ۲۳۲  | د مسئله مترجم بها تشریح :                                               | ۲۳۲  |
| ۲۳۴  | الخارج بالضمان والا حديث د کومي درجي دي ؟                               | ۲۳۴  |
| ۲۳۵  | باب إِذَا اخْتَلَفَ الْبَيْعَانِ وَالْمَبِيعُ قَائِمٌ                   | ۲۳۵  |
| ۲۳۶  | شرح الحديث او بيان د مذاهب الاثمة :                                     | ۲۳۶  |
| ۲۳۶  | تفصيل المسئلة :                                                         | ۲۳۶  |
| ۲۳۷  | باب فِي الشُّفْعَةِ                                                     | ۲۳۷  |
| ۲۳۷  | د شفعه د لغوی او اصطلاحی معنی تحقیق او تنقیح :                          | ۲۳۷  |

| شمار | مضمون                                                                           | صفحه |
|------|---------------------------------------------------------------------------------|------|
| ۲۳۸  | اسباب الشفعة عند الائمة :                                                       | ۲۳۸  |
| ۲۳۹  | شفعه په کومو کومو څیزونو کښې وی :                                               | ۲۳۹  |
| ۲۳۹  | حديث کوم چه د جمهورو دليل دي د احنافو د طرف نه د هغې توجیه :                    | ۲۳۹  |
| ۲۴۰  | دليل الاحناف او په دي باندې اشکال او جواب :                                     | ۲۴۰  |
| ۲۴۲  | باب في الرَّجُلِ يُفْلِسُ فَيَجِدُ الرَّجُلَ مَتَاعَهُ بِعَيْنِهِ عِنْدَهُ..... | ۲۴۲  |
| ۲۴۲  | مسئله مترجم بها تشریح او په هغې کښې اختلاف علماء :                              | ۲۴۲  |
| ۲۴۵  | باب فَيَمَنُ أَحْيَا حَسِيرًا.....                                              | ۲۴۵  |
| ۲۴۵  | مسئله مترجم بها تشریح او اختلاف الائمة :                                        | ۲۴۵  |
| ۲۴۵  | شرح السند :                                                                     | ۲۴۵  |
| ۲۴۶  | باب في الرَّهْنِ.....                                                           | ۲۴۶  |
| ۲۴۶  | شرح الحديث من حيث الفقه وبيان المذاهب :                                         | ۲۴۶  |
| ۲۴۷  | (د جمهورو د طرفه جوابونه).....                                                  | ۲۴۷  |
| ۲۴۸  | باب في الرَّجُلِ يَأْكُلُ مِنْ مَالِ وَلَدِهِ.....                              | ۲۴۸  |
| ۲۴۸  | شرح الحديث :                                                                    | ۲۴۸  |
| ۲۴۹  | باب في الرَّجُلِ يَجِدُ عَيْنَ مَالِهِ عِنْدَ رَجُلٍ.....                       | ۲۴۹  |
| ۲۴۹  | د ترجمه الباب والا مسئلې تشریح :                                                | ۲۴۹  |
| ۲۵۰  | باب في الرَّجُلِ يَأْخُذُ حَقَّهُ مِنْ تَحْتِ يَدِهِ.....                       | ۲۵۰  |
| ۲۵۱  | د مسئله الظفر تشریح او مذاهب ائمه :                                             | ۲۵۱  |
| ۲۵۳  | باب في قَبُولِ الْهَدَايَا.....                                                 | ۲۵۳  |
| ۲۵۴  | باب الرَّجُوعِ فِي الْهَبَةِ.....                                               | ۲۵۴  |
| ۲۵۵  | د مذاهب ائمه تحقيق مع الدلائل :                                                 | ۲۵۵  |
| ۲۵۵  | د احنافو د طرف نه د حديث الباب توجیه :                                          | ۲۵۵  |
| ۲۵۶  | باب في الْهَدِيَّةِ لِقَضَاءِ الْحَاجَةِ.....                                   | ۲۵۶  |
| ۲۵۷  | باب في الرَّجُلِ يُفْضَلُ بَعْضُ وَلَدِهِ فِي التَّحْلِ.....                    | ۲۵۷  |
| ۲۵۷  | د ترجمه الباب والا مسئلې تفصيل او مذهب الائمة :                                 | ۲۵۷  |
| ۲۵۸  | شرح السند :                                                                     | ۲۵۸  |
| ۲۵۸  | مضمون حديث :                                                                    | ۲۵۸  |
| ۲۵۹  | په حديث الباب کښې اختلاف روايات :                                               | ۲۵۹  |
| ۲۶۱  | باب في عَطِيَّةِ الْمَرْأَةِ بِغَيْرِ إِذْنِ زَوْجِهَا.....                     | ۲۶۱  |
| ۲۶۱  | په مسئله الباب کښې اختلاف د علماء کرامو :                                       | ۲۶۱  |



| شمار | مضمون                                                                        | صفحه |
|------|------------------------------------------------------------------------------|------|
| ۲۶۲  | باب فِي الْعُمَرَى .....                                                     | ۲۶۲  |
| ۲۶۲  | د عمری تعریف او د هغې حکم شرعی : .....                                       | ۲۶۲  |
| ۲۶۴  | باب مَنْ قَالَ فِيهِ وَلَعَقِيهِ .....                                       | ۲۶۴  |
| ۲۶۵  | باب فِي الرُّقْبَى .....                                                     | ۲۶۵  |
| ۲۶۵  | د رقبی تعریف او په دې کښې د ائمه اختلاف : .....                              | ۲۶۵  |
| ۲۶۶  | باب فِي تَضْمِينِ الْعَارِيَةِ .....                                         | ۲۶۶  |
| ۲۶۶  | مسئله الباب کښې مذاهب ائمه : .....                                           | ۲۶۶  |
| ۲۶۷  | شرح الحديث : .....                                                           | ۲۶۷  |
| ۲۶۸  | شرح الحديث : .....                                                           | ۲۶۸  |
| ۲۶۸  | توجيه الحديث على مسلك الحنفية : .....                                        | ۲۶۸  |
| ۲۷۰  | باب فَيَمْنُ أَفْسَدَ شَيْئًا يَغْرُمُ مِثْلَهُ .....                        | ۲۷۰  |
| ۲۷۰  | د وجوب ضمان قاعده : .....                                                    | ۲۷۰  |
| ۲۷۱  | د رسول الله ﷺ د کمال حسن معاشرت حکایت : .....                                | ۲۷۱  |
| ۲۷۲  | باب الْمَوَاشِي تُفْسِدُ زَرْعَ قَوْمٍ .....                                 | ۲۷۲  |
| ۲۷۳  | مسئله الباب کښې مذاهب ائمه : .....                                           | ۲۷۳  |
| ۲۷۴  | كتاب الأقضية .....                                                           | ۲۷۴  |
| ۲۷۴  | باب فِي طَلَبِ الْقَضَاءِ .....                                              | ۲۷۴  |
| ۲۷۴  | شرح الحديث : .....                                                           | ۲۷۴  |
| ۲۷۵  | باب فِي الْقَاضِي يُخْطِئُ .....                                             | ۲۷۵  |
| ۲۷۷  | شرح الحديث : .....                                                           | ۲۷۷  |
| ۲۷۷  | باب فِي طَلَبِ الْقَضَاءِ وَالتَّسْرُّعُ إِلَيْهِ .....                      | ۲۷۷  |
| ۲۷۸  | باب فِي كَرَاهِيَةِ الرِّشْوَةِ .....                                        | ۲۷۸  |
| ۲۷۹  | باب فِي هَدَايَا الْعُمَّالِ .....                                           | ۲۷۹  |
| ۲۷۹  | مضمون حديث : .....                                                           | ۲۷۹  |
| ۲۸۰  | د قاضي يا عامل دپاره قبول هديه کله جائز ده؟ .....                            | ۲۸۰  |
| ۲۸۰  | باب كَيْفَ الْقَضَاءِ .....                                                  | ۲۸۰  |
| ۲۸۱  | د قضاء على الغائب په جواز کښې اختلاف : .....                                 | ۲۸۱  |
| ۲۸۲  | باب فِي قَضَاءِ الْقَاضِي إِذَا أَخْطَأَ .....                               | ۲۸۲  |
| ۲۸۲  | د قضاء القاضي نفاذ صرف په ظاهر باندي وی يا ظاهر او باطن دواړو باندي؟ : ..... | ۲۸۲  |
| ۲۸۵  | د رسول الله ﷺ دپاره اجتهاد جائز دي : .....                                   | ۲۸۵  |

| شمار | مضمون                                                                                                    | صفحه |
|------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------|------|
| ۲۸۶  | باب كَيْفَ يَجْلِسُ الْخُضَمَانُ بَيْنَ يَدَيِ الْقَاضِي                                                 | ۲۸۶  |
| ۲۸۷  | باب الْقَاضِي يَقْضِي وَهُوَ غَضَبَانُ                                                                   | ۲۸۷  |
| ۲۸۷  | باب الْحُكْمُ بَيْنَ أَهْلِ الذِّمَّةِ                                                                   | ۲۸۷  |
| ۲۸۷  | په مسئله الباب كنبی مذاهب ائمه :                                                                         | ۲۸۷  |
| ۲۸۸  | باب اجْتِهَادِ الرَّأْيِ فِي الْقَضَاءِ                                                                  | ۲۸۸  |
| ۲۸۹  | د حديث الباب په سند باندي كلام او د محدثينو د طرف نه دهغي جواب                                           | ۲۸۹  |
| ۲۹۰  | باب فِي الصُّلْحِ                                                                                        | ۲۹۰  |
| ۲۹۱  | دامام ترمذی <small>رحمۃ اللہ علیہ</small> دحديث الباب په باره كنبی تصحيح اويہ هغي بآندي د محدثينو اعتراض | ۲۹۱  |
| ۲۹۲  | باب فِي الشَّهَادَاتِ                                                                                    | ۲۹۲  |
| ۲۹۳  | دفع التعارض بين الحديثين :                                                                               | ۲۹۳  |
| ۲۹۴  | باب فِيمَنْ يُعِينُ عَلَى خُصُومَةٍ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَعْلَمَ أَمْرَهَا                                  | ۲۹۴  |
| ۲۹۵  | باب فِي شَهَادَةِ الزُّورِ                                                                               | ۲۹۵  |
| ۲۹۶  | شرح الحديث :                                                                                             | ۲۹۶  |
| ۲۹۶  | باب مَنْ تَرُدُّ شَهَادَتُهُ                                                                             | ۲۹۶  |
| ۲۹۶  | شرح الحديث من حيث الفقه :                                                                                | ۲۹۶  |
| ۲۹۷  | باب شَهَادَةِ الْبَدَوِيِّ عَلَى أَهْلِ الْأَمْصَارِ                                                     | ۲۹۷  |
| ۲۹۸  | باب الشَّهَادَةِ فِي الرِّضَاعِ                                                                          | ۲۹۸  |
| ۲۹۸  | مسئله الباب كنبی مذاهب ائمه :                                                                            | ۲۹۸  |
| ۲۹۹  | باب شَهَادَةِ أَهْلِ الذِّمَّةِ فِي الْوَصِيَّةِ فِي السَّفَرِ                                           | ۲۹۹  |
| ۳۰۱  | د عدی بن بداء او تمیم داری قصه :                                                                         | ۳۰۱  |
| ۳۰۱  | باب إِذَا عَلِمَ الْحَاكِمُ صِدْقَ الشَّاهِدِ الْوَاحِدِ يَجُوزُ لَهُ أَنْ يَحْكُمَ بِهِ                 | ۳۰۱  |
| ۳۰۱  | قضاء القاضي بعلمه كنبی مذاهب ائمه :                                                                      | ۳۰۱  |
| ۳۰۲  | د رسول الله <small>صلی اللہ علیہ وسلم</small> د شراء فرس یو عبرتناکه واقعه :                             | ۳۰۲  |
| ۳۰۴  | باب الْقَضَاءِ بِالْيَمِينِ وَالشَّاهِدِ                                                                 | ۳۰۴  |
| ۳۰۴  | د مسئله الباب وضاحت او مذاهب ائمه :                                                                      | ۳۰۴  |
| ۳۰۵  | شرح السند :                                                                                              | ۳۰۵  |
| ۳۰۷  | یو اوږد حديث او د هغي شرح :                                                                              | ۳۰۷  |
| ۳۰۹  | باب الرَّجُلَيْنِ يَدْعِيَانِ شَيْئًا وَلَيْسَتْ لَهُمَا بَيْنَهُ                                        | ۳۰۹  |
| ۳۱۱  | باب الْيَمِينِ عَلَى الْمُدَّعَى عَلَيْهِ                                                                | ۳۱۱  |
| ۳۱۲  | باب كَيْفَ الْيَمِينُ                                                                                    | ۳۱۲  |



| شمار | مضمون                                                     | صفحه |
|------|-----------------------------------------------------------|------|
| ۳۱۲  | باب إِذَا كَانَ الْمُدَّعَى عَلَيْهِ ذِمِّيًّا أَيْخَلِفُ | ۳۱۲  |
| ۳۱۳  | باب الرَّجُلُ يَخْلِفُ عَلَى عِلْمِهِ فِيمَا غَابَ عَنْهُ | ۳۱۳  |
| ۳۱۳  | د ترجمه الباب تشریح :                                     | ۳۱۳  |
| ۳۱۴  | باب كَيْفَ يَخْلِفُ الذَّمِّيُّ                           | ۳۱۴  |
| ۳۱۵  | باب الرَّجُلُ يَخْلِفُ عَلَى حَقِّهِ                      | ۳۱۵  |
| ۳۱۵  | شرح الحديث :                                              | ۳۱۵  |
| ۳۱۶  | باب فِي الْحَبْسِ فِي الدِّينِ وَغَيْرِهِ                 | ۳۱۶  |
| ۳۱۷  | شرح الحديث :                                              | ۳۱۷  |
| ۳۱۷  | شرح الحديث :                                              | ۳۱۷  |
| ۳۱۸  | باب فِي الْوَكَالَةِ                                      | ۳۱۸  |
| ۳۱۸  | مضمون الحديث :                                            | ۳۱۸  |
| ۳۱۹  | باب فِي الْقَضَاءِ                                        | ۳۱۹  |
| ۳۱۹  | شرح الحديث :                                              | ۳۱۹  |
| ۳۱۹  | شرح الحديث :                                              | ۳۱۹  |
| ۳۲۱  | مضمون حديث :                                              | ۳۲۱  |
| ۳۲۲  | مضمون حديث :                                              | ۳۲۲  |
| ۳۲۴  | شرح الحديث :                                              | ۳۲۴  |
| ۳۲۵  | أَوَّلُ كِتَابِ الْعِلْمِ                                 | ۳۲۵  |
| ۳۲۵  | (ما قبل سره ربط او مناسبت)                                | ۳۲۵  |
| ۳۲۶  | (د علم تعريف)                                             | ۳۲۶  |
| ۳۲۶  | (باب الْحَثُّ عَلَى طَلَبِ الْعِلْمِ)                     | ۳۲۶  |
| ۳۲۶  | باب فِي فَضْلِ الْعِلْمِ                                  | ۳۲۶  |
| ۳۲۷  | مضمون حديث :                                              | ۳۲۷  |
| ۳۲۷  | شرح الحديث :                                              | ۳۲۷  |
| ۳۲۸  | د علم فضيلت او برتری :                                    | ۳۲۸  |
| ۳۲۹  | باب رِوَايَةِ حَدِيثِ أَهْلِ الْكِتَابِ                   | ۳۲۹  |
| ۳۳۰  | په دوه مختلفو بابونو کښې تطبيق :                          | ۳۳۰  |
| ۳۳۰  | د اسرائیلیاتو حکم :                                       | ۳۳۰  |
| ۳۳۲  | د کاتبین وحی صحابه کرامو رضی اللہ تعین او نومونه :        | ۳۳۲  |
| ۳۳۳  | باب فِي كِتَابَةِ الْعِلْمِ                               | ۳۳۳  |



| شمار | مضمون                                                                                      | صفحه |
|------|--------------------------------------------------------------------------------------------|------|
| ۳۳۴  | باب فِي التَّشْدِيدِ فِي الْكَذِبِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ | ۳۳۴  |
| ۳۳۴  | شرح الحديث :                                                                               | ۳۳۴  |
| ۳۳۵  | باب الْكَلَامِ فِي كِتَابِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ                                         | ۳۳۵  |
| ۳۳۵  | شرح الحديث :                                                                               | ۳۳۵  |
| ۳۳۶  | (د تفسیر ماخذ)                                                                             | ۳۳۶  |
| ۳۳۷  | باب تَكْرِيرِ الْحَدِيثِ                                                                   | ۳۳۷  |
| ۳۳۸  | شرح الحديث :                                                                               | ۳۳۸  |
| ۳۳۸  | باب فِي سَرِّدِ الْحَدِيثِ                                                                 | ۳۳۸  |
| ۳۳۹  | باب التَّوَقِّي فِي الْفُتْيَا                                                             | ۳۳۹  |
| ۳۴۰  | شرح الحديث :                                                                               | ۳۴۰  |
| ۳۴۰  | (د باب سره مناسبت)                                                                         | ۳۴۰  |
| ۳۴۱  | باب كَرَاهِيَّةِ مَنْعِ الْعِلْمِ                                                          | ۳۴۱  |
| ۳۴۱  | شرح الحديث :                                                                               | ۳۴۱  |
| ۳۴۲  | آيا حديث الباب موضوع دي؟                                                                   | ۳۴۲  |
| ۳۴۲  | باب فَضْلِ نَشْرِ الْعِلْمِ                                                                | ۳۴۲  |
| ۳۴۳  | باب الْحَدِيثِ عَنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ                                                     | ۳۴۳  |
| ۳۴۴  | باب فِي طَلَبِ الْعِلْمِ لِغَيْرِ اللَّهِ تَعَالَى                                         | ۳۴۴  |
| ۳۴۴  | شرح الحديث :                                                                               | ۳۴۴  |
| ۳۴۵  | باب فِي الْقَصَصِ                                                                          | ۳۴۵  |
| ۳۴۵  | شرح الحديث :                                                                               | ۳۴۵  |
| ۳۴۵  | (اشكال: آيا هر مسلمان وعظ نه شي کولي؟)                                                     | ۳۴۵  |
| ۳۴۶  | (مضمون الحديث)                                                                             | ۳۴۶  |
| ۳۴۷  | د ذکر اجتماعي ثبوت او د هغې فضيلت:                                                         | ۳۴۷  |
| ۳۴۷  | (مسئله استرقاق العرب)                                                                      | ۳۴۷  |
| ۳۴۸  | كِتَابُ الْأَشْرَبَةِ                                                                      | ۳۴۸  |
| ۳۴۸  | (ما قبل سره ربط او مناسبت)                                                                 | ۳۴۸  |
| ۳۴۹  | باب فِي تَحْرِيمِ الْخَمْرِ                                                                | ۳۴۹  |
| ۳۵۰  | شرح الحديث :                                                                               | ۳۵۰  |
| ۳۵۰  | خمر د کومو څيزونو نه جوړولې شي :                                                           | ۳۵۰  |
| ۳۵۱  | د اشربة په باره د احنافو او د جمهور علماء کرامو اختلاف، مدلل او مفصل :                     | ۳۵۱  |

| شمار | مضمون                                                | صفحه |
|------|------------------------------------------------------|------|
| ۳۵۱  | (اقسام اشربه)                                        | ۳۵۱  |
| ۳۵۱  | قسم اول:                                             | ۳۵۱  |
| ۳۵۱  | قسم ثانی او درجه ثانیه:                              | ۳۵۱  |
| ۳۵۱  | قسم ثالث:                                            | ۳۵۱  |
| ۳۵۲  | (احکام اشرب)                                         | ۳۵۲  |
| ۳۵۲  | احناف د ټولو شرابو د تحریم ولې قائل نه دی:           | ۳۵۲  |
| ۳۵۷  | باب الْعِنَبِ يُغَصَّرُ لِلْخَمْرِ                   | ۳۵۷  |
| ۳۵۷  | شرح الحديث:                                          | ۳۵۷  |
| ۳۵۷  | باب مَا جَاءَ فِي الْخَمْرِ تُحْلَلُ                 | ۳۵۷  |
| ۳۵۸  | باب الْخَمْرِ مِمَّا هُوَ                            | ۳۵۸  |
| ۳۵۹  | توجيه الحديث على مسلك الحنفية:                       | ۳۵۹  |
| ۳۶۰  | باب التَّهْيِ عَنِ الْمُسْكِرِ                       | ۳۶۰  |
| ۳۶۲  | شرح الحديث:                                          | ۳۶۲  |
| ۳۶۴  | باب فِي الدَّاذِيَّ                                  | ۳۶۴  |
| ۳۶۵  | د طلاء تفسیر:                                        | ۳۶۵  |
| ۳۶۶  | باب فِي الْأَوْعِيَةِ                                | ۳۶۶  |
| ۳۶۶  | په مشکیزه کښې د شرابو جوړولو مصلحت:                  | ۳۶۶  |
| ۳۶۷  | د اوغیه اربعه وضاحت:                                 | ۳۶۷  |
| ۳۶۹  | د وفد عبدالقیس والا حدیث شرح:                        | ۳۶۹  |
| ۳۶۹  | (اشکال)                                              | ۳۶۹  |
| ۳۶۹  | (د مامور به اشیاء سره متعلق بل سوال او دهغې جوابونه) | ۳۶۹  |
| ۳۷۲  | د حدیث نه د مسلک حنفی تائید:                         | ۳۷۲  |
| ۳۷۴  | باب فِي الْخَلِيطَيْنِ                               | ۳۷۴  |
| ۳۷۴  | د کهجور مختلف قسمونه او د هغې نومونه:                | ۳۷۴  |
| ۳۷۶  | شرح الحديث:                                          | ۳۷۶  |
| ۳۷۷  | باب فِي نَبِيذِ الْبُسْرِ                            | ۳۷۷  |
| ۳۷۷  | شرح الحديث:                                          | ۳۷۷  |
| ۳۷۸  | باب فِي صِفَةِ النَّبِيذِ                            | ۳۷۸  |
| ۳۷۸  | شرح الحديث:                                          | ۳۷۸  |
| ۳۸۰  | شرح الحديث:                                          | ۳۸۰  |

| شمار | مضمون                                                                                          | صفحه |
|------|------------------------------------------------------------------------------------------------|------|
| ۳۸۱  | (تطبيق بين الروایتین).....                                                                     | ۳۸۱  |
| ۳۸۱  | باب في شَرَابِ الْعَسَلِ.....                                                                  | ۳۸۱  |
| ۳۸۲  | شرح الحديث:.....                                                                               | ۳۸۲  |
| ۳۸۳  | په شرب عسل والا حديث اختلافات د روایاتو:.....                                                  | ۳۸۳  |
| ۳۸۴  | د آیت په شان نزول کښې د تحریم عسل او تحریم ماریه <small>خارجة عن كسبي</small> اختلاف.....      | ۳۸۴  |
| ۳۸۵  | باب في التَّبْيِيزِ إِذَا غَلِيَ.....                                                          | ۳۸۵  |
| ۳۸۶  | باب في الشُّرْبِ قَائِمًا.....                                                                 | ۳۸۶  |
| ۳۸۶  | د شرب قائما په باره کښې اختلاف د روایاتو:.....                                                 | ۳۸۶  |
| ۳۸۷  | باب الشُّرَابِ مِنْ فِي السَّقَاءِ.....                                                        | ۳۸۷  |
| ۳۸۷  | شرح الحديث:.....                                                                               | ۳۸۷  |
| ۳۸۸  | باب في اخْتِنَانِ الْأُسْقِيَةِ.....                                                           | ۳۸۸  |
| ۳۸۹  | باب في الشُّرْبِ مِنْ ثُلْمَةِ الْقَدَحِ.....                                                  | ۳۸۹  |
| ۳۸۹  | باب في الشُّرْبِ فِي آيَةِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ.....                                         | ۳۸۹  |
| ۳۹۰  | باب في الْكَرْعِ.....                                                                          | ۳۹۰  |
| ۳۹۱  | د حضرت حاجی صاحب <small>رحمۃ اللہ علیہ</small> یو معمول:.....                                  | ۳۹۱  |
| ۳۹۱  | باب في السَّاقِي مَتَى يَشْرَبُ.....                                                           | ۳۹۱  |
| ۳۹۴  | باب في التَّنْفِخِ فِي الشُّرَابِ وَالتَّنْفِيسِ فِيهِ.....                                    | ۳۹۴  |
| ۳۹۵  | شرح الحديث:.....                                                                               | ۳۹۵  |
| ۳۹۵  | آیا د رسول الله <small>صلی اللہ علیہ وسلم</small> عادت مبارک د خوراک سره د اوبو څکلو وو؟:..... | ۳۹۵  |
| ۳۹۶  | باب مَا يَقُولُ إِذَا شَرِبَ اللَّبَنَ.....                                                    | ۳۹۶  |
| ۳۹۷  | شرح الحديث:.....                                                                               | ۳۹۷  |
| ۳۹۷  | یو اشکال او د هغې جواب:.....                                                                   | ۳۹۷  |
| ۳۹۸  | باب في إِيكَاءِ الْآيَةِ.....                                                                  | ۳۹۸  |
| ۴۰۱  | كِتَابُ الْأَطْعِمَةِ.....                                                                     | ۴۰۱  |
| ۴۰۱  | باب مَا جَاءَ فِي إِجَابَةِ الدَّعْوَةِ.....                                                   | ۴۰۱  |
| ۴۰۱  | د ولیمې متعلق درې فوائد:.....                                                                  | ۴۰۱  |
| ۴۰۲  | (د ضیافت اقسام).....                                                                           | ۴۰۲  |
| ۴۰۳  | د اجابت دعوت حکم شرعی:.....                                                                    | ۴۰۳  |
| ۴۰۴  | باب في اسْتِخْبَابِ الْوَلِيمَةِ عِنْدَ النَّكَاحِ.....                                        | ۴۰۴  |
| ۴۰۵  | باب الإطْعَامَ عِنْدَ الْقُدُومِ مِنَ السَّفَرِ.....                                           | ۴۰۵  |



| شمار | مضمون                                                                                     | صفحه |
|------|-------------------------------------------------------------------------------------------|------|
| ۴۰۵  | باب مَا جَاءَ فِي الضِّيَافَةِ.....                                                       | ۴۰۵  |
| ۴۰۶  | شرح الحديث :.....                                                                         | ۴۰۶  |
| ۴۰۷  | باب فِي كَمْ تُسْتَحَبُّ الْوَلِيمَةُ.....                                                | ۴۰۷  |
| ۴۰۷  | د ولیمې دعوت تر څو ورځو پورې کول مستحب دی :.....                                          | ۴۰۷  |
| ۴۰۸  | باب مَا جَاءَ فِي الضِّيَافَةِ.....                                                       | ۴۰۸  |
| ۴۱۰  | باب نَسَخِ الضَّيْفِ يَأْكُلُ مِنْ مَالِ غَيْرِهِ.....                                    | ۴۱۰  |
| ۴۱۰  | د ترجمه الباب غرض او په هغې کښې اختلاف د نسخو:.....                                       | ۴۱۰  |
| ۴۱۲  | باب فِي طَعَامِ الْمُتَبَارِكِينَ.....                                                    | ۴۱۲  |
| ۴۱۲  | باب الرَّجُلُ يُدْعَى فَيَرَى مَكْرُومًا.....                                             | ۴۱۲  |
| ۴۱۳  | باب إِذَا اجْتَمَعَ ذَا عِيَانٍ أَتَاهُمَا أَحَقُّ.....                                   | ۴۱۳  |
| ۴۱۴  | باب إِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ وَالْعِشَاءُ.....                                           | ۴۱۴  |
| ۴۱۵  | د تقديم طعام على الصلوة سره متعلق یو ښکلي واقعه :.....                                    | ۴۱۵  |
| ۴۱۵  | باب فِي غَسْلِ الْيَدَيْنِ عِنْدَ الطَّعَامِ.....                                         | ۴۱۵  |
| ۴۱۶  | شرح الحديث :.....                                                                         | ۴۱۶  |
| ۴۱۷  | باب فِي غَسْلِ الْيَدِ قَبْلَ الطَّعَامِ.....                                             | ۴۱۷  |
| ۴۱۷  | باب فِي طَعَامِ الْفُجَاءَةِ.....                                                         | ۴۱۷  |
| ۴۱۸  | باب فِي كَرَاهِيَةِ ذَمِّ الطَّعَامِ.....                                                 | ۴۱۸  |
| ۴۱۸  | باب فِي الْاجْتِمَاعِ عَلَى الطَّعَامِ.....                                               | ۴۱۸  |
| ۴۱۹  | باب التَّسْمِيَةِ عَلَى الطَّعَامِ.....                                                   | ۴۱۹  |
| ۴۱۹  | مضمون حديث :.....                                                                         | ۴۱۹  |
| ۴۲۱  | مضمون الحديث :.....                                                                       | ۴۲۱  |
| ۴۲۲  | باب مَا جَاءَ فِي الْأَكْلِ مُتَكِنًا.....                                                | ۴۲۲  |
| ۴۲۲  | شرح الحديث :.....                                                                         | ۴۲۲  |
| ۴۲۳  | شرح الحديث :.....                                                                         | ۴۲۳  |
| ۴۲۳  | د اكل متکنا مصداق او تفسیر :.....                                                         | ۴۲۳  |
| ۴۲۴  | د خوراک په وخت د ناستي غوره طريقه :.....                                                  | ۴۲۴  |
| ۴۲۴  | باب مَا جَاءَ فِي الْأَكْلِ مِنْ أَعْلَى الصَّخْفَةِ.....                                 | ۴۲۴  |
| ۴۲۵  | رسول الله ﷺ اوصحابه کرامو رضی اللہ عنہم چه به یوځاني په کوم لوبښی کښې خوراک فرمائیلو. ۴۲۵ | ۴۲۵  |
| ۴۲۶  | قطع اللحم بالسکین کښې اختلاف د روایتونو:.....                                             | ۴۲۶  |
| ۴۲۶  | باب مَا جَاءَ فِي الْجُلُوسِ عَلَى مَائِدَةٍ عَلَيْهَا بَعْضُ مَا يُكْرَهُ.....           | ۴۲۶  |

| شمار | مضمون                                                  | صفحه |
|------|--------------------------------------------------------|------|
| ۴۲۷  | باب الْأَكْلِ بِالْيَمِينِ                             | ۴۲۷  |
| ۴۲۸  | باب فِي أَكْلِ اللَّحْمِ                               | ۴۲۸  |
| ۴۲۹  | مضمون الحديث :                                         | ۴۲۹  |
| ۴۲۹  | (زهر ورکونکي خوک وو؟)                                  | ۴۲۹  |
| ۴۲۹  | باب فِي أَكْلِ الدَّبَاءِ                              | ۴۲۹  |
| ۴۳۱  | باب فِي أَكْلِ الثَّرِيدِ                              | ۴۳۱  |
| ۴۳۱  | باب فِي كَرَاهِيَّةِ التَّقْدِيرِ لِلطَّعَامِ          | ۴۳۱  |
| ۴۳۲  | شرح الحديث :                                           | ۴۳۲  |
| ۴۳۳  | باب التَّهْيِ عَنْ أَكْلِ الْجَلَالَةِ، وَأَلْبَانِهَا | ۴۳۳  |
| ۴۳۳  | د جلاله په حکم کښې مذاهب ائمه :                        | ۴۳۳  |
| ۴۳۴  | باب فِي أَكْلِ لُحُومِ الْخَيْلِ                       | ۴۳۴  |
| ۴۳۶  | باب فِي أَكْلِ الْأَزْنَبِ                             | ۴۳۶  |
| ۴۳۷  | باب فِي أَكْلِ الضَّبِّ                                | ۴۳۷  |
| ۴۳۹  | باب فِي أَكْلِ لَحْمِ الْحُبَارَى                      | ۴۳۹  |
| ۴۳۹  | حباري څه شي دي؟                                        | ۴۳۹  |
| ۴۴۰  | باب فِي أَكْلِ حَشَرَاتِ الْأَرْضِ                     | ۴۴۰  |
| ۴۴۱  | د قنفذ مصداق او د هغې شرعي حکم :                       | ۴۴۱  |
| ۴۴۲  | باب فِي أَكْلِ الضَّبُعِ                               | ۴۴۲  |
| ۴۴۲  | بحث اول :                                              | ۴۴۲  |
| ۴۴۳  | بحث ثاني :                                             | ۴۴۳  |
| ۴۴۴  | بحث ثالث :                                             | ۴۴۴  |
| ۴۴۴  | باب التَّهْيِ عَنْ أَكْلِ السَّبَاعِ                   | ۴۴۴  |
| ۴۴۴  | شرح الحديث :                                           | ۴۴۴  |
| ۴۴۶  | مضمون الحديث :                                         | ۴۴۶  |
| ۴۴۷  | باب فِي أَكْلِ لُحُومِ الْخُمْرِ الْأَهْلِيَّةِ        | ۴۴۷  |
| ۴۴۷  | د بغال په حکم کښې اختلاف :                             | ۴۴۷  |
| ۴۴۸  | مضمون الحديث :                                         | ۴۴۸  |
| ۴۴۹  | مسلك د ابن عباس رضی اللہ عنہما :                       | ۴۴۹  |
| ۴۵۰  | باب فِي أَكْلِ الْجَرَادِ                              | ۴۵۰  |
| ۴۵۲  | باب فِي أَكْلِ الطَّافِي مِنَ السَّمَكِ                | ۴۵۲  |



| شمار | مضمون                                                     | صفحه |
|------|-----------------------------------------------------------|------|
| ۴۵۳  | باب في المضطرّ إِلَى الْمَيْتَةِ ( )                      | ۴۵۳  |
| ۴۵۳  | مضمون الحديث :                                            | ۴۵۳  |
| ۴۵۴  | شرح الحديث :                                              | ۴۵۴  |
| ۴۵۵  | باب في الجمع بَيْنَ لَوْنَيْنِ مِنَ الطَّعَامِ ( )        | ۴۵۵  |
| ۴۵۶  | مضمون الحديث :                                            | ۴۵۶  |
| ۴۵۶  | باب في أَكْلِ الْجُنَيْنِ                                 | ۴۵۶  |
| ۴۵۷  | باب في الْحَلِّ                                           | ۴۵۷  |
| ۴۵۷  | په شرح د حديث كښې د شارحينو اختلاف :                      | ۴۵۷  |
| ۴۵۸  | باب في أَكْلِ الثُّومِ                                    | ۴۵۸  |
| ۴۵۹  | د صحابي حديث لره روايت بالمعنى كول :                      | ۴۵۹  |
| ۴۶۰  | د جماعت د مانځه په نه فرض كيدو باندې استدلال :            | ۴۶۰  |
| ۴۶۱  | شرح الحديث :                                              | ۴۶۱  |
| ۴۶۳  | باب في الثَّمْرِ                                          | ۴۶۳  |
| ۴۶۴  | باب في تَفْتِيْشِ الثَّمْرِ الْمُسَوِّسِ عِنْدَ الْأَكْلِ | ۴۶۴  |
| ۴۶۴  | د دوه متعارض احاديثو جواب :                               | ۴۶۴  |
| ۴۶۵  | باب الإِقْرَانِ فِي الثَّمْرِ عِنْدَ الْأَكْلِ            | ۴۶۵  |
| ۴۶۵  | باب في الجمع بَيْنَ لَوْنَيْنِ فِي الْأَكْلِ              | ۴۶۵  |
| ۴۶۶  | شرح الحديث :                                              | ۴۶۶  |
| ۴۶۷  | باب الْأَكْلِ فِي آيَةِ أَهْلِ الْكِتَابِ                 | ۴۶۷  |
| ۴۶۸  | باب في دَوَابِّ الْبَحْرِ                                 | ۴۶۸  |
| ۴۶۹  | د غزوه سيف البحر تذكرة :                                  | ۴۶۹  |
| ۴۷۰  | باب في الْفَأْرَةِ تَقَعُ فِي السَّمْنِ                   | ۴۷۰  |
| ۴۷۱  | باب في الذُّبَابِ يَقَعُ فِي الطَّعَامِ                   | ۴۷۱  |
| ۴۷۲  | باب في اللَّقْمَةِ تَسْقُطُ                               | ۴۷۲  |
| ۴۷۳  | (د روتى خورلور يو خو آداب)                                | ۴۷۳  |
| ۴۷۳  | باب في الْحَاذِمِ يَأْكُلُ مَعَ الْمَوْلَى                | ۴۷۳  |
| ۴۷۴  | باب في الْيَنْدِيلِ                                       | ۴۷۴  |
| ۴۷۴  | باب مَا يَقُولُ الرَّجُلُ إِذَا طَعِمَ                    | ۴۷۴  |
| ۴۷۵  | (د ربنا اعراب)                                            | ۴۷۵  |
| ۴۷۶  | باب في غَسْلِ الْيَدِ مِنَ الطَّعَامِ                     | ۴۷۶  |



| شمار | مضمون                                                                 | صفحه |
|------|-----------------------------------------------------------------------|------|
| ۴۷۶  | باب مَا جَاءَ فِي الدُّعَاءِ لِرَبِّ الطَّعَامِ إِذَا أَكَلَ عِنْدَهُ | ۴۷۶  |
| ۴۷۷  | باب فِي ثَمَرَةِ الْعَجْوَةِ                                          | ۴۷۷  |
| ۴۷۸  | باب مَا لَمْ يُذْكَرْ تَحْرِيمُهُ                                     | ۴۷۸  |
| ۴۷۹  | د بذل المجهود شریف د جلد رابع اختتام:                                 | ۴۷۹  |
| ۴۸۰  | كِتَابُ الطَّبِّ                                                      | ۴۸۰  |
| ۴۸۰  | د طب تعریف او د هغې تقسیم او انواع:                                   | ۴۸۰  |
| ۴۸۰  | باب فِي الرَّجُلِ يَتَدَاوَى                                          | ۴۸۰  |
| ۴۸۱  | د علاج او تداوی حکم:                                                  | ۴۸۱  |
| ۴۸۱  | د توکل مراتب ثلاثه:                                                   | ۴۸۱  |
| ۴۸۲  | باب فِي الْحَمِيَّةِ                                                  | ۴۸۲  |
| ۴۸۲  | مضمون الحديث:                                                         | ۴۸۲  |
| ۴۸۳  | باب فِي الْحِجَامَةِ                                                  | ۴۸۳  |
| ۴۸۴  | باب فِي مَوْضِعِ الْحِجَامَةِ                                         | ۴۸۴  |
| ۴۸۴  | احاديثونه د حجامت د اهميت ثبوت:                                       | ۴۸۴  |
| ۴۸۶  | باب مَتَى تُسْتَحَبُّ الْحِجَامَةُ                                    | ۴۸۶  |
| ۴۸۶  | باب فِي قَطْعِ الْعِرْقِ وَمَوْضِعِ الْحُجْمِ                         | ۴۸۶  |
| ۴۸۸  | باب فِي الْكَيِّ                                                      | ۴۸۸  |
| ۴۸۸  | (د کي تعریف)                                                          | ۴۸۸  |
| ۴۸۸  | (تطبيق بين الروایتين)                                                 | ۴۸۸  |
| ۴۸۹  | باب فِي السَّعُوطِ                                                    | ۴۸۹  |
| ۴۹۰  | د رسول الله ﷺ په مرض کښې د لدود واقعه:                                | ۴۹۰  |
| ۴۹۱  | باب فِي النَّشْرِ                                                     | ۴۹۱  |
| ۴۹۱  | باب فِي التَّرْيَاقِ                                                  | ۴۹۱  |
| ۴۹۲  | شرح الحديث:                                                           | ۴۹۲  |
| ۴۹۲  | باب فِي الْأَدْوِيَةِ الْمَكْرُوهَةِ                                  | ۴۹۲  |
| ۴۹۴  | شرح الحديث:                                                           | ۴۹۴  |
| ۴۹۴  | شرح السند:                                                            | ۴۹۴  |
| ۴۹۵  | باب فِي ثَمَرَةِ الْعَجْوَةِ                                          | ۴۹۵  |
| ۴۹۵  | شرح الحديث:                                                           | ۴۹۵  |
| ۴۹۶  | باب فِي الْعِلَاقِ                                                    | ۴۹۶  |

| شمار  | مضمون                                                           | صفحه |
|-------|-----------------------------------------------------------------|------|
| ..... | تشریح الحديث:                                                   | ۴۹۷  |
| ..... | باب في الأمر بالكُفْلِ                                          | ۴۹۷  |
| ..... | باب مَا جَاءَ فِي الْعَيْنِ                                     | ۴۹۸  |
| ..... | شرح الحديث :                                                    | ۴۹۸  |
| ..... | د بد نظر علاج :                                                 | ۴۹۹  |
| ..... | باب في الغِيلِ                                                  | ۵۰۰  |
| ..... | باب: د تی ورکونکې ښځې سره د جماع نه کولو بیان                   | ۵۰۰  |
| ..... | په حدیث د اسماء او حدیث د جدامه کښې تعارض او د هغې توجیه        | ۵۰۱  |
| ..... | باب في تَعْلِيْقِ التَّمَائِمِ                                  | ۵۰۱  |
| ..... | شرح الحديث :                                                    | ۵۰۲  |
| ..... | د رقی او تمائم سره متعلق د روایاتو تجزیه او د هغې تشریح         | ۵۰۳  |
| ..... | د تعلیق تمائم حیثیت :                                           | ۵۰۳  |
| ..... | باب مَا جَاءَ فِي الرَّقَى                                      | ۵۰۵  |
| ..... | د زنانه دپاره لیکل زده کول څنګه دی؟                             | ۵۰۶  |
| ..... | اختلاف نسخ او د نسخه صحیحہ تحقیق :                              | ۵۰۷  |
| ..... | د رسول الله ﷺ په حق کښې د لفظ سیدنا ثبوت :                      | ۵۰۸  |
| ..... | باب کَيْفَ الرَّقَى                                             | ۵۰۸  |
| ..... | د حصول صحت او مرضونو د لرې کولو دپاره څه مخصوص دعا ګانې :       | ۵۰۸  |
| ..... | شرح الحیث :                                                     | ۵۱۱  |
| ..... | تخریج الاحادیث :                                                | ۵۱۱  |
| ..... | په دم اچولو باندې د اجرت اخستلو جواز :                          | ۵۱۲  |
| ..... | باب في السَّفَنَةِ                                              | ۵۱۶  |
| ..... | کِتَابُ الْكَهَانَةِ وَالطَّيْرِ                                | ۵۱۶  |
| ..... | باب في الْكَاهِنِ                                               | ۵۱۶  |
| ..... | باب في التَّجْوِمِ                                              | ۵۱۷  |
| ..... | مضمون الحديث :                                                  | ۵۱۸  |
| ..... | باب في الْخَطِّ وَزَجْرِ الطَّيْرِ                              | ۵۱۹  |
| ..... | باب في الطَّيْرِ وَالْخَطِّ                                     | ۵۲۰  |
| ..... | مضمون الحديث :                                                  | ۵۲۱  |
| ..... | هغه حدیث کوم چه ابوهریره رضی الله عنه نه د بیانولو نه پس هیر شو | ۵۲۲  |
| ..... | په دوه متعارض احادیثو کښې تطبیق :                               | ۵۲۲  |
| ..... | شرح الحديث :                                                    | ۵۲۵  |
| ..... | په روایت الباب کښې دوه حیثیتونو سره تعارض او د دواړو جواب :     | ۵۲۸  |

بسم الله الرحمن الرحيم  
**كِتَابُ الْإِيمَانِ وَالنَّذْرِ**  
 د قسمونو او نذر (منښتې) منلو بيان

مباحث اربعه علميه مفیده: دلته څو امور قابل ذکر دی:

- ۱: د دې کتاب د ماقبل سره مناسبت.
- ۲: د ایمان او نذر دواړو یو ځایي کښې د جمع کولو وجه یعنی د دواړو ترمینځه مناسبت او وجه الجمع.
- ۳: د یمین او نذر هر یو لغوی او شرعی معنی.
- ۴: د یمین او نذر احکام او اقسام.

**بحث اول:**

د دې کتاب مناسبت د کتاب الجنائز سره دا دې چه دا خو ښکاره ده چه د جنائز تعلق د مرګ سره دې نو څنگه چه په مرګ کښې سلب اختیار وی د الله پاک د طرف نه نو هم دغه شان یمین هم د سلب اختیار یو سبب دې ځکه چه د نذر او د یمین د وجې نه امر مباح شرعا واجب کیږي، او د یو څیز د واجب کیدونه پس دهغې د ترک اختیار باقی نه پاتې کیدل ښکاره دی.

**بحث ثانی:**

د دې نه پس په دې باندې ځان پوهول پکار دی چه عام طور سره په کتابونو د حدیثو کښې ایمان او نذر یو ځایي بیان کړې شوې دی لکه دلته په ابوداؤد کښ، او هم دغه شان په صحیح بخاری، ترمذی او نسائی کښ، چه د هغې وجه د امام ابن ماجه رحمه الله د طرز نه معلومه شوه چه هغوی په خپل سنن کښې یو عنوان قائم کړې دې، ابواب الکفارات، او بیا ئې د هغې د لاندې خو ابواب د ایمان سره متعلق او بیا د هغې نه روستو څو ابواب د نذر متعلق. ذکر کړی دی د هغوی د دې کار نه د ایمان او نذر د یو ځایي جمع کولو راز معلوم شو، هغه دا چه دا دواړه په حکم د کفاره کښې مشترک دی، نو څنگه چه د بعض ایمان په احکاماتو کښې وجوب کفاره ده هم دغه شان د نذر په بعض صورتونو کښې کفاره واجب وی، په ابوداؤد کښې وړاندې یو حدیث را روان دې، كفارة النذر كفارة اليمين او په ترمذی کښې دی «كفارة النذر اذا لم يسم كفارة اليمين» او د دې وجه او صولا دا ده چه یمین د نذر د موجباتو او لوازمو نه دې «لان النذر ايجاب المباح وهو يستلزم تحريم الحلال، وتحريم الحلال يمين، بدليل قوله تعالى: يا ايها النبي لم تحرم ما احل الله لك.... قاله الشيخ دهلوی ((في اللغات)) كما في حاشية ابن ماجة.

**بحث ثالث:**

ایمان جمع د یمین ده او د یمین لغوی معنی ده لاس یعنی ښې لاس، بیا د دې اطلاق په قسم باندې هم کیږي، لانهم اذا تحالفوا اخذ كل يمين صاحبه، یعنی د خلقو عادت دې چه کله هغوی خپل مینځ کښې قسمونه خوری نو هغه وخت د یو بل سره لاسونه ملاوه، د دې



مناسبت د وجې نه په حلف باندې د یمین اطلاق او شو، او دا هم وئیلې شوې دی چه د ښی لاس کار یو څیز لره محفوظ کول دی، هم په دې مناسبت سره په حلف باندې د یمین اطلاق شروع شو، او دا هم وئیلې شوې دی چه د ښی لاس کار یو څیز لره محفوظ کول دی، بیا د دې اطلاق په حلف باندې ځکه کړې شوې دې چه د محلو ف علیه سرې رعایت او حفاظت کوی، او د یمین شرعاً دا تعریف کړې شوې دې «توکید شی بذكر اسم او هغه لله تعالی» د الله پاک نوم یا د هغه صفت ذکر کولو سره دیو څیز مضبوط او موکد کول. «قال الحافظ: وهذا اخصر التعريف واقربها»

نذور جمع د نذرده چه دهغې معنی ده انذار او تخويف، او امام راغب رحمه الله ددې تعریف (شرعاً) داسې کړې دې «ایجاب ما ليس بواجب لحدوث امر» یعنی د انسان په خپل ځان باندې یو څیز واجب کول کوم چه په هغه باندې واجب نه وو د څه امر د موجود کیدو په وخت، لکه چه داسې او وئیلې شی «ان فزت في الاختيار فعلى صوم» چه که زه په امتحان کښې کامیاب شوم نو زما په ذمه یو روژه ده، دلته صوم لره چه یو غیر واجب څیز دې په خپل ځان باندې واجب کړې شوې دې د حدوث امر یعنی په امتحان کښې د کامیابی د وجې نه.

#### بحث رابع :

په حاشیه د لامع کښې حضرت شیخ د ایمان او نذور اقسام ذکر کړی دی، او په الابواب والتراجم کښې مجمل لیکلې شوې دی، فالاول علی خمسة انواع، والثاني علی سبعة انواع... د ایمان درې قسمونه ډیر زیات مشهور دی، یمین منعقده، یمین غموس، یمین اللغو، وړاندې په ابوداؤد کښې یو مستقل باب را روان دې «باب لغو اليمين» دا اقسام به سره د هغې د احکامو انشاء الله هلته بیانولې شی.

### باب التَّغْلِيظِ فِي الْاَيْمَانِ الْفَاجِرَةِ

په دروغه د قسم کولو د گناه او د عذاب بیان

په دې باب کښې د یمین غموس ذکر دې او په را روان باب کښې هم، فاجرة په معنی د کاذبه، یعنی قصدا په دروغه قسم کولو باره کښې چه کوم وعید راغلې دې، د یمین غموس تعریف دا کړې شوې دې چه په یو امر ماضی باندې قصدا خلاف واقع قسم او خورلې شی، لکه چه دا اوئیلې شی چه والله ما فلانې کار کړې دې حال دا چه هغه نه وی کړې، یا لکه چه د بل د مال په باره کښې دا قسم او خوری چه دا زما ملک دې، یمین غموس ته غموس په دې وجه وئیلې شی چه دا خپل صاحب لره په گناه کښې ډوب کړی او بیا په جهنم کښې.

په یمین غموس کښې د کفارې وجوب شته که نه؟ :

په یمین غموس کښې د جمهور و علماء گرامو په نزد کفار نه شته، صرف معصیت او اثم دې، او د امام اوزاعی او امام شافعی رحمهم الله په نزد په دې کښې کفار و واجب کیږی، جمهور وانی چه دا دومره لویه گناه ده چه د دې نقصان په کفارې سره نه شی پوره کیدلې، او کوم

خلق چه د وجوب د کفارې قائل دی هغه وائی چه انه احوج الی الکفارة من غیره، چه په دې کښې خو د کفارې نور هم زیات حاجت دې.

[۳۲۴۲] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ الْبَرَّازُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ مَصْبُورَةٍ كَاذِبًا، فَلْيَتَّبِعُوا بِوَجْهِهِ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ".

د عمران بن حصین رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلى دی خوک چه قید کړې شي (په قست سره اوبې ضرورته) په دروغه قسم او کړي نوهغه دخان دپاره په جهنم کښې کور تیار کړو.

﴿من حلف على يمين مصبورة كاذبا فليتبوا بوجهه مقعده من النار﴾

يمین مصبوره هغه قسم ته وئيلې شي کوم چه د انسان نه د قاضی په مجلس کښې اودرولو سره واخستلې شي، ﴿صبر﴾ په معنی د حبس دې ته يمین صبر هم وائی او د يمین صفت ﴿مصبوره﴾ مجازا راوړلې شوې دې، مصبور خو په اصل کښې هغه صاحب يمین دې مگر چونکه هغه د قسم د وجې نه بند کړې شوې دې په دې وجه د صبر نسبت يمین طرف ته کړې شوې دې مجازا او اتساعا (خطایي)

رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم فرمائی چه کوم انسان د قاضی په مجلس کښې په دروغه باندې قسم اوخوری هغه له خپلې استوگنې ته کوم چه په دوزخ کښې ده تلل پکار دی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم سوا د دې وعیې نه د کفارې ذکر اونکړو د دې نه د جمهورو تائید کيږي يعنی عدم وجوب کفارة فی اليمين الغموس.

### بَابُ فِي مَنْ حَلَفَ يَمِينًا لِيَقْطَعَ بِهَا مَالًا لِأَحَدٍ

دچا د مال دغصب کولو دپاره په دروغه د قسم کولو بيان

[۳۲۴۳] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى، وَهَنَادُ بْنُ السَّرِيِّ التَّمَنِي قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ هُوَ فِيهَا فَاجِرٌ، لِيَقْطَعَ بِهَا مَالًا لِأَمْرِ مُسْلِمٍ، لَقِيَ اللَّهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضَبَانُ، فَقَالَ الْأَشْعَثُ: فِي وَاللَّهِ كَانَ ذَلِكَ، كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ رَجُلٍ مِنَ الْيَهُودِ أَرْضٌ، فَجَحَدَنِي، فَقَدَّمْتُهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلَاكَ بَيْنَةٌ؟ قُلْتُ: لَا، قَالَ لِلْيَهُودِيِّ: احْلِفْ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِذَا يَحْلِفُ وَيَذْهَبُ بِمَالِي، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا سَوْفَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ إِلَى آخِرِ الْآيَةِ.

د عبد الله بن مسعود نه روایت دې فرمائی چه نبی علیه الصلاة والسلام فرمائیلى دی چه خوک په څه خبره قسم وخوري او په دغه قسم کښې دروغ ژن وي ددې دپاره چه ديو مسلمان

(۱) تفرده أبو داود، ۱ (تحفة الأشراف: ۱۰۸۴۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۳۷۴، ۴۴۱) (صحيح)

(۲) صحيح البخاري/المساقاة ۴ (۲۳۵۶)، والخصومات ۴ (۲۴۱۶)، والرهن ۶ (۲۵۱۵)، والشهادات ۱۹ (۲۶۶۶)، ۲۰ (۲۶۶۹)، ۲۳ (۲۶۷۳)، ۲۵ (۲۶۷۶)، تفسير آل عمران ۳ (۴۵۴۹)، الإيمان ۱۱ (۶۶۵۹)، ۱۷ (۶۶۷۶)، الأحكام ۳۰ (۷۱۸۳)، النوحيد ۲۴ (۷۴۴۵)، صحيح مسلم/الإيمان ۶۱ (۱۳۸)، سنن الترمذي/البيع ۴۲ (۱۲۶۹)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۸ (۲۳۲۲)، (تحفة الأشراف: ۱۵۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۷۷/۱) (صحيح)



مال غصب کړي نو دې به د الله تعالی سره په دې شان سره ملاوېږي چه الله تعالی به په ده باندې غصه وي اشعث وئيلي دی په الله قسم نبی ﷺ دا حدیث زما په باره کښي وئيلي وو ځکه چه زما او دیو یهودي شریکه زمکه وه ماته ئې زما د حصې درا کولونه انکار کړي وو نو ما نبی ﷺ ته بوتلو نبی ﷺ زمانه تپوس او کړو ایا گواه در سره شته؟ ما عرض او کړو نشته بیاني یهودي ته او وئيل چه ته به قسم کوي ماعرض او کړو ای د الله رسوله دا خو یهودي دې په دروغه به قسم او کړي اوزما مال به غصب کړي په دې وخت کښي الله تعالی دا ایت نازل کړو: ﴿ان الذين يشترون بإيمانهم ثمنًا قليلًا﴾ إلى آخر الآية.

قوله: ﴿عن عبد الله قال قال رسول الله ﷺ ..... فقال الاشعث في والله كان ذلك، كان بيني وبين رجل من اليهود ارض الخ﴾

دا حدیث د عبد الله بن مسعود رضی الله عنه دې چه رسول الله ﷺ ارشاد او فرمائيلو چه کوم انسان په یو څیز باندې قسم او خوری په داسې حال کښي چه په هغې کښي دروغ ژن وی، او د دې دپاره چه د دې قسم په ذریعه د یو مسلمان مال لږه واخلي نو د هغه سړی انجام به دا وی چه هغه به د قیامت په ورځ د الله پاک سره په داسې حال کښي ملاقات او کړی چه هغه به په ده باندې غصه وي. اشعث بن قیس کندی دې حدیث اوریدو سره او وې: والله د دې حدیث وردو خو زما په قصه کښي شوې وو، بیا وړاندې هغوی هغه قصه بیان کړه چه زما او د یو یهودي تر مینځه زمکه وو، یعنی په کوم باندې چه هغه یهودي قابض وو چه دهغې د واپس کولو نه چه هغه انکار کولو، ما دایهودي اونیولو او د رسول الله ﷺ په خدمت کښي مې حاضر کړو، اشعث وائی: رسول الله ﷺ زما نه تپوس او کړو آیا تاسره گواهان شته؟ ما عرض او کړو نه، رسول الله ﷺ یهودي ته او فرمائيل چه ته قسم او خوره، ما عرض او کړو یا رسول الله ﷺ دا دروغ ژن سړي دې قسم به او خوری او زما مال به یوسی، په دې باندې دا ایت کریمه نازل شو:

﴿ان الذين يشترون بإيمانهم ثمنًا قليلًا، الى آخر الآية﴾

دا آیت او حدیث دواړه په دې خبره باندې دال دی لکه چه علماء کرامو وئيلي دی چه په یمین غموس کښي کفاره نشته.

[۳۲: ۴] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا الْفَرَّائِيُّ، حَدَّثَنَا الْحَارِثُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنِي كُرْدُوسٌ، عَنِ الْأَشْعَثِ بْنِ قَيْسٍ: أَنَّ رَجُلًا مِنْ كِنْدَةَ، وَرَجُلًا مِنْ حَضْرَمَوْتَ، اخْتَعَمَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أَرْضٍ مِنَ الْيَمَنِ، فَقَالَ الْحَضْرَمِيُّ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ أَرْضِي اغْتَصَبْنِيهَا أَبُو هَذَا، وَهِيَ فِي يَدِهِ، قَالَ: هَلْ لَكَ بَيِّنَةٌ؟ قَالَ: لَا، وَلَكِنْ أَحْلَفُهُ وَاللَّهِ يَعْلَمُ أَنَّهَا أَرْضِي، اغْتَصَبْنِيهَا أَبُوهُ، فَتَهَيَّا الْكِنْدِيُّ لِلْيَمِينِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا يَقْتُلُهُ أَحَدٌ مَّا لَا يَمِينُ، إِلَّا لَقِيَ اللَّهَ وَهُوَ أَجْدَمٌ، فَقَالَ الْكِنْدِيُّ: هِيَ أَرْضُهُ."

داشعث بن قیس نه روایت دی چه دکنده قبیلې یوکس او دحضرموت علاقتي یوکس دزمکې متعلق نبی ﷺ ته فیصله راوړله چه هغه زمکه دیمن په حضرموت کښي و حضري

(۱) سنن النسائي الكبير ۴۷ (۶۰۰۲)، سنن ابن ماجه/الجهاد ۲۹ (۲۸۳۵)، (تحفة الأشراف: ۱۵۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۱۱/۵، ۲۱۲) وباتي هذا الحديث في الأفضية (۳۶۲۲) (صحيح)



اووئیل ای دالله رسوله دده پلار زمازمکه غصب کړې وه او هغه اوس دده سره ده نبی ﷺ او فرمائیل ایا گواهان دي شته ده اووئیل نه مگر قسم به ورکوم الله عالم دي چه دغه زمازمکه ده دده پلاررانه غصب کړې وه، نو کندی قسم کولو ته تیار شو نبی ﷺ او فرمائیل څوک چه په قسم کولو سره دچا مال غصب کړي نو هغه به په قیامت کښې دالله تعالی سره په داسې حالت کښې ملاویري چه لاسونه په ښي په ئې پریکړې شوي وي کندی چه کله دا واوریدل نووئې وئیل یقینا دده زمکه ده.

﴿عن الاشعث بن قيس ان رجلا من كندة ورجلا من حضرموت اختصما الى النبي ﷺ في ارض من اليمن فقال الحضرمي يا رسول الله ﷺ ان ارضي اغتصبينها ابو هذا وهي الخ﴾

اشعث بن قيس ﷺ فرمائی چه په يمن کښې يو زمکه وه چه د هغې په باره کښې ديو رجل کندی او د رجل حضرمي اختلاف او جهگړه شوه، حضرمي مدعی وو او کندی مدعی عليه، حضرمي عرض اوکړو يا رسول الله ﷺ د دي کندی په قبضه کښې چه کومه زمکه ده هغه زما ده د دي کندی پلار هغه زمکه زما نه اخستلې وه، رسول الله ﷺ حضرمي ته اووې تاسره گواهان شته؟ هغه اووې نه، او دا ئې هم او فرمائیل چه زه په دي کندی باندې قسم خوړل غواړم چه هغه په خپل قسم کښې داسې اوئی: قسم په الله ما ته پته نشته چه دا زمکه د حضرمي ده او د دي حضرمي نه زما پلار غصب کړې ده، په دي باندې کندی داسې قسم خوړولو ته تیار شو، رسول الله ﷺ په دروغه قسم خوړلو باندې تخذیر کولو سره او فرمائیل چه کوم انسان په دروغه قسم خوړلو سره د بل مال واخلی نو هغه به د الله پاک سره په داسې حال کښې ملاقات اوکړی چه اجذم به وی (کندی په دي وعید اوریدو سره اویریدو او) وې وئیل چه دا زمکه د هغه ده.

### دلته مصنف درې روایتونه ذکر کړي دي :

د دي حديث راوی اشعث بن قيس ﷺ دي، د دي نه روستو حديث کښې هم دا قسم قصه را روانه ده چه د هغې راوی وائل بن حجر ﷺ دي خو د وائل ﷺ په روايت کښې داسې دي چه حضرمي مدعی دا اووې چه د کندی سره چه کومه زمکه ده هغه زما د پلار وه، چه په هغې باندې دا کندی قابض دي، او په رومي حديث يعنی د اشعث بن قيس ﷺ په روايت کښې دا وو چه حضرمي مدعی دا اووې چه د کندی سره کومه زمکه ده د کندی پلار زما نه قبضه کړې وه دا دواړه روايات په دي خبره باندې متفق دي چه مدعی رجل حضرمي وو او مدعی عليه رجل کندی، او د دي دواړو خلاف د باب رومي حديث د عبدالله بن مسعود ﷺ دي په هغې کښې داسې دي چه خپله اشعث ﷺ وائی چه زما زمکه د يو يهودی په قبضه کښې وه چه د هغې د ورکړې نه هغه انکار کولو او ما هغه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر کړو د فيصلې دپاره، په دي صورت کښې مدعی خپله اشعث بن قيس ﷺ شو او مدعی عليه يهودی شو.

### په روايات ثلاثه کښې تطبيق :

ځان پوهول پکار دي چه په دويم او دريم حديث کښې چه خپل مينځ کښې کوم اختلاف دي هغه خو صرف د صفة ارض په باره کښې دي په يو کښې دا دي چه زما د پلار زمکه وه چه

په هغې باندې دې قابض دې او په یو کښې دا دی چه زما زمکه ده کومه چه د هغه پلار قبضه کړې وه، او د باب په رومبی حدیث یعنی د عبدالله بن مسعود رضی الله عنه والا حدیث چه په هغې کښې مدعی خپله اشعث بن قیس کندی دی او مدعی علیه یهودی دې، او د اشعث بن قیس او وائل بن حجر رضی الله عنهما په حدیث کښې مدعی رجل حضرمی او مدعی علیه رجل کندی دې، سهارنپوری رحمته الله په بذل کښې ډیرو روایتونو لره مخې ته د ډډلو نه پس دا رائي قائم کړې ده چه دا اختلاف دې په تعدد دواقعی باندې محمول کړې شی، د عبدالله بن مسعود رضی الله عنه د حدیث واقعه بیله ده، او کوم احادیث چه روستو ذکر شوې دی هغه نور دی، امام بخاری رحمته الله په خپل صحیح کښې د دې دواړو نه صرف د عبدالله بن مسعود رضی الله عنه والا قصه اخستلې ده.

[۳۲۴۵] (۱) حَدَّثَنَا هَنَادُ بْنُ السَّرِيِّ، حَدَّثَنَا أَبُو الْأَحْوَصِ، عَنْ سِمَاكِ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَائِلٍ بْنِ حُجْرٍ الْحَضْرَمِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: "جَاءَ رَجُلٌ مِنْ حَضْرَمَوْتَ، وَرَجُلٌ مِنْ كِنْدَةَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ الْحَضْرَمِيُّ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ هَذَا غَلَبَنِي عَلَى أَرْضٍ كَانَتْ لِأَبِي، فَقَالَ الْكِنْدِيُّ: هِيَ أَرْضِي فِي يَدَيَّ أَزْرَعُهَا، لَيْسَ لَهُ فِيهَا حَقٌّ، قَالَ: فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلْحَضْرَمِيِّ: أَلَمْ يَبْنِئْ؟ قَالَ: لَا، قَالَ: فَلَمْ يَمِينْهُ؟ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّهُ فَاجِرٌ لَا يَمَالِي مَا حَلَفَ عَلَيْهِ، لَيْسَ يَتَوَرَّعُ مِنْ شَيْءٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَيْسَ لَكَ مِنْهُ إِلَّا ذَاكَ، فَأُطْلِقْ لِيُحْلِفَ لَهُ، فَلَمَّا أَذْبَرَ، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَمَا لَيْنُ حَلَفٍ عَلَى مَالٍ لِيَأْكُلَهُ ظَالِمًا، لِيَلْقِيَنَّ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ وَهُوَ عَنْهُ مُعْرِضٌ."

د وائل بن حجر نه روایت دې فرمائی چه یوکس دحضر موت نه راغې اوبل دکنده قبیلې د علاقې نه او نبی صلی الله علیه و آله ته ئې جگړه راوړله حضري اووئیل ای دالله رسوله یقینا دا کس په ما باندې زورور شوې دې دهغې زمکې په باره کښې کومه چه زما دپلار وه، کنده اووئیل دا زما زمکه ده زما په لاس کښې ده اوزه ئې کرم دده په کښې هیڅ حق نشته وائل وائی نبی صلی الله علیه و آله حضرمی ته او فرمائیل ایاگواهان درسره شته هغه اووئیل نه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل نو بیا به دابل کس ستاپه وړاندې قسم خوري هغه اووئیل ای دالله رسوله دا خو یو بد عمله لوپردې دقسم کولو هیڅ پروا نه ساتي اودهیڅ یوشی نه نه ویریرې نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل ستاددې نه علاوه نور حق نشته دې مگر دا نوهغه روان شو چه قسم اوکړي ده ته چه هرکله ئې شاه کړه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل اوگورئ که چرې څوک دچامال په ظلم سره دغصب کولو دپاره په دروغه قسم اوخوري نو دالله تعالی سره به په داسې حال کښې مخامخ کیږي چه مخ به ئې ترې اړولی وی

حدیث ابن مسعود رضی الله عنه اخرجه البخاری والترمذی ومسلم والنسائی وابن ماجه، وحدیث اشعث بن قیس سکت علیه المنذری، وحدیث وائل بن حجر اخرجه مسلم والترمذی والنسائی، قاله المنذری.

(۱): صحیح مسلم للإیمان ۶۱ (۱۳۹)، سنن الترمذی/الأحكام ۱۲ (۱۳۴۰)، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۱۷/۴) ویأتی هذا الحدیث فی القضا (۳۶۲۳) (صحیح)



## بَاب مَا جَاءَ فِي تَعْظِيمِ الْيَمِينِ عِنْدَ مَنْبَرِ النَّبِيِّ د نبی علیه السلام د منبر خواته په دروغه قسم کول دیره لویه ګناه ده

### تغليظ اليمين بالزمان والمكان :

تعظيم بمعنى تغليظ..... او د ترجمه الباب حاصل تغليظ اليمين بالمكان دي، يعنى قسم لره معظم او غليظ کول د مکان مقدس په ذريعه لکه مسجد يا منبر شريف ته نژدې چاله قسم ورکول، او هم دغه شان تغليظ بالزمان لکه جمعه يا بعد العصر وغيره، تغليظ اليمين بالزمان وى يا بالمكان وى احناف د دې قائل نه دى، شوافع او مالکيان ئې قائل دى، وعن الحنابلة روايات، هسې زمونږد فقهاء کرامو عبارتونه لږ مختلف دى، ففى الدر المختار لا يستحب تغليظ اليمين بزمان ولا مكان، قلت وحاصله الاباحه، وفى البحر، لا يجوز.

[۳۲۴۶] ( ) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ هَاشِمٍ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُسَاطٍ مِنْ آلِ كَثِيرِ بْنِ الصَّلْتِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا يَحْلِفُ أَحَدٌ عِنْدَ مَنْبَرِي هَذَا عَلَى يَمِينِ أُمَّةٍ، وَلَوْ عَلَى سِوَاكَ أَخْضَرَ، إِلَّا تَبَوَّأَ مَقْعَدًا مِنَ النَّارِ، أَوْ وَجَبَتْ لَهُ النَّارُ".

جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلى دى خوك هم داسې نشته چه زما د منبر خواته په دروغه قسم او کړي اگر چه دغه قسم ديوتا زه مسواک دپاره ولي نه وى مگر دې به دخپل ځان دپاره په دوزخ کښې کور جوړ کړي او که داسې ئې او فرمائيل ددغه کس دپاره دوزخ لازم شو.

قوله: ( لا يحلف احد عند منبري هذا على يمين ائمة الخ ) د دې نه په ظاهر کښې تغليظ اليمين بالمكان په فهم کښې راځي د دې جواب زما په ذهن کښې دا دې چه د ( عند منبري ) قيد د واقع په طور دې د تغليظ دپاره نه دې چه د رسول الله صلی الله علیه و آله فيصلې به عموما په مسجد کښې منبر شريف ته نژدې کيدې.

قوله: ( فقد ترجم البخارى فى كتاب العلم باب ذكر العلم والفتيا فى المسجد وترجم ايضا فى كتاب الاحكام باب من قضى ولا عن فى المسجد، قال ابن بطال استحباب القضاء فى المسجد طائفة، وقال مالك هو الامر القديم الخ وفى الهداية ويجلس للحكم جلوسا ظاهرا فى المسجد الخ ) ( تراجم بخارى ص ۳۰۱ ج ۶ ) والحديث اخرجه النسائى وابن ماجه، قاله المنذرى

### بَابُ الْحَلْفِ بِالْأُنْدَادِ

#### په بتانو باندې د قسم کولو بيان

يمين بغير الله بالاجماع ممنوع دې، په کراهه او حرمت کښې اختلاف دې، په دې کښې د ټولو امامانو دواړه اقوال دى، خو د مالکيانو په نزد مشهور کراهه دې، او د حنابلة په نزد تحريم، او هم دا د اهل ظواهر مذهب هم دې، د شوافعو په نزد هم دوه روايتونه دى ځکه چه د امام شافعي رحمه الله نه نقل دى: اخشى ان يكون الحلف بغير الله معصية، فاشار الى التردد، خو د

(۱): سنن ابن ماجه / الاحكام ۹ (۲۳۲۵)، (تحفة الأشراف: ۲۳۷۶)، وقد أخرجه: موطا امام مالك / الأفضية ۸ (۱۰)، مسند احمد (۳/ ۳۴۴) (صحيح)



جمهور اصحابو د امام شافعی رحمہ اللہ په نزد کراهه تنزیهی دي، او علت د منع دا دي چه د یو خیز قسم خوړل د محلف به په غایت تعظیم باندې دلالت کوی والعظمة فی الحقیقة انما هی لله تعالی وحده (الابواب والتراجم ۱۹۲/۶)

[۳۲۴۷] (۱) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ حَلَفَ، فَقَالَ فِي حَلْفِهِ: وَاللَّاتِ، فَلْيَقُلْ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَمَنْ قَالَ لِصَاحِبِهِ: تَعَالَ أَقَامِرُكَ، فَلْيَتَصَدَّقْ بِشَيْءٍ".

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دي فرمائي چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائيلى دي چاچه قسم اوکړو او په خپل قسم کښې ئې اووئيل په لات (بت) مې دي قسم وي نولا اله الا الله دي اوواټی اوچاچه خپل ملگري ته آواز اوکړو راشه چه جواري درسره اوکړم نودې دي څه شي په صدقه کښې ورکړي.

قوله: (من حلف فقال في حلفه: واللّات فليقل لا اله الا الله، ومن قال لصاحبه تعالى اقامرک فليصدق بشي) : څوک چه د لات قسم اوخوری يعنی په طور د سبقت لسان د هغه نه داسې کار اوښو نو چونکه دا صوره شرک دي په دي وجه هغه لره د تدارک دپاره کلمه توحيد وئيل پکار دي، او که يو انسان دا قسم قصداً په طريقه د تعظيم اوخوری په دي صورت کښې خوبه کفر لازم شي او تجديد د ايمان به ضروري وي، د حديث دويم جزء دا دي چه کوم انسان خپل ملگري لره د جواري دپاره راوغواړي نو چونکه دا گناه ده په دي وجه د دي د اثر د ختمولو دپاره صدقه کول پکار دي.

قال الله تعالى : ان الحسنات يذهبن السيئات وقال عليه الصلوة والسلام اذا علمت سيئة فاتبعها حسنة تمحها (هامش البذل)

والحديث اخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجة، وليس في حديث احد منهم بشي، سوى مسلم وحده، قاله المنذري.

### باب في كراهية الحلف بالآباء په پلار او نيکه باندې د قسم کولو د کراهت بيان

[۳۲۴۸] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا عَوْفٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ، وَلَا بِأُمَّهَاتِكُمْ، وَلَا بِالْأَنْدَادِ، وَلَا تَحْلِفُوا بِاللَّهِ، وَلَا تَحْلِفُوا بِاللَّهِ إِلَّا وَأَنْتُمْ صَادِقُونَ".

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دي فرمائي چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائيلى دي قسمونه مه خورئ په پلرونو خپلو اونه په ميندو خپلو اونه په بتانو مگر په الله تعالی باندې او په الله باندې قسم مه خورئ مگر په هغه وخت کښې چه تاسو ريښتوني يئ.

(۱) : صحيح البخاري/ تفسير سورة النجم ۲ (۴۸۶۰)، الأدب ۷۴ (۶۱۰۷)، الاستئذان ۵۲ (۶۳۰۱)، الأيمان ۵ (۶۶۵۰)، صحيح مسلم/ الأيمان ۲ (۱۶۴۸)، سنن الترمذي/ الأيمان ۱۷ (۱۵۴۵)، سنن النسائي/ الأيمان ۱۰ (۳۸۰۶)، سنن ابن ماجة/ الكفارات ۲ (۲۰۹۶)، (تحفة الأشراف: ۱۲۲۷۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۰۹/۲) (صحيح)  
(۲) : سنن النسائي/ الأيمان ۵ (۳۸۰۰)، (تحفة الأشراف: ۱۴۴۸۳) (صحيح)

قوله: ﴿ لا تحلفوا بآبائكم ولا بآمهاتكم ولا بالانداد ﴾: په پلارانو او میانډو باندې قسم خوړل ناجائز او ممنوع دی، او په دې سره یمین منعقد کیږي هم نه د څلورو امامانو په نزد، ابن قدامه فرمائی چې په مخلوق باندې قسم خوړلو سره یمین نه منعقد کیږي ﴿ کالکعبة والانبیاء وسائر المخلوقات وهو قول اکثر الفقهاء ﴾ وړاندې لیکي چې زمونږ د اصحابو په نزد په رسول الله ﷺ باندې یمین منعقد کیږي چې په هغې باندې کفاره واجب ده.

[۳۲۴۹] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "أَدْرَكَهُ وَهُوَ فِي رَكْبٍ، وَهُوَ يَخْلِفُ بِأَيْمِهِ، فَقَالَ: إِنَّ اللَّهَ يَنْهَاكُمْ أَنْ تَخْلِفُوا بِآبَائِكُمْ، فَمَنْ كَانَ حَالِفًا، فَلْيَخْلِفْ بِاللَّهِ أَوْ لَيْسَ كُنْتُ".

د عمر فاروق رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چې نبی ﷺ زه په یو قافله کښې بیاموند م او په خپل پلارنې قسم کولو نبی ﷺ او فرمایل الله تعالی تاسو منع کوي ددې نه چې قسم وخورئ په پلار باندې هر څوک چې قسم کوي نو قسم دي وکړي په الله باندې اویا دې خاموش پاتې شي.

[۳۲۵۰] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: سَمِعَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحْوَ مَعْنَاهُ إِلَى أَبِي أَبِيكُمْ زَادَ، قَالَ عُمَرُ: قَوْلَ اللَّهِ مَا حَلَفْتُ بِهَِذَا ذَاكِرًا وَلَا آثِرًا.

سالم دخپل پلار نه او هغه د عمر رضی الله عنه نه د تیر روایت په شان روایت نقل کړې دې مگر ددې اضافي سره چې عمر رضی الله عنه او وئیل چې بیاما په ټول ژوند کښې چرته په دې څیزو نو باندې په طور د حکایت یا په طور د تذکري قسم نه دې کړې.

﴿ عن ابن عمر رضي الله عنهما عن عمر بن الخطاب رضي الله عنه ان رسول الله ﷺ ادركه وهو في ركب الخ ﴾

### شرح الحديث:

عمر رضی الله عنه خپله واقعہ خپله بیانوي چې زه یو کړت په یو قافله کښې سور اوم، رسول الله ﷺ زه اولیدم چې زه په پلار باندې قسم خورم نو په دې باندې رسول الله ﷺ تنبیہ او فرمایل: که قسم خوړل وی نو د الله پاک په نوم خورئ گڼې خاموشی اوسئ، او په دویم روایت کښې دا زیادت دې ﴿ قال عمر فوالله ما حلفت بهذا ذاکرا ولا اثرا ﴾ هغوی فرمائی چې ما د رسول الله ﷺ د خبرداری نه پس کله هم په پلار باندې قسم نه دې کړې نه ذاکرا او نه اثرا نه د خپل طرف نه او نه د بل د کلام نه نقل کولو سره، یعنی که یو سړی په خپل پلار باندې

(۱) وجزم الدردير المالکي بانه لا ینعقد بالنبي ولا بالكعبة والركن والمقام والعرش الي آخر ما ذکر وفي البدائع لو حلف بشئ من ذلك لا يكون یمینا لانه حلف بغير الله تعالی (تراجم بخاري) وقال ابن الهمام من حلف بغير الله كالنبي والكعبة لم يكن حالفاً أهـ (عون المعبود)

(۲) صحیح مسلم/الایمان ۱ (۱۶۴۶)، (تحفة الأشراف: ۱۰۵۵)، وقد أخرجه: صحیح البخاري/الأدب ۷۴ (۶۱۰۷)، الأیمان ۴ (۶۶۴۷)، سنن الترمذي/الایمان ۸ (۱۵۳۳)، سنن النسائي/الایمان ۴ (۳۳۹۹)، سنن ابن ماجه/الكفارات ۲ (۲۰۹۴)، موطا امام مالك/الندور ۹ (۱۴)، مسند احمد (۱۱/۲، ۳۴، ۶۹، ۸۷، ۱۲۵، ۱۴۲) (صحیح)  
(۳) صحیح البخاري/الایمان ۴ (۶۶۴۷)، صحیح مسلم/الایمان ۱ (۱۶۴۶)، سنن النسائي/الایمان ۴ (۳۷۹۸، ۳۷۹۹)، سنن ابن ماجه/الكفارات ۲ (۲۰۹۴)، (تحفة الأشراف: ۱۰۵۱۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۸/۱، ۳۶) (صحیح)



قسم اوکړو نو هغه ما په خپله ژبه نه دې نقل کړې، د دې جملې متبادر معنی هم دا ده (۱) والحديث أخرجه البخاري ومسلم والنسائي وابن ماجة، قاله المنذري

[۳۲۵۱] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، قَالَ: سَمِعْتُ الْحَسَنَ بْنَ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ، قَالَ: سَمِعَ ابْنُ عُمَرَ رَجُلًا يَخْلِفُ لَأَوَّلِ الْكُفَّةِ، فَقَالَ لَهُ ابْنُ عُمَرَ: إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "مَنْ حَلَفَ بِغَيْرِ اللَّهِ فَقَدْ أَشْرَكَ".

د سعید بن عبید رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه ابن عمر رضی اللہ عنہما د یوکس نه په کعبه قسم واوریدل نو ورته ئې او فرمائیل مادنبي صلی اللہ علیہ وسلم نه اوریدلي دي چه فرمائیل ئې خوک چه د الله نه علاوه دبل چا په نوم باندې قسم وخوري نوده شرك وكړو.

[۳۲۵۲] (۲) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْعَتَكِيُّ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ الْمَدَنِيُّ، عَنْ أَبِي سُهَيْلٍ نَافِعِ بْنِ مَالِكِ بْنِ أَبِي عَامِرٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ سَمِعَ طَلْحَةَ بْنَ عُبَيْدِ اللَّهِ يَعْزِي فِي حَدِيثِ قِصَّةِ الْأَعْرَابِيِّ، قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَفْلَحَ وَأَبِيهِ إِنْ صَدَقَ دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَأَبِيهِ إِنْ صَدَقَ".

مالك بن ابی عامر دخپل پلار نه روایت کوی چه د طلحه بن عبید الله نه مې په هغه حديث کښې اوریدلی دی په کوم کښې چه دا عرابی قصه ده نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلی وو دې کامیاب شو دده په پلاري دي قسم وي که چرې دې ريښتوني وي نو جنت ته به داخل شي، دده په پلاري دي قسم وي کچرې دې ريښتوني وي.

(۳) انه سمع طلحة بن عبيد الله رضی اللہ عنہ يعزى فى قصة الاعرابى قال النبى صلی اللہ علیہ وسلم افلح وابيه الخ

دا حديث د کتاب الصلوة په شروع کښې تير شوي دي وكذا الكلام عليه فارجع اليه لو شئت.

### باب فى گراهية الحلف بالأمانة

په امانت باندې د قسم کولود مکروه والى بيان

حلف بالامانة منعقد کيږي يا نه؟ د حنابله په نزد په دې باندې قسم منعقد کيږي بان يقول وامانة الله او بالامانة (مغنی) او خطابى د امام شافعى رحمته الله مسلك عدم انعقاد د يمين ليکلي دي، او د احنافو په دې کښې دوه روايتونه دي انعقاد او عدم انعقاد، د انعقاد وجه خو دا ده چه امانت هم د الله پاک د صفتونو نه يو صفت دې اذ الامين من اسمائه تعالى او د عدم

۱) شراح د دې جملې دوه معنې نورې ليکلي دي ۲: دا دواړه الفاظ هم معنی دی یعنی ارادة وقصدا وعلي هذا ذاکرا من الذکر (بالضم) ضد النسيان وأثرا من الأثر اي الاختيار وفي المعنى الاول أثرا من الأثر بمعني النقل ۳: دريمه معنی دا ليکلي شوي ده چه أثرا اي مفتخرا بالأباء الاثار بمعني الافتخار والاکرام یعنی په پلار باندې مو قسم په طور د فخر علی الاباء کله هم نه د بخورلي (کما يفعل في الجاهلية، بل علي سبيل الجري علي اللسان) اوس خلاصه د دې معانی ثلاثه دا شوه: ۱: قصدا نه د خپل طرف نه او نه د بل د طرف نه دنقل په طور. ۲: ارادة واختيارا بخلاف النسيان چه د هغې نفی نشته، ۳: د پلار قسم مو چرته هم نه دې خورلي نه مطلقا او نه مفتخرا نه د تفاخر په طور او نه هم داسې، (يستفاد هذه المعاني من حاشيته الترمذي)

۲: سنن الترمذي الإيمان ۸ (۱۵۳۵)، (تحفة الأشراف: ۷۰۴۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۳۴، ۵۸، ۶۰، ۶۹، ۸۶، ۱۲۵) (صحيح) ۳: صحيح البخاري الإيمان ۳۴ (۴۶)، والصوم ۱ (۱۸۹۱)، والشهادات ۲۶ (۲۶۷۸)، والحيل ۳ (۶۹۵۶)، صحيح مسلم الإيمان ۲، (۱۱)، سنن النسائي الصلاة ۴ (۴۵۹)، الصوم ۱ (۲۰۹۲)، (تحفة الأشراف: ۵۰۰۹)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/لصبر الصلاة ۲۵ (۹۴) (وهو قطعة من حديث تقدم في أول الصلاة برقم ۳۹۱)



انعقاد وجه امانت په معنی د عبادت او فریضی راځی. (بذل)

[۳۲۵۳] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ ثَعْلَبَةَ الطَّائِيُّ، عَنِ ابْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ حَلَفَ بِالْأَمَانَةِ، فَلَيْسَ مِنَّا".

ابو بردة دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه نبی کریم ﷺ فرمائیلي دي: څوک چه په امانت قسم وکړي هغه زمونږ نه دي.

قوله: (من حلف بالامانة فليس منا) د دې حديث تقاضه دا ده چه حلف بالامانة نه دی منعقد کيدل پکار، ممنوع دې څنگه چه حلف بالآباء ممنوع دې، خو چونکه حلف بالامانت د ډيرو ائمه په نزد منعقد کيږي په دې وجه به وئيلي شي چه په حديث کښي ممانعت د تشبه باليهود د وجې نه دي.

### بَابُ الْمَعَارِضِ فِي الْيَمِينِ په قسم کولو خپله دفاع کول

[۳۲۵۵] (۲) حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ عَبَادِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَمِينُكَ عَلَى مَا يَصْدَقُكَ عَلَيْهَا صَاحِبُكَ". قَالَ مُسَدَّدٌ: قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي صَالِحٍ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هُمَا وَاحِدٌ: عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي صَالِحٍ، وَعَبَادُ بْنُ أَبِي صَالِحٍ.

د ابو هريره رضی الله عنه روایت دي فرمائی چه رسول پال ﷺ فرمائیلي دي: ستا قسم لړ اعتبار په هغه شي کښي دي په کوم شي کښي چا ستا ملگري ستا تصديق وکړي. مسدد وائي چه مات عبد الله بن أبي صالح خبر را کړي دي. ابو داود وافي چه عبد الله بن أبي صالح او عباد بن أبي صالح دواړه د يو کس نومونه دي.

معارض جمع ده د معراض چه اخستلي شوې دي د تعريض نه، تعريض يعنی ضد التصريح، په اشاره او کنایه سره خبره کول.

(عن ابی هريرة رضي الله عنه قال قال رسول الله ﷺ يمينك على ما يصدقك عليها صاحبك)

دا خطاب حالف يعنی مدعی عليه ته دي او د صاحب نه مراد د دې مقابل او خصم يعنی مدعی دي، يعنی په کوم خيز باندې چه مدعی قسم ورکول غواړي هم په هغې باندې به قسم محمول وي، دا نه ده چه د دروغونه د بچ کيدو دپاره مدعی عليه د قسم په وخت بل څه نيت او کړي.

په دې حديث کښي د ديانت او رشتيا وئيلو تعليم او ترغيب دي او د معاريضو نه گويا منع کړې شوې ده چه انسان د قسم خوړلو په وخت توریه او کړي، خو علماء کرامو ليکلي دي چه که مدعی عليه مظلوم وي نو بيا د ظلم نه د بچ کيدو دپاره توریه جائز ده لکه چه په راوان حديث کښي راځي.

۱: تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۲۰۰۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۵۲/۵) (صحيح)

۲: صحيح مسلم الأيمان ۴ (۱۶۵۳)، سنن الترمذي الأحكام ۱۹ (۱۳۵۴)، سنن ابن ماجه الكفارات ۱۴ (۲۱۲۰)، (تحفة الأشراف: ۱۲۸۲۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۲۸/۲)، سنن الدارمي/الندور ۱۱ (۲۳۹۴) (صحيح)

[۳۲۵۶] حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُحَمَّدٍ النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزَّيْتَرِيُّ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ الْأَعْلَى، عَنْ جَدِّهِ، عَنْ أَبِيهِ سُوَيْدِ بْنِ حَنْظَلَةَ، قَالَ: "خَرَجْنَا نُرِيدُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَمَعَنَا وَإِيلُ بْنُ حُجْرٍ، فَأَخَذَهُ عَدُوُّهُ، فَخَرَجَ الْقَوْمُ أَنْ يَحْلِفُوا، وَحَلَفْتُ أَنَّهُ أَخِي، فَخَلَّى سَبِيلَهُ، فَأَتَيْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَخْبَرْتُهُ أَنَّ الْقَوْمَ تَخَرَّجُوا أَنْ يَحْلِفُوا، وَحَلَفْتُ أَنَّهُ أَخِي، قَالَ: صَدَقْتَ الْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ."

دسويد بن حنظله رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چې مون نبي صلی الله علیه و آله ته ورتلواو وائل بن حجر هم راسروو، ده لره دده یو دشمن په لاره کښې اود رو اوزمونږ ملگرو دا خبره بده وگنډله چې په دروغه قس وکړي او ما دا قسم وکړو چې دا زما ورور دې نوبی هغوی ده لره پریخودو، کله چې مونږ دنبي علیه السلام په خدمت کښې حاضر شو نو واقعه مو ورته بیان کړ او ورته مې ووئیل چې زموږ ملگرو قسم ونکر مگر ما قسم وکړو چې دې زما ورور دې نوبیاتي دې پریخودو، نبي صلی الله علیه و آله چې دا واوریدل نو اوت فرمائیل: تاربتیا وئیلی دی یو مسلمان دبل مسلمان ورور وی.

«عن سويد بن حنظلة رضي الله عنه قال خرجنا نريد رسول الله صلی الله علیه و آله ومعنا وائل بن حجر الخ»

سويد بن حنظله رضي الله عنه فرمائی چې مونږ د خپل وطن نه اوتلو او مونږ سره وائل بن حجر رضي الله عنه هم وو هغوی لره د هغوی یو دشمن اونیولو، ما دشمن ته قسم اوخوړلو چې دا زما ورور دې په دې باندي دشمن هغه پریخودلو، نورو خلقو خو د قسم خوړلو نه ځان اوساتلو د گناه د ویرې نه، بیا چې کله مونږ د رسول الله صلی الله علیه و آله په خدمت کښې حاضر شو نو هغه رسول الله صلی الله علیه و آله ته دا قصه واوروله نو هغوی زما تائید او فرمائیلو «صدقتم المسلم اخو المسلم».

په دې حدیث کښې د ظلم نه د بچ کیدو دپاره د توريه اجازت معلوم شو. حدیث ابی هريرة رضي الله عنه اخرجہ مسلم والترمذی وابن ماجه، وحدیث سويد اخرجہ ابن ماجه، قاله المنذرى

### بَاب مَا جَاءَ فِي الْحَلْفِ بِالْبَرَاءَةِ وَبِمَلَّةٍ غَيْرِ الْإِسْلَامِ

د اسلام نه په بیزارۍ سره او په بل دین کښې په داخیدلو د قسم ورکولو بیان

د ترجمه الباب تشریح او ذکر د اختلاف النسخ

په اکثر نسخو کښې هم دغه شان دی او په بعض نسخو کښې ترجمه الباب داسې دې، «ما جاء في الحلف بالبراءة وبملة غير الاسلام» او هم دا نسخه صحیح ده، په دې صورت کښې د ترجمه الباب دوه اجزاء شو اول «حلف البراءة، ای عن الاسلام» او دویم «جزء حلف بملة غير الاسلام» پس د باب رومبې حدیث کښې د ترجمه الباب دویم جزء مذکور دې، «من حلف بملة غير الاسلام كاذبا فهو كما قال» د دې مثال به دا وی ان فعلت كذا فانا يهودى او نصرانى په دې کښې قسم غیر اسلام باندي خوړلې شی، او د باب په دویم حدیث کښې د ترجمې جزء اول موجود دې. «من حلف فقال انى بري من الاسلام فان كان كاذبا فهو كما قال» مثلاً داسې قسم اوخوری چې که زه فلانې کار اوکړم نوزه به د اسلام نه بری یم، اوس پاتې شوه دا چې د دې دواړو مسئلو په باره کښې فقهاء کرام څه فرمائی د دې جواب دا دې چې د

۱: سنن ابن ماجه/الكفارات ۱۴ (۲۱۱۹)، (تحفة الأشراف: ۴۸۰۹)، وقد أخرج: مسند احمد (۷۹/۴) (صحیح)



امام مالک رحمہ اللہ او شافعی رحمہ اللہ په نزد په دې دواړو صیغو سره یمین نه منعقد کیږي او نه کفارو واجب کیږي خو دغه شان قسم خوړونکې بهر حال گناه گار دې. که رشتیا وائی او که دروغ، او د احنافو او حنابلو په دواړو صیغو سره یمین منعقد کیږي او کفارو واجب کیږي. او کوم ترجمه الباب چه زمونږ په نسخه کښې دې د دې خو به مطلب دا وی چه قسم خوړل د ملت غیر اسلام نه د براءت مثلاً داسې وائی چه که زه فلانې کار او کړم نو د غیر اسلام نه بری یم، داسې خو هیڅوک قسم نه خوري، او د غیر اسلام نه خو هر مسلمان بری وی او که بالفرض څوک داسې قسم او خوري نو په دې کښې د وعید هیڅ خبره نشته، حال دا چه په حدیث کښې وعید ذکر دې «فتد بر وتامل فان هذه الترجمة دقيقة مشكلة لاجل اختلاف النسخ» په صحیح بخاری کښې د ترجمې عبارت داسې دې «باب من حلف بملة سوى الاسلام»

[۳۲۵۷] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو تَوْبَةَ الرَّبِيعُ بْنُ نَافِعٍ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ سَلَامٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو قِلَابَةَ، أَنَّ ثَابِتَ بْنَ الضَّحَّاكِ، أَخْبَرَهُ، أَنَّهُ بَايَعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ حَلَفَ بِمِلَّةٍ غَيْرِ مِلَّةِ الْإِسْلَامِ كَاذِبًا فَهُوَ كَمَا قَالَ، وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِشَيْءٍ عَذِبَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَلَيْسَ عَلَى رَجُلٍ نَذْرٌ فِيمَا لَا يَمْلِكُهُ".

د ابو قلابه نه روایت دې فرمائی چه ثابت بن الضحاک راته وئیلی دی چه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم سره مې دوني دلاندې بیعت کړې وو اونبې صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلي رو څوک چه د اسلام نه علاوه په بل دین کښې د داخلیدلو دپاره قسم او خوري اودده قسم په دروغه وي نودې به داسې شي لکه څرنګه چه ده وئیلی دي (اسلام نه به خارج شي او څوک چه خپل ځان په یوشی باندې مړ کړي عذاب به ورکولې شي ده ته په ورځ د قیامت په دغه شي باندې اونذر پوره کول نشته دې په هیچا باندې په هغه څه کښې کوم چه دده په اختیار کښې نه دي.

[۳۲۵۸] (۲) حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ الْحَبَابِ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ يَحْيَى ابْنُ وَاقِدٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بَرِيدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ حَلَفَ، فَقَالَ: إِنِّي بَرِيءٌ مِنَ الْإِسْلَامِ، فَإِنْ كَانَ كَاذِبًا، فَهُوَ كَمَا قَالَ، وَإِنْ كَانَ صَادِقًا، فَلَنْ يَرْجِعَ إِلَى الْإِسْلَامِ سَالِمًا".

عبد الله بن بريد د خپل پلار نه روایت کوي فرمائی چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلي دی چاچه قسم او کړو په دې خبره چه زه بيزاره یم د اسلام نه ترکه چرې دې دروغ ژن وي نودې داسې شو لکه څنګه چه ده وئیلی دی او که چرې ريښتوني وي نو اسلام کښې په سلامتيا سره نه شي داخلیدلې.

(۱): صحیح البخاري/الجنائز ۸۳ (۱۳۶۳)، الأدب ۴۴ (۶۰۴۷)، ۷۳ (۶۱۰۵)، الايمان ۷ (۶۶۵۲)، صحیح مسلم/الايمان ۴۷ (۱۱۰)، سنن الترمذي/الايمان ۱۵ (۱۵۴۳)، سنن النسائي/الايمان ۶ (۳۸۰۱)، سنن ابن ماجه/الكفارات ۳ (۲۰۹۸)، تحفة الأشراف: ۲۰۶۲، ۲۰۶۳، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۴، ۳۳/۴) (صحیح)  
(۲): سنن النسائي/الايمان ۷ (۳۸۰۳)، سنن ابن ماجه/الكفارات ۳ (۲۱۰۰)، (تحفة الأشراف: ۱۹۵۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۵۶، ۳۵۵/۵) (صحیح)



## بَابُ الرَّجُلِ يَحْلِفُ أَنْ لَا يَتَّأَمَّ

د ترکاری په نه خوړلو باندې د قسم کولو بیان

او په بعض نسخو کښې «ان لا ياتدم» دې، او موافق د قیاس هم دا دې لکه چه په کتاب الطهارة «ان تتر» «او تتر» په تحقیق کښې تیر شوې دی، په صحیح بخاری کښې هم داسې دی «اذا حلف ان لا ياتدم» دا د ادام نه اخستلې شوې دې چه د هغې معنی د ترکاری ده.

[۳۲۵۹] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ الْعَلَاءِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ، عَنْ يُوسُفَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ، قَالَ: "رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَضَعَ تَمْرَةً عَلَى كِسْرَةٍ، فَقَالَ: هَذِهِ إِدَامُ هَذِهِ".

د یوسف بن عبدالله نه روایت دې فرمائی چه مانبي علیه السلام اولیدو چه دودې په یوه قطره باندې ئې کجوره ایښودلې وه او وئیل ئې چه دا ددې ترکاری ده. دا حدیث هارون بن عبدالله بیان کړې دې.

الكلام على الحديث من حيث الفقه :

قوله: «رايت النبي ﷺ وضع تمرة على كسرة فقال هذه ادام هذه» يعنى يو كرت رسول الله ﷺ په لاس مبارك كښې د دودې تکره اخستلو سره په هغې باندې كهجوره كيخودله او وې فرمائيل او وې فرمائيل دا د دې دودې ترکاری ده. يعنى د ضرورت په وخت كښې د كهجورې نه د ترکاری كار اخستلې كيدې شى، د رسول الله ﷺ مقصد مسئله بيانول نه دى، پاتې شوه دا خبره چه مسئله څه ده پس پيژندل پكار دى چه په دې كښې د امام محمد ﷺ او شيخينو اختلاف دې، شيخين فرمائي: الادام ما يصطبغ به الخبز، اذا اختلط به كخل وزيت، لا اللحم والبيض، يعنى ترکاری هغه خيز دې چه كله دودې د هغې سره اولگولې شى نو دودې د هغې په رنگ كښې رنگ شى لكه سرکه او د زيتونو تيل، او د امام محمد ﷺ راڼي دا ده چه: الادام ما يوكل مع الخبز غالبا..... يعنى كوم خيز چه عام طور سره د دودې تابع كولو سره خوړلې شى هغه ادام دې كه دودې پكښې رنگ شى او كه نه شى، لهذا كوم خيز چه عام طور سره ځانله خوړلې شى مستقلا لكه تمر او زبيب او بطيخ وسائر الفواكه ليس اداما، او كه په څه مقام كښې په دې ميوو كښې يو ميوه تبعاً للخبز خوړلې شى نو په هغه مقام كښې به ورته ادام وئيلې شى د عرف اعتبار كولو سره، كذا فى الدر المختار، علامه عيني ﷺ فرمائي: ويقول محمد قالت الائمة الثلاثة الشافعي ومالك واحمد.

(من الابواب والتراجم)

دمذاهبو د دې بيان نه معلومه شوه چه د دودې دپاره تمر په ائمه اربعه كښې د چا په نزد هم ادام نه دې، ځكه چه عربو كښې كهجورې غالبا مسقلا خوړلې شى، او په دې كښې دودې هم نه شى رنگ كيدلې، لهذا د حديث جواب هم هغه دې كوم چه پورته په شرح د حديث كښې مونږ ليكلي دي. والمحدث اخرجه الترمذى قاله المنذرى

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۸۵۴) وباتي هذا الحديث في الأطعمة (۳۸۳۰) (ضعيف)

[۳۲۶۰] (۱) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا عُمرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي يَحْيَى، عَنْ يَزِيدَ الْأَعْوَرِ، عَنْ يَوْسُفَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ، مِثْلَهُ.

بریده بن الاعور دیوسف بن عبد الله بن سلام نه دتیرشوی روایت په شان روایت بیان کړې دي.

### باب الإِسْتِثْنَاءِ فِي الْيَمِينِ په قسم کښي دان شاء الله ونيلو بيان

[۳۲۶۱] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمرَ، يَتْلُو بِهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ، فَقَالَ: إِنْ شَاءَ اللَّهُ، فَقَدْ اسْتَثْنَى."

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائي چه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل چاچه په کوم کار باندې قسم او کړو او بیا ئې انشاء الله او وئیل نوده دخپل قسم نه استثناء وکړله.

قوله: «من حلف على يمين فقال ان شاء الله فقد استثنى» د یمین اطلاق کله په محلفو علیه باندې هم کیږي مجازا لکه چه په دي حدیث کښي دي، یعنی کوم سړي چه په یو خبره باندې قسم کولو سره ان شاء الله اوائی نو هغه به نه حاث کیږي په دي شرط چه دا استثناء یعنی ان شاء الله وئیل متصلا وي، د دي اتصال د قید بیان روستو په «باب الحالف يستثنى بعد ما يتكلم» کښي را روان دي. والمحدث أخرجه الترمذي والنسائي وابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۲۶۲] (۳) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى، وَمُسَدَّدٌ، وَهَذَا حَدِيثُهُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ حَلَفَ فَأَسْتَثْنَى، فَإِنْ شَاءَ رَجَعُ، وَإِنْ شَاءَ تَرَكَ غَيْرَ جُنْثٍ."

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائي چه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل چاچه په کوم کار باندې قسم او کړو او بیا ئې انشاء الله او وئیل نوده دخپل قسم نه استثناء وکړله نوکه دده خوښه وي نو خپل قسم دي پوره کړي او که خوښه ئې وي نه دي پوره کوي او دي به په قسم کښي دروغ ژن نه وي.

### باب مَا جَاءَ فِي يَمِينِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا كَانَتْ د نبی علیه السلام د قسم بیان

[۳۲۶۳] (۴) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمرَ، قَالَ: "أَكْثَرُ مَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَحْلِفُ، بِهَذِهِ الْيَمِينِ: لَا وَمُقَلِّبِ الْقُلُوبِ."

(۱): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۱۸۵۴) (ضعيف)

(۲): سنن الترمذي/الأيمان ۷ (۱۵۳۱)، سنن النسائي/الأيمان ۱۸ (۳۸۲۴)، ۳۹ (۳۸۵۹)، سنن ابن ماجه/الكفارات ۶ (۲۱۰۶)، (تحفة الأشراف: ۷۵۱۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۷۲، ۱۰، ۴۸، ۴۹، ۶۸، ۱۲۶، ۱۲۷، ۱۵۳)، دي/النذور ۷ (۲۳۸۸) (صحيح)

(۳): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۷۵۱۷) (صحيح)

(۴): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۵۰۳)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/القدر ۱۴ (۶۶۱۷)، والأيمان ۳ (۶۶۲۸)، والترحيد ۱۱ (۷۳۹۱)، سنن الترمذي/الأيمان ۱۲ (۱۵۴۰)، سنن النسائي/الأيمان ۱ (۳۷۹۳)، سنن ابن ماجه/الكفارات (۲۰۹۲) مسند احمد (۱۲۷، ۶۸، ۶۷، ۲۶۷۲) (صحيح)



دعبدالله بن عمر رضی اللہ عنہ نہ روایت دی فرمائی چه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم قسم به اکثر داسی وو" لا، ومقلب القلوب" یعنی دزرونوپه بدلونکی باندی می دی قسم وی

[۳۲۶۴] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا وَكَيْعٌ، حَدَّثَنَا عِكْرَمَةُ بْنُ عَمَّارٍ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ شُمَيْعٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ: "كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اجْتَهَدَ فِي الْيَمِينِ، قَالَ: وَالَّذِي نَفْسُ أَبِي الْقَاسِمِ بِيَدِهِ".

دابوسعيد خدری رضی اللہ عنہ نہ روایت دی فرمائی چه کله به نبی صلی اللہ علیہ وسلم په قسم کنبی تاکيد کولو نوداسی به ئې فرمائیل "والذي نفس أبي القاسم بيده" زمادي قسم وي په هغه ذات دچاپه لاس کنبی چه دابو القاسم روح دی.

[۳۲۶۵] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي رِزْمَةَ، أَخْبَرَنِي زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ هَلَالٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: "كَانَتْ يَمِينُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، إِذَا حَلَفَ، يَقُولُ: لَا، وَأَسْتَغْفِرُ اللَّهَ".

محمد بن هلال دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه دابوهريره رضی اللہ عنہ نه می اوریدلي دي چه فرمائیل ئې کله چه به نبی صلی اللہ علیہ وسلم قسم کولونوداسی به ئې فرمائیل "لا، وأستغفر الله" یعنی داسی نه ده دالله تعالی نه بخښنه غواړم.

یعنی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم به زیات تر په کومو الفاظو باندې قسم کولو، د باب د رومبی حدیث نه معلومیږي چه هغه لفظ (لا ومقلب القلوب) دی او په دریم حدیث کنبی (لا واستغفر الله) په (لا ومقلب القلوب) کنبی دوه احتمالات دی یو دا چه لا زائد ده او دویم دا چه لا تعلق د مضمون سابق سره دی یعنی د کلام دوران کنبی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل: داسی نه ده (ومقلب القلوب)، په دې صورت کنبی به په لا باندې سخته کول وی، او په (لا واستغفر الله) کنبی دا خبره متعین ده چه دلته مقسم به محذوف دی یعنی (لا والله، استغفر الله) او د باب په دویم حدیث کنبی دا دی چه کله به رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په څه خبره باندې مبالغه کولو سره قسم کولو نو داسی به ئې فرمائیل (لا والذي نفس أبي القاسم بيده) څلورم حدیث دی (قال دلهم وحدثيه ايضا الاسود بن عبدالله بن عاصم بن لقيط ان لقيط بن عاصم)

[۳۲۶۶] (۳) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْزَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عَيَّاشٍ السَّمْعِيُّ الْأَنْصَارِيُّ، عَنْ دَهْمِ بْنِ الْأَسْوَدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حَاجِبٍ بْنِ عَامِرِ بْنِ الْمُتَنَفِّقِ الْعُقَيْلِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَمِّهِ لَقِيطِ بْنِ عَامِرٍ، قَالَ دَهْمٌ، وَحَدَّثَنِيهِ أَيْضًا الْأَسْوَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ لَقِيطٍ، أَنَّ لَقِيطَ بْنَ عَامِرٍ خَرَجَ وَافِدًا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ لَقِيطٌ: فَقَدِمْنَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَذَكَرَ حَدِيثًا فِيهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَعَنَ إِيَّاكَ".

عاصم بن لقيط دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه لقيط بن عامر په يوفد کنبی نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته لاړو لقيط وائی کله چه مونږ نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته ورسیدو..... بیا راوی یواوړد حدیث

۱: تفرد به أبوداود، (تحفة الأشراف: ۴۰۸۶)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۶۶، ۶۷) (ضعيف)

۲: سنن ابن ماجه/الكفارات ۱ (۲۰۹۳)، (تحفة الأشراف: ۱۴۸۰۲)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۲۸۷/۲) (ضعيف)

۳: تفرد به أبوداود، (تحفة الأشراف: ۱۱۱۷۷)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱۲/۴) (ضعيف)

ذکر کړو په هغې کښې وو چه نبی ﷺ او فرمائیل "لَعمر إلهک" یعنی ستا په حق معبود باندې دي زما قسم وي.

### د سند تحقیق :

دلهم بن الاسود کوم چه د سند حدیث راوی دې هغه دا حدیث په دوه طریقو سره روایت کوی، رومبئ طریقه دا ده دلهم بن الاسود عن ابيه عن عمه لقيط بن عامر، یعنی دلهم روایت کوی د خپل پلار اسود نه او اسود روایت کوی د خپل تره لقيط بن عامر نه.

او دویم طریق دا دې دلهم بن الاسود عن ابيه عن عاصم بن لقيط عن عاصم یعنی دلهم روایت کوی د اسود نه او اسود روایت کوی د عاصم بن لقيط نه او عاصم روایت کوی د لقيط بن عاصم نه، خو حضرت په بذل کښې لیکلې دی چه ما سره چه کوم د رجال کتابونه موجود دی په هغې کښې ما لقيط بن عاصم هېڅ یو راوی بیا موندلې نه دې، پس کیدې شی چه دا تحریف وی او صحیح لقيط بن عامر وی وهولقيط بن صبرة بن عامر، والله تعالی اعلم ﴿خرج وافدا الى النبي ﷺ الخ﴾

لقيط وائی چه زه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې قاصد جوړیدو سره لارم، وړاندې مصنف ﷺ فرمائی اختصاراً چه د دې نه پس لقيط حدیث ذکر کړو چه په هغې کښې دا دی چه رسول الله ﷺ او فرمائیل ﴿لَعمر إلهک﴾ ستا د معبود په بقاء باندې قسم، د عمر نه بقاء مراد ده کوم چه د الله پاک صفت دې، لکه په قرآن کریم کښې دی ﴿لَعمرک انهم لفي سكرتهم يعمهون﴾ اوس دا چه په ﴿لَعمر الله يا لعمر إلهک﴾ سره یمین منعقد کیږي یا نه؟ جواب دا دې چه د احنافو او مالکیانو په نزد منعقد کیږي، او امام شافعی ﷺ فرمائی چه که هغه دا د یمین په نیت او وې نو بیا خو به یمین وی گڼي نه به وی، او د امام احمد ﷺ نه دواړه روایتونه دی، ﴿کما فی النمل﴾ (کذا فی هامش البذل).

فانده : امام بخاری ﷺ هم داسې باب قائم کړې دې ﴿باب کیف کان یمین النبی ﷺ﴾ حافظ ابن حجر ﷺ لیکي، یعنی هغه الفاظ په کوم سره چه به رسول الله ﷺ همیشه قسم خوړلو یا اکثر، او مجموعه د هغې کومه چه په هغه باب کښې مذکور ده څلور الفاظ دی، ۱: ﴿والذی نفسی بیده﴾ او هم دغه شان ﴿والذی نفس محمد بیده﴾ په دې کښې د بعض په شروع کښې لا ده او د بعض په شروع کښې لفظ اما او د بعض په شروع کښې لفظ ایم. ۲: ﴿لا ومقلب القلوب﴾ ۳: والله. ۴: ورب الکعبة والاول اکثرها ورودا آه.

او حافظ ابن قیم ﷺ یو ځاني کښې لیکلې دی چه د رسول الله ﷺ نه قسم خوړل د اتیان په زیاتو ځایونو کښې منقول دی فی اکثر من ثمانین مواضع..... وامره الله تعالی بالحلف علی تصدیق ما اخبر به فی ثلاثة مواضع : فی سورة یونس وسبا والتغابن آه (الابواب والتراجم مختصراً)



## بَابُ الرَّجُلِ يُكْفِرُ قَبْلَ أَنْ يُحْنَثَ

باب په بیان دهغه کس کښې چه کفارو ورکړی مخکښې د حانث کیدو نه

## بَابُ الْحَنْثِ إِذَا كَانَ خَيْرًا

کله چه خیر بل طرف ته وی د قسم ماتول پکار دی

[٣٢٧٦] حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا غِيلَانُ بْنُ جَرِيرٍ، عَنْ أَبِي بَرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "إِنِّي وَاللَّهِ إِنْ شَاءَ اللَّهُ لَا أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ، فَأَرَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا، إِلَّا كَفَرْتُ عَنْ يَمِينِي، وَأَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ، أَوْ قَالَ: إِلَّا أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ، وَكَفَرْتُ بِيَمِينِي."

ابو برده دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی نبی ﷺ فرمائیلی دی کله چه زه په یوه خبره قسم وکړم او خیر دهغې نه خلاف وی نوزه خپل قسم ماتوم او کفارو ورکوم او هغه شې اختیاروم په کوم کښې چه خیر وي.

﴿ عَنْ أَبِي بَرْدَةَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ إِنِّي وَاللَّهِ إِنْ شَاءَ اللَّهُ لَا أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ فَأَرَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا إِلَّا كَفَرْتُ بِيَمِينِي وَاتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ ﴾

رسول الله ﷺ فرمائی چه والله زما دا طریقه ده چه که زه په یو خیز باندې قسم او خورم او بیا د هغې غیر لره د هغې نه غوره او گنرم نوزه د خپل یمین کفارو ادا کوم او هغه کار کوم چه خیر وی هغه کوم. په دې کښې د راوی شک دې چه یا خور رسول الله ﷺ داسې او فرمائیل او یا ئې داسې فرمائیلې وو چه زه هغه کار خیر کوم او د قسم کفارو ادا کوم (په دې دواړو کښې د تقدیم او تاخیر فرق دې، په رومبئ جمله کښې د یمین کفارو اول ذکر شوې ده او د هغه کار خیر کول روستو ذکر شوې دی، او په دویمه جمله کښې ترتیب د دې برعکس دې.

[٣٢٧٧] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ الْبَزَّازُ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ، وَمَنْصُورٌ يَعْنِي ابْنَ زَادَانَ، عَنْ الْحَسَنِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ: قَالَ لِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَا عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ، إِذَا حَلَفْتَ عَلَى يَمِينٍ، فَرَأَيْتَ غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا، فَأَتِ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ، وَكُفِّرْ بِيَمِينِكَ" قَالَ أَبُو دَاوُدَ: سَمِعْتُ أَحْمَدَ يَرْخِصُ فِيهَا الْكُفَّارَةَ قَبْلَ الْحَنْثِ.

د عبد الرحمن بن سمره رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ راته او فرمائیل ای عبد الرحمن بن سمره کله چه په یوه خبره قسم او کړو او خیر دهغې نه مخالف وو نو ته هم هغه اختیار کړه او دخپل قسم کفارو ادا کړه. امام ابو داود وئیلی دی چه امام احمد بن حنبل د حانث کیدو نه مخکښې د قسم کفارو ادا کول درست گنري.

١: صحيح البخاري/الخميس ١٥ (٣١٣٣)، المغازي ٧٤ (٤٣٨٥)، الصيد ٢٦ (٥٥١٧)، الإيمان ١ (٦٦٢١)، ٤ (٦٦٤٩)، ١٨ (٦٦٨٠)، كفارات الإيمان ٩ (٦٧١٨)، ١٠ (٦٧١٩)، التوحيد ٥٦ (٧٥٥٥)، صحيح مسلم/الإيمان ٣ (١٦٤٩)، سنن النسائي/الإيمان ١٤ (٣٨١١)، سنن ابن ماجه/الكفارات ٧ (٢١٠٧)، (تحفة الأشراف: ٩١٢٢)، وقد أخرجه: مسند احمد (٣٩٧٤، ٤٠١، ٤٠٤، ٤١٨) (صحيح)

٢: صحيح البخاري/الإيمان ١ (٦٦٢٢)، كفارات الإيمان ١٠ (٦٧٢٢)، الأحكام ٥ (٧١٤٦)، ٦ (٧١٤٧)، صحيح مسلم/الإيمان ٣ (١٦٥٢)، سنن الترمذي/الإيمان ٥ (١٥٢٩)، سنن النسائي/آداب القضاة ٥ (٥٣٨٦)، (تحفة الأشراف: ٩٦٩٥)، وقد أخرجه: مسند احمد (٦١/٥، ٦٢، ٦٣)، دي/النذور ٩ (٣٢٩١) (صحيح)

## تقديم الكفارة على الحنث :

او دا مسئله خپله مختلف فيه ده يعنى د كفاره قبل الحنث جواز او عدم جواب كوم چه مصنف رحمه الله وړاندې بيانوى، پس فرمائى « قال ابوداؤد: سمعت احمد يرخص فيها الكفارة قبل الحنث » د باقى ائمه په مذاهبو كښې دا دى چه د امام مالك رحمه الله مسلك هم دا دى كوم چه د امام احمد رحمه الله دى، يعنى د كفاره قبل الحنث جواز مطلقا، او د امام شافعى رحمه الله په نزد د كفاره ماليه تقديم خو جائز دى او د غير ماليه يعنى كفاره بالصوم د دې تقديم جائز نه دى، او د احنافو په نزد مطلقا جائز نه دى.

د دې نه پس پيژندل پكار دى چه كفاره د قسم كوم چه د قرآن كريم په دې آيت كريمه كښې ذكر ده « لا يواخذكم الله باللغو فى ايمانكم ولكن يواخذكم بما عقدتم الايمان فكفارته اطعام عشرة مساكين من اوسط ما تطعمون اهليكم او كسوتهم او تحرير رقبة، فمن لم يجد فصيام ثلاثة ايام » دا ټول څلور څيزونه شو، ١: لسو مسكينانو ته خوراك وركول، ٢: يا د هغوى جامه ٣: اعتناق او په دې درې واړو كښې په يو باندې هم د قدرت نه كيدو په صورت كښې درې روژې. د احنافو په نزد د وجوب كفاره دپاره سبب حنث دى په دې وجه د هغوى په نزد تقديم الكفارة على الحنث جائز نه ده، او د شوافعو وغيره په نزد د وجوب كفاره سبب خپله يمين دى او حنث ئې شرط دى، وفي شرح السنة: « وانما يجوز تقديم العتق او الاطعام او الكسوة كما يجوز تقديم الزكاة على الحول، ولا يجوز تعجيل صوم رمضان قبل وقته انتهى » (بذل مختصرا)

[٣٢٧٨] (١) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ خَلْفٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ، نَحْوَهُ. قَالَ: فَكَفَّرَ عَنْ يَمِينِكَ، ثُمَّ آتَيْتَ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَحَادِيثُ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ، وَعَدِي بْنِ حَاتِمٍ، وَأَبِي هُرَيْرَةَ، فِي هَذَا الْحَدِيثِ رَوَى عَنْ كُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ فِي بَعْضِ الرِّوَايَةِ الْحَنْثُ قَبْلَ الْكَفَّارَةِ، وَفِي بَعْضِ الرِّوَايَةِ الْكَفَّارَةُ قَبْلَ الْحَنْثِ.

حسن د عبد الرحمن بن سمره نه د تير روايت په شان روايت نقل كړې دن البته په دې روايت كښې داسې دي چه اول د قسم كفاره ادا كړه او ددې نه پس بيا د خير دغه كار اختيار كړه. ابوداؤد وائى چه ابو موسى اشعري رحمه الله، علي بن حاتم، او د ابو هريره رضي الله عنه روايتونه كوم چه ددې باب متعلق دي ددې روايتونونه په بعضو كښې د حانث كيدونه مخكښې د قسم كفاره ادا كول منقول دي او په بعضې رواياتو كښې حانث كيدل د كفاري نه مخكښې دي.

## باب فى القسم هل يكون يمينا

باب ايا د قسم لفظ په يمين كښې داخل دى؟

تفصيل مذاهب الاثمة فى مسئلة الباب :

يعنى په لفظ قسم سره يمين منعقد كيږي يا نه لكه چه دا اوئيلى شى چه « يا اقسمت بالله » خان پوهول پكار دى چه د حلف بلفظ القسم دوه صورتونه دى:

(١) ونحن نقول كما لا يجوز تقديم الزكاة على النصاب كذا لا يجوز تقديم الكفارة على الحنث. ١٢  
 (٢) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ٩٦٩٥) (صحيح)



- ۱: مجردا عن لفظ الجلالة یعنی بغیر د لفظ دالله نه چه صرف داسی اوائی (اقسمت).  
 ۲: مقرونا بلفظ الجلالة لکه (اقسمت بالله)

د احنافو مسلک خو دا دې چه په دې دواړو صورتونو کښې یمین منعقد کیږي، او امام خطابی رحمته الله علیه د امام شافعی رحمته الله علیه او مالک مذهب دا لیکلې دې چه په رومبی صورت کښې نه منعقد کیږي صرف په دویم صورت کښې منعقد کیږي. (بذل) د احنافو دا مسلک په بذل کښې د بدائع نه نقل کړې شوې دې او دا چه د امام زفر رحمته الله علیه مسلک په دې کښې د امام شافعی رحمته الله علیه د مسلک موافق دې، او حافظ د ابن المنذر نه چه کوم مذاهب ائمه نقل کړي هغه داسې دی چه لفظ (اقسمت) که د هغې سره (بالله) اوئیلې شی یا نه، که د یمین قصد وی او که نه بهر صورت یمین دې، و به قال النخعي والثوري والكوفيون، او د امام مالک رحمته الله علیه مسلک ئې دا نقل کړې دې چه (اقسمت بالله) خو بهر حال یمین دې او صرف لفظ (اقسمت) یمین نه دې مگر په نیت سره، او د امام شافعی رحمته الله علیه مسلک دا لیکلې شوې دې چه صرف لفظ اقسامت خو په هیڅ حال کښې یمین نه دې یعنی اگر که نیت هم اوکړي، او لفظ (اقسمت بالله) دا یمین دې د نیت په صورت کښې گینې نه دې، او د اسحق بن راهویه په نزد مطلقا یمین نه دې، او د امام احمد رحمته الله علیه هغوی په دې کښې دوه اقوال ذکر کړي دی یو دا چه مطلقا یمین دې د احنافو په شان، دویم دا چه د نیت په صورت کښې یمین دې گینې نه دې د مالکیانو په شان. (الابواب والتراجم)

[۳۲۶۷] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، "أَنَّ أَبَا بَكْرٍ أَقْسَمَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تُقْسِمُ."

د عبدالله بن عباس نه روایت دې فرمائی چه ابوبکر صدیق رضی الله عنه په نبی صلی الله علیه و آله باندې قسم اوکړو نبی صلی الله علیه و آله ورته او فرمائیل داسې قسم مه کوه.

[۳۲۶۸] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنُ قَارِيَسٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ ابْنُ يَحْيَى: كَتَبْتُهُ مِنْ كِتَابِهِ، أَخْبَرَنَا مَعْبَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يُحَدِّثُ، "أَنَّ رَجُلًا أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: إِنِّي أَرَى اللَّيْلَةَ، فَذَكَرْتُ رُؤْيَا، فَعَبَّرَهَا أَبُو بَكْرٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَصَبْتَ بَعْضًا، وَأَخْطَأْتَ بَعْضًا، فَقَالَ: أَقْسَمْتُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، بِأَبِي أَنْتَ لَتَحَدِّثَنِي مَا الَّذِي أَخْطَأْتُ؟ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تُقْسِمُ."

د ابوهريره رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه یوسړې د نبی صلی الله علیه و آله په خدمت کښې حاضر شو او عرض ئې اوکړو چه مانن شپه یو خوب اولیدو او خوب ئې بیان کړو ابوبکر رضی الله عنه دهغې

۱: صحیح البخاری/ التعبير ۱۱ (۷۰۰۰)، ۴۷ (۷۰۴۶)، صحیح مسلم/ الرؤیا ۳ (۲۲۶۹)، سنن ابن ماجه/ التعبير ۱۰ (۳۹۱۸)، (تحفة الأشراف: ۵۸۳۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۱۹/۱) دي/ الذور ۸ (۲۳۸۹)، ویاتی هذا الحديث في السنة (۴۶۳۳) (صحیح)

۲: سنن الترمذي/ الرؤیا ۹ (۲۲۵۳)، سنن ابن ماجه/ الرؤیا ۱۰ (۳۹۱۸)، (تحفة الأشراف: ۲۲۹۳، ۱۳۷۵)، وقد أخرجه: صحیح البخاری/ التعبير ۴۷ (۷۰۴۶)، صحیح مسلم/ الرؤیا ۳ (۲۲۶۹)، سنن الدارمي/ الرؤیا ۱۳ (۲۲۰۲) ویاتی هذا الحديث في السنة (۴۶۳۲) (صحیح)

تعبیر بیان کړونځی ﷺ او فرمائیل ای صدیقه یوڅه تعبیر دي رښتیا دي او یوڅه خطا دي ابوبکر رضی الله عنہ عرض او کړو ای د الله رسول له زمامور پلار دي په تاباندې قربان شي. خامخا به بیانوي راته هغه په کوم کښې چه خطا شوې یم نبی ﷺ ورته او فرمائیل قسم مه کوه. «عن ابن عباس رضی الله عنهما قال کان ابوهريرة يحدث ان رجلا اتى رسول الله ﷺ فقال انى ارى الليلة فذكر رؤيا فعبها ابوبكر فقال النبى ﷺ اصبت بعضا واخطأت بعضا فقال اقسمت عليك يا رسول الله ﷺ»

### مضمون د حديث :

ابوهريرة رضی الله عنه فرمائی چه یو سړې د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شو چه ما د شپې خوب لیدلې دي «مصنف ﷺ خو دلته دا خوب اختصارا حذف کړې دي دا خوب په ابوداؤد کښې په «باب فی شرح السنة» کښې په باب فی الخلفاء کښې داسې راغلې دي، «فقال انى ارى الليلة ظلة ينطف منها السمن والعسل فارى الناس يتكفون بايديهم فالمستكثر والمستقل الحديث» ډیر اوږد خوب دي چه د هغې د شروع حصه دا ده چه یو سړی عرض او کړو چه د شپې ما په خوب کښې د وریځې یو ټکړه اولیده چه د هغې نه غوړی او شهد راسیدل او ما خلکو ته کتل چه هغوی دا راسیدونکى خیزونه په خپلو لاسونو کښې اخلی بعض په ډیر مقدار کښې او بعض په لږ مقدار کښ، صدیق اکبر رضی الله عنه رسول الله ﷺ ته عرض او کړو یا رسول الله ﷺ د دي خوب د بیانولو ماته اجازت راکړئ او بیا هغوی د دي تعبیر بیان کړو او تپوس ئې او کړو یا رسول الله ﷺ ما صحیح تعبیر ورکړو که غلط؟ نو په دي باندې رسول الله ﷺ او فرمائیل «اصبت بعضا واخطأت بعضا» چه څه حصه د تعبیر صحیح ده او څه غلطه، په دي باندې صدیق اکبر رضی الله عنه عرض او کړو یا رسول الله ﷺ زه تاسو ته قسم درکوم چه تاسو ماته اوایئ چه ما څه غلطی او کړه؟ رسول الله ﷺ او فرمائیل «لا تقسم» ( )

### حديث الباب استدلال به الفريقان :

امام خطابی رحمه الله فرمائی چه دي واقعي لره په فریقینو کښې هر یو خپل دلیل وئیلې دي، شوافعو (چه د هغوی په نزد د دي نه قسم نه کیږي) په دي طریقچه چه په حدیث کښې د ابرار مقسم حکم وارد شوې دي چه که په یو مسلمان باندې د هغه دویم رور قسم او خوری نو هغه له پکار دی چه د هغه قسم پوره کړی او حالف دي حاث نه کړی، او گورئ دلته رسول الله ﷺ چه صدیق اکبر رضی الله عنه په کوم خیز باندې قسم خوړلې وو چه تاسو بیان کړئ خو رسول الله ﷺ بیان نه کړو، نو که په «اقسمت عليك» سره قسم منعقد کیدې نو صدیق اکبر به حالف او مقسم وي او رسول الله ﷺ به د هغه ابرار فرمائیلې وي، حال دا چه رسول الله ﷺ د هغه ابرار نه دي فرمائیلې، معلومه شوه چه صدیق اکبر مقسم نه وو، دا طریق استدلال خو شو د شوافعو، او د احنافو طریق استدلال دا دي چه رسول الله ﷺ صدیق اکبر ته فرمائی چه لا تقسم چه قسم ولې خورئ زه ئې درته نه وایم، معلومه شوه چه قسم شوې وو.

والحديث اخرجه البخارى ومسلم والترمذى وابن ماجة، قاله المنذرى

۱، یعنی قسم ولې خورې فعلم من ان یمین کما هو مسلك الحنفية واجاب عنه الشافعي بوجه اخر بانه عليه السلام لم يبرأ من المقسم لئلا كان قسما لا برة) یعنی قسم مه خوره او بیا رسول الله ﷺ د خطاء او صحیح تعیین او نه فرمائیلو.



[۳۲۶۹] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ قَارِسٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ كَثِيرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بِهَذَا الْحَدِيثِ، لَمْ يَذْكُرِ الْقِسْمَ ذَا فِيهِ، وَلَمْ يُخْبِرْهُ.

ابن عباس به دښی عليه السلام نه داروايت نقل کړې دې اودقسم ذکر په کښې نشته او په کښې دا اضافه ده چه نبی عليه السلام ورته دغلطی خبرورنکرو.

## بَابُ فِي مَنْ يَخْلِفُ كَاذِبًا مُتَعَبِدًا

باب په قصد سره د دروغ قسم خوړونکو بيان

[۳۲۷۰] (۲) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، أَخْبَرَنَا عَطَاءُ بْنُ السَّائِبِ، عَنْ أَبِي يَحْيَى، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ: "أَنَّ رَجُلَيْنِ اخْتَصَمَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَسَأَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الطَّالِبَ الْبَيِّنَةَ، فَلَمْ تَكُنْ لَهُ بَيِّنَةٌ، فَاسْتَخْلَفَ الْمَطْلُوبَ، فَخَلَفَ بِاللَّهِ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بَلَى، قَدْ فَعَلْتَ، وَلَكِنْ قَدْ غَفِرَ لَكَ بِاخْلَاصِ قَوْلٍ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: يُرَادُ مِنْ هَذَا الْحَدِيثِ أَنَّهُ لَمْ يَأْمُرْهُ بِالْكَفَّارَةِ.

د ابن عباس رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه دوه کسانو نبی عليه السلام ته جگړه راوړله نو نبی عليه السلام د دعوي کونکي نه گواهان طلب کړل چونکه دهغه سره گواهان نه وو نوپه دې وجه ئې قسم ورکړو هغه سړی ته په چاباندې چه دعوي شوي وه، ده په الله تعالی باندې قسم اوکړو په هغه الله تعالی چه دهغه نه علاوه بل معبود نشته، نبی عليه السلام او فرمائیل یقینا تادا کار کړې دې لیکن الله تعالی تاته معافي وکړله ستاد اخلاص په وجه ځکه چه تابه اخلاص سره لا اله الا الله او وئیل امام ابوداود وائيلي دي ددې حدیث نه دامعلومیږي چه نبی عليه السلام دغه کس ته دکفاري ورکولو حکم ونکړو.

(۳) عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنه أَنَّ رَجُلَيْنِ اخْتَصَمَا إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم

یعنی دوه سړی د رسول الله صلى الله عليه وسلم په خدمت کښې د یو څیز په باره کښې په جهگړه راغلل، د مدعی سره چونکه بیښه نه وو په دې وجه رسول الله صلى الله عليه وسلم د مدعی علیه نه قسم طلب کړو نو هغه قسم په دې الفاظو سره اوخوړلو، (بالله الذي لا اله الا هو) نو رسول الله صلى الله عليه وسلم د هغه د قسم دا الفاظ اوریدو سره او فرمائیل (بلى قد فعلت) چه د کوم څیز په نه کیدو باندې تاسو قسم کوئ تا هغه کار ضرور کړې دې (لهذا ته په دې قسم کښې دروغ ژنئ) خو ستا دا لغزش او گناه د لا اله الا الله د اخلاص د برکت د وجې نه معاف کړې شوه.

استفید بالحدیث امران :

په دې باندې علامه سندى رحمته الله په فتح الودود کښې لیکى : ظاهر دا ده چه رسول الله صلى الله عليه وسلم د هغه سړی یمین لره په ذریعه د وحی یا الهام باطلولو سره ددې خلاف فیصله او فرمائیل، او د دې نه دا خبره هم معلومه شوه چه کله کله به رسول الله صلى الله عليه وسلم د وحی په ذریعه د باطن د حال اعتبار کولو سره د ظاهر خلاف فیصله فرمائیل، او هغه چه رسول الله صلى الله عليه وسلم او فرمائیل :

(۱) : انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۵۸۳۸) (ضعیف)

(۲) : تفرد به أبوداود، (تحفة الأشراف: ۵۴۳۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۲۵۳، ۲۸۸، ۲۹۶، ۳۲۲، ۷۰/۲) ویاتی هذا

الحدیث فی الأقضية (۳۶۲۰) (صحیح)

﴿ولكن غفر الله لك﴾ د دې نه مراد د حلف کاذب د گناه معافی ده فیه دلیل علی ان الکبائر تغفر بکلمة التوحید آه

﴿قال ابوداؤد: یراد من هذا الحديث انه لم یامرہ بالكفارة﴾ امام ابوداؤد رحمہ اللہ فرمائی چه د دې حدیث نه دا خبره مستفاد کیږي چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم حالف ته د کفارې حکم نه دې ورکړې حال دا چه دا یمین یمین غموس وو چه په هغې کښې د امام شافعی رحمہ اللہ په نزد کفارہ ده، خود جمهورو مسلک هم دا دې چه انه لا کفارة فیه، د دې حدیث نه دوه فائده مستفاد شوې کومې چه علامه سندى رحمہ اللہ بیان کړې دی، دریمه فائده دا ده کوم چه مصنف رحمہ اللہ فرمائيلې ده، دلته حضرت په بذل المجهود کښې یو اشکال او بیا د هغې جواب لیکلې دې، اشکال دا چه یمین کاذبه گناه کیږه ده کوم چه بغیر د توبې نه نه معاف کیږي، نو د هغه سړی دا کیږه صرف په کلمه د توحید څنگه معاف شوه ځکه چه حسنات صرف مکفر د صفاترو دی نه مطلقاً، بیا ئې د دې جواب دا لیکلې دې چه ممکنه ده چه داسې اوئیلې شی چه کله دې سړی ﴿لا اله الا الله﴾ په اخلاص سره اووې نو گویا هغه پښیمانه شو په خپل کار باندې او پښیمانتیا توبه ده او دا هم ممکنه ده چه اوئیلې شی چه دا سړی د ﴿لا اله الا الله﴾ د وئیلو نه مخکښې مخلص مومن نه وو پس د دې حلف په وخت ئې کلمه توحید په اخلاص سره اووې نو گویا هغه د خپل د ایمان تجدید اوکړو نو دې تجدید ایمان د هغه د مخکښې گناهونو تکفیر اوکړو. والحديث اخرجه النسائي، قاله المنذرى

### باب گم الصاع في الكفارة

په کفارو کښې کوم صاع لږه اعتبار دې؟

یعنی په کفارو د یمین کښې به څومره غله ورکولې شی؟

په کفارو د یمین کښې تفصیل سره د مذاهب ائمه:

وفي الكنز وكفارته تحرير رقبة او اطعام عشرة مساكين كهما في الظهار او كسوتهم بما يستر عامة البدن لقوله تعالى، فكفارته اطعام عشرة مساكين او كسوتهم الآية وكلمة. ((او)) للتخيير فكان الواجب احد الاشياء الثلاثة، وقوله كهما في الظهار اي كالاطعام والتحرير في الظهار وقد بينهما هناك (زيلعي ص ١٢١ ج ٣) وفي حاشية الشلبي وان شاء اطعم عشرة مساكين كالاطعام في كفارة الظهار وهي نصف صاع من بر او صاع من تمر او شعير ويجوز ان يغديهم ويعشيهم بخبز إلا انه ان كان بُرّاً لا يشترط فيه الادام وان كان غيره فبادام، ويجزئ في الاطعام كل من التملك والاباحة آه معلومه شوه چه په اطعام کښې دواړه اختیار دی یا خوبه هر مسکین ته د صدقة الفطر په مثل یو صاع د شعیر وغیره او نصف صاع د غنمو ورکولې شی، او یا ورته د تغدیه او تعشیه اختیار دې، هم دغه شان د شوافعو وغیره په نزد چه کوم مقدار کفارة د ظهار وغیره ورکولې شی هم هغه مقدار دې دلته مسکینانو ته ورکړې شی، پس د شوافعو په نزد به هر مسکین ته یو مد د هر یو څیز نه او د امام مالک په نزد نصف صاع یعنی دوه مد د هر یو څیز نه، او د امام احمد په نزد من البر مد ومن غیره مدین کما تقدم فی كفارة الظهار.



هم دا مسئله د مصنف رحمه الله په ترجمه الباب کښې ذکر ده په دې وجه هغه مونږ دلته بیان کړه او دا هم ممکنه ده چه د مصنف رحمه الله غرض په ترجمه الباب سره مقدار صاع لره بیانول وی چه د هغې په صاع سره کفاره ادا کړې شی د دې صاع مقدار به څه وی، پس په دې حدیث سره کوم چه مذکور تحت الباب دې معلومه شوه چه د دې مقدار د مد هشام په اعتبار سره مدین او نصف مد پکار دی، ففی غرض المنصف رحمه الله من الترجمة احتمالات.

[٣٢٧٩] (١) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، قَالَ: قَرَأْتُ عَلَى أَنَسِ بْنِ عِيَّاضٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ حَرْمَلَةَ، عَنْ أُمِّ حَبِيبٍ بِنْتِ ذُوَيْبِ بْنِ قَيْسِ الْمُزَنِّيَّةِ، وَكَانَتْ تَحْتَ رَجُلٍ مِنْهُمْ مِنْ أَسْلَمَ، ثُمَّ كَانَتْ تَحْتَ ابْنِ أَخِي لَصِيفَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ ابْنُ حَرْمَلَةَ: قَوَّهَتْ لَنَا أُمُّ حَبِيبٍ صَاعًا، حَدَّثَنَا عَيْنُ ابْنِ أَخِي صَفِيَّةَ، عَنْ صَفِيَّةَ: أَنَّهُ صَاعُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ أَنَسُ: فَجَرَّبْتُهُ، أَوْ قَالَ: فَحَزَرْتُهُ فَوَجَدْتُهُ مَدِينًا وَنِصْفًا مَدِينًا هِشَامًا.

دام حبيب بنت ذويب بن قيس نه روایت دې چه هغه په قبيله مزین کښې د بنی اسلم په شاخ کښې دیوکس په نکاح کښې وه اویا ئې څه وخت پس دام المومنین صفیه رضی الله عنها وراره سره نکاح اوکړه، ابن حرملة وئیلی دی چه مونږ ته ام حبيب یو صاع (پیمان) را کړې وو او دخپل دویم خاوند نه ئې نقل کړی وو چه هغه به دام المومنین صفیه رضی الله عنها نه روایت کولو چه دغه د نبی صلی الله علیه وسلم صاع وو، انس بن عیاض وئیلی دی ماددي معلومات اوکړو نو دا دهشام بن عبد الملك د صاع په مقابله کښې دوه نیم مده وو.

#### د مد هشام مقدار او د هغې تحقیق :

د دې نه معلومه شوه چه مد هشام د مطلق مد نه لوټې وی. اوس دا چه د دې مقدار به څه وی، د بخاری شریف ترجمه خو دا ده (باب صاع المدينة ومد النبی صلی الله علیه وسلم وبرکته) د مد هشام ذکر په هغې کښې نشته خو په موطاء د امام مالک رحمه الله کښې دی (قال مالک والكفارات كلها وزكاة الفطر وزكاة العشر كل ذلك بالمد الا الصغر مد النبی صلی الله علیه وسلم الا الظهار فان الكفارة فيه بالمد الاعظم مد هشام) آهد جمهور علماء کرامو په نزد خو په ټولو کفاراتو کښې د مد مدینه یعنی د مد النبی صلی الله علیه وسلم اعتبار دې او امام مالک رحمه الله هم په ټولو کفاراتو او زکاة فطر وغیره کښې هم دهغه مد اعتبار کړې دې کوم ئې چه په موطاء کښې په مد اصغر سره تعبیر کړې دې خو په کفاره د ظهار کښې هغوی د مد هشام اعتبار کړې دې چه هغې ته مد اعظم وئیلی شی په اوجز کښې حضرت شیخ د علامه باجی نه نقل کړی دی چه زمونږ د اصحابو په دې مقدار کښې اختلاف دې بعض وائی چه یو مد هشام د نبی صلی الله علیه وسلم یو ثلث کم دوه مد برابر وی او یو قول دا دې چه پوره دوه مدو د نبی صلی الله علیه وسلم د مد برابر وی یعنی د هغې پوره دوچند.

(الی آخر ما ذکر فی الاوجز ١٨٩/٢)

[٣٢٨٠] (٢) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنِ خَلَّادٍ أَبُو عَمْرٍ، قَالَ: كَانَ عِنْدَنَا مَكُوكٌ، يُقَالُ لَهُ: مَكُوكٌ خَالِدِي، وَكَانَ كَيْلَجَتَيْنِ بِكَيْلَجَةِ هَارُونَ، قَالَ مُحَمَّدٌ: صَاعُ خَالِدٍ صَاعُ هِشَامٍ يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الْمَلِكِ.

١: تقر د به أبو داود، (تحفة الأشراف: ١٥٩٠٣) (ضعيف الإسناد)

٢: تقر د به أبو داود، (تحفة الأشراف: ١٩٢٣٥) (صحيح)

د محمد بن محمد بن خالد ابو عمر بیان دي چه ما سره يو مكوک (۱) وو هغې ته به دخالد مكوک وئيلي شو هغه د هارون د كيلجه (۲) سره د دوه د كيلجه برابر وو، محمد وائي: د خالد صاع د هشام يعني د ابن عبد الملك صاع دي.

[۳۲۸۱] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنِ خَلَادٍ أَبُو عُمَرَ، حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، عَنْ أُمِّيَّةَ بْنِ خَالِدٍ، قَالَ: "لَمَّا وَلِيَ خَالِدُ الْقَسْرِيُّ أَضْعَفَ الصَّاعِ، فَصَارَ الصَّاعُ سِتَّةَ عَشَرَ رَطْلًا، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: مُحَمَّدُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنِ خَلَادٍ قَتَلَهُ الرَّجُلُ صَبْرًا، فَقَالَ بَيْدَهُ هَكَذَا، وَمَدَّ أَبُو دَاوُدَ يَدَهُ، وَجَعَلَ يَطْوُنُ كَفْيَهُ إِلَى الْأَرْضِ، قَالَ: وَرَأَيْتُهُ فِي النَّوْمِ، فَقُلْتُ: مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ، قَالَ: أَذْخَلَنِي الْجَنَّةَ، فَقُلْتُ: فَلَمْ يَضُرَّكَ الْوَقْفُ.

اميه بن خالد وائي كله چه خالد قسري گورنر مقرر شو نو هغوی صاع دوچند کړو، نو يو صاع ۱۶ رطل شو، ابوداؤد وائي محمد بن محمد بن خالد حبشيانو مخې ته اودرولو او قتل ئې کړو، هغوی په لاس (اشاره) سره اووئيل چه داسې (دي وئيلو سره) ابوداؤد خپل لاس خور کړو، او دخپلو دواړو لاسونو تهلي (دتنه طرف) ئې زمکې طرف ته کړل، ابوداؤد وائي: ما هغه په خوب کښې اوليدو نو تپوس مې ترې اوکړو چه الله تعالی تاسره څه معامله اوکړه؟ هغوی اووئيل: الله تعالی زه جنت ته داخل کړم، نو ما اووئيل: بيا خو چه حبشيانو ته خپلې مخې ته اودرولي او قتل ئې کړې نوددي خو تاته هيڅ نقصان اونه رسيدو.

### باب في الرقبة المومنة

د مسلمانې وينزې د آزادولو بيان

د كفاره يمين والا رقبه کښې د مومنه قيد د جمهور علماء کرامو او ائمه ثلاثه په نزد دي، د احنافو په نزديه دي کښې د مومنه قيد نشته، خو په كفاره د قتل کښې د احنافو په نزد د رقبه مومنه قيد شته دي په دي وجه هغه آيت كريمه کوم چه د كفاره قتل په باره کښې دي هغه دايمان په قيد سره مقيد دي په خلاف دهغه نص کوم چه د كفاره يمين په باره کښې دي چه هغه مطلق دي قال الله تعالى: او تحرير رقبه..... لهذا مطلق به په خپل اطلاق باندې وي اومقيد په خپل تقيد باندې، او جمهور علماء کرامو په دي مسئله کښې مطلق لره په مقيد باندې محمول کړې دي، دا مشهوره اختلافی مسئله ده په کتب اصول فقه کښې هم ذکر شوې ده د (المطلق يجرى على اطلاقه والمقيد على تقيده) د قاعدې د لاندې.

[۳۲۸۲] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنِ الْحَجَّاجِ الصَّوَّافِ، حَدَّثَنِى يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ هِلَالِ بْنِ أَبِي مَيْمُونَةَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَّارٍ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ الْحَكَمِ السُّلَمِيِّ، قَالَ: قُلْتُ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، جَارِيَةٌ لِي صَكَكْتُهَا صَكَةً، فَعَظَّمَ ذَلِكَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ: أَفَلَا أَعْتَقُهَا؟ قَالَ: الْإِثْنِي بِهِ، قَالَ: فَحُجْتُ بِهَا، قَالَ: أَيْنَ

(۱) مكوک د تانبې يا د مسينو يولونې دي چه بره خوله ئې لره تنگه وي او لاندې كهلاؤ وي پخوا به پرې خلقو اوبه څكلې او د پيمانه په طور به ئې د تللو او مقدار معلومولو دپاره هم استعمالولو، عام طور به د يو نيم صاع برابر وو، خو د هرې علاقې ددې لوبښې غټ والى او وړوكوالى به مقدار کښې په كمې زياتې هم وو.

(۲) دا هم يوه پيمانه ده.

(۳) تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۶۰۶) (صحیح)

(۴) انظر حديث رقم: (۹۳۰)، (تحفة الأشراف: ۱۱۳۷۸) (صحیح)



اللَّهُ؟ قَالَتْ: فِي السَّمَاءِ، قَالَ: مَنْ أَنَا؟ قَالَتْ: أَنْتَ رَسُولُ اللَّهِ، قَالَ: أَعْتَقَهَا، فَأَتَاهَا مُؤْمِنَةً."

د معاویه بن حکم سلمی رضی اللہ عنہ نه روایت دي فرمائی چه ماعرض اوکړو اي د الله رسوله زما يوه وينځه ده ماوهلي ده، په نبی صلی اللہ علیہ وسلم باندې دا خبره ښه ونه لگيده نو په دې وخت کښې ماعرض اوکړو ايا ازاده ئې کړم؟ هغه راته او فرمائيل ماته ئې راوړله، دې وائی چه دا وينځه مانښې صلی اللہ علیہ وسلم ته حاضره کړه هغه ترې تپوس اوکړو الله تعالى چرته دي؟ هغې او وئيل په اسمان کښې د بيا ئې ترې تپوس اوکړو زه څوک يم؟ هغې او وئيل ته د الله رسول ئې نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائيل ازاده ئې کړه ځکه چه دا مومنه ده.

﴿ عن معاوية بن الحكم السلمي قال قلت يا رسول الله ﷺ جارية لي صككتها صكة فعظم ذلك على رسول الله ﷺ ﴾

معاویه بن الحكم رضی اللہ عنہ فرمائی چه ما د رسول الله ﷺ په خدمت کښې عرض اوکړو چه زما يو وينزه ده چه هغې ته ما په مخ باندې سپيره ورکړې ده رسول الله ﷺ د هغې زما په حق کښې لوئې جرم کيدل ظاهر او فرمائيلو (دې او بريدو) او وې وئيل چه زه هغه ازاده نه کړم رسول الله ﷺ او فرمائيل هغه ماته راوړله، هغوی وائی چه ما هغه رسول الله ﷺ ته راوستله رسول الله ﷺ د هغې نه د امتحان په طور تپوس اوکړو ﴿ اين الله ﴾ چه الله پاک ستا په نزد چرته دي؟ هغې جواب ورکړو ﴿ في السماء ﴾ په اسمان کښې دي دا سوال خو گویا د توحيد متعلق شو او په دې کښې د اصنام د الهه کيدو نفی اوشوه بيا رسول الله ﷺ او فرمائيل چه زه څوک يم؟ هغې او وې چه تاسو د الله پاک رسول يئ، رسول الله ﷺ هغه صحابی ته او وې چه دا ازاده کړه دا مومنه ده.

د دې حديث په شرح کښې امام خطابی رحمته الله عليه فرمائيلی دي چه دا خبره معقول او بديهي ده چه رسول الله ﷺ دې صحابی رضی اللہ عنہ ته د دې وينځې د آزادولو حکم په طريقه د کفارې ورکړې وو يعنی د معصيت د ضرب کفاره په داسې طريقه چه رومي رسول الله ﷺ د هغې د ايمان امتحان واخستلو د هغې نه پس ئې د هغې د اعتناق حکم او فرمائيلو، د دې نه معلومه شوه چه د هرې کفارې حال او حکم هم دا دي او بيا د دې نه پس هغوی په دې کښې اختلاف د علماء کرامو بيان کړې دي، دلته ذکر چونکه د کفاره يمين کيږي ځکه امام خطابی اشاره کړې ده دې خبرې طرف چه ترجمة الباب سره د حديث مطابقت په طريقه د قياس دي. والحديث اخرجه مسلم والنسائي بائمه منه، قاله المنذري

[۳۲۸۳] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنِ الشَّرِيدِ: أَنَّ أُمَّهُ أَوْصَتْهُ أَنْ يَعْتِقَ عَنْهَا رَقَبَةً مُؤْمِنَةً، فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ أُمِّي أَوْصَتْ أَنْ أَعْتِقَ عَنْهَا رَقَبَةً مُؤْمِنَةً، وَعِنْدِي جَارِيَةٌ سَوْدَاءُ نُوبِيَّةٌ، فَذَكَرْتُهَا، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَرْسَلَهُ، لَمْ يَذْكُرِ الشَّرِيدَ.

د شريد نه روایت دي فرمائی چه ماته خپلې موروصيت کړې وو چه زه دهغې مرگ نه پس دهغې دطرف نه يوه وينزه ازاده کړم فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته ورغلم او عرض مې وکړو چه اي

۱: (سنن النسائي/الوصايا ۸ (۳۶۸۳)، (تحفة الأشراف: ۴۸۳۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۲۲۲، ۳۸۸، ۳۸۹)، دي/الندور ۱۰ (۲۳۹۳) (حسن صحيح)

دالله رسوله یقینا زما مور وصیت کړې وو چه زه دهغې دطرف نه یوه مومنه وینزه ازاده کړم، اوزما سره دنوبیه مقام دحبشوپه خواه کښې دیوخانې نوم دې، یوه توره وینزه وه اوباقی روایت ئې دتیرشوی روایت په شان بیان کړو. امام ابوداود وئیلی دی دا روایت خالد بن عبد الله مرسل بیان کړې دې اوشرید ئې پکښې نه دې ذکر کړې.

[۳۲۸۴] (۱) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يَعْقُوبَ الْجَوْزْجَانِيُّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنِي الْمَسْعُودِيُّ، عَنْ عَوْنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: "أَنَّ رَجُلًا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِجَارِيَةٍ سَوْدَاءَ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ عَلَى رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ، فَقَالَ هَذَا: أَيْنَ اللَّهُ؟ فَأَشَارَتْ إِلَى السَّمَاءِ بِأَصْبُعِهَا، فَقَالَ هَذَا: فَمَنْ أَنَا؟ فَأَشَارَتْ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى السَّمَاءِ، يَعْنِي أَنْتَ رَسُولُ اللَّهِ، فَقَالَ: أَعْتَقَهَا، فَإِنَّهَا مُؤْمِنَةٌ."

حضرت ابوهريره رضي الله عنه وائی چه نبی کریم صلی الله علیه و آله ته یو سړی یوه توره وینخه راوستله، او عرض ئې اوکړو چه ای د الله رسوله صلی الله علیه و آله زما په ذمه یوه مسلماننه وینخه آزادول دی، نبی کریم صلی الله علیه و آله دهغه وینخې نه تپوس اوکړو: الله چرته دې؟ نو هغې خپلې گوتې سره آسمان طرف ته اشاره اوکړه (یعنی د آسمان دپاسه دې)، بیا نبی صلی الله علیه و آله دهغې نه تپوس اوکړو: زه څوک یم؟ نو هغې نبی کریم صلی الله علیه و آله او آسمان طرف ته اشاره اوکړه (یعنی دا ئې اووئیل چه) تاسو د الله رسول یئ، نبی کریم صلی الله علیه و آله (وینخه راوستونکی سړی ته) اووئیل: دا آزاده کړه دا مسلماننه ده.

### بَابُ النَّهْيِ عَنِ النَّذْرِ

د نذر د ممانعت بیان

په تیر ابواب د یمین سره متعلق وو، د دې ځانې نه د نذر ابواب شروع کیږی، پس په بعض نسخو کښې د دې باب نه رومبی په جلی قلم سره لیکلې شوې دی، (اول النذر) (عن عبد الله بن عمر رضي الله عنه قال اخذ رسول الله صلی الله علیه و آله ينهى عن النذر ويقول انه لا يرد شيئا وانما يستخرج به من البخيل)

### د نذر په حکم کښې مذاهب ائمه:

مصنف رحمه الله ترجمه قائم کړې ده د کراهية النذر، مصنف رحمه الله حنبلی دې او د حنابله په نزد ابتداء نذر مکروه دې او هم دا د امام شافعی رحمه الله مذهب دې لکه چه حافظ وئیلې دی او د احنافو او مالکیانو په نزد حکم د نذر استحباب دې خو حافظ د مالکیانو مذهب هم کراهت نقل کړې دې د شوافعو په شان، خو په دې باندې قسطلانی تعقب کړې دې چه مختصر خلیل (کوم چه د فقه مالکی کتاب دې) په دې کښې تصریح ده د دې خبرې چه کوم سړی نذر منی (شکرا لله تعالى) هغه مندوب دې قال ابن رشد وهو مذهب مالک آه (من الابواب والتراجم) والبسط فيه، د احنافو او مالکیانو په نزد د روایاتو دنهی محمل مطلق نذر نه دې بلکه نذر اللجاج دې، امام بخاری رحمه الله باب قائم کړې دې (باب الوفاء بالنذر وقول الله تعالى يوفون بالنذر) علامه عینی رحمه الله فرمائی چه امام بخاری رحمه الله دا آیت راوړلو دې خبرې طرف ته اشاره کولو دپاره چه نذر لره پوره کول قابل تعریف خیز دې، د دې فاعل مستحق

۱: تقدربه ابوداود، (تحفة الأشراف: ۱۳۵۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۲۹۱) (حسن لغيره)



دثاء دې خو د دې نذر نه مراد نذر د طاعت دې نه نذر د معصیت، او بیا فرمائی چه د نذر طاعت د وفا په وجوب باندې د علماء کرامو اجماع ده، خو په ابتداء د نذر کښې اختلاف دې «فقیل مستحب وقیل مکروه الخ» یعنی اول خو ځان په دې باندې پوهه کړئ چه یو خو وی نذر د طاعت او یو نذر د معصیت دې، د نذر معصیت قبیح او ناجائز کیدل خو ښکاره دی او نذر طاعت کښې دوه اړخونه دی یو نذر منلو سره هغه پوره کول، په دې کښې هم هیڅ کلام نشته چه دا عبادت دې او مستحسن دې، خو خبره په ابتداء د نذر کښې ده یعنی نذر منل څنگه دی محمود یا مذموم؟ دا مسئله مختلف فیه دې د احنافو او مالکیانو په نزد مستحب او د شوافعو او حنابله په نزد مکروه دې، ښه ځان پرې پوهه کړئ یعنی الفرق بین ایفاء النذر وابتداء النذر.

[۳۲۸۷] (حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ عَبْدِ الْحَمِيدِ، ح وَحَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَرْثَةَ، قَالَ عُثْمَانُ الْهَمْدَانِيُّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، قَالَ: أَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهَى عَنِ النَّذْرِ، ثُمَّ اتَّفَقَا، وَيَقُولُ: لَا يَرُدُّ شَيْئًا، وَإِنَّمَا يُسْتَحَرُّ بِهِ مِنَ الْبَخِيلِ، قَالَ مُسَدَّدٌ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: النَّذْرُ لَا يَرُدُّ شَيْئًا.

دعبدالله بن عمرنه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ د نذر منلونه منع فرمائیلی ده چه نذر د تقدیر څه شی لره نه شی واپس کولې اونه ئې بدلولې شی علاوه ددې نه چه د نذر په ذریعه باندې د بخیل نه مال ویستلې شی.

### شرح الحديث :

دا ټول خو کلام وو د ترجمه الباب د لاندې او د حدیث الباب مضمون دا دې: ابن عمر رضی الله عنهما فرمائی چه رسول الله ﷺ به منع فرمائیل د نذر نه، یعنی د ابتداء د نذر نه، ځکه چه دا خو ښکاره ده چه ایفاء د نذر واجب دې، او بیا وړاندې حدیث کښې رسول الله ﷺ فرمائی چه نذر تقدیر لره نه شی لرې کولې (بلکه کیږی هم هغه کوم چه په تقدیر کښې دې) او بیا فرمائی چه جز این نیست چه د نذر په ذریعه سره مال ویستلې شی د بخیل سړی نه، د دې نه دوه خبرې معلومیږی یو دا چه په دې اعتقاد سره نذر منل چه د نذر منلو سره به زمونږ کار ضرور کیږی دا اعتقاد د تاثیر باطل دې لهذا په دې نیت او اعتقاد کښې نذر نه دی منل پکار، دویمه خبره دا معلومیږی چه د طاعت نذر منلو دا طاعت لره معلق کول دی چه که زمونږ کار اوشی نو مونږ به دومره صدقه کوو دا طریقه د بخیلانو ده، اتفاق مال لوجه الله لره د نذر په ذریعه سره معلق کول نه دی پکار، بلکه د دې نیکی بغیر د نذر نه کول پکار دی، خو د بخیل طبیعت ځکه نه تیاریږی چه هغه بغیر د تعلیق بالنذر نه خرچ نه کوی. او د نذر طاعت دا اړخ د مدح قابل نه دې بلکه مذموم دې، په بذل کښې لیکلی دی چه د خلقو عادت دې چه د جلب منافع او دفع مضار دپاره نذرونه منی او دا فعل دې د بخلاء هم په

۱: صحیح البخاری/القدر ۶ (۶۶۰۸)، الأیمان ۲۶ (۶۶۹۳)، صحیح مسلم/النذر ۲ (۱۶۳۹)، سنن النسائي/الأیمان ۲۴ (۳۸۳۲، ۳۸۳۳)، سنن ابن ماجه/الكفارات ۱۵ (۲۱۲۲)، (تحفة الأشراف: ۷۲۸۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۶۱/۲، ۸۶، ۱۱۸)، دي/النذور ۵ (۲۳۸۵) (صحیح)

دې وجه په دې حديث كښې منع كړې شوې ده خو كه څوك په اخلاص سره د يو قربت او عبادت نذر او مني لكه څنگه چه عمر عليه السلام په مسجد حرام كښې د يوې شپې د اعتكاف نذر منلي ووهغه ممنوع نه دي آهوالحديث اخرجه البخاري ومسلم والنسائي وابن ماجة، قاله المنذري

[۳۲۸۸] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: قُرِءَ عَلَى الْحَارِثِ بْنِ مِسْكِينٍ، وَأَنَا شَاهِدٌ أَخْبَرَكُمُ ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "لَا يَأْتِي ابْنَ آدَمَ النَّذْرُ الْقَدَرُ بِشَيْءٍ لَمْ أَكُنْ قَدَرْتُ لَهُ، وَلَكِنْ يَلْقِيهِ النَّذْرُ الْقَدَرُ قَدَرْتُهُ، يُسْتَخْرَجُ مِنَ الْبَخِيلِ، يُؤْتَى عَلَيْهِ مَا لَمْ يَكُنْ يُؤْتَى مِنْ قَبْلُ".

حضرت ابوهريره رضي الله عنه وائي چه رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم او فرمائيل: (چه الله تعالى فرمائي) نذر (منخته) بنيادم ته څه داسې څيز نه شي راوړلي كوم چه ما دهغه دپاره مقرر كړې نه وي، ليكن نذر ده لره هغه تقدير سره ملاوهي كوم چه ما دده دپاره ليكلي دي، دا د بخیل نه هغه څيز اوباسي كوم چه دې ددې نذر نه مخكښي نه اوباسي (يعني دخپل بخیل توب په وجه صدقه او خيرات نه كوي خود نذر په وجه ئې كوي).

## بَاب مَا جَاءَ فِي النَّذْرِ فِي الْمَعْصِيَةِ

د ناجائز عمل د نذر منلو بيان

[۳۲۸۹] (۲) حَدَّثَنَا الْقُعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَبْدِ الْمَلِكِ الْأَيْلِيِّ، عَنِ الْقَاسِمِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ نَذَرَ أَنْ يُطِيعَ اللَّهَ فَلْيُطِعهُ، وَمَنْ نَذَرَ أَنْ يَعْصِيَ اللَّهَ، فَلَا يَعْصِيهِ".

دعائشي رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه نبي صلی الله علیه و آله وسلم فرمائيلي دي چه څوك دالله تعالى تابعداري كول نذراو مني نوده لره پكاردي چه دالله تابعداري او كړي او خپل نذر پوره كړي، او كه چرې څوك دالله تعالى دنافرمانی كولو نذر او مني نودې دي گناه نه كوي (يعني دانذرعبث دې ځكه چه الله تعالى په گناه باندي نه راضي كيږي).

نذر د معصيت منعقد كيږي يا نه، مذاهب اربعة:

قوله: ﴿عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا﴾ قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَنْ نَذَرَ أَنْ يُطِيعَ اللَّهَ فَلْيُطِعهُ وَمَنْ نَذَرَ أَنْ يَعْصِيَ اللَّهَ فَلَا يَعْصِيهِ﴾ په دې حديث كښې د نذر د طاعت د پوره كولو حكم وركړې شوې دي، او د نذر معصيت نه منع كړې شوې ده يعني د دې پوره كولو سره، په دې باندي اجماع ده چه د نذر معصيت ايفاء جائز نه ده خو په دې كښې اختلاف دي چه نذر معصيت منعقد كيږي يا نه او هم دغه شان په وجوب د كفاره كښ، ابن قدامه فرمائي چه د نذر معصيت ايفاء بالاجماع

(۱): تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۳۸۵۷)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/الأيمان ۲۶ (۶۶۹۲)، صحيح مسلم/النذر ۲ (۱۶۴۰)، سنن الترمذي/النذر ۱۰ (۱۵۳۸)، سنن النسائي/الأيمان ۲۵ (۳۸۳۶)، سنن ابن ماجة/الكفارات ۱۵ (۲۱۲۳)، مسند احمد (۲۳۵/۲، ۲۴۲، ۳۰۱، ۳۱۴، ۴۱۲، ۴۶۳) (صحيح)

(۲): صحيح البخاري/الأيمان ۲۸ (۶۶۹۶)، ۳۱ (۶۷۰۰)، سنن الترمذي/الأيمان ۲ (۱۵۲۶)، سنن النسائي/الأيمان ۲۶ (۳۸۳۷)، ۲۷ (۳۸۳۸)، ۳۸۳۹، سنن ابن ماجة/الكفارات ۱۶ (۲۱۲۶)، (تحفة الأشراف: ۱۷۴۵۸)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/النذور ۴ (۸)، مسند احمد (۳۷۶، ۴۱، ۲۲۴)، سنن الدارمي/النذور ۳ (۲۳۸۳) (صحيح)



جائز نه ده او ناذر باندې کفار ه یمین واجب کیږي سفيان ثوري او ابوحنيفة او د هغوی د اصحابو په نزد، او د امام احمد رحمه الله نه د دې قسم روايت مروی دې کوم چه په دې باندې دلالت کوي چه په هغه باندې کفار ه واجب نه ده او هم دا مذهب دې د امام مالک او امام شافعی رحمه الله (تراجم بخاری) امام خطابی رحمه الله هم د امام مالک او د امام شافعی رحمه الله مذهب د عدم وجوب کفار ه لیکلې دې، او حافظ ابن قیم رحمه الله په تهذيب السنن کښې د امام احمد رحمه الله مسلک د احنافو په شان لیکلې دې د هغې الفاظ دا دي: ﴿ قال الموجبون للكفارة في نذر المعصية (وهم احمد واسحاق والثوري وابوحنيفة واصحابه) هذه الآثار قد تعددت طرقها ورواتها ثقات ﴾ الی آخر ما ذکر..... خپله حافظ ابن قیم رحمه الله په دې مسئله باندې تفصیل سره کلام کړې دې او وجوب کفار ه ته ئې ترجیح ورکړې ده، روايه درايه، د دې عبارتونو نه معلومیږي بلکه بعضو تصریح کړې ده چه د امام احمد رحمه الله نه په دې کښې دواړه روايتونه دي. والحديث اخرجه البخاري والترمذي والنسائي وابن ماجة، قاله المنذري

[۳۳۰۰] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وَهَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "بَيْنَمَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْطُبُ، إِذَا هُوَ بِرَجُلٍ قَائِمٍ فِي الشَّمْسِ، فَسَأَلَ عَنْهُ، قَالُوا: هَذَا أَبُو إِسْرَائِيلَ، نَذَرُ أَنْ يَقُومَ وَلَا يَقْعُدَ، وَلَا يَسْتَظِلَّ وَلَا يَتَكَلَّمَ، وَيَصُومَ، قَالَ: مَرَّةٌ فَلْيَتَكَلَّمْ، وَلْيَسْتَظِلَّ، وَلْيَقْعُدْ، وَلْيَتِمَّ صَوْمُهُ".

دا بن عباس رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه نبی صلی الله علیه و آله خلقوته خطبه ورکوله نوناخاپه یوسړې ښکاره شو چه په غرمو ولاړو و نرنی صلی الله علیه و آله دهغه په باره کښې دخلقونه تپوس وکړو خلقو ورته او وئیل دا ابو اسرائیل دې اوداندر ئې منلې دې چه ولاړ به وي او کښېني به نه اونه به سوري ته دمه کوي اونه به خبرې کوي اوروزه به ئې وي نبی صلی الله علیه و آله اوفرمائیل ده ته او وائی چه خبرې او کړي او په سوري دي کښېني او خپله روزه دي پوره کړی

قوله: ﴿ عن ابن عباس رضي الله عنه قال بينما النبي صلی الله علیه و آله يخطب اذا هو برجل قائم في الشمس فسأل عنه فقالوا هذا ابو اسرائيل الخ ﴾ یعنی رسول الله صلی الله علیه و آله په داسې حال کښې چه خطاب ئې فرمائیلو ناخاپه د رسول الله صلی الله علیه و آله نظر په یو داسې انسان باندې پریوتلو چه په گرمی کښې ولاړ وو رسول الله صلی الله علیه و آله دهغه په باره کښې دخلقونه تپوس او کړو، خلقو عرض او کړو چه دا سړې ابو اسرائیل دې هغه نذر منلې دې چه دې به ولاړ وی په نمر کښې او کینی به نه او دا چه د چا سره به خبرې نه کوی، او دا چه روزه به ئې وی، رسول الله صلی الله علیه و آله اوفرمائیل چه ده ته اوایه چه ده له پکار دی چه خبرې او کړی او په سوري کښې اودریږی، او کینی ولاړ دې نه پاتې کیږی او خپله روزه دې پوره کړی

امام خطابی رحمه الله فرمائي چه د دې سړی نذر، په نذر طاعت او نذر معصیت په دواړو باندې مشتمل وو پس رسول الله صلی الله علیه و آله په دې انواع نذر کښې چه کوم د نذر طاعت وو د هغې د پوره کولو او کوم چه نذر د غیر طاعت وو د هغې د ترک کولو اوفرمائیل: صوم خو نذر طاعت وو، او قیام فی الشمس او ترک کلام او ترک استظلال دا نذر د غیر طاعت وو، ځکه چه دا

۱: صحیح البخاري/الایمان ۳۱ (۶۷۰۴)، سنن ابن ماجة/الكفارات ۲۱ (۲۱۳۶)، (تحفة الأشراف: ۵۹۹۱) (صحیح)

خيزونه د مشاق د قبيلې نه دی بدن لره سترې کونکې او تکليف ورکونکې، په دې کښې يو معنى هم د قربت او عبادت نشته، په دې وجه رسول الله ﷺ د هغې د ترک کولو حکم اوفرمائيلو. والحديث اخرجه البخارى وابن ماجة، قاله المنذرى

### بَابُ مَنْ رَأَى عَلَيْهِ كَفَّارَةً إِذَا كَانَ فِي مَعْصِيَةٍ

د معصيت د نذريه ماتولو باندې د بعضو په نذر باندې كفاره واجبيږي

دا ترجمه الباب د احنافو د مسلک ترجمانی کوي او هم دغه شان هغه حديث کوم چه مصنف رحمته الله په دې باب کښې راوړلې دې خو مصنف رحمته الله په دې حديث باندې د بعض نورو محدثينو په شان په دې باندې سخت کلام کړې دې لکه چه به راشي.

[۳۲۹۰] (۱) حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبرَاهِيمَ أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "لَا تَذَرُ فِي مَعْصِيَةٍ، وَكَفَّارَتُهُ كَفَّارَةُ يَمِينٍ".

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روايت دې فرمائي چه رسول پاك ا فرمائيلى دى نذر پوره كول دگناه په كار كښې درست نه دى او ددې كفاره هغه ده كومه چه د قسم كفاره ده.

﴿ عن يونس عن الزهري عن ابى سلمة عن عائشة رضي الله عنها ان النبي صلى الله عليه وسلم قال لا نذر فى معصية وكفارته كفارة يمين ﴾

دا حديث د ترجمه الباب او د احنافو د مسلک مطابق دې وړاندې مصنف رحمته الله په دې باندې کلام او اعتراض فرمائي.

[۳۲۹۱] (۲) حَدَّثَنَا ابْنُ السَّرْحِ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ بِمَعْنَاهُ وَإِسْنَادِهِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: سَمِعْتُ أَحْمَدَ بْنَ شَبُوبَةَ يَقُولُ: قَالَ ابْنُ الْمُبَارَكِ، يَعْنِي فِي هَذَا الْحَدِيثِ: حَدَّثْتُ أَبُو سَلَمَةَ، فَذَلَّ ذَلِكَ عَلَى أَنَّ الزُّهْرِيَّ لَمْ يَسْمَعْهُ مِنْ أَبِي سَلَمَةَ، وَقَالَ أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ: وَتَصْدِيقُ ذَلِكَ مَا حَدَّثَنَا أَيُّوبُ يَعْنِي ابْنَ سُلَيْمَانَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: سَمِعْتُ أَحْمَدَ بْنَ حَنْبَلٍ يَقُولُ: أَفْسَدُوا عَلَيْنَا هَذَا الْحَدِيثَ، قِيلَ لَهُ: وَصَحَّ إِسْنَادُهُ عِنْدَكَ، وَهَلْ رَوَاهُ غَيْرُ ابْنِ أَبِي أُوَيْسٍ، قَالَ أَيُّوبُ: كَانَ أَمْثَلُ مِنْهُ يَعْنِي أَيُّوبُ بْنُ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلَالٍ، وَقَدْ رَوَاهُ أَيُّوبُ.

ابوداود وائى چه احمد بن شبيب وئيلي دى چه ابن مبارك ددې حديث په باره كښې وئيلي دى چه دابوسلمه نه مې تپوس او كړو نو هغه راته او وئيل دابوسلمه اوريدل دزهري نه ثابت نه دي. ابوداود وائى احمد بن حنبل رحمة الله عليه وئيلي دى چه دا حديث ئې زمونږ په وړاندې خراب كړې دې دهغه نه تپوس او كړې شو چه اياستاپه نزد باندې ددې حديث خرابيدل صحيح دي، او ايا دابن اويس نه علاوه بل چا هم دانقل كړې دي؟ نو هغه اوفرماييل هو، ايوب بن سليمان بن بلال هم نقل كړې دي.

﴿ قال ابو داؤد : وسمعت احمد بن شبيه قال قال ابن المبارك : يعنى فى هذا الحديث حديث ابوسلمة فدل ذلك على ان الزهري لم يسمعه عن ابى سلمة ﴾

۱: سنن الترمذي/الایمان ۲ (۱۵۲۴)، سنن النسائي/الایمان ۴۰ (۳۸۶۵-۳۸۶۹)، سنن ابن ماجه/الكفارات ۱۶ (۲۱۲۵)، (تحفة الأشراف: ۱۷۷۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۴۷/۱) (صحيح)

۲: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۷۷۷) (صحيح)



## د قال ابوداؤد تشریح او تنقیح:

په دې عبارت باندې د پوهیدو دپاره د دې حدیث چه کوم دویم سند وړاندې راځي هغه اوگورئ په هغې کښې داسې دی: «عن شهاب عن سلیمان بن ارقم ان یحیی بن ابی کثیر اخبره عن ابی سلمة» په دې سند کښې د زهری او ابوسلمه ترمنځه دوه واسطې ذکر دی سلیمان بن ارقم او یحیی ابن ابی کثیر خو په دې رومبی سند کښې په دې دواړو واسطو کښې یو واسطه هم نه ده ذکر شوې بلکه براه راست زهری د ابو سلمه نه روایت کوی، اوس د دې نه پس د مصنف رحمته الله په کلام باندې ځان پوهه کړئ، مصنف فرمائی ما د خپل استاد احمد بن شویبه نه واوریدل چه عبدالله ابن المبارک په دې حدیث د ابوسلمه باندې کلام کړې دې وړاندې هیڅ نشته چه څه کلام ئې پرې کړې دې خو مصنف رحمته الله فرمائی چه د ابن المبارک رحمته الله په حدیث باندې نقد او کلام کول په دې خبره باندې دلالت کوی چه زهری حدیث لره براه راست د ابوسلمه نه نه دې اوریدلې، دا خبره مصنف رحمته الله څنگه فهم کړه چه هغوی کلام هم په دې وجه باندې کړې دې، غالباً مصنف رحمته الله دا خبره ځکه اوگنرله چه د دې حدیث په سند کښې یو راوی هم داسې نشته چه هغه غیر ثقه وی، لهذا دا کلام په سند کښې دیو راوی د وجې نه نه دې بلکه د انقطاع د سند د وجې نه کیدې شی ځکه چه د دې نه روستو حدیث مصنف رحمته الله په داسې طریق باندې راوړې دې چه په هغې کښې د زهری او ابوسلمه ترمنځه دوه واسطې موجود دی، فثبت منه انقطاع هذا السند ووجه الکلام علیه، مصنف هم په دې باندې نه ده بس کړې بلکه وړاندې د امام احمد رحمته الله نقد هم چه په دې حدیث باندې دې هغه ذکر کوی: قَالَ أَبُو دَاوُدَ سَمِعْتُ أَحْمَدَ بْنَ حَنْبَلٍ يَقُولُ: أَفْسَدُوا عَلَيْنَا هَذَا الْحَدِيثَ. قِيلَ لَهُ: وَصَحَّ إِفْسَادُهُ عِنْدَكَ وَهَلْ رَوَاهُ غَيْرُ ابْنِ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ: أَيُّوبُ كَانَ أَثْلَمَ مِنْهُ. يَعْنِي أَيُّوبُ بْنُ سَلِيمَانَ بْنِ بِلَالٍ وَقَدْ رَوَاهُ أَيُّوبُ..... مصنف رحمته الله فرمائی ما د خپل استاد احمد بن حنبل رحمته الله نه واوریدل هغوی به فرمائیل بعض خلقو په مونږ باندې دا حدیث فاسد او خراب کړې دې، یعنی د دې په سند کښې خرابی کولو سره، چا ترې تپوس اوکړو چه ستاسو په نزد د دې حدیث د سند خرابوالې محقق دې؟ په اصل کښې سائل پوهه شوې وو چه امام احمد بن حنبل رحمته الله د دې حدیث د سند فساد چه ثابتوی هغه د هغې سند او طریق په وجه باندې دې کوم چه وړاندې په کتاب کښې راځي چه د هغې راوی ابوبکر بن اویس دې (چا چه د دې حدیث په سند کښې د زهری او ابوسلمه په مینځ کښې دوه واسطې ذکر کړې دي) نو سائل د امام احمد رحمته الله نه تپوس کوی چه د کوم حدیث په بناء باندې تاسو د دې حدیث د سند فساد ثابتوی چه د هغې راوی ابن ابی اویس دې نو آیا د ابن ابی اویس څوک متابع هم په دې کښې شته یا نه؟ چه مونږ هغه بل سند کوم چه راروان دې چه په هغې کښې دوه واسطې موجود هغې ته راجع اوئیلې شو، ځکه چه د کوم حدیث سند ته هغوی فاسد وائی د هغې راوی خو د زهری نه یونس دې چه ثقه او قوی دې او هغه دویم سند چه د هغې د وجې نه هغه سند ته منقطع وائی د هغې راوی ابن ابی اویس دې چه متکلم فیه دې، نو ترهغه وخته پورې چه د هغه څوک متابع ملاؤ نه شی هغې ته راجع څنگه وئیلې کیدې شی

نو د دې اصولی سوال جواب امام احمد رحمته الله داسې ورکړو چه عجيبه شان دې، او هغه دا چه هغوی په ځانې د متابع پيش کولو دا فرمائی چه د ابن ابی اويس چه کوم شاگرد دې يعنی ايوب هغه د ابن ابی اويس نه زيات ثقه دې نو گویا د شاگرد ثقاهت لره قائم مقام د متابع منی، يعنی د امام صاحب په ذهن کښې د ابن ابی اويس څوک متابع خو او نه چه هغه ئې بيان کړې وې بلکه دا ئې او فرمائيل چه ايوب کوم چه د ابن ابی اويس نه روايت کوی هغه ډير زيات ثقه دې خو دا خبره بس هم دغه شان ده د دې وجې نه حضرت ليکی: و انت خير بان جواب الامام غير صحيح على قاعدة المحدثين فان رواية ايوب بن سليمان لا يدفع ضعف ابی بکر بن ابی اويس فانه تلميذه فلا يقاوم حديث يونس عن الزهري فلا يثبت احتمال التدليس، حضرت دا فرمائی چه د شاگرد ثقاهت او قوت د استاد ضعف نه شی ختمولی چه هر کله دا خبره ده نو بيا د ابوبکر بن اويس حديث، د حديث يونس عن الزهري مقاومت نه شی کولی، لهذا د حديث ديونس عن الزهري مدلس يا منقطع کيدل ثابت نه شو کوم چه دا حضرات ثابتول غواړی، بيا وړاندې حضرت فرمائی على ان النسائي روى حديث يونس بسند هارون بن موسى المدني قال ثنا ابو ضمرة عن يونس عن ابن شهاب قال ثنا ابوسلمة عن عائشة رضي الله عنها، او گورئ په دې سند کښې ابن شهاب د ابوسلمة نه د سماع تصريح کوی، لهذا د دې حديث نه انقطاع ثابته شوه او نه تدليس، الى آخر ما ذكر في البذل

[۳۲۹۲] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَرْوَزِيُّ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ بْنِ أَبِي أُوَيْسٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلَالٍ، عَنْ ابْنِ أَبِي عَتِيقٍ، وَمُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنِ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ أَرْقَمَ، أَنَّ يَحْيَى بْنَ أَبِي كَثِيرٍ، أَخْبَرَهُ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تَذَرُ فِي مَعْصِيَةٍ، وَكَفَارَتِهِ كَفَارَةً يَمِينٍ"، قَالَ أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَرْوَزِيُّ: إِنَّمَا الْحَدِيثُ حَدِيثُ عَلِيِّ بْنِ الْمُبَارَكِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الزَّيْدِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَرَادَ أَنْ سُلَيْمَانُ بْنُ أَرْقَمَ وَهَمَّ فِيهِ، وَحَمَلَهُ عَنْهُ الزَّهْرِيُّ، وَأَرْسَلَهُ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَى بِقِيَّةٍ، عَنْ الْأَوْزَاعِيِّ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الزَّيْدِ، بِإِسْنَادٍ عَلَى بْنِ الْمُبَارَكِ مِثْلَهُ.

دعائشې رضي الله عنها نه روايت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی نذر پوره کول درست نه دی دگناه په کار کښې او ددې کفار به هغه وي کومه چه دقسم کفار ده، احمد بن حنبل رحمة الله عليه و نیلی دی چه دحديث اصل سند داسې دې علي بن مبارك دمحمد بن زبير نه او هغه دخپل پلار نه هغه د عمران بن حصين نه هغه د نبی صلی الله علیه و آله نه دا احمد د قول مفهوم دادې چه په دې حديث کښې د سليمان بن ارقم نه وهم شوې دې هغه دي لره مرسل نقل کړې دې د ابوسلمه نه او هغه دعائشه رضي الله عنها نه ابوداؤد وائی بقیه د اوزاعی نه، هغه د یحی نه، هغه د محمد بن زبي نه د علی بن مبارک په سند سره ددې په مثل روايت کړې دې.

#### تشریح الحديث:

قوله: حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَرْوَزِيُّ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ بْنُ سُلَيْمَانَ..... الخ:

دباب رومې حديث يعنی دحديث عائشة رضي الله عنها دا دويم طريق دې چه په هغې کښې ابن شهاب



او د ابو سمله ترمينخه دوه واسطې موجود دي کومې چه په رومبي سند کښې نه وې هم په دې وجه باندې امام ابوداؤد رحمه الله په دې سند باندې د عبدالله ابن المبارک او امام احمد بن حنبل رحمتهما نقد نقل فرماتلې وو، چه د هغې مطلب دا شو چه د حديث عائشه رضي الله عنها دا طريق ثانی هم غلط دې پس فرمائی: قَالَ أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَوْزِيُّ: إِنَّمَا الْحَدِيثُ حَدِيثُ عَلِيِّ بْنِ الْمُبَارَكِ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ عَنِ النَّبِيِّ -صلى الله عليه وسلم-. أَرَادَ أَنْ سُلَيْمَانَ بْنُ أَرْقَمٍ وَهُمْ فِيهِ وَحَمَلَهُ عَنْهُ الزُّهْرِيُّ وَأَرْسَلَهُ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا.

احمد بن محمد مروزي رحمه الله فرمائی چه دا پورته طريق يعنى سليمان بن ارقم عن يحيى بن ابى كثير بالكل غلط دې، صحيح طريق د يحيى بن ابى كثير د دويم شاگرد يعنى د على ابن المبارک والا دې، او على ابن المبارک حديث داسې روايت کړې دې عن يحيى بن ابى كثير عن محمد بن الزبير عن ابيه عن عمران بن حصين، په اصل کښې دا سليمان بن ارقم راوى مجمع على ضعفه دې هغه سند د يحيى بن ابى كثير نه غلطې طريقې سره بيان کړې دې، د يحيى بن ابى كثير استاد په دې سند کښې ابوسلمه نه دې لکه چه سليمان بن ارقم بيان کړې ده بلکه محمد بن الزبير دې او بيا د هغوى نه وړاندې سند داسې دې عن ابيه عن عمران بن حصين رضي الله عنه گويا دا حديث د مسانيد عائشه رضي الله عنها نه نه دې بلکه د عمران بن حصين د مسانيدو نه دې او دا ټول خرابې د سليمان بن ارقم د طرف نه دې، او بيا په دې باندې زياتى خرابوالې دا اوموندلې شو چه چونکه دا حديث امام زهري رحمه الله د سليمان بن ارقم نه اخستلې دې نو هغوى په ځانې د بعينه نقل کولو مرسل د ابو سلمه نه روايت کړو د مينځ دوه راويان ئې تدليسا حذف کړل (د زهري شمير دې هم په مدلسينو کښې) خلاصه دا شوه چه د دې حديث عائشه رضي الله عنها په سند کښې دوه کسانو خرابې کړې ده اول سليمان بن ارقم چه هغه سند بل څه بيان کړو اصل حديث د عمران بن حصين رضي الله عنه د مسانيدو نه وو سليمان دا په ځانې د هغوى عائشې رضي الله عنها ته منسوب کړو، دويم تصرف د دې حديث په سند کښې د سليمان شاگرد ابن شهاب زهري کړې دې چه د مينځ نه ئې دوه راويان تدليسا حذف کړل، امام ابوداؤد رحمه الله چه څه وئيل غواړي د هغې تشرېح هغه ده کومه چه مونږ پورته بيان کړه، اوس د دې ټولې خبرې حاصل دا شو چه د باب په شروع کښې چه مصنف رحمه الله کوم حديث د عائشې رضي الله عنها په يو طريق سره د هغې نه پس په دويم طريق ذکر کړو، دا حديث د دواړو طريقو په اعتبار سره وهم دې، او صحيح داسې دې کومه چه احمد بن محمد مروزي وائى يعنى: على بن المبارک عن يحيى بن ابى كثير عن محمد بن الزبير عن ابيه عن عمران بن حصين رضي الله عنه عن النبي ﷺ انه قال لا نذر فى معصية وكفارته كفارة يمين.

زه د ابوداؤد په سبق کښې وایم چه دا ( قال ابوداؤد ) په ټول کتاب کښې د ټولو اقاويلو د ابوداؤد نه زيات مشکل او سخت دې د الله پاک په فضل سره مونږ پورته د دې پوره وضاحت ليکلې دې اوس به د پوهيدونکو دپاره په دې کښې هيڅ سختی نه وي، او مونږ چه د دې کومه تشرېح کړې ده هغه تقريبا ټوله د بذل المجهود نه اخستلې شوې ده.

د عائشې رضی اللہ عنہا په حدیث باندې د محدثینو نقد

## او د احنافو د طرف نه د هغې رد

د دې نه پس ځان په دې پوهه کړې چې دا په حدیث د عائشې رضی اللہ عنہا باندې کلام شروع دې په نذر د معصیت کښې د احنافو د مسلک دلیل دې یعنی دا چې نذر د معصیت منعقد کیږي او بیا په هغې کښې کفار د یمین واجب کیږي او جمهور علماء کرام رحمہم اللہ دا وائی چې نذر د معصیت نه منعقد کیږي او نه په دې کښې کفار واجب کیږي، اوس دا حضرات محدثین په دې حدیث عائشة رضی اللہ عنہا باندې کلام کوي، د امام ابوداؤد او امام احمد رحمہم اللہ وغیره کلام خو اوس پورته ذکر شو، امام خطابی رحمہم اللہ دا فرمائی چې که دا حدیث د عائشې رضی اللہ عنہا صحیح شی لکان القول به واجبا والمصیر الیه لازما،

او بیا وړاندې فرمائی، خو دا حدیث ثابت نه دې ځکه چې د محدثینو دا دعوی ده چې انه حدیث مقلوب او د دې نه پس بیا څه چې امام ابوداؤد رحمہم اللہ ذکر کړی دی امام خطابی هم هغه بیان کړی دی او بیا ئې په آخر کښې دا وئیلې دی چې کله دا ثابت شوه چې دا حدیث داسې مروی دې څنگه چې احمد بن محمد مروزی بیان کوي، او څنگه چې هغوی فرمائی د دې په سند کښې محمد بن الزبیر او د هغه پلار راوی دې او دا دواړه مجهول دي، پس دا حدیث د زهری په طریق سره خو مقلوب دې او په دویم طریق کښې رجل مجهول دې لهذا دا حدیث ساقط الاحتجاج شو، واللہ تعالی اعلم.

د دې ټولو جواب زموږ د طرف نه دا دې کوم چې حضرت سهارنپوری په بذل کښې د علامه سندی د حاشیې نه چې په نسائی باندې ده نقل کړې دې چې د هغې حاصل دا دې چې دا حدیث صرف د عائشې رضی اللہ عنہا نه نه دې روایت بلکه د عقبه بن عامر او عمران بن حصین رضی اللہ عنہما نه هم روایت کړې شوې دې، او د حدیث عائشة رضی اللہ عنہا بعض اسانید کښې «عن الزهری عن ابی سلمة» دې او په بعضو طرقو کښې «عن الزهری قال حدثنا ابو سلمة» چې صریح دې د زهری په سماع کښې د ابوسلمة نه (لهذا د تدلیس احتمال بیان کول صحیح نه دی)، او د دې په بعض طرقو کښې «عن الزهری عن سلیمان بن ارقم ان یحیی بن ابی کثیر حدثه انه سمع اباسلمة، وهذا الاختلاف یمکن دفعه باثبات سماع الزهری مرة عن سلیمان عن یحیی بن ابی سلمة ومرة عن ابی سلمة نفسه، وعند ذلک لا قطع بضعفه سیما حدیث عقبه وعمران یؤید الثبوت واللہ تعالی اعلم.

یعنی د زهری په حدیث کښې چې کوم اضطراب او اختلاف دې په دې باره کښې دا وئیلې کیدې شی د هغې په باره کښې دا وئیلې کیدې شی چې ممکنه ده دا حدیث د زهری په دواړو طرقو سره را رسیدلې وی براه راست د ابوسلمة نه هم او په واسطه ده سلیمان عن یحیی بن ابی کثیر نه هم، او په دې کښې هیڅ د اشکال خبره نشته، خصوصا چې د عقبه بن عامر او عمران بن حصین رضی اللہ عنہما د حدیث نه هم د کفارې ثبوت ملایږي.

حدیث عائشة رضی اللہ عنہا اخرجه الترمذی وابن ماجه، قاله المنذری.



[۳۲۹۳] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الْقَطَّانُ، قَالَ: أَخْبَرَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الْأَنْصَارِيُّ، أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ زُحْرٍ: أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ أَخْبَرَهُ، أَنَّ عُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ مَالِكٍ أَخْبَرَهُ، أَنَّ عُقْبَةَ بْنَ عَامِرٍ أَخْبَرَهُ، "أَنَّهُ سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: عَنْ أُخْتٍ لَهُ، نَذَرَتْ أَنْ تَحُجَّ حَافِيَةً غَيْرَ مُخْتَمِرَةٍ، فَقَالَ: مُرُوهَا فَلْتَحْتَمِرَ، وَلْتَرْكَبَ، وَلْتَصُومَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ".

دعقبة بن عامر نه روایت دې فرمائی چه د نبی ﷺ نه مې دخپلې خور متعلق تپوس اوکړو هغه داسې چه زماخورداندرمنلې وو چه زه به خپي ابله خپي اوسرتور سر حج کوم نبی ﷺ ده ته اوفرمائیل هغې ته داحکم اوکړې چه خپل سر پټ کړي او په سورلئ دي حج ته لاړه شي اودرې روژي دي اونيسي.

قوله: عن عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ أَخْبَرَهُ: أَنَّهُ سَأَلَ النَّبِيَّ -صلى الله عليه وسلم- عَنْ أُخْتٍ لَهُ نَذَرَتْ أَنْ تَحُجَّ حَافِيَةً غَيْرَ مُخْتَمِرَةٍ فَقَالَ: «مُرُوهَا فَلْتَحْتَمِرَ وَلْتَرْكَبَ وَلْتَصُومَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ».

مضمون د حديث دا دې چه عقبه بن عامر رضي الله عنه رسول الله ﷺ ته عرض اوکړو چه زما يوه خور ده چا چه دا نذر منلې دې چه هغه به حج کوی پيدل خپې ابله او بغير د سر پټولو نه، رسول الله ﷺ اوفرمائیل هغې ته پکار دی چه سر پټ کړي او په سورلئ حج اوکړي او هغې ته پکار دی چه درې روژې اونيسي.

### د روايات الباب تجزيه

خان پوهول پکار دی چه مصنف رحمه الله د اخت عقبه رضي الله عنه د نذر قصې لره په دوه طريقو سره ذکر کړې ده يو په روايت د عقبه او دويم په روايت د عكرمة عن ابن عباس مسندا، او په يو طريق كښې دى عن عكرمة مرسلًا، بيا د روايت د عقبه بن عامر رضي الله عنه الفاظ خو دا دى «مروها فليحتمر ولتركب ولتصوم ثلاثة ايام» او په يو روايت كښې دى «لتمش ولتركب» په دې كښې د صوم وغيره ذكر نشته، او د ابن عباس رضي الله عنه په يو روايت كښې دى «فامرها النبي ﷺ ان تركب وتهدي هديا» او په يو روايت كښې د هغوى داسې دى فليحتج راكبة ولتكفر يمينها، او د ابن عباس رضي الله عنه په روايت كښې صرف د مشى ذكر دې د عدم اختمار نه.

د دې نه پس مصنف رحمه الله د انس رضي الله عنه حديث ذكر كړو چه د هغې تعلق د اخت عقبه رضي الله عنه سره نه دې بلكه په هغې كښې دى رأى رجلاً يُهاذى بينَ اثنَيْهِ او په دې كښې دى، ان الله لغنى عن تعذيب هذا نفسه وامره ان يركب، حافظ فرمائی چه په حديث د انس رضي الله عنه كښې دى چه رسول الله ﷺ هغه ته د ركوب حكم اوکړو جزما، او د اخت عقبه رضي الله عنه په باره كښې دا دى چه هغې ته رسول الله ﷺ حكم اوفرمائيلو، ان تمشى وان تركب... خكه په حديث د انس رضي الله عنه كښې نذر منلو والا «كان شيخا ظاهر العجز» او د اخت عقبه حال دا نه وو په دې وجه رسول الله ﷺ هغې ته اوفرمائيل چه تر خو پورې پيدل تلې شي پيدل دې لاړه شي او كله چه عاجزه شي نو سوره دې شي. آه

١: سنن الترمذي/الايمان ١٦ (١٥٤٤)، سنن النسائي/الايمان ٣٢ (٣٨٤٦)، سنن ابن ماجه/الكفارات ٢٠ (٢١٣٤) (تحفة الأشراف: ٩٩٣٠)، وقد أخرجه: مسند احمد (١٤٣/٣، ١٤٥/٣، ١٤٧، ١٤٩، ١٥١)، سنن الدارمي/الندور ٢ (٢٣٧٩) (ضعيف)

## الكلام على الحديث من حيث الفقة :

د دې نه پس خان پوهول پکار دی چه کوم سرې د حج ماشیا نذر او منی نو په هغه باندې ایفاء واجب ده گڼې په هغه باندې به جزا واجب وی، پس که هغه د خپل نذر ایفاء او کره نو ډیره ښه ده او که وې نه کره نو د امام احمد رحمه الله مذهب دا دې چه په دې کښې به د یمین کفار ه واجب وی لهذا « ولتصم ثلاثة ايام » والا روایت به د حنابل ه موافق وی او د امام شافعی او مالک رحمهم الله په نزد په هغه باندې هدی واجب ده، او د احنافو په نزد به هدی په هغه صورت کښې واجب ده « اذا كان الركوب في اكثر المسافة » او که داسې نه وی نو په هغه باندې به د شاة قیمت واجب وی په اندازه د رکوب، د ائمه ثلاث استدلال د ابن عباس رضي الله عنه د روایت نه اوشو چه په هغې کښې دی، « ان ترکب وتهدي هديا » اوس چه په کوم روایت کښې « ولتصم ثلاثة ايام » دی هغه د ائمه ثلاثه خلاف دی، د دې جواب دا کیدې شی چه دا ممکنه ده چه دا روایت بالمعنی وی ځکه چه د ابن عباس رضي الله عنه د روایت یو طریق داسې دې « فلتحج راكبة ولتكفر يمينها » نو هم هغه راوی « ولتصم ثلاثة ايام » سره تعبیر کړې دې، حال دا چه د کفارې نه مراد دلته کفارة الجنایة وو لکه چه د ابن عباس رضي الله عنه د روایت په دویم طریق کښې « ان ترکب وتهدي هديا » راغلې دې.

پس ملا علی قاری رحمته الله په مرقاة کښې فرمائی « والظاهر ان المراد بالتكفير كفارة الجنایة وهي الهدى او ما يقوم مقامه من الصوم » او دا هر څه خو هغه دی کوم چه مونږ د حافظ و غیره رحمهم الله شارحینو د کلام نه فهم کړه او زمونږ حضرت سهارنپوری رحمته الله په بذل المجهود کښې د دې په شرح کښې لیکلې دی چه د اخت عقبة رضي الله عنه په نذر کښې دوه څیزونه موندلې شوي دی یو د حج ماشیا نذر دویم د عدم اختمار نذر، په دې دواړو کښې یو نذر نذر د طاعت دې او دویم نذر د معصیت، د نذر طاعت پوره کول واجب دی یعنی حج ماشیا، او د نه پوره کولو په صورت کښې هدی یعنی دم جنایت به واجب وی لکه چه په یو روایت کښې د هدی ذکر دې، او دویم نذر کوم چه نذر معصیت دې د هغې ایفاء چونکه ناجائز ده او حائث کیدل واجب دی، او بیا به په دې صورت کښې د یمین کفار ه واجب کیږی لکه چه دلته په یو روایت کښې دی « ولتصم ثلاثة ايام » (۱) مصنف رحمته الله چه دا حدیث د کوم ترجمه الباب د لاندې راوړې دې د هغې نه د حضرت د رائي تائید کیږی.

د حضرت شیخ د حاشیه بذل نه په دې مسئله کښې د مذاهب ائمه تفصیل ذکر کړې شوي دې کوم چه لاندې په حاشیه کښې لیکلې شی فقیه من نذر المشی ثم رکب فعند احمد القادر علی المشی اساء دون العاجز وعلیه کفارة یمین بكل حال والروایة الاخری علیه دم وهو قول الشافعی فی الحالین القدرة والعجز والدم الشاة علی الاصح، وقول آخر انه بدنة، وعند مالک يجب قضاء ما رکب فی سنة اخرى فیمشی ما رکب ويرکب ما مشی اذا كان المشی كثيرا وكان فی المناسک وهي من

(۱) حاصل دا چه د هدی حکم د رکوب د وجې نه دې او د صوم ثلاثه ايام تعلق د اختمار سره دې دواړه روایتونه به جمع کولې شی



خروج مكة الى رجوع مني، ومع ذلك يجب الهدى ايضا وهذا اذا كان قريب البلدة كالمدينة او متوسطها كالمصري، وان كان بعيدا البلدة كالأفريقي فعليه الهدى فقط وكذا اذا كان الركوب قليلا في غير المناسك وعندنا الحنفية، اذا ركب في اكثر الطريق بعذر او بلا عذر فعليه دم شاة، وفي الاقل او المساواة بقدر ذلك من قيمة الشاة (الاجز ۴/۱۳۳) والحديث اخرجه الترمذی والنسائي وابن ماجة، قاله المنذرى وحديث انس رضي الله عنه اخرجه البخاري ومسلم والترمذی والنسائي، قاله المنذرى

[۳۲۹۴] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، قَالَ: كَتَبَ إِلَيَّ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ زَحْرٍ مَوْلَى لِبْنِي صَمْرَةَ، وَكَانَ أَيْمَارَ جُلٍّ، أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الرَّعِينِيَّ أَخْبَرَهُ، بِإِسْنَادٍ يَحْيَى وَمَعْنَاهُ.

عبد الرحمن واثی: مونږ ته ابن جريج بيان کړې دې چې يحيى بن سعيد ماته اوليکل چې ماته د بنو ضميره غلام عبيد الله بن زحريا بل چا خبر راکړو چې هغوی ته ابوسعید رعیني د يحيى په سند سره ددې مفهوم حديث خبر ورکړې دې.

[۳۲۹۹] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، أَنَّ يَزِيدَ بْنَ أَبِي حَبِيبٍ أَخْبَرَهُ، أَنَّ أَبَا الْخَيْرِ حَدَّثَهُ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ الْجُهَنِيِّ، قَالَ: "تَذَرْتُ أُخْتِي أَنْ تَمْشِيَ إِلَى بَيْتِ اللَّهِ، فَأَمَرْتَنِي أَنْ أَسْتَقْتِيَ لَهَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَاسْتَقْتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: لِيَتَمَشَّ وَلَتَرْكَبَ".

دعقبه بن عامر الجهني رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې زما خور نذر منلې دې چې بیت الله ته به پیدل زم او ماته ئې او وئیل چې زه ددې دپاره دنبی صلی الله علیه وسلم نه شرعي حکم معلوم کړم نبی صلی الله علیه وسلم راته او فرمائیل پیدل هم تلې شي او په سورلئ باندې هم تلې شي (مراد دادې چې پیدل دي روانه شي خوچه کله ستړي شي توبیا دي په سورلئ سوره شي).

[۳۲۹۷] (۳) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "لَمَّا بَلَغَهُ أَنَّ أُخْتَ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ نَذَرَتْ أَنْ تَحْجَّ مَا شِئَتْ، قَالَ: إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنْ نَذْرِهَا، مَرْهَا فَلَتَرْكَبَ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَاهُ سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ نَحْوَهُ وَخَالِدٌ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحْوَهُ.

د ابن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی هرکله چې نبی صلی الله علیه وسلم ته دا خبره ورسیدله چې دعقبه بن عامر خور دپیدل حج کولونذر منلې دې تو او ئې فرمائیل چې الله تعالی دهغې دنذر ته احتیاج نه لري او هغې ته حکم وکړئ چې په سورلئ دي سوره شي امام ابوداؤد وئیلی دی چې دسعید بن ابی عروبه نه هم داسې روایت منقول دي او خالد د عکرمه نه او هغه دنبی صلی الله علیه وسلم نه هم داسې روایت نقل کړي دې.

(۱): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۹۹۰) (ضعيف)

(۲): صحيح البخاري / جزاء الصيد ۲۷ (۱۸۶۶)، صحيح مسلم / النذر ۴ (۱۶۴۴)، سنن النسائي / الأيمان ۳۱ (۳۸۴۵)، (تحفة

الأشراف: ۹۹۵۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۵۲/۴) (صحيح)

(۳): انظر ما قبله: (۳۲۹۲)، (تحفة الأشراف: ۶۱۹۷، ۱۹۱۲۱) (صحيح)

[۳۲۹۶] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، "أَنَّ أُخْتَ عَقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ نَذَرَتْ أَنْ تَمْشِيَ إِلَى الْبَيْتِ، فَأَمَرَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تَرْكَبَ، وَتَهْدِيَ هَذَايًا".

د ابن عباس رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی دعقبة بن عامر خور د پیدل حج کولو نذرمنلې وو نو نبی صلی اللہ علیہ وسلم ورته او فرمائیل چه په سورلئ دې سوره شی او حج ته دې دخان سره قربانی بوخی.

[۳۲۹۵] (۲) حَدَّثَنَا حُجَّاجُ بْنُ أَبِي يَعْقُوبَ، حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ مَوْلَى آلِ طَلْحَةَ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ أُخْتِي نَذَرَتْ يَغْنَى أَنْ تَحْجَّ مَاشِيَةً، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ لَا يَصْنَعُ بِشَقَاءِ أُخْتِكَ شَيْئًا، فَلْتَحْجَّ رَاكِبَةً، وَلْتَكْفِرْ عَنْ يَمِينِهَا".

د ابن عباس رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته یوکس حاضر شو عرض ئې وکړو چه ای د الله رسوله زما خور د پیدل حج کولو نذرمنلې دې نو نبی صلی اللہ علیہ وسلم ورته او فرمائیل چه الله تعالی ستا خور ته دهغې په تکلیف باندې هیڅ اجر نه ورکوي هغې لره پکار دي چه په سورلي دي حج وکړي او دخپل قسم کفاره دي ورکړي.

[۳۳۰۱] (۳) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ حُمَيْدِ الطَّلِيلِ، عَنْ ثَابِتِ الْبُنَاتِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "رَأَى رَجُلًا يَمْدَى بَيْنَ ابْنَيْهِ، فَسَأَلَ عَنْهُ: فَقَالُوا: نَذَرْنَا أَنْ يَمْشِيَ، فَقَالَ: إِنَّ اللَّهَ لَغَنَى عَنْ تَعْذِيبِ هَذَا نَفْسَهُ، وَأَمْرَهُ أَنْ يَرْكَبَ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَاهُ عَمْرُو بْنُ أَبِي عَمْرٍو، عَنِ الْأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: نَحْوَهُ.

د انس بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم یوکس اولیدو چه دخپلو دوه خامنوپه اوږو باندې ئې لاس ایښودلي وو او روان وو نبی صلی اللہ علیہ وسلم دهغه متعلق تپوس وکړو نو صحابه کرامو ورته او وئیل چه ده د پیدل تلونذرمنلې دې نبی صلی اللہ علیہ وسلم ورته او فرمائیل چه الله تعالی دده ددې تکلیف نه بې پرواه دې کوم چه دې خپل خان ته ورکوي، او په سورلئ باندې دسوریدو حکم ئې ورته وکړو. ابو داود وائی: عمرو بن ابی عمرو د اعرج نه، هغه د ابوهریره رضی اللہ عنہ نه، هغه د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نه هم ددې په شان حدیث روایت کړې دې.

[۳۲۹۸] (۴) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عِكْرِمَةَ: أَنَّ أُخْتَ عَقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ يَمْعَى، وَلَمْ يَذْكُرِ الْهَدْيَ، وَقَالَ فِيهِ: مَرَّ أُخْتُكَ فَلْتَرْكَبَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَاهُ خَالِدٌ، عَنْ عِكْرِمَةَ يَمْعَى هِشَامٍ.

۱: (تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۶۱۹۷، ۱۹۱۲۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۳۹/۱، ۲۵۲، ۳۱۱)، سنن الدارمي/الندور ۲ (۲۳۸۰) (صحيح)

۲: (تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۶۳۵۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۱۰/۱، ۳۱۵) (ضعيف)

۳: (صحيح البخاري/جزاء الصيد ۲۷ (۱۸۶۵)، الأيمان ۳۱ (۶۷۰۱)، صحيح مسلم/الندور ۴ (۱۶۴۲)، سنن الترمذي/الأيمان ۹ (۱۵۳۷)، سنن النسائي/الأيمان ۴۱ (۳۸۸۴، ۳۸۸۵)، (تحفة الأشراف: ۳۹۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۰۶۷۳، ۱۱۴، ۱۸۳، ۲۳۵، ۲۷۱) (صحيح)

۴: (انظر حديث رقم: (۳۲۹۶)، (تحفة الأشراف: ۶۱۹۷، ۱۹۱۲۱) (صحيح)



د عكرمه نه روايت دې چه د عقبه بن عامر رضي الله عنه خور، ورپسې هغه خبرې دې كومي چه دهشام په حديث كښې دې خوپه هغې كښې د هديې ذكرنشته، خودا ذكر پكښې شته چه: «مر أختك فلتركب» "خپلې خورته حكم وركړه چه هغه سوره شى" - ابوداود وائى: هغه ته خالد د عكرمه نه دهشام په شان روايت كړې دې.

[۳۳۰۲] (۱) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ، حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ، عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي الْأَحْوَلُ، أَنَّ طَاوُسًا أَخْبَرَهُ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "مَرَّ وَهُوَ يَطُوفُ بِالْكَعْبَةِ يَأْتِيَانِ يَقُودُهُ بِخِزَامَةٍ فِي أَنْفِهِ، فَقَطَعَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِبِدَةٍ، وَأَمْرَةً أَنْ يَقُودَهُ بِبِدَةٍ".

عبدالله بن عباس رضي الله عنه وائى چه نبی کریم صلی الله علیه وسلم د کعبې طواف کولو چه یو داسې انسان سره تیرشو چه دهغه په پوزه کښې ئې پیزوان چولې وو او روان کړې وو، نو نبی کریم صلی الله علیه وسلم خپل لاس سره دهغه پیزوان کټ کړ او حکم ئې اوکړ چه دده لاس اونیسئ بوئې ځئ.

[۳۳۰۳] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَفْصٍ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ السَّلْمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ أَبِي طَهْمَانَ، عَنْ مَطَرٍ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، "أَنَّ أختَ عَقْبَةَ بْنَ عَامِرٍ نَذَرَتْ أَنْ تَحْجَّ مَا شِئَتْ، وَأَنَّهَا لَا تُطِيقُ ذَلِكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنْ مَشْيِ أَخْتِكَ، فَلْتَرْكَبْ، وَلْتَهْدِ بِدَتَهُ".

عبدالله بن عباس رضي الله عنه وائى چه د عقبه بن عامر رضي الله عنه خور پیدل د حج کولو نذر او منلو او هغې د پیدل تلو طاقت نه لرلو، نو نبی کریم صلی الله علیه وسلم (عقبه بن عامر رضي الله عنه ته) او وئیل: الله تعالی ته ستاسو دخورد پیدل تلو پرواه نشته، (ته خپلې خور ته او وایه چه) هغه سوره شى او (دنذر د کفارې په طور باندي) یو اوښ قربانی کړی.

[۳۳۰۴] (۳) حَدَّثَنَا شُعَيْبُ بْنُ أَبِي أُيُوبَ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ هِشَامٍ، عَنْ سَفْيَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ عَقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ الْجُهَنِيِّ، أَنَّهُ قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ أختِي نَذَرَتْ أَنْ تَمْشِيَ إِلَى الْبَيْتِ"، فَقَالَ: إِنَّ اللَّهَ لَا يَصْنَعُ بِمَشْيِ أَخْتِكَ إِلَى الْبَيْتِ شَيْئًا".

عقبه بن عامر جهنی رضي الله عنه وائى چه دوی نبی کریم صلی الله علیه وسلم ته او وئیل: زما خور بیت الله ته د پیدل تلو نذر منلې دې، نو رسول الله صلی الله علیه وسلم او فرمائیل: ستا خورته پیدل بیت الله ته د تلو الله تعالی هیڅ ثواب نه ورکوی.

### بَابُ مَنْ نَذَرَ أَنْ يُصَلِّيَ فِي بَيْتِ الْمَقْدِسِ خوک چه په بیت المقدس کښې د مونځ کولو نذراومنی

د احنافو په نزد په نذر کښې تعین د زمان او مکان معتبر نه دې، لهذا که یو انسان په یو خاص مسجد کښې د مونځ کولو نذر او منی یا په یو خاص زمانه کښې د روژې منلو نذر او منی په نفس مونځ او نفس روژې سره به د هغه نذر پوره شى، او د مالکیانو او حنابلو مسلک هم دادې خودهغوی په نزد مساجد ثلاثه ددې قاعدې نه مستثنی دی، ددې مساجد

۱: صحیح البخاری/الحج ۶۵ (۱۶۲۰)، ۶۶ (۱۶۲۱)، الأیمان ۳۱ (۶۷۰۳)، سنن النسائي/الحج ۱۳۵ (۲۹۲۳) الأیمان ۲۹ (۳۸۴۱، ۳۸۴۲)، (تحفة الأشراف: ۵۷۰۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۶۴/۱) (صحیح)  
۲: انظر حديث رقم: (۳۲۹۶)، (تحفة الأشراف: ۶۲۱۷) (صحیح)  
۳: تقرده أبو داود، انظر حديث رقم: (۳۲۹۳، ۳۲۹۹)، (تحفة الأشراف: ۹۹۳۸) (صحیح)

تعيين د هغوی په نزد معتبر دي، او د امام شافعي رحمه الله نه دوه روايتونه دي، او په احنافو کښي د امام زفر رحمه الله په نزد تعين د زمان او مکان او شخص په نذر کښي معتبر دي.

[٣٣٠٥] (١) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حَبِيبُ الْمَعْلَمِ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ رَجُلًا قَامَ يَوْمَ الْفَتْحِ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنِّي نَذَرْتُ لِلَّهِ أَنْ فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكَ مَكَّةَ، أَنْ أَصِلِيَ فِي بَيْتِ الْمَقْدِسِ رَكَعَتَيْنِ، قَالَ: صَلِّ هَاهُنَا، ثُمَّ أَعَادَ عَلَيْهِ، فَقَالَ: صَلِّ هَاهُنَا، ثُمَّ أَعَادَ عَلَيْهِ، فَقَالَ: شَأْنُكَ إِذَا؟ قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَى نَحْوَهُ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

د جابر بن عبد الله رحمه الله نه روايت دي فرمائي چه دفتح مکې په ورځ باندې يو کس پاڅيدو او عرض ئې اوکړو اي دالله رسوله مادالله دپاره داندز منلې وو که چرې ته مکه فتح کړي نوزه به په بيت المقدس کښي دوه رکعته مونځ کوم نبي عليه السلام ورته اوفرمايل هغه دوه رکعته دلته اوکړه دغه کس دوباره بياتپوس اوکړو نونبي عليه السلام ورته هم هغه جواب ورکړو چه هغه دوه رکعته هم دلته اوکړه، هغه سړي بيا خپل سوال دوباره کړو نبي عليه السلام ورته اوفرمايل اوس دي خپل اختيار دي.

قَالَ: «صَلِّ هَاهُنَا» ثُمَّ أَعَادَ عَلَيْهِ فَقَالَ: «صَلِّ هَاهُنَا»

مضمون د حديث دا دي جابر رحمه الله فرمائي چه د مکې د فتح په ورځ يو سړي اودريدو او هغه د رسول الله صلى الله عليه وسلم نه تپوس اوکړو چه ما دا نذر منلي وو د الله پاک دپاره چه الله پاک په تاسو باندې مکه فتح کړه نو زه به په بيت المقدس کښي دوه رکعته ادا کوم، رسول الله صلى الله عليه وسلم اوفرمايل هم دلته ئې اوکړه هغه بيا دوباره دا سوال اوکړو نو رسول الله صلى الله عليه وسلم بيا ارشاد اوفرمايلو هم دلته ئې اوکړه، بيا په دريم کړت هم داسې اوشو نو رسول الله صلى الله عليه وسلم اوفرمايل فَقَالَ: «شَأْنُكَ إِذَا» يعنى بس بيا ته پوهه شه اوستا کار.

[٣٣٠٦] (٢) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، وَحَدَّثَنَا عَبَّاسُ الْعَنْبَرِيُّ الْمَعْفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحٌ، عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي يُونُسُ بْنُ الْحَكَمِ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ، أَنَّهُ سَمِعَ حَفْصَ بْنَ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، وَقَالَ عَبَّاسُ بْنُ حَنْظَلَةَ أَخْبَرَاهُ عَنْ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، عَنْ رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِهَذَا الْخَبَرِ، زَادَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "وَالَّذِي بَعَثَ مُحَمَّدًا بِالْحَقِّ، لَوْ صَلَّيْتَ هَاهُنَا، لَأَجَزْتُ عَنْكَ صَلَاةَ فِي بَيْتِ الْمَقْدِسِ". قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَاهُ الْأَنْصَارِيُّ، عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ، فَقَالَ جَعْفَرُ بْنُ عَمْرٍو قَالَ عَمْرُو بْنُ حِيَّةٍ وَقَالَ: أَخْبَرَاهُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، وَعَنْ رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

عمر بن عبد الرحمن بن عوف په صحابه کرامو کښي ديوڅو کسانونه داروايت نقل کړې دي اودا اضافې ئې کړي ده چه نبي عليه السلام اوفرمايل په هغه ذات مي دي قسم وي چاچه محمد په حقه راليرلې دي که چرې ته دغه دوه رکعتونه دلته (بيت الله) کښي اوکړي نو دابه ستادپاره کافي شي دبیت المقدس ددوه رکعتونونه امام ابوداود فرمائي چه داروايت انصاري دابن جريج نه نقل کړې دي او وئيلي ئې دي چه جعفر بن عمر او عمر بن حيه دواړو داروايت د عبد الرحمن بن عوف او هغه د صحابه کرامونه نقل کړې دي.

(١): تقدريه ابوداود، (تحفة الأشراف: ٢٤٠٦)، وقد أخرجه: مسند احمد (٣/٣٦٣)، سنن الدارمي/الندور ٤ (٢٣٨٤) (صحيح)

(٢): تقدريه ابو داود، (تحفة الأشراف: ١٥٦٥٠)، وقد أخرجه: مسند احمد (٥/٣٧٣) (ضعيف الإسناد)



## شرح السند :

قوله: أَنَّهُ سَمِعَ حَفْصَ بْنَ عَمْرٍو بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ وَعَمْرُو قَالَ عَبَّاسٌ : ابْنُ حَنْتَةَ أَخْبَرَاهُ عَنْ عَمْرٍو بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ :

په دې سند باندې ځان داسې پوهه کړې چې د يوسف بن الحكم دوه استاذان دي حفص بن عمر او عمر، د دې دويم استاد په باره کښې د مصنف رحمه الله د يو استاد يعنې مخلد بن خالد خوصرف عمر وئيلې دې، بغيرد نسبت نه اود مصنف رحمه الله دويم استاد عباس عنبري په ځانې د عمر عمر بن حننه يعنې د عمر نسبت ئې هم ذکر کړو. د « اخبراه » ضمير د تشنيه حفصه بن عمر او عمر بن حننه ته راجع دې، يعنې دې دواړو خبر ورکړو خپل شاگرد يوسف ته.

قَالَ أَبُو دَاوُدَ : رَوَاهُ الْأَنْصَارِيُّ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ فَقَالَ جَعْفَرُ بْنُ عَمْرٍو وَقَالَ عَمْرُو بْنُ حَيْثَةَ  
دا انصاري د ابن جريج د شاگرد د روح عدیل (مقابل) دې کوم چې پورته په سند کښې راغلو، مطلب دا دې چې د ابن جريج شاگرد روح خود هغوی نه د يوسف د استاذ نوم حفص بن عمر ذکر کړې دې، او دې انصاري د ابن جريج نه په ځانې د حفص بن عمر جعفر بن عمر ذکر کړې دې، او بله دا چې د عمر بن حننه په ځانې ئې عمر بن حيه ذکر کړې دې. «وقال اخبراه عن عبدالرحمن بن عوف وعن رجال» يعنې انصاري حفص بن عمر او د عمر بن حننه استاد عبدالرحمن بن عوف ته وئيلې دې په ځانې د عمر بن عبدالرحمن، او دويم فرق ئې دا اوکړو چې په ځانې د «عن رجال» ئې «وعن رجال» کړو.

## بَابُ فِي قَضَاءِ النَّذْرِ عَنِ الْمَوْتِ

د مړي د طرف نه د نذر پوره کولو بيان

په مسئله الباب کښې مذاهب د ائمه :

يعنې د مړي په ذمه که يو نذر وي نو د هغې د پوره کولو بيان، د دې تفصيل (۱) دا دې چې نذر دوه حالو نه خالي نه دې يا خوبه هغه مالي وي يا بدني، يعنې د هغې تعلق به يا خو عبادت ماليه سره وي لکه صدقه يا عبادت بدنيه سره، که عبادت ماليه دې نو بيا به کتلې شي چې مړي مال پريخودلې دې يا نه، که نه ئې وي پريخودلې نو پوره کول د چا په نزد هم واجب نه دي، او که پريخودلې ئې وي نو بيا به د دې وصيت تنفيذ صرف په ثلث مال کښې واجب وي، د امام شافعي او احمد رحمه الله په نزد مطلقا او د امام ابو حنيفه او مالک رحمه الله په نزد په شرط د وصيت، او د دې په مقابله کښې په عبادت بدنيه کښې لکه صوم او صلوة په دې کښې د وارث د طرف نه قضاء يعنې نيابة د مړي د طرف نه جائز نه دې، خو د فديې په ذريعه به ئې قضاء وي عند الائمة الثلاثة د امام احمد رحمه الله په نزد صوم د دې نه مستثنی دې د هغوی په نزد د صوم منذور قضاء نيابة د مړي د طرف نه جائز ده.

دا د نيابت مسئله د دې نه مخکښې په کتاب الحج او صوم کښې هم تيره شوې ده،

(۱) لا تجري النيابة في الصلوة عند الائمة الاربعة الا في رواية احمد ولا يجوز في الصوم عند الائمة الثلاثة ويجوز عند احمد اي في الصوم المنذور لا الواجب الا في رواية الشافعي وتجري في الحج بالاتفاق

او د اهل ظواهر په نزد د نذر قضاء د مړي د طرف نه مطلقا واجب ده برابره خبره ده که په عبادت مالي کښي وي او که په بدني کښي وي.

[٣٣٠٧] (١) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، قَالَ: قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ اسْتَفْتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: "إِنَّ أَمِي مَاتَتْ وَعَلَيْهَا نَذْرٌ لَمْ تَقْضِهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَقْضِهِ عَنْهَا".

د عبد الله بن عباس رضي الله عنه نه روایت دي فرمائي چه سعد بن عبادۀ د نبی صلی الله علیه و آله نه تپوس او کړو چه زما مور وفات شوي ده په ژوند کښي ئې یونذر منلې وو او دهغه قضا ئې نه وه راوړي او مړه شوه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل ته دهغې د طرف نه دغه نذر پوره کړه.

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ اسْتَفْتَى رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - الخ سعد بن عبادۀ رضي الله عنه د رسول الله صلی الله علیه و آله نه معلومه کړه چه زما د مور وفات اوشو حال دا چه دهغې په ذمه یو نذر وو او هغه ئې نه وو پوره کړې نو رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل چه ته ئې د هغوی د طرف نه قضاء او کړه.

دا نذر د څه خیز وو؟ قیل کان نذرا مطلقا، وقیل نذر الصوم، وقیل نذر العتق، وقیل الصدقة. دلته په دي حدیث کښي د قضاء حکم د احنافو په نزد استحبابا دي، ځکه چه د احنافو په نزد د عبادت بدنيۀ نذر خو قضاء جائز نه ده. (لقول ابن عباس رضي الله عنه لا يصوم احد عن احد ولا يصلي احد عن احد) وعن ابن عمر رضي الله عنه نحوه..... او په عبادت ماليۀ کښي ا شوي ځکه مونږ اووي چه دا امر استحبابا دي د احنافو په نزد او هم دغه شان د مالکیانو په نزد. والحديث أخرجه البخاري والترمذي والنسائي وابن ماجة، قاله المنذري

[٣٣٠٨] (٢) عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ: "أَنَّ امْرَأَةً رَكِبَتِ الْبَحْرَ، فَذَرَتْ إِنْ نَجَّاهَا اللَّهُ أَنْ تَصُومَ شَهْرًا، فَجَآهَا اللَّهُ، فَلَمْ تَصُمْ حَتَّى مَاتَتْ، فَجَاءَتْ ابْنَتُهَا، أَوْخَتْهَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَمَرَهَا أَنْ تَصُومَ عَنْهَا".

د عبد الله بن عباس رضي الله عنه نه روایت دي فرمائي چه یوې ښځې په سمندر کښي سفر کولو اوداندر ئې اومنلو که چرې مونږ الله تعالی صحیح اوسلامت اورسولو نوزه به یوه میاشت روژي نیسم الله تعالی هغوی صحیح سلامت اورسول لیکن هغه ښځه در وژونیولونه مخکښي وفات شوه نوددي خور بالور د نبی صلی الله علیه و آله په خدمت کښي حاضره شوه نونبی صلی الله علیه و آله ورته حکم او کړو چه دهغې د طرف نه روژي اونيسي.

قوله: عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ امْرَأَةً رَكِبَتِ الْبَحْرَ فَذَرَتْ إِنْ نَجَّاهَا اللَّهُ أَنْ تَصُومَ شَهْرًا: یعنی یوې زنانه د کشتی په سفر کښي دا نذر اومنلو چه که زه ژوندی او روغه اورسیدم نو زه به یوه میاشت روژي نیسم خو هغې ته د روژو د نیولو موقع ملاؤ نه شوه تردې چه وفات

١: صحيح البخاري/الوصايا ١٩ (٢٧٦١)، الايمان ٣٠ (٦٦٩٨)، الحيل ٣ (٦٩٥٩)، صحيح مسلم/النذور ١ (١٦٣٨)، سنن الترمذي/الايمان ١٩ (١٥٤٦)، سنن النسائي/الوصايا ٨ (٣٦٨٦)، الايمان ٣٤ (٣٨٤٨)، ٣٨٤٩، ٣٨٥٠، سنن ابن ماجة/الكفارات ١٩ (٢١٣٢)، (تحفة الأشراف: ٥٨٣٥)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/النذور ١ (١)، مسند احمد (٢١٩/١)،

٣٢٩، ٣٧٠ (صحيح)

٢: تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ٥٤٦٤)، وقد أخرجه: سنن النسائي/الايمان ٣٣ (٣٨٤٨)، مسند احمد (٢١٦١) (صحيح)



شوه، نو د هغې لور یا خور د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضره شوه او نو رسول الله ﷺ هغې ته د صوم عن الميت حکم او کړو، (یعنی بالافتداء علی مسلک الجمهور)

[۳۳۰۹] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَطَاءٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ بُرَيْدَةَ، أَنَّ امْرَأَةً أَتَتْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ: كُنْتُ تَصَدَّقْتُ عَلَى أُمِّي بُولَيْدَةً، وَإِنَّمَا مَاتَتْ وَتَرَكْتُ تِلْكَ الْبُولَيْدَةَ، قَالَ: قَدْ وَجَبَ أَجْرُكَ، وَرَجَعْتَ إِلَيْكَ فِي الْبِرَاثِ، قَالَتْ: وَإِنَّمَا مَاتَتْ وَعَلَيْهَا صَوْمٌ شَهْرٍ، قَدْ كَرِهْتُ حَدِيثَ عَمْرٍو.

ترجمه: دبریده د رسول الله ﷺ نه روایت دې فرمائی چې یوه ښځه د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضره شوه او عرض ئې او کړو ای دالله رسوله ماخپلې مور ته یوه وینځه ورکړې ده اوس زما مور وفات شوي ده او هغه وینځه دهغې نه په میراث کښې پاتې شوي ده، نبی ﷺ ورته اوفرمائیل ثواب دي هم حاصل کړو اووینځه درته هم په میراث کښې واپس راغله دي ښځې عرض او کړو چې زماپه مورباندي یوه میاشت روژي وي باقی روایت ئې دتیرشوی روایت په شان بیان کړو.

قوله: عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِيهِ بُرَيْدَةَ : أَنَّ امْرَأَةً :

دا حدیث بسنده ومنتنه په کتاب الوصایا کښې تیر شوې دې او هم دغه شان په کتاب الزکوة کښې هم (باب من تصدق بصدقة ثم ورثها) کښ، او وړاندې به په کتاب البیوع کښې په (باب فی الرجل یفضل بعض ولده علی بعض فی النحل) کښې را روان دې.

### باب مَا جَاءَ فِيهِ مَاتَ وَعَلَيْهِ صِيَامٌ صَامَ عَنْهُ وَلِيُّهُ

باب: چه څوک مړ شي او په هغه روژې وي نو هغه دې دهغه ولي پوره کړي

[۳۳۱۰] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، قَالَ: سَمِعْتُ الْأَعْمَشَ، وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ الْأَعْمَشِ، الْمَعْنَى، عَنْ مُسْلِمِ الْبَطِينِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ: "أَنَّ امْرَأَةً جَاءَتْ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ: إِنَّهُ كَانَ عَلَى امْرَأَتِي صَوْمٌ شَهْرٍ، أَفَأَقْضِيهِ عَنْهَا؟ فَقَالَ: لَوْ كَانَ عَلَى أُمِّكَ دَيْنٌ، أَكُنْتُ قَاضِيَتَهُ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، قَالَ: فَدَيْنُ اللَّهِ أَحَقُّ أَنْ يُقْضَى."

عبدالله بن عباس رضی الله عنهما وائی چې یوه ښځه نبی کریم ﷺ ته راغله او عرض ئې او کړو چې زما د مور په ذمه د یوې میاشت روژې دی آیا زه ئې دهغې دطرفه اونیسم؟ نبی کریم ﷺ ترې تپوس او کړو: که ستا دمور په ذمه قرض وو نو آیا تابه ادا کولو؟ هغې اووئیل: آو، نبی کریم ﷺ اوفرمائیل: د الله قرض خو نورهم زیات د ادا کولو مستحق دې.

[۳۳۱۱] (۳) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي جَعْفَرٍ،

۱: صحيح مسلم/الصيام ۲۷ (۱۱۴۹)، سنن الترمذي/الزكاة ۳۱ (۶۶۷)، سنن ابن ماجه/الصيام ۵۱ (۱۷۵۹)، (تحفة الأشراف: ۱۹۸۰) (صحيح)

۲: صحيح البخاري/الصوم ۴۲ (۱۹۵۳)، صحيح مسلم/الصيام ۲۷ (۱۱۴۸)، سنن الترمذي/الصوم ۲۲ (۷۱۶)، سنن ابن ماجه/الصوم ۵۱ (۱۷۵۸)، (تحفة الأشراف: ۵۶۱۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۲۴/۱، ۲۲۷، ۲۵۸، ۳۶۲)، دي/الصوم ۴۹ (۱۸۰۹) (صحيح)

۳: انظر حديث رقم: (۲۴۰۰)، (تحفة الأشراف: ۱۶۳۸۲) (صحيح)

عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جَعْفَرِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: مَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ صِيَامٌ، صَامَ عَنْهُ وَلِيَّهُ.

ام المؤمنین عائشہ رضی اللہ عنہا فرمائی چې نبی کریم ﷺ او فرمائیل: څوک چې مړ شي او دهغه په ذمه روژې وي نو دهغه ولي دې دهغه د طرفه روژې اونيسي.

## باب مَا يُؤْمَرُ بِهِ مِنَ الْوَقَاءِ بِالنَّذْرِ

د نذر د پوره کولو د تاکید بیان

[۳۳۱۲] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا الْحَارِثُ بْنُ عُبَيْدٍ أَبُو قَدَامَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ الْأَخْنَسِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ: "أَنَّ امْرَأَةً أَتَتْ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنِّي نَذَرْتُ أَنْ أَضْرِبَ عَلَى رَأْسِكَ بِالْذُّفِّ، قَالَ: أَوْفَى بِنَذْرِكَ، قَالَتْ: إِنِّي نَذَرْتُ أَنْ أَذْبَحَ بِمَكَانٍ كَذَا وَكَذَا مَكَانًا كَانَ يَذْبَحُ فِيهِ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ، قَالَ: لِصَنْمٍ؟ قَالَتْ: لَا، قَالَ: لِيُوثِنِ؟ قَالَتْ: لَا، قَالَ: أَوْفَى بِنَذْرِكَ."

عمرو بن شعيب د خپل پلار نه او هغه دده د نیکه نه روایت کوی فرمائی چې یوه ښځه د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضرې شوه او عرض ئې او کړو ای د الله رسول له ما دانذر منلې دې چې تاته به تمبل غرومه یعنی کله چې جهاد ته ځي نو په هغه وخت کښې به درته تمبل (چمبه) غروم نبی ﷺ ورته او فرمائیل نذر دي پوره کړه دي ښځې او وئیل چې ما په فلاني فلاني ځای کښې د ذبح کولو نذر منلې دې او هلته به د جاهلیت په وخت کښې خلقو ذبح کولی نبی ﷺ او فرمائیل ایا هلته به د کوم بت دپاره ذبح کیدلي؟ دغې ښځې او وئیل نه نبی ﷺ تپوس او کړو ایا د الله تعالی نه علاوه د بل چا په نوم باندې ذبح به کیدلي؟ هغې عرض او کړو نه نو نبی ﷺ ورته او فرمائیل خپل نذر پوره کړه.

قوله: أَنَّ امْرَأَةً أَتَتْ النَّبِيَّ - صلى الله عليه وسلم - فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي نَذَرْتُ أَنْ أَضْرِبَ عَلَى رَأْسِكَ بِالْذُّفِّ. قَالَ: «أَوْفَى بِنَذْرِكَ».

په دې روایت کښې دلته اختصار دې د ترمذی په روایت کښې په دې باندې اضافه ده، مضمون د حدیث دا دې چې رسول الله ﷺ یو کړت خپل بعض مغازی ته تشریف یووړ، د رسول الله ﷺ په واپسې باندې یو توره وینځه راغله او هغې عرض او کړو یا رسول الله ﷺ ما نذر منلې وو چې که تاسو الله پاک صحیح او سالم واپس کړئ نو زه به ستاسو مخکښې تمبل وهم (دوپړئ نه ځکه چې هغه ممنوع دی کما سیاتی فی الاشرية نهی عن الطبل) بین یدیک (دا لفظ د ترمذی په روایت کښې دې په دې باندې رسول الله ﷺ او فرمائیل چې واقعی تا هم دا نذر منلې دې نو هغه پوره کړه د دې حدیث په باره کښې امام ترمذی رحمه الله فرمائی (حدیث حسن صحیح غریب)

### شرح الحديث:

د دې حدیث په شرح کښې امام خطابی رحمه الله لیکي چې وهل د قبل خو د هغه طاعاتو نه نه دې چې هغې نذر صحیح وی ځکه چې وهل د قبل زیات نه زیات مباح کیدې شی نه طاعت خو



چونکه ددی ضرب دفن تعلق د بعض داسی خیزونه سره دې چه هغې ته عبادت وئیلې کېدې شی، یعنی د رسول الله ﷺ په سلامتیا سره په واپسې باندې د خوشحالی اظهار چه په هغې کېنې مساءة د کفارو دې او اذلال د منافقین وغیره امورو، په دې حیثیت سره په دې کېنې د عبادت معنی پیدا شوه، او بیا وړاندې په دې حدیث کېنې دی چه دې زنانه دا هم عرض اوکړو چه ما په فلانی مکان کېنې د خاړوی د ذبح کولو نذر منلې وو چرته چه به د جاهلیت والو ذبح کوله، رسول الله ﷺ تپوس اوکړو چه ستا دا نذر د یو بت په نوم باندې د ذبح کولو دپاره دې، هغې اووې داسې نه ده پس رسول الله ﷺ او فرمائیل خپل نذر پوره کړه، د دې نه پس هم یو بل روایت هم د دې قسم مضمون را روان دې.

[۳۳۱۲] (۱) حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ رُسَيْدٍ، حَدَّثَنَا شُعَيْبُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنِ الْأَوْزَاعِيِّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو قَلَابَةَ، قَالَ: حَدَّثَنِي ثَابِتُ بْنُ الضَّحَّاكِ، قَالَ: "نَذَّرَ رَجُلٌ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُحْرَأَ إِبْلًا بِوَأْنَةٍ، فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: إِنِّي نَذَرْتُ أَنْ أُحْرَأَ إِبْلًا بِوَأْنَةٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَلْ كَانَ فِيهَا وَثْنٌ مِنْ أَوْثَانِ الْجَاهِلِيَّةِ يُعْبَدُ؟ قَالُوا: لَا، قَالَ: هَلْ كَانَ فِيهَا عَيْدٌ مِنْ أَعْيَادِهِمْ؟ قَالُوا: لَا، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَوْفِ بِنَذْرِكَ، فَإِنَّهُ لَا وَفَاءَ لِنَذْرٍ فِي مَعْصِيَةِ اللَّهِ، وَلَا فِي مَا لَا يَمْلِكُ ابْنُ آدَمَ."

د ثابت بن ضحاک نه روایت دې فرمائی چه د نبی ﷺ په زمانه کېنې د اندر منلې وو چه زه به په بوانه مقام کېنې او بن ذبح کوم نودغه کس د نبی ﷺ په خدمت کېنې حاضر شو او عرض ئې اوکړو چه ما په بوانه مقام کېنې داو بن ذبح کولو نذر منلې دې نبی ﷺ ورته او فرمائیل ایاه بوانه کېنې د جاهلیت د زمانی کوم بت وو چه عبادت ئې کیدو؟ صحابه کرامو عرض اوکړونه بیانی ﷺ او فرمائیل ایاد مشرکانو په میلو کېنې کومه میله به دلته کیدله عرض اوکړې شو چه نه په دې وخت کېنې نبی ﷺ تپوس کونکې ته متوجه شو اووئې فرمائیل ته خپل نذر پوره کړه اودگناه په کار کېنې نذر پوره کول نشته دې اونذر پوره کول په هغه خیز کېنې نه دی کوم چه دانسان په اختیار کېنې نه دی یعنی د کوم خیز چه انسان مالک نه دې.

[۳۳۱۴] (۲) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ بْنِ مِقْسَمٍ الثَّقَفِيُّ مِنْ أَهْلِ الطَّائِفِ، قَالَ: حَدَّثَنِي سَارَةُ بِنْتُ مِقْسَمٍ الثَّقَفِيِّ، أَنَّهَا سَمِعَتْ مَيْمُونَةَ بِنْتَ كُرْدَمٍ، قَالَتْ: "خَرَجْتُ مَعَ أَبِي فِي حِجَّةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَرَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَسَمِعْتُ النَّاسَ يَقُولُونَ: رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَجَعَلْتُ أَبْدُءَ بِعَمْرِي، قَدْنَا إِلَيْهِ أَبِي وَهُوَ عَلَى نَاقَةٍ لَهُ مَعَهُ دِرَّةٌ كَدِرَةٌ الْكِتَابِ، فَسَمِعْتُ الْأَعْرَابَ وَالنَّاسَ يَقُولُونَ: الطَّبْطُبِيَّةُ، الطَّبْطُبِيَّةُ، قَدْنَا إِلَيْهِ أَبِي، فَأَخَذَ بِقَدَمِي، قَالَتْ: فَأَقْرَأَهُ، وَوَقَفَ، فَاسْتَمِعَ مِنْهُ، فَقَالَ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنِّي نَذَرْتُ أَنْ أُحْرَأَ إِبْلًا بِوَأْنَةٍ، فَأَتَيْتُكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَلْ كَانَ فِيهَا وَثْنٌ مِنْ أَوْثَانِ الْجَاهِلِيَّةِ يُعْبَدُ؟ قَالُوا: لَا، قَالَ: هَلْ كَانَ فِيهَا عَيْدٌ مِنْ أَعْيَادِهِمْ؟ قَالُوا: لَا، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَوْفِ بِنَذْرِكَ، فَإِنَّهُ لَا وَفَاءَ لِنَذْرٍ فِي مَعْصِيَةِ اللَّهِ، وَلَا فِي مَا لَا يَمْلِكُ ابْنُ آدَمَ."

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۲۰۶۵) (صحیح)

(۲): انظر حديث (۲۱۰۳)، (تحفة الأشراف: ۱۸۰۹۱) (صحیح)

میمونه بنت کُردم وائی چه زه دخپل پلار سره په حجة الوداع کښې اووتلم نو ما رسول الله ﷺ اولیدلو او دخلقونه می واوریدل چه دا رسول الله ﷺ دې، ما په هغه خپل نظر واچولو، زما پلار دهغوی ﷺ سره نزدې شو، هغوی ﷺ په خپله اوبښه باندې سور وو، دهغوی ﷺ سره د مکتب (مدرسه) د درې په شان یوه دره وه، ما د باندېچیانو او خلقونه واوریدل، شن شن د درې آواز چه تیزې سره وهلو او تاوولو په وخت اوڅی، نو زما پلار دهغوی ﷺ سره نزدې شو، او دهغوی ﷺ خپې نې اونیولې، دهغوی ﷺ د رسالت اقرار نې اوکړو، اودریدو اودهغوی ﷺ خبرې نې توجه سې واوریدلې، بیا هغه اووئیل: ای دالله رسوله ﷺ! ما نذر منلې دې که زما څو نې اوشو نو زه به د بوانه په سختو غرونو کښې د ډیرو چیلو قربانی کوم، راوی وائی: ماته دا معلومه ده چه هغوی پنځو چیلې یادې کړې، نبی کریم ﷺ تپوس اوکړو: آیا هلته څه بت شته؟ هغوی اووئیل: نا، نو نبی کریم ﷺ اوفرمائیل: تا چه دالله تعالی دپاره کوم نذر منلې دې هغه پوره کړه، هغه چیلې جمع کړې او ذبح نې کړې، دهغې نه یوه چیلې توپ کړل او تختیده، نو هغه دا (چیلې) لټوله او وئیل نې، ای الله! زما نذر پوره کړې، بیا نې هغه پیدا کړه نو ذبح نې کړه.

[۳۳۱۵] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ الْحَقَفِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ مَيْمُونَةَ بِنْتِ كُرْدَمَ بْنِ سَفْيَانَ، عَنْ أَبِيهَا، نَحْوَهُ مُخْتَصَرٌ مِنْهُ شَيْءٌ، قَالَ: هَلْ بِهَا وَثْنٌ أَوْ عَيْدٌ مِنْ أَغْيَادِ الْجَاهِلِيَّةِ؟ قَالَ: لَا، قُلْتُ: إِنْ أَمْسَى هَذِهِ عَلَيْهَا نَذْرٌ، وَمَشَى، أَفَأَقْضِيهِ عَنْهَا؟ وَرُبَّمَا قَالَ ابْنُ بَشَّارٍ: أَنْقَضِيهِ عَنْهَا؟ قَالَ: نَعَمْ.

میمونه دخپل پلار کُردم بن سفیان نه ددې پشان لیکن ددې نه لږ اختصار سره روایت کوی نبی کریم ﷺ تپوس اوکړو: آیا هلته څه بت شته؟ یا دجاهلیت د اخترونو نه یو اختر کیږی؟ هغه اووئیل: نا، ما اووئیل: دا زما مور ده ددې په ذمه نذر دې، او پیدل حج کول دی، آیا زه دا ددې دطرفه پوره کړم؟ او ابن بشار داسې وئیلی دی: آیا مونږ ددوی دطرفه دا پوره کړو؟ (دجمع صیغې سره) نبی کریم ﷺ اوفرمائیل: او.

## بَابُ فِي النَّذْرِ فِيمَا لَا يَمْلِكُ

دغیر اختیاری څیزونو د نذرمنلو بیان

د باب د حدیث په آخر کښې دی: لَا وَفَاءَ لِنَذْرِ فِي مَعْصِيَةِ اللَّهِ وَلَا فِيمَا لَا يَمْلِكُ ابْنُ آدَمَ

ترجمه الباب والا مسئله کښې مذاهب ائمه:

د دې مضمون مفصل حدیث په (باب فی الطلاق قبل النکاح) کښې تیر شوې دې (عن عمرو بن شعيب عن ابيه عن جده ان النبي ﷺ قال لا طلاق الا فيما تملك ولا عتق الا فيما تملك ولا بيع الا فيما تملك ولا وفاء نذر الا فيما تملك) او په یو روایت کښې دا زیادت دې (ومن حلف على معصية فلا يمين له) د دې ټولو مسائلو بیان او اختلاف د علماء کرامو په کتاب الطلاق کښې د دې حدیث د لاندې تیر شوې دې، خو د نذر متعلق مسئله مونږ دوباره دلته



لیکو یعنی کوم خیز چه د انسان په ملک کښې نه وی د نذر منلو په وخت، د هغې نذر معتبر نه دی، منذور به که د مال د قبیلې نه دې نو د هغې د ناذر په ملک کښې کیدل پکار دی یا کم از کم چه هغه نذر مضاف الی الملك وی یا مضاف الی سبب الملك وی، په دې دواړو صورتونو کښې هم نذر صحیح کیږي لکه چه یو انسان داسې اوائی ﴿ان شفی الله مریضی فبعد زید حر﴾ دا نذر باطل دی بالاتفاق یا خو ئې خپل غلام کیدل پکار دی یا بیا اضافت الی الملك یا سبب الملك کیدل پکار دی لکه چه داسې اوئیلې شی ﴿کل مال املکه فیما استقبل فهو صدقة﴾ یا داسې اوائی ﴿کل ما اشتريته او ارثه فهو صدقة﴾ او د امام مالک رحمته الله په نزد اضافت الی الملك یا اضافت الی سبب الملك سره دې د هغه خیز څه صفت هم ذکر کړې شی مثلاً د قبیلې تعین یا د یو ښهر تعین یا بل څه صفت چه په هغې سره فی الجملة تخصیص پیدا شی نو بیا نذر صحیح کیږي گینې نه، او د امام شافعی رحمته الله په نزد اضافت الی الملك یا الی سبب الملك که عموماً وی یا خصوصاً په دواړو صورتونو کښې معتبر نه دی فی الحال ملکیت کیدل پکار دی، د احنافو او مالکیانو په نزد دا حدیث په تنجیز باندې محمول دی چه یو انسان په یو غیر مملوک خیز باندې نذر اومنی دا تنجیزاً معتبر نه دی، د تعلیق په صورت کښې معتبر دی، او د امام شافعی رحمته الله په نزد تنجیز او تعلیق دواړه د حدیث په مفهوم کښې داخل دی، ملا علی قاری رحمته الله فرمائی: ﴿ومذهبنا مروی عن عمرو ابن مسعود وابن عمر﴾ والجواب عن الاحادیث المذكورة انها محمولة على نفی التنجیز والحمل ماثور عن السلف کالشعبي والزهری، قال عبدالرزاق فی مصنفه: انا معمر عن الزهری انه قال فی رجل قال کل امرءة اتزوجها فهي طالق، وکل امة اشتريها فهي حرة هو کما قال، فقال له معمر اولیس قد جاء: لا طلاق قبل النکاح ولا عتق الا بعد ملک، قال انما ذلک ان يقول امرءة فلان طالق، وبعد فلان حر آه (بذل ۲/۲۷۲) په بذل کښې د دې نه پس د مصنف ابن ابی شیبې نه د ډیرو تابعینو نه هم دا نقل کړې شوې دی لکه سالم، قاسم بن محمد، عمر بن عبدالعزیز، شعبي، النخعی او الزهری رحمته الله وغیره یعنی دا چه دا حدیث په تنجیز باندې محمول دی او د تعلیق والا صورت په دې کښې داخل نه دی.

[۳۳۱۶] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى، قَالَا: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قَلَابَةَ، عَنْ أَبِي الْهَيْثَمِ، عَنْ عُمَرَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ: كَانَتْ الْعَضْبَاءُ لِرَجُلٍ مِنْ بَنِي عُقَيْلٍ، وَكَانَتْ مِنْ سَوَائِقِ الْحَاجَةِ، قَالَ: فَأَبْرَأَ فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِي وَثَاقٍ، وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى حِمَارٍ عَلَيْهِ قَطِيفَةٌ، فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، عَلَامَ تَأْخُذُنِي وَتَأْخُذُ سَابِقَةَ الْحَاجَةِ؟ قَالَ: تَأْخُذُكَ مَجْرِبَةٌ حَلَفَ بِكَ ثَقِيفٌ، قَالَ: وَكَانَ ثَقِيفٌ قَدْ أَسْرَا رَجُلَيْنِ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: وَقَدْ قَالَ فِيمَا قَالَ: وَأَنَا مُسْلِمٌ، أَوْ قَالَ: وَقَدْ أَسْلَمْتُ، فَلَمَّا مَضَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: فَهَيْتُ هَذَا مِنْ مُحَمَّدٍ بْنِ عِيسَى، نَادَاهُ: يَا مُحَمَّدُ، يَا مُحَمَّدُ، قَالَ: وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجِيماً، رَفِيقاً، فَرَجَعَ إِلَيْهِ، فَقَالَ: مَا شَأْنُكَ؟ قَالَ: إِنِّي مُسْلِمٌ، قَالَ: لَوْ قُلْتَهَا وَأَنْتَ تَمْلِكُ أَمْرَكَ،

۱: صحیح مسلم/النذر ۳ (۱۶۴۱)، سنن النسائي/الأيمان ۳۱ (۳۸۲۱)، ۴۱ (۳۸۶۰)، (تحفة الأشراف: ۱۰۸۸۴)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/السير (۱۵۶۸)، سنن ابن ماجه/الكفارات ۱۶ (۲۱۲۴)، مسند احمد (۴۲۷۴، ۴۳۰، ۴۳۲، ۴۳۳)، دي/الندور ۳ (۲۳۸۲) (صحیح)

أَفْلَحْتَ كُلَّ الْفَلَاحِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: ثُمَّ رَجَعْتُ إِلَى حَدِيثِ سُلَيْمَانَ، قَالَ: يَا مُحَمَّدُ، إِنِّي جَائِعٌ فَأُطْعِمْنِي، إِنِّي ظَمْآنٌ فَاسْقِنِي، قَالَ: فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَذِهِ حَاجَتُكَ، أَوْ قَالَ: هَذِهِ حَاجَتُهُ، قَالَ: فَقَوْدِي الرَّجُلُ بَعْدَ بِالرَّجُلَيْنِ، قَالَ: وَحَبَسَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعَضْبَاءَ لِرَحْلِهِ، قَالَ: فَأَغَارَ الْمُشْرِكُونَ عَلَى سُرُجِ الْمَدِينَةِ، فَذَهَبُوا بِالْعَضْبَاءِ، قَالَ: فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهَا، وَأَسْرُوا امْرَأَةً مِنَ الْمُسْلِمِينَ، قَالَ: فَكَانُوا إِذَا كَانَ اللَّيْلُ يُرْمُونَ إِلَيْهَا فِي أَفْنِيَّتِهِمْ، قَالَ: فَتَوَمَّوْا إِلَيْهَا، وَقَامَتِ الْمَرْأَةُ، فَجَعَلَتْ لَا تَضَعُ يَدَهَا عَلَى بَيْعِيرٍ إِلَّا رَغَا، حَتَّى أَتَتْ عَلَى الْعَضْبَاءِ، قَالَ: فَأَتَتْ عَلَى نَاقَةٍ ذَلُولٍ فَجَرَسَتْ، قَالَ: فَزَكَّيْتُهَا، ثُمَّ جَعَلَتْ لِلَّهِ عَلَيْهَا إِنْ نَجَّاهَا اللَّهُ لَتَنَحَرَّتْهَا، قَالَ: فَلَمَّا قَدِمَتِ الْمَدِينَةَ عَرَفَتِ النَّاقَةَ نَاقَةَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَخْبَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِذَلِكَ، فَأَرْسَلَ إِلَيْهَا، فَجِيءَ بِهَا، وَأَخْبَرَ بِنَذْرِهَا، فَقَالَ: بئس ما جزيتيها أَوْ جزيتها، إِنْ اللَّهُ أَنْجَاهَا عَلَيْهَا لَتَنَحَرَّتْهَا، لَا وَقَاءَ لِنَذْرِي فِي مَعْصِيَةِ اللَّهِ، وَلَا فِيمَا لَا يَمْلِكُ ابْنُ آدَمَ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَالْمَرْأَةُ هَذِهِ امْرَأَةُ أَبِي ذَرٍّ.

دعمران بن حصین رضی اللہ عنہ نه روایت دې چه عضباء د نبی صلی اللہ علیہ وسلم اوبښه په بنی عقیل قبیله کښې دیوکس وه اوداوبښه په هغه څاروو کښې وه کوم چه به دخدمت دپاره دجایانونه مخکښې روان وو، بیاددي مالک گرفتارکړې شواواوترلې شو او نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته پیش کړې شو په دې وخت کښې نبی صلی اللہ علیہ وسلم په یوخرباندي سور وو او په هغه باندي کته پرته وه دعضباء مالک اووئیل ای محمد زه تاسوپه کوم جرم کښې نیولې یم اوداڅاروې هم کوم چه دجایانو دانتظام دپاره مخکښې روان وي نبی صلی اللہ علیہ وسلم ورته اوفرمائیل ته مونږ دبنو ثقیف قبیلې دحلیف کیدو دجرم په سلسله کښې نیولې ئې بنو ثقیف قبیلې والاداجرم کړې وو چه دصحابه کرامونه ئې دوه کسان گرفتار کړي وو په دې وخت کښې دعضباء مالک اووئیل زه مسلمان یم یا مسلمان شوې یم، لیکن نبی صلی اللہ علیہ وسلم مخکښې لاړو. ابوداود وائی چه دحدیث داجمله چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم مخکښې لاړو، مادمحمدبن عیسی نه معلومه کړي ده، کله چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم مخکښې لاړو نودي کس په چغه ورته آواز اوکړو ای محمد، عمران وائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم ډیررحم اوکرم کونکې وو چه کله ئې داخبره واوریده نوورته راواپس شو اوتپوس ئې ترې اوکړو چه څه خبره ده؟ دغه کس عرض اوکړو چه زه مسلمان یم نبی صلی اللہ علیہ وسلم اوفرمائیل که چرې دادي دنیولونه مخکښې وئيلي وې نواوس به ته په خپل اختیارکښې وې (یعنی قیدشوې به نه وې) او پوره نجات به دي حاصل کړې وو ده بیاعرض اوکړو ای محمد زه وگې شوم خوراک راته راکړه اوتگې شوې یم دخکلو دپاره اوبه راکړه نبی صلی اللہ علیہ وسلم اوفرمائیل ستامقصد هم داوو، بائې داسې اوفرمائیل دداسې سړی هم دامقصد وي راوي وائی چه بیاداسرې دهم هغه دوه صحابه کرامو په عوض کښې فدیہ کړې شو کوم چه بنو ثقیف گرفتارکړي وو (یعنی بنو ثقیف ته ئې حواله کړواودده په بدل کښې ئې هغه دوه کسان پریخودل) عضباء اوبښه نبی صلی اللہ علیہ وسلم دخپلې سورلۍ دپاره منتخب کړې وه، راوي وائی چه ددې نه پس مشرکانو دمدینې په څاروو باندي ډاکه واچوله او عطباء اوبښه ئې هم دخان سره بوتله اویوه مسلمانان زڼانه ئې هم گرفتارکړي بوتله، چه کله به شپه شوه نواوبښان به بې دارام دپاره په یو میدان کښې پریخودل، یوه شپه دغه کسان اوده وو نودغه زڼانه په دې اراده باندي پاڅیده چه پته به په کوم اوبښ باندي سوره شم او اوبه تنستم، نودي زڼانه چه به په کوم اوبښ باندي لاس ایخودو هغه به آواز کولو تردې چه عضباء اوبښې ته راغله او ورته معلومه شوه چه دا ډیره



ښه شریفه اودسورلی کولو دپاره ډیره ماهره اوښه ده نو هغه په دې باندې سوره شوه ددې نه پس دې زنانه دالله تعالی دپاره نذراومنلو که چرې الله تعالی ماته په دې اوښه باندې ددوی نه نجات راکړو نوزه به دا قرباني کوم، راوي ونیلي دی کله چه دا زنانه مدینې ته راورسیده نو خلقو ولیدل چه په عضباء اوښه باندې راغله او هغه ئې او پیژندله او نبی ﷺ ته ئې ددې اطلاع ورکړه نبی ﷺ دغه زنانه راوغوښتله او هغې خپل نذر بیان کړو نبی ﷺ ورته اوفرمائیل ته دې اوښې ته بده بدله ورکول غواړی کله چه الله تعالی تاته ددې اوښې په شاه باندې دهغې نه نجات درکړو نو ددې بدله داشوه چه ته ئې ذبح کړي اوبیا ئې اوفرمائیل دهغه نذر پوره کول جائزه دی په کوم کښې چه دالله نافرمانی وي اودداسې نذر پوره کول هم نشته کوم چه دانسان په اختیار کښې نه دي. امام ابوداود وائی دازنانه دابوذره کوروداني وه.

قوله: عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ : قَالَ كَانَتِ الْعَضْبَاءُ لِرَجُلٍ مِنْ بَنِي عَقِيلٍ وَكَانَتْ مِنْ سَوَائِقِ الْحَاجِّ قَالَ : فَاسْرَ قَاتِي النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَهُوَ فِي وَثَاقٍ :

د رسول الله ﷺ د دې اوښې غضباء واقعه کومه چه دلته ذکر کړې شوې ده، دا مونږ په «باب فی اقطاع الارضين» کښې د صخر بن عیله رضی الله عنه د حدیث د لاندې مختصر لیکلې ده په یو خاص مناسبت سره، هلته دې اوکتلې شی. (۱۷۱/۵)

د دې قصې باقی حصه دا ده قَالَ : فَقَوْدَى الرَّجُلُ بَعْدَ بِالرَّجُلَيْنِ. یعنی بیا د دې قیدی انجام دا شو چه هغه د دوه مسلمانانو قیدیانو په بدله کښې پریخودلې شو..... چه د هغې ذکر په پورته قصه کښې راغلې دې، قَالَ : وَحَبَسَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - الْعَضْبَاءَ لِرَجُلِهِ یعنی دا عضباء اوښه رسول الله ﷺ د خپلې سورلۍ دپاره ایساره کړه، قَالَ - فَأَغَارَ الْمُشْرِكُونَ عَلَى سَرَحِ الْمَدِينَةِ فَلَذَهَبُوا بِالْعَضْبَاءِ - قَالَ - فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهَا وَأَسْرُوا امْرَأَةً مِنَ الْمُسْلِمِينَ - قَالَ - فَكَانُوا إِذَا كَانَ اللَّيْلُ يُرِيحُونَ إِبْلَهُمْ فِي أَفْنِيَتِهِمْ الْخ.

#### د ناچه غضباء یوه قصه :

وراندې راوی چه د دې ناچه عضباء سره کومه قصه پیښه شوه هغه بیانوی هغه دا چه یو ورځ داسې اوشو چه بعض مشرکینو د اهل مدینه په اوبسانو باندې حمله اوکړه او هغه ئې لوټ کولو سره یوړل او د هغه اوبسانو سره دا اوښه هم لاره او هم دغه شان ئې یوه زنانه هم قید کولو سره یوړه دا زنانه د ابوذر غفاری رضی الله عنه ښځه وه، دې مشرکانو چه کوم اوبسان لوټ کولو سره د مدینې نه بوتلل د سفر دوران کښې چه به کله شپه راغله نو هغه اوبسان به ئې د خیمو مخې ته اوتړل او اوده به شو، دا بودی د هغوی سره وه چه هر وخت به ئې ځان بچ کولو سره د هغوی د لاسو نه د تختیدو فکر کولو، پس یوه ورځ داسې اوشوه چه کله دا ټول غله د شپې اوده شو نو دا زنانه وینه وه دا پاسیده او یوه دسورلۍ قابله اوښه ئې اولتوله چه په هغې باندې سوړیدو سره مدینې ته واپس شی، اصل کښې هره یوه اوښه د سورلۍ قابله نه وی په دې وجه رومبی هغه اوښه کتلې کیږی چه هغه د سورلۍ قابله ده یا نه ده، دا زنانه تجربه کاره وه پوهیده چه د سورلۍ قابله کومه یوه اوښه وی، پس زنانه پته پاسیده او

په هغه اوبښو باندې به ئې په هر یو باندې لاس کیخودلو، چه په کومه به ئې هم لاس کیخودلو هغه به هنریدله، (په اوبښ باندې چه کله کیجاوه وغیره کیخودلې شی د سورلئ دپاره یا د سامان ترلو دپاره نو هغه وخت هغه څه آواز اوباسی، چه کله به هغه اوبښې څه وئیل دا زنانه به یکدم د هغې نه خوا شوه دا اندازه لگولو سره چه دا د سورلئ قابله نه ده او د دې ویرې نه چه دا اوده گسان راپانسی غرض دا چه هغې به هم دغه شان زر زر په یو یو باندې لاس کیخودلو او چه کله به هغې خبرې کولې نو روستو به شوه ترې نه، چه کله د دې ناقه عضباء نمبر راغلو او په هغې باندې هم دې لاس کیخودلو نو هغې څه او نه وئیل، پس د مسلم په روایت کښې دی **﴿فجعلت اذا دنت من البعير رغا فترکه حتى تنتهی العضباء فلم تر﴾** دا پوهه شوه چه دا اوبښه د سورلئ قابله ده. د **﴿ذلول﴾** او **﴿مجرسة﴾** معنی هم دا ده یعنی هغه اوبښه چه د سور تابع کیدو سره د سورلئ لائق وی، پس په هغې باندې سوره شوه، او د مدینې رخ ئې اوکړو او دغه وخت کښې هغې دا نذر هم اومنلو **﴿ان نجاها الله لتحرېها﴾** چه که الله پاک د دې اوبښې په ذریعه ماته خلاصې راکړو او په دې باندې سوریډو سره زه مدینې طیبې ته روغه اورسیدم نو زه به دا اوبښه د الله پاک دپاره ذبح کوم، پس په هغې باندې کیناستلو سره هغه مدینې طیبې ته روغه اورسیدله. **﴿فلما قدمت المدينة عرفت الناقة ناقة النبی ﷺ﴾** یعنی چه کله د ورځې خلقو دا اوبښه اولیده نو هغوی پوهه شو چه دا خود رسول الله ﷺ ناقه عضباء ده او بیا رسول الله ﷺ ته د دې خبر ورکړې شو، رسول الله ﷺ سرې اولیرلو او دا زنانه ئې راطلب کړه او بیا د هغه زنانه د نذر ذکر هم اوکړې شو، رسول الله ﷺ او فرمائیل **﴿بِسْمَا «جَزَتْهَا»** او جزیه ادا د راوی شک دې چه رسول الله ﷺ د غائب په صیغې سره او فرمائیل یا زنانه ته خطاب کولو سره ئې صیغه د حاضر تلفظ او فرمائیل، یعنی دې زنانه دې اوبښې ته دا ډیره بده بدله ورکړه. **﴿إِنَّ اللَّهَ أَنْجَاهَا عَلَيْهَا لَتَنْحَرَّتْهَا﴾** دا حرف شرط دې یعنی که الله پاک دې ته خلاصې ورکړی په دې اوبښه باندې نو دا به خامخا دا ذبح کوی د دې جزاء بد کیدل صورة ښکاره دی چه کوم څاروی لره الله پاک د دې زنانه د نفس د حفاظت ذریعه جوړه کړه هغه زنانه دې دا هلاک کړی **﴿هذا جزاء الحسنة بالسيئة﴾** بیا وړاندې رسول الله ﷺ د شرعی مسئلې دا خبره بیان کړه **لَا وَفَاءَ لِنَذْرٍ فِي مَعْصِيَةِ اللَّهِ وَلَا فِيمَا لَا يَمْلِكُ** یعنی د کوم څیز چه انسان مالک نه وی په هغې کښې د نذر منلو څه مطلب، نذر خو د خپل مال کیدل پکار دی د دې حدیث شرح او د مسئلې تفصیل مونږ د باب په شروع کښې بیان کړې دي.

### د استیلاء الکافر علی مال المسلم متعلق یو سوال او د هغې جواب

دلته یو بل علمی سوال او جواب دې هغه دا چه په کتاب الجهاد کښې یو د یو باب د لاندې **﴿باب فی المال یصیه العدو من المسلمین ثم یدرکه صاحبه﴾** دا مسئله تیره شوې ده د احنافو او د مالکیانو په نزد استیلاء الکافر علی مال المسلم سبب د ملک دې نو د دې تقاضا دا ده چه دا مشرک د دې عضباء مالکان شوی وو او دې زنانه دا د مشرکانو مال لوټ کولو سره راوړو لهذا دا اوبښه مال غنیمت شو چه د هغې مالک واپس کیدونکې



پکار دې، په دې باندې « لا يملك » کله صادقې د شوافعو او د مالکیانو په مسلک باندې خو هیڅ اشکال نشته ځکه چې د هغوی په نزد استیلاء الکافر سبب د ملک نه وی، د دې اشکال جواب دا دې چې د احنافو په نزد استیلاء سبب د ملک بعد الاحراز وی، دلته اگر چې استیلاء موندلې شوې ده خو تر اوسه پورې احراز نه دې موندلې شوې، یعنی مال لره د دارالاسلام نه دارالحرب ته منتقل کول، او د مالکیانو په نزد استیلاء الکافر مطلقاً سبب د ملک وی، پس دا حدیث که خلاف دې نو د مالکیانو خلاف دې نه د احنافو. والله تعالی اعلم بالصواب. قَالَ أَبُو دَاوُدَ : وَالْمَرْأَةُ هَذِهِ امْرَأَةُ أَبِي ذَرٍّ، وَالحديث اخرجه مسلم والنسائي بطوله، واخرجه الترمذی منه طرفاً، واخرجه النسائي واہباً ما حجة منه طرفاً، قاله المنذرى

### بَابُ فِيْمَنْ نَذَرَ أَنْ يَتَصَدَّقَ بِمَالِهِ دالله په لار کښې د ټول مال صدقه کولو نذرمنل

[۳۳۱۷] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ، وَأَبْنُ السَّرْحِ، قَالَا: حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، قَالَ: قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: فَأَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ بْنُ مَالِكٍ: أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ كَعْبٍ، وَكَانَ قَائِدَ كَعْبٍ مِنْ بَنِيهِ حِينَ غَمِيَ، عَنْ كَعْبٍ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قُلْتُ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنْ مِنْ تَوْبَتِي أَنْ أَنْخَلِعَ مِنْ مَالِي صَدَقَةً إِلَى اللَّهِ وَإِلَى رَسُولِهِ، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَمْسِكْ عَلَيْكَ بَعْضَ مَالِكَ، فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ، قَالَ: فَقُلْتُ: إِنِّي أَمْسِكُ سَهْمِي الَّذِي يَخْيَبُ".

دعبدالله بن كعب بن مالك نه روایت دې فرمائی چې ماعرض وکړو ای دالله رسوله زما دپاره داستغفار طریقه داده چې زه دخپل ټول دولت نه جداشم او الله اود الله رسول ته ئې صدقه کړم، نبی ﷺ ورته اوفرمائیل ددې مال نه یوڅه دخان دپاره هم اوساته، ځکه چې دا ستا دپاره بهتر دې ماورته عرض وکړو چې په غزوه خیبر کښې چې زما کومه حصه ده هغه به اوساتم. عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ قُلْتُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنْ مِنْ تَوْبَتِي أَنْ أَنْخَلِعَ مِنْ مَالِي صَدَقَةً إِلَى اللَّهِ وَإِلَى رَسُولِهِ. قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم : « أَمْسِكْ عَلَيْكَ بَعْضَ مَالِكَ .. الخ »

### په تصدق بجمیع المال کښې مذاهب ائمه :

په ترجمه الباب کښې چې کومه مسئله ذکر کړې شوې ده هغه د تصدق بجمیع المال د نذر ده که یو سړې دا نذر او منی چې که زما فلانی کار اوشو نو زه به خپل ټول مال د الله پاک دپاره صدقه کوم دا مسئله مختلف فیه ده د مالکیانو او حنابلہ مسلک په دې صورت کښې دا دې چې « یکفیه التصدق بالثلث » یعنی د داسې انسان دپاره د ثلث مال صدقه کول کافی دی، او د امام شافعی رحمه الله په نزد به پوره صدقه کولې شی، وعند الحنفیة جمیع المال الزکوی ان کان والا فما کان..... یعنی د احنافو په نزد به نذر په هغه مال باندې محمول وی چې په هغې کښې زکوة واجب وی (نقدین والسوائم وغیره) که هغه سره مال زکوی وی، او که هغه سره داسې قسم مال موجود نه وی نو بیا چې هر یو مال وی هم په هغې باندې به محمول وی، هم هغه ټول به ورکولې شی، د امام مالک رحمه الله مسلک خپله په موطاء کښې موجود دې « عن

۱: سنن النسائي / الإيمان ۳۵ (۳۸۵۴)، انظر حديث رقم: (۲۲۰۲)، (تحفة الأشراف: ۱۱۱۳۵) (صحيح)

عائشة ام المؤمنين انها سئلت عن رجل قال مالي في رتاج الكعبة فقالت عائشة يكفره ما يكفر اليمين قال مالك في الذي يقول مالي في سبيل الله ثم يحنث قال يجعل ثلث ماله في سبيل الله وفي الاوجز واخرج محمد في موطاه اثر عائشة ثم قال قد بلغنا هذا عن عائشة واحب اليها ان يفي بما جعل على نفسه فيتصدق بذلك ويمسك ما يقوته فاذا افاد مالا تصدق بمثل ما امسك وهو قول ابی حنيفة والعامه من فقهاءنا آه امام محمد عليه السلام فرمائي چه زمونږ په نزد د دې صورت حكم دا دې چه داسې نذر منلو والا انسان دې دا خپل نذر پوره كړي يعنې ټول مال دې صدقه كړي او د خپل حاجت مناسب دې ترې نه اوساتي او بيا چه چرته د بل ځانې نه مال او گټې نو دا مقدار دې هم صدقه كړي. اوجز ۱۲۵/۳

### شرح الحديث من حيث الفقه :

د حديث الباب مضمون دا دې چه كله د كعب بن مالك رضي الله عنه توبه قبوله شوه نو هغوی رسول الله ﷺ ته عرض او كړو يا رسول الله ﷺ «زما په ذهن او اعتقاد كښې دا خبره ده» چه زما د توبې كمال په دې كښې دې چه زه خپل ټول مال الله پاك او د هغه د رسول ﷺ دپاره صدقه كولو سره د هغې نه جدا شم، په دې باندي رسول الله ﷺ او فرمائيل چه څه مال ته د خپل ځان دپاره اوساته دا ستا دپاره زياته غوره ده، نو هغوی عرض او كړو: ډيره ښه ده زه به خپله هغه حصه چه ماته د خيبر په غنيمت كښې ملاؤ شوې ده د خپل ځان دپاره ايساره كړم، او د دې نه په روستو روايت كښې دې چه رسول الله ﷺ هغوی د ټول مال د تصدق نه او دغه شان د نصف مال د تصدق نه هم منع كړو او بيا ئې په آخیر كښې د ثلث مال د تصدق اجازت وركړو. مالكيانو او حنابله د دې حديث نه استدلال كړې دې پس په حاشيه د بدل كښې دې «استدل به الموفق فيمن نذر التصدق بجميع ماله انه يجزئه التصدق بالثلث، وبه قال مالك، وقال الشافعي عليه السلام يلزمه الكل في التبرز دون اللجاج، وقال الحنفية يلزمه تصدق المال الزكوي كله آه نذر اللجاج والغضب هغه نذر ته وائي كوم نذر چه انسان په جوش كښې راتلو سره د قسم په طور باندي او مني د يو كار د كولو يا د هغې نه د منع كيدو دپاره چه په هغې سره د ناذر مقصود قربت او عبادت نه وي صرف په خپله ذمه څه كار اخستل مقصود وي، نذر تبرز نذر طاعت ته وائي چه په هغې سره مقصود قربت او عبادت وي او ښه سوچ كولو سره هغه نذر او منلې شي، په نذر اللجاج باندي تفصيلي كلام د وړاندي يو باب نه پس را روان دې، لهذا دا حديث د احنافو او شوافعو خلاف شو، د دې جواب د احقر په ذهن كښې دا دې چه په دې قصه د كعب رضي الله عنه كښې د نذر ذكر كوم ځانې دې هغوی خو د رسول الله ﷺ نه طلب د مشورې كوي چه زما خيال دې زما د توبې تكميل به هله كيږي چه كله زه خپل ټول مال صدقه كړم، رسول الله ﷺ هغوی ته په ځانې د ټول مال د ثلث مال د تصدق مشوره وركړه، او كه دا او منلې شي چه د هغوی مقصد خپل نذر لره بيانول وو چه ما د خپلې توبې د تكميل دپاره د تصدق بجميع المال نذر منلې وو نو اوس څه او كړم، نو په دې صورت كښې به د هغوی د كلام تاويل دا وي چه اوس د ثلث مال صدقه او كړه، ټول مال په يو ځانې مه صدقه كوه په دې سره به درته پريشاني پيدا شي روستو په مزه مزه د دې مقدار صدقه



ورکولو سره پوره کړه، پس د احنافو په نزد هم دغه شان ده چه په یو ځای دې ټول مال نه صدقه کوی لکه چه مخکښې تیر شو د امام محمد رحمه الله په کلام کښ. والله تعالی اعلم  
والحدیث اخرجه النسائی ایضاً مختصراً، واخرج البخاری ومسلم فی الحدیث الطویل، قاله المنذری.

[۳۳۱۸] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ كَعْبٍ بْنُ مَالِكٍ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ قَالَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جِئَنِي تَدِبُّ عَلَيْهِ: إِنِّي أَتَخَلِّعُ مِنْ مَالِي، فَذَكَرَ نَحْوَهُ، إِلَى خَيْرٍ لَكَ.

کعب بن مالک رضی الله عنه وائی کله چه دهغوی توبه قبوله شوه نو هغوی رسول الله صلی الله علیه و آله ته عرض اوکړو: زه دخپل مال نه ویزاره کیرم، بیا ورپسې راوی دغسې حدیث بیان کړو. «خیر لك» پورې.

[۳۳۱۹] (۲) حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ ابْنِ كَعْبٍ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَوْ أَبُولِبَابَةَ، أَوْ مَنْ شَاءَ اللَّهُ: "إِنَّ مِنْ تَوْبَتِي أَنْ أَهْجُرَ دَارَ قَوْمِي الَّتِي أَصَبْتُ فِيهَا الذَّنْبَ، وَأَنْ أَتَخَلِّعَ مِنْ مَالِي كُلِّهِ صَدَقَةً، قَالَ: يُجْزِئُكَ الثَّلَاثُ".

کعب بن مالک رضی الله عنه وائی هغوی یا ابولبابه رضی الله عنه یا بل چا څوک چه الله اوغوبستل، نبی کریم صلی الله علیه و آله ته ئې اووئیل: زما په توبه کښې شامل دی چه زه دخپل دې کور نه کوم ځای چه زما نه گناه شوی ده هجرت اوکړم او خپل ټول مال صدقه کړم ددې نه ویزاره شم، نو نبی کریم صلی الله علیه و آله او فرمائیل: بس دریمه حصه صدقه کول به ستا دپاره کافی وی.

[۳۳۲۰] (۳) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُتَوَكِّلِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنِي مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ كَعْبٍ بْنُ مَالِكٍ، قَالَ: كَانَ أَبُولِبَابَةَ، فَذَكَرَ مَعْنَاهُ، وَالْقِصَّةُ لِأَبِي لُبَابَةَ قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَاهُ يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ بَعْضِ بَنِي السَّائِبِ بْنِ أَبِي لُبَابَةَ، وَرَوَاهُ الزُّبَيْدِيُّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حُسَيْنِ بْنِ السَّائِبِ بْنِ أَبِي لُبَابَةَ، مِثْلَهُ.

زهري وائی: ماته ابن کعب بن مالک خبر را کړې دې، هغه وائی چه دا ابولبابه رضی الله عنه وو، بیا هغوی ددې مفهوم حدیث ذکر کړو او واقعه د ابولبابه ده. ابوداؤد وائی: دا یونس د ابن شهاب نه، او ابن شهاب د سائب بن ابولبابه په ځامنو کښې د یونه روایت کړې دې، او دغسې زبیدی د زهري نه، زهري د حسین بن سائب بن ابی لبابه نه ددې په مثل روایت کړې دې.

[۳۳۲۱] (۴) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا حَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، قَالَ: قَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، فِي قِصَّتِهِ، قَالَ: قُلْتُ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنْ مِنْ تَوْبَتِي إِلَى اللَّهِ، أَنْ أَخْرَجَ مِنْ مَالِي كُلِّهِ إِلَى اللَّهِ وَإِلَى رَسُولِهِ صَدَقَةً، قَالَ: لَا، قُلْتُ: فَنِصْفُهُ، قَالَ: لَا، قُلْتُ: فَثُلُثُهُ، قَالَ: نَعَمْ، قُلْتُ: فَإِنِّي سَأَمْسِكُ سَهْمِي مِنْ خَيْرٍ.

عبد الله بن كعب بن مالك نه دخپل پلار نه او هغه دده دنيکه په دې قصه کښې روایت کوی

۱: انظر ما قبله، وانظر حديث رقم: (۲۲۰۲)، (تحفة الأشراف: ۱۱۱۳۵) (صحيح)  
۲: انظر ما قبله، وانظر حديث رقم: (۲۲۰۲)، (تحفة الأشراف: ۱۱۱۳۵، ۱۲۴۹) (صحيح الإسناد)  
۳: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۲۱۴۹) (ضعيف الإسناد)  
۴: انظر ما قبله، انظر رقم (۲۲۰۲)، (تحفة الأشراف: ۱۱۱۳۵) (حسن صحيح)

فرمائی چه ماعرض وکړو ای دالله رسوله زما دپاره دتوبی کولوښه طریقه داده چه زه دالله دپاره دخپل ټول دولت نه جداشم اوخپل ټول مال دالله په لاره کښې ورکړم، نبی ﷺ ورته اوفرمائیل داسې مه کوه، مایبیا عرض وکړوچه خپل نیم مال، نبی ﷺ ورته اوفرمائیل داسې مه کوه، مایبیا عرض وکړوچه دخپل مال دریمه حصه، نبی ﷺ ورته اوفرمائیل داسې تهیک ده ماورته عرض وکړو چه په غزوه خیبر کښې چه زما کومه حصه ده هغه به اوساتم.

## باب مَنْ نَذَرَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ ثُمَّ أَذَرَ الْإِسْلَامَ

داسلام قبلولونه پس دجاهلیت دزمانی دنذر حکم

[۳۲۲۵] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنِي نَافِعٌ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، أَنَّهُ قَالَ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنِّي نَذَرْتُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ أَنْ أَعْتَكِفَ فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ لَيْلَةً، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَوْفِ بِنَذْرِكَ".

دابن عمر رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه ماعرض وکړو ای دالله رسوله مادجاهلیت په وخت کښې داندروملي وو چه په مسجد حرام کښې به اعتکاف کوم. نبی ﷺ ورته اوفرمائیل چه خپل نذر پوره کړه.

عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي نَذَرْتُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ أَنْ أَعْتَكِفَ فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ لَيْلَةً. فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ -صلى الله عليه وسلم-: «أَوْفِ بِنَذْرِكَ»

دا حدیث په باب الاعتکاف کښې تیر شوې دې د جمهور علماء کرامو او ائمه ثلاثه په نزد د نذر د صحت دپاره د نادر اسلام شرط دې ځکه چه نذروى د طاعت والکافر لیس باهل لها، او د امام احمد رحمه الله په نزد شرط نه دې هغوى هم د دې حدیث نه استدلال کړې دې، او جمهور علماء کرام دا حدیث په استحباب باندې محمول کوى که څوک په دې باندې دا اشکال اوکړی چه د جمهور په نزد خو د کافر نذر نذر نه دې حال دا چه رسول الله ﷺ دې ته نذر فرمائیلې دې، د دې بعضو علماء کرامو دا جواب ورکړې دې «اوف بمثل نذرك» چه څنگه حقیقی نذر پوره کولې شی هم دغه شان دا د نذر مثل پوره کړه.

والحدیث أخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى

## باب مَنْ نَذَرَ نَذْرًا لَمْ يُسْمِهِ

د غیر معین نذریان

[۳۲۲۳] (۲) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبَّادٍ الْأَزْدِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ يَحْيَى بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ مَوْلَى الْبُقَيْرَةِ، قَالَ: حَدَّثَنِي كَعْبُ بْنُ عُلْقَمَةَ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "كُفَّارَةٌ

(۱): صحيح البخاري/الاعتكاف ۵ (۲۰۳۲)، ۱۵ (۲۰۴۲)، ۱۶ (۲۰۴۳)، الخمس ۱۹ (۳۱۴۴)، المغازي ۵۴ (۴۳۲۰)، الإيمان ۲۹ (۶۶۹۷)، صحيح مسلم/الإيمان ۶ (۱۶۵۶)، سنن الترمذي/الإيمان ۱۱ (۱۵۳۹)، سنن النسائي/الإيمان ۳۵ (۳۸۵۱)، سنن ابن ماجه/الصيام ۶۰ (۱۷۷۲)، الكفارات ۱۸ (۲۱۲۹)، (تحفة الأشراف: ۱۰۵۵۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۷/۱، ۲۰/۲، ۸۲، ۱۵۳)، سنن الدارمي/اللزور ۱ (۲۳۷۸) (صحيح)

(۲): صحيح مسلم/النذر ۵ (۱۶۴۵)، سنن الترمذي/اللزور ۴ (۱۵۲۸)، (تحفة الأشراف: ۹۹۶۰)، وقد أخرجه: سنن النسائي/الإيمان ۴۰ (۳۸۶۳)، سنن ابن ماجه/الكفارات ۱۷ (۲۱۲۵)، مسند احمد (۱۴۴/۴، ۱۴۶، ۱۴۷) (صحيح)



النذر كفارة اليمين" قال أبو داود: ورواه عمرو بن الحارث، عن كعب بن علقمة، عن ابن شماس، عن عتبة.

د عقبه بن عامر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله فرمایلي دي دندر هم هغه كفاره ده کومه چه د قسم ده.

[۳۲۲۴] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَوْفٍ، أَنَّ سَعِيدَ بْنَ الْحَكَمِ حَدَّثَهُمْ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، حَدَّثَنِي كَعْبُ بْنُ عُلْقَمَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ شِمَاسَةَ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، مِثْلَهُ.

ابوالخير د عقبه بن عامر نه او هغه د نبی صلی الله علیه و آله نه د تیر شوي روایت په شان روایت نقل کړې دي. قوله: عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَفَّارَةُ النَّذْرِ كَفَّارَةُ الْيَمِينِ»

### د حديث الباب محمل او په هغې کښې اختلاف د علماء کرامو

او د ترمذی په روایت کښې داسې دي كفارة النذر اذا لم يسمه كفارة اليمين، د ابوداؤد په حديث کښې اگر چه دا زیادت نشته، خو مصنف رحمته الله علیه دا حديث محمول هم په دي باندې کړې دي لکه چه په ترجمة الباب کښې دي، د دي نذر صورت دا دي لکه چه يو انسان داسې اوایي (لله على نذر) او د خه خیز نذر دي د هغې تعین اونکړی دي نذر ته نذر مبهم وائی، په نذر مبهم کښې د جمهور علماء کرامو مسلک دا دي چه (كفارة كفارة اليمين) خکه چه د پوره کولو خه صورت خو شته نه د غیر معین کیدو په وجه باندې، امام ابن قدامة رحمته الله علیه د اکثر علماء کرامو مذهب هم دا فرمایلي دي، هغوی فرمائی: (ولا اعلم فيه مخالفا الا الشافعي قال لا ينقذ نذره ولا كفارة فيه، ولنا ما روى عقبه بن عامر كفارة النذر اذا لم يسمه كفارة اليمين الحديث آه من المغنى وفي المحلى ورواه احمد وابوداؤد والنسائي، ورواه مسلم بدون قوله: اذا لم يسمه، فحملة مالك وابوحنيفة وجماعة على النذر المطلق، وحملة احمد وبعض الشافعية على نذر المعصية، وحملة جمهور الشافعية على نذر اللجاج مثلا ان كلمت زيدا فلله على حجة فكلمه فهو بالخيار بين الكفارة وبين ما التزمه آه وهكذا حكى القارى عن النووى انه قال حملة جمهور اصحابنا على نذر اللجاج قال القارى لا يظهر حمل لم يسمه على المعنى المذكور مع ان التخيير خلاف المفهوم من الحديث، وحملة على المعصية مع بعده يرد حديث ابن عباس رضي الله عنه مرفوعا من نذر نذرا لم يسمه فكفارته كفارة يمين ومن نذر نذرا في معصية فكفارته كفارة يمين فان الاصل في العطف المغايرة آه مختصر من الاوجز ۱۳۶/۲) صاحب د محلی چه ليکلی دي چه امام احمد رحمته الله علیه دا په نذر د معصيت باندې حمل کړې دي دا د هغې خلاف دي کوم چه ابن قدامة نقل کړی دي يعنى دا چه د دي نه مراد نذر مطلق او مبهم مراد دي لهذا صحيح دا ده چه د جمهور علماء کرامو چه په هغوی کښې ائمه ثلاثه هم دي په نزد د دي نه مراد نذر مبهم دي، مگر د شافعي رحمته الله علیه په نزد د دي نه مراد لجاج دي اوس پاتې شوه دا خبره چه د نذر لجاج خه حکم دي.

### د نذر لجاج تعريف او د هغې په حکم کښې اختلاف ائمه:

په اوجز کښې په يو بل مقام باندې په نذر لجاج باندې تفصیلي کلام کولو سره د مالکیانو دا مذهب ليکلی شوي دي چه دا نذر د هغوی په نزد په قول راجع کښې واجب الوفاء دي،

۱. انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۹۹۶۰) (صحیح)

او نذر لجاج دا دې چه د هغې نه مقصود طاعت وغيره هيڅ نه وي بلکه خپل نفس لره د څه نه بندول او هغه ته د سزا ورکولو په طور وي لکه داسې اوئيېلې شي ﴿لله على كذا ان كلمت زيدا﴾ يعنی د زيد نه د خفه کيدو په صورت کښې اوائي چه که زه دهغه سره خبرې او کړم نو زما په ذمه يو حج يا عمره ده مثلا د دې يو مثال په ﴿باب اليمين في قطعة الرحم﴾ کښې را روان دې، قال الباجي يلزم النذر على وجه اللجاج والغضب وقال الشافعي هو مخير في نذره على اللجاج بين ان يكفر كفارة يمين وبين ان يفي به، او موفق خپل او د حنابلة مذهب هم دا نقل کړې دې کوم چه د امام شافعي رحمه الله دې ﴿انه مخير بين الوفاء بنذره لانه نذر فيلزمه الوفاء به كنذر التبرز﴾ الى آخر ما بسط الموفق.... د دې نه پس حضرت شيخ رحمه الله فرمائي چه د شوافعو په دې کښې پنځه اقوال دي کوم چه امام نووي رحمه الله په شرح المذهب کښې مبسوطا ذکر کړي دي، وقال نذر اللجاج والغضب ويقال ليه يمين اللجاج والغضب ويقال له ايضا يمين الغلق ونذر الغلق فاذا قال ان كلمت فلانا لله على صوم شهر او حج او صلوة او نحو ذلك ثم كلمه فقيما يلزمه خمسة طرق جمعها الرافعي قال اشهرها على ثلاثة اقوال احدها يلزمه الوفاء بما التزم، والثاني يلزمه كفارة اليمين والثالث يتخير بينهما، قال وهذا الثالث هو الاظهر عند العراقيين، وقال النووي هو الاصح آه او ملا علي قاري رحمه الله د احنافو مذهب داسې ليکلي دې چه ﴿يلزم الوفاء بالنذر سواء كان مطلقا او معلقا بشرط بان قال ان شفى الله مريضى فعلى حجة مثلا او عمرة مثلا، لكن لزومه عند وجود الشرط اذا كان معلقا، ولا يخرج عنه بالكفارة في ظاهر الرواية عن ابى حنيفة رحمه الله، او بيا د دې نه پس ليکي چه د نذر مطلق دوه صورتونه دي يو دا چه تعليق په داسې شرط باندې وي چه د هغې وجود مطلوب وي لکه ﴿ان شفى الله مريضى فعلى كذا﴾ نو د داسې نذر خو ايفاء هم واجب ده او که تعليق د داسې څيز سره وي چه هغه غير مطلوب وي لکه ﴿ان كلمت زيدا فلله على كذا﴾ نو د داسې نذر خو ايفاء هم واجب دې او که تعليق د هم دې څيز سره وي چه هغه غير مطلوب وي لکه ﴿ان كلمت زيدا فلله على كذا﴾ په دې کښې دوه اقوال دي يو هم دا چه واجب الايفاء دې دويم دا چه په دې صورت کښې د يمين كفاره كافى ده ﴿وهو الصحيح وقد رجع اليه الامام ابوحنيفة قبل موته بثلاثة ايام او بسبعة وهو قول محمد رحمه الله آه او هم دا تفصيل د حنابلة په مذهب کښې دې کما في الروض المربع چه که تعليق د داسې شرط سره دې چه د هغې وجود مطلوب وي د هغې ايفاء واجب ده او که هغه څيز داسې دې چه د هغې وجود مطلوب وي د هغې ايفاء واجب ده او که هغه څيز داسې وي چه د هغې وجود مطلوب نه دې نو هلته تخيير دې بين الايفاء وكفارة اليمين او حضرت شيخ فرمائي وهذا التفصيل هو المرجح عند الشافعية.

#### خلاصة المذاهب :

فالحاصل في نذر الجاج ان الائمة الثلاثة في جانب والامام مالك في جانب، د امام مالک رحمه الله په نزد مطلقا واجب الايفاء دې او د ائمة ثلاثه په نزد على الراجح په دې کښې تفصيل دې کوم چه پورته ذکر شو د دې مقام په شرح کښې ډير تطويل اوشو چه د هغې منشاء د ناقلين





چه فرمايل ئې چه نبی ﷺ فرمايلي دی چه يميني لغوه دي ته وائي چه يوانسان په خپل کور کښې (په طور دتکيه کلام) او وائي مثلاً هو په الله قسم نه، په الله قسم. امام ابوداود فرمائي چه ابراهيم سنار مسلم په عرندس مقام کښې قتل کړې وو اود ابراهيم سنار حال داوو چه خټک به ئې راخستې وو چه داذان آواز به راغې نودو هلوته مخکښې به ئې پريخودو. ابوداود وئيلي دي چه داود بن ابوالفرات د ابراهيم نه او هغه دعائشي ﷺ نه داروايت موقوفا بيان کړې دې په همدارنگي زهري د عبد الملك نه په واسطه دعطاء سره دعائشي ﷺ نه موقوفا نقل کړې دې.

قوله: قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ..... إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ « هُوَ كَلَامُ الرَّجُلِ فِي بَيْتِهِ كَلَامًا وَاللَّهُ وَبَلَى وَاللَّهُ »

دا حديث په ظاهر کښې د شوافعو موافق دې، په بدائع کښې د دې جواب دا ليکلي شوې دې چه دا حديث زمونږ خلاف نه دې، زمونږ په نزد هم دا يمين لغو دې په دې شرط چه دې تعلق د ماضی يا د حال سره وي، د شوافعو په نزد دا عام دې، د هغوی په نزد دا مستقبل ته هم شامل دې، هغوی فرمائي ﴿والدليل على ما قلنا انها فسرته بالماضي روى عن مطر عن رجل قال دخلت انا وابن عمر رضي الله عنهما على عائشة رضي الله عنها فسالتهما عن يمين اللغو فقالت قول الرجل فعلنا والله كذا، وصنعنا والله كذا فتحمل تلك الرواية على هذا توفيقا بين الروایتين اذا المجمل محمول على المفسر﴾

قوله: قَالَ أَبُو دَاوُدَ كَانَ إِبْرَاهِيمُ الصَّائِغُ رَجُلًا صَالِحًا قَتَلَهُ أَبُو مُسْلِمٍ بِفَرَنْدَسَ قَالَ وَكَانَ إِذَا رَفَعَ الْمَطْرَقَةَ فَسَمِعَ النَّدَاءَ سَبَّهَا.

### د ابراهيم صائغ يو خاص خصلت:

په سند کښې چه يو راوی ابراهيم صائغ راغلي دې د هغوی په باره کښې مصنف ﷺ فرمائي چه هغه ابو مسلم په مقام فرندس کښې قتل کړې وو وړاندې د هغوی يو عادت بيانوی چه د هغه حال دا وو چه د کار دوران کښې به چه کله هغه کالي جوړولو او د سټک د گزار دپاره به ئې لاس اوچت کړو نو که هغه وخت به ئې په غوږونو کښې د آذان آواز پريوتلو نو فوراً به ئې لاس اودرولو، او هغه سټک به ئې په ځاني د وهلو اودرولو، په بذل کښې ليکلي دي چه دا ابو مسلم د حجاج بن يوسف په شان ډير لوښي ظالم او خونی وو.

### بَابُ فِيمَنْ حَلَفَ عَلَى الطَّعَامِ لَا يَأْكُلُهُ

باب د څه خيزد نه خوړلو د قسم بيان

[۳۲۷۰] (۱) حَدَّثَنَا مُؤَمَّلُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنِ الْجَرِيرِيِّ، عَنْ أَبِي عُمَانَ، أَوْ عَنْ أَبِي السَّيْلِ عَنْهُ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي يَكْرٍ، قَالَ: "نَزَلَ بِنَا أَضْيَافُ لَنَا، قَالَ: وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ يَحَدِّثُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّيْلِ، فَقَالَ: "لَا أُرْجِعَنَّ إِلَيْكَ حَتَّى تَفْرَغَ مِنْ ضِيَافَةِ هَؤُلَاءِ، وَمِنْ قِرَائِهِمْ، فَأَتَاهُمْ بِقِرَائِهِمْ، فَقَالُوا: لَا نَطْعِمُهُ

(۱): صحيح البخاري/مواقيت الصلاة ۴۱ (۶۰۲)، المناقب ۲۵ (۳۵۸۱)، الأدب ۸۷ (۶۱۴۰)، صحيح مسلم/الأشربة ۳۲ (۲۰۵۷)، (تحفة الأشراف: ۹۶۸۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۱۹۷، ۱۹۸) (صحيح)



حَتَّى يَأْتِيَ أَبُو بَكْرٍ، فَجَاءَ، فَقَالَ: مَا فَعَلَ أَضْيَافُكُمْ، أَفَرَعْتُمْ مِنْ قَرَاهِمٍ؟ قَالُوا: لَا، قُلْتُ: قَدْ أَتَيْتُهُمْ بِقَرَاهِمٍ فَأَبَوْا، وَقَالُوا: وَاللَّهِ لَا نَطْعُمُهُ حَتَّى يَجِيءَ، فَقَالُوا: صَدَقَ، قَدْ أَتَانَا بِهِ، فَأَيُّنَا حَتَّى يَجِيءَ، قَالَ: فَمَا مَنَعَكُمْ؟ قَالُوا: مَكَانُكَ، قَالَ: وَاللَّهِ لَا أَطْعُمُهُ اللَّيْلَةَ، قَالَ: فَقَالُوا: وَنَحْنُ وَاللَّهِ لَا نَطْعُمُهُ حَتَّى تَطْعُمَهُ، قُلْتُ: مَا رَأَيْتُ فِي الشَّرْكَاءِ اللَّيْلَةَ قَطُّ، قَالَ: قَرَّبُوا طَعَامَكُمْ، قَالَ: فَقَرَّبَ طَعَامَهُمْ، فَقَالَ: بِسْمِ اللَّهِ، فَطَعِمَ وَطَعِبُوا، فَأَخْبَرْتُ أَنَّهُ أَصْبَحَ، فَقَدَا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَخْبَرَهُ بِالَّذِي صَنَعَ، وَصَنَعُوا، قَالَ: بَلْ أَنْتَ أَبْرَهُمْ وَأَصْدَقُهُمْ."

د عبد الرحمن بن ابی بکر رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه یوخل زمونږ میلمانه راغلل او ابوبکر رضی اللہ عنہ د نبی صلی اللہ علیہ وسلم خواته تلې وو او وئيلي ئې وو ترهغې پورې ورته واپس نه راخم ترخوچه ته ددوی د خدمت او میلستیا ورکولونه اوزگار شوې نه یې، نو عبد الرحمن میلمنوته خوراک راوړو میلمنو او وئیل مونږ خو د ابوبکر رضی اللہ عنہ د راتلونو مخکښې خوراک نه کوو، بیا ابوبکر رضی اللہ عنہ راغې اود میلمنو د حال تپوس ئې اوکړو چه ایادوی ته د خوراک پیش کولونه فارغې شوي ئې اوکه نه؟ ماعرض اوکړو چه ماخوورته دودئ وړې وه لیکن هغوی ستانه بغیر د خوراک کولونه انکار اوکړو میلمنوهم زما د خبرې تصدیق اوکړو، صدیق اکبر میلمنوته او فرمائیل تاسو خوراک ولی اونکړو؟ هغوی او وئیل ستاپه وجه ابوبکر او وئیل زما دې په الله قسم وي چه زه خونن بالکل خوراک نه کوم، میلمنو او وئیل ترخوچه ته خوراک نه کوي ترهغې پورې ئې مونږ هم نه کوو، ابوبکر رضی اللہ عنہ او وئیل چه داسې بده خبره ماهیخ کله هم نه ده لیدلې او وئې فرمائیل دودئ راوړه چنانچه راوړل شوه ابوبکر رضی اللہ عنہ بسم الله او وئیله او خوراک ئې شروع کړو او میلمنوهم خوراک شروع کړو، عبد الرحمن وائی چه ماته معلومه شوه چه ابوبکر رضی اللہ عنہ سحر د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضر شو او واقعه ئې ورته بیان کړه نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل ته د یرنیک اورښتوني ئې.

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ قَالَ: نَزَلَ بِنَا أَضْيَافٌ لَنَا قَالَ: وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ يَتَحَدَّثُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بِاللَّيْلِ

### د ابی بکر صدیق رضی اللہ عنہ میلمنو قصه:

عبد الرحمن بن ابی بکر رضی اللہ عنہ بیان کوی چه یو کړت زمونږ څو میلمانه راغلل «دا درې کسان وو د اصحاب صفة نه» هغوی فرمائی چه زما د والد صاحب رضی اللہ عنہ عادت د شپې د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضریدو او هغوی سره د خبرو اترو وو، پس هغوی د تلو په وخت ما ته او فرمائیل چه زما د واپس کیدو پورې دوی د خوراک نه فارغ کړه، عبد الرحمن وائی: ما هغوی ته خوراک «روتئ» راوړله، میلمنو د کور د مالک «صدیق اکبر» نه بغیر د خوراک خوړلو نه انکار اوکړو. عبد الرحمن وائی: چه کله مې والد صاحب رضی اللہ عنہ د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نه واپس راغلو نو تپوس ئې اوکړو چه تاسو د خوراک نه فارغ شوي یئ؟ هغوی جواب ورکړو چه نه! د دې نه پس د بخاری په روایت کښې دی چه صدیق اکبر رضی اللہ عنہ خپل ځوی عبد الرحمن ته آواز اوکړو «هغوی د صدیق اکبر رضی اللہ عنہ په غصه لیدو باندي پټ شوې وو لکه چه په بخاری کښې روایت دې» «یا غنثر» «ای کمینه» هغه مخامخ راغلو او راتلو سره ئې عرض اوکړو چه ما خو دوی ته دودئ کیخودلې وه خو دې خلکو د خوراک نه انکار

اوکړو چه تر څو پورې تاسو واپس نه شي مونږ ئې هم نه خورو، په دې باندې میلمنو د عبدالرحمن تصدیق اوکړو چه بیشکه دوی خوراک راوړې وو خو مونږ انکار اوکړو ستاسو په انتظار کښ. صدیق اکبر رضی الله عنه تپوس اوکړو چه زما انتظار مو ولې کوو هغوی جواب ورکړو چه ستاسو د مقام او د مرتبې د وجې نه، صدیق اکبر رضی الله عنه دا بده او گنډله او قسم خوړلو سره ئې اوفرمائیل زه به هم نن دا خوراک نه خورم، دې میلمنو هم قسم اوخوړو چه مونږ ئې هم نه خورو چه تاسو ئې نه خوړئ.

﴿ قال ما رایت فی الشر کاللیلۃ قط ﴾ په دې باندې صدیق اکبر رضی الله عنه ډیر متاثر شو او وې فرمائیل چه داسې بده شپه خو ما چرته هم نه ده لیدلې خو هغوی دا بد صورتحال فورا ختم کړو او وې فرمائیل خوراک راوړئ او بسم الله وئیلو سره ئې خوراک شروع کړو، میلمنو هم شروع کړه، وړاندې په روایت کښې دی چه د دې شپې د قصې نه پس چه کله سحر صدیق اکبر رضی الله عنه د رسول الله صلی الله علیه و آله په خدمت کښې حاضر شو او د شپې دا واقعه ئې هغوی ته واوروله او دا چه زه په خپل قسم کښې حاثث شوم په دې باندې رسول الله صلی الله علیه و آله اوفرمائیل ﴿ بل انت ابرهم واصدقهم ﴾ ته چرته حاثث ئې ته خو په هغوی کښې د ټولو نه زیات نیک او رشتینې ئې مطلب دا چه دا هغه حاثث نه دې کوم چه مذموم وی بلکه دا خو ﴿ من حلف علی یمین فرای غیرها خیرا منها ﴾ د قبیلې نه دې.

دا واقعه په صحیح بخاری نوره هم په تفصیل سره ده په هغې کښې دا هم دی ﴿ فاکلوا فاعلموا لا یرفعون لقمۃ الا ربنا من اسفلها اکثر منها فقال یا اخت بنی فراس ما هذا؟ فقلت وقرۃ عینی انها الان لا اکثر قبل ان ناکل فاکلوا او بعث بها الی النبی صلی الله علیه و آله فنکر انه اکل منها ﴾ یعنی کله چه دې خلقو خوراک کولو نو کومه نمړې به ئې هم چه اوچتوله نو لاندې به ترې نه خوراک نور هم زیات شو، بیا وړاندې دا دی چه په دې خوراک کښې پچ شوې رسول الله صلی الله علیه و آله ته هم اولیرلې شوه چه د هغې نه رسول الله صلی الله علیه و آله هم اوخوړه، دا قصه په صحیح بخاری کښې په کتاب الادب ص ۹۰۷ او په علامات نبوت ص ۵۰۲ او مواقیت الصلوة ص ۸۵ کښې ذکر شوې ده، [۳۲۷۱]

[۳۲۷۱] (حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا سَالِمُ بْنُ نُوحٍ، وَعَبْدُ الْأَعْلَى، عَنِ الْجَرَّي، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ، هَذَا الْحَدِيثُ، نَحْوَهُ زَادَ، عَنْ سَالِمٍ فِي حَدِيثِهِ، قَالَ: وَلَمْ يَلْغِنِي كَفَارَةً.

ابوعثمان د عبدالرحمن بن ابی بکر رضی الله عنه نه دتیرروایت په شان روایت نقل کړې دې لیکن په دې کښې ئې دسالم راوی نه دهغه په حدیث کښې دا اضافه کړې ده چه وئې فرمائیل ماته دامعلومه نه شوه چه ابوبکر دخپل قسم کفاره ادا کړه.

﴿ قال ولم یلغنی کفارة ﴾ راوی وائی چه صدیق اکبر رضی الله عنه په دې واقعه کښې کفاره یمین ادا کړې وه که نه په دې باره کښې ما ته هیڅ نه دی رارسیدلې خو اصولا کفاره واجب ده او عدم ذکر عدم لږه مستلزم نه وی، او که دا واقعه د مشروعیت دکفارې نه مخکښې وی نو بیا بیله خبره ده. (بذل)

والحدیث اخرجه البخاری ومسلم بنحوه اتم منه، قاله المنذری



## باب الیمین فی قطیعة الرّحم

### درشتي ماتولو متعلق د قسم کولو بیان

[۳۲۷۲] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْبُهَالِ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا حَبِيبُ الْمَعْلَمِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ: أَنَّ أَخَوَيْنِ مِنَ الْأَنْصَارِ كَانَ بَيْنَهُمَا مِيرَاثٌ، فَسَأَلَ أَحَدُهُمَا صَاحِبَهُ الْقِسْمَةَ، فَقَالَ: إِنْ عُدْتَ تَسْأَلُنِي عَنِ الْقِسْمَةِ، فَكُلُّ مَالٍ لِي فِي رِثَاكِ الْكَعْبَةِ، فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: إِنَّ الْكَعْبَةَ غَنِيَّةٌ عَنْ مَالِكَ، كَفَرُ عَنْ يَمِينِكَ، وَكَلِمَةُ أَخَاكَ، سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: لَا يَمِينُ عَلَيْكَ، وَلَا تَذَرُ فِي مَعْصِيَةِ الرَّبِّ، وَفِي قَطِيعَةِ الرَّحِمِ، وَفِيمَا لَا تَمْلِكُ."

د سعيد بن المسيب نه روایت دي فرمائي چه په انصارو کښې ددوه روڼو په مينځ کښې په ميراث کښې څه اختلاف پيدا شوي وو په دوی کښې يو کس بل ته د تقسيم کولو دپاره ووتل ده ورته په جواب کښې ووتل که چرې بيادي ماته د تقسيم خبره وکړه نو زما ټول مال بيت الله ته وقف وي، عمر رضي الله عنه ورته ووتل چه بيت الله شريف ستا مال ته محتاج نه دي ته دخپل قسم کفاره ورکړه او دخپل ورور سره د وراثت تقسيم خبرې وکړه ځکه چه ماد نبی عليه السلام نه اوريدلي وو چه فرمايلي ئې وو چه د الله په نافرمانی کښې اود صله رحمې په قطع کولو کښې، په تاباندي نه قسم پوره کول واجب دي اونه کفاره ورکول واجب دي اونه په نذر کښې، نذر او قسم په هغه څيزونو کښې معتبر نه دی کوم چه دانسان په اختيار کښې نه وي.

عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ: أَنَّ أَخَوَيْنِ مِنَ الْأَنْصَارِ كَانَ بَيْنَهُمَا مِيرَاثٌ فَسَأَلَ أَحَدُهُمَا صَاحِبَهُ الْقِسْمَةَ فَقَالَ: إِنْ عُدْتَ تَسْأَلُنِي عَنِ الْقِسْمَةِ فَكُلُّ مَالٍ لِي فِي رِثَاكِ الْكَعْبَةِ.

### شرح الحديث وفيه بيان نذر اللجاج :

دا دوه انصاري کسان چه په خپل مينځ کښې روڼه روڼه وو د هغوی تر مينځه د ميراث مسئله راغلې وه په هغوی کښې يو د بل نه د تقسيم ميراث مطالبه اوکړه (ممکنه ده چه څو کرته د دې نوبت راغلې وي) هغه اووې چه که بيا دې د تقسيم سوال اوکړو نو بيا زما نذر دا دي چه زما د حصې ټول مال د باب کعبې دپاره دي. مراد ترې نه خپله کعبه ده. وړاندي په روایت کښې دی چه د عمر رضي الله عنه په علم کښې چه کله دا واقعه راغله نو هغوی د دې نذر د منلو نه انکار اوکړه (ان الکعبة غنية عن مالک) کعبې ته ستا د مال ضرورت نشته، دخپل قسم کفاره ورکړه او دخپل ورور سره خبرې شروع کړه چه ما د رسول الله صلى الله عليه وسلم نه اوريدلي دي، هغوی به فرمايل (لا يمين عليك ولا نذر في معصية الرب ولا في قطيعة الرحم) په دې قصه کښې چه کوم نذر ذکر شوي دي هغه نذر اللجاج دي چه د هغې حکم اوس نژدې سره د بيان مذاهب ائمه تير شوي دي او د هغې حاصل دا دي: چه که څوک خپل نذر لره د يو څيز د حصول پورې متعلق کړی نو د هغې دوه صورتونه دي يو دا چه هغه څيز مطلوب او مقصود وي لکه (ان شفى الله مريضى فعبدى حر) د دې نذر ايفاء بالاتفاق واجب ده او که هغه څيز غير مطلوب وي لکه د غصې وغيره په صورت کښې نذر او منلې شى لکه (ان کلمتک فعلى

۱. تقد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۴۴۷) (ضعيف الإسناد)

صوم شهر) دا نذر نذر لجاج دې او رومبې نذر نذر المجازاة او نذر تبرز، د امام مالک رحمته الله په نزد خود دواړو قسمونو یو حکم دې یعنی وجوب ایفاء او د باقی ائمه ثلاثه په نزد قسم اول یعنی د نذر المجازاة حکم وجوب دایفاء دې او په دویم قسم کښې التخییر بین الایفاء وکفارة الیمین .

د دې مضمون یو حدیث په موطاء کښې هم دې « عن ام المومنین عائشة رضی الله عنها انها سئلت عن رجل قال مالی فی رتاج الکعبة فقالت عائشة یکفره ما یکفر الیمین » دا روایت مونږ سره « باب من نذر ان يتصدق بماله » کښې هم تیر شوی دې.

[۳۲۷۳] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الضَّبِّيُّ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنِي أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "لَا نَذْرَ إِلَّا فِيمَا يَنْتَعَى بِهِ وَجْهَ اللَّهِ، وَلَا يَمِينٌ فِي قَطِيعَةٍ رَجِمَ".

بدالله بن عمرو رضی الله عنه وائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل: صرف په هغه څیزونو کښې نذر جائز دې چه هغې سره د الله رضا او خوشحالول مطلوب وی او د رشته دارئ پریکولو (تعلق پریخودلو) دپاره قسم جائز نه دې.

[۳۲۷۴] (۲) حَدَّثَنَا الْمُنْذِرُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بَكْرٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ الْأَخْنَسِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ: قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا نَذْرَ وَلَا يَمِينٌ فِيمَا لَا يَمْلِكُ ابْنُ آدَمَ، وَلَا فِي مَعْصِيَةِ اللَّهِ، وَلَا فِي قَطِيعَةٍ رَجِمَ، وَمَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ فَرَأَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا، فَلْيَدْعُهَا وَلْيَأْتِ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ، فَإِنْ تَرَكَهَا كَفَّارَتَهَا"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: الْأَحَادِيثُ كُلُّهَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَلْيَكْفُرْ عَنْ يَمِينِهِ إِلَّا فِيمَا لَا يُعْبَأُ بِهِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قُلْتُ لِأَحْمَدَ: رَوَى يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ، فَقَالَ: تَرَكَهُ بَعْدَ ذَلِكَ، وَكَانَ أَهْلًا لِذَلِكَ، قَالَ أَحْمَدُ: أَحَادِيثُهُ مَنَاقِبُ، وَأَبُوهُ لَا يُعْرَفُ.

عمرو بن شعيب دخپل پلار نه او هغه دده دنيکه نه روایت کوی فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائلی وو نذر او قسم پوره کول لازم نه دی په هغه څیزونو کښې کوم چه دانسان په اختیار کښې نه وی اونه دالله تعالی په نافرمانی کولو کښې، اونه په صله رحمئ کت کولو کښې، او څوک چه دیو کار نه قسم وکړي او بیا ددې په خلاف کښې ورته خیر ښکاره شي نو دا عمل دي پریږدي او هغه عمل دي اختیار کړي کوم چه دده دپاره غوره دې، یقینا ددغه (نامناسبه) کار پریښودل دده د قسم کفاره ده. ابوداؤد وائی: دا ټول حدیثونه د نبی کریم صلی الله علیه و آله نه رانقل دی، او پکار دی چه هغه دخپل قسم کفاره ورکړی څو کوم قسمونه چه بغیر سوچ خوړلې شی او دهغې خیال نه کیږی نودهغې کفاره نشته. ابوداؤد وائی: ما د احمد نه تپوس او کړو: آیا یحی بن سعید د یحی بن عبیدالله نه روایت کړې دې؟ نو هغوی او وئیل او مخکښې ئې کړې وو، بیا ئې پریخودو، او هغه ددې لائق وو چه دهغه نه روایت کول پریخودلې شی. احمد وائی: دهغه احادیث منکر دی اودهغه پلار غیر معروف دې.

(۱): انظر حديث رقم (۲۱۹۲) (تحفة الأشراف: ۸۷۳۶) (حسن)

(۲): سنن النسائي / الأيمان ۱۶ (۳۸۲۳)، (تحفة الأشراف: ۸۷۵۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۲۱۲) (حسن)



## بَابُ الْإِسْتِثْنَاءِ فِي الْيَمِينِ بَعْدَ السَّكُوتِ

باب: قسم خوړلو کښې د خاموش کیدو نه پس د ان شاء الله ونیلو بیان

د دې نه مخکښې یو باب تیر شوې دې «باب الاستثناء فی اليمين» هلته مونږ دا لیکلې وو چه استثناء هغه معتبر ده کومه چه متصلا وی او دا چه د اتصال بحث، به په دې راتلونکې باب کښې ذکر کولې شی.

په استثناء کښې د اتصال قید، او ذکر د مذاهبو:

استثناء په اصطلاح کښې د ماقبل حکم نه د بعضو افرادو اخراج ته وائی په الا وغیره سره، او د دې اطلاق په تعلیق علی المشیئة باندې هم کیږي یعنی ان شاء الله وئیل، دلته هم دا مراد ده، د قسم خوړلو نه پس که یو انسان متصلا ان شاء الله وائی نو دا د انعقاد یمین نه مانع کیږي، د اتصال قید د جمهور علماء کرامو او ائمه اربعه په نزد دی، بعض سلف لکه د طاؤس حسن قتاده وغیره نه په دې کښې اختلاف منقول دې، هم دغه شان د ابن عباس رضی الله عنه اختلاف په دې کښې مشهور دې د هغوی په نزد د استثناء دپاره د یوې زمانې قید نشته چه کله هم غواړی کولې شی.

(دامام اعظم رحمته الله د ذهانت دلچسپه واقعه)

په دې سلسله کښې یوه قصه هم مشهور ده هغه دا چه یو سړی «قیل هو محمد بن اسحاق صاحب المغازی» خلیفه منصور عباسی ته د امام ابوحنیفه رحمته الله شکایت اوکړو چه دوی ستاسو د نیکه ابن عباس رضی الله عنه مخالفت کوی چه استثناء منفصل معتبر نه ده متصل کیدل ئې ضروری دی، منصور امام صاحب راوغوښتلو د هغوی نه ئې په دې باره کښې سوال اوکړو هغوی جواب ورکړو او زه وایم چه استثناء منفصل معتبر نه ده او بیا د هغه د مطمئن کولو دپاره هغوی او فرمائیل آیا ستاسو دا خبره خوښه ده چه خلق ستاسو په مجلس کښې ستاسو په لاس باندې بیعت کوی حلف اوچت کړی اوبیا د مجلس نه بهر وتلو سره د انشاء الله په ذریعه بیعت ماتولو سره بری شی په دې باندې هغه خوشحاله شو اووې وئیل «نعم ما قلت وعضب علی ابن اسحاق واخرجه من عنده» (هذل)

[۳۲۸۵] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ يَمَّاكٍ، عَنْ عِكْرَمَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "وَاللَّهِ لَا غَزْوَنَ قَرِيشًا، وَاللَّهِ لَا غَزْوَنَ قَرِيشًا، ثُمَّ قَالَ: إِنَّ شَاءَ اللَّهُ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَقَدْ أَسْنَدَ هَذَا الْحَدِيثَ غَيْرُ وَاحِدٍ، عَنْ شَرِيكٍ، عَنْ يَمَّاكٍ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَسْنَدُهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَالَ الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ: عَنْ شَرِيكٍ، ثُمَّ لَمْ يَنْقُرْهُمْ.

عکرمه نه روایت دې فرمائی چه نبی علیه الصلاة والسلام فرمائیلی وو په الله می دې قسم وي زه به دقریشو قبیلې سره جهاد کوم، په الله می دې قسم وي زه به دقریشو قبیلې سره جهاد کوم، په الله می دې قسم وي زه به دقریشو قبیلې سره جهاد کوم، اوبیاني انشاء الله ووئیل. امام ابوداود وائی چه ولید بن مسلم په واسطه د شریک سره پدی روایت کښې دا

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۱۱۶) (ضعیف)

اضافه کړي ده چه، بیاني ورسره جهاد ونکړو.

[۳۲۸۶] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ بَشَرَ، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ سِمَاكِ، عَنْ عِكْرَمَةَ، بِرَفْعِهِ، قَالَ: «وَاللَّهِ لَا غَزْوَنَ قُرَيْشًا، ثُمَّ قَالَ: إِنْ شَاءَ اللَّهُ، ثُمَّ قَالَ: وَاللَّهِ لَا غَزْوَنَ قُرَيْشًا إِنْ شَاءَ اللَّهُ، ثُمَّ قَالَ: وَاللَّهِ لَا غَزْوَنَ قُرَيْشًا، ثُمَّ سَكَتَ، ثُمَّ قَالَ: إِنْ شَاءَ اللَّهُ»، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: زَادَ فِيهِ الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ شَرِيكَ، قَالَ: ثُمَّ لَمْ يَغْزُهُمْ.

د عکرمه نه مرفوعا روایت دي فرماني چه نبی علیه الصلاة والسلام فرماتیلی وو: په الله مې دي قسم وي زه به د قريشو قبيلې سره جهاد کوم، په الله مې دي قسم وي زه به د قريشو قبيلې سره جهاد کوم، په الله مې دي قسم وي زه به د قريشو قبيلې سره جهاد کوم، او بياني انشاء الله ووئيل. او بياني او فرماتيل په الله مې دي قسم وي زه به د قريشو قبيلې سره جهاد کوم انشاء الله تعالی، په الله مې دي قسم وي زه به د قريشو قبيلې سره جهاد کوم، او بيا خاموش شو، او بياني او وئيل انشاء الله. امام ابوداود وائی چه وليد بن مسلم په واسطه د شريك سره په دي روايت كښې دا اضافه كړي ده چه بياني ورسره جهاد ونكړو.

قوله: عَنْ عِكْرَمَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- قَالَ: «وَاللَّهِ لَا غَزْوَنَ قُرَيْشًا وَاللَّهِ لَا غَزْوَنَ قُرَيْشًا وَاللَّهِ لَا غَزْوَنَ قُرَيْشًا». ثُمَّ قَالَ: «إِنْ شَاءَ اللَّهُ». او په دويم روايت كښې دا زيادت دي ثُمَّ سَكَتَ ثُمَّ قَالَ: «إِنْ شَاءَ اللَّهُ»

خو فصل يسير د جمهورو په نزد هم جائز دي پس په بذل كښې د ابن امير الحاج نه نقل دي: يشترط في الاستثناء الاتصال بالمستثنى منه لفظا عند جماهير العلماء الا تنفس او سعال او اخذ فم ونحوه كعطاس او جشاء وعن ابن عباس جواز الفصل بشهر وسنة مطلقا او د دي نه پس بيا دا دي چه هغه د ابن عباس رضي الله عنه نه چه كوم فصل منقول دي د هغې نه مراد استثناء ده كومه چه په وخت د تكلم منوي وي خو موخروي.

مضمون د حديث دا دي چه رسول الله ﷺ يوه ورځ او فرماتيل چه زه به د قريش مکه سره ضرور غزوه کوم او دا رسول الله ﷺ درې کرته او فرماتيل، د دي نه پس په دويم روايت كښې دي «ثم لم يغزهم» چه بيا رسول الله ﷺ ته هغوی سره د جنگ کولو ضرورت رانغلو په دي باندې په بذل كښې دا اشكال دي چه د مكې فتح د غزوې په ذريعه اوشوه بيا د نفی څه معنی ده؟ قلت ويمكن ان يقال معناه لم يغزهم بعد هذا القول على الفور بل بعد زمان... يا دا چه د راوی مراد د غزوې نه قتال وي پس د امام شافعي رحمته الله په نزد د مكې فتح صلحا اوشوه نه عنوة. والله تعالى اعلم

### بَابُ مَنْ نَذَرَ نَذْرًا لَا يُطِيقُهُ

د داسې نذرمنلو بيان چه انسان دهغې طاقت نه لري

[۳۳۲۲] (۱) حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ مَسَافِرٍ التَّنِيسِيُّ، عَنْ ابْنِ أَبِي قُدَيْكٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي طَلْحَةُ بْنُ يَحْيَى الْأَنْصَارِيُّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَعِيدٍ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ بَكْرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْأَشْعَثِ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۱۱۶) (ضعيف)

۲: سنن ابن ماجه / الكفارات ۱۷ (۲۱۲۸)، (تحفة الأشراف: ۶۳۴۱) (ضعيف مرفوعا)



صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «مَنْ نَذَرَ نَذْرًا لَمْ يُسْمِهِ، فَكَفَّارَتُهُ كَفَّارَةُ يَمِينٍ، وَمَنْ نَذَرَ نَذْرًا فِي مَعْصِيَةٍ، فَكَفَّارَتُهُ كَفَّارَةُ يَمِينٍ، وَمَنْ نَذَرَ نَذْرًا لَا يُطِيقُهُ، فَكَفَّارَتُهُ كَفَّارَةُ يَمِينٍ، وَمَنْ نَذَرَ نَذْرًا أَطَاقَهُ، فَلَيْفَ بِهِ»، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَرَوَى هَذَا الْحَدِيثَ وَكَيْفَ وَغَيْرُهُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَعِيدٍ بْنِ أَبِي الْهِنْدِ، أَوْ قُفُوهُ عَلَى ابْنِ عَبَّاسٍ.

دا بن عباس رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه رسول پاک صلی الله علیه وسلم فرمائیلى دی څوک چه غیر معین نذر او منی نوددي کفار هغه ده کومه چه د قسم کفار ده او څوک چه دگناه دیوار نذر او منی نوددي کفار هم د قسم کفار ده او څوک چه داسې نذر او منی دکوم چه دې طاقت نه لری نوددي کفار هم د قسم کفار ده او څوک چه داسې نذر او منی دکوم چه ددي وس او طاقت لری نوهغه دې پوره کړي، ابوداود وائی چه دي حدیث لره وکیع وغیره دعبدالله بن سعید نه اوهغه په ابن عباس به باندې موقوفا نقل کړې دي.

عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- قَالَ: «مَنْ نَذَرَ نَذْرًا لَمْ يُسْمِهِ فَكَفَّارَتُهُ كَفَّارَةُ يَمِينٍ وَمَنْ نَذَرَ نَذْرًا فِي مَعْصِيَةٍ فَكَفَّارَتُهُ كَفَّارَةُ يَمِينٍ»

دا هم هغه حدیث دي چه د هغې ذکر مونږ سره په «باب من نذر نذرا لم يسمه» کښې د ملا علی قاری د کلام د لاندې داسې راغلې دي چه کومو علماء کرامو «من نذر نذرا لم يسمه» لره په نذر معصیت باندې محمول کړې دي هغه صحیح نه دي ځکه چه نذر معصیت خود هغه حدیث نه پس پخپله ذکر شوې دي او عطف مقتضى دي مغایرت لره وغیره وغیره. والحديث اخرجه ابن ماجة، قاله المنذرى

## کتاب البیوع

داخستلو خرڅونود احکامو بیان

د ماقبل سره مناسبت :

چه هم کله مصنف رحمه الله د عباداتو د بیان نه فارغ شو یعنی ارکان اربعه مونږ روژه زکوة او حج او نکاح او جهاد وما یناسبه من الضحایا والوصایا والفرائض وغیرها نو اوس د دې ځانې نه د معاملاتو بیان شروع کوی او د دې نه پس اطعمة او اشربة، ځکه چه دا د بیع وغیره معاملات د خوراک ځکاک د سهولتونو دپاره مشروع شوی دی او بیا د دې ټولو نه پس چه کوم احکام باقی پاتې شو یعنی حدود او قصاص او دیات هغه مصنف رحمه الله ذکر کړی دی ځکه چه دا امور یعنی حدود او قصاص وغیره زیات تر د اکل او شرب په بې احتیاطی باندې متفرع کیږی په دې وجه هغه د اطعمه او اشربة نه پس آخر کښې ذکر کړې شو، واللہ تعالی اعلم. دا مناسبت خود پوره کتاب د مضامینو په اعتبار سره شو اوس پاتې شوه دا خبره چه نزدې چه کوم کتاب تیر شوې دي یعنی کتاب الایمان والنذور په دې کښې او بیوع کښې څه مناسبت دي نو د دې په باره کښې دا وئیلې کیدې شی څنگه چه د کتاب النذور په شروع کښې تیر شو چه په نذر کښې زوال د اختیار وی نو هم دغه شان په بیع کښې زوال د ملک وی فتاسبا واللہ تعالی اعلم

او د صحیح بخاری ترتیب دا دي چه هغوی په ارکان اربعه کښې د ټولو نه اخیر

کښې صوم ذکر کولو نه پس، د هغې نه پس متصلاً کتاب البیوع بیان فرمائیلې دې او امام مسلم رحمته الله علیه د ارکان اربعه نه پس کتاب الحج لره د ټولو نه آخر کښې ذکر کولو نه پس اول کتاب النکاح او د هغې نه پس کتاب البیوع ذکر کړې دې،  
(د بیع اصطلاحی تعریف)

د بیع تعریف کوم چه مشهور دې هغه دا دې (البيع مبادلة المال بالمال بالتراضي) په دې تعریف باندې یو اشکال هم کړې شوې دې چه دا مانع نه دې ځکه چه دا په هبة بشرط العوض باندې صادق راځي، په دې وجه بعض علماء کرامو په دې کښې د لفظ تجارة اضافه او کړه یعنی مبادلة المال بالمال بالتراضي بطريق التجارة... خو په دې باندې هم اشکال دې ځکه چه د دې نه بیع د مکړه خارج کیږي حال دا چه د احنافو په نزد هغه منعقد ده.

(په بیع او شراء کښې فوق)

بیوع جمع ده د بیع، بیع او شراء د دې دواړو په باره کښې لیکلې شوې دی چه دا د اضدادو نه دی د یو بل په معنی راځي خو اکثر د بیع اطلاق په اخراج المبيع عن الملك، او د شراء اطلاق اکثر په اخراج الثمن عن الملك باندې کیږي.

د بیع انواع :

او په بیوع کښې د جمع صیغه اختیاروی فقهاء هم او محدثین هم د کثرت انواع بیع طرف ته د اشاره کولو دپاره، په حاشیه د هدایه کښې لیکلې دی چه د بیع په اعتبار د مبيع څلور قسمونه دی ۱: بیع سلعة بمثلها یعنی د سامان په بدله کښې سامان بدلول د دې نوم بیع مقایضه ده ۲: د ثمن په بدله کښې سامان ورکول لکه چه عام طور سره وی، مطلق بیع چه کله وئیلې نو هم دا ترې نه مراد وی ۳: بیع الثمن بالثمن یعنی چه د دواړو طرفونو نه په نقدینو کښې یو وی نو د دې نوم بیع الصرف دې. ۴: بیع دین بعین د دې نوم بیع سلم دې، په دې بیع کښې مبيع دین وی یعنی فی الحال نه بلکه واجب فی الذمه وی، او ثمن فی الحال وی یعنی عام طور سره خو د دې برعکس وی چه سلعة یعنی سامان ئې فی الحال واخستلو او د هغې عوض یعنی ثمن ئې موجدل کړو چه روستو به ئې درکړم، او د بیع په دې قسم کښې یعنی سلم کښې د دې برعکس وی چه ثمن فی الحال او مبيع موجدل هم په دې وجه د دې تعریف داسې کولې شی (بیع آجل بعاجل) دا دې په ذهن کښې وی چه په باب بیع کښې حرف 'با' په ثمن باندې داخلېږي د بیع د دې څلورم قسم جواز خلاف القیاس، د نص د وجې نه دې، شریعت د مصلحت او سهولت عباد دپاره دا قسم خلاف القاس جائز کړې دې، هم په دې وجه د دې د جواز دپاره ئې ډیر شرطونه کیخودلې دی چه روستو اختلاف پیدا نه شی، دا شرطونه د فقه په کتابونو کښې مذکور و مسطور دی، هم دغه شان د ثمن په لحاظ سره هم د بیع څلور قسمونه دی، ۱: بیع المساومه، ما اتفاقا علیه من غیر اعتبار الثمن الاول یعنی سودا کولو سره یو څیز اخستل چه په هر څومره قیمت باندې اتفاق راشي لکه چه عام طور سره په بیوع کښې وی، ۲: بیع المراجعة ۳: التولية ۴: الوضعية په دې درې واړو قسمونو کښې د ثمن اول اعتبار وی یعنی بائع دا اوائی چه ماته دا څیز په



دومره قیمت پریوتلې دې او زه ئې تاته په دومره پیسو درکوم بیا د گټې د اخستلو په صورت کښې دې ته مرابحه او د نه اخستلو په صورت کښې بیع تولیه او د کمولو په صورت کښې بیع الوضعیه وائی.

### په دین کښې د معاملاتو د صحیح کولو اهمیت :

زمونږ دین یعنی دین اسلام صرف د عباداتو نوم نه دې، بلکه د عباداتو، معاملاتو، معاشرتو او اخلاقیاتو د مجموعې نوم دې، بغیر د معاملاتو د صحیح کولو نه انسان دینداره یا صوفی یا زاهد نه شی جوړیدې، پس په تعلیم المتعلم کښې لیکلې دی چه یو سړی د امام محمد رحمته الله علیه خدمت کښې عرض اوکړو «الا تصنف کتابا فی الزهد» چه تاسو په زهد او تصوف کښې یو کتاب ولې نه لیکئ؟ نو هغوی جواب ورکړو «قد صنف کتابا فی البیوع» یعنی په په مسائلو د بیوع باندې کتاب لیکلې دې. په ظاهر کښې خو جواب د سوال مطابق نه وو په دې وجه هغه دوباره سوال اوکړو نو هغوی هم هغه جواب او فرمائیلو، درې کرته هم داسې اوشوه هر کرت به هغوی هم دا فرمائیل چه ما په بیوع باندې کتاب لیکلې دې گویا امام صاحب رحمته الله علیه دې طرف ته اشاره او فرمائیله چه بغیر د بیوع او معاملاتو د برابرولو نه انسان صوفی او زاهد نه شی جوړیدې، د امام محمد رحمته الله علیه د دې قصې تائید د امام ترمذی رحمته الله علیه د صنیع نه هم کیږی ځکه چه هغوی د کتاب البیوع په شروع کښې چه کوم باب ترلې دې هغه دا دې «باب ما جاء فی ترک الشبهات» او بیانی په هغې کښې دا مشهور حدیث مرفوع ذکر فرمائیلې دې «الحلال بین والحرام بین وبين ذلك امور مشبهات لا یدری کثیر من الناس امن الحلال هی ام من الحرام فمن ترکها استبراء لدينه وعرضه فقد سلم الحديث قال ابو عیسی هذا حدیث حسن صحیح آه قلت هو متفق علیه اخرجه البخاری ومسلم.

### باب فی التجارة یخالفها الحلف واللغو

په تجارتی معاملاتو کښې قسمونه او دروغ ډیروی

[۳۳۲۶] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي غَزَّزَةَ، قَالَ: "كُنَّا فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نُسَمِّي السَّمَايَةَ، فَمُرِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَسَمَّائًا بِاسْمِهِ هُوَ أَحْسَنُ مِنْهُ، فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ التَّجَّارِ، إِنَّ الْبَيْعَ يَخْفَرُهُ اللَّغْوُ وَالْحَلْفُ، فَشُوبَةُ بِالْصَّدَقَةِ."

دقیس بن ابی غرزہ نه روایت دې فرمائی چه مونږ تاجرانوته به د نبی صلی الله علیه و آله په زمانه کښې سماسره وئیلې کیدل یوه ورځ نبی صلی الله علیه و آله زمونږ په خوا کښې تیریدو اوزمونږ دپاره ئې دپخواني نوم نه بهترنوم تجویز کړو، وئې فرمائیل ای دتاجرانو ډلې یقینا په کاروبار کښې بې کاره خبرې او قسمونه وي لهذا تاسوله پکار دي چه دصدقې سره ئې یوځانې کړی.

[۳۳۲۷] (۲) حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ بْنُ عِيْسَى الْبُسَطَامِيُّ، وَحَامِدُ بْنُ يَحْيَى، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الزُّهْرِيُّ، قَالُوا: حَدَّثَنَا سَفْيَانُ، عَنْ جَامِعِ بْنِ أَبِي رَاشِدٍ، وَعَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ أَعْيَنَ، وَعَاصِمٌ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي غَزَّزَةَ،

۱: سنن الترمذی/البیوع ۴ (۱۲۰۸)، سنن النسائي/الایمان ۲۱ (۳۸۲۸)، البیوع ۷ (۴۴۶۸)، سنن ابن ماجه/التجارات ۳ (۲۱۴۵)، (تحفة الأشراف: ۱۱۱۰۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۷۴، ۷۸۰) (حسن صحیح)

۲: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۱۱۰۳) (صحیح)

بِمَعْنَاهُ، قَالَ: وَالْحَلْفُ بِخُضْرَةِ الْكَذِبِ، وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ الرَّهْرِيُّ: اللَّغْوُ وَالْكَذِبُ.

جامع بن ابی راشد او عبد الملك بن اعین او عاصم دابو وائل نه روایت کوی هغه د قیس بن ابی غرزة نه د تیرشوی روایت په شان روایت بیان کړې دې اوداضافه ئې کړې ده، چه په بیعه کښې قسم خوړل اودروغ وئبل دیر پښېرې یا عبث خبرې اودروغ خبرې دیرې پښېرې (نوتاسولر په پکار دي چه دیر دیر خیراتونه کړئ).

عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي غُرْزَةَ قَالَ كُنَّا فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- نُسَمِّي السَّمَايِرَةَ فَمَرُّ بِنَا رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- فَسَمَّانَا بِاسْمِ هُوَ أَحْسَنُ مِنْهُ فَقَالَ « يَا مَعْشَرَ التَّجَارِ إِنَّ الْبَيْعَ يَخْضُرُهُ اللَّغْوُ وَالْحَلْفُ فَشَوْنُوهُ بِالصَّدَقَةِ »

قیس بن ابی غرزه رضی الله عنه فرمائی چه مونږ ته به د عهد نبوی ﷺ په شروع کښې سمسار وئیلې کیدل یعنی سوداگرو ته به سمسار وئیلې کیدل کوم چه د سمسار یعنی الدلال جمع ده، یوه ورځ رسول الله ﷺ په بازار کښې په سوداگرو باندې تیر شو، هغه صحابی فرمائی چه هغه ورځ رسول الله ﷺ مونږ په دیر ښه نومونو باندې یاد او فرمائیلو: وې فرمائیل (یا معشر التجار) اې د سوداگرو جماعته! د لین دین او بیع او شراء په لغویاتو کښې د دروغو قسمونه په خوله باندې راشی نوتاسو دا عمل د صدقې سره یو ځای کوی یعنی روزانه د گنجائش او وس مناسب صدقه کوی، چه د دې لغویاتو تلافی اوشی.

د سوداگر نوم د سمسار نه ولې ښه دې ځکه چه تجارت د الفاظ عربیه نه دې په قرآن کریم کښې ذکر دې په خلاف د سمسار چه هغه عجمی لفظ دې. والحديث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى

## باب فِي اسْتِخْرَاجِ الْمَعَادِينِ

دكان نه د مال ويستلو بيان

يعني د سرو او سپينو زرو د کانونو نه مال ويستلو سره حاصلول، د دې باب کتاب البيوع سره څه مناسبت دې ځکه چه سره او سپين زر د خيزونو د اخستلو دپاره ثمن جوړيږي.

[۳۳۲۸] حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي مُحَمَّدٍ، عَنْ عُمَرَ وَتَعْنِي ابْنُ أَبِي عُمَرَ، عَنْ عُمَرَ مَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ: "أَنَّ رَجُلًا لَمْ يَمَلِكْ لَهُ بَعْثُ رَقَدَانِيٍّ، فَقَالَ: وَاللَّهِ لَا أَقَامُ فَكَّ حَتَّى تَقْضِيَنِي، أَوْ تَأْتِيَنِي بِمَحْبِلٍ، فَتَحْمِلَ بِهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَتَاهُ بِقَدْرٍ مَّا وَعَدَهُ، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مِنْ أَيْنَ أَصَبْتَ هَذَا الذَّهَبَ؟ قَالَ: مِنْ مَعْدِنٍ، قَالَ: لَا حَاجَةَ لَنَا فِيهَا، وَلَيْسَ فِيهَا خَيْرٌ، فَقَضَاهَا عَنْهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ."

د ابن عباس رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه یو کس خپل قرضدارې د لسو روپو په وجه ونيولو (د چاپه ذمه چه دهغه لس دیناره وو) ورته ئې او وئیل په الله مې دي قسم وي تر هغې به دي پرېږنه دم ترڅو چه دي زما قرض نه وی ادا کړې اویاراته ضمانت راکړي، راوي وائی نبی ﷺ چه دا واوریدل نو قرض غوښتونکي ته ئې د قرضداري د طرف نه ضمانت اوکړو نوده



ورته دومره مال راوړو دخومره مال دراوړو چه ئې وعده كړې وه، نبی ﷺ ورته او فرمائیل دادې دچرته نه راوړل هغه او وئیل دكان نه مې راوړل نبی ﷺ او فرمائیل زمونږ دې ته څه حاجت نشته دې اونه په دې كښې څه خیرشته دې، نونبې ﷺ دده قرض ددغه مال نه ادا كړو.

قوله: عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَجُلًا لَزِمَ غَرِيمًا لَهُ بِعَشْرَةِ دَنَانِيرَ الْخ

### شرح الحديث:

ابن عباس رضی اللہ عنہما فرمائی چه یو سړی یعنی دائن خپل مدیون نیولې وو چه په هغه باندي دین صرف لس دیناره وو، او رجل دائن دا وئیل چه والله زه به تا نه پرېږدم چه تر څو تا ماته خپل دین نه وی ادا كړې یا خپل یو كفیل پیش نه كړې راوی وائی چه د دې شخص د دین كفالت رسول الله ﷺ واخستلو او بیا د څو ورځو نه پس د وعدې مطابق د هغوی په خدمت كښې مدیون مال راوړو، رسول الله ﷺ د هغه نه تپوس او كړو چه دا سره زر تا د كوم ځانې نه حاصل كړل، هغه عرض او كړو د یو معدن نه، رسول الله ﷺ په دې اوریدو باندي هغه واپس كړو او وې فرمائیل مونږ ته د دې ضرورت نشته، په دې كښې هیڅ خیر نشته او بیا هغه قرض داری ته رسول الله ﷺ د خپل طرف نه ادا كړې.

رسول الله ﷺ د دې معدن نه ویستلې شوې سره زر ولې واپس كړل، شراح د دې په توجیه كښې مختلف دی، بعضو وئیلې دی چه د دې به څه خاص وجه وی چه د هغې مونږ ته خبر نشته كښې صرف د دې مال مستخرج من المعدن كیدل خو مانع عن التملك نه دې امام خطابی رحمه الله د دې متعدد توجیهات احتمالا لیکلی دی. ۱: رسول الله ﷺ دا په دې وجه رد كړو (لانه لم یخمس) یعنی هغه سړی تر اوسه پورې د دې مال خمس نه وو ادا كړې كوم چه شرعا واجب دې. ۲: د اصحاب معادن عادت وی چه هغوی د تراب المعادن بیع كوی ځكه چه په هغې كښې د سرو زرو او سپینو ذرو ذرات وی، او چونكه دا معلومه نه ده چه څه به راوځی یا نه او خومره به راوځی فیه غرر ۳: ضرورت وو د سكې د دراهم او دنانیر او هغه سړی راوړې وو سره زر غیر مضروب په دې وجه رسول الله ﷺ هغه واپس كړل ۴: اصحاب معادن دا كوی چه كان په تهیكه وركوی چه د كنستلو والا په هغې كښې عشر یا خمس یا ثلث، باقی زمونږ، او د هغې مقدار معلوم نه دې، د دې جهالت د وجې نه دا عقد فاسد شو په دې وجه رسول الله ﷺ واپس او فرمائیلو (بذل) والحديث أخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى

### بَابُ فِي اجْتِنَابِ الشُّبُهَاتِ

د مشتبیه څیزونو نه د ځان ساتلو بیان

[۳۳۲۹] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو شَيْبَابٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ النُّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ، وَلَا أَنَا مِنْهُ أَحَدٌ أَبْعَدُ، يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "إِنَّ الْحَلَالَ بَيْنَ، وَإِنَّ الْحَرَامَ بَيْنَ، وَبَيْنَهُمَا أُمُورٌ مُشْتَبِهَاتٌ، وَأَحْيَاكَ يَقُولُ مُشْتَبِهَةٌ، وَسَأُخْبِرُ لَكُمْ فِي ذَلِكَ مَثَلًا، إِنَّ اللَّهَ هَمَى

۱: صحيح البخاري للإيمان ۳۹ (۵۲)، والبيوع ۲ (۲۰۵۱)، صحيح مسلم للمساقاة ۲۰ (۱۵۹۹)، سنن الترمذي للبيوع ۱ (۱۲۰۵)، سنن النسائي للبيوع ۲ (۴۴۵۸)، سنن ابن ماجه للفتن ۱۴ (۳۹۸۴)، (تحفة الأشراف: ۱۱۶۲۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۶۷/۴، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۱، ۲۷۵)، سنن الدارمي للبيوع ۱ (۲۵۷۳) (صحيح)

جَمِيٍّ، وَإِنْ حَمَى اللَّهُ مَا حَرَّمَ، وَإِنَّهُ مَنْ يَرَعِ حَوْلَ الْحِمَى، يُوشِكُ أَنْ يُخَالِطَ الرِّبَةَ، يُوشِكُ أَنْ يَجْسُرَ".

د نعمان بن بشير نه روايت دې فرمائی چه ماد نبی ﷺ نه اوریدلی دی چه فرمائیل ئی یقینا حلال هم ظاهر دي او حرام هم ظاهر دي او مشتبه ددې دواړو په مینځ کښې دي، زه تاسوته ددې مثال بیانوم الله تعالی ددې دپاره یو حد مقرر کړې دې او ددې حد دهغه حرام کړې شوي څیزونه دی او یقینا څوک چه خپل څاروی ددې حدونو نه چاپیره څروي نو نزدې دهرچه په دې کښې به داخل شي، او همدارنگي څوک چه مشتبه کار کوي نو په دې باره کښې دده د جرئت زیاتیدو اندیښنه ده.

قوله: عَنْ الشَّعْبِيِّ قَالَ سَمِعْتُ الثُّغَمَانَ بْنَ بَشِيرٍ - وَلَا أَسْمَعُ أَحَدًا بَعْدَهُ يَقُولُ - سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَقُولُ «إِنَّ الْحَلَالَ بَيِّنٌ وَإِنَّ الْحَرَامَ بَيِّنٌ

په دې سند کښې «وَلَا أَسْمَعُ أَحَدًا بَعْدَهُ» دا جمله معترضه ده او په نسائی کښې داسې دی، «فوالله لا اسمع بعده احدا» امام شعبی رحمه الله فرمائی چه ما دا حدیث (کوم چه وړاندې را روان دي) د نعمان بن بشير رحمه الله نه اوریدلی، او د هغوی نه د اوریدو نه پس ئې د بل چا نه نه اورم، یعنی د هغوی نه پس د بل صحابی رحمه الله نه د اوریدو ضرورت نشته، صرف د هغوی نه اوریدل کافی دی ځکه چه هغوی بالکل رشتیني او قابل اعتماد دی. (۱)

#### شرح الحديث :

د حدیث مضمون دا دي : رسول الله ﷺ ارشاد فرمائی چه د کومو څیزونو خلقو ته حلال کیدل معلوم دی د هغې حکم خو ښکاره دي، یعنی خلق دا گنړی چه د هغې په اختیارولو کښې څه حرج نشته، او هم دغه شان د کوم څیز حرام کیدل چه خلقو ته معلوم دی د هغې حکم هم د هغوی په نزد نور هم ظاهر دي، یعنی دا چه د هغې نه بېج کیدل ضروری دی، خو ضرورت د دې خبرې دي چه کوم امور د حلال او حرام ترمینځه دی د هغې حکم دي او پیژندلې شی او هغه دا دي چه څنگه د حدیث د وړاندې حصې نه معلومېږي چه د داسې امورو نه اجتناب هم احتیاطاً ضروری دي گینې د احتیاط نه کولو په صورت کښې ویره ده چه معامله وړاندې لاره نه شی یعنی وقوع فی الحرام، او بیا رسول الله ﷺ د دې مشتبهاتو دا حکم په یو مثال سره واضحه کړو «ان الله حمى حمى وان حمى الله محارمه» چه بیشکه الله پاک په بعض څیزونو باندې کنده تار لگولو سره هغه ممنوع کړی دی چه انسان هغې ته او نه رسی او هغه امور چه په هغې باندې الله پاک کنده تار لگولې دي هغه ممنوعات شرعیه دی او کوم انسان چه د هغه تار خوا کښې څاروی څروی نو د هغه په باره کښې قوی ویره ده چه هغه په تار کښې دننه ور داخل نه شی. «وانه يخالط الرية يوشك ان يجسر» یعنی کوم انسان چه مشکوک ته نزدې کیږي د هغه په باره کښې دا ویره ده چه هغه په داسې کولو سره وړاندې جرات او کړی او په ښکاره حرامو کښې ورتنوخې، د دې حدیث د رومبې جملې

۱، او دا هم ممکنه ده چه داسې اونیلې شی چه شعبی د اوساط تابعینو نه دي کوم چه زیات تر د تابعینو نه روايت کوی او دا حدیث د هغوی نه د صحابی نه دي په دې وجه فرمائی چه د دې نه پس اوس د یو تابعی نه د روايت کولو څه ضرورت پاتې کیږي



مطلب شراحو هم دا ليكلې دې كوم چه مونږ پورته اوليكلو، او د دې جملې مطلب دا نه دې چه ټول هغه خيزونه كوم چه د الله پاك په نزد حلال دي او هم دغه شان كوم چه د الله پاك په نزد حرام دي هغه ټول بين او ښكاره دي ټول خلق هغه پيژني، د دې مطلب شراح نفې كړې ده ځكه چه د دې مطلب په صورت كښې بيا مشتبه امور چرته باقي پاتې كيږي چه د هغې نه د بچ كيدو دپاره په حديث كښې فرمايلي شوي دي. والله تعالى اعلم

### د حديث الباب په ظاهر كښې معارض يو بل روايت :

دلته يو طالب علمانه اشكال دې چه وړاندې د كتاب الطعمة په اخير كښې په حديث كښې داسې دي (كان اهل الجاهلية ياكلون اشياء ويتركون اشياء تقذرا فبعث الله نبيه ﷺ وانزل كتابه واحل حلالا وحرم حراما فما احل الله فهو حلال وما حرم الله فهو حرام وما سكت عنه فهو معفو) په دې حديث كښې د حلال او حرام خيزونو ترمينځه خيز ته عفو وئيلې شوې ده، او په حديث الباب كښې دې ته مشتبه او واجب الاحتراز فرمايلي شوي دي، د دې اشكال او د هغې جواب طرف ته اشاره شيخ په كوكب كښې داسې فرمايلي ده چه د دې دواړو احاديثو ترمينځه خو قسمه جمع كړې شوې ده مثلاً دا چه ۱: حديث د ابن عباس رضيا من باب الفقه والفتوى دې او د نعمان بن بشير رضيا دا حديث من باب الورع والتقوى دې. ۲: او د دې نه غوره توجيه دا ده چه د ابن عباس رضيا په حديث كښې چه كوم حكم ذكر كړې شوې دې يعنى عفو هغه د مسكوت عنه ده، او د نعمان بن بشير رضيا حديث كښې چه كوم حكم ذكر كړې شوې دې هغه امر مشتبه دي، پس دلته څلور مراتب شو حلال، حرام، مسكوت عنه، يعنى هغه خيز چه د هغې په باره كښې نه دليل د حلت موجود وي نه دليل د حرمت، مشتبه يعنى چه په كوم امر كښې دلائل متعارض وي د حلت او حرمت په باره كښې، او د هغې حكم وجوب ترك دې ترجيحاً للحرمة، او د قسم ثالث هم دا دې چه هغه معفو عنه دې د اباحه اصليه په اعتبار سره. (۱)، او يو جواب دا هم وركړې شوې دې چه د نعمان بن بشير رضيا حديث متفق عليه دي بلكه د صحاح سته حديث دي، او حديث د ابن عباس رضيا د سنن روايت دي.

[۳۳۳۰] (۱) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، أَخْبَرَنَا عَيْسَى، حَدَّثَنَا زَكْرِيَّا، عَنْ عَامِرِ الشَّعْبِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ الثَّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ بِهَذَا الْحَدِيثِ، قَالَ: "وَيَنْتَهِيَا مُشْتَبَهَاتٍ، لَا يَعْلَمُهَا كَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ، فَمَنِ اتَّقَى الشُّبُهَاتِ اسْتَبْرَأَ عِزَّهُ وَدِينَهُ، وَمَنْ وَقَعَ فِي الشُّبُهَاتِ وَقَعَ فِي الْحَرَامِ."

د نعمان بن بشير نه روايت دې فرمائي چه ماد نبی ﷺ نه اوريدلي دي چه فرمايل ئي وو..... او په دې حديث كښې داهم دي چه د حلالو او حرامود حدودو په مينځ كښې مشتبهات دي چه ډير خلق ئي نه پيژني څوك چه ددې نه بچ شو نوده خپل دين او عزت سلامت كړو او څوك چه په دې كښې واقع شو نو دې په حرامو كښې واقع شو.

(۱) په ابي داؤد كښې اصل اباحت دي يا توقف: وفي هامش البذل: في حكم الأشياء قبل ورود الشرع اربعة مذاهب كما في العيني ص ۳۴۸، وفي الدر المختار مذهب اهل السنة ان الأصل في الأشياء التوقف والاباحه رأي المعتزلة ورد عليه ابن عابدين ۳۴۸/۳، وحقق ان الثاني مذهب اكثر الحنفية والشافعية ويسط المذاهب. آم.

(۲) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۱۶۲۴) (صحيح)

[۳۳۳۱] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا عَبَّادُ بْنُ رَاشِدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ أَبِي خَيْرَةَ، يَقُولُ: حَدَّثَنَا الْحَسَنُ مِنْدُ أَرْبَعِينَ سَنَةً، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَحَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ يَكِيَّةَ، أَخْبَرَنَا خَالِدٌ، عَنْ دَاوُدَ يَعْنِي ابْنَ أَبِي هِنْدٍ، وَهَذَا الْقُطْبُ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي خَيْرَةَ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «لَيَأْتِيَنَّ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ، لَا يَبْقَى أَحَدٌ إِلَّا أَكَلَ الرَّبَا، فَإِنْ لَمْ يَأْكُلْهُ أَصَابَهُ مِنْ بُخَارِهِ» قَالَ ابْنُ عِيسَى: أَصَابَهُ مِنْ غُبَارِهِ.

د ابوهريرة رضي الله تعالى عنه نه روايت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائيلى دى خامخا به په خلقوداسې زمانه راشي چه هيڅوك به دسود خورلونه بچ نه وي پاتې شوي او كه چاسود نه وي خورلې نولوگي خوبه ئې ورته رسيدلي وي. ابن عيسي وئيلي دى چه دبخارنه مراد گورد دې.

قوله: عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- قَالَ «لَيَأْتِيَنَّ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يَبْقَى أَحَدٌ إِلَّا أَكَلَ الرَّبَا فَإِنْ لَمْ يَأْكُلْهُ أَصَابَهُ مِنْ بُخَارِهِ». قَالَ ابْنُ عِيسَى «أَصَابَهُ مِنْ غُبَارِهِ»  
شرح الحديث :

په عربو كښې ربا يعنى د سودى معاملاتو لين دين ډير عام وو چه هغه به ئې بالكل جائز گڼرلو اسلام چه راغلونو دا هر څه ئې حرام كړل او رسول الله ﷺ د حجة الوداع په خطبو كښې د نورو امورو سره د دې د حرمت هم بار بار اعلان فرمائيلى وو، او د زمانه جاهليت نه چه په كومو خلقو كښې د سود معاملات روان وو په ټولو باندې رسول الله ﷺ پابندى اولگوله ﴿وربا الجاهلية موضوع واول ربا اضع ربانا ربا عباس بن عبدالمطلب فانه موضوع كله﴾ او وى فرمائيل چه د سابقه سودى معاملاتو باقى رقم كوم چه د عباس رضی اللہ عنہ د معاملاتو دې دې په پريخودلو كښې رومبى والې زه كوم غرض دا چه خلقو د دې د حرمت نه پس سودى كاروبار او معاملات بند كړل، بيا رسول الله ﷺ په دې حديث الباب كښې فرمائي چه يو زمانه داسې را روانه ده چه د سودى معاملاتو سلسله به بيا په زور او شور سره اوموندلې شي او دا مرض به داسې عام شي چه د هغې نه په هيڅوك بچ نه شي، او كه څوك ډيرزيات كوشش كولو سره د ښكاره سود خورلو نه پرهيز هم او كړى نو كم از كم د هغې لوږې او بخار خو به پرې ورشى يعنى د سود اثر به هغه ته په څه نه څه طريقې ور رسيږي، مثلاً په سودى معاملاتو كښې به د شاهد جوړيدو ضرورت راشي يا د كاتب جوړيدو يعنى د سودى معاملاتو ليكلو، يا د ربا د خورونكى د ميلمستيا خورلو يادهغه دطرف نه دهديه وغيره دملاويدو والحديث اخرجه النسائي وابن ماجة، قاله المنذرى

[۳۳۳۲] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، أَخْبَرَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ، قَالَ: «خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي جَنَازَةٍ، فَرَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ عَلَى الْقَبْرِ يُوصِي الْحَافِرَ، أَوْسَرَ مِنْ قِبَلِ رَجُلَيْهِ، أَوْسَرَ مِنْ قِبَلِ رَأْسِهِ، فَلَمَّا رَجَعُ اسْتَقْبَلَهُ دَاعِي امْرَأَةٍ، فَجَاءَ وَجِيءٌ

<sup>۱</sup>: سنن النسائي/البیوع ۲ (۴۴۶۰)، سنن ابن ماجه/التجارات ۵۸ (۲۲۷۸)، مسند احمد (۴۹۴/۲)، (تحفة الأشراف: ۹۲۰۳،

(۱۲۲۴۱) (ضعيف)

<sup>۲</sup>: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۶۶۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۰۸، ۲۹۳/۵) (صحيح)



بِالطَّعَامِ، قَوْضَعَهُ يَدَهُ، ثُمَّ وَضَعَهُ الْقَوْمَ، فَأَكَلُوا، فَنَظَرَ أَبَاؤُنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَلُوكُ لِقَعَةً فِي قَبِهِ، ثُمَّ قَالَ: أَجِدُّ نَحْمَ شَاةً أُعْذِتْ بِغَيْرِ إِذْنِ أَهْلِهَا، فَأَرْسَلَتِ الْمَرْأَةُ، قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنِّي أُرْسَلْتُ إِلَى الْبَقِيعِ يَشْتَرِي لِي شَاةً، فَلَمْ أَجِدْ، فَأَرْسَلْتُ إِلَى جَارٍ لِي قَدْ اشْتَرَى شَاةً أَنْ أُرْسِلَ إِلَيَّ بِهَا بِمَنْيَا، فَلَمْ يُوَجَدْ، فَأَرْسَلْتُ إِلَى امْرَأَتِهِ، فَأَرْسَلْتُ إِلَيْهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَطْعِمِيهِ الْأَسَارَى."

عاصم بن کلب دخیل پلارنه او هغه په انصارو کښې دیوکس نه روایت کوی فرمائی چه د نبی ﷺ سره مونږ یوې جنازي ته لاړوما اولیدل چه نبی علیه السلام د قبر سره ودریدو او قبر کن ته ئې د کنستو طریقو خوله اوداسې ئې ورته فرمائیل چه دخپو د طرفه ئې ازاد کړه او دخپو د طرفه ئې ازاد کړه، هرکله چه واپس شو نویوکس ورته د یوې ښځې د طرف نه دخوراک دپاره دعوت ورکړو نبی ﷺ ورغلو او خوراک ورته راوړي شو او ځي لاس ئې ور وړاندې کړو، خوراک ئې شروع کړو او خلقو ورته کتل چه په یوه نور باندې ئې شخوند وهلو او تیروله ئې نه، بیا ئې اوفرمائیل ماته داسې ښکاري چه داغوبښه دداسې چیلئ ده کومه چه د مالک درضا نه بغیر اخستلي شوي ده، دغه زنانه ووئیل ای دالله رسوله ما نقیع مقام ته یوکس دچیلئ اخستلو دپاره لیږلي وو لیکن چیلئ ورته نه وو ملاوشوي بیایې گاونډیانوته ووئیل تاسو چه کومه چیلئ اخستلي ده ماته ئې په هم هغه قیمت را کړئ اتقا هغه گاونډي په کور کښې موجودنه ووما دهغه ښځې ته جواب اولیږلو هغې راته چیلئ راو لیږله نبی ﷺ ورته اوفرمائیل داغوبښه په قیدیانو باندې او خوروئ.

عَنْ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ قَالَ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- فِي جَنَازَةٍ

### مضمون د حدیث:

یو انصاری صحابی رضی الله عنه فرمائی چه مونږ د رسول الله ﷺ سره په یو جنازه کښې قبرستان ته لاړو ما رسول الله ﷺ اولیدو چه هغوی د قبر یو طرف باندې اودریدل او قبر کنستونکی ته هدایت فرمائی چه د دې طرف نه نور هم اوکنه، او د دې فلانی طرف نه نور هم اوکنه، ﴿ فَلَمَّا رَجَعَ اسْتَقْبَلَهُ دَاعِي امْرَأَةٍ فَجَاءَ وَجِئًا بِالطَّعَامِ ﴾ (۱) یعنی چه کله په دې موقع باندې رسول الله ﷺ د قبرستان نه واپس تشریف راوړلو نو د یو زنانه د طرف نه رسول الله ﷺ ته دعوت ورکونکې ملاؤ شو، پس رسول الله ﷺ هغه زنانه ته تشریف یووړو پس رسول الله ﷺ ته

(۱) د اهل بیت د طرف نه په ضیافت باندې اشکال او د هغې توجیه: په اکثر نسخو کښې داسې دی په مطبوعه کښې هم او قلمی کښې هم او دا روایت په مشکوٰۃ کښې هم دی په هغې کښې دا لفظ داسې دی ﴿داعی امراته﴾ ضمیر سره یعنی د هغه مری ښځې د کوم د دفن کولو نه پس چه رسول الله ﷺ واپس را روان وو لکه چه ملا علی قاری رحمه الله د دې شرح کړې ده، که دا لفظ داسې وی څنگه چه په مشکوٰۃ کښې دی نو بیا په دې باندې دا اشکال دی چه زمونږ فقهاء کرامو دا تصریح کړې ده د دې خبرې چه د اهل میت د طرف نه میلستیا ورکول جائز نه دی، ځکه چه ضیافت خو د یو خوشحالی په موقع باندې مشروع دی نه د غم او خفگان په موقع او د رسول الله ﷺ د دې میلستیا قبلول دا دلالت کوی د دې په جواز باندې، نو اول خو به د دې جواب هم دا ورکولې شی چه په مشکوٰۃ کښې دا روایت د ابوداؤد دی او دا ابوداؤد په یوه نسخه کښې هم په موجوده نسخو کښې ﴿داعی امراته﴾ نه دی، ثانیا دا کیدې شی چه دا واقعه د نهی نه د مخکښې وی، او دا هم وئیلې کیدې شی چه د رسول الله ﷺ دا عمل د بیان اجواز دپاره وو ځکه چه د اهل میت د طرف نه ضیافت مکروه دی حرام نه دی.

ډوډی کیخودلې شوه، خلقو خوراک شروع کړو، رسول الله ﷺ چه څنگه نمری اوچتولو سره په خوله کښې کیخودله خلقو اولیدل چه رسول الله ﷺ هغه نمری تیرولې نه شی، پس لږ ساعت پس رسول الله ﷺ اوفرمائیل داسې معلومیږي چه دا غوښه د هغه بیزي ده کومه چه د مالک د اجازت نه بغیر اخستلې شوي ده، چه کله هغه زنانه ته پته اولگیده چه رسول الله ﷺ هغه غوښه نه خوري نو هغې رسول الله ﷺ ته یو سرې د صورت حال د بیانولو دپاره راولیږلو چه یا رسول الله ﷺ ما نقیع یعنی د څارو منډی ته د بیزي د اخستلو دپاره سرې لیږلې وو خو هلته بیزه ملاؤ نه شوه په دې وجه ما خپل گاونډی کره سرې اولیږلو چا چه بیزه اخستلې وه چه هغه بیزه دې قیمه ما ته راکړی خو اتفاق سره هغه سرې په کور کښې نه وو، بیا ما د هغه ښځې ته هم په دې غرض باندې سرې ور اولیږلو هغې ماته دا غوښه راولیږله پس دا بیزه د هغه بیزي ده رسول الله ﷺ اوفرمائیل (اطعمیه الاساری) دا خوراک په قیدیانو باندې اوخړوه، یا خو په دې وجه چه هغوی اکثر غریبانان وی او یا په دې وجه لکه چه بعض شارحینو لیکلی دی چه هغوی کافران دی د هغوی په خوراک کولو کښې هیڅ باک نشته.

## بَابُ فِي أَكْلِ الرِّبَا وَمُوكِلِهِ

د سود خورونکي او ورکونکي بيان

د آکل نه مراد آخذ او د موکل نه مراد معطی، یعنی کوم انسان چه د چا نه د سود مال واخلی یا بل ته شي ورکړي (که هغه شي او خوري او که شي نه خوري).

[۳۳۳۳] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا سِمَاكٌ، حَدَّثَنِی عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: "لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَكِلَ الرِّبَا، وَمُوكِلَهُ، وَكَاتِبَهُ".

دابن مسعود رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ لعنت وئیلی دی په سود خورونکي او په سود ورکونکي او په سود باندې گواهي کونکي باندې او په سود لیکونکي باندې. قوله: عن عبد الله بن مسعود قال لعن رسول الله - صلى الله عليه وسلم - آكل الربا وموكله وكاتبه.

امام نووی رحمه الله فرمائی چه په دې حدیث کښې تصریح ده، د دې خبرې چه د ربوی او سودی معاملې کتابت که هغه د اجرت سره وی یا بغیر د اجرت نه، هم دغه شان په دې قسم معامله کښې شهادت یعنی شاهد، جوړیدل حرام دی ځکه چه په دې کښې اعانت علی الباطل دې، والحديث اخرجه الترمذي وابن ماجة، واخرجه مسلم من حديث جابر بن عبد الله بقمه، ومن حديث علقمة عن عبد الله بن مسعود في آكل الربا وموكله فقط واخرج البخاري من حديث أبي جحيفة (حديثاً طويلاً وفيه ونهى عن) وآكل الربا وموكله، قاله المنذرى

(۱) صحيح مسلم / المساقات ۱۹ (۱۵۹۷)، سنن الترمذي / البيوع ۲ (۱۲۰۶)، سنن ابن ماجه / التجارات ۵۸ (۲۲۷۷)، (تحفة الأشراف: ۹۳۵۶)، وقد أخرجه: سنن النسائي / الطلاق ۱۳ (۳۴۴۵)، مسند احمد (۱/ ۳۹۲، ۳۹۴، ۴۰۲، ۴۵۳) (صحيح)



## بَابُ فِي وَضْعِ الرِّبَا د سود د معاف کولو بیان

[۳۳۴] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الْأَحْوِسِ، حَدَّثَنَا شَيْبُ بْنُ عُرْقَدَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حُجَّةِ الْوَدَاعِ، يَقُولُ: "أَلَا إِنَّ كُلَّ رِبَاٍّ مِنَ رِبَا الْجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوعٌ لَكُمْ رُقُوسٌ أَمْوَالِكُمْ، لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ، أَلَا وَإِنْ كُلُّ دَمٍ مِنَ دَمِ الْجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوعٌ، وَأَوَّلُ دَمٍ أَضْعُ مِنْهَا دَمُ الْحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، كَانَ مُسْتَرْضِعًا فِي بَنِي لَيْثٍ، فَقَتَلْتَهُ هَذَا، قَالَ: اللَّهُمَّ هَلْ بَلَغْتَ، قَالُوا: نَعَمْ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، قَالَ: اللَّهُمَّ اشْهَدْ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ."

سليمان بن عمرو د خپل پلار نه روایت کوي فرمائي چه د نبی ﷺ نه مې په حجة الوداع کښې اوریدلي وو چه فرمائیل ئې خبردار چه د جاهلیت دوخت خومره سود وو هغه ساقط (معاف) شو تاسو به صرف خپل اصل مال اخلئ نه به ظلم کوئ اونه به په تاسو ظلم کولې شی (مراد دادې چه نه به تاسو د چا نه سود اخلئ اونه به ستاسو نه څوک سود اخلې اود جاهلیت دوخت چه خومره وینه وه هغه معاف شوه او په دې ټولو وینو کښې د ټولونه مخکښې د حارث بن عبد المطلب وینه معاف کوم څوک چه د لیت قبیلې والا وو او پئ ئې خورل او هذیل قبیلې والا قتل کړې وو، اوبیاني درې پیري وویل ای پروردگاره ایاما پیغام ورسولو؟ صحابه کرامو عرض وکړو چه بیشکه او بیاني درې پیري وویل چه ای الله گواه شه.

(لَكُمْ رُقُوسٌ أَمْوَالِكُمْ) یعنی په تیرو سودی معاملاتو کښې چه کوم د سود پیسې باقی پاتې شوې دی هغه دې وانخستلې شی صرف راس المال دې وانخستلې شی (لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ) نه خو تاسو په بل باندې ظلم کوئ چه د سود باقی رقم واخلئ او نه دې په تاسو باندې ظلم او کړې شی چه اصل راس المال دې هم پوره وانخستلې شی، دواړه خبرې غلطې دی. (وَأَوَّلُ دَمٍ أَضْعُ مِنْهَا دَمُ الْحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ) دا روایت په کتاب الحج کښې تیر شوې دې هلته په یو روایت کښې خو دم د ربیعة بن الحارث، په ځانې ربیعة ابن الحارث دې، او په یو روایت کښې تیر شوې دی (دم ابن ربیعة بن الحارث) او هم دا صحیح دې، نو گویا دلته په روایت کښې دوه مضاف محذوف دی. والمحدث أخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجة..... وهذا مذکور فی حدیث جابر الطویل، وقد أخرجه مسلم وابوداؤد فی الحج، قاله المنذری

## بَابُ فِي كَرَاهِيَةِ الْيَمِينِ فِي الْبَيْعِ

په اخستلو خرڅولو کښې د قسم کولو د معافیت بیان

[۳۳۵] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَمْرٍو بْنِ السَّرْحِ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ. ۴ وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدَةُ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شَهَابٍ، قَالَ: قَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ: إِنَّ أَبَاهُ رِبَاٌّ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،

۱: سنن الترمذی للفتن ۱ (۱۲۵۹)، تفسیر القرآن ۱۰ (۳۰۸۷)، سنن ابن ماجة للمنسک ۶۶ (۳۰۵۵)، تحفة الأشراف: (۱۱۹۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۲۷۳، ۴۹۸) (صحیح)  
۲: صحیح البخاری للبیوع ۲۶ (۲۰۸۷)، صحیح مسلم للمساقاة ۲۷ (۱۶۰۶)، سنن النسائی للبیوع ۵ (۴۴۶۶)، تحفة الأشراف: (۱۳۳۲۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۲۴۲، ۲۴۳، ۴۱۳) (صحیح)

يَقُولُ: «الْحَلْفُ مَنْقَعَةٌ لِلسَّلْعَةِ، مَنْقَعَةٌ لِلْبَرْكَةِ»، قَالَ ابْنُ السَّرْحِ: لِلْكَسْبِ، وَقَالَ: عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چې د نبی صلی الله علیه و آله نه مې اوریدلي وو چې فرمائیل ئې قسم خوړل د کارو بار دپاره فائده وړکوي او برکت ختموي.

«الْحَلْفُ مَنْقَعَةٌ لِلسَّلْعَةِ مَنْقَعَةٌ لِلْبَرْكَةِ». و قَالَ ابْنُ السَّرْحِ «لِلْكَسْبِ» الحلف د حاء په فتح او د لام په کسري سره او سکون لام هم جائز دې قاله السندی علی النسائی قلت ويجوز فيه كسر الحاء مع سکون اللام كما تقدم مفصلاً في باب الحلف في آخر كتاب الفرائض » که قسم دروغ ژن دې نو بیا خو کراهه تحریمی دې او که رښتینې دې نو بیا مکروه دې په کراهه تنزیهی سره، یعنی د سوداگر په دروغه باندې قسم خوړل (ځکه چې د مسند احمد په روایت کښې «اليمين الكاذبة» دې) دا د سوداگر سامان لره روانونکې خو دې، خو برکت لره کمونکې دې، یا ختمونکې دې، منفقه د میم او فاء په فتحې سره په مینځ کښې نون ساکن دې، دا اخستلې شوې دې د نفاق بفتح النون نه «وهو الرواج ضد الكساد» او لفظ ممحقه په وزن د منفقه، او په دې کښې یو روایت د ضم میم او کسر د حاء هم دې، دا اخستلې شوې دې د محق نه په معنی د النقض او ابطال، مطلب ښکاره دې چې په دروغه قسم سره سامان خو اوڅی خرڅ شی خو په هغه تجارت کښې برکت نه وی.

### بَابُ فِي الرَّجْحَانِ فِي الْوُزْنِ وَالْوُزْنِ بِالْأَجْرِ

په مزدوری باندې د تول کولو بیان

یعنی بائع له پکار دی چې مبيع دې لږ زیات کړی او هم دغه شان مشتری له پکار دی چې ثمن دې درانه او تلې، یعنی په بیع مقایضه کښې یعنی په کوم صورت چې شراء بالسلعة وی.

[۳۳۳۱] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، حَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ قَيْسٍ، قَالَ: «جَلَبْتُ أَنَا وَمَخْرَفَةُ الْعَبْدِيِّ بَزًّا مِنْ هَجَرَ، فَأَتَيْنَاهُ بِهَ مَكَّةَ، فَجَاءَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَخْشًى، فَسَأَوْنَا بَسْرًا وَاوِيلَ، فَبِعْنَاهُ، وَتَمَرَجُلٌ يَزَنُ بِالْأَجْرِ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: زِنْ، وَأَرْجِحْ».

د سويد بن قيس نه روايت دې فرمائی چې ما او مخرمه عبدي د هجر مقام نه د کارو بار دپاره کپړه راوړه او مکې ته مو يوړل زمونږ سره نبی صلی الله علیه و آله پیدل راغې اوزمونږ سره ئې ديو پرتوگ قيمت برابر کړو مونږ ورباندې خرڅ کړو په دې وخت کښې يو سړی په مزدوری باندې تول کولو نبی صلی الله علیه و آله ورته او فرمائیل کله چې تول کوي نو درون تول کوه.

مضمون د حديث:

قوله: «عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ حَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ قَيْسٍ قَالَ جَلَبْتُ أَنَا وَمَخْرَفَةُ الْعَبْدِيُّ بَزًّا مِنْ هَجَرَ فَأَتَيْنَاهُ بِهَ مَكَّةَ» سويد بن قيس رضي الله عنه فرمائی چې زه او مخرفه العبدی رضي الله عنه د مقام هجر نه څه کپړې د تجارت دپاره اخستلو سره مکې مکرمې ته راغلو رسول الله صلی الله علیه و آله مونږ ته پياده تشریف

(۱) سنن الترمذي/اليبوع ۶۶ (۱۳۰۵)، سنن النسائي/اليبوع ۵۲ (۴۵۹۶)، سنن ابن ماجه/التجارات ۳۴ (۲۲۲۰)، اللباس ۱۲ (۳۵۷۹)، تحفة الأشراف: ۴۸۱۰، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۵۲/۴)، سنن الدارمي/اليبوع ۴۷ (۲۶۲۷) (صحيح)



راوړو او د یو پرتوګ نې مونږ سره بیع او کړه هغه مونږ په رسول الله ﷺ باندې خرڅ کړو، **«وَلَمْ يَزِنْ بِالْأَجْرِ»** یعنی هلته یو سړې موجود وو کوم چه به په اجرت باندې د خیزونو وزن کولو نو رسول الله ﷺ هغه ته او فرمائیل چه دا ثمن اوتله او درانه نې اوتله. په کوکب کښې لیکلې دی چه غالباً رسول الله ﷺ دا پرتوګ د یو وزنی خیز (سلعة) په بدله کښې اخستلې وی کوم چه هغوی وزن کولو سره بائع ته ورکړو، (ګینې که دا شراء بالثمن یعنی د درهم او دینار په ذریعه وی نو د دې د تللو څه ضرورت وو) **«هكذا فهمت من الكوكب فارجع اليه»** شراح لیکلې دی چه د دې حدیث نه معلومه شوه چه وزن بالاجر جائز دې بله دا چه د ثمن وزن د مشتری په ذمه دې لهذا د دې اجرت به هم په هغه باندې واجب وی او د دې بالمقابل د مبیع وزن یا کیل د بائع په ذمه دې **«فكذا اجرتة عليه»**

ایا د رسول الله ﷺ نه د پرتوګ اغوستل ثابت دې؟

په کوکب کښې دا هم دی چه د دې حدیث نه د رسول الله ﷺ پرتوګ اخستل ثابت شو خو د رسول الله ﷺ د دې اغوستل په هیڅ روایت کښې د دې تصریح نشته. آهد دې په حاشیه کښې حضرت شیخ د جمع الفوائد نه دا روایت نقل کړې دې **«عن ابی هريرة رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ انک لتلبس السراويل؟ قال اجل في السفر والحضر وبالليل والنهار، فاني امرت بالستر فلم اجد شيئا استر منه»** یعنی رسول الله ﷺ د ابو هريرة رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ په سوال باندې او فرمائیل چه او زه پرتوګ اچوم، په سفر او حضر کښې، او رسول الله ﷺ د سراویل تعریف او فرمائیلو چه په دې کښې ستر زیات دې (په نسبت د لنگ وغیره) حضرت شیخ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فرمائی چه سیوطی رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ د دې په سند باندې د ضعف حکم لگولې دې، او فی نفسه دا مسئله اختلافی ده چه د رسول الله ﷺ نه [د لنگ په ځای] پرتوګ اغوستل ثابت دی یا نه، یو جماعت د دې قائل دې، ابن قیم رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ هم د دوی نه دې، او یو جماعت د لبس نه انکار کړې دې. (کوکب ۱/۳۸)

[۳۳۲۷] (۱) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَيْرٍ، وَمُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، الْبَغَوِيُّ قُرَيْبٌ، قَالَا: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ أَبِي صَفْوَانَ بْنِ عُمَيْرَةَ، قَالَ: أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَكَّةَ قَبْلَ أَنْ يَهَاجِرَ بِهَذَا الْحَدِيثِ، وَلَمْ يَذْكُرْ: يَزِنْ بِالْأَجْرِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَاهُ قَيْسٌ، كَمَا قَالَ سَفِيَانٌ، وَالْقَوْلُ قَوْلُ سَفِيَانَ.

د ابوصفوان بن عميرة نه روایت دې فرمائی په مک کښې نبي ﷺ ته ورغلم مخکښې دهجرت کولونه اودتیر شوی روایت په شان روایت نې بیان کړولیکن په دې روایت کښې نې لفظ. یزن بالاجر، ذکر نکړو، امام ابوداود فرمائی چه په دې کښې سفیان د قیس په شان روایت کړې دې اود سفیان روایت ډیر درست دې.

**«عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ عَنْ أَبِي صَفْوَانَ بْنِ عُمَيْرَةَ قَالَ أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- بِمَكَّةَ قَبْلَ أَنْ يَهَاجِرَ بِهَذَا الْحَدِيثِ»**

شرح السند:

په رومبی حدیث کښې د سماک نه روایت کونکې سفیان وو او په دویم سند کښې د هغوی

(۱): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۴۸۱۰) (صحیح)

نه روایت کونکې..... شعبه دې په دواړو روایتونو کښې واضحه فرق دې، د سفیان په روایت کښې د پرتوګ بیع کونکې سویدین قیس دی او د هغوی سره محرفه هم شامل دی، او د شعبه په روایت کښې په خائې د سوید او مخرفه ابو صفوان دی.

﴿ قَالَ أَبُو دَاوُدَ زَوَّاهُ قَيْسٌ كَمَا قَالَ سُفْيَانُ وَالْقَوْلُ قَوْلُ سُفْيَانَ ﴾ امام ابو داؤد رحمته الله د سفیان متابع قیس لره بیانولو سره د سفیان روایت لره د شعبه په روایت باندې ترجیح ورکړې ده، هم دغه شان امام نسائی رحمته الله حدیث د سفیان لره اشبه بالصواب منلې دې، او د نسائی او د ابن ماجه په یو روایت کښې ﴿ سمعت مالکا ابا صفوان ﴾ دې چه د هغې نه معلومېږي چه سوید بن قیس او ابو صفوان دواړه کسان بیل بیل دی، د ابو صفوان نوم مالک دې، او په دې کښې د بعضو علماء کرامو رائې دا ده کوم چه حاکم کرايېسی او ابو عمر ابن عبدالبر نقل کړې دې چه د ابو صفوان سوید بن قیس کنیت دې. (بذل)

والحدیث اخرجه النسائی وابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۳۳۸] (١) حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي رَزْمَةَ، سَمِعْتُ أَبِي، يَقُولُ: قَالَ رَجُلٌ لِّشُعْبَةَ: خَالَفَكَ سُفْيَانُ، قَالَ: دَمَقْتَنِي، وَيَلْفَنِي عَنْ يَحْيَى بْنِ مَعِينٍ، قَالَ: كُلُّ مَنْ خَالَفَ سُفْيَانَ، فَالْقَوْلُ قَوْلُ سُفْيَانَ.

ابن ابی رزمه دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه یوکس شعبه ته او وئیل سفیان ستانه مخالف روایت بیان کړې دې شعبه ورته او وئیل زما دماغ دي وختل. ابو داود وائی چه ماته د یحیی بن معین نه رارسیدلي ده چه وئیلی ئې وو خوک چه د سفیان خلاف او کړي نواعتبار به د سفیان قول لره وي.

﴿ قَالَ رَجُلٌ لِّشُعْبَةَ خَالَفَكَ سُفْيَانُ. قَالَ دَمَقْتَنِي ﴾ یعنی یو سړی د حدیث د راوی شعبه بن الحجاج کوم چه په کبار محدثین کښې دې، هغوی ته دا اووې چه سفیان ستاسوپه فلانئ خبره کښې مخالفت کړې دې (یا خوهم دامخالفت کوم چه د حدیث الباب په سند کښې بیا موندلې شو، یا بل څه مخالفت) نو په دې باندې شعبه او فرمائیل چه تا دې جمله وئیلو سره (یعنی د سفیان د مخالفت کولو) زما سر مات کړو، په ظاهر کښې امام شعبه د سفیان ثوری رحمته الله مخالفت لره د هغوی د جلالت شان دوجي نه اهمیت ورکړو.

[۳۳۳۹] (٢) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا وَكَيْعٌ، عَنْ شُعْبَةَ، قَالَ: كَانَ سُفْيَانُ أَحْفَظَ مِنِّي.

شعبه وائی سفیان زما په نسبت باندې د ډیرې قوی حافظې والادې.  
قوله: ﴿ عَنْ شُعْبَةَ قَالَ كَانَ سُفْيَانُ أَحْفَظَ مِنِّي ﴾

د مصنف رحمته الله غرض خو د هغوی اقوال نقل کولو سره د سفیان روایت لره ترجیح ورکول دی لکه چه مصنف رحمته الله خپله فرمائیلی دی.

دویمه خبره چه کومه مونږ بیانول غواړو چه دا دواړه ډیر جلیل القدر محدثین دی، دې دواړو به خپل مینځ کښې د یو بل تعظیم او تکریم فرمائیلو، پس شعبه رحمته الله خپله

١: تفرد به ابو داود (صحیح)

٢: تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۸۰۸) (صحیح)



فرمائی چه سفیان زما نه احفظ دي، او د سفیان ثوري عليه السلام نه د شعبه په باره کښې منقول دی  
چه هغوی او فرمائیل «شعبة امیر المؤمنین فی الحديث» پس په تهذیب التهذیب کښې دی  
(وقال ابن مهدي كان الثوري يقول: شعبة امیر المؤمنین فی الحديث)

## باب فی قول النبی صلی الله علیه وسلم "المِکْيَالُ مِکْيَالُ الْمَدِينَةِ"

پیماننه د مدینې او تول د مکې معتبر دي

دا ترجمه بلفظ الحديث ده، د حدیث یو تکره ده پوره حدیث تحت الباب ذکر دي.

[۳۴۰] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ ذَكْيَانَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ حَنْظَلَةَ، عَنْ طَاوُسٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "الْوَزْنُ وَزْنُ أَهْلِ مَكَّةَ، وَالْمِکْيَالُ مِکْيَالُ أَهْلِ الْمَدِينَةِ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَكَذَلِكَ رَوَاهُ الْفَرَّايِيُّ، وَأَبُو أَحْمَدَ، عَنْ سُفْيَانَ، وَأَقْفَهْمَا فِي الْمَثْنِ، وَقَالَ أَبُو أَحْمَدَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، مَكَانَ ابْنِ عُمَرَ، وَرَوَاهُ الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ حَنْظَلَةَ، قَالَ: وَزْنُ الْمَدِينَةِ، وَمِکْيَالُ مَكَّةَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَاخْتَلَفَ فِي الْمَثْنِ فِي حَدِيثِ مَالِكِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فِي هَذَا.

د ابن عمر نه روایت دي فرمائی چه نبی عليه السلام فرمائیلى دی په تول کښې دمکې والا قول معتبر دي او په پیماننه کښې د مدینې والا قول معتبر دي، ابو داود وائی ابو احمد او فریابی هم داسې د سفیان نه روایت نقل کړې دي او په متن کښې ورسره موافقت کړې دي ابو احمد د ابن عمر په ځانې باندې ابن عباس ذکر کړې دي، ولید د حنظله نه ددې روایت په نقل کولو سره وئیلی دی چه د مدینې وزن او دمکې تول معتبر دي. امام ابو داود فرمائی چه په حدیث د مالک بن دینار کښې د عطاء نه او هغه د نبی عليه السلام نه ددې په متن کښې اختلاف دي.  
قوله: «الْوَزْنُ وَزْنُ أَهْلِ مَكَّةَ وَالْمِکْيَالُ مِکْيَالُ أَهْلِ الْمَدِينَةِ» د حدیث مطلب دا دي چه په احکام شرعيه کښې یعنی زکوۍ صدقه الفطر او کفاراتو کښې خو وزن معتبر دي د اهل مکه او کیل معتبر دي د اهل مدینه، دراهم و دنانیر دا د موزوناتو نه دی او د زمکې پیداوار غلې دا د مکیلاتو نه دی، او په ظاهر کښې د دې وجه دا ده چه اهل مکه اصحاب تجارت وو چه د هغوی لین دین او معاملات به زیات تر په دراهم او دنانیر باندې وو، او اهل مدینه اصحاب زراعت وو چه د هغوی معاملات زیات تر په مکیال (پیماننه) یعنی مد او صاع وغیره باندې کیدې، امام خطابي عليه السلام فرمائی چه دراهم په اصل کښې مختلف الاوزان وی د مختلفو ښهرونو په اعتبار سره، او د اهل مدینه تعامل چه کله رسول الله عليه السلام مدینې طیبې ته هجرت فرمائیلو سره تشریف راوړو په دراهم سره وو په اعتبار د عدد او چونکه دراهم لکه چه اوس مخکښې تیر شو مختلفه الاوزان وی په دې وجه رسول الله عليه السلام په دې حدیث کښې د اهل مدینه توجه دي طرف ته راوسته چه هغوی دي په درهم او دنانیر کښې د اهل مکه د وزن اعتبار کوی. او د اهل مکه درهم وزن د سبعة وی یعنی هر لس درهمه د اووه مثقالو برابر وو، لهذا د چا په ملک کښې چه دوه سوه درهمه د وزن سبعة په اعتبار سره موجود وی هغه به صاحب نصاب وی او په هغه باندې به زکوۍ واجب وی، د وزن سبعة او وزن ستة ذکر په کتاب الزکوۍ کښې تیر شوي دي. (والحدیث أخرجه النسائي، قاله المنذري)

۱: سنن النسائي للزكاة ۴۴ (۲۵۲۱)، البيوع ۵۴ (۴۵۹۸)، (تحفة الأشراف: ۷۱۰۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۴۵/۲) (صحيح)

قَالَ أَبُو دَاوُدَ وَكَذَا رَوَاهُ الْفَرِيبِيُّ وَأَبُو أَحْمَدَ عَنْ سُفْيَانَ وَافَقَهُمَا فِي الْمَعْنَى وَقَالَ أَبُو أَحْمَدَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ مَكَانَ ابْنِ عُمَرَ وَرَوَاهُ الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ عَنْ حَنْظَلَةَ قَالَ « وَزَنُ الْمَدِينَةِ وَمَكِّيَالُ مَكَّةَ »  
 د دې حديث مدار په حنظله باندې دې، د حنظله نه روایت کونکي د امام ابوداؤد رحمته الله د کلام مطابق دوه دی سفیان او ولید بن مسلم، او بیا د سفیان نه روایت کونکي د هغوی درې شاگردان دی، ابن دکین، فریبی، ابو احمد، د دوی درې وارو روایت د متن په اعتبار سره خو متفق دې یعنی وزن مکه او مکيال مدینه، خو په سند کښې دا درې واره مختلف دی په دریو کښې دوه یعنی ابن دکین او فریبی دې درې وارو د حديث راوی ابن عمر رحمهما الله منلې دې، او ابو احمد ابن عباس رحمهما الله.

او ولید بن مسلم دسفیان مخالفت کړې دې په متن د حديث کښ، هغه متن اولته کړو او وې وئیل « وزن المدينة ومکيال مکه » او د دې نه روستو مصنف رحمته الله د یو روایت حواله ورکوی یعنی مرسل د عطاء او د هغې په باره کښې دا فرمائی چه په دې روایت کښ، یعنی د مالک بن دینار په روایت کښې هم متن مختلف دې.

د دې روایت په متن کښې مصنف رحمته الله کافی اختلاف د روایاتو ذکر کړې دې او بیا ئې یو طریق ته هم د ترجیح اشاره نه ده فرمائیلې اللهم الا ان یقال چه هغوی اوس نزدې د دې باب نه مخکښې د یحیی بن معین رحمته الله دامقوله لیکلې ده. « کل من خالف سفیان فالقول قول سفیان » لهذا د سفیان د روایت متن به راجح وی. والله تعالی اعلم.

امام نسائی رحمته الله دا حديث صرف په یو طریق باندې « باب کم الصاع » د لاندې ذکر کړې دې، « قال ابو عبد الرحمن وحدثني زياد بن ايوب واحمد بن سليمان قالا حدثنا ابو نعيم قال حدثنا سفیان عن حنظلة عن طاؤس عن ابن عمر رحمهما الله عن النبي صلى الله عليه وسلم قال : المكيال مكيال اهل المدينة والوزن وزن اهل مكة »

## باب في التشديد في الدين

د قرض په اخستلو وعيد او د دې د ادا کولو د تاکید بیان

[۳۳۴۱] (۱) حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا أَبُو الْأَخْوَصِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ مَسْرُوقٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ سَمْعَانَ، عَنْ سَمُرَةَ، قَالَ: «خَطَبَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: "هَاهُنَا أَحَدٌ مِنْ بَنِي فَلَانٍ؟ فَلَمْ يُجِبْهُ أَحَدٌ، ثُمَّ قَالَ: هَاهُنَا أَحَدٌ مِنْ بَنِي فَلَانٍ؟ فَلَمْ يُجِبْهُ أَحَدٌ، ثُمَّ قَالَ: هَاهُنَا أَحَدٌ مِنْ بَنِي فَلَانٍ؟ فَقَامَ رَجُلٌ، فَقَالَ: أَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَقَالَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مَنَعَكَ أَنْ تُجِيبَنِي فِي الْمَرَّتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ؟ أَمَا لِي لَمْ أَتَوْهُ بِكُمْ إِلَّا خَيْرًا، إِنْ صَاحِبَكُمْ مَا سُوِّدَ بَيْنَهُ، فَلَقَدْ رَأَيْتُهُ أَدَّى عَنْهُ، حَتَّى مَاقِيَ أَحَدًا يَطْلُبُهُ بَشِيءٌ" قَالَ أَبُو دَاوُدَ: سَمْعَانُ بْنُ مُشْتَجٍ.

د سمره رحمته الله نه روایت دې فرمائی چه نبی صلى الله عليه وسلم مونږ ته خطبه را کړه او وئې فرمائیل ایادلته د فلاني قوم څوک شته نوچا جواب ورنکړو، بیا ئې او فرمائیل ایادلته د فلاني قوم څوک شته نوچا جواب ورنکړو، بیا ئې او فرمائیل ایادلته د فلاني قوم څوک شته نو یوکس پاخیدو او وئې وئیل زه موجود یم ای د الله رسوله نبی صلى الله عليه وسلم ورته و فرمائیل څه شي منع کړې وي چه



دوه ځله دي جواب رانکړو زه ستاسو سره خيرخواهي کول غواړم بيانيې ﷺ او فرمائي په تاسو کښې فلانې کس په قرض کښې ډوب دې سمره په اووئيل چه دغه کس هغه قرض ادا کړو تردې چه هيڅوک قرض غوښتلو والا پاتې نه شول.

« عَنْ سَمُرَةَ قَالَتْ خَطَبَنَا رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- فَقَالَ « مَا هُنَا أَحَدٌ مِنْ بَنِي فُلَانٍ ». فَلَمْ يُجِبْهُ أَحَدٌ..... فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ أَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ. فَقَالَ -صلى الله عليه وسلم- « مَا مَنَعَكَ أَنْ تُجِيبَنِي فِي الْمَرْثَيْنِ الْأُولَيْنِ أَمَا إِنِّي لَمْ أَنْوِّدْ بِكُمْ إِلَّا خَيْرًا »

د سيدنا سمره رضي الله عنه نه روايت دې چه يو كرت رسول الله ﷺ مونږ ته خطاب وفرمائيلو او په هغې كښې هغوی د يو قبيلې نوم اخستلو سره دا تپوس او كړو چه د هغه قبيلې دلته څوك فرد موجود شته؟ په دې باندې چا هم څه او نه وئيل، رسول الله ﷺ دويم كرت او بيا دريم كرت هم دا تپوس او كړو؟ دريم كرت باندې يو سړې اودريدو او هغه عرض او كړو زه يم يا رسول الله ﷺ رسول الله ﷺ او فرمائيل په رومي او دويم كرت دې جواب ولي نه وو راكړې، بيشكه ما تا سره ښه خبره كول غوښتل (هغه دا) چه ستاسو يو ملگرې په قبر كښې د قرض د وجې نه نيولې شوې او مقيد دې، وړاندې راوی وائی چه ما او كتل چه دهغه په ذمه څومره هم قرض وو هغه ادا كړې شو. والحديث اخرجه النسائي، قاله المنذرى

[۳۳:۲۲] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمَهْرِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا عَبْدِ اللَّهِ الْقُرَشِيَّ، يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا بَرْدَةَ بْنَ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيَّ، يَقُولُ: عَنْ أَبِيهِ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهُ قَالَ: "إِنَّ أَعْظَمَ الذُّنُوبِ عِنْدَ اللَّهِ، أَنْ يَلْقَاكَ بِمَا عَبْدٌ بَعْدَ الْكِبَايَرِ الَّتِي نَهَى اللَّهُ عَنْهَا، أَنْ يَمُوتَ رَجُلٌ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ، لَا يَدْعُهُ قَضَاءٌ".

ابو بردة بن ابوموسی الاشعری نه د خپل پلارند روايت کوی فرمائي چه نبی ﷺ فرمائيلى دی يقينا دكبيره گناهونونه پس دالله په نزد كښې دتولونه لويه گناه داده چه انسان ددې گناه سره دالله تعالى ملاقات او كړي دكوي نه چه الله تعالى منع فرمائيلى وي يعنى يوسړې دقرض په حالت كښې مړشي اودقرض دادا كولو دپاره ئې څه پريڅې نه وى

#### شرح الحديث:

ابو موسى اشعري رضي الله عنه د رسول الله ﷺ ارشاد نقل کوی چه بيشكه په گناهونو كښې د تولو نه لويه گناه د كومي سره چه بنده د الله پاك سره ملاقات كوی چه يو سړې مړ شي او د هغه په ذمه قرض وى چه د هغې د ادا كولو دپاره ئې څه مال نه وى پريخودلې

د دې حديث په شرح كښې علامه طيبي رحمه الله فرمائي چه كه يو انسان داسې اوآنى چه د حقوق الله بڼا په مصالحت او مسامحت باندې ده په خلاف د حقوق العباد چه د هغوی مسئله سخته ده لكه چه په دې حديث كښې تير شو « يغفر كل ذنب الشهيد الا الدين » او په دې حديث كښې دين لره د كبانرو نه پس كيخودلې شوې دې، د دې سوال جواب علامه طيبي داور كړې دې چه هغه چه په حديث كښې تير شو چه د شهيد تول گناهونه معاف كيږي سوا د قرض نه هغه خلقو لره د قرض نه د بچ كولو دپاره او د ويړولو دپاره دې په طريقه د

(۱) : تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۹۱۳۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۹۲/۴) (ضعيف)

مبالغې او دا حدیث په خپل ظاهر باندې دې، طبیی بیا یو بل سوال قائم کړې دې چه که څوک اوآنی چه نفس دین خو معصیت نه دې بلکه هغه خو مندوب آلیه دې پاتې لا دا چه گناه وی، بلکه د دې گناه کیدل د یو عارض د وجې نه دی هغه دا چه دین د حقوق الناس د اضاعت سبب جوړیږي، په خلاف د کبائرو چه هغه فی حد ذاتها ممنوع او قبیح دی. آه عزیزې شارح د جامع الصغیر فرمائی چه په دې حدیث کښې چه کوم وعید دې په دین باندې هغه په هغه صورت باندې محمول دې چه کله مديون د هغې په ادا کولو کښې کوتاهی کوی (یعنی د دین په ادا کولو کښې مستعد نه وی) یا په هغه صورت باندې محمول دې چه دین د یو معصیت دپاره وی. (بذل)

[۳۴۳] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُتَوَكِّلِ الْعَسْقَلَانِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: "كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يُصَلِّي عَلَى رَجُلٍ مَاتَ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ، فَأَتَيْتُ بِمِيتٍ، فَقَالَ: أَعَلَيْهِ دَيْنٌ؟ قَالُوا: نَعَمْ، دِينَارَانِ، قَالَ: صَلُّوا عَلَى صَاحِبِكُمْ، فَقَالَ أَبُو قَتَادَةَ الْأَنْصَارِيُّ: هُمَا عَلَى يَأْ رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: فَصَلَّى عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَلَمَّا فَتَحَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: أَنَا أَوَّلُ بِكُلِّ مُؤْمِنٍ مِنْ نَفْسِهِ، فَمَنْ تَرَكَ دِينًا، فَعَلَى قَضَاؤُهُ، وَمَنْ تَرَكَ مَالًا، فَلِوَرَثَتِهِ"،

د جابر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی کله چه به مقروض مړ شو نو نبی صلی الله علیه و آله به ورباندې جنازه نه کوله یوځل ورته یوه جنازه راوړل شوه صحابه کرامو ته ئې اوفرمائیل ایا په ده باندې د جاقرض شته؟ عرض اوکړې شو چه هو په ده باندې وه دیناره دي نبی صلی الله علیه و آله اوفرمائیل تاسوپه دې خپل ملگري باندې د جنازي مونځ اوکړئ، په دې وخت کښې ابوقتاده انصاري عرض اوکړو چه ای دالله رسوله دغه دوه دیناره زما په ذمه شو اوزه به ئې اداکوم نویا ورباندې نبی صلی الله علیه و آله جنازه اوکړه بیاچه کله الله تعالی خپل نبی ته د فتوحاتو دروازه پرانستله نووئې فرمائیل زه په مومنانو باندې دهغوی دځانونونه هم زیات حقداریم هرڅوک چه دمقروض کیدو په حالت کښې مړ شي نودهغه قرض ادا کول زما په ذمه دي او څوک چه مال پریږدي او مړ شي نودغه مال دده دوارثانو دې (زما ورسره څه کارنشته اودده مال به دده وارثان حاصله وي.

قوله: (عَنْ جَابِرٍ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يُصَلِّي عَلَى رَجُلٍ مَاتَ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ الْخ) یعنی د رسول الله صلی الله علیه و آله معمول وو چه کوم انسان باندې به قرض وو او مړ به شو نو رسول الله صلی الله علیه و آله به پرې جنازه نه فرمائیل، یو کرت یو مړې راوړې شو رسول الله صلی الله علیه و آله تپوس اوکړو چه په ده باندې قرض خو نشته؟ خلقو عرض اوکړو چه په ده باندې دوه دیناره قرض دې، رسول الله صلی الله علیه و آله اوفرمائیل (صلوا علی صاحبکم) چه د ده د جنازي مونځ تاسو اوکړئ زه ئې نه کوم، په دې باندې ابوقتاده رضي الله عنه عرض اوکړو (هما علی یا رسول الله صلی الله علیه و آله) چه د هغه دینارونو د ادا کولو ذمه داری زه اخلم په دې خبره باندې رسول الله صلی الله علیه و آله په هغه باندې مونځ اوکړو. د دې نه پس جابر رضي الله عنه فرمائی چه د رسول الله صلی الله علیه و آله دا معمول په شروع کښې وو د فتوحاتو د زمانې نه مخکښې د فتوحاتو نه پس د رسول الله صلی الله علیه و آله دا معمول شوې وو چه رسول الله صلی الله علیه و آله



به فرمائیل « اَنَا أَوْلَى بِكُلِّ مُؤْمِنٍ مِنْ نَفْسِهِ » د دې جملې مطلب مونږ سره مخکښې په کتاب الفرائض کښې تیر شوې دې، یعنی دا چه زه هر مومن ته د هغه د نفس نه زیات نزدې یم او وې فرمائیل چه کوم انسان قرض دارې مړ شی نو د هغې قضاء زما په ذمه ده او کوم مال چه پرېږدی هغه د هغه د وارثانو دپاره دې، په دې حدیث کښې د اداء دین عن المیت مسئله ده په دې باندې کلام وړاندې را روان دې.

والحدیث أخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

[۳۳۴۴] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ شَرِيكَ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ عِكْرَمَةَ، رَفَعَهُ، قَالَ عُثْمَانُ، وَحَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ شَرِيكَ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، مِثْلَهُ، قَالَ: اشْتَرَى مِنْ غَيْرِ تَبِيعًا، وَلَيْسَ عِنْدَهُ ثَمَنُهُ، فَأَرْبَعُ فِيهِ، فَبَاعَهُ، فَتَصَدَّقَ بِالرَّابِعِ عَلَى أَرَامِلٍ بَيْنِي عَبْدُ الْمُطَّلِبِ، وَقَالَ: لَا أَشْتَرِي بَعْدَهَا شَيْئًا إِلَّا وَعِنْدِي ثَمَنُهُ.

عکرمه د ابن عباس رضی اللہ عنہ د تیر شوي روایت په شان روایت کوی مگر د دې اضافي سره چه نبی ﷺ د یوې قافلي نه څه شي واخستو او د هغه څیز قیمت ورسره نه وو او بیا ئې خرڅ کړو او منافع ئې په کښې وکړله او څه منافع چه وشوله هغه ئې د بنی عبدالمطلب کونډو او غریبانو ته ورکړه او وئې فرمائیل په ائنده کښې به بیا څه شي نه اخلم ترڅو چه زما سره د هغه قیمت موجود نه وی.

قوله: «عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - مِثْلَهُ قَالَ اشْتَرَى مِنْ غَيْرِ تَبِيعًا وَلَيْسَ عِنْدَهُ ثَمَنُهُ فَأَرْبَعُ فِيهِ الْخ» یعنی یو کړت رسول الله ﷺ د بهر نه راتلونکې قافلي نه یو څیز واخستلو چه د هغې ثمن هغوی سره هغه وخت نه وو. یعنی هغه څیز رسول الله ﷺ قرض واخستلو، د هغې نه پس رسول الله ﷺ هغه خرڅ کړو نو هغوی ته پکښې نفع اوشوه نو رسول الله ﷺ دا گټه د خپل خاندان په کنډو زنانو باندې صدقه کړه او دا ئې هم او فرمائیل چه بیا به زه هیڅ یو څیز قرض نه اخلم.

### صححة الكفالة عن المية كښې اختلاف د ائمة :

په دې حدیث کښې دا دی چه د مړی په ذمه چه کوم دینار وو د هغې ذمه دارې ابو قتادة رضی اللہ عنہ واخستله، گویا هغه کفیل شو د مړی د طرف نه، لهذا د دې نه معلومه شوه چه د غریب مړی د طرف نه کفالت صحیح دې، د ائمه ثلاثه او صاحبینو هم دا مذهب خو هم دا دې، خو امام ابوحنیفه رضی اللہ عنہ د دې کفالت د صحت قائل نه دې، ځکه چه د کفالت حقیقت دې «ضم ضمة الاصل الی ذمة الکفیل فی المطالبة» پس د کفالت نه پس مکفول له ته حق وی چه هغه مطالبه د اصل یعنی اصل مدیون نه او کړی یا د هغه د کفیل نه، او دلته د اصل د مرگ د وجې نه ذمة الاصل فنا شوه، چه کله هغه فنا شوه «فکيف ضم ضمة الی ذمة» هم د دې وجې نه په هدایه کښې د امام صاحب په دلیل کښې لیکلې شوې دی چه دا کفالت بدین ساقط دې، ځکه چه هر کله د دین محل باقی پاتې نه شو نو دین هم باقی پاتې نه شو، په دې وجه دا

۱: تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۶۱۱۳، ۱۹۱۱۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۳۵/۱، ۲۲۳) (ضعیف)

کفالت صحیح نه دي، او د دې حديث جواب دا کيدې شي چه دا کفالت اصطلاحيه نه دي بلکه د هغه مرصحابی د طرف نه د اداء دين وعده ده، او دا هم ممکنه ده چه ابو قتاده رضي الله عنه چه څه او فرمائيل هما علی په دې سره اشاره کفالت سابقه طرف ته وی چه هغه خو ما پخپله ذمه باندې اخستلي دي، زه د اول نه د هغه کفيل یم. (بذل عن القاری)

## باب فی المَظْلَم

د قرض په ادا کولو کښې د تاخیر کولو بیان

[۳۴۵] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الْأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَظْلُ الْغَنِيِّ ظَلَمٌ، وَإِذَا أَتَيْتُمْ أَحَدَكُمْ عَلَى مَلِيٍّ، فَلْيَتَّبِعْ".

د ابو هريره نه روايت دي فرمائي چه رسول الله و فرمائيلي دي د دولت مند سړي دپاره د قرض په ادا کولو کښې تاخير کول ظلم دي، که چرې تا سوته په مالدار باندې د چا حواله ورکړي شي نو هغه لره پکار دي چه حواله قبوله کړي.

قوله: «مَظْلُ الْغَنِيِّ ظَلَمٌ وَإِذَا أَتَيْتُمْ أَحَدَكُمْ عَلَى مَلِيٍّ فَلْيَتَّبِعْ» يعنى د مالدار سړي د قرض په ادا کولو کښې تسوييف او تاخير کول ظلم دي، چه کله هغه د خپل غناء د وجي نه فى الحال د قرض په ادا کولو باندې قادر دي د هغې باوجود د هغه د دين په ادا کولو کښې تاخير کول ظلم دي، د دې حديث هم دا معنى متبادر او مشهوره ده او په دې صورت کښې به د مظل اضافت د فاعل طرف ته وي، او ما د خپل استاد محترم حضرت مولانا اسعد الله صاحب رحمته الله نه واوريدل هغوى فرمائيل چه په دې کښې دا هم احتمال دي چه د مظل اضافت د مفعول طرف ته وي، يعنى د مديون تاخير کول د مالداره د ائن سره دا ظلم دي يعنى چه قرض دارې د قرض په ادا کولو کښې په دې وجه باندې تاخير کوي چه د هغه قرض غوښتونکې مالدار دي يعنى په دې سوچ چه هغه خو مالدار دي د هغه څه تادی ده بيا به ئې چرته ورکړو.

هم د دې حديث په باره کښې ما د استاد موصوف نه دا هم واوريدل چه د حضرت تهانوى په خلفاء کښې وو چه ما د تهانوى په مجلس کښې د ټولو نه رومبې حديث چه د حضرت د ژبي نه واوريدلو هغه هم دا حديث دي. (مظل الغنى ظلم)

وراندې په دې حديث کښې دي چه که مديون د خپل دين حواله په يو مالدار انسان باندې اوکړي نو بيا د ائن لره هغه حواله قبولول پکار دي او بيا د هم هغه محال عليه نه طلب کول پکار دي، وهذا الامر قيل للنذب وقيل للوجوب.

(ملي) دوه طريقو سره ضبط کړې شوې دي ملي بتشديد الياء بدون الهمزة كفى لفظا ومعنى، او ملي به سکون د ياء او همزي سره، والحديث أخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجة، قاله المنذرى

۱: صحيح البخاري/الحوالة ۱ (۲۲۸۸)، ۲ (۲۲۸۹)، والاستقراض ۱۲ (۲۴۰۰)، صحيح مسلم/المساقاة ۷ (۱۵۶۴)، سنن النسائي/اليبوع ۹۹ (۴۶۹۵)، (تحفة الأشراف: ۱۳۶۹۳، ۱۳۸۰۳)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/اليبوع ۶۸ (۱۳۰۸)، سنن ابن ماجة/الصدقات ۸ (۲۴۰۳)، موطا امام مالك/اليبوع ۴۰ (۸۴)، مسند احمد (۲/۲۴۵، ۲۵۴، ۲۶۰، ۳۱۵، ۳۷۷، ۳۸۰، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵)، سنن الدارمي/اليبوع ۴۸ (۲۶۲۸) (صحيح)



## باب فِي حُسْنِ الْقَضَاءِ

### په ښه شان سره د قرض د ادا کولو بیان

[۳۴۶] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، قَالَ: "اسْتَسْلَفَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَكْرًا، فَجَاءَتْهُ إِيْلَ مِنَ الصَّدَقَةِ، فَأَمَرَنِي أَنْ أَقْضِيَ الرَّجُلَ بَكْرَةً، فَقُلْتُ: لَمْ أَجِدْ فِي الرَّبْلِ إِلَّا جَمَلًا خِيَارًا رِبَاعِيًّا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَعْطِهِ إِيَّاهُ، فَإِنَّ خِيَارَ النَّاسِ أَحْسَنُهُمْ قَضَاءً."

د ابورافع رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله یو وړوکی اوښ په قرض واخستو بیا چې کله ورته د صدقې اوښان راغلل نو نبی صلی الله علیه و آله حکم اوکړو چې دهغه په شان اوښ دي ورکړې شي ماعرض اوکړو اي دالله رسوله د صدقې اوښان خو ټول شپږ کلن اوښه برابر برابر اوښان دي، نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل هم ددې اوښانونه ورته یو اوښ ورکړه ځکه چې بهترین په خلقو کښې هغه څوک وي څوک چې قرض په ښه شان سره ادا کوي.

﴿عَنْ أَبِي رَافِعٍ قَالَ اسْتَسْلَفَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- بَكْرًا فَجَاءَتْهُ إِيْلَ مِنَ الصَّدَقَةِ﴾

سیدنا ابو رافع رضي الله عنه فرمائی چې یو کړت رسول الله صلی الله علیه و آله د یو سړی نه ځوان نر اوښ قرض واخستلو، (او که ښځه وی نو هغې ته قلوص وائی) خو ورځې پس رسول الله صلی الله علیه و آله ته د صدقې اوښان راغلل نو هغوی ماته حکم اوکړو د ادا کولو د قرض نو ما عرض اوکړو چې په دې اوښانو کښې چې د کوم عمر اوښ رسول الله صلی الله علیه و آله اخستلې وو هغه خو نشته بلکه ډیر ښه او دهغې نه د زیات عمر دې (رباعی یعنی کوم اوښ چې د شپږو کالو کیدو سره په اووم کښې داخل شي) رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل هم هغه ورکړه، ځکه چې په خلقو کښې غوره انسان هغه دي چې د بل حق په بهرینه طریقه باندې ادا کوي.

د دې حدیث نه شارحینو ډیرې فائدې او مسائل مستنبط کړي دي کومې چې په بذل کښې ذکر شوې دي، د هغه ټولو نه یو مشهوره اختلافی مسئله ده ﴿استقراض الحيوان﴾، امام نووی رحمته الله علیه فرمائی دا حدیث دلیل دې د دې خبرې چې حیوان لره د قرض په طور اخستل او ورکول جائز دی او هم دا مذهب دې د امام مالک و شافعی او د جمهور علماء کرامو، الی آخر ما ذکر فی البذل، د احنافو او حنابلې په نزد استقراض الحيوان جائز نه دي، د هغوی په نزد د دې دلیل دا دي کوم چې وړاندې په باب بیع الحيوان بالحيوان نسیئة کښې را روان دي کوم چې به مونږ هم هلته بیانوو ان شاء الله. په دې حدیث باندې یو اشکال او جواب دې هغه دا چې رسول الله صلی الله علیه و آله مقرض ته د هغه د حق واجب نه په طور د حسن قضاء زیات ورکړو. دا زیاتې ورکول که د خپل مال نه وي نو بیا خو صحیح وه دا رسول الله صلی الله علیه و آله د صدقې د اوښانو نه ورکړې دي کوم چې د بیت المال دی، د دې جواب دا ورکړې شوې دي چې دا استقراض د رسول الله صلی الله علیه و آله د خپل ضرورت دپاره وو بیا چې کله په بیت المال کښې اوښان راغلل نو رسول الله صلی الله علیه و آله په هغې کښې یو اوښ اخستلو سره په قرض کښې ورکړو نو هیڅ

۱: صحیح مسلم للیبوع ۴۳ (۱۶۰۰)، سنن الترمذی للیبوع ۷۵ (۱۳۱۸)، سنن النسائی للیبوع ۶۲ (۶۲۱)، سنن ابن ماجه للتجارا ۶۲ (۲۲۸۵)، (تحفة الأشراف: ۱۲۰۲۵)، وقد أخرجه: موطا امام مالك للیبوع ۴۳ (۸۹)، مسند احمد (۲۶۰۷/۳۱) (صحیح)

اشکال نشته او یو توجیح په دې کښې دا کړې شوې ده چه د کوم انسان نه ئې قرض اخستلې وو هغه خپله د اهل ضرورت نه وو او د اهل ضرورت حق په بیت المال کښې وی. (بذل)

والحدیث اخرجه مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجة، قاله المنذری

[۳۳۴۷] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ مُخَارِبِ بْنِ دَثَارٍ، قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "كَانَ لِي عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَيْنٌ، فَقَضَانِي وَزَادَنِي".

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه په نبی صلی الله علیه و آله باندې زما قرض وو، زما قرض ئې هم هغه هومره ادا کړو اوڅه ئې ورسره زیاتې هم راکړل.

(كَانَ لِي عَلَى النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - دَيْنٌ فَقَضَانِي وَزَادَنِي) په دې باندې شارحینو لیکلی دی چه مستقرض د قرض د ادا کولو په وخت، چه کوم قرض اخستلې وو که د هغې نه احسن او اکثر ادا کړی په دې شرط چه دا زیادت بغیر د څه شرط او معاهدې وی نو ورکونکې به محسن وی او د مقروض دپاره به د هغې اخستل جائز وی، امام نووی رحمته الله علیه فرمائی چه د مقروض دپاره زیادت اخستل جائز دی که هغه زیادت د صفت په اعتبار سره وی یا د عدد په اعتبار سره، او د امام مالک رحمته الله علیه په مذهب کښې دا زیادت فی العدد ممنوع دې او زمونږ دلیل د رسول الله صلی الله علیه و آله دا حدیث دې (خير الناس احسنهم قضاء) د خپل عموم د وجې نه. والحدیث اخرجه النسائی، قاله المنذری

## بَابُ فِي الصَّرْفِ

د بیع صرف بیان

د بیع الصرف تعریف او حکم :

بیع الصرف هغه بیع ده چه په هغې کښې عوضین یعنی عوض او معوض من جنس الاثمان وی، لکه سره او سپین زر، د صرف لغوی معنی ده نقل، چونکه په دې بیع کښې د بدلینو نه هریو دبل طرف ته نقل کول فوراً ضروری وی په دې وجه ددې نوم بیع الصرف کیخودلې شو. ځان پوهه کړه چه د بیع الصرف د صحت دپاره دوه شرطونه دی عدم النسيئة مطلقاً، او عدم تفاضل په صورة د اتحاد الجنس یعنی د عدم نسيئة حکم خو په هر حال کښې دې که دواړه متحد الجنس وی یا مختلف الجنس، په دې بیع کښې قرض خو مطلقاً ناجائز دې تقابض فی المجلس ضروری دې او په حکم ثانی کښې یعنی عدم تفاضل دا هغه وخت دې چه کله عوضین متحد الجنس وی مثلاً دواړه فضه وی یا ذهب، او که د جنس اتحاد نه وی لکه یو طرف ته فضه او دویم طرف ته ذهب نو په دې صورت کښې تفاضل جائز دې، په دې دواړو کښې رومبې حکم یعنی د عدم النسيئة قرض اخستل ناجائز کیدل دا اجماعی مسئله ده.

(۱) : صحيح البخاري/ الصلاة ٥٩ (٤٤٣)، والوكالة ٨ (٢٣٠٩)، والاستقراض ٧ (٢٣٩٤)، والهبه ٣٢ (٣٦٠٣)، صحيح مسلم/ المسافرين ١١ (٧١٥)، سنن النسائي/ البيوع ٥١ (٤٥٩٤)، (تحفة الأشراف: ٢٥٧٨)، وقد أخرجه: مسند احمد (٢٩٩٣، ٣٠٢، ٣١٩، ٣٦٣) (صحيح)



### د ربا الفضل په عدم جواز کښې د بعض صحابه کرامو رضی الله عنہم اختلاف :

او حکم ثانی یعنی عدم تفاضل فی صورة الاتحاد په دې کښې د جمهور علماء کرامو او ائمه اربعه مسلک خو هم دا دې، خو د بعض صحابه کرامو رضی الله عنہم لکه ابن عمر او ابن عباس رضی الله عنہما په دې دواړو کښې د ابن عمر رضی الله عنہ رجوع خو ثابت ده چه هغوی د جمهورو مسلک ته رجوع کړې وه، خو د ابن عباس رضی الله عنہ په رجوع کښې اختلاف دې بعض وائی هغوی هم رجوع کړې وه او بعضو د هغوی د رجوع نفی کړې ده خو صحیح دا ده چه د ابن عباس رضی الله عنہ نه هم په دې کښې رجوع ثابت ده وهو الذی اختاره النووی فی شرح مسلم ۲/۲۷۷ دې دواړو حضراتو استدلال په شروع کښې د اسامة رضی الله عنہ د حدیث « لا ربا الا فی النسیئة » نه وو، دا حدیث په بخاری مسلم دواړو کښې دې، جمهور علماء کرامو د دې حدیث نه دوه جوابونه کړي دي چه د ربا نه مراد اربی الربا او اشد الربا ده د نفس ربا نفی نشته، مطلب دا دې چه په بیع الصرف کښې سخت حرمت چه دې هغه په نسیئة کښې دې، او د تفاضل حرمت دومره سخت نه دې، او یو جواب د نسخ هم ورکړې شوې دې، بله دا چه کله په حلت او حرمت کښې تعارض وی نو حرمت له ترجیح وی.

### د ربا تعریف او د هغې دوه قسمونه :

د ذکر کړې شوې بیان نه معلومه شوه چه د ربا دوه قسمونه دی ربا الفضل او ربا النسیئة، د ربا تعریف فقهاء کرامودا لیکلي دي « الرباء هو الفضل المستحق لاحد المتعاقدين فی المعاوضة الخالی عن عوض شرط فيه » یعنی د مخصوص اموالو په بیع کښې (یعنی اموال ربویه چه د هغې بیان په حدیث الباب کښې دې) په احد الجانبین کښې د داسې زیادت موجود کیدل چه جانب آخر د دې زیادت د عوض نه خالی وی مثلاً د یو درهم په بدل کښې سل درهم نو دلته په یو جانب کښې خو یو درهم شو اوس د دې نه پس په یو جانب کښې چه کوم ربع درهم موندلې شی د هغې عوض په دویم جانب کښې ندارد، خو دا تعریف د ربا په مذکوره دوه قسمونو کښې د ربا الفضل دې، د دې په قسم ثانی یعنی ربا النسیئة سره د دې تعریف هیڅ تعلق نشته، ربا النسیئة خو دا ده چه د اموال مخصوصه بیع کښې تقابض فی المجلس بیا نه موندلې شی بلکه معامله په قرض باندې پریخودلې شی، یعنی احد المتعاقدين خومعامله نقد کوی اوفی الحال خیز ورکوی، او دویم سرې د دې عوض فی الحال نه ورکوی د دې نه پس تاسو حدیث الباب واخلئ.

[۳۳:۴۸] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، وَعَنْ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَبِي عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "الذَّهَبُ بِالذَّهَبِ رِبًا، وَالْأَهَاءُ وَالْهَاءُ وَالْبُرُّ بِالْبُرِّ رِبًا، وَالْأَهَاءُ وَالْهَاءُ، وَالشَّعِيرُ بِالشَّعِيرِ رِبًا، وَالْأَهَاءُ وَالْهَاءُ".

دا بن عمر رضی الله عنہ نه روایت دې فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی: سره زر په سپینوزرو

(۱) صحیح البخاری/البیوع ۵۴ (۲۱۳۴)، ۷۴ (۲۱۷۰)، ۷۶ (۲۱۷۴)، صحیح مسلم/البیوع ۳۷ (۱۵۸۶)، سنن الترمذی/البیوع ۲۴ (۱۲۴۳)، سنن النسائی/البیوع ۳۹ (۴۵۶۲)، سنن ابن ماجه/التجارات ۵۰ (۲۲۶۰)، ۵۰ (۲۲۵۹)، (تحفة الأشراف: ۱۰۶۳۰)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/البیوع ۱۷ (۳۸)، مسند احمد (۲۴/۱، ۲۵، ۴۵)، سنن الدارمی/البیوع ۴۱ (۲۶۲۰) (صحیح)

خرخول سود دې مگرچه دواړه نقد وي او غنم په غنمو خرخول سود دې مگرچه دواړه نقد وي او وربشي په وربشو خرخول سود دې مگرچه نقد وي دواړه.

قوله: «عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الذَّهَبُ بِالذَّهَبِ رَبًّا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ وَالْبُرُّ بِالْبُرِّ رَبًّا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ وَالتَّمْرُ بِالتَّمْرِ رَبًّا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ وَالشَّعِيرُ بِالشَّعِيرِ رَبًّا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ»

### شرح الحديث على اكمل وجه انشاء الله تعالى

په دې حديث كښې صرف پنځه خيزونه ذكر شوې دي، او د دې نه پس چه كوم د عبادۀ بن الصامت رضي الله عنه حديث را روان دې په هغې كښې شپږم خيز هم مذكور دې، «والملاح بالملاح بمدى بمدى» په دې حديث كښې چه كوم لفظ مكرر يعنې هاء و هاء دي، دا د اسماء افعال نه دي چه د هغې معنې ده «خذ» په دې كښې مد او قصر دواړه جائز دي خو مد افصح دې، امام سيوطي رحمه الله ليكلي دي چه د دې لفظ اصل «هاك» دې يعنې «خذ» كاف (ك) لره حذف كولو سره د هغې په عوض كښې مد او همزه راوړلې شو، او په فائق كښې ليكلي شوې دي چه لفظ هاء د اسماء اصوات نه دې په معنې د «خذ» او هم د دې نه دې قول د باري تعالى «هاؤم اقرؤ كتابه» علامه طيبي رحمه الله فرمائي چه دا لفظ په محل نصب كښې دې بناء بر حاليت، او د الا مستثنى منه مقدر دې، او مطلب دا دي چه بيع الذهب بالفضة ربا ده په ټولو حالاتو كښې مگر په حال د حضور كښې او تقابض في المجلس كښې پس دا لفظ هاء او هاء كناية ده د تقابض نه آه (بذل) لهذا ترجمة به دا وي چه د ذهب بيع د فضة سره ربا ده په ټولو احوالو كښې خو په دې حال كښې نه مگر په دې حال كښې په متعاقدينو كښې هر يو ته وائي «خذ هذا» يعنې دا واخله او دويم هم وائي چه دا واخله، هم د دې نوم دې تقابض في المجالس، او كه داسې نه وي نو بيا به ربا في النسيئة موندلې شي چه حرامه ده.

د دې نه پس خان په دې پوهه كړئ چه دا حديث چه په هغې كښې د اموال ربويه ذكر دې په هغې كښې داسې دي چه اموال ټول شپږ بيان كړې شوې دي او د دې اشياء ستة د معاملې دوه صورتونه په حديث كښې مذكور دي، يو د اتحاد جنس والا چه دواړو طرفونو ته يو خيز وي مثلاً دواړو طرفونو ته سره زر وي يا سپين زر وي او هم دغه شان، او دويم صورت د اختلاف جنس بيان كړې شوې دې لكه يو طرف ته ذهب او دويم طرف ته فضة، يا يو طرف ته حنطة، او دويم طرف ته شعير، د رومي صورت حكم كوم چه په حديث كښې ذكر دې هغه په دې دواړو كښې يو دې يعنې تقابض في المجلس يعنې د قرض حرام كيدل او مساوات په دې صورت كښې ضروري نه دې، يعنې په دې صورت كښې فضل او زيادت جائز دې، ربا يعنې حرامه نه ده.

د دې نه پس خان پوهه كړئ چه ظاهريه كوم چه منكرين قياس دي (۱) د هغوی په نزد د اموال ربويه انحصار صرف په اشياء ستة باندې نه دې بلكه د نورو ډيرو خيزونو دپاره هم

(۱) پس د طائفه ظاهريه امام ابو محمد علي بن احمد بن حزم رحمه الله په انكار قياس باندې مستقل كتاب ليكلي دي ابطال الرائي والقياس،



هغوی دا حکم ثابتوی، په ذریعه د قیاس، قیاس نوم دې د تعدیة الحکم لوجود العلة یعنی د حکم منصوص د علت معلومولو نه پس چرته چه هم هغه علت بیا موندلې شی په هغې کښې حکم منصوص جاری کول.

**په اشیاء سته مذکوره کښې علت ربا د ائمة اربعه په نزد :**

اوس چه دلته دې حضرات ائمة اربعه په دې اشیاء سته کښې کوم د حرمت ربا علت متعین کړې دې هغه مختلف دې او بیا د هر یو امام په نزد چه چرته هم د دې اشیاء سته نه علاوه چرته هم هغه علت بیا موندلې شو هغه هلته دا حکم منصوص نافذ کړو اوس دا چه هغه علت حکم دې حضراتو څه متعین کړو په دې باره کښې واورئ، دې امامانو په دې حدیث کښې چه کوم څیزونه ذکر کړې شوي دی د هغې اول خو دا تجزیه او کړه هغه دا چه ذهب او فضة چه هغې ته ثمنین وائی هغه خو ئې ځانله اوساتل او باقی څلور څیزونه ئې ځانله کولو سره په هغې کښې جدا غور او کړو، د ثمنین علت ربا ځانله تجویز کړې شو او د باقی څیزونه ځانله، د امام شافعی رحمته الله په نزد په ثمنین کښې علت د ربا ثمنیت دې او چونکه ثمنیت خاص صفت د ذهب او فضة دې په بل څه څیز کښې نه شی موندلې کیدي لهذا د دې دواړو امامانو په نزد په ثمنینو باندې خو بل څیز لره نه شی قیاس کولې اوس پاتې شو باقی څلور څیزونه، نو په هغې کښې د امام شافعی رحمته الله په نزد علت د ربا طعم دې یعنی د هغه څیزونو مطعوم کیدل، لهذا د ټولو مطعوماتو حکم به د هغوی په نزد هم دا وی کوم چه د دې څلورو څیزونو دې، او د امام مالک رحمته الله په نزد په دې څیزونو کښې علت د ربا اقتیات او ادخار دې یعنی په دې څیزونو کښې د هر یو قوت مدخر کیدل یعنی د انسان داسې روزی چه هغه ذخیره کړې شی لهذا د امام مالک رحمته الله په نزد د ټولو اقوات مدخره هم دا حکم دې. د مثال په طور په دې څلورو څیزونو کښې د وریزو ذکر نشته، ذره یعنی جوار، د هغې هم ذکر نشته وغیره وغیره، د ټولو حکم هم دا دې، او د احنافو په نزد په ثمنینو کښې علت د ربا ثمنیت نه دې بلکه وزن دې یعنی د دې دواړو څیزونو موزون کیدل دی لهذا د دې دواړو نه علاوه به هم د ټولو موزوناتو هم دا حکم وی، لکه حدید او نحاس وغیره او په باقی څلورو څیزونو کښې علت ربا د احنافو په نزد کیل دې یعنی د هغه څیزونو مکیلی کیدل، لهذا د ټولو مکیلاتو به هم دا حکم وی پس د ربا النسیئة علت زمونږ په نزد په بیع کښې د عوضینو وزن یا کیلی کیدل دی، او د ربا الفضل علت د عوضین وزن یا کیلی کیدو سره متحد الجنس کیدل دی پس په هدایه کښې دی چه د ربا علت زمونږ په نزد کیل مع الجنس یا وزن مع الجنس دې، او د امام احمد رحمته الله نه په دې مسئله کښې دوه روایتونه دی یو د احنافو په مثل او دویم د شوافعو په مثل. والله تعالی اعلم بالصواب.

### د فقهاء کرامو په امت باندې احسان

دې حضراتو فقهاء کرامو چه د دین امامان دی خپل عمرونه د قرآن او حدیث نه د مسائلو په استنباط کښې تیر کړی دی، په پوره امت باندې د دوی احسان عظیم دې چه د قرآن او حدیث نه ئې د احکاماتو استنباط کولو سره د پاتې دنیا پورې د دیني مسائلو سهولتونه

پیدا کړل، یو قصه رایاده شوه کومه چه په تعلیم المتعلم کښې ذکر ده چه د امام محمد رحمه الله د وفات نه پس چا د هغوی نه په خوب کښې تپوس او کړو چه د مرگ وخت په تاسو باندي څنگه تیر شو؟ نو هغوی جواب ورکړو چه ما ته هیڅ پته او نه لگیده چه زما روح څنگه ویستلې شو، زه خو هغه وخت د مکاتب د مسائلو په استنباط کښې مشغول اوم، الله اکبر څه عجیبه شان وو د دې خلقوا شکر الله سعيهم واجزل ثوابهم وحشرنا ومشايخنا معهم.

په دې حدیث کښې «تبرها وعینها» ذکر دې تبر وائی خالص د سرو او سپینو زرو تکر و ته چه مضروب [۱۱۸] نه وی او عین دهغې مقابل دې چه دسکه په شکل کښې وی، رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائی چه د تبر او د عین هیڅ فرق معتبر نه دې دواړه په یو حکم کښې دی.

### غنم او اوربشي په اعتبار د جنس متحد دی یا مختلف:

او د دې حدیث نه دا هم معلومه شوه چه بر (غنم) او شعیر (اوربشي) دوه مختلف جنسونه دی د ائمه ثلاثه مسلک هم دا دې په دې کښې د امام مالک رحمه الله اختلاف دې هغوی دا دواړه یو منی پس امام ترمذی رحمه الله فرمائی:

حدیث عبادة حدیث حسن صحیح وقد روی بعضهم هذا الحديث عن خالد بهذا الاسناد وقال يبعوا البريا لشعير كيف شتم يدا بيد، وهذا قول اكثر اهل العلم وهو قول سفيان الثوري والشافعي واحمد واسحاق، وقد كره قوم من اهل العلم ان تباع الحنطة بالشعير الا مثلا بمثل وهو قول مالك بن انس، والقول الاول اصح آه مختصر املخصاً.

[۳۴:۹] (۱) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَشْرُبُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا هَمَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي الْخَلِيلِ، عَنْ مُسْلِمٍ الْمَكِّيِّ، عَنْ أَبِي الْأَشْعَثِ الصُّنْعَانِيِّ، عَنْ عَبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "الذَّهَبُ بِالذَّهَبِ تَبْرُهَا وَعَيْنُهَا، وَالْفِضَّةُ بِالْفِضَّةِ تَبْرُهَا وَعَيْنُهَا، وَالْبُرُّ بِالْبُرِّ مُدِّيٌّ بِمُدِّيٍّ، وَالشَّعِيرُ بِالشَّعِيرِ مُدِّيٌّ بِمُدِّيٍّ، وَالْتَمْرُ بِالتَّمْرِ مُدِّيٌّ بِمُدِّيٍّ، وَالْبَلَحُ بِالْبَلَحِ مُدِّيٌّ بِمُدِّيٍّ، فَمَنْ زَادَ أَوْ زَادَ، فَقَدْ أَرْنَى، وَلَا بَأْسَ بَبَيْعِ الذَّهَبِ بِالْفِضَّةِ، وَالْفِضَّةِ أَكْثَرُهَا يَدًا بِيَدٍ، وَأَمَّا نَيْسِنَةٌ فَلَا، وَلَا بَأْسَ بَبَيْعِ الْبُرِّ بِالشَّعِيرِ، وَالشَّعِيرِ أَكْثَرُهَا يَدًا بِيَدٍ، وَأَمَّا نَيْسِنَةٌ فَلَا"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَى هَذَا الْحَدِيثَ سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ، وَهَشَامُ الدَّسْتَوَائِيُّ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ مُسْلِمِ بْنِ يَسَارٍ، بِإِسْنَادِهِ.

دعبادة بن الصامت رضی الله تعالی عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم صلی الله علیه و آله فرمائیلى دی: سره زربه په مقابل دسرو زرو کښې برابر په برابر ورکولې شي، او سپین زربه په مقابل دسپینو زرو کښې برابر په برابر ورکولې شي، او غنم به د غنمو په مقابل کښې یومد په یومد ورکولې شي، او وربشي به د وربشو په بدل کښې برابر په برابر ورکولې شي، او کهجوري به د کهجورو په بدل کښې برابر په برابر یومد په یومد ورکولې شي، او څوک چه ددې نه زیات واخلي نوپه سود کښې مبتلا شو او سود ئې واخستو او سود ئې ورکړو، او په سپینو زرو سره زر اخستل سره دکمي او زیاتي دفرق ساتلو څه بده خبره. نده خو پدې شرط چه نقد وي او که چرې نقد نه وي نو جائز نه دي، امام ابوداود فرمائی چه دا روایت سعد بن

(۱) صحیح مسلم / المساقاة ۱۵ (۱۵۸۷)، سنن الترمذی / البیوع (۱۲۴۰)، سنن النسائي / البیوع ۴۲ (۴۵۶۷)، سنن ابن ماجه / التجارات ۴۸ (۲۲۵۴)، تحفة الأشراف: ۵۰۸۹، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۱۴/۵، ۳۲۰) (صحیح)



ابی عروبه او هشام دستواني دقتاده نه او هغه دمسلمه په واسطې سره بيان کړي دي.  
**(فَمَنْ زَادَ أَوْ أَزَادَ فَقَدْ أَرْتَى)** يعنی د اتحاد د جنس په صورت کښې چه کوم انسان بل ته زياتی ورکړی يا زيات واخلی نو هغه سود اوکړو، او بيا وړاندې دا دی چه که د ذهب بيع په فضة سره وی او هم دغه شان د برد شعير سره او په دې دواړو کښې يو د بل نه زياتی وی نو دا جائز ده په دې شرط چه لاس په لاس وی، او نسيئة جائز نه ده.

حديث عمر رضي الله عنه أخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجة. وحديث عبادة بن الصامت رضي الله عنه أخرجه مسلم والترمذي والنسائي وابن ماجة بنحوه، قاله المنذري

[۳۳۰] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي قِلَابَةَ، عَنْ أَبِي الْأَشْعَثِ الصَّنْعَانِيِّ، عَنْ عَبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بِهَذَا الْخَبَرِ يَزِيدُ وَيَنْقُصُ، وَزَادَ، قَالَ: فَإِذَا اخْتَلَفَتْ هَذِهِ الْأَصْنَافُ، فَبِيعُوا كَيْفَ شِئْتُمْ إِذَا كَانَ يَدَايِيدُ.

ابو الاشعث الصنعاني دعبادة ابن الصامت رضي الله عنه نه او هغه دنبی عليه السلام نه دتيرروايت په شان روايت بيان کړي دي، لبتنه په دې روايت کښې دا اضافه ده چه: که چرې قسمونه مختلف شي لکه سرو زرد سپينو زرو په عوض کښې يا غنم د اوربشو په عوض کسي وي نو څنگه چه موزره غواړی خرڅولې شي مگردا ضروري ده چه معامله به نقده وي (يعنی دقرضو معامله جائزنده اگر که دلر وخت دپاره وي).

### بَابُ فِي حِلِّيَةِ السَّيْفِ تَبَاعُرًا بِالذَّرَاهِمِ

د تورې د سپينو زرو موتی په پیسو خرڅول

[۳۳۱] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ. ح. وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْعَلَاءِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَزِيدَ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ أَبِي عِمْرَانَ، عَنْ حَنْشٍ، عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ، قَالَ: "أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ خَيْبَرٍ بِقِلَادَةٍ فِيهَا ذَهَبٌ وَخَرَزٌ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ، وَابْنُ مَنِيعٍ: فِيهَا خَرَزٌ مُعَلَّقَةٌ بِذَهَبٍ ابْتِغَاءً رَجُلٌ بِتِسْعَةِ دَنَانِيرَ، أَوْ بِسَبْعَةِ دَنَانِيرَ، قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا، حَتَّى تُمِيزَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ، فَقَالَ: إِنَّمَا أَرَدْتُ الْحِجَارَةَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا، حَتَّى تُمِيزَ بَيْنَهُمَا، قَالَ: فَرَدَّهَ حَتَّى مُيزَ بَيْنَهُمَا"، وَقَالَ ابْنُ عِيْسَى: أَرَدْتُ الْبَحَارَةَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَكَانَ فِي كِتَابِهِ الْحِجَارَةَ، فَقَعِيرَةً، فَقَالَ الْبَحَارَةَ.

دفضالة بن عبیده نه روايت دي فرمائی چه نبی عليه السلام ته دعزوه خيبر په کال دسرو زرو يو اميل چه غمي هم پکښې وو راوړلې شو يو سړی په اوه ايانه ۹ ديناره واخستو نبی عليه السلام او فرمائيل دا خريداري درست نده، ترڅوچه سره زر دغمو نه جدا کړې شوي نه وی، اخستونکی عرض اوکړو اي دالله رسوله مادکانرو اخستلو اراده کړې وه نبی عليه السلام او فرمائيل بالکل نه دا خريداري جائز نه ده ترڅوچه سره زر دغمو نه جدا شوي نه وي، اخستونکي چه دا واوريدل نوهارنې واپس کړو تردې چه سره زر دغمو نه جدا کړې شول ابوداود فرمائی چه دمحمد بن عيسي په کتاب کښې اردت الحجاره الفاظ وو هغه په

(۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۵۰۸۹) (صحیح)

(۲) صحیح مسلم / المساقاة ۱۷ (۱۵۹۱)، سنن الترمذي / البيوع ۳۲ (۱۲۵۵)، سنن النسائي / البيوع ۴۶ (۴۵۷۷)، (تحفة الأشراف: ۱۱۰۲۷)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱۹۶/۲۱) (صحیح)

تجارت لفظ سره بدل کړل.  
 ﴿عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ قَالَ أَتَى النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَامَ خَيْبَرَ بِقِلَادَةٍ فِيهَا ذَهَبٌ وَخَزْرٌ - قَالَ أَبُو بَكْرٍ وَابْنُ مَنِيعٍ فِيهَا خَزْرٌ مُعَلَّقَةٌ بِذَهَبٍ ابْتِاعَهَا رَجُلٌ بِتِسْعَةِ دَنَانِيرَ ... الخ﴾  
**د مال ربوی و غیر ربوی دمخلوط بیع حکم:**

یعنی د رسول الله ﷺ په خدمت کښې دا مسئله پیش کړې شوه چه د فتح خیبر په کال، یو امیل چه په هغې کښې سره زر او جواهرات وغیره قیمتی کانړی وو، او بیا په دویم روایت کښې دی چه داسې قلاده چه په هغې کښې غمی د سرو زرو سره لگیدلې وو، هغه قلاده یو سړی په نهه یا اووه دیناره اخستلې وه، او په بل روایت کښې دی چه په دولسو دینارو ئې اخستلې وه، او په هغه بل روایت کښې دا هم دی چه اخستونکې سړې وائی چه کله ما د هغې قلادې اجزاء بیل بیل کړل نو په هغې کښې چه کوم سره زر راواوتل هغه د دولسو دینارو نه زیات وو (یعنی نور دوه خیزونه جواهر وغیره نه علاوه) دا مذکوره سړې وائی چه ما د هغې ذکر رسول الله ﷺ ته اوکړو نو هغوی اوفرمائیل «لاتباع حتی تفصل» یعنی د دې قسم هار بیع مجموعی لحاظ سره جائز نه ده ترڅو چه ټول اجزاء بیل بیل نه کړې شی.

#### مسئله ثابته بالحديث کښې مذاهب ائمه:

که په یو امیل کښې د جواهراتو نه علاوه سره زر لگیدلې وی نو د هغې بیع د خالص سرو زرو سره یا هم دغه شان په کومه قلاده کښې چه چاندی لگیدلې وی د هغې بیع په چاندی سره د امام شافعی رحمه الله په نزد مطلقا جائز نه ده ترڅو چه هر یو بیل بیل نه کړې شی د ربا د ویرې د وجې نه، د ظاهر حدیث نه هم دا معلومیږي او د احنافو مذهب ددې پشان مسئله کښې دا دې چه که په څه طریقه بالجزم دا معلومه شی چه خالص سونا د هغه سونې نه کومه چه په قلاده کښې لگیدلې ده زائد ده او د قلادې والا سره زر کم دی نو په دې صورت کښې به بیع جائز وی، د یو طرف سره زر به د دویم طرف د سرو زرو په مقابل کښې شی او کوم چه خالص د سرو زرو زیادت دې هغه به په یو طرف کښې شی. او په دې صورت کښې به هیڅ ربا نه لازمیږي لکه هم دا خبره ظاهره ده، دا یو صورت خو صرف د جواز دې، او که هغه ذهب مفرز (خالص سره زر وی یعنی غیر مخلوط) د ذهب مخلوط برابر یا د هغې نه اقل وی نو په دې دواړو صورتونو کښې به دا بیع ناجائز وی د لزوم د ربا د وجې نه، د امام مالک رحمه الله مسلک دا دې چه که هغه ذهب مخلوط بالغیر تابع وی د غیر په داسې طریقه چه د ثلث یا ثلث نه کم وی نو بیا خو دا بیع جائز ده گڼیږي نه ده، د دې نه پس خان پوهه کړی چه دلته چه په حدیث کښې کوم صورت موندلې شوې دې د کوم نه چه رسول الله ﷺ منع اوفرمائیله دا هم هغه صورت دی کوم چه د احنافو په نزد هم ممنوع دې ځکه چه په دې مثال کښې خو ذهب مفرز په ځانې د اکثر کیدو برابر هم نه وو د ذهب مخلوط سره بلکه د هغې نه اقل وو او دا زمونږ په نزد هم ناجائز ده، لهذا حدیث د احنافو خلاف نه دې، که یو سړې داسې وائی چه په حدیث کښې خو د دې قسم د قلادې بیع لره د تجزیه او تفصیل نه مخکښې ناجائز منلې شوې وو، د دې جواب دا دې چه د تجزیه او تفصیل نه پس چه په کوم



صورت کنبی جائز وی هم په هغه صورت کنبی مونږ هم هغه جائز کوو، او په کوم صورت کنبی چه ناجائز وی هغی ته مونږ هم ناجائز وایو. غرض دا چه تجزیه او تفصیل د معرفت د مقدار ذریعه نه ده چه د کمی زیاتی علم پیدا شی او ربا نه لازمیږی، خو که بغیر د تجزیه او تفصیل نه معرفت د مقدار حاصل شی مونږ هم دې ته جائز وایو او بغیر د دې نه مونږ هم دې ته ناجائز وایو. واللہ تعالیٰ اعلم

### مسئله مدّ عجوه او د هغی شرح او مثال

په کتابونو د شوافعو کنبی دې مسئلې (۱) ته مسئله د مدّ عجوه نوم اخستلې شوې دې لکه چه د امام نووی رحمہ اللہ په کلام کنبی په شرح د مسلم کنبی ذکر شوې دی چه د هغی صورت هغوی دا لیکلې دې چه که په یو طرف کنبی مدّ عجوه او درهم وی (یعنی یو مدّ کهجورې چه د هغی سره یو درهم هم وی) او د هغی بیع او کړې شی د مدین عجوه سره یعنی دویم طرف ته صرف تمر دې خو په خائې د یو مدّ دوه مده، یا د درهمنو سره یعنی دویم طرف ته صرف دوه درهمه وی خو یو نه وی بلکه دوه نو دا جائز نه ده.

دا د قلادې والا مسئله د دې تشریح او مذاهب د ائمه امام نووی رحمہ اللہ د حدیث الباب د لاندې په شرح د مسلم کنبی ۲۶۱۲ باندې ذکر کړې ده، د هغی طرف ته دې رجوع او کړې شی. ففیه کلام نفیس فی شرح هذا الحديث.

په حدیث الباب کنبی دا هم دی چه کله رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د هغه امیل اخستونکې د هغی د بیع نه منع او فرمائیلو نو هغه اووې «انما اردت الحجارة» نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم بیا هم اجازت ورنکړو، د هغه سړی مراد دا وو چه د امیل دشراء نه زما مقصود او مطلوب هغه جواهرات دی کوم چه په هغی کنبی لگیدلې دی، یعنی سره زر مقصود نه دی او دا جواهرات په اموال ربویه کنبی نه دی لهدا اجازت کیدل پکار دی.

[۳۳۵۲] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي شُعْبَةَ سَعِيدِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ خَالِدِ بْنِ أَبِي عِمْرَانَ، عَنْ حَنِيْشِ الصَّنَعَانِيِّ، عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ، قَالَ: "اشْتَرَيْتُ يَوْمَ خَيْبَرَ قِلَادَةً بِأَثْنَيْ عَشَرَ دِينَارًا، فِيهَا ذَهَبٌ وَخَرَزٌ، فَفَضَّلْتُهَا، فَوَجَدْتُ فِيهَا أَكْثَرَ مِنَ اثْنَيْ عَشَرَ دِينَارًا، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: لَا تَبَاغُ حَتَّى تَفْضَلَ."

د فضالة بن عبید نه روایت دې فرمائی چه دعزوه خیبر په ورځ مې یو امیل واخستو په دولس دیناره چه سره زر او غمی په کنبی وو نو مادهار سره زر د غمونه جدا کړل نو هار راته د دولسو دینارونه دزیات مالیت قابل بشکاره شو او ددې خبرې ذکر مې نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته اوکړو نسبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چه دهار دسرو زرو نغمو جدا کولونه بغیر خرخول منع دي.

«عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ..... تَبَايَعُ الْيَهُودُ الْأَوْقِيَّةَ مِنَ الذَّهَبِ بِالدِّينَارِ. قَالَ غَيْرُ قُتَيْبَةَ بِالدِّينَارَيْنِ وَالثَّلَاثَةِ»

د دې حدیث مطلب خو په ظاهر کنبی دا دې چه مونږ خلقو د خیبر یهودو ته دوه یا درې

(۱) یعنی د ربوی او غیر ربوی مال مخلوط بیع

(۲) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۱۰۲۷) (صحیح)

دیناره ورکولو سره یو اوقیه سره زر اخستل اوقیه نوم دې د څلویښتو درهمو، او ښکاره خبره ده چه د څلویښتو درهمو وزن برابر سره زر څوک خرڅولی شی د دوه یا درې دینارو په بدل کښې په دې وجه دا حدیث په خپل ظاهر باندې نه دې بلکه مراد دا دې چه اوقیه من ذهب وخرز وغیره یعنی داسې امیل چه د هغې وزن د څلویښتو درهمو برابر وی چه په هغې کښې سره زر او ملغلرې وغیره وې دغه شان امیل لره په دوه یا درې درهمو باندې اخستلو. قاله النووی (عون) والحديث اخرجه مسلم، قاله المنذرى.

[۳۳۵۳] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ ابْنِ أَبِي جَعْفَرٍ، عَنِ الْجَلَّاحِ أَبِي كَثِيرٍ، حَدَّثَنِي حَنْشُ الصَّنْعَانِيُّ، عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ، قَالَ: "كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ خَيْبَرَ، نَبَايَعُ الْيَهُودَ الْأَوْقِيَّةَ مِنَ الذَّهَبِ بِالدِّينَارِ، قَالَ غَيْرُ قُتَيْبَةَ: بِالدِّينَارَيْنِ وَالثَّلَاثَةِ، ثُمَّ اتَّفَقَا، فَقَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تَبِيعُوا الذَّهَبَ بِالدَّهَبِ، إِلَّا وَزْنًا بِوَزْنٍ."

دفضالة بن عبیده نه روایت دې فرمائی چه مونږ غزوه خیبر په ورځ باندې د نبی ﷺ سره موجود وو اود یهودیانو سره به مو خرید اوفروخت کولو ویدیو دیناریه عوض باندې به مو یوه اوقیه سره زر یند دوه دینارو په عوض باندې به مو یوه اوقیه سره زر اخستل نبی ﷺ اوفرمايل چه سره زر په سروزرو مه خرڅوي ترڅو چه په وزن کښې دواړه برابر نه وي.

### بَابُ فِي اقْتِضَاءِ الذَّهَبِ مِنَ الْوَرَقِ د سپینوزرو په عوض کښې د سروزرو د اخستلو بیان

د مسئله مترجم بها شرح او بیان د مذاهبو:

اقتضاء په معنی د اخذ، یعنی د اخستلو او خرڅولو په معامله کښې که په دینار سره معامله شوې ده د هغې په ځانې دراهم اخستل یا که معامله په دراهمو سره شوی وی او بیا په ځانې د دراهمو هم د هغه قیمت په اندازه دنانیر اخستل، داسې کول په حساب د قیمت متساویا خو بالاتفاق جائز دې او که بالفرض متفاضلا وی نو بیا په تراضی د طرفین سره (۲) جائز دې ځکه چه د اختلاف د جنس په صورت کښې خو کمی زیاتې جائز دې، خو دا هم ښکاره ده چه کوم انسان داسې کوی یعنی د دینارونو په مقابله کښې دراهم، یا د دراهم په عوض کښې دنانیر اخلی هغه به د قیمت په حساب سره برابر اخلی د تفاضل اصولا جائز کیدل هغه بل امر دې، خو تقابض فی المجلس ضروری دې لکه چه د ټولو اموال ربوبیه حکم دې ځکه چه دا عقد به عقد صرف وی چه په هغې کښې تقابض فی المجلس ضروری دې، خطابي ﷺ فرمائی ﴿وقد اختلف الناس في اقتضاء الدراهم من الدنانير، فذهب اكثر اهل العلم الى جوازه ومنع من ذلك ابوسلمة بن عبد الرحمن وابو شبرمة، وكان ابن ابي ليلى يكره ذلك الا بسعر يومه، ولا يعتبر غيره السعر، ولم يبالوا كان ذلك باغلي او ارخص من سعر اليوم اهديعني ابن ابي ليلى ﷺ فرمائی چه د دې قسم تبادله په هغه صورت کښې جائز ده چه په کومه ورځ

(۱): انظر حديث رقم (۳۳۵۱)، (تحفة الأشراف: ۱۱۰۲۷) (صحيح)

(۲) خو دا جواز د تفاضل صرف د احنافو مسلک دې، د نورو امامانو په نزد جائز نه دې، کلامي هاشم (البلد من الموفق)



باندې معامله شوې وه په هغه ورځ چه د دراهمو او دنانیر کوم قیمت وو په بازار کښې د هغه قیمت اعتبار کولو سره کښې مکروه دې سعر الیوم کوم چه امام خطابی رحمته الله علیه فرماني هغه په حدیث الباب کښې مصرح دې « فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- « لَا بَأْسَ أَنْ تَأْخُذَهَا بِسَعْرِ يَوْمِهَا مَا لَمْ تَفْتَرَقَا وَبَيْنَكُمَا شَيْءٌ » » خو دا قید په بعضو طرقو کښې شته او په بعضو کښې نشته، پس د باب حدیث ثانی کښې نشته « کما قال المصنف رحمته الله علیه باسناده ومعناه والاول اتم لم يذكر بسعر يومها » غالبا هم په دې وجه باندې جمهورو د سعر يوم اعتبار لره ضروری نه دې منلې، د خطابی په کلام کښې د امام احمد رحمته الله علیه مسلک نه دې ذکر شوې، د هغوی په نزد د سعر الیوم قید ضروری دې کما قال الموفق کما فی هامش البذل، وفيه ايضا :: قلت حکي الشوكاني تقييده عن احمد واليه يشير كلام الترمذی اذ ذکر فیمن قال بالحدیث احمد، وبه جزم الموفق کما سبق. او د علامه سندی په حاشیه کښې دی چه د « بسعر الیوم » قید په طریقه د استحباب دې.

[۳۳۵۴] ( ) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ وَاحِدٌ، وَمُحَمَّدُ بْنُ فَحْبُوبٍ الْمَعْفِيُّ، قَالَا: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ يَمَّانَ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: كُنْتُ أبيعُ الإِبِلَ بِالْبَقِيعِ فَأبيعُ بِالدَّنَانِيرِ وَأأخذُ الدَّرَاهِمَ وَأبيعُ بِالدَّرَاهِمِ وَأأخذُ الدَّنَانِيرَ، أَخَذْتُ هَذِهِ مِنْ هَذِهِ وَأَعْطَيْتُ هَذِهِ مِنْ هَذِهِ، فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِي بَيْتِ حَفْصَةَ، فَقُلْتُ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، رُوَيْدُكَ أَسْأَلُكَ إِنِّي أبيعُ الإِبِلَ بِالْبَقِيعِ فَأبيعُ بِالدَّنَانِيرِ، وَأأخذُ الدَّرَاهِمَ، وَأبيعُ بِالدَّرَاهِمِ وَأأخذُ الدَّنَانِيرَ، وَأَعْطَيْتُ هَذِهِ مِنْ هَذِهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا بَأْسَ أَنْ تَأْخُذَهَا بِسَعْرِ يَوْمِهَا مَا لَمْ تَفْتَرَقَا وَبَيْنَكُمَا شَيْءٌ."

دا بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرماني چه مابه په نقيع مقام کښې اوبان خرڅول اود دینار په حساب به مې خرڅول او په بدل کښې به مې دینارونه اغستل یعنی د دینار په عوض کښې به مې درهم اغستل اود درهم په عوض کښې به مې دینار اغستل بیازه د نبی صلی الله علیه و آله په خدمت کښې حاضر شوم اونبی صلی الله علیه و آله دام المومنین حفصه رضی الله عنها په کور کښې ناست وو ماعرض اوکړو ای دالله رسوله ماته توجه اوکړئ زه دا معلومول غواړم چه زه په نقيع مقام کښې اوبان خرڅوم او په عوض کښې ئې درهم اخلم اود درهمونو په حساب ئې خرڅ کړم او په عوض کښې دینار واخلم عرض داچه ددرهم په عرض کښې دینار اود دینار په بدل کښې درهم اخلم، نبی صلی الله علیه و آله او فرمایل په دې کښې هیڅ بدوالې نشته خوپه دې شرط چه ددغه ورځې په نرخ ئې واخلي اوتاسود یوبل نه ترهغې پورې جدانشئ ترخوچه ستاسو سودا مکمل شوي نه وي.

قوله: « عَنْ ابْنِ عُمَرَ قَالَ كُنْتُ أبيعُ الإِبِلَ بِالْبَقِيعِ فَأبيعُ بِالدَّنَانِيرِ وَأأخذُ الدَّرَاهِمَ وَأبيعُ بِالدَّرَاهِمِ وَأأخذُ الدَّنَانِيرَ الخ » په دې حدیث کښې هم هغه مسئله ذکر شوې ده کومه چه مونږه پورته بیان کړه. والحدیث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى.

(۱) سنن الترمذی/البیوع ۲۴ (۱۲۴۲)، سنن النسائی/البیوع ۴۸ (۴۵۸۶)، سنن ابن ماجه/التجارات ۵۱ (۲۲۶۲)، (تحفة الأشراف: ۷۰۵۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۳/۲، ۵۹، ۸۹، ۱۰۱، ۱۳۹)، سنن الدارمی/البیوع ۴۳ (۲۶۲۳) (ضعیف)

[۳۳۵۵] (۱) حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ الْأَسْوَدِ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ يَسْنَادِهِ وَمَعْنَاهُ، وَالْأَوَّلُ أَتَمُّ لَمْ يَذْكُرْ يَوْمَهَا.

د سமாக نه په دې سند سره د تیر روایت په شان روایت نقل دې لیکن مخکې روایت زیات کامل دې او په در روایت کښې دنن ورځې دنرخ لفظ نشته.

### بَابُ فِي الْحَيَوَانِ بِالْحَيَوَانِ نَسِيئَةً

په یو څاروی بل څاروی د قرض په طور سره اخستل

دا باب او په دې کښې چه کومه مسئله ذکر شوې ده د دې حواله په دې کتاب کښې په «باب فی حسن القضاء» کښې د استقراض الحيوان د لاندې تیره شوې ده.

[۳۳۵۶] (۲) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ سَمُرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ بَيْعِ الْحَيَوَانِ بِالْحَيَوَانِ نَسِيئَةً".

د سمره رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ منع فرمائیلی ده د خرڅولو د یو څاروی نه په بل باندې په قرض سره (یعنی ژوند څاروې).

### مسئلة الباب کښې مذاهب ائمه:

بيع الحيوان بالحيوان که یدا بید وی نو بالاتفاق جائز دې او مساوات هم په دې کښې ضروری نه دی تفاضلا هم جائز دې، مثلاً بيع البعير بالبعيرين، یا بيع العبد بالعبدین، خو په دې کښې اختلاف دې چه بيع الحيوان بالحيوان نسيئة هم جائز دې یا نه، په دې کښې دوه امام یو طرف دې او دوه یو طرف ته، د احنافو او حنابله په نزد ناجائز دې کما فی الحديث الباب نهی عن بيع الحيوان بالحيوان نسيئة، او د امام مالک او شافعی رحمهم الله په نزد دا بيع جائز دې، هم په دې وجه مصنف رحمه الله وړاندې باب قائم کړې دې، «باب فی الرخصة فی ذلک» خو د امام مالک رحمه الله په نزد د دې جواز د اختلاف د جنس په صورت کښې دې، مثلاً یو طرف ته اوبښ دې او دویم طرف ته بیزي، او د اتحاد د جنس په صورت کښې د هغوی په نزد هم جائز نه دی، نو گویا امام مالک رحمه الله په یو صورت کښې د حنابله او احنافو سره دې او په یو صورت کښې د امام شافعی رحمه الله سره، دا رومې باب او د هغې حدیث د احنافو او حنابلو په حق کښې دې او د شوافعو خلاف دې، امام شافعی او مالک رحمه الله د دې حدیث دا جواب ورکړې دې چه دا په هغه صورت باندې محمول دې لکه چه نسيئة د جانبین نه وی چه هغې ته په اصطلاح د فقهاء کښې بيع الکالی بالکالی وائی او که د جانب واحد نه وی نو هغې لره دا دواړه حضرات ممنوع نه گرزوی هم دغه شان دا دواړه حضرات د استقراض الحيوان قائل دی ځکه چه په دې کښې نسيئة د جانب واحد نه وی او د احنافو او حنابله په نزد دا حدیث په خپل عموم باندې دې یعنی که هغه نسيئة من الجانبین وی یا

۱: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۷۰۵۳) (ضعيف)

۲: سنن الترمذي/اليبوع ۲۱ (۱۲۳۷)، سنن النسائي/اليبوع ۶۳ (۶۶۲۴)، سنن ابن ماجه/التجارات ۵۶ (۲۲۷۰)، (تحفة الأشراف: ۴۵۸۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۲/۵، ۲۱، ۲۲)، سنن الدارمي/اليبوع ۳۰ (۲۶۰۶) (صحیح)



من جانب واحد وی، او هم په دې وجه د هغوی په نزد استقرار حیوان هم ناجائز دی  
والحدیث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

### بَابُ فِي الرُّخْصَةِ فِي ذَلِكَ

په یو څاروی بل څاروی د قرض په طور سره داخستلو د جواز بیان

[۳۳۵۷] (حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ مُسْلِمِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ أَبِي سَفْيَانَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ حَرْبٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "أَمَرَهُ أَنْ يُجَهِّزَ جَيْشًا، فَتَفِدَتِ الْإِبِلُ، فَأَمَرَهُ أَنْ يَأْخُذَ فِي قِلَاصِ الصَّدَقَةِ فَكَانَ يَأْخُذُ الْبَعِيرَ بِالْبُعَيْرَيْنِ إِلَى إِبِلِ الصَّدَقَةِ".

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله راته حکم او کړو چې لښکر تیار کړه نو اوبسان ختم شول، نونبی صلی الله علیه و آله حکم وکړو چې د صدقې داوبسانو دراتلو په نیته باندې اوبسان واخلي او عبد الله بن عمرو به دخیراتي اوبسانو د راتلو د نیتي پورې یو اوبس په دره اوبسانو اخستلو.

﴿ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- أَمَرَهُ أَنْ يُجَهِّزَ جَيْشًا فَتَفِدَتِ الْإِبِلُ فَأَمَرَهُ أَنْ يَأْخُذَ فِي قِلَاصِ الصَّدَقَةِ فَكَانَ يَأْخُذُ الْبَعِيرَ بِالْبُعَيْرَيْنِ إِلَى إِبِلِ الصَّدَقَةِ ﴾

عبد الله بن عمرو بن العاص رضي الله عنه فرمائی چې رسول الله صلی الله علیه و آله هغه ته د یو لښکر د تجهیز حکم او فرمائیلو یعنی د سامان جهاد برابرول، هغوی د دې تیاري شروع کړو، خو په مینځ کښې د اوبسانو کمې راغلو هغه رسول الله صلی الله علیه و آله ته عرض او کړو، نو رسول الله صلی الله علیه و آله هغوی ته حکم او فرمائیلو چې د صدقې د اوبسانو په بنیاد باندې د خلقو نه مستعار واخلي، چې کله په بیت المال کښې د صدقې اوبسان راشي په هغې باندې به دا دین ادا کولې شی، پس هغه به د خلقو نه د دوه دوه اوبسانو په بدله کښې یو یو اوبس اخستلو.

په دې حدیث کښې دوه خبرې اوموندلې شوې: ﴿ استبدال الحيوان بالحيوان متفاضلا ﴾ یعنی د حیواناتو بدلون په تفاضل سره، په دې کښې هیڅ اشکال نشته، دا خو د ټولو په نزد جائز دي، دویم څیز دې نسیئته یعنی د دې جائز کیدل د مصنف رحمه الله غرض په دې باب سره جواز د نسیئته لره بیانول دی کما فی ترجمه الباب.

### د حدیث الباب د احنافو او حنابله د طرف نه جواب :

دا حدیث د احنافو او حنابله خلاف شو او د شوافعو موافق، د دې حضراتو یو جواب خو د دې حدیث نسخ سره کړې شوې دي چې د عبد الله بن عمرو رضي الله عنه حدیث منسوخ دي..... ذکره الطحاوی احتمالا، علامه شوکانی رحمه الله فرمائی ﴿ لا شک ان احادیث النهی وان کان کل واحد منها لا یخلو عن مقال لكنها ثبتت من طرق ثلاثة من الصحابة، سمرة ﴾ (کما فی الباب الذی قبله) وجابر بن سمرة وابن عباس وبعضها یقوی بعضها فهی ارجح من حدیث واحد غیر خال عن المقال وهو حدیث عبد الله بن عمرو رضي الله عنه یعنی د منع روایات د متعدد صحابه کرامو رضي الله عنهم نه روایت دی حضرت

۱: تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۸۹۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۱۷۱، ۲۱۶) (ضعیف)

سمره وجابر بن سمره او ابن عباس رضی الله عنهما، او د جواز روایت کوم چه په یو طریق روایت دي او هغه هم داسې چه د کلام او ضعف نه خالی نه دي، او هسې اصولا هم دلیل دتحریم ته ترجیح ورکولې شی په دلیل د اباحت باندې. (بذل)

### بَابُ فِي ذَلِكَ إِذَا كَانَ يَدَايِدُ

یوڅاروي بدل څاروي باندې د نقد په صورت کښې جانزدی

[۳۳۵۸] (۱) حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ خَالِدٍ الْأَمْدَانِيُّ، وَقَتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ الثَّقَفِيُّ، أَنَّ اللَّيْثَ حَدَّثَهُمْ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اشْتَرَى عَبْدًا بِعَدَنَيْنِ.

د جابر رضی الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله یو غلام په دوه غلامانو اخستلي وو.

«عَنْ جَابِرٍ أَنَّ النَّبِيَّ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- اشْتَرَى عَبْدًا بِعَدَنَيْنِ»

یعنی رسول الله صلی الله علیه و آله د دوه غلامانو په بدل کښې یو غلام واخستلو. یعنی یدا بید لکه څنگه چه په ترجمه الباب کښې دي او دا بالاتفاق جائزه لکه چه په وړاندې باب کښې تیر شو. والحديث أخرجه مسلم والترمذي والنسائي بأتم منه، قاله المنذري

### بَابُ فِي الثَّمْرِ بِالثَّمَرِ

کجورې په کجوروسره خرڅول

دا دواړه د تائي مثناة من فوق نه دي او په یو نسخه کښې فی الثمر بالتمر دي یعنی رومبي ثاء ده او دویمه تاء ده، او راجحه هم دا نسخه ثانیه ده د حدیث الباب د وجي نه.

[۳۳۵۹] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَزِيدَ، أَنَّ زَيْدًا أَبَا عَيَّاشٍ أَخْبَرَهُ، أَنَّهُ سَأَلَ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنِ الْبَيْضَاءِ بِالسَّلْتِ، فَقَالَ لَهُ سَعْدٌ: أَيْمَنًا أَفْضَلُ؟ قَالَ: الْبَيْضَاءُ فَتَنَاهَا عَنْ ذَلِكَ، وَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُسْأَلُ عَنْ ثَمَرِ الثَّمَرِ بِالرُّطْبِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيْنَقُصُ الرُّطْبُ إِذَا بَيْسَ؟ قَالُوا: نَعَمْ، فَتَنَاهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ذَلِكَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَاهُ إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَمِيَّةَ نَحْوَ مَا لَكَ.

د زيد ابو العياش نه روایت دي فرمائی چه د سعد بن ابی العاص رضی الله عنه نه مې دغنمو په سلت باندې دخرڅولو متعلق تپوس وکړو نوسعد و وئیل په دوی دواړو کښې کوم یو ډیر ښه وي؟ زيد و وئیل چه غنم، نو هغه بیاددي نه منع او فرمائیله او وئې وئیل چه ماد نبی صلی الله علیه و آله نه اوریدلي دي کله چه دتازه کهجوروپه وچو کهجوروباندې دخرڅولو متعلق تري تپوس وکړي شونو وئې وئیل ایاتازه کهجوري چه کله اوچي شي نو کميږي؟ صحابه کرامو عرض وکړو هو؟ نو ددي نه ئې هم منع او فرمائیله، امام ابو داود فرمائی چه دا روایت اسماعیل بن ابی امیه هم د مالک په شان نقل کړې دي.

(۱): صحيح مسلم/المساقاة ۲۳ (۱۶۰۲)، سنن الترمذي/البیوع ۲۲ (۱۲۳۹)، السير ۳۶ (۱۵۹۶)، سنن النسائي/اليعة ۲۱ (۴۱۸۹)، البيوع ۶۴ (۴۶۲۵)، سنن ابن ماجه/الجهاد ۴۱ (۲۸۶۹)، (تحفة الأشراف: ۲۹۰۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۴۹/۳، ۳۷۲) (صحيح)

(۲): سنن الترمذي/البیوع ۱۴ (۱۲۲۵)، سنن النسائي/البیوع ۳۴ (۴۵۵۹)، سنن ابن ماجه/التجارات ۵۳ (۲۲۶۴)، (تحفة الأشراف: ۳۸۵۴)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/البیوع ۱۲ (۲۲)، مسند احمد (۱۷۵/۱، ۱۷۹) (صحيح)



(أَنَّ زَيْدًا أَبَا عِيَّاشٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَأَلَ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَاصٍ عَنِ الْبَيْضَاءِ بِالسُّلْتِ فَقَالَ لَهُ سَعْدٌ أَيُّهُمَا أَفْضَلُ قَالَ الْبَيْضَاءُ. فَتَنَاهَا عَنْ ذَلِكَ..... عَنْ ذَلِكَ)

### شرح الحديث من حيث الفقه:

مضمون د حدیث دا دې چه یو سری د سعد بن ابی وقاص رضی الله عنه نه دا مسئله او تپوسله چه آیا د حنطة بیع په سلت سره جائز ده؟ سلت د شعیر یو عمده قسم وی چه د هغې قشر (پوستکې) باریک وی، یعنی اعلیٰ قسم وربشې، کوم چه په عوامو کښې په جو پیمبری سره مشهور ده، نو په دې باندې سعد رضی الله عنه تپوس او کړو چه په دې دواړو کښې ښه کوم یو دې؟ تپوس کونکې جواب ورکړو چه ښه خو غنم وی. هغوی چه دا جواب واوړیدو نو د بیع نه ئې منع او فرمائیله.

دا حدیث د احادیث مشکله نه دې غیر واضح المعنی دې، ځکه چه نه ده معلومه چه د سائل غرض د بیع نسیئة نه دې یا یدا بید نه، که د سوال تعلق د بیع نسیئة نه دې نو بیا خود دې مسئلې حکم واضح دې چه بالاتفاق ناجائز دې دا دواړه د اموال ربویه نه دې، نو بیا د افضل او غیر افضل متعلق د سوال کولو څه معنی؟ او که مراد د دې بیع نه هغه ده چه یدا بید وی نو بیا په دې کښې دوه احتمالات دی، متفاضلا یا متساویا، که متساویا مراد وی نو بیا خو بالاتفاق جائز دې، او که متفاضلا مراد دې نو په دې صورت کښې هم ائمه ثلاث او د جمهورو په نزد خو جائز دې خو دا صورت د امام مالک رحمته الله علیه په نزد ناجائز دې، ځکه چه د هغوی په نزد لکه چه مخکښې تیر شو حنطه او شعیر متحد الجنس دی، په دې صورت کښې د سعد رضی الله عنه جواب د به د مالکیانو د مسلک مطابق وی کیدې شی د هغوی رائي هم د امام مالک رحمته الله علیه موافق وی، خو په دې صورت کښې د سعد رضی الله عنه استدلال کول په دې حدیث سره کوم چه هغوی ذکر او فرمائیلو یعنی بیع التمر بالرطب نه بیع متساویا مراد دې نه متفاضلا، بیا د سعد رضی الله عنه په خپله مسئله کښې د دې حدیث نه استدلال کول څنگه صحیح کیدې شی په دې وجه مونږ وئیلې وو چه دا حدیث مشکل دې.

### بیع الرطب بالتمر کښې د امام صاحب اختلاف او دلیل:

بیع الرطب بالتمر والا مسئله خپله اختلافی دی او د علماء کرامو په مینځ کښې مشهور دې هغه دا چه بیع الرطب بالتمر متساویا د جمهور علماء ثلاثه او صاحبینو په نزد هم د دې حدیث په بناء باندې ناجائز دی، ځکه چه رسول الله صلی الله علیه و آله د صحابه کرامو رضی الله عنهم نه تپوس فرمائیلې وو چه آیارطب د خشک کیدو نه پس کمیرې، نو صحابه کرامو رضی الله عنهم عرض او کړو جی کمیرې ————— په دې باندې رسول الله صلی الله علیه و آله د دې نه منع او فرمائیلو، ځکه چه فی الحال مساوات موندلې کیرې خو بیا په مستقبل کښې بعد الییس مساوات باقی نه پاتې کیرې، خو په دې مسئله کښې د امام ابو حنیفه رحمته الله علیه رائي د جمهورو خلاف د جواز بیع دې هغوی فرمائی ځکه چه رطب د دوه حالو نه خالی نه دې، یا هغه د جنس التمر نه وی یا نه، که من جنس المتمر وی نو چه څنگه بیع التمر بالتمر متساویا بالاتفاق جائز دې، هم دغه شان دا هم جائز کیدل پکار دی، او که شق ثانی واخستلې شی یعنی دا چه رطب من جنس

التمر نه وی بلکه خلاف جنس نه دی نو په دې باره کښې خپله په حدیث کښې تصریح ده (واذا اختلف الجنسان فبیعوا کیف شتم) پس حاصل دا چه که رطب د تمر د جنس نه وی نو د اول حدیث د وجې نه دا بیع جائز کیدل پکار دی، او که د خلاف جنس نه وی نو بیا د آخر حدیث د وجې نه دا بیع ناجائز کیدل پکار دی خو دا حدیث سعد بن ابی وقاص رضی الله عنه په کوم کښې چه رسول الله صلی الله علیه و آله دا تیوس او فرمائیلو (اینقص الرطب اذا بیس) د امام ابوحنیفه رحمته الله خلاف دی د دې جواب صاحب هدایه وغیره دا ورکړې دي چه د دې حدیث بنیاد په زید بن عیاش باندې وهو مجهول، او یو جواب دا ورکړې شوي دي چه دا حدیث په بیع نسیئة باندې محمول دي لکه چه د هم دي حدیث دویم طریق کښې صراحة را روان دي، (رسول الله صلی الله علیه و آله عن بیع الرطب بالتمر نسیئة وفي حاشية البذل عن البحر الرائق لو صح الحديث فهو مخالف للروایات الشهيرة التمر بالتمر مثلا بمثل، وإذا اختلفا فكيف شتم)

زید بن عیاش چه د چا کنیت ابو عیاش دي د دې راوی په مجهول او معروف، هم دغه شان په ثقه او ضعیف کیدو کښې د علماء رجال اختلاف دي، په بذل المجهود کښې دا ټول اختلاف ذکر شوي دي هغې ته دي رجوع او کړې شي.

والحدیث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجة، قاله المنذری

[۳۳۶۰] (۱) حَدَّثَنَا الرَّبِيعُ بْنُ نَافِعٍ أَبُو تَوْبَةَ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ يَعْنِي ابْنَ سَلَامٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ، أَنَّ أَبَا عِيَّاشٍ أَخْبَرَهُ، أَنَّهُ سَمِعَ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ، يَقُولُ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الرُّطَبِ بِالتَّمْرِ نَسِيئَةً"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَاهُ عُمَرَانُ بْنُ أَبِي أَنَسٍ، عَنْ مَوْلَى لَبْنَى مَخْزُومٍ، عَنْ سَعْدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحْوَهُ.

د زید ابو العیاش نه روایت دي فرمائی چه د سعد بن ابی العاصف رضی الله عنه نه مې اوریدلی دی چه نبی صلی الله علیه و آله منع فرماتیلی ده د خرڅولو د تازه کهجوروید او چو کهجورو په طور د قرض سره. امام ابوداود فرمائی چه دا روایت عمران بن ابی انس هم د سعد نه نقل کړې دي.

## باب فی المزائنة

د مزاینه بیان

د بیع مزاینه تعریف او وجه تسمیه :

د بیع مزاینه تعریف دا دي (بیع ما علی الشجر من التمر بالتمر المجذوذ کیلا) یعنی د باغ د مالک د هغه کهجورو کومې چه په اونو باندې لکیدلې وی اندازه لگولو سره د هغه کهجورو په بدله کښې کیل کولو سره خرڅول کوم چه په زمکه باندې شو کیدلې پرتې وی ځکه چه د اونو د کهجورو مقدار صرف په اندازه سره متعین کړې شوي دي په دې وجه داسې ځان پوهه کړئ چه دا بیع التمر بالتمر جزافا دي نه کیلا، او په دې صورت کښې دکمی زیاتی قوی احتمال دي چه هغه ربا ده، هم په دې وجه دا بیع بالاجماع ناجائز ده، دا ماخوذ دي د زبن نه بمعنی الدفع، په دې بیع کښې چونکه ظن غالب وی د دې خبرې چه



متعاقدین کښې د یو زیاته فائده وی او د دویم نقصان چه د هغې علم روستو کیرې، نو اوس هغه د نقصان د علم نه پس کوشش کوی د دې بیع د فسخ کولو، او د دې چه کوم مقابل دې هغه د فسخ دپاره نه تیاریرې، د هغه نفع د بیع په باقی ساتلو کښې وی په دې وجه په دې کښې د جانیینو نه مدافعت وی هم په دې وجه دې بیع ته مزاینه وائی.

[۳۳۶۱] حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ بَيْعِ الثَّمَرِ بِالثَّمَرِ كَيْلًا، وَعَنْ بَيْعِ الْعِنَبِ بِالزَّيْبِ كَيْلًا، وَعَنْ بَيْعِ الزَّرْعِ بِالْحِنْطَةِ كَيْلًا".

د ابن عمر رضی اللہ عنہما نه روایت دې فرمائی چه نبی علیه الصلاة والسلام منع فرمائیلی ده د خرخولو دکهجوړو نه په کهجوړو باندې په پیمانہ کولو سره او همدارنگی د خرخولو د انگورونه په اوڅکو باندې په پیمانہ کولو سره او همدارنگی د خرخولو د فصل په وړو باندې په پیمانہ کولو سره.

قوله: (عَنْ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - نَهَى عَنْ بَيْعِ الثَّمَرِ بِالْثَّمَرِ كَيْلًا وَعَنْ بَيْعِ الْعِنَبِ بِالزَّيْبِ كَيْلًا وَعَنْ بَيْعِ الزَّرْعِ بِالْحِنْطَةِ كَيْلًا)

### شرح الحديث :

یعنی رسول الله ﷺ منع او فرمائیلہ د هغه کهجوړو د بیع نه کوم چه په اونه باندې لگیدلې وی د هغه کهجوړو په بدله کښې کومې چه شوکیدلې دی په کیل کولو سره، د کیلا تعلق د هغه کهجوړو سره دې کوم چه په زمکه باندې راشوکیدلې پرتې وی، ځکه چه کومې په اونه کښې دی د هغې ناپ او کیل کول خو ممکن نه دې، او هم دغه شان ئې منع او فرمائیلہ رسول الله ﷺ د انگورو د بیع نه چه په اونو باندې دې د اوسکو په بدل کښې اوسکولر په کیل سره، او دریم جزء د حدیث دا دی چه منع او فرمائیلہ رسول الله ﷺ د ولاړ فصل د خرخولو نه د غنمو په بدل کښې کیل کولو سره.

وجه د منع ښکاره ده چه د دې ټولو بیوعو بنیاد په تخمین باندې دې چه په هغې کښې د تفاضل احتمال قوی دې کوم چه ربا ده د اتحاد دجنس د وجې نه. والحديث اخرجه البخاری ومسلم والنسائی وابن ماجة بنحوه، قاله المنذرى

### باب فِي بَيْعِ الْعَرَايَا

#### د بیع العرایا بیان

[۳۳۶۲] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدٍ بَنُ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "رَخَّصَ فِي بَيْعِ الْعَرَايَا بِالْثَّمَرِ وَالرُّطْبِ".

۱: صحيح مسلم البيوع ۱۴ (۱۵۴۲)، (تحفة الأشراف: ۸۲۷۳، ۸۱۳۱)، وقد أخرجه: صحيح البخاري البيوع ۸۲ (۲۱۸۵)، سنن النسائي البيوع ۳۰ (۴۵۳۷)، ۳۷ (۴۵۵۳)، سنن ابن ماجه للتجارات ۵۴ (۲۲۶۵)، موطا امام مالك البيوع ۸ (۱۰)، مسند

احمد (۱۶۸، ۷/۲) (صحيح)

۲: سنن النسائي البيوع ۳۱ (۴۵۴۱)، (تحفة الأشراف: ۳۷۲۳، ۳۷۰۵)، وقد أخرجه: صحيح البخاري البيوع ۷۵ (۲۱۷۳)، سنن

النسائي البيوع ۸۴ (۲۱۸۸)، المساقاة ۱۷ (۲۳۸۰)، صحيح مسلم البيوع ۱۴ (۱۵۳۹)، سنن الترمذي البيوع ۶۳ (۱۳۰۲)، سنن

ابن ماجه للتجارات ۵۵ (۲۲۶۸)، موطا امام مالك البيوع ۹ (۱۴)، مسند احمد (۱۸۱/۵، ۱۸۲، ۱۸۸، ۱۹۲)، سنن الدارمي /

البيوع ۲۴ (۲۶۰۰) (صحيح)

زید بن ثابت دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه نبی ﷺ په بیع عرایا (وقف کړې شوي کښې اوچي اولدي کهجوري دیوبل په بدل کښې دورکولو اجازت ورکړی دي.  
 قوله: ﴿ أَخْبَرَنِي خَارِجَةُ بِنْتُ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- رَخَّصَ فِي بَيْعِ الْعَرَايَا بِالتَّمْرِ وَالرُّطَبِ ﴾

### د عرایا په حقیقت او مصداق کښې اختلاف د ائمه :

عرایا د عریة جمع ده، عریه په معنی د عطیه، د دې جمع عرایا لکه عطیه جمع د عطایا، په عریه کښې د جمهور علماء او احنافو اختلاف دې. د دې په حکم کښې هم او حقیقت کښې هم، پس وړاندې مستقل باب را روان دې تفسیر العرایا د جمهورو په نزد عرایا د بیع د قبیلې نه دې، په بلکه د بیع مزابنه یو فرد دې.

او کوم حقیقت چه د بیع المزابنه دې د جمهورو په نزد هم حقیقت د عرایا دې، لکن لا مطلقا بل فی مقدار مخصوص، یعنی بیع مزابنه چه د هغې تفسیر پورته باب کښې تیر شوې دی، هغه عند الجمهور په یو مخصوص مقدار کښې جائز دې، او د هغې نه زائد کښې جائز نه دې، د هغه مقدار نه که زیاتې وی نو بیا به د هغې نوم بیع العریة نه وی بلکه بیع المزابنه به وی چه ممنوع دې، او هغه مخصوص مقدار څه دې د دې وړاندې مستقل باب را روان دې، پس امام نووی رحمته الله علیه چه د عریه کوم تعریف کړې دې د هغې خلاصه دا ده چه یو سړې چه هغه سره اوچې کهجوري دی هغه یو باغ ته تلو سره داسې معامله اوکړی چه د خپل باغ په هغه څو اونو باندې چه کومه میوه ده په یو خالص سره د هغې خرص اوکړی یعنی دا چه په دې باندې چه کومې شنې کهجوري لگیدلې دی د خشک کیدو نه پس د دې به څه مقدار وی نو هم د دې مقدار برابر مانه دا کهجوري واخله او دا اونې ماته حواله کړه پس هغوی دواړه تقابض فی المجلس اوکړی مشتری د کهجورو هغه مقدار صاحب نخل ته حواله کړی او صاحب نخل هغه نخیل لره مشتری ته حواله کړی، خو په مخصوص مقدار کښې دننه یعنی ما دون خمسة اوسق، او که هغه کهجوري پوره پنځه وسق وی په دې کښې د امام شافعی رحمته الله علیه دوه قوله دی، اصح القولین د عدم جواز دې (۱) او د احنافو په نزد د بیع مزابنه هیڅ فرد هم جائز او حلال نه دې، او عریه چه د هغې حقیقت عند الجمهور بیع ده. د احنافو په نزد د دې حقیقت بیع نه ده بلکه تبادله فی الهبة ده چه د هغې شکل دا دې چه هغه سړې د لوڼې باغ والا دې هغه د خپل باغ څو اونو لره یعنی هغه میوو لره یو غریب سړی ته هبه کړی چه هغه غریب شخص هم د دې اونو د میوې نه منتفع کیږی، پس هغه نادار سړې یعنی معری له وقتا فوقتا په دې باغ کښې د دې اونو نه د میوو اخستلو دپاره ورځی د هغه په دې بار بار تلو راتلو باندې هغه باغ والا ته تکلیف رسیږی ځکه چه سره د خپل اهل و عیال په باغ کښې مقیم دې نو په دې باندې هغه باغ والا د دې تکلیف نه د بچ کیدو دپاره دا صورت اختیاروی چه هغه دې معری له ته دا وائی چه ته اندازه کولو سره دا اوبنایه چه په

(۱) د بذل په عبارت کښې دلته په نقل کښې د کاتب نه خطاء واقع شوه چه په ځانې د (لا یجوز) په هغې کښې (یجوز) لیکلې شوي دي، فلیحرر)



دې اونو باندې چه کومه ميوه ده هغه به خومره وي چه هم د هغې په اندازه مونږ تاته تمر يعني شوکولې شوې کهجوري د اوچو ميوو دشوکولو په وخت کښې ادا کړو. اوس ظاهره دا ده چه آيا دې غريب ته په دې کښې انکار کيدې شي هغه ته چه څه ملاويږي وپړيا دی. باقاعده څه بيع خو ده نه، هغه دا منظور وي او د دې په جائز کيدو کښې هيڅ د تردد خبره نشته، پس احناف هم دا وائي چه احاديثو کښې د عريه ذکر راځي د هغې حقيقت دا دې ( ) يعني د معري لره معري له ته دشو کهجورو په بدله کښې چه کومې په اونو باندې لگيدلې دي اخستلو سره د هغې په بدل کښې تمر يعني اوچې کهجوري ورکول په موطاء محمد کښې هم د امام مالک رحمه الله نه د عريه هم دا تفسير منقول دې د احنافو په نزد دا معامله صرف د واهب او موهوب له ترمينځه ده او د شوافعو او حنابله په نزد چونکه د عريه حقيقت د بيع دې يعني د بيع مزابنه يو فرد لهذا د هغوی په نزد د دې قسم معامله هرچا سره کيدې شي لکه څنگه چه بيع وي، د هغوی په نزد د دې معاملې متعلق واهب او موهوب له سره نه دې، په دې وجه دا هغوی بيع منلې ده او د هر سړي سره په مخصوص مقدار کښې دې بيع لره جائز کړه، اوس دا چه هغه مقدار مخصوص کړې دې د دې بيان وړاندې په مستقل باب کښې را روان دې، د مالکيانو مسلک په دې کښې بين بين دې پس حضرت شيخ په الابواب والتراجم کښې مذاهب اربعة په دې باره کښې داسې ليکلې دي، وحاصل اختلاف الائمة في ذلك انها رجوع الواهب في هبته بعوض عند الحنفية وشراء الواهب هبته عند المالكية وقال الشافعي واحمد ان هذا القدر اى مقدار خمسة اوسق مستثنى من النهى عن المزابة فيجوز بيعه مع الواهب وغيره، كذا في هامش اللامع آه.

[۳۳۶۳] ( ) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَظْمَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "مَنْ بَاعَ التَّمْرَ بِالتَّمْرِ، وَرَخَّصَ فِي الْعَرَايَا أَنْ تَبَاعَ بِمِثْلِهَا يَأْكُلُهَا أَهْلُهَا رَطْبًا".

دسهل بن ابی خثمة رضي الله عنه نه روایت دېې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائیلی ده دخرخولو د کهجورو په کهجورواوپه بيع عرايا کښې ئې دخرخولو اجازت ورکړې دې ددې دپاره چه صارفينو ته تازه کجوري مهيا کړې شي.

۱. په بدل کښې د بدائع نه نقل کړې دې چه د احنافو په نزد د عريه تفسير هغه دې کوم چه امام مالک رحمه الله په موطاء کښې ذکر فرمائيلې دې ( وهو يكون لرجل نخيل فيعطي رجلا منها ثمرة نخلة او نخلتين يلقطهما لعياله ثم يثقل عليه دخوله حائطه فيسأله ان يتجاوز له عنهما علي ان يعطيه بمكيلتها تمر عند صرام النخل، وذلك ما لا بأس به عندنا، لانه لا بيع هناك بل التمر كله لصاحب النخل فان شاء سلم له ثمر النخل وان شاء اعطاه بمكيلتها من التمر الا انه سماه الراوي بيعا لتصوره بصورة البيع لا ان يكون بيعا حقيقة بل هو عطية الا تري انه لم يملكه المعري له لاتعدام القبض فكيف يجعل بيعا، ولانه لو جعل بيعا لكان بيع التمر بالتمر الي اجل وانه لا يجوز بلا خلاف. الي آخر ما في البذل )

۲. صحيح البخاري البيوع ۸۳ (۲۱۹۱)، المساقاة ۱۷ (۲۳۸۴)، صحيح مسلم البيوع ۱۴ (۱۵۴۰)، سنن الترمذي البيوع ۶۴ (۱۳۰۳)، سنن النسائي البيوع ۳۳ (۴۵۴۸)، (تحفة الأشراف: ۴۶۴۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۴) (صحيح)

## باب فی مقدار العریة

دبیع عرایا د مقدار بیان

[۳۳۶] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ الْحَصِينِ، عَنْ مَوْلَى ابْنِ أَبِي أَحْمَدَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَقَالَ لَنَا الْقَعْنَبِيُّ: فِيمَا قَرَأَ عَلَى مَالِكٍ، عَنْ أَبِي سَقِيَّانَ وَاسْمُهُ قَزَمَانُ مَوْلَى ابْنِ أَبِي أَحْمَدَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "رَخَّصَ فِي بَيْعِ الْعَرَايَا فِيمَا دُونَ خُمْسَةِ أَوْسُقٍ" شَكَ دَاوُدُ بْنُ الْحَصِينِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: حَدِيثُ جَابِرٍ، إِلَى أَرْبَعَةِ أَوْسُقٍ.

ابوهریره رضی اللہ عنہ نه روایت دی فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم د عرایا د خرخولو اجازت ورکړې دې خو په دې شرط چه د پنځه وسقه داندازي نه کم وي یا په پنځه وسقو کښې داخل وي ځکه چه عموما د خوراک دپاره ددې نه زیات ته ضرورت نه پېښیږي، امام ابوداود وائی د جابر په حدیث کښې د عرایا اندازه څلور وسقه ښودل شوي ده.

### د مسئله الباب تشریح او په هغې کښې اختلاف ائمه :

یعنی په کوم مقدار کښې چه عریه جائز ده هغه څه دي؟ د ما دون خمسة اوسق په جواز کښې خو د جمهورو اتفاق دي او د ما فوق خمسة اوسق په عدم جواز باندې اتفاق دي، او خمسة اوسق یعنی پوره پنځه وسقه کښ، د دې په باره کښې په روایت کښې شک د راوی دي، لکه چه په حدیث الباب کښې دی، پورته د امام نووی رحمته اللہ علیہ په کلام کښې تیر شوې دی چه هغوی په دې کښې دوه اقوال دي، او اصح قول عدم جواز دي، ابن المنذر فرمائی چه په پنځه وسقو کښې دننه رخصت مشکوک فیه دي، او نهی عن المزبنة ثابت دي، پس ضروری ده چه دې پنځه وسقو کښې عریه مباح نه شی سوا د قدر متیقن نه، او بیا وړاندې فرمائی چه دې حدیث لره جابر رضی اللہ عنہ نه هم روایت کړې دي (فانتهی به الى اربعة اوساق) یعنی د جابر رضی اللہ عنہ په روایت کښې صرف څلور وسقه مذکور دی لهذا صرف هم په دې مقدار کښې به عریه مباح وی او د دې نه په زیات کښې محظورو ممنوع، (هذا القول صحيح وقد الزمه المزي الشافعي وهو لازم على اصله ومعناه قاله الخطابي) یعنی د امام مزنی رحمته اللہ علیہ تحقیق هم دا دي (۲) او هغوی د امام شافعی رحمته اللہ علیہ مسلک هم دا منلې دي لکه د امام شافعی رحمته اللہ علیہ قاعده ده آه دا اشاره ده هغه طرف ته کوم چه د امام شافعی رحمته اللہ علیہ نه منقول دی (اذا صح الحديث فهو مذهبي) د امام احمد رحمته اللہ علیہ په نزد جواز صرف په مادون الخمسة کښې او د مالکیانو په نزد راجح قول د پنځه وسقو د جواز دي او د شوافعو رحمته اللہ علیہ په نزد عدم جواز دي د حنابلة په شان (من التحفة وغيره)، والحديث أخرجه البخاري ومسلم والنسائي، قاله المنذري

(۱): صحيح البخاري/البیوع ۸۳ (۲۱۹۰)، والمساواة ۱۷ (۲۳۸۲)، صحيح مسلم/البیوع ۱۴ (۱۵۴۱)، سنن الترمذي/البیوع ۶۳ (۱۳۰۱)، سنن النسائي/البیوع ۳۳ (۴۵۴۵)، (تحفة الأشراف: ۱۴۹۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۲۳۷) (صحيح)  
(۲): کوم چه د ابن المنذر دي یعنی څلور وسقه،



## باب تفسیر العرایا

## د عرایا تفسیر

[۳۳۶۵] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ الْهَمْدَانِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، عَنْ عَبْدِ رَبِّهِ بْنِ سَعِيدٍ الْأَنْصَارِيِّ، أَنَّهُ قَالَ: "الْعَرِيَّةُ الرَّجُلُ يُعْرِى النَّخْلَةَ أَوِ الرَّجُلُ يَسْتَلْنِي مِنْ مَالِهِ النَّخْلَةَ أَوِ الْإِثْنَتَيْنِ، يَأْكُلُهَا، فَيَبِيعُهَا بِتَمْرٍ".

د عبد ربه بن سعيد الأنصاري نه روایت دې وئيلي ئې دي عريه داده چه یوسړې چاته د کجوري ونه یا په ټول باغ کښې یوه ونه دوه ونې د استعمال دپاره جدا کړي او هغه داونه دو چوکجورو په بدل کښې واخلي او یا ددې عوض خرڅ کړي.

قوله: « عَنْ عَبْدِ رَبِّهِ بْنِ سَعِيدٍ الْأَنْصَارِيِّ أَنَّهُ قَالَ الْعَرِيَّةُ الرَّجُلُ يُعْرِى النَّخْلَةَ أَوِ الرَّجُلُ يَسْتَلْنِي مِنْ مَالِهِ النَّخْلَةَ أَوِ الْإِثْنَتَيْنِ يَأْكُلُهَا فَيَبِيعُهَا بِتَمْرٍ »

یعنی یو سړې (صاحب نخل) دویم سړی ته ورکړی ثمر د نخل بیا روستو معری له معری لره هغه ثمر نخل خرڅوی د تمر په بدل کښ، حضرت په بذل کښې فرمائی چه د عریه دا تفسیر په دې صورت کښې د احنافو د مسلک موافق دې (۱) او که (۲) بیعها معنی دا واخستلې شی چه هغه معری له د معری نه علاوه د بل سړی په لاس هغه خرڅ کړی نو بیا به بیشکه زمونږ د مذهب خلاف وی، او دویم شکل چه کوم په دې حدیث کښې تفسیر عریه ذکر شوي دې یعنی « او الرجل يستلني من ماله » د دې مطلب دا دې چه یو سړی د خپل باغ د بیع په وخت یو کرت یا دوه کرته استثناء او کړی یعنی هغه خرڅ نه کړی د خپل خوراک دپاره خو بیا روستو د هغه دواړه اونو میوو لره د تمر په بدله کښې د هم هغه سړی په لاس خرڅ کړی، د عرایا تفسیر بالتفصیل په رومبی باب کښې تیر شوي دي.

[۳۳۶۶] حَدَّثَنَا هَنَّادُ بْنُ السَّرِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ ابْنِ إِسْحَاقَ، قَالَ: "الْعَرَايَا أَنْ يَهَبَ الرَّجُلُ لِلرَّجُلِ النُّخْلَاتِ، فَيَشْقَى عَلَيْهِ أَنْ يَقُومَ عَلَيْهَا، فَيَبِيعُهَا بِمِثْلِ خَرْصِهَا".

د ابو اسحاق نه روایت دې فرمائی چه عرایا دي ته وئيلي شی چه یو کس چاته دیوڅو ونو میوه هبه کړي دخوراک وغیره دپاره، او بیا مالک ته ددغه کس راټلل او اوسیدل گران شی او هغه د مالک په لاس باندي د میوې اندازه ولگئ ددې ونو اویائی په تازه کجور و باندي خرڅي کړي. « عن ابن اسحاق قال: العرایا ان يهب الرجل الرجل النخلات فيشقى عليه ان يقوم عليها فيبيعها بمثل خرصها » په بذل کښې د دې په باره کښې لیکلې دی وهذا التفسیر ایضا موافق لما فسر به ابو حنیفة آه غور او کړئ په فهم کښې په موراشی، خو د بیع نه به صورت د بیع مراد وی.

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۹۵۱) (صحیح الإسناد)

(۲): خود بیع د صورت نه به بیع مراد وی کما لا یخفی،

(۳): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۲۸۵) (صحیح الإسناد)

## باب فی بیع الثمار قبل أن یبدو صلاحها

د میوی د پخیدلو نه مخکښې دهغې د خرڅولو بیان

یعنی د اونیو د میوو بیع د هغه میوو د صلاحیت ښکاره کیدو نه مخکښې کول، بدو په معنی د ښکاره والی، او د صلاح نه مراد قابلیت د انتفاع.

[۳۳۶۷] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ بَيْعِ الثَّمَارِ حَتَّى يَبْدُوَ صِلَاحُهَا، نَهَى الْبَائِعَ وَالْمُشْتَرِيَ".

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله د میوې د تیاریدو اود پخیدلو دقیقین راتلونه مخکښې د خرڅولو نه منع فرمائیلي ده، اغستونکې او خرڅونکې دواړه ئې منع کړي دي.

### مسئله مترجم بها صور مختلفة مع بیان الحكم

خان پوهول پکار دی چې د بیع ثمار درې صورتونه دی قبل الظهور، قبل بدو الصلاح او بعد بدو الصلاح، په دې کښې د رومبی صورت حکم دا دې چې په بالاجماع جائز نه دې ځکه چې دا بیع معدوم ده میوې لا ښکاره شوې هم نه وی، صرف گلونه (یعنی غوټې) ښکاره کیدل شروع شوې دی، او د دریم صورت حکم دا دې «انه يجوز بالاجماع» یعنی د قابلیت د انتفاع نه پس، او درمیانی صورت کوم چې په ترجمة الباب او حدیث الباب کښې مذکور دې یعنی بیع الثمار قبل بدو الصلاح، د هغې درې صورتونه دی بشرط الترك علی الاشجار، یعنی اخستونکې د بائع سره دا شرط پدې چې زه به فی الحال دا میوې شوکولو سره ستا اونې نه فارغوم، دا بالاجماع ناجائز ده، او دویم صورت ئې دا دې بیع بشرط القطع، یعنی بائع دا شرط اولگولو چې د دې میوو په داسې حال کښې شوکولو سره به زما اونې فارغوی. دا بالاتفاق جائز دې، دریم صورت اطلاق او عدم تقييد یعنی چې نه د ترک شرط لگولې شوې وی او نه د قطع، بلکه بیع ئې مطلق پریخودلې وی، په دې صورت کښې د احنافو په نزد جائز ده او د جمهورو په نزد ناجائز، لهذا په حدیث الباب کښې چې دا راغلی دی «نهی عن بیع الثمار حتی یبدو صلاحها» دا زمونږ په نزد په بیع بشرط الترك باندې محمول دې، والله تعالی اعلم کذا التذکر من الشروح.

«والحدیث أخرجه مسلم والنسائي وابن ماجة، قاله المنذرى»

[۳۳۶۸] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُليَّةَ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ بَيْعِ الثَّمَلِ حَتَّى يَزْهُوَ، وَعَنِ السَّنْبَلِ حَتَّى يَبْيَضَ، وَيَأْمَنَ الْعَاثَةُ نَهَى الْبَائِعَ وَالْمُشْتَرِيَ".

۱: صحيح البخاري/الزكاة ۵۸ (۱۴۸۶)، البيوع ۸۲ (۲۱۸۳)، ۸۵ (۲۱۹۴)، ۸۷ (۲۱۹۹)، صحيح مسلم/البيوع ۱۳ (۱۵۳۴)، سنن الترمذي/البيوع ۱۵ (۱۲۲۶)، سنن النسائي/البيوع ۲۶ (۴۵۲۶)، سنن ابن ماجة/التجارات ۳۲ (۲۲۱۴)، (تحفة الأشراف: ۸۳۰۲، ۸۳۵۵)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/البيوع ۸ (۱۰)، مسند احمد (۷/۲، ۸، ۱۶، ۴۶، ۵۶، ۵۹، ۶۱، ۸۰، ۱۲۳)، سنن الدارمي/البيوع ۲۱ (۲۵۹۷) (صحيح)

۲: صحيح مسلم/البيوع ۱۳ (۱۵۳۵)، سنن الترمذي/البيوع ۱۵ (۱۲۲۷)، سنن النسائي/البيوع ۳۸ (۴۵۵۵)، (تحفة الأشراف: ۷۵۱۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۵/۲) (صحيح)



د ابن عمر رضی اللہ عنہ نه روایت دی فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم د کجورو د پخیدونه مخکنې ددې د خرڅولونه منع فرمائيلي ده اودوگي د خرڅولونه ترڅوچه پاخه شوي نه وی اوسپين شوي نه وی اوتردې چه دافت نه محفوطي شي اوهمدارنگي خرڅونکې ئې د خرڅولونه اواخستونکې ئې داخستلونه منع کړې دي.

يعنی منع اوفرمائيله نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د تمر د بيع نه چه ترڅو پورې دا تمر رنگدار نه شی، په کهجورو باندې رنگ راتلل سوروالې يا زيروالې وغيره دا علامت دي ددې د صلاح صحيح کيدو، لهذا ددې نه مخکنې به دا نه شی خرڅولې، او دغسې منع اوفرمائيله نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د سنبل (وگي) د بيع نه، يعني د غنمو وغيره د وگي (بمبلو) د بيع نه، چه ترڅو پورې په دې غنمو کښې سپين والې رانه شی، او دا د آسماني آفت نه محفوظ نه شی. په دې آخری جمله کښې اشاره ده دنهی علت طرف ته، يعني ددې خيزونو بيع که بالکل په شروع کښې اوکړې شی نو پته نه لگي چه دا په کوم يو آسماني آفت سره ضائع شی چه په دې کښې داخستونکي نقصان ښکاره دي، والحديث اخرجه مسلم والترمذی والنسائي، قاله المنذرى.

[۳۳۶۹] (۱) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرَ التَّمَرِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ حُمَيْرٍ، عَنْ مَوْلَى لُقْرِيشَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الْغَنَائِمِ حَتَّى تَقْسَمَ، وَعَنْ بَيْعِ النَّخْلِ حَتَّى تُخْرَزَ مِنْ كُلِّ عَارِضٍ، وَأَنْ يُصَلِّيَ الرَّجُلُ بِغَيْرِ حِزَامٍ."

د ابوهريره رضی اللہ عنہ نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم د تقسیم نه مخکنې د غنیمت د خرڅولو نه منع فرمائيلي ده اود کجورو د خرڅولو نه ئې هم منع فرمائيلي ده ترڅوچه دافت نه محفوطي شي اوبغير د کمر بند نه ئې د مونځ کولو نه منع فرمائيلي ده.

﴿عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الْغَنَائِمِ حَتَّى تَقْسَمَ وَعَنْ بَيْعِ النَّخْلِ حَتَّى تُخْرَزَ مِنْ كُلِّ عَارِضٍ وَأَنْ يُصَلِّيَ الرَّجُلُ بِغَيْرِ حِزَامٍ"﴾

يعنی منع اوفرمائيله رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د مال غنیمت د بيع نه ترڅو چه هغه تقسیم شوي نه وی، ځکه چه د تقسیم نه پس هغه د سړي په ملکیت کښې راځي او هم دغه شان د کهجورو د بيع نه ترڅو چه هغه محفوظ نه شی د هر قسم عارض سماوی نه (عارض مثلاً تیزه هوا، سيلی يا گلې وغيره) او ددې نه ئې هم منع اوفرمائيله چه يو انسان مونځ کوي تهېند لره بغیر د تړلو نه حزام يعني کمر بند وغيره، مطلب دا دي چه د مانځه نه مخکنې تهېند لره ښه برابرولو سره تړل پکار دی چه د مانځه دوران هغه درست کول نه وی، ددې نه پس نور هم ددې مضمون دوه احاديث دي.

[۳۳۷۰] (۲) حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ خَلَّادٍ الْبَاهِلِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ سَلِيمِ بْنِ حَيَّانَ، أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ مِينَاءَ، قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يَقُولُ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تَبَاعَ الثُّمَرَةُ حَتَّى تُشَقَّ، قِيلَ: وَمَا تُشَقُّ؟ قَالَ: تُحْمَرُ، وَتَصْفَرُ، وَيُؤْكَلُ مِنْهَا."

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۴۹۳)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۳۸۷/۲، ۴۵۸، ۴۷۲) (ضعيف الإسناد)  
(۲): صحيح البخاري للبيوع ۸۵ (۲۱۹۶)، ۸۷ (۲۱۹۸)، ۹۳ (۲۲۰۸)، صحيح مسلم للبيوع ۱۳ (۱۵۳۶)، (تحفة الأشراف: ۲۲۵۹)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۳۱۹/۳، ۳۶۱) (صحيح)

د سعید بن میناء نه روایت دې فرمائی چه د جابر بن عبد الله رضی الله عنه نه مې واوریدل چه وئیل ئې نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائیلی ده د خرڅولو د میوې نه ترڅو چه شق شوي نه وی عرض او کړې شو چه تشقح څه شی دې؟ نووئې فرمائیل چه سره اوزیره شوي نه وی او د خوراک قابل شوي نه وی.

[۳۳۷۱] (۱) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ حَمِيدٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "مَنْ بَاعَ الْعَنْبَ حَتَّى يَسْوَدَ، وَعَنْ بَيْعِ الْحَبِّ، حَتَّى يَشْتَدَّ".

د انس رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائیلی ده د خرڅولو دانگورونه ترڅو چه تور شوي نه وی او د خرڅولو د غلې نه ئې منع فرمائینې ده ترڅو چه پخه شوي نه وی.

[۳۳۷۲] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عَنَسَةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنِي يُونُسُ، قَالَ: سَأَلْتُ أَبَا الزِّنَادِ، عَنْ بَيْعِ التَّمْرِ قَبْلَ أَنْ يَبْدُوَ صَلَاحَهُ، وَمَا ذَكَرَ فِي ذَلِكَ. فَقَالَ: كَانَ عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، يُحَدِّثُ عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَتْمَةَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، قَالَ: "كَانَ النَّاسُ يَتَّبِعُونَ التَّمَرَ، قَبْلَ أَنْ يَبْدُوَ صَلَاحَهَا، فَإِذَا جَدَّ النَّاسُ، وَحَضَرَ تَقَاضِيهِمْ، قَالَ: السُّبْتَاءُ قَدْ أَصَابَ التَّمْرَ الدَّمَانُ، وَأَصَابَهُ قَشَامٌ، وَأَصَابَهُ مَرَأَضٌ، عَاهَاتٌ، يَخْتَجُونَ بِهَا، فَلَمَّا كَثُرَتْ خُصُومَتُهُمْ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَالْمَشُورَةِ يُشِيرُ بِهَا فَإِمَّا لَا تَتَّبِعُوا التَّمَرَ حَتَّى يَبْدُوَ صَلَاحَهَا، لِكثَرَةِ خُصُومَتِهِمْ وَاخْتِلَافِهِمْ".

د یونس نه روایت دې چه د ابو الزناد نه مې تپوس او کړو چه د میوې خرڅول د پخیدلونه مخکښې څنگه دې؟ او په دې باره کښې د نبی صلی الله علیه و آله ارشادات څه دې؟ هغه او وئیل چه عروه بن زبیر د سهل بن ابی حتمه نه روایت کړې دې او هغه د زید بن ثابت رضی الله عنه نه روایت کړې دې چه فرمائیل ئې خلقوبه خپلې میوې د پخیدونه مخکښې خرڅولې لیکن کله به چه خلقو د شوکولو قصد او کړو او ددې د وصول کولو وخت به راغې نو خریدار به وئیل چه په دې میوې دمان یا قشام مرض راغلې دې په دې وجه باندي به اغستونکي دا غوښتل چه په قیمت کښې کمې او کړې شي او یادا چه بالکل قیمت ورنکړي او خرڅونکي به دي ته تیار نه وو، کله چه نبی صلی الله علیه و آله ته دا قسم ډیري جگړې راغلې نو خلقوته ئې بطور مشهوره او فرمائیله چه تاسو میوې مه خرڅوئ ترڅو چه ددې د بهترین کیفیت معلوم شوې نه وی ځکه چه هغوی په دې سلسله کښې ډیري جگړې او اختلافات کړي وو.

﴿ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ كَانَ النَّاسُ يَتَّبِعُونَ التَّمَرَ قَبْلَ أَنْ يَبْدُوَ صَلَاحَهَا الْخ ﴾

زید بن ثابت رضی الله عنه فرمائی چه په شروع کښې د خلقو عادت وو چه د ثمار بیع به ئې کوله قبل بدو الصلاح بیا چه به کله اخستونکو هغه میوې شوکولې او د اخستونکو د طرف نه د ثمن تقاضا وی نو اخستونکي وائی چه په میوو کښې فلانئ بیماری پیدا شوې ده او فلانئ بیماری پیدا شوې ده چه د هغې په وجه زمونږ ډیر لوئې نقصان اوشو. دمان او قشام او مراض دا ټول عوارض او بیماری دی کومې چه د میوو سره متعلق دی.

﴿ فَلَمَّا كَثُرَتْ خُصُومَتُهُمْ ..... فَإِمَّا لَا تَتَّبِعُوا التَّمَرَ حَتَّى يَبْدُوَ صَلَاحَهُ ﴾

۱: سنن الترمذي/البیوع ۲۱ (۱۲۲۸)، سنن ابن ماجه/التجارات ۳۲ (۲۲۱۷)، (تحفة الأشراف: ۶۱۳)، وقد أخرجه: موطا لعام مالك/البیوع ۸ (۱۱)، مسند احمد (۱۱۵/۳، ۲۲۱، ۲۵۰) (صحیح)

۲: تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۷۱۹)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/البیوع ۸۵ (۲۱۹۲) تعليقا (صحیح)



## شرح کلام الراوی:

د حدیث راوی زید بن ثابت رضی الله عنه فرمائی چې کله دا قسم خصوصیتونه او جهگړې د دې خلقو ترمنځه ډیرې شوي نو رسول الله صلی الله علیه و آله په طور د مشورې او خیر خواهی دا او فرمائیل چې که تاسو نه دانه شی کیدې یعنی داچه د جهگړو نه ځان بچ کړئ او په خپل مینځ کښې جهگړه مه کوئ نو بیا تاسو د دې میوو بیع په داسې طریقې باندې ولې کوئ یعنی قبل بدو الصلاح. د زید بن ثابت رضی الله عنه مقصد دا دې چې د رسول الله صلی الله علیه و آله د طرف نه د بیع الثمار قبل بدو صلاحها ممانعت حتما او لازما نه دې چې د هغې د وجې نه دا بیع فاسده او منلې شی بلکه دا قسم بیع صحیح ده او نهی د رسول الله صلی الله علیه و آله د طرف نه د عارض خصومت (د جگړې) په بناء باندې دې (فاما لا) مطلب دا دې (ای ان لم تستطعوا ان لا تنازعوا) لکه چې په ترجمه کښې مونږ دا ښکاره کړه.

[۳۲۷۲] (۱) حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ الطَّلَقَانِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ بَيْعِ الثَّمَرِ حَتَّى يَبْدُوَ صَلَاحُهُ، وَلَا يُبَاعُ إِلَّا بِالْذِّينَارِ أَوْ بِالْدِرْهِمِ إِلَّا الْعَرَايَا".

د جابر رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائیلې ده د خرڅلولو د میوې نه تردې چې ددې پوځوالې او تیاریدل ښکاره شي او میوه به نه شی خرڅولې مگر په دینار یا په درهم سره مگر عرایا ددې نه مستثنی دې.

قوله: (عَنْ جَابِرٍ أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - نَهَى عَنْ بَيْعِ الثَّمَرِ حَتَّى يَبْدُوَ صَلَاحُهُ وَلَا يُبَاعُ إِلَّا بِالْذِّينَارِ أَوْ بِالْدِرْهِمِ إِلَّا الْعَرَايَا)

د دې آخری جملې مطلب دا دې چې په اونو باندې د لگیدلې میوو بیع د دراهمو او دنانیرو په عوض کښې پکار ده، یعنی د تمر مجذوذ په عوض کښې نه دی کیدل پکار، ځکه چې په دې صورت کښې به هغه بیع مزاینة شی چې هغه بالاتفاق ممنوع ده، خو د عرایا رسول الله صلی الله علیه و آله استثناء او فرمائیلې، دا استثناء د جمهورو په مسلک باندې استثناء متصل ده او د احنافو په نزد استثناء منقطع ده، لان العریة لیست بیع عندهم.

والحدیث اخرجه ابن ماجه مختصرا، قاله المنذرى

## بَابُ فِي بَيْعِ السِّنِينَ

د څو کالو پورې د ونې د میوې خرڅول درست نه دی

بیع السنین ته بیع معاومه هم وائی، یعنی د دوه یا درې کلونو میوه په یو کړت باندې اخستل په حدیث کښې د دې ممانعت راغلې دې او دا بالاجماع ناجائز ده (لانه بیع المعدوم) بلکه پکار دا ده چې د هر فصل بیع هم په هغه کال کښې اوشی.

(۱) صحیح البخاری / المساقاة ۱۶ (۲۳۸۷)، سنن ابن ماجه / للتجارات ۳۲ (۲۲۱۶)، (تحفة الأشراف: ۲۴۵۴)، وقد أخرجه: سنن النسائي / للبيع ۲۶ (۴۵۲۷)، مسند احمد (۳/ ۳۶۰، ۳۸۱، ۳۹۲) (صحیح)

[۳۳۷۴] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، وَيَحْيَى بْنُ مَعِينٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُحَمَّدٍ الْأَعْرَجِ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ عَتِيقٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ [۳۳۷۳] بَيْعِ السَّنِينِ، وَوَضَعَ الْجَوَائِحَ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: لَمْ يَصَحَّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الثَّلَاثِ شَيْءٌ، وَهُوَ رَأْيُ أَهْلِ الْمَدِينَةِ.

د جابر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائیلى ده دخو کالو پورې دوني دمیوو د خرخولونه (مثلا دوه پادري کالو پورې میوه خرڅه کړي او خریدارني دنقصان رسولونه منع کړي دي.

﴿ نَهَى عَنْ بَيْعِ السَّنِينِ وَوَضَعَ الْجَوَائِحَ ﴾ یعنی امر بوضع الجوائح، د وضع معنی ده ساقط کول او معاف کول، جوائح جمع ده د جائحه یعنی هم هغه عارض او آفت سماوی کوم چه میوو لره خراب کړی، مطلب دا دې چه د جوائح د وجې نه د میوو اخستونکو ته کوم نقصان اورسی نو د باغ مالکانو یعنی خرڅونکو لره هغه د نقصان مقدار معاف کول پکار دی، وړاندې د څو ابوابو نه پس مستقل باب راوان دي. ﴿باب فی وضع الجائحه﴾ دا عفو او وضع کومه چه د حدیث په حکم کښې راغلې ده د جمهورو په نزد د استحباب دپاره ده، د هغوی په نزد دا حدیث معروف او د احسان د قبیلې نه دې ځکه چه په مبيع کښې کوم نقصان د مشتری د قبض کولو نه پس اوموندلې شی، هغه په ضمان د مشتری کښې وی، اصولا بائع د هغې ذمه دار نه دي، د امام احمد رحمه الله او د ډیرو محدثینو په نزد امر د وجوب دپاره دي، د هغوی په نزد معاف کول واجب دی، وړاندې یو بل روایت هم راوان دي، باب فی تفسیر الجائحه، په دې باندې به کلام هم هلته راشی.

وقال المنذرى: اخرج النسائي الفصلين مفترقين، واخرج مسلم وابن ماجه عن بيع السنين.

[۳۳۷۵] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، وَسَعِيدِ بْنِ مِينَاءَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنِ الْمَعَاوِمَةِ"، وَقَالَ: أَحَدُهُمَا بَيْعُ السَّنِينِ.

د جابر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائیلى ده د معاومه نه یعنی دخو کالو پورې دوني د میوو د خرخولونه.

قوله: ﴿نَهَى عَنِ الْمَعَاوِمَةِ﴾ د دې نه مراد هم هغه بيع السنين ده، دا لفظ د عام نه مشتق دي چه هغه ئې باب مفاعلت ته یووړو، او هم دغه شان د سنه نه مسانه او د شهر نه مشاهره، او د یوم نه میاومه، یعنی روزانه او د ورځې ورځې.

والحدیث اخرجه مسلم بآتم منه، واخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى

(۱): صحيح مسلم/البیوع ۱۷ (۱۵۳۶)، سنن النسائي/البیوع ۲۹ (۴۵۳۵)، سنن ابن ماجه/التجارات ۳۳ (۲۲۱۸)، تحفة الأشراف: (۲۲۶۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۰۹/۳)، ۲۹ (۴۵۳۵) (صحيح)

(۲): صحيح مسلم/البیوع ۱۷ (۱۵۳۶)، سنن ابن ماجه/التجارات ۴۵ (۲۲۶۶)، (تحفة الأشراف: ۲۲۶۱) (صحيح)



## بَابُ فِي بَيْعِ الْغَرَرِ دووهکی والابیعی بیان

[۳۳۷۶] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ، وَعُمَانُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَا: حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الْأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ بَيْعِ الْغَرَرِ"، زَادَ عُمَانُ وَالْحَصَاةُ.

دابوهریره رضی اللہ عنہ نه روایت دی فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم منع فرمائیلی ده ددوی دبیبی نه اود گیتی غورخولو دبیبی نه.

قوله: «نَهَى عَنْ بَيْعِ الْغَرَرِ - زَادَ عُمَانُ - وَالْحَصَاةُ»

غرر (دهوکه) یعنی هغه بیع چه په هغې کنبی د بائع یا مشتری نقصان او غرر وی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د هغې نه منع فرمائیلی ده دا د یوې قاعدې کلیې په طور ده چه په هغې کنبی ډیر بیوع داخلیدی شی، مثلا د شی مجهول بیع، د عبد ابق بیع، او هم دغه شان د هر غیر مقدور التسلیم بیع لکه بیع السمک فی الماء وبيع الطیر فی الهواء، او بیع الحصاة دا ده چه احد المتعاقدين یو بل ته دا اوایی چه «اذا نذت الیک الحصاة فقد وجب الیك» یعنی بائع یا مشتری بل ته داسې اوایی چه کله زه ستا طرف ته دا کانړې در اولم نو پوهه شه چه دا بیع منعقد شوه، او یا دا چه دا کانړې د دې گډو بیزو کنډک ته اولم کومه یوه چه پرې اولگیده د هغې بیع به منلې شی، په دې صورت کنبی جهالت د مبیع موندلې شی.

والحدیث اخرجه مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

[۳۳۷۷] (۲) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَحْمَدُ بْنُ عَمْرٍو بْنِ السَّرِّجِ، وَهَذَا الْقَطُّ، قَالَا: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ اللَّيْثِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ بَيْعَتَيْنِ وَعَنْ لِبَسَتَيْنِ، أَمَّا الْبَيْعَتَانِ فَالْمَلَامَسَةُ وَالْمُنَابَذَةُ، وَأَمَّا اللَّبَسَتَانِ فَاشْتِمَالُ الصَّمَاءِ، وَأَنْ يَخْتَبِيَ الرَّجُلُ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ كَاشِفًا عَنْ فَرْجِهِ أَوْ لَيْسَ عَلَى فَرْجِهِ مِنْهُ شَيْءٌ".

د ابرسعيد خدری رضی اللہ عنہ نه روایت دی فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم منع فرمائیلی ده د دوه قسمه بیعی نه اود دوه قسمه لباس استعمالولونه، په خرید و فروخت کنبی بیع ملامسه اوبیع منابذة اود دوه قسمه کپرونه مراد دادې او په دوه قسمه جامو کنبی یو قسم صماء دې یعنی چه انسان پرې دسرنه دخپویوري پتیرې اود کپړې دویم قسم دادې چه یو سرې احتباء یعنی زنگڼونه اوتري او کیني اوستربنکاره پریرېدي یا په شرمگاه باندې پرده وانه چوي.

قوله: «نَهَى عَنْ بَيْعَتَيْنِ وَعَنْ لِبَسَتَيْنِ أَمَّا الْبَيْعَتَانِ فَالْمَلَامَسَةُ وَالْمُنَابَذَةُ»

<sup>۱</sup> : صحیح مسلم للبیوع ۲ (۱۵۱۳)، سنن الترمذی للبیوع ۹۷ (۱۲۳۰)، سنن النسائی للبیوع ۲۵ (۵۵۲۲)، سنن ابن ماجه للتجارات ۲۳ (۲۱۹۴)، (تحفة الأشراف: ۱۳۷۹۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۲۵۰، ۳۷۶، ۴۳۶، ۴۳۹، ۴۹۶)، سنن

الدارمی للبیوع ۲۰ (۲۵۹۶) (صحیح)  
<sup>۲</sup> : صحیح البخاری للصلاة ۱۰ (۳۶۷)، البیوع ۶۲ (۲۱۴۴)، ۶۳ (۲۱۴۷)، اللباس ۲۰ (۵۸۲۰)، ۲۱ (۵۸۲۲)، الاستئذان ۴۲ (۶۲۸۴)، سنن النسائی للبیوع ۲۴ (۵۵۱۹)، سنن ابن ماجه للتجارات ۱۲ (۲۱۷۰)، (تحفة الأشراف: ۴۱۵۴، ۴۵۲۴)، وقد أخرجه: صحیح مسلم للبیوع ۱ (۱۵۱۲)، مسند احمد (۶۳، ۵۹، ۶۸، ۷۱، ۹۵)، دي/البیوع ۲۸ (۲۶۰۴) (صحیح)

## شرح الحديث:

یعنی رسول الله ﷺ د دوه قسمه بیع نه منع او فرمائیلہ او د دوه قسمه جامو نه، د بیعتان نه مراد بیع ملامسه او منابذه ده او د دواړو تفسیر په بل روایت کښې را روان دي، او د لبستین مصداق په حدیث کښې یو خو اشتعال صماء بیان کړې شوې دي (د اشتعال صماء دوه تفسیرونه کړې شوې دي کوم چه په کتاب الصلوة کښې په ثياب الصلوة کښې بیان شوی دی، اول دا چه یو خادر لره په خپل ځان باندې داسې د پورته نه ښکته اغوستل چه دواړه لاسونه هم د خادر نه لاندې پاتې شی چه په هغې کښې د انسان د راغورځیدو خطر وې د لاسونو په خادر کښې د دننه کیدو د وجې نه، ﴿قِيلَ مَاخُذْ مِنَ الصَّخْرَةِ الصَّمَاءِ﴾ خادر داسې واچولې شی چه د هغه د اغوستلو نه پس د هغې یو سر ښې یا گس اوږې په هغه طرف باندې واچولې شی چه په هغې کښې عورت ښکاره کیږي او د لبسه ثانیه مصداق په حدیث کښې دا مذکور دي ﴿ان يجتبي الرجل في ثوب واحد﴾ چه په یو خادر کښې انسان په داسې انداز کینی چه په هغې سره ئې شرمگاه ښکاره شی، یعنی ښکته بدن ئې ښکاره شی.

[۳۳۷۸] حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ اللَّيْثِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بِهَذَا الْحَدِيثِ زَادَ وَاشْتِمَالُ الصَّمَاءِ، أَنْ يَشْتِمَلَ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ يَضَعُ طَرَفِي الثَّوْبِ عَلَى عَاتِقِهِ الْأَيْسَرِ، وَيُبْرِزُ شِقَّهُ الْأَيْمَنِ، وَالْمُنَابَذَةُ أَنْ يَقُولَ: إِذَا نَبَذْتُ إِلَيْكَ هَذَا الثَّوْبَ فَقَدْ وَجَبَ الْبَيْعُ، وَالْمَلَامَسَةُ أَنْ يَمْسَهُ بِيَدِهِ، وَلَا يَنْشُرُهُ، وَلَا يَقْلِبُهُ، فَإِذَا مَسَّهُ وَجَبَ الْبَيْعُ.

د ابوسعید خدری نه د تیر روایت په شان روایت منقول دي، لیکن په دې کښې دا اضافه ده چه: ټول بدن په یوه کپړه کښې راونغاړي او ددې کپړې پلونه په ځی اوره او گسه اوږه باندې راواړوي او بیع منابذه دي ته وائی چه خرڅونکی داسې او وائی چه داکپړه زه کله تاته در او غورزوم نوبیا به بیع ضروري وي او بیع ملامسه دي ته وائی چه کوم شي دلاس نه اوځي نوبیعه به لازمی شي.

﴿وَالْمُنَابَذَةُ أَنْ يَقُولَ إِذَا نَبَذْتُ إِلَيْكَ هَذَا الثَّوْبَ فَقَدْ وَجَبَ الْبَيْعُ﴾ یعنی بائع مشتری ته داسې وائی چه کله ستا طرف ته د کپړې دا تهان در گزار کړم نو پوهه شه چه بیع لازم شوه، یعنی بغیر د ایجاب او قبول نه، او یا دا وجه چه د ایجاب او قبول نفی مراد نه ده بلکه لزوم د بیع مراد دي بغیر د خیار رویت او خیار عیب وغیره نه، ﴿وَالْمَلَامَسَةُ أَنْ يَمْسَهُ﴾ یعنی بیع ملامسه دا ده چه د مشتری صرف په کپړه باندې د لاس لگولو سره، بغیر د پرانستلو نه او بغیر د کتلو نه بیع لازم شی، د بیع په دې ټولو صورتونو او قسمونو کښې تراضی طرفین نشته د خیار عیب او خیار رویت وغیره امورو د نه کیدو د وجې نه او یا د فساد د وجې نه د ایجاب او قبول نه موندلې کیدل په دوه تفسیرونو کښې د یو مطابق، دا ټول بیوع د بیوع جاهلیت ځینې نه دي.

والحدیث أخرجه البخاری ومسلم والنسائي وابن ماجة، وأخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائي وابن ماجة من حيث أبي هريرة مختصراً ومطولاً، قاله المنذري



[۳۳۷۹] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عَنَبَسَةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شَهَابٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عَامِرُ بْنُ سَعْدٍ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ، أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ، قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بِمَعْنَى حَدِيثِ سُفْيَانَ، وَعَبْدِ الرَّزَّاقِ، جَمِيعًا.

د ابوسعيد خدری رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم منع فرمائیلی ده اوبیا نه دپورتني حدیث په شان روایت بیان کرو اودسفيان اوعبدالرزاق وغيره تولونه داسې روايات منقول دي.

[۳۳۸۰] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ ثَائِفٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ بَيْعِ حَبْلِ الْحَبْلَةِ".

د ابن عمر رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم منع فرمائیلی ده باقی دتیر روایت په شان او ددې اضافي سره چه د حبل الحبلة مطلب دادې چه دکومې اوبنې نه بچې پیدا شوې وي اوبیا هغه بچې حامله وي او ولادت ئې شوې وي.

### شرح الحديث وفيه أربعة أوجه :

په دې دواړو الفاظو کښې حاء او با دواړه مفتوح دی، حبله کښې دوه اقوال دی یو دا چه دا جمع ده د حابل لکه د ظالم جمع ظلمة، او دا هم وئیلې شوې دی چه دا مصدر دې د مطلق حیوان په معنی کښ، ځان پوهول پکار دی چه د دې حدیث شرح کښې څلور احتمالات دی اول دا چه د حبل الحبلة نه مراد جنین دې یا جنین الجنین، او په دې دوه صورتونو کښې بیا دوه احتمالات دی یو دا چه د دې مصداق مبيع ده یا د دې نه مقصود ببيع الی اجل ده، یعنی مبيع خو بل یو څیز دې خو د هغې تاجیل یعنی د ثمن ادا کولو نیټه په دې دواړو کښې یو مقرر کړې شی، لهذا دا څلور احتمالات به د دې حدیث په معنی کښې وی په دې احتمالاتو کښې به په یو صورت کښې ببيع فاسد وی او په یو صورت کښې باطله، یعنی که دا په مبيع باندې محمول کړې شی نو چونکه هغه لا تراوسه پورې معدوم ده په دې وجه به ببيع باطل وی، او که مبيع شی آخر دې او دا د هغې دپاره اجل دې، په دې صورت کښې به فاسد وی، دا تفسیر د هغې خپله دلته په کتاب کښې موجود ده پس راوی وائی «حَبْلُ الْحَبْلَةِ أَنْ تُنْتَجَ النَّاقَةُ بِطْنَهَا ثُمَّ تَحْمِلُ الَّتِي تُجَبِّتُ» په دې تفسیر کښې دا په جنین الجنین باندې محمول کړې شوې دې، خو د دې تصریح نه ده شوې چه مراد ترې نه مبيع ده که اجل، د دې تفسیر حاصل دا دې چه یو سرې داسې اوائی چه دا حامله اوبښه چه مخامخ ده د دې حمل د پیدا کیدو نه پس چه کله خپله حامله شی نو د هغه دحمل ثانی ببيع کوم یا هغه نیټه کوم. والحديث أخرجه البخاري ومسلم والنسائي، قاله المنذري

(۱): صحيح البخاري/ البيوع ٦٢ (٢١٤٤)، صحيح مسلم/ البيوع ١ (١٥١٢)، سنن النسائي/ البيوع ٢٢ (٤٥١٤)، (تحفة الأشراف: ٤٠٨٧)، وقد أخرجه: مسند احمد (٩٥/٣) (صحيح)

(۲): صحيح البخاري/ البيوع ٦١ (٢١٤٣)، السلم ٧ (٢٢٥٦)، مناقب الأنصار ٢٦ (٣٨٤٣)، سنن النسائي/ البيوع ٦٦ (٤٦٢٩)، سنن ابن ماجه/ التجارات ٢٤ (٢١٩٧)، (تحفة الأشراف: ٨٣٧٠)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/ البيوع ٣ (١٥١٤)، سنن الترمذي/ البيوع ١٦ (١٢٢٩)، موطا امام مالك/ البيوع ٢٦ (٦٢)، مسند احمد (٥٦١، ٦٣) (صحيح)

[۳۳۸۱] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، نَحْوَهُ، وَقَالَ: وَحَبْلُ الْحَبْلَةِ أَنْ تُنْتَجَبَ النَّاقَةُ بَطْنُهَا ثُمَّ تَحْمِلَ الَّتِي تُجْتَبُ.

د ابن عمر رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلی دی باقی روایت دتیر روایت په شان دې.

### باب فِي بَيْعِ الْمُضْطَرِّ د مجبوری په وخت کښې د بیع بیان

د بیع المضطر مصداق او حکم:

د مضطر دوه معنې کیدې شی ځکه چه د اضطرار دوه قسمونه دی یو اضطرار لاجل الفیر یعنی د بل د زبردستی د وجې نه مجبورول چه هغې ته اکراه وائی او دویمه معنی اضطرار لاجل الفقر والحاجة یعنی د خپلې غریبۍ او مسکینۍ د وجې محتاج او مضطر کیدل، او د مضطر بالمعنی الثانی بیع د آحنافو په نزد فاسد ده او د جمهورو په نزد جائز مع الکراهت ده، کذا اذکر من درس الشيخ رحمه الله تعالى، مثله فی البذل عن الخطابی، او د دې نه پس په بذل کښې د در مختار نه د بیع المضطر شرح دا کړې شوې ده (هو ان يضطر الرجل الى طعام او شراب او غیرهما ولا یبیعه البائع الا باکثر من ثمنها بکثیر، وكذلك فی الشراء منه) یعنی یو سړی ته د خوراک ځکاک ضرورت دې مثلاً او دویم سړی سره هغه خیز موجود دې خو هغه هغې لره په عام قیمت باندې ورکولو ته تیار نه دې بلکه په ډیر زیات قیمت باندې ئې ورکوی داسې قسم ته په در مختار کښې فاسد وئیلی شوې ده.

[۳۳۸۲] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا صَالِحُ أَبُو عَامِرٍ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: كَذَا، قَالَ مُحَمَّدٌ، حَدَّثَنَا شَيْخٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ، قَالَ: خَطَبْنَا عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ، أَوْ قَالَ: قَالَ عَلِيٌّ: قَالَ ابْنُ عِيسَى: هَكَذَا حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، قَالَ: "سَيَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ عَضُوضُ يَعْضُ الْمُؤِسِّرُ عَلَى مَا فِي يَدَيْهِ، وَلَمْ يُؤْمَرْ بِدَلِكِ، قَالَ اللَّهُ تَعَالَى وَلَا تَتَّبِعُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ سُورَةُ الْبَقَرَةِ آيَةٌ ۲۷ وَيَبَايِعُ الْمُضْطَرُونَ، وَقَدْ نَهَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الْمُضْطَرِّ، وَبَيْعِ الْغَرَرِ، وَبَيْعِ الثَّمَرَةِ، قَبْلَ أَنْ تُذْرِكَ."

دهشیم نه روایت دې فرمائی چه علي رضی اللہ عنہ په خطبه کښې اوفرمايل چه یوداسې وخت به راشي چه خلق به یوبل خوري (یعنی تکلیفونه به ورته رسوي) اوڅوک چه مالداروي هغه به خپل مال په غاښونو کښې نیولې وي اوحالانکه هغه ته داحکم نشته، الله تعالی فرمائی اې خلقو په خپل مینځ کښې په یوبل سره احسان مه هیروئ، اوداسې وخت به هم راشي چه خلق به دمجبورئ نه بیع کوي اوحالانکه نبی صلی اللہ علیہ وسلم دمجبور دمال داخستلونه منع فرمائیلی ده، او دائې هم فرمائیلی دی چه ددوکی دبیع نه ځان وساتئ اومیوه دپخیدونه مخکښې مه خرڅوئ. (خطبنا علی بن ابی طالب، قال سیأتی علی الناس زمان عَضُوضُ يَعْضُ الْمُؤِسِّرُ عَلَى مَا فِي يَدَيْهِ وَلَمْ يُؤْمَرْ بِدَلِكِ، وَيَبَايِعُ الْمُضْطَرُونَ وَقَدْ نَهَى النَّبِيُّ -صلى الله عليه وسلم- عَنْ بَيْعِ الْمُضْطَرِّ)

۱: صحیح البخاري / مناقب الأنصار ۲۶ (۳۸۴۳)، صحیح مسلم / البیوع ۳ (۱۵۱۴)، (تحفة الأشراف: ۸۱۴۹) (صحیح)

۲: تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۳۳۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۱۷۱) (ضعیف)



علی عليه السلام فرمائی چه نزدې ده چه په خلقو باندې داسې د بخل زمانه راشي چه د مالدار حال به دا وي چه هغه به خپل مال لره په خپلو غاښونو باندې ښه مضبوط نیسي، حال دا چه خلق د هغه مامور نه دی بلکه الله پاک خو دا فرمائی چه په یو بل باندې احسان کول مه هیروي، یعنی مه ترک کوي، وړاندې د دې بخل یو اړخ بیانوی چه مجبور قسم خلقو سره به بیع او شراء کولې شی حال دا چه رسول الله ﷺ د بیع المضطر نه منع فرمائیلي ده. دلته په دې حدیث کښې هم شارحینو د مضطر معنی کښې هم هغه دوه صورتونه لیکلي دی کوم چه پورته ذکر شو.

## بَابُ فِي الشَّرِكَةِ د شراکت بیان

[۳۲۸۳] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سُلَيْمَانَ الْبَصِيرِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الزُّبَيْرِ قَانٍ، عَنْ أَبِي حَيَّانَ التَّمِيمِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، رَفَعَهُ، قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ يَقُولُ: أَنَا ثَالِثُ الشَّرِيكَيْنِ مَا لَمْ يَخُنْ أَحَدُهُمَا صَاحِبَهُ، فَإِذَا خَانَ خَرَجْتُ مِنْ بَيْنِهِمَا».

د ابو هريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ او فرماښل چه الله تعالی فرمائیلي دی چه زه د دوه شریکانو په مینځ کښې دریم شریک یم ترڅو چه په دې دوه شریکانو کښې یو شریک دخپل ملګري سره خیانت نه وی کړې، او کله چه په دې دواړو کښې یو تن دبل سره خیانت او کړي نوزه ددې دواړو نه او ځم.

قوله: «عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَفَعَهُ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ يَقُولُ أَنَا ثَالِثُ الشَّرِيكَيْنِ مَا لَمْ يَخُنْ أَحَدُهُمَا صَاحِبَهُ فَإِذَا خَانَ خَرَجْتُ مِنْ بَيْنِهِمَا» حاصل د حدیث دا دې چه شرکت ډیر د خیر او برکت خیز دې په دې شرط چه په دیانت دارئ سره وی او خیانت په هغې کښې نه وی خو چرته چه په هغې کښې لږ خیانت بیا موندلې شو نو ټول خیر او برکت ختم.

### اقسام د شرکت :

د شرکت ډیر قسمونه دی، اول د دې دوه قسمونه دی، ۱ شرکت املاک او شرکت عقود، خو دلته په حدیث کښې شرکت عقود مراد دې چه د هغې څو قسمونه دی شرکت مفاوضه، شرکت عنان، شرکت الصنائع چه هغې ته شرکت الابدان هم وائی، شرکت الوجوه چه د هغې تفاسل، احکام او شرائط په کتابونو د فقه کښې ذکر شوي دی دغه شان یو قسم د دې مضاربت هم دې، دا شرکتونه کوم چه شریعت مشروع کړی دی که د شرع په اصولو او دیانت سره وی نو ډیر د خیر او برکت څیزونه دی لکه چه په حدیث الباب کښې دی خو نن صبا په دې زمانه کښې خلقو قسم قسم معاملات د مال د زیاتوالی او د تجارت دپاره د خپل طرف نه اختراع کړی دی کوم قسمونه د شرکت چه شریعت مشروع کړی وو هغه څوک هم نه پیژنی او نه ئې د پیژندګلو کوشش کوی، او د موجوده اختراعی طریقو چه کوم حال او انجام دې په هغې باندې ټول پوهیږي چه د هغې په وجه باندې په څنګه څنګه مصیبتونو کښې خلق اخته کیږي.

(۱) تقریبه ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۲۹۳۹) (ضعیف)

## بَابُ فِي الْمُضَارِبِ يُخَالِفُ

د مضاربت د شرائطونه د خلاف هكولو بيان

مضاربت چه د هغې ذكر اوس تير شو د شركت يو قسم دې چه په هغې كښې مال د يو سړي وي او دويم طرف ته عمل ﴿ ففى القدورى المضاربة عقد على الشركة بمال من احد الشريكين وعمل من الآخر ولا تصح المضاربة الا بالمال الذى بينا ان الشركة تصح به، ومن شرطها ان يكون الربح بينهما مشاعا لا يستحق احدهما منه دراهم مسماة ﴾ يعنى د صحت مضاربت يو اهم شرط دا دې چه د هغې د تجارت نه حاصله شوې نفع د صاحب مال او عامل ترمينځه مشترك وي مقدار معين نه وي، خو دا ضرورى نه ده چه مساوى او على النصف دې وي، بلكه على النصف يا على الثلث چه څه هم وي مشترك وي په دراهم معينه د يو دپاره نه وي.

[۳۳۸۴] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سَفْيَانُ، عَنْ شَيْبِ بْنِ غَرْقَدَةَ، حَدَّثَنِى الْحُجُّ، عَنْ عُرْوَةَ يَعْنِى ابْنَ اَبِى الْجَعْدِ الْبَارِقِىَّ، قَالَ: "أَعْطَاهُ النَّبِىُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دِينَارًا يَشْتَرِى بِهِ أَضْحِيَّةً أَوْ شَاةً، فَاشْتَرَى شَاتَيْنِ، فَبَاعَ أَحَدَاهُمَا بِدِينَارٍ، فَأَتَاهُ بِشَاةٍ وَدِينَارٍ، فَقَدَّعَالَهُ بِالْبَرَكَةِ فِى بَيْعِهِ، فَكَانَ لَوْ اشْتَرَى ثَرَابًا لَرَبِحَ فِيهِ".

دعروه بارقى نه روايت دې فرمائى چه نبى ﷺ راته يودينار راكړو چه دخان دپاره پرې دقربانئ څاروې واخلم ماپه هغه يودينار دوه څاروى واغستل يوڅاروې مې په يودينار خرڅ كړو او يوڅاروې او يودينار مې نبى ﷺ ته پيش كړو هغه راته دعا وكړه چه اې الله دده په بيع كښې بركت واچوي، چنانچه همداسې اوشول چه عروه به كله خاوري اغستلي نوپه هغې كښې به ئې هم گټه كوله.

قوله: ﴿ عَنْ عُرْوَةَ، قَالَ أَعْطَاهُ النَّبِيُّ -صلى الله عليه وسلم- دِينَارًا يَشْتَرِى بِهِ أَضْحِيَّةً أَوْ شَاةً ﴾ الخ عروة بن ابى الجعد البارقى صحابى ﷺ فرمائى چه يو كرت رسول الله ﷺ ماته يو دينار راكړو د قربانئ د بيزې اخستلو دپاره، نو هغوى داسې او كړل چه په يو دينار كښې ئې دوه بيزې واخستلې او بيا ئې په دې دواړو كښې يوه په يو دينار خرڅه كړه، او د رسول الله ﷺ په خدمت كښې ئې بيزه سره د دينار نه پيش كړه، رسول الله ﷺ د هغوى د دپاره د تجارت د بركت دعا وكړه، ﴿ فَكَانَ لَوْ اشْتَرَى ثَرَابًا لَرَبِحَ فِيهِ ﴾ راوى وائى چه د رسول الله ﷺ د دعا په بركت د هغوى د تجارت حال دا وو چه كه خاوره به مې هم اخستله نو په هغې كښې به هم نفع كيدله د خاورې نه مراد يا خو په طريقه د مبالغې يو بيكاره او معمولى څيز دې او يا دا په حقيقت باندې محمول دې، ځكه چه د ترابو د بعض انواع بيع كولې شى، دا صحابى د رسول الله ﷺ د طرف نه وكيل وو د شراء خو هغوى په ظاهر كښې د خپل موكل مخالفت او كړو چه بيع او شراء دواړه ئې او كړل، او ترجمه الباب د مضارب په باره كښې دې خو وئيلې شى چه مضارب هم د رب المال دپاره په منزله د وكيل وي.

۱: صحيح البخاري/المناقب ۲۸ (۳۶۴۲)، سنن الترمذي/البيع ۳۴ (۱۲۵۸)، سنن ابن ماجه/الاحكام ۷ (۲۴۰۲)، تحفة الأشراف: ۹۸۹۸، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۷۵/۴، ۳۷۶) (صحيح)



### په مسئله متوجهم بها كښي مذاهب ائمه :

مضارب كه د رب المال مخالفت او كړي نو خطابی د امام شافعی رحمہ اللہ مذهب دا نقل كړې دې چه د مخالفت په صورت كښي مضارب كه سامان بعينه د رب المال نه اخستلې وي نو بيا خو بيع باطل ده او كه هغه بعينه په دې مال باندې سامان نه وي اخستلې بلكه په خپله ذمه ساتلو سره ئې واخستلو او بيا ئې ادا كړو هم د دې رب المال د مال نه نو په دې صورت كښي به دا سامان د مشتري دپاره وي او مضارب به په هر حال كښي ضامن وي د رب المال د مال آه او څه نفع چه كيږي هغه به د مضارب وي، او خطابی د امام احمد رحمہ اللہ مسلك دا ليكلي دي چه د مخالفت په صورت كښي به ربح د رب المال وي او نقصان به مضارب ضامن وي، او د احنافو په نزد د مخالفت په صورت كښي به ربح ټول په ټوله د مضارب دپاره وي او مضارب به ضامن هم وي، لحديث **(الغرم بالغنم)** خو په مضارب باندې به د دې ربح تصدق واجب وي ځكه چه هغه كسب خبيث دي.

### بيع فضولي كښي مذاهب ائمه :

د دې حديث نه چه كومه مسئله ثابتيږي صراحة هغه د بيع فضولي ده، مسئله اختلافي ده، د احنافو او مالكيانو په نزد دا بيع موقوفا على اجازة المالك صحيح ده خو د احنافو په نزد صرف بيع فضولي جائز ده. شراء فضولي نه او د امام مالك رحمہ اللہ په نزد بيع او شراء دواړه جائز دي، پس په ارشاد السالك كښي دي **(البيع والشراء كلاهما جائزان موقوفا على اجازة المالك)** او د حنابلة په نزد دواړه ناجائز دي كما في زاد المستقنع: لا يجوز البيع ولا الشراء، او د امام شافعی رحمہ اللہ په دې كښي دوه اقوال دي، په قول قديم كښي جائز دي، وقواه النووي، وفي الجديد لا يجوز، د امام شافعی رحمہ اللہ استدلال د **(لا تبع ما ليس عندك الحديث)** نه دي، زمونږ د طرف نه د دې جواب دا دي چه د **(ما ليس عندك)** نه مراد شئ غير مقبوض دي لكه عبد اتق، او بيا په دې حديث كښي نفى مطلق د بيع نه ده بلكه د بيع بات نفى ده، د نهى تعلق د نفس بيع سره نه دي بلكه بت البيع سره دي بيع بات يعنى نافذ او غير موقوف.

### حديث الباب د احنافو او مالكيانو دليل دي :

او حديث الباب دليل دي د جواز لكه چه ظاهره ده. معلومه دي وي چه مصنف رحمہ اللہ په دې باب كښي دوه احاديث ذكر كړل د عروة البارقي او دويم چه كوم وړاندې را روان دي د حكيم بن حزام رضي اللہ عنہ چه د هغې مضمون دا دي چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغوی ته يو كرت يو دينار وركړو د قرباني د خاړوي اخستلو دپاره نو هغوی يو بيزه په يو دينار باندې اخستلو سره هغه په دوه ديناره خرڅه كړه او بيا ئې په يو دينار باندې بله بيزه واخستله او هغه بيزه ئې سره د ديناره د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت كښي حاضره كړه.

### د شوافعو د طرف نه جواب :

دا دواړه احاديث د امام شافعی رحمہ اللہ د قول جديد خلاف دي، د هغوی د طرف نه د رومبي حديث خطابی جواب دا وركړې دي چه د رومبي حديث په سند كښي **(حدثني الحى)** دي

يعنى قبيله «وهو مجهول» او د دويم حديث په سند كښې شيخ من اهل المدينة دي وهو ايضا مجهول، حضرت سهارنپوى په بذر كښې د عروة بن ابى الجعد د حديث متعلق د خطا بى كلام چه په دې حديث كښې حى مجهول دي دا فرمايلى دي چه مصنف رحمه الله حديث د عروة په دوه طريقو سره ذكر كړې دي په دويم طريق كښې «عن ابى ليلى حديثى عروة البارقي» دي، په دې سند كښې هيڅ يو راوى مجهول نشته پس امام منذرى رحمه الله فرمائي «وقد اخرج الترمذى حديث شراء الشاة من رواية ابى ليلى لمارة بن زياد عن عروة، وهو من هذا الطريق حسن آه» او د دويم حديث يعنى حكيم بن حزام رحمه الله په باره كښې حضرت فرمائي چه دا په يو بل طريق سره هم مروى دي په سنن ترمذى كښې «عن حبيب بن ابى ثابت عن حكيم بن حزام» خو امام ترمذى رحمه الله په دې باندې كلام كړې دي چه د حبيب بن ابى ثابت سماع زما په نزد د حكيم بن حزام رحمه الله نه ثابت نه ده خو مونږ وايو چه په دې عدم سماع باندې څه دليل دي اوسه پورې هيڅ دليل نه دي قائم شوي «ولا مانع من السماع، ولو سلم فالمرسل عندنا حجة» آه او صاحب د تخفة الاخوذى ليكي: وَحَدِيثُ عُرْوَةَ الْبَارِقِيِّ هَذَا أَخْرَجَهُ أَحْمَدُ وَالْبُخَارِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَةَ وَفِي إِسْنَادِهِ مِنْ عَدَا الْبُخَارِيِّ سَعِيدُ بْنُ زَيْدٍ أَخُو حَمَّادٍ وَهُوَ مُخْتَلَفٌ فِيهِ عَنْ أَبِي لَيْلَى لَمَارَةَ بْنِ زِيَادٍ وَقَدْ قِيلَ إِنَّهُ مَجْهُولٌ لَكِنَّهُ قَالَ (١) إِنَّهُ وَثَقَهُ ابْنُ سَعْدٍ. وَقَالَ حَزْبٌ: سَمِعْتُ أَحْمَدَ يُشْنِي عَلَيْهِ وَقَالَ فِي التَّقْرِيبِ: إِنَّهُ نَاصِبِيٍّ أَجْلَدُ قَالَ الْمُنْذِرِيُّ وَالتَّوَوِيُّ: إِسْنَادُهُ صَحِيحٌ لِمَجِيئِهِ مِنْ وَجْهَيْنِ. وَقَدْ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ مِنْ طَرِيقِ ابْنِ عُيَيْنَةَ عَنْ شُعَيْبِ بْنِ عَرْقَدَةَ، سَمِعْتُ الْحَيَّ يُحَدِّثُونَ عَنْ عُرْوَةَ. قَالَ الْخَافِظُ: الصَّوَابُ أَنَّهُ مُتَّصِلٌ فِي إِسْنَادِهِ مُبْنَاهُمْ الْخ.... امام نووى رحمه الله دا حديث صحيح تسليم كړې دي لكه چه اوس پورته ذكر شو او غالبا هم په دې بنياد باندې هغوى د امام شافعى رحمه الله په قولينو كښې قول قديم د صحت د جواز د بيع فضولى د تقويت كړې دي كما سبق قريبا په دې مقام باندې فتح البارى هم كتل پكار دي چه نور بصيرت هم حاصل شي، امام بخارى رحمه الله دا حديث په مناقب كښې «باب السؤال المشركين ان يريهم النبي صلى الله عليه وسلم اية فاراهم الشقاق القمر» نه پس باب بلا ترجمه كښې ذكر كړې دي. وقد مر تخريج حديث عروة البارقي وحديث حكيم بن حزام في انشاء البحث.

[٣٣٨٥] (١) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ، حَدَّثَنَا أَبُو الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ زَيْدٍ هُوَ أَخُو حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا الزُّبَيْرُ بْنُ الْحَرِثِ، عَنْ أَبِي لَيْلَى، حَدَّثَنِي عُرْوَةُ الْبَارِقِيُّ، بِهَذَا الْخَبَرِ وَلَفْظُهُ مُخْتَلَفٌ.

د عروه بارقي نه د تير روايت په شان روايت نقل شوي دي صرف د الفاظو فرق دي.

[٣٣٨٦] (٢) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ الْعَدَنِيُّ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنِي أَبُو حُصَيْنٍ، عَنْ شَيْخٍ مِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ، عَنْ حَكِيمِ بْنِ حَزَامٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "بَعَثَ مَعَهُ بَدِينًا يَشْتَرِي لَهُ أَهْصِيَّةً، فَاشْتَرَاهَا بِدِينَارٍ وَبَاعَهَا بِدِينَارَيْنِ، فَرَجَعَ فَاشْتَرَى لَهُ أَهْصِيَّةً بِدِينَارٍ، وَجَاءَ بِدِينَارٍ، إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَتَصَدَّقَ بِهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَدَعَا لَهُ أَنْ يُبَارَكَ لَهُ فِي تِجَارَتِهِ".

(١) كذا في الاصل.

(٢) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ٩٨٩٨) (صحيح)

(٣) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ٣٤٣٨)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/اليبوع ٣٤ (١٢٥٧) (ضعيف)



د حکیم بن حزام رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم زه دیو دینار سره اولیرلم چه زه دهغه دپاره دقربانی څاروې واخللم نو په یو دیناریو څاروې واخستو اودقربانی داڅاروې مې په دوه دیناره خرڅ کړو اوبیلاړم په یو دیناري دقربانی بل څاروې واخستو او هغه اولنې دیناری بچ کړو اود نبی صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضر شوم او هغه دینار نې صدقه کړو اوزماد تجارت دپاره نې دعا او فرمائيله.

## بَابُ فِي الرَّجُلِ يَتَجَرَّفِي مَالِ الرَّجُلِ بِغَيْرِ اِذْنِهِ

د اجازت نه بغیر دچا په مال کښې په ښه نیت سره د تجارت کولو بیان

یعنی کوم انسان چه د بل په مال کښې تجارت کوی بغیر دهغه د اجازت نه په دې صورت کښې چه کومه گټه حاصله شی هغه به د احنافو په نزد د سوداگر دپاره وی او هم دغه شان به تاوان هم په هغه باندې وی، خو دا کسب کسب خبیث دې لهذا د دې قسم ربح به واجب التصدق وی، چه په دې مسئله کښې د نورو امامانو د مذاهب تحقیق او کړې شی مصنف رحمته الله علیه د دې باب د لاندې د حدیث الغاریو حصه ذکر کړې ده کوم چه د ترجمه الباب مناسب وه باقی قصه اختصارا حذف کړې شوه، او امام بخاری رحمته الله علیه چه په دې حدیث باندې کوم ترجمه الباب قائم کړې دې هغه دا دې «اذا اشترى شيئا لغيره بغیر اذنه فرضی» او بیانې د دې د لاندې هغوی حدیث الغاریو ټول ذکر کړې دې څوک چه پوره قصه کتل غواړی هغه دې د صحیح بخاری کتاب البیوع کښې ذکر کړې شوې باب ته رجوع او کړی، امام بخاری رحمته الله علیه د هغه حدیث نه د بیع فضولی او شراء فضولی جواز ثابت کړې دې.

[۳۳۸۷] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، حَدَّثَنَا أَبُو اسَامَةَ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَمْزَةَ، أَخْبَرَنَا سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "مَنْ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ أَنْ يَكُونَ مِثْلَ صَاحِبِ فَرْقِ الْأَرَزِ، فَلْيَكُنْ مِثْلَهُ، قَالُوا: وَمَنْ صَاحِبُ فَرْقِ الْأَرَزِ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَذَكَرَ حَدِيثَ الْغَارِ حِينَ سَقَطَ عَلَيْهِمُ الْحِجْلُ، فَقَالَ: "كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ أَذْكَرُوا أَحْسَنَ عَمَلِكُمْ، قَالَ: وَقَالَ الثَّالِثُ: اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ أَنِّي اسْتَأْجَرْتُ أَجِيرًا يَفْرُقُ أَرَزِي، فَلَمَّا أَمْسَتْ عَرَضْتُ عَلَيْهِ حَقَّهُ فَأَبَى أَنْ يَأْخُذَهُ وَذَهَبَ، فَتَمَرَّتْهُ لَهُ حَتَّى جَمَعْتُ لَهُ بَقْرًا وَرَعَاءَهَا، فَلَقِيْنِي، فَقَالَ: أَعْطِنِي حَقِّي، فَقُلْتُ: أَذْهَبُ إِلَى تِلْكَ الْبَقَرِ وَرَعَائِهَا فَأُخَذُهَا فَذَهَبَ فَاسْتَأْجَرَهَا".

د ابن عمر رضی اللہ عنہما نه روایت دې فرمائی چه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه مې اوریدلی دی چه فرمائیل نې په تاسو کښې چه څوک غواړی چه دهغه چا په شان دې شي دچا سره چه یوه پیماننه وریږي وي نو دهغه په شان دې شي، صحابه عرض وکړو چه ای دالله رسوله دا کومه واقعه ده نو دغار والا واقعه نې بیان کړه، کله چه هغوی په یو غار کښې پناه اخستلي وه او یولوي کانړي دغار په خوله را پریوتو او دغار خوله نې بنده کړه په دې وخت کښې دوی ووئیل چه په مونږ کښې دي هریو خپل نیک عمل یاد کړي نو په دوی کښې دریم کس ووئیل چه ای الله تا ته معلومه ده چه مایو کس په یو فرق باندې مزدور کړي وو کله چه ما ښام شو نو ما هغه ته خپله مزدوري ورکوله نو هغه مزدوري وانه خستله او همداسې لاړو ما ددغه کس وریږي

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۶۷۷۹)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للإجازة ۱۲ (۲۲۷۲)، المزارة ۱۳ (۲۳۳۳)، أحاديث الأنبياء ۵۳ (۳۴۶۵)، الأدب ۸۳ (۶۱۳۳)، صحيح مسلم للذكر ۲۷ (۲۷۴۳)، مسند احمد (۱۱۷۲).

وکرلي اودا به ډیریدلي تردې چه ماده دپاره څاروی اوشپونکیان جمع کړل، بیا څه وخت پس هغه مزدور زما سره ملا وشو اود خپلې مزدوری مطالبه یې وکړه، ما ورته وویل چه لاړ شه او خپل څاروی اوشپونکیان دي بوځه نو هغه هغه څاروی اوشپونکیان بوتلل.

### د حدیث الغار یوه حصه :

قوله: «مَنْ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ أَنْ يَكُونَ مِثْلَ صَاحِبِ فَرْقِ الْأَرْزِ (۱) فَلْيَكُنْ مِثْلَهُ». قَالُوا وَمَنْ صَاحِبُ فَرْقِ الْأَرْزِ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَلَذَكَرَ حَدِيثَ الْغَارِ

یعنی رسول الله ﷺ صحابه کرامو ﷺ ته اوفرمائیل د ترغیب په طور باندې کوم انسان چه په تاسو کښې د دې خبرې طاقت لری چه هغه د فرق ارز والا سړی په شان شی نو هغه له داسې کیدل پکار دی، صحابه کرامو ﷺ عرض اوکړو یا رسول الله ﷺ صاحب الارز څوک وو؟ وړاندې مصنف ﷺ فرمائی چه رسول الله ﷺ د صحابه کرامو ﷺ په سوال باندې حدیث الغار، یعنی د غار والو قصه بیان اوفرمائیله چه کله په هغوی باندې د غر کانړې د پورته نه راپریوتلې وو (چه د هغې په وجه د غار خوله بنده شوې وه، دا درې ملگری وو چرته په سفر باندې روان وو په لار کښې چه کله باران راغلو نو د هغې نه د بچ کیدو دپاره د غر په غار کښې داخل شو، چه کله د غار خوله بنده شوه نو د دې درې واړو په خپل مینځ کښې راټی دا شوه چه په مونږ کښې چه چا کوم عمل په خپل ژوند کښې د هغه په نزد ډیر ښه کړې وی د هغې په وسیله دې د الله پاک نه سوال اوکړی.

«قال وقال الثالث» د رومبی او دویم عمل په دې روایت کښې نه دې ذکر شوې په هغوی کښې دریم کس په خپلو اعمالو کښې دا عمل ذکر کړو چه ای الله ته عالم ټی چه ما په یو مزدور باندې د فرق ارز په عوض کښې کار کړې وو، او د کار نه د فراغت په وخت چه کله ما ښام په هغه باندې د هغه حق پیش کړو نو هغه د هغې د اخستلو نه انکار اوکړو او بغیر د اخستلو نه لاړو، د هغه د تلو نه پس ما د هغه دې فرق ارز لره د فصل په ذریعه ښه زیات کړو تردې چه د هغه په پیداوار او گټې سره د هغه مزدور دپاره غویان او د هغې څرونکی پیدا شو، بیا څه موده پس هغه مزدور ما سره د ملاقات دپاره راغلو او وې وویل چه ماته زما حق راکړه نو ما هغه غویانو او د هغې څرونکو طرف ته اشاره کولو سره هغه ته اووې چه دا ټول ستا دی، نو هغه هغه ټول بوتلل. والحدیث اخرجه البخاری ومسلم بنحوه اتم منه، قاله المنذری

د دې حدیث د ترجمه الباب سره په مطابقت کښې اشکال دې ځکه چه ترجمه ده «تجارة فی مال الغیر» او په دې قصه کښې دا اجیر د خپل فرق ارز په وجه د قبضه نه کیدو مالک شوې نه وو په دې وجه دا تجارت فی مال الغیر نه شو بلکه د دې مستاجر دا تشمیر التصرف فی مال نفسه وو پس څه هم چه په دې مال کښې زیات شو هغه ټول ملک د مستاجر وو خود دې مستاجر دا ټول څیزونه اجیر ته ورکول په طور د کار خیر او تصدق وو. (بذل)

(۱) دا د غلي او د غنمو د تللو یو لوبښي دي



## بَابُ فِي الشَّرِكَةِ عَلَى غَيْرِ رَأْسِ مَالٍ

په کاروبار کښې د راس المال نه علاوه د شراکت کولو بیان

د ترجمه الباب تشریح او مذاهب ائمه:

یعنی هغه شرکت چه بغیر د راس المال نه وی، ځان پوهول پکار دی چه کوم شرکت بغیر د راس المال نه وی د هغې دوه قسمونه دی شرکت فی المباحات او شرکت الصنائع والابدان د اول مثال لکه دوه سړی چه چا سره هیڅ قسم مال نه وی او خپل مینځ کښې دا معاهده او کړی چه مونږ دواړه به څو او په ځنګل کښې به لرګی راجمع کوو او روزانه به هغه بازار ته راوړلو سره هغه خرڅوو او په دې صورت کښې چه څه پیسې هم حاصلې شی هغه به زمونږ د دواړو مشترک وی او د دویم مثال، لکه دوه کاریگران کپړې ګندونګی خپل مینځ کښې دا فیصله او کړی چه مونږ دواړه یو ځانې کیدو سره چه څومره کپړه ګندو دا ګټه به زمونږ دواړو تر مینځه مشترک وی.

اوس د دې حکم واورې د امام شافعی رحمته الله علیه په نزد دا دواړه قسمونه ناجائز دی، د مالکیانو او حنابلې په نزد دواړه جائز دی، او د احنافو په نزد شرکت الصنائع خو جائز دې خو شرکت فی المباحات نه دې جائز، د مذاهبو تحقیق هم دا دې، د علامه شوکانی رحمته الله علیه نه په بیان د مذاهبو کښې غلطې شوې دې هغوی احناف د مالکیانو سره ذکر کړې دی، او د هغوی د کلام نه دا هم معلومیږی چه د احنافو په نزد شرکت الصنائع او شرکت فی المباحات یو څیز دې، **(نه علیه شیخ شیخنا فی البذل)**

[۳۳۸۸] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "اشْتَرَكْتُ أَنَا، وَعُمَارٌ، وَسَعْدٌ فِي مَا نُصِيبُ يَوْمَ بَدْرٍ، قَالَ: فَجَاءَ سَعْدٌ بِأَسِيرَيْنِ، وَلَمْ أَجِئْ أَنَا، وَعُمَارٌ بِشَيْءٍ."

د عبدالله رحمته الله علیه نه روایت دې فرمائی چه زه او عمار او سعد په غزوه بدر کښې په حاصلیدونکی مال کښې د یو بل سره شریک شو (کوم چه لانه ووملا وشوي) عبدالله وائی چه سعد دوه قیدان راوستل ما او عمار هیڅ رانه وستل (ځکه چه شرعا بغیر د خرچ کولو د سرمایه نه شراکت درست نه دې).

قوله: **(عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ اشْتَرَكْتُ أَنَا وَعُمَارٌ وَسَعْدٌ فِي مَا نُصِيبُ يَوْمَ بَدْرٍ قَالَ فَجَاءَ سَعْدٌ بِأَسِيرَيْنِ وَلَمْ أَجِئْ أَنَا وَعُمَارٌ بِشَيْءٍ)**

مطلب خو ښکاره دې سیدنا عبدالله بن مسعود رضی الله عنه فرمائی چه زه عمار او سعد بن ابی وقاص رضی الله عنه مونږ په خپل مینځ کښې د شرکت معامله او کړه په جنگ بدر کښې په حاصل شوی غنیمت باندې (یعنی څه چه به مونږ درې واړو ته په مال غنیمت کښې ملاویری مونږ به هغه په خپل مینځ کښې تقسیم کړو. وړاندې په روایت کښې دی عبدالله بن مسعود رضی الله عنه فرمائی چه سعد بن ابی وقاص خو په مال غنیمت کښې دوه غلامان راوستل، او ما او

۱: سنن النسائي الأيمان والنذور ٤٧ (٣٩٦٩)، البيهقي ١٠٣ (٤٧٠١)، سنن ابن ماجه للتجارا٢ ٦٣ (٢٢٨٨)، (تحفة الأشراف: ٩٦١٦) (ضعيف)

عمار هیڅ نه وور اوړي. په دې حدیث کښې چه کوم شرکت ذکر کړې شوې دې هغه د شرکت فی المباحات د قبیلې نه دي، او دا قسم د شرکت د احنافو او شوافعو دواړو په نزد ناجائز دي، لهذا د دې حدیث جواب به دا وی چه **(انه فعل الصحابة)** یعنی حدیث غیر مرفوع دي، او بله دا چه منقطع دي لعدم سماع ابی عبیده من ابیه، کما فی البذل.

**په حدیث الباب باندې یو اشکال سره د جواب :**

زما دلته یو اشکال پیدا کیږي چه په کتاب الجهاد کښې د عبدالله بن مسعود رضی الله عنه حدیث تیر شوې دي **(نقلنی رسول الله ﷺ یوم بدر سيف ابی جهل)** او دلته هغوی دا فرمائی **(ولم اجی انا وعمار بشی)** اوس یا خو دې حدیث الباب مرجوح کړې شی د انقطاع د وجې نه، او یا دې د دې تاویل او کړې شی چه په دې حدیث کښې نفی د غنیمت عامه ده ممکنه ده چه په عام غنیمت کښې د دې دواړه حصه رسول الله ﷺ نه وی مقرر کړې ځکه چه په کتاب الجهاد کښې دا خبره تیره شوې ده **(بان غنائم بدر کانت لرسول الله ﷺ یدفعها لمن یشاء)** او د ابو جهل توره کومه چه عبدالله بن مسعود رضی الله عنه ته ملاؤ شوې وه هغه خو په طور د نفل او حصه خاصه وه والله تعالی اعلم، والحدیث اخرجه النسائی وابن ماجة، وهو منقطع فان اباعبیده لم یسمع من ابیه، قاله المنذری.

## باب فی المزارعة

**په زمینداره باندې د زمکې ورکولو بیان**

**د مزارعة ذکر په کتاب البیوع کښې :**

کتاب البیوع بیانېږي هم په دې ضمن کښې مصنف رحمه الله مزارعت هم ذکر کړو ځکه چه څنگه بیع او شراء او تجارت په طرق د کسب کښې دی، هم دغه شان مزارعت هم په انواع د کسب کښې دي، امام بخاری رحمه الله خو د مختلفو پیشو ذکر او د هغې ډیر ابواب په کتاب البیوع کښې ذکر کړي دي **(باب ما قیل فی الصواغ، باب ذکر القین والحداد، باب الخياط، باب النساج، باب النجار)** وغیره وغیره، خو هغوی ابواب الحرث والمزارعت د کتاب البیوع نه پس مستقل بیل بیان کړل.

**د مزارعت اقسام سره د بیان د مذاهب ائمه :**

د مزارعت مختلف صورتونه او قسمونه دی چه په هغې کښې بعض بالاتفاق ناجائز دی او بعض بالاتفاق جائز دی او بعض مختلف فیه دی، مزارعت وئیلې شی د بل چا په زمکه کښې کرونده کولو ته په کرایه باندې اخستلو سره، نو گویا مزارعت د کراء الارض نوم شو، پس که کراء الارض بالدرهم وغیره دی نو دا په اتفاق د ائمه اربعه جائز دي، او که مزارعت بقسمة الارض دي یعنی داسې معامله کول چه د زمکې په فلانی حصه کښې چه به کومه کرونده او پیدوار کیږي د زمکې مالک او وائی چه هغه خو به زما وی او باقی د کرونده کونکي، دا بالاتفاق ممنوع دي ځکه چه په دې کښې دهوکه ده لکه چه ظاهره ده، او



يو صورت د مزارعت دا دې چه د طعام مسمی په بدل کښې وی یعنی د زمکې مالک کرونده کونکی ته او وائی چه زه تاته دا زمکه د غلې د دومره مقدار په بدله کښې په کرایه باندې درکوم، مثلاً لس بورئ د غنمو، غنم مطلق کیږدی دا دې نه وائی چه د زمکې په پیداوار کښ، دا صورت د ائمه ثلاثه په نزد جائز دې او طعام مسمی به په دې صورت کښې په منزله د دراهمو وی، او د امام مالک رحمته الله علیه په دې کښې اختلاف دې، هغوی کراء الارض بطعام مسمی ته ناجائز وائی، او یو قسم د مزارعت هغه دې کوم چه بحصه من الخارج وی یعنی د زمکې په پیداوار کښې په خه حصه باندې زمکه ورکړې شی مثلاً نصف یا ثلث چه خه هم خپل مینځ کښې کیخودلې شی، هم دا هغه صورت دې کوم چه مشهور او مختلف فیه دې د ائمه ترمینځه چه هغې ته په نیمکاره باندې زمکه ورکول وائی، د صاحبینو او امام احمد رحمته الله علیه په نزد دا صورت جائز دې د باقی ائمه ثلاث امام ابوحنیفه، امام مالک او امام شافعی رحمته الله علیه په نزد ناجائز دې. د امام ابوحنیفه او امام مالک په نزد خو مطلقاً، او د امام شافعی رحمته الله علیه په نزد لکه څنگه چه امام نووی رحمته الله علیه فرمائی مستقلاً خو ناجائز دې خو تبعاً للمساقات جائز دې، زموږ په نزد فتوی د صاحبینو په قول باندې ده یعنی په جواز باندې، خو د دې دپاره ډیر شرطونه دی کوم چه د فقه په کتابونو کښې مذکور دی پس هغې ته دې رجوع او کړې شی.

#### د مساقات حکم د ائمه اربعه په نزد :

د مزارعت د قبیلې نه یوه بله معامله هم ده چه هغې ته مساقات وائی چه د هغې تعلق د باغ او اونیو سره وی لکه چه د مزارعت تعلق د زمکو سره وی یعنی د باغ مالک د بل چا سره دا معامله او کړې چه ته زموږ د دې اونیو اوبه خور او خدمت کوه، په دې کښې چه خه میوه پیدا کیږی په هغې کښې دومره حصه ستا، دا د جمهور علماء او ائمه ثلاث او صاحبینو په نزد جائز دې خو د امام ابوحنیفه رحمته الله علیه په نزد مساقات هم ناجائز دې، هغوی فرمائی دا خو کراء معدوم دې یعنی میوه کوم ځانې موجود ده فی الحال چه په هغې باندې دا معامله او کړې شی. هغوی فرمائی دا خو کراء معدوم دې یعنی میوه موجوده چرته ده فی الحال چه په هغې سره دا معامله کولې شی، جمهور وائی چه د دې معاملې تعلق د عمل سره دې څنگه چه په مضاربت کښې وی هلته هم نفع فی الحال معدوم وی پس اوس دهغه اختلافاتو حاصل دا شو چه د امام صاحب او صاحبینو په نزد مزارعت او مساقات دواړه جائز دی، او د امام صاحب رحمته الله علیه په نزد دواړه ناجائز دی، او د امام مالک او شافعی په نزد مزارعت خو ناجائز دې او مساقات جائز دې، خو دا په ذهن کښې اوسائی لکه چه پورته تیر شو چه د امام شافعی رحمته الله علیه په نزد مزارعت تبعاً للمساقات جائز دې. دا تفصیل د ائمه اربعه د مذاهبو په اعتبار سره دی، د بعضو نورو علماء کرامو په دې کښې د دې نه علاوه مذاهب هم دی پس د طاؤس او ابن حزم ظاهری رحمته الله علیه په نزد مزارعت یعنی کراء الارض مطلقاً په هیڅ شان هم جائز نه دې، هم دغه شان حافظ فرمائی

قوله: «وبالغ ربعة فقال لايجوز کراؤها الا بالذهب او الفضة».

مونږ پورته دا ليکلي دي چه د احنافو په نزد په مزارعت کښي فتوی د صاحبینو په قول باندې ده چه د امام احمد رحمته الله علیه هم دا مذهب دې او امام بخاری رحمته الله علیه هم باب المزارعة بالشرط ونحوه قائمولو سره د ترجمة الباب د لاندې د بعض صحابه کرامو رضی الله عنہم او د ډیرو تابعینو رضی الله عنہم اقوال تعلیقا د دې په جواز کښي نقل کړی دی.

### د مزارعت د جواز حدیث متفق علیه دي :

او بیا ئې روستو د ابن عمر رضی الله عنہما حدیث مسندا د هغې په جواز کښي او فرماتیلو چه د هغې متن دا دې « عن نافع ان عبد الله بن عمر رضی الله عنہما اخبره ان النبی صلی الله علیه و آله عامل اهل خیر بشرط ما ینخرج منها من زرع وثمر الحدیث » (بخاری ۲۱۳/۲)

امام ترمذی رحمته الله علیه هم د ټولو نه اول په باب کښي هم دا د ابن عمر رضی الله عنہما حدیث ذکر فرماتیلې دې او بیا فرمائی « قال ابو عیسی هذا حدیث حسن صحیح، والعمل علی هذا عند بعض اهل العلم من اصحاب النبی صلی الله علیه و آله وغيرهم لم یروا بالمزارعة باسا علی النصف والثلث والرابع وهو قول احمد واسحاق » او بیا ئې د دې نه روستو دویم مذهب د امام مالک او شافعی رضی الله عنہما ذکر کړو چه هغوی دا ناجائز گنړی یعنی په کرایه باندې زمکه ورکول او بیا ئې وړاندې دریم مذهب دا بیان کړو چه د بعض علماء کرامو په نزد کراء الارض صرف په سرو او سپینو زرو باندې جائز ده آه دا آخری قول لکه چه پورته د حافظ په کلام کښي تیر شو د ربیعة الرائی دې دا حدیث د ابن عمر رضی الله عنہما کوم چه د جواز دلیل دې کوم ته چه امام ترمذی رحمته الله علیه حدیث حسن صحیح وئیلې دې دا د صحاح سته روایت دې پس په تحفة الاخوذی کښي دی (اخرجه الجماعة).

### د مزارعت د عدم جواز حدیث او په هغې کښي اضطراب سند او متنا :

او کوم حضرات چه مزارعت ته ناجائز وائی لکه ائمة ثلاث د هغوی دلیل هغه حدیث دې کوم چه امام ترمذی رحمته الله علیه مستقلا بل باب قائمولو سره په هغې کښي ذکر کړې دې یعنی د رافع بن خدیج رضی الله عنه حدیث کوم چه امام ابوداؤد رحمته الله علیه په متعدد طرقو سره په مختلفو الفاظو سره ذکر کړې دې. د دې حدیث په باره کښي امام ترمذی رحمته الله علیه فرمائی « وحدیث رافع فیه اضطراب یروی هذا الحدیث عن رافع بن خدیج عن عمومه، و یروی عنه ظهیر بن رافع وهو احد عمومه، وقد روی هذا الحدیث عنه علی روايات مختلفة اهـ » یعنی په دې حدیث کښي سند او اضطراب دې او متنا هم، او دا ټول مختلف طرق د کومو طرف ته چه امام ترمذی رحمته الله علیه اشاره فرماتیلې ده او تفصیلا ئې هغه نه دی ذکر فرماتیلې دلته په ابوداؤد کښي دا ټول طرق مختلفه او روایات مختلفه په تفصیل سره ذکر شوی دی لکه چه ستاسو مخې ته په کتاب کښي موجود دی.

### د رافع بن خدیج رضی الله عنه په حدیث کښي متنا اضطراب :

په دې حدیث کښي لکه چه مونږ څنگه اووې متنا هم اختلاف دې هغه داسې چه د دې باب څلورم حدیث او گورئ چه په هغې کښي دی « قَالَ سَأَلْتُ رَافِعَ بْنَ خَدِيجٍ عَنْ كِرَاءِ الْأَرْضِ بِالذَّهَبِ وَالنَّوْزِقِ فَقَالَ لَا بَأْسَ بِهَا إِنَّمَا كَانَ النَّاسُ يُؤَاجِرُونَ ..... بِمَا عَلَى الْمَاضِيَاتِ وَأَقْبَالِ



الجداول الخ ﴿ د دې مضمون دا دې چه رافع بن خديج رضي الله عنه فرمائي چه په كراء الارض بالدراهم والدنانير كنبې هيڅ باك نشته، ممانعت خود دې دې لكه څنگه چه به بعض خلقو د رسول الله صلى الله عليه وسلم په زمانه كنبې مزارعت كولو (د زمكې د تقسيم سره) چه كوم پيداوار د اوبو په لختو باندې اوشی او د نهر په نزدې حصو باندې اوشی هغه خو زمونږ او باقى د كرونده كونكى ﴿ ماذيات ﴾ يعنى د اوبو د بهيدو خايونه يعنى نالى ﴿ اقبال الجداول ﴾ يعنى اوائل الجداول د دې روايت متن خود دې او د دې نه پس بيا په را روان باب كنب، ﴿باب فى التشديد فى ذلك﴾ كنبې په اووم حديث كنبې داسې راخى، ﴿إِنِّي لَنَجِمْ لِي جِجْرَ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ وَحَجَجْتُ مَعَهُ فَجَاءَهُ أَخِي عِمْرَانُ بْنُ سَهْلٍ فَقَالَ أَكْرَيْتَنَا أَرْضًا فَلَانَةً بِمِائَتِي دِرْهَمٍ فَقَالَ دَعُهُ فَإِنَّ النَّبِيَّ -صلى الله عليه وسلم- نَهَى عَنْ كِرَاءِ الْأَرْضِ﴾ اوگورئ په دې كنبې د كراء الارض بالدراهم والدنانير نه هم منع كوى. لهذا ترجيح د ابن عمر رضي الله عنه حديث يعنى د جواز حديث لره ده، او هم دا د ابن عباس رضي الله عنه د روايت نه هم معلومېږي لكه چه مونږ سره د باب په رومبى حديث كنبې تير شوې دى.

[۳۳۸۹] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ يَقُولُ: مَا كُنَّا نَرَى بِالْمُزَارَعَةِ بَأْسًا، حَتَّى سَمِعْتُ رَافِعَ بْنَ خَدِيجٍ يَقُولُ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْهَا، فَذَكَرْتُهُ لَطَاوُسٍ، فَقَالَ لِي ابْنُ عَبَّاسٍ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَنْهَ عَنْهَا، وَلَكِنْ قَالَ: "لَأَنْ يَمْنَحَ أَحَدُكُمْ أَرْضَهُ، خَيْرٌ مِنْ أَنْ يَأْخُذَ عَلَيْهَا خَرَجًا مَعْلُومًا".

د ابن عمر رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه مونږ به زمكه په زميداره ور كول بدنه گنرل تردې چه مونږه د رافع بن حبيب رضي الله عنه نه واوريدل چه نبى صلى الله عليه وسلم د دې نه منع فرمائيلى ده نو ما دا خبره طاوس ته بيان كړه هغه او وئيل ماد ابن عباس نه اوريدلى دى چه فرمائيل ئې نبى صلى الله عليه وسلم د دې نه منع نه ده. فرمائيلى چه څوك خپله زمكه چاته په ذمينداره بغير كرايه ور كړي بلكه دا د دې نه بهترده چه زمكه د كړلو دپاره په كرايه ور كړي.

قوله: ﴿ سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ يَقُولُ مَا كُنَّا نَرَى بِالْمُزَارَعَةِ بَأْسًا حَتَّى سَمِعْتُ رَافِعَ بْنَ خَدِيجٍ يَقُولُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْهَا، فَذَكَرْتُهُ لَطَاوُسٍ فَقَالَ قَالَ لِي ابْنُ عَبَّاسٍ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- لَمْ يَنْهَ عَنْهَا وَلَكِنْ قَالَ « لَأَنْ يَمْنَحَ أَحَدُكُمْ أَرْضَهُ خَيْرٌ مِنْ أَنْ يَأْخُذَ عَلَيْهَا خَرَجًا مَعْلُومًا ﴾ مضمون د حديث دا دې عمر بن دينار وائى چه ما د ابن عمر رضي الله عنه نه واوريدل هغوى به فرمائيل چه مونږ خو به په مزارعت كنبې هيڅ باك نه گنرلو (يعنى ټولو صحابه كرام رضي الله عنهم) تردې چه ما د رافع بن خديج رضي الله عنه نه واوريدل هغوى به وئيل چه رسول الله صلى الله عليه وسلم د دې نه منع فرمائيلى ده، عمرو بن دينار وائى چه ما د ابن عمر رضي الله عنه دا خبره طاوس ته نقل كړه په دې باندې طاوس اووې چه ماته زما استاد ابن عباس رضي الله عنه دا فرمائيلې وو چه رسول الله صلى الله عليه وسلم د مزارعت نه منع نه ده فرمائيلې بلكه دا ئې فرمائيلې وو چه سړې دې خپله زمكه منيحه كړي

۱: صحيح البخاري/ الحرث والمزارعة ۱۰ (۲۳۳۰)، الهبة ۳۵ (۲۶۳۴)، صحيح مسلم/اليبوع ۲۱ (۱۵۴۷)، سنن النسائي/ المزارعة ۲ (۳۹۲۷، ۳۹۲۸) سنن ابن ماجه/للمهون ۷ (۲۴۵۰)، (تحفة الأشراف: ۵۷۳۵، ۳۵۶۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۲۳۴، ۱۱/۲، ۴۶۳، ۴۶۵، ۱۴۲/۴) (صحيح)

یعنی هم داسې دې بغیر د عوض نه د کروندې دپاره بل ته ورکړی دا زیاته غوره ده د دې نه چه په دې باندې څه اجرت معلومه واخلی.

د دې حاصل دا شو چه رافع بن خدیج کوم چه د حدیث نهی عن المزارعت په باره کښې روایت کوی د دې حدیث نه مقصود د رسول الله ﷺ تحریم د مزارعت لره بیانول نه دی بلکه د دې نه مقصود صرف ترغیب دې چه زمکه په ځانې د کرایه ورکولو مفت ورکړې شی نو زیاته غوره ده، هم دغه شان د زید بن ثابت رضی الله عنه نه هم په حدیث د رافع باندې اعتراض راځی. اوس دې د دې نه پس په ټولو روایاتو د باب کښې غور او کړې شی د ټولو حاصل مونږ بیان کړو.

### د رافع بن خدیج حدیث هم په صحیحینو کښې موجود دي:

او د جمهور علماء ثلاث اتباع چا چه د رافع بن خدیج رضی الله عنه په حدیث باندې عمل کړې دې هغوی فرمائی چه دا حدیث د سنن نه علاوه د خپلو بعضو طرقو په اعتبار سره په بخاری او مسلم کښې هم دي د دې حدیث چه کوم طرق راجح وو په هم هغه طرقو سره حضرات شیخینو دا اخستلې دي او د دې په متن کښې چه پورته کوم اضطراب بیان کړې شوې دي د هغې په باره کښې محدثینو هغه طریق لره چه په هغې کښې د کراء الارض بالدراهم والدنانیر نه منع راغلې ده هغه ئې ضعیف کړې دي پس په تخفة الاخوذی کښې دی:

قوله: (قال الحافظ في الفتح واما ما رواه الترمذي من طريق مجاهد عن رافع بن خديج في النهي عن كراء الارض ببعض خراجها او بدراهم فقد اعله النسائي بان مجاهد لم يسمعه من رافع، قال الحافظ وابوبكر بن عياش في حفظه مقال، وقد رواه ابو عوانة وهو احفظ منه عن شيخه فيه فلم يذكر الدراهم آه)

[۳۳۹۰] حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُثَيْمٍ، وَحَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا بِشْرُ الْمُعَنَّى، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ بْنِ مُحَمَّدٍ بْنِ عَمْرٍاءَ، عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ أَبِي الْوَلِيدِ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، قَالَ: قَالَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ: يَغْفِرُ اللَّهُ لِرَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ، أَنَا وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالْحَدِيثِ مِنْهُ، إِنَّمَا أَنَا هَذَا رَجُلَانِ، قَالَ مُسَدَّدٌ: مِنَ الْأَنْصَارِ، ثُمَّ اتَّفَقْنَا، قَدْ اتَّفَقْنَا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنْ كَانَ هَذَا شَأْنُكُمْ، فَلَا تُكْرُوا الْمَزَارِعَ". زَادَ مُسَدَّدٌ، فَسَمِعَ قَوْلَهُ: "لَا تُكْرُوا الْمَزَارِعَ".

د عروه بن زبیر نه روایت دې فرمائی چه زید بن ثابت رضی الله عنه فرمائیلی دی الله تعالی دي رافع بن خدیج گفته مغفرت اوکړي په الله مې دي قسم وي زه دهغه نه په زیاتو احادیثو ښه پوهیږم، ده ته خو صرف دوه کسان راغلي دي، دمسدد په روایت کښې دي چه دا دواړه انصاریان وو، په باقی روایت کښې دواړه راویان متفق دي چه دوه کسان راغلل په خپل مینځ کښې ئې جگړه کړې وه نبی ﷺ ورته اوفرمائیل که چرې ستاسو داحال وي نویبازمکه په کرایه باندې مه ورکوی رافع بن خدیج صرف دومره خبره اوریدلي ده چه زمي په کرایه مه ورکوی اوددې نه مخکښې خبره ئې نه ده اوریدلي او نقل کړي ئې ده.

۱: سنن النسائي / المزارعة ۳ (۳۹۵۹)، سنن ابن ماجه / الرهون ۱۰ (۲۴۶۱)، (تحفة الأشراف: ۳۷۳۰)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱۸۷، ۱۸۲/۵) (ضعيف)



قوله: ﴿قَالَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ يَغْفِرُ اللَّهُ لِرَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ أَنَا وَاللَّهُ أَغْلَمُ بِالْحَدِيثِ مِنْهُ الْخ﴾  
 زید بن ثابت رضی اللہ عنہ د رافع بن خدیج رضی اللہ عنہ په روایت باندې نقد فرمائی چه هغوی د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم  
 د حدیث په مفهوم باندې پوهیدو کښې غلطی اوکړه، زید بن ثابت رضی اللہ عنہ فرمائی چه په دې  
 حدیث کښې زه د رافع بن خدیج رضی اللہ عنہ نه زیات خبر یم اصل خبره دا ده چه دوه سړی چه هغوی  
 په خپل مینځ کښې د مزارعت معامله کړې وه (په هغې کښې به هغوی څه ناجائزه شکل  
 اختیار کړې وی، شرط فاسد وغیره، هغوی د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضر شو نو  
 رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چه که ستاسو حال دا وی نو بیا د مزارعت معامله مه کوئ یعنی  
 رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د مطلق مزارعت نه منع نه ده فرمائیلې بلکه داسې مزارعت چه هغه مفضی  
 الی النزاع وی. ﴿فسمع قول لا تكروا المزارع﴾ یعنی رافع بن خدیج بغیر د دې نه چه په سیاق  
 او سباق کښې غور اوکړی ﴿لا تكروا المزارع﴾ د حدیث صرف دا تکره واوریده او هم هغه  
 روایت کوی.

[۳۳۹۱] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عِكْرَمَةَ  
 بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْبَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ سَعْدٍ،  
 قَالَ: "كُنَّا نَكْرِي الْأَرْضَ بِمَا عَلَى السَّوَاقِ مِنَ الزَّرْعِ، وَمَا سَعِدَ بِالْمَاءِ مِنْهَا، فَهَذَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ  
 عَنْ ذَلِكَ وَأَمَرَنَا أَنْ نَكْرِيهَا بِدَهَبٍ أَوْ فِضَّةٍ."

د سعد رضی اللہ عنہ نه روایت دې چه مونږ به زمکه په محصول باندې ورکوله د دومره پیداوار په  
 عوض کوم چه به دنیر په غاړه ولاړ وو او کوموته چه به اوبه پخپله ورختلې نونښی رضی اللہ عنہ مونږ  
 لره ددې خبرې نه منع کړو اوحکم ئې اوکړو چه زمکه په کرایه باندې د سرو زرو یا  
 د سپینو زرو په عوض ورکوی.

[۳۳۹۲] (۲) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، أَخْبَرَنَا عِيسَى، حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ، عَنْ حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ،  
 حَدَّثَنَا لَيْثٌ كِلَاهُمَا عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَاللَّفْظُ لِلْأَوْزَاعِيِّ، حَدَّثَنِي حَنْظَلَةُ بْنُ قَبِيصٍ الْأَنْصَارِيُّ، قَالَ:  
 سَأَلْتُ رَافِعَ بْنَ خَدِيجٍ كِرَاءَ الْأَرْضِ بِالذَّهَبِ وَالْوَرَقِ؟ فَقَالَ: "لَا بَأْسَ بِهَا إِنَّمَا كَانَ النَّاسُ يُؤْجِرُونَ عَلَى عَهْدِ  
 رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَا عَلَى الْمَادِيَاتِ، وَأَقْبَالِ الْجُدَاوِلِ، وَأَشْيَاءَ مِنَ الزَّرْعِ، فَيَهْلِكُ هَذَا، وَيَسْلَمُ هَذَا،  
 وَيَسْلَمُ هَذَا، وَيَهْلِكُ هَذَا، وَلَمْ يَكُنْ لِلنَّاسِ كِرَاءُ إِلَّا هَذَا، فَلِذَلِكَ زَجَرَعْنَاهُ، فَأَمَّا شَيْءٌ مُمْضَمُونَ مَعْلُومٌ فَلَا بَأْسَ بِهِ."  
 وَحَدِيثُ إِبْرَاهِيمَ أَمْرٌ، وَقَالَ قُتَيْبَةُ: عَنْ حَنْظَلَةَ، عَنْ رَافِعٍ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَاهُ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ حَنْظَلَةَ، نَحْوَهُ.

د حنظله بن قیس انصاري رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه رافع بن خدیج رضی اللہ عنہ نه مې د سرو زرو  
 یا د سپینو زرو په عوض د زمکې په کرایه ورکولو په باره کښې سوال اوکړو نو هغه راته  
 جواب راکړو چه په دې کښې هېڅ خرج نشته دنښی رضی اللہ عنہ په زمانه کښې به خلقو دا بوخواته

(۱): سنن النسائي / المزارعة ۲ (۳۹۲۵)، (تحفة الأشراف: ۳۸۶۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/ ۱۷۸، ۱۸۲)، دي / البيوع ۷۵  
 (۲۶۶۰) (حسن)  
 (۲): صحيح البخاري / المحرث ۷ (۲۳۲۷)، ۱۳ (۲۳۳۳)، ۱۹ (۲۳۴۶)، الشروط ۷ (۲۷۲۲)، صحيح مسلم / البيوع ۱۹ (۱۵۴۷)،  
 سنن النسائي / المزارعة ۲ (۳۹۳۰، ۳۹۳۱، ۳۹۳۲، ۳۹۳۳)، سنن ابن ماجه / للموهون ۹ (۲۴۵۸)، (تحفة الأشراف: ۳۵۵۳)، وقد  
 أخرجه: موطا امام مالك / كراء الأرض ۱ (۱)، مسند احمد (۴/ ۴۶۳، ۱۴۰، ۱۴۲) (صحيح)

اودنالو خواته زمکې په کرایه ورکولې نوکله به فصل خایه شو اوکله به بچ پاتې کیدو ددې نه علاوه په خلقو کښې د محصول رواج نه وو نوڅکه نبی ﷺ ددې نه منع اوفرمائیله اوکوم شې چې محفوظ وي نوپه هغې کښې څه خرچ نشته، دابراهیم روایت مکمل دې اوقتیبه عن حنظله عن رافع وئيلي دي، امام ابوداؤد رحمه الله علیه فرمائی ددې روایت په شان روایت یحی بن سعید دحنظله نه هم نقل کړې دي.

[۳۳۹۳] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ الرَّحْمَنِ، عَنْ حَنْظَلَةَ بْنِ قَيْسٍ، أَنَّهُ سَأَلَ رَافِعَ بْنَ خَدِيجٍ، عَنْ كِرَاءِ الْأَرْضِ، فَقَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ كِرَاءِ الْأَرْضِ، فَقَالَ: أَبِالْذَّهَبِ وَالْوَرِقِ، فَقُلْتُ: أَمَا بِالذَّهَبِ وَالْوَرِقِ فَلَا بَأْسَ بِهِ."

د حنظله بن قيس نه روایت دې فرمائی چې درافع بن خديج ﷺ نه مې دزمکې په کرایه ورکولو په باره کښې تپوس اوکړو نو هغه اوفرمائیل نبی ﷺ ددې نه منع فرمائیلی ده (یعنی دکرلودپاره) بیا حنظله اووئیل چې درافع نه مې تپوس اوکړو که چرې دسروزرو پاسپینوزرو په عوض زمکه په کرایه ورکړې شي نوڅه حکم لری هغه اوفرمائیل په دې کښې څه خرچ نشته.

﴿عَنْ سَعْدِ قَالَ كُنَّا نُكْرَى الْأَرْضَ بِمَا عَلَى السَّوَاقِ مِنَ الزَّرْعِ وَمَا سَعَدَ بِالْمَاءِ مِنْهَا﴾

سعد بن ابی وقاص ﷺ فرمائی چې مونږ به زمکه په کرایه باندې ورکوله د هغه پیدوار په بدل کښې کوم چې به د اوبو د نالو په خوا کښې کیدلو، او د زمکې په کومو حصو کښې چې به د سواقی اوبه پخپله رسیدې (یعنی مزارعت بقسمة الارض) پس رسول الله ﷺ مونږ د هغې نه منع اوفرمائیلو.

## باب فی التَّشْدِيدِ فِي ذَلِكَ

باب: زمکه په اجاره ورکولو ممانعت

[۳۳۹۴] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبٍ، عَنْ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ ابْنَ عُمَرَ، كَانَ يَكْرَى أَرْضَهُ حَتَّى بَلَّغَهُ، أَنَّ رَافِعَ بْنَ خَدِيجٍ الْأَنْصَارِيَّ حَدَّثَ، "أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَنْهَى عَنْ كِرَاءِ الْأَرْضِ، فَلَقِيَهُ عَبْدُ اللَّهِ، فَقَالَ: يَا ابْنَ خَدِيجٍ، مَاذَا تُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي كِرَاءِ الْأَرْضِ؟ قَالَ رَافِعُ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ: سَمِعْتُ عُمَرَ وَكَأَنَّا قَدْ شَهِدْنَا بِذَلِكَ أَهْلَ الدَّارِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ كِرَاءِ الْأَرْضِ". قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: وَاللَّهِ لَقَدْ كُنْتُ أَعْلَمُ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ الْأَرْضَ تُكْرَى، ثُمَّ خَشِيَ عَبْدُ اللَّهِ أَنْ يَكُونَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَدًا فِي ذَلِكَ شَيْئًا لَمْ يَكُنْ عَلَيْهِ، فَتَرَكَ كِرَاءَ الْأَرْضِ. قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَاهُ أَيُّوبُ، وَعَبِيدُ اللَّهِ، وَكَثِيرُ بْنُ قُرْقِدٍ، وَمَالِكٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ رَافِعٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَرَوَاهُ الْأَوْدَاعِيُّ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَمْرٍاءَ الْحَنْفِيِّ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ رَافِعٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَكَذَلِكَ رَوَاهُ زَيْدُ بْنُ أَبِي أَنَسٍ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّهُ أَى رَافِعًا، فَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ

(۱): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۳۵۵۳) (صحيح)

(۲): صحيح البخاري/المحرث ۱۸ (۲۳۴۵)، صحيح مسلم/البیوع ۱۷ (۱۵۴۷)، سنن النسائي/المزارعة ۲ (۳۹۲۱)، (تحفة الأشراف: ۶۸۷۹، ۵۵۷۱)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۴/۶۵، ۱۴۰/۴) (صحيح)



عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَ: نَعَمْ، وَكَذَا. قَالَ عِكْرَمَةُ بْنُ عَمَّارٍ: عَنْ أَبِي النَّجَّاشِيِّ، عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ، وَرَوَاهُ الْأَوْزَاعِيُّ، عَنْ أَبِي النَّجَّاشِيِّ، عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ ظَهْرٍ، عَنْ رَافِعٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَبُو النَّجَّاشِيِّ: عَطَاءُ بْنُ صُهَيْبٍ.

سالم بن عبدالله بن عمر خبر را کړې دې چې ابن عمر رضي الله عنهما به خپله زمکه په اجاره باندې ورکوله، بیا کله چې هغوی ته دا خبر اورسیدو چې رافع بن خديج رضي الله عنه انصاري رضي الله عنه حديث بيان کړې دې چې رسول الله صلی الله علیه و سلم به زمکه په اجاره ورکولونه منع کوله، نو عبدالله بن عمر رضي الله عنهما دهغوی سره ملاؤ شو، او ورته ئې اووئیل: ابن خديج! زمکه په اجاره باندې د ورکولو په سلسله کښې د رسول الله صلی الله علیه و سلم نه آیا تاسو حديث بيانوي؟ رافع رضي الله عنه عبدالله بن عمر رضي الله عنهما ته اووئیل: ما دخپلو دواړو ترونو نه اوریدلی دی او هغوی دواړه په جنگ بدر کښې شریک وو، هغوی کور والو ته حديث بيانولو چې رسول الله صلی الله علیه و سلم زمکه په اجاره باندې د ورکولو نه منع فرمائیلې ده، عبدالله بن عمر رضي الله عنهما اووئیل: په الله قسم! ماته د رسول الله صلی الله علیه و سلم په زمانه کښې دا پته وه چې زمکه به په اجاره باندې ورکولې شوه، بیا عبدالله رضي الله عنه ته ویره شوه چې په دغه دوران کښې رسول الله صلی الله علیه و سلم په دې باره کښې کومه نوې خبره نه وی صادر کړې او ماته پته نه وی لگیدلې، نو هغوی زمکه په اجاره باندې ورکول پریځودل، ابو داؤد وائی چې هغه ته ایوب، عبیدالله، کثیر بن فرق و مالک د نافع نه، هغوی د رافع رضي الله عنه نه او رافع د نبی کریم صلی الله علیه و سلم نه روایت کړې دي. او دا اوزاعي د حفص بن عنان حنفی نه او هغوی د نافع نه او نافع د رافع رضي الله عنه نه روایت کړې دي، رافع وائی: ما د رسول الله صلی الله علیه و سلم نه اوریدلی دی، او دغسې دا زید بن ابی انیسېسه د حکم نه، هغوی د نافع نه او نافع د ابن عمر رضي الله عنهما نه روایت کړې دي چې هغه رافع ته راغې او دهغه نه ئې تپوس او کړو چې آیا تاسو د نبی کریم صلی الله علیه و سلم نه اوریدلی دي؟ نو هغوی اووئیل: آو، دغسې عکرمه بن عمار د ابونجاشی نه او هغوی د رافع بن خديج رضي الله عنه نه روایت کړې دي هغه وائی: ما د نبی کریم صلی الله علیه و سلم نه اوریدلی دی، او دا اوزاعي د ابو نجاشی نه، هغوی د رافع بن خديج رضي الله عنه نه، رافع دخپل تره ظهیر بن رافع نه او هغوی د نبی کریم صلی الله علیه و سلم نه روایت کړې دي. ابو داؤد وائی: د ابونجاشی نه مراد عطاء بن صهیب دي.

قوله: (أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ يُكْرَى أَرْضَهُ حَتَّى بَلَغَهُ أَنَّ رَافِعَ بْنَ خَدِيجٍ الْأَنْصَارِيَّ) الخ

يعني د ابن عمر رضي الله عنهما عادت کوم چې د رسول الله صلی الله علیه و سلم د زمانې نه د مزارعت ووتردې چې هغوی ته د رافع بن خديج رضي الله عنه د مزارعت دا روایت اورسیدو چې رسول الله صلی الله علیه و سلم به د دې نه منع فرمائیلې د کراء الارض نه په دې باندې عبدالله بن عمر رضي الله عنهما د رافع بن خديج رضي الله عنه ملاقات ته لاړو چې ته د رسول الله صلی الله علیه و سلم نه د کراء الارض په باره کښې څه حديث نقل کوي؟ نو هغوی جواب ورکړو چې ما دخپلو دوه ترونو نه واوریدل (قيل اسم العمين: ظهير ومظهر وقيل ظهير ومهير) کومو چې به زمونږ د کور د خلقو نه بيان کولو چې رسول الله صلی الله علیه و سلم د کراء الارض نه منع او فرمائیلې، په دې باندې عبدالله بن عباس رضي الله عنهما فرمائی قسم په الله پاک مونږ ته ښه پته ده چې د رسول الله صلی الله علیه و سلم په زمانه کښې به زمکه په دې طريقه په کرایه باندې ورکولې شوه (ثم خشي عبدالله الخ) يعني په شروع کښې خو ابن عمر رضي الله عنهما هم داسې او فرمائیل خو بیا ورته

روستو دا ویره پیدا شوه چه هسې نه واقعی رسول الله ﷺ په اخر کښې د دې نه منع فرمائيلې وی چه د هغې ماته خبر نه دې شوي پس هغوی مزارعت احتیاطاً ترک کړو.

[۳۳۹۵] (۱) حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ مَيْسَرَةَ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ يَعْلَى بْنِ حَكِيمٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ، أَنَّ رَافِعَ بْنَ خَدِيجٍ، قَالَ: "كُنَّا نَخْبِرُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَدْ كَرَأْنَا بَعْضَ عُمُومَتِهِ أَتَاهُ، فَقَالَ: تَمَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ أَمْرٍ كَانَ لَنَا نَافِعًا، وَطَوَاعِيَّةَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ أَنْفَعُ لَنَا، وَأَنْفَعُ، قَالَ: قُلْنَا: وَمَا ذَاكَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ كَانَتْ لَهُ أَرْضٌ فَلْيُزْرِعْهَا، أَوْ فَلْيُزْرِعْهَا أَخَاهُ، وَلَا يُكَارِبْهَا بِثُلْثٍ، وَلَا بِرُبْعٍ، وَلَا بِطَعَامٍ مُسَمًّى".

د سليمان بن يسار نه روايت دې فرمائي چه رافع بن خديج رضي الله عنه وئيلي دی چه مونږ به دنبي ﷺ په زمانه کښې زمکه په زمينداره ورکوله او اوښ وئيل چه يوخل زما يوتره راغي او وښ وئيل چه نبي ﷺ ددې معاملي نه منع فرمائيلې ده په کومه کښې چه زمونږ فائده وه ليکن دالله تعالی اودهغه درسول تابعداری کول زمونږ دپاره ډير فائده مند عمل دې مونږ ورته عرض وکړو چه هغه نبي ﷺ اوفرمايل دهرچاسره چه زمکه وي نوياخودې پخپله وکړي او يا دې بل چاته په زمينداره ورکړي او په برخودې ښې نه ورکوي.

﴿وَلَا يُكَارِبْهَا بِثُلْثٍ وَلَا بِرُبْعٍ وَلَا بِطَعَامٍ مُسَمًّى﴾

د امام مالک رحمته الله عليه د مسلک تائيد:

د دې حديث نه د امام مالک رحمته الله عليه د مسلک تائيد کيږي چه زمکې لره د طعام مسمی په بدل کښې نه دی ورکول پکار، د جمهورو د طرف نه د دې جواب دا کيدې شی چه د طعام مسمی نه مراد د غلي مقدار معين پنځه بورئ يا لس بورئ مراد نه دی بلکه د دې نه مراد هغه غله ده ﴿ما على السواقي والماذيات﴾ کوم چه بالاتفاق ممنوع دی.

[۳۳۹۶] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، قَالَ: كَتَبَ إِلَيَّ يَعْلَى بْنُ حَكِيمٍ، أَنِّي سَمِعْتُ سُلَيْمَانَ بْنَ يَسَارٍ، يَجْعَلِي إِسْنَادَ عُبَيْدِ اللَّهِ وَحَدِيثِهِ.

دايوب نه روايت دې فرمائي چه يعلى بن حکيم ماته ليکلی ووچه مادسليمان بن يسار نه اوريدلی دی په اود روايت متن اوسند ښې دعبيدالله دروايت په شان دې.

[۳۳۹۷] (۳) حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ ابْنِ رَافِعٍ بْنِ خَدِيجٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: جَاءَنَا أَبُو رَافِعٍ، مِنْ عِنْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: "نَهَانَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ أَمْرٍ كَانَ يَرْفُقُ بِنَا وَطَاعَةِ اللَّهِ وَطَاعَةِ رَسُولِهِ أَرْفَقَ بِنَا نَهَانَا أَنْ يَزْرَعَ أَحَدُنَا إِلَّا أَرْضًا يَمْلِكُ رَقَبَتَهَا، أَوْ مَرْجَةً يَمْنَحُهَا رَجُلٌ".

د رافع بن خديج رضي الله عنه خوي د خپل پلار نه روايت کوي فرمائي چه زما پلار مونږ ته دنبي ﷺ دخوانه راغي او وښ وئيل چه مونږ نبي ﷺ دهغه کارنه منع کړی يو کوم چه زمونږ دپاره

۱: صحيح مسلم / البيوع ۱۸ (۱۵۴۸)، سنن النسائي / المزارعة ۲ (۳۹۰۴، ۳۹۰۵، ۳۹۲۶)، (تحفة الأشراف: ۳۵۵۹، ۱۵۵۷۰)، وقد أخرجه: موطا امام مالك / كراء الأرض ۱ (۱)، مسند احمد (۴/ ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷) (صحيح)

۲: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۳۵۵۹، ۱۵۵۷۰) (صحيح)

۳: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۲۰۳۳) (حسن)



اسان دې، لیکن زمونږ دپاره دهرڅه نه اسان دالله تعالی اودهغه درسول تابعداری کول دي، مونږ نبي ﷺ ددې نه منع کړی یو چه په مونږ کښې دی یوکس دچاز مکه وکړي مگر هله به ئې کړي چه مالک په خپله وي اویائی بل څوک ده ته دده ئې په طور ورکړی.

[۳۳۹۸] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، أَنَّ أَسِيدَ بْنَ ظَهْرٍ، قَالَ: جَاءَنَا رَافِعُ بْنُ خَدِيجٍ، فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، "يَنْهَاكُمْ عَنْ أَمْرٍ كَانَ لَكُمْ نَافِعًا، وَطَاعَةُ اللَّهِ وَطَاعَةُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَمُّ لَكُمْ، إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهَاكُمْ عَنِ الْحَقْلِ، وَقَالَ: مَنْ اسْتَعْفَى عَنِ أَرْضِهِ، فَلَيْمَنَحَهَا أَخَاهُ أَوْلَيْدَعٌ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَكَذَا رَوَاهُ شُعْبَةُ، وَمُفَضَّلُ بْنُ مَهْلَهْلٍ، عَنْ مَنْصُورٍ، قَالَ شُعْبَةُ: أَسِيدُ ابْنِ أَخِي رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ.

داسید بن ظهیر نه روایت دې فرمائی چه رافع بن خدیج مونږ ته راغې اووئې وئیل چه نبي ﷺ تاسو دیوکار نه منع کړي یئ په کوم کښې چه ستاسو دپاره څه قدرې فائده ده لیکن دالله تعالی اودهغه درسول تابعداری کول ستاسو دپاره عظیمه فائده ده یقینانې ﷺ تاسو دحقل (زمکه په زمیداره ورکولو نه منع کړي یئ او فرمائیلې ئې دي څوک چه په تاسو کښې خپلې زمکې ته ضرورت نه لری نوخپل مسلمان رورته دي هدیه کړی (عاریتایا هبتا). امام ابو داؤد فرمائی چه دا روایت شعبه او مفضل بن مهلهل هم د منصور نه نقل کړي دي، او شعبه وئیلی دی اسید درافع بن خدیج وراره دي.

[۳۳۹۹] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا أَبُو جَعْفَرٍ الْخَطَمِيُّ، قَالَ: بَعَثَنِي عَمِّي أَنَا، وَعَلَامًا لَهُ، إِلَى سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، قَالَ: فَقُلْنَا لَهُ شَيْءٌ بَلَّغْنَا عَنْكَ فِي الْمَزَارَعَةِ، قَالَ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ لَا يَرَى بِهَا بَأْسًا حَتَّى يَبْلُغَهُ، عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ حَدِيثٌ، فَأَتَاهُ فَأَخْبَرَهُ رَافِعٌ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَتَى بَنِي حَارِثَةَ، فَرَأَى زَرْعًا فِي أَرْضِ ظَهْرٍ، فَقَالَ: "مَا أَحْسَنَ زَرْعَ ظَهْرٍ، قَالُوا: لَيْسَ لَظَهْرٍ، قَالَ: أَلَيْسَ أَرْضُ ظَهْرٍ؟ قَالُوا: بَلَى، وَلَكِنَّهُ زَرْعُ فُلَانٍ. قَالَ: فَخُذُوا زَرْعَكُمْ، وَرُدُّوا عَلَيْهِ النَّفَقَةَ"، قَالَ رَافِعٌ: فَأَخَذْنَا زَرْعَنَا، وَرَدَدْنَاهُ إِلَيْهِ النَّفَقَةَ، قَالَ سَعِيدٌ: أَفَقَرَّ أَحَاكَ أَوْ أَكْرَهَ بِالذَّهْرِ هِمٌّ.

دابو جعفر خطمی نه روایت دې فرمائی چه زه خپل تره اویوئې راسره خپل غلام سعید بن المسیب نه ولیږلو مونږ ورته وئیل چه دمزارعت په حقله مونږ ته ستادخوانه خبر را کړې شوې دي هغه وئیل چه ابن عمر ﷺ به ددې څه باک نه گنړلو، تردې درافع بن خدیج دطرف نه ورته روایت ورسید ونوهغه رافع بن خدیج ته ورغې رافع ورته خبر ورکړو چه نبي ﷺ بنی حارثه ته لاړو اود ظهیر په زمکه کښې ئې فصل اولیدونو اووئې فرمائیل دظهیر فصل څومره ښکلی دي، صحابه کرامو ورته وئیل دا دظهیر نه دي، نبي ﷺ او فرمائیل ایاداد ظهیر زمکه نه ده هغوی وئیل ولي نه لیکن فلانی ته ئې په زمیداره ورکړې ده نبي ﷺ غلیه السلام او فرمائیل خپل فصل واخلي او هغه ته مصرف واپس کړئ رافع وائی چه مونږ خپل فصل واخستو او هغه ته مومصرف واپس کړو. دسعید په روایت کښې دی چه اوس دوه صورتونه دي یا خو دخپل ورور محتاجی رفع کړئ یعنی دعاریت نه بغیر ورته زمکه

(۱) سنن النسائي/المزارعة ۲ (۳۸۹۴)، سنن ابن ماجه/الزهد ۱۰ (۲۴۶۰)، (تحفة الأشراف: ۳۵۴۹)، وقد أخرجه: موطا  
إمام مالك/كراه الأرض ۱ (۱)، مسند احمد (۳/۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶) (صحيح)  
(۲) سنن النسائي/المزارعة ۲ (۳۹۲۰)، (تحفة الأشراف: ۳۵۵۸) (صحيح الإسناد)

ورکړئ او کله چه زمکه فارغه شي نو واپس ئې واخلي او يائي ورته د دراهمو په عوض په کرايه ورکړئ.

قوله: « قَالَ سَعِيدٌ أَفْقِرُ أَخَاكَ أَوْ أَكْرَهُ بِالذَّرَاهِمِ » دا د اکره الاکراه نه ماخوذ دې، په کرايه باندې ورکول، سعيد بن المسيب رضي الله عنه فرمائی چه خپل رور ته دې زمکه هم داسې وپړيا ورکړې يا د دراهمو په بدل کښ، يعنی په نيمه دې نه ورکوي.

[۳۴۰۰] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الْأَحْوَسِ، حَدَّثَنَا طَارِقُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْمُحَاقَلَةِ وَالْمُزَابَنَةِ، وَقَالَ: إِنَّمَا يَزْرَعُ ثَلَاثَةٌ رَجُلٌ لَهُ أَرْضٌ فَهُوَ يَزْرَعُهَا، وَرَجُلٌ مِنْهُ أَرْضًا فَهُوَ يَزْرَعُ مَا مِنْهُ، وَرَجُلٌ اسْتَكْرَى أَرْضًا بِذَهَبٍ أَوْ فِضَّةٍ."

د رافع بن خديج نه روايت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائيلى ده د محاقلي او مزابني نه، او وئيلى ئې دي چه زراعت په درې قسمه وي يو خود هغه کس زراعت دي د چا چه ذاتي زمکه وي بل هغه کس دي چا چه د بل نه سوالي زمکه اخستلې وي او هغه په دې کښې مزارعت کوي، او بل هغه کس دي چا چه په سپينو يا سرو زرو زمکه په کرايه اخستلې وي.

قوله: « نَهَى رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَنِ الْمُحَاقَلَةِ وَالْمُزَابَنَةِ » محاقلة وائی بيع الزرع بالحنطة ته يعنی د ولاړ فصل بدلول د هغې اندازه لگولو سره په تيار فصل باندې، يا د دې نه مراد بيع الزرع په وېو کښې صلاحيت ته د رسيدو نه مخکښې او وئيلى شوې دې چه د دې نه مراد مزارعت بالثلث ونحوه دي.

[۳۴۰۱] (۲) قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَرَأْتُ عَلَى سَعِيدِ بْنِ يَعْقُوبَ الطَّالِقَانِي، قُلْتُ لَهُ: حَدَّثَكُمْ ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ سَعِيدِ أَبِي شُعْبَاعٍ، حَدَّثَنِي عُثْمَانُ بْنُ سَهْلٍ بْنُ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ، قَالَ: "إِنِّي لَيَتِيمٌ فِي حِجْرِ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ وَحُجِّجْتُ مَعَهُ فَجَاءَهُ أَخِي عُمَرَانُ بْنُ سَهْلٍ، فَقَالَ: أَكْرَيْنَا أَرْضَنَا ثَلَاثَةَ بِيَمَاتَيْنِ دَرَاهِمٍ، فَقَالَ: دَعُهُ، فَإِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ كِرَاءِ الْأَرْضِ."

د عثمان بن سهل بن رافع بن خديج نه روايت دې فرمائی چه زه يتيم وم اود رافع بن خديج په پرورش کښې وم اود هغه سره حج ته تلي وم نو هغه ته د عمران بن سهل ورور راغي عرض ئې وکړو چه مونږ فلانی زمکه په کرايه ورکړه په دوه سوه درهمه هغه ورته ووييل چه دا پرېږده يقينا نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائيلى ده د زمکې په کرايه ورکولونه.

[۳۴۰۲] (۳) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ دُكَيْنٍ، حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ عَمْرِو، عَنْ ابْنِ أَبِي نُعْمٍ، حَدَّثَنِي رَافِعُ بْنُ خَدِيجٍ، أَنَّهُ زَرَعَ أَرْضًا، "فَمَزَّ بِهَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَسْقِيهَا، فَسَأَلَهُ، لِمَنِ الزَّرْعُ، وَلِمَنِ الْأَرْضُ؟" فَقَالَ: زُرْعِي بِيَدِي، وَعَمَلِي لِي الشَّطْرُ، وَلِمَنِ فَلَانِ الشَّطْرُ، فَقَالَ: أَرَيْتُمَا، فَرَدَّ الْأَرْضَ عَلَى أَهْلِهَا وَخَذَ نَفَقَتَكَ."

۱: سنن النسائي / المزارعة ۲ (۳۹۲۱)، التجارات ۵۴ (۲۶۶۷)، سنن ابن ماجه / للمومن ۷ (۲۴۴۹)، (تحفة الأشراف: ۳۵۵۷)، وقد أخرجه: موطا امام مالك / كراء الأرض ۱ (۱) مسند احمد (۳/ ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶) (صحيح)

۲: سنن النسائي / المزارعة ۳ (۳۹۵۸)، (تحفة الأشراف: ۳۵۶۹) (شاذ)

۳: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۵۶۸) (ضعيف الإسناد)



د رافع بن خديج نه روايت دي فرمائي چه مايوه زمكه كرلې وه اونبي ﷺ په دي باندې تيريدو او ما اوبه كوله نبی ﷺ تپوس وكړو دافصل دچا دي؟ او زمكه دچاده؟ ما ووئيل فصل زمادي او تخم او محنت هم زما دي خونيم پيداوار به زما وي اونيم به د زمكې د مالك وي نبی ﷺ او فرمائيل تاسو ربا كړې ده (يعني عقد ناجائز دي) زمكه مالك ته واپس كړه او خپله خرچه ورنه واخله.

### بَابُ فِي زَرْعِ الْأَرْضِ بِغَيْرِ أَذْنِ صَاحِبِهَا

[۳۴۰۳] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ أَبِي اسْمَاقٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ زَرَعَ فِي أَرْضٍ قَوْمٍ بِغَيْرِ إِذْنِهِمْ، فَلَيْسَ لَهُ مِنَ الزَّرْعِ شَيْءٌ عُولَهُ نَفَقَتُهُ".

د رافع بن خديج نه روايت دي فرمائي چه نبی ﷺ فرمائيلي دي چاچه دچا زمكه بغير اجازته وكړله نوادي زمكې په فصل كښې دده هيڅ حصه نشته اودده دپاره دده خرچه ده.

﴿ مَنْ زَرَعَ فِي أَرْضٍ قَوْمٍ بِغَيْرِ إِذْنِهِمْ فَلَيْسَ لَهُ مِنَ الزَّرْعِ شَيْءٌ وَلَهُ نَفَقَتُهُ ﴾ يعنی کوم سړې چه د بل په زمكه كښې بغير د هغه د اجازت نه كړونده او كړي نو د كړونده كونكي دپاره په هغه پتي كښې هيڅ نشته، يعنی ټول فصل به د زمكې د مالك وي او د كړونده كونكي دپاره به هغه وي کوم چه د هغه محنت او خرچه شوې ده.

دا حديث د جمهورو د مسلک خلاف دي ځكه چه د دي حديث نه خو دا معلوميږي چه په داسې صورت كښې به فصل د پتي د مالك دپاره وي او د مزارع دپاره به مطلقاً نه وي حال دا چه د جمهور فقهاء كرامو مسلک دا دي ﴿ الزرع لصاحب البذر مطلقاً وللآخر كراء الارض او اجر الخدمة ﴾ يعنی په دي صورت كښې به فصل د هغه سړي دپاره وي د چا چه تخم وي كه هغه د زمكې د مالك وي يا د فصل د خاوند، او د بل دپاره به كه هغه د زمكې مالك وي نو كراء الارض وي او كه كاشتكار وي نو د هغه دپاره به د محنت مزدوري اجر وي، خو ظاهر دا ده چه كله بغير د مالك د اجازت نه كړونده كوي نو تخم به هغه كړونده كونكي د خپل طرف نه اچوي او په داسې صورت كښې د فقهاء كرامو فيصله دا ده چه فصل به د كړونده كونكي دپاره وي حال دا چه په دي حديث كښې دا دي چه د زمكې د مالك دپاره به وي. د دي محدثانه جواب خو دا دي چه دا حديث د محدثينو په نزد غير ثابت دي كما قال الخطابي، او يا دي بيا دا تاويل او كړي شي چه په حديث كښې چه کوم حکم مذکور دي په هغه صورت كښې دي چه كله تخم هم د زمكې د مالك وي، يعنی حديث عام نه دي بلكه په يو خاص صورت باندې محمول دي. والحدیث اخرجه الترمذی وابن ماجه، قاله المنذرى

۱: سنن الترمذی/الأحكام ۲۹ (۱۳۶۶)، سنن ابن ماجه/الرمون ۱۳ (۲۴۶۶)، (تحفة الأشراف: ۳۵۷۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۱۶۵، ۴/۱۶۱) (صحيح)

## باب فی المخابرة

د مخابري (زمکه په حصه د ورکولو) بيان

[۳۴۰۴] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ. م وَحَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، أَنَّ حَمَّادًا، وَعَبْدَ الْوَارِثِ حَدَّثَاهُمَا كَلَّمَهُ عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، قَالَ: عَنْ حَمَّادٍ، وَسَعِيدِ بْنِ مِينَاءَ، ثُمَّ اتَّفَقُوا، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْمُحَاقَلَةِ، وَالْمُزَابَنَةِ، وَالْمُخَابَرَةِ، وَالْمُعَاوَمَةِ"، قَالَ: عَنْ حَمَّادٍ، وَقَالَ أَحَدُهُمَا: وَالْمُعَاوَمَةُ، وَقَالَ الْآخَرُ: بَيْنَ السِّنِينَ، ثُمَّ اتَّفَقُوا، وَعَنِ الثُّنْيَا وَرَخَّصَ فِي الْعَرَايَا.

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دی چې نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائیلې ده دولاړ فصل دخړوڅولونه اودخړڅولو دمیوونه په ونوکښې اودمخابري یعنی په برخه او دبیع معاومه نه (دڅوکالو دپاره خړڅولو ته معاومه وئیلې شي، یعنی داتنده راروانو فصلونو خړڅول معاومه ده او دانا جائز دي). دڅوکالو پوري، او داستثناء کولونه، اوددینه یو مقدار

وېشکل، او اجازت ئې ورکړې دي دعرایا (کوم چې پورته په مفصل طور سره ذکر شول).  
﴿ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَنِ الْمُحَاقَلَةِ وَالْمُزَابَنَةِ وَالْمُخَابَرَةِ .... وَعَنِ الثُّنْيَا ﴾

د مزابنه معنی په مستقل باب کښې تیره شوې ده او د محاقله معنی اوس تیره شوه، د مخابره نه مراد هم هغه مزارعت او په نیمه باندې زمکه ورکول دی، دا د لفظ خیبر نه جوړ دي. او وئیلې شوې دي چې په مخابره او مزارعت کښې فرق دا دی چې په مزارعت کښې بذر د مالک ارض د طرف نه وی په خلاف د مخابره چې په هغې کښې د زمیندار د طرف نه وی وقیل غیر ذلک.

[۳۴۰۵] (٢) بِنِ حُسَيْنٍ، عَنْ يُونُسَ بْنِ عُبَيْدٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْمُزَابَنَةِ، وَالْمُحَاقَلَةِ، وَعَنِ الثُّنْيَا إِلَّا أَنْ يُعْلَمَ".

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دی چې نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائیلې ده دخړڅولو دمیوونه په ونوکښې، اود ولاړ فصل دخړوڅولونه اود استثناء کولونه، مگر کله چې ددې مقدار معلوم وي.  
﴿ وعن الثنيا ﴾ ثنیا په معنی د استثناء او مراد د دې نه استثناء مجهول ده چې په بیع وغیره کښې استثناء مجهول مضر او ناجائز ده هم په دې وجه وړاندې په دویم روایت کښې راځي  
﴿ الا ان يعلم ﴾ یعنی که معلوم وی نو هیڅ حرج او باک نشته لکه چې څوک د میوود بیع په وخت کښې د خپل باغ معامله کولو په وخت داسې اوائی ﴿ مگر پنځه اونې ﴾ او تعیین ئې اونکړی چې کومې پنځه اونې یا داسې اوائی چې څو اونې او دا استثناء مجهول ده بیع به فاسده شی.

۱: صحیح مسلم/البیوع ۱۶ (۱۵۳۶)، سنن الترمذی/البیوع ۵۵ (۱۲۹۰)، ۷۲ (۱۳۱۳)، سنن النسائي/الایمان ۵ (۳۸۸۶)، البیوع ۷۲ (۴۶۳۸)، سنن ابن ماجه/التجارات ۵۴ (۲۲۶۶)، (تحفة الأشراف: ۲۶۶۶)، وقد أخرجه: صحیح البخاري/المساقاة ۱۷ (۲۳۸۰)، مسند احمد (۳/۳۱۳، ۳۵۶، ۳۶۰، ۳۶۴، ۳۶۶، ۳۹۲) (صحیح)  
۲: سنن الترمذی/البیوع ۵۵ (۱۲۹۰)، سنن النسائي/المزارعة ۲ (۳۹۱۱)، (تحفة الأشراف: ۲۴۹۵) (صحیح)



[۳۴۰۶] (۱) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ رَجَاءٍ يَغْنِي الْمَكِّي، قَالَ ابْنُ خُثَيْمٍ، حَدَّثَنِي، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: "مَنْ لَمْ يَذَرِ الْمُخَابَرَةَ، فَلْيَأْذَنْ بِحَرْبٍ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ".

د جابر بن عبد الله رضی اللہ عنہ نہ روایت دی فرمائی چہ دنی علیہ السلام نہ می اوریدلی وو چہ فرمائیل ئی چاچہ مخابره پری نخوده نودی دی خبرشی دالله اودرسول په جنگ باندی دده سره. (مَنْ لَمْ يَذَرِ الْمُخَابَرَةَ فَلْيَأْذَنْ بِحَرْبٍ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ) یعنی کوم انسان چہ د مخابره پریخودلو دپاره تیار نه وی او هغه دومره جری دی نو هغه له پکار دی چہ اعلان او کړی الله او د هغه رسول صلی اللہ علیہ وسلم سره د جنگ، د وعید په طور وئیلې شی چہ یو قدم دی نور هم وړاندې شی، (کما فی قوله تعالى: فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ) یعنی که تاسو نه پریردئ نو تیار شی د جنگ دپاره الله او د هغه رسول صلی اللہ علیہ وسلم سره، او صاحب د عون المعبود دا په صیغه د مجهول ضبط کړې دی (ای لیخبر وبالفارسیه) آگاه کرده شود. یعنی داسې سړې دی خبر کړې شی د الله پاک او د هغه د رسول صلی اللہ علیہ وسلم د طرف نه د جنگ دپاره، یعنی هغه د الله پاک او د هغه رسول صلی اللہ علیہ وسلم سره جنگ کوی، یا دا چہ اوس به هغه سره د الله پاک او د هغه د رسول صلی اللہ علیہ وسلم د طرف نه جنگ کیږی، والله تعالی اعلم، او په بذل کنبې لیکلې دی چہ مخابره چونکه عقد فاسد دی کوم چہ د ربا په حکم کنبې دی او الله پاک د ربا په نه ترک کولو باندې په قرآن کریم کنبې دا وعید فرمائیلې دی (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنتُمْ مُؤْمِنِينَ، فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ) لهذا مخابره نه پریخودنکې هم د دی وعید مستحق دی.

[۳۴۰۷] (۲) حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ أَيْوُبَ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ بُرْقَانَ، عَنْ ثَابِتِ بْنِ الْحَجَّاجِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْمُخَابَرَةِ، قُلْتُ: وَمَا الْمُخَابَرَةُ؟ قَالَ: أَنْ تَأْخُذَ الْأَرْضَ بِنِصْفٍ، أَوْ ثُلُثٍ، أَوْ رُبْعٍ".

دزید بن ثابت نه روایت دی فرمائی چہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم منع فرمائیلې ده د مخابري نه یعنی د زمکې د حاصل نه دریمه خلورمه برخه اخستل.

## بَابُ فِي الْمَسَاقَاةِ

د مساقاة بیان (باغ په حصه ورکول)

[۳۴۰۸] (۳) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "عَامَلَ أَهْلَ خَيْبَرَ بِشَطْرِ مَا يُخْرِجُ مِنْ ثَمَرٍ أَوْ زَرْعٍ".

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۲۷۷۵) (ضعيف)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۶۹۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۸۷/۵) (صحيح)

(۳): صحيح البخاري/الحرث ۸ (۲۳۲۹)، صحيح مسلم/المساقاة ۱ (۱۵۵۱)، سنن الترمذي/الأحكام ۴۱ (۱۳۸۳)، سنن ابن ماجه/الرمون ۱۴ (۲۴۶۷)، (تحفة الأشراف: ۸۱۳۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۷/۲، ۲۲، ۳۷)، سنن الدارمي/البيوع ۷۱

(۲۶۵۶) (صحيح)

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله د اهل خيبر والاسره دهغوی د زمکې په نیم پیداوار یا پوره پیداوار باندې معامله کړي وه.  
 قوله: «عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَامَلَ أَهْلَ خَيْبَرَ بِشَطْرِ مَا يَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٍ أَوْ زَرْعٍ»

ابن عمر رضي الله عنه چونکه خپله د مزارعت قائل وو لکه چه په تیر باب کښې ذکر شوه او هم دغه شان هغه د مساقات د جواز هم قائل وو لکه چه — هغوی په دې حدیث مرفوع کښې روایت کوی، په دې حدیث کښې د مزارعت او مساقات دواړو ذکر دي.

### د رسول الله صلی الله علیه و آله معامله د خیبر د یهودو سره د مزارعت وه که د خراج؟

د حضرت گنگوهی رحمته الله علیه تقریر په الکوکب الدرې کښې «باب ما جاء في المزارعة» کښې دا لیکلې شوې دي چه اکثر اراضي د خیبر رسول الله صلی الله علیه و آله عنوة فتح کړې وې، او بیا ئې هم دغه شان زمکې پس د اخراج الخمس نه په غانمین کښې تقسیم کړې وې (چه دهغې صحابه کرام رضي الله عنهم مالکان شوي وو) خو بیا داسې اوشوه چه یهود ئې د عمل دپاره هم هلته برقرار اوساتل پس دا معامله د مزارعت شوه او کومې زمکې د خیبر چه صلحا فتح شوې وې (هغه رسول الله صلی الله علیه و آله په ځانې د دي چه صحابه کرام رضي الله عنهم کښې ئې تقسیم کړې) گویا یهودو ته هبه کړې وې (د هغه وخت دپاره) او په هغې باندې ئې خراج مقاسمت (۱) مقرر فرمائیلې وو خود امام ابوحنیفه رحمته الله علیه د رائي استقرار په دي باندې اوشو چه دا ټوله معامله د خراج مقاسمت وه په دي کښې صاحبینو د امام صاحب رحمته الله علیه مخالفت اوکړو او هغوی په دي باره کښې تفصیل ثابت کړو (یعنی دا چه د بعض زمکو معامله د یهودو سره په طور د مزارعت وه او د بعضو په طریق د خراج مقاسمت) بیا حضرت فرمائی او صحیح هم دا تفصیل دي کوم چه صاحبینو اختیار کړې دي (اوس پاتې شوه دا چه په بعض روایاتو کښې رسول الله صلی الله علیه و آله د مزارعت نه نهی ولې او فرمائیله د دي په باره کښې حضرت فرمائی چه) په دي احادیثو کښې د مزارعت نه دا نهی د بعض شروط فاسده د اقتران د وجې نه ده او یا نهی تنزیهی ده د مهاجرینو د افلاس د وجې نه په هغه وخت کښې آهد حضرت د دي لیکلو حاصل دا دي چه صاحبین کوم چه د مزارعت قائل دي د هغوی استدلال د رسول الله صلی الله علیه و آله د یهودو سره په معامله باندې دي، ځکه چه د صاحبینو په تحقیق کښې دا معامله د مزارعت وه لهذا دلیل د جواز شو، او امام صاحب کوم چه د مزارعت قائل نه دي هغوی دا د یهودو معامله په خراج باندې محمول کړې د نه په مزارعت باندې.

[۳۴۰۹] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنِ اللَّيْثِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ يَعْنِي ابْنَ عَنَجٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "دَفَعَ إِلَى يَهُودِ خَيْبَرَ ثُلْثَ خَيْبَرَ، وَأَرْضَهَا عَلَى أَنْ يَعْمَلُوهَا مِنْ أَمْوَالِهِمْ، وَأَنَّ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَطْرَ ثَمَرِهَا".

۱ ځکه چه کومه ارض مفتوحه بغیر د تقسیم نه په کفارو باندې پریخودلې شی هغه خراجی وی، کما تقدم في كتاب الخراج في بيان انواع الاراضي فتذكر (۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۸۴۲۴) (صحیح)



د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله خیبر والاته دهغوی ونې او زمکې په دې شرط واپس کړې وی چه دوی به دازمي ابادوی او په ټول پیداوار کښې به نیم پیداوار نبی صلی الله علیه و آله ته ورکوي.

[۳۴۱۰] (۱) حَدَّثَنَا أَيُّوبُ بْنُ مُحَمَّدٍ الرَّقِيُّ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ أَيُّوبَ، حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ بُرْقَانَ، عَنْ مَيْمُونِ بْنِ مِهْرَانَ، عَنْ مِقْسَمٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "اِفْتَتَحَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْبَرَ، وَاشْتَرَطَ أَنْ لَهُ الْأَرْضُ وَكُلُّ صَفَرَاءَ وَبَيْضَاءَ"، قَالَ: أَهْلُ خَيْبَرَ، نَحْنُ أَعْلَمُ بِالْأَرْضِ مِنْكُمْ فَأَعْطَانَا عَلَى أَنْ لَكُمْ نِصْفُ الثَّمَرَةِ وَلَنَا نِصْفُ، فَزَعَمَ أَنَّهُ أَعْطَاهُمْ عَلَى ذَلِكَ، فَلَمَّا كَانَ حِينَ يُضْرَمُ النَّخْلُ بَعَثَ إِلَيْهِمْ عَبْدَ اللَّهِ بْنُ رَوَاحَةَ، فَحَزَرَ عَلَيْهِمُ النَّخْلَ وَهُوَ الَّذِي يُسَمِّيهِ أَهْلُ الْمَدِينَةِ الْخَرْصَ، فَقَالَ: فِي ذَهَبٍ كَذَا وَكَذَا، قَالُوا: أَكْثَرْتَ عَلَيْنَا يَا ابْنَ رَوَاحَةَ، فَقَالَ: فَأَنَا أَلِي حَزَرَ النَّخْلَ، وَأَعْطَيْكُمْ نِصْفَ الَّذِي قُلْتُ، قَالُوا: هَذَا الْحَقُّ وَبِهِ تَقُومُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ قَدْ رَضِينَا أَنْ نَأْخُذَهُ بِالَّذِي قُلْتَ".

د عبد الله بن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله خیبر فتح کړو اودا شرط ئې مقرر کړو چه زمکه، سره زر، اوسپین زر به زمونږ وي دخيبر وسيدونکو عرض اوکړو اي دالله رسوله ستاسو په نسبت باندې مونږ د زمکو په کارونو باندې ښه پوهيږو تاسو په دې شرط باندې دازمي مونږ ته را کړئ چه مونږ به ورته نیم پیداوار درکوو او نیم پیداوار به مونږ دخان سره ساتو، دراوی خیال دې چه نبی صلی الله علیه و آله په دې شرط باندې دخيبر زمکې د خیبر وسيدونکو ته ورکړي، کله چه به دکجورو دشکولو وخت راتلو نونبی صلی الله علیه و آله عبد الله بن رواحه داندازاي لږولو دپاره ليرلو اودي اندازې لگولو ته اهل مدينه الخرص وائی اوداسې به ئې وئيل چه په دې باغ کښې به دومره کجورې کيږي، خیبر والا به ورته وئيل اي عبد الله بن رواحه تاخو ډيره زیاته اندازه ولگوله هغه به ورته او وئيل زه اول دکجور و شوکولو انتظار کوم او خومره اندازه چه مي لږولي ده دومره کجورې تاسوته درکوم خیبر والا چه به داووریدل وئيل به ئې یقینا دا اندازه حقه ده اوددې په وجه باندې زمکه اواسمان قائم دي، مونږ ستاسو دلگولي اندازه مطابق ميوې اخستلو ته تياريو.

﴿ فَلَمَّا كَانَ حِينَ يُضْرَمُ النَّخْلُ بَعَثَ إِلَيْهِمْ عَبْدَ اللَّهِ بْنُ رَوَاحَةَ فَحَزَرَ عَلَيْهِمُ النَّخْلَ وَهُوَ الَّذِي يُسَمِّيهِ أَهْلُ الْمَدِينَةِ الْخَرْصَ الْخ ﴾

مضمون د حدیث دا دې چه رسول الله صلی الله علیه و آله کله خیبر فتح کړو او مسلمانان د خیبر د زمکې مالکان شو نو د خیبر یهودو رسول الله صلی الله علیه و آله ته دا درخواست اوکړو چه کرونده باندې مونږ ستاسو نه زیات پوهيږو لهذا دا باغونه او زمکې مونږ ته حواله کړئ په داسې طریقه چه نیمه میوه او نیمه غله به زمونږ دپاره او نیمه به ستاسو دپاره وي، رسول الله صلی الله علیه و آله دهغوی دا خبره منظور کړه (مگر چونکه یهود غیر امنا و دیانت دار نه وو په دې وجه به رسول الله صلی الله علیه و آله دا تدبیر فرمائیلو چه) چه کله به د میوو د شوکولو زمانه راتله نو رسول الله صلی الله علیه و آله به عبد الله بن رواحه رضي الله عنه کوم چه د شوکې یعنی د باغونو د میوو په صحیح اندازه لگولو کښې ماهر وو ليرلو د یهودو دې باغونو ته د حزر یعنی د شوکې دپاره نو هغوی په د اونیو اندازه اخستلو نه پس مقدار متعین اوفرمائیلو چه په دې باغ کښې دومره دې او په هغه باغ کښې

۱: سنن ابن ماجه/الزکاة ۱۸ (۱۸۲۰)، (تحفة الأشراف: ۶۴۹۴) (حسن صحیح)

دومره دی، لهذا هم د دې مقدار به تاسو ورکړه کوئ يهودو به هغوی ته وئیل « أَكْثَرَتْ عَلَيْنَا يَا ابْنَ رَوَاحَةَ » چه تا ډیر لوڼې مقدار متعین کړو نو هغوی به او فرمائیل « فَأَنَا أَلَى حَزْرِ النَّخْلِ » دا الی د واحد متکلم صیغه ده « ولی بلی ولیا » چه د هغې معنی د ذمه داری اخستلو ده، او حزر دلته د محزور په معنی کښې دې، یعنی د میوو کوم مقدار چه ما بیان کړو زه د هغې ذمه داری اخلم، یعنی تاسو د میوو د تیاریدو نه پس د هغې نه جدا شی زه به تاسو ته د هغې نیمه درکړم نو په دې باندې هغوی اووې چه نه، چه تاسو څه اووې هم دغه شان صحیح ده په هغه ذات قسم چه د هغه په حکم زمکه او اسمان قائم دی مونږ په هغه مقدار باندې راځی یو کوم چه تاسو بیان کړو.

[۳۴۱۱] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَهْلٍ الرَّمْلِيُّ، حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ أَبِي الزَّرْقَاءِ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ بُرْقَانَ يَأْسَنَادِهِ وَمَعْنَاهُ: قَالَ: فَحَزْرٌ، وَقَالَ عِنْدَ قَوْلِهِ وَكُلَّ صَفْرَاءَ وَالْفِضَّةَ لَهُ.

د جعفر بن برقان نه د تیر شوي روایت په شان روایت منقول دې او په دې کښې د لفظ فحزر او کل صفراء او بیضاء اضافه ده د کوم چه تشریح په سرو زرو او چاندی سره شوي ده. « يَأْسَنَادِهِ وَمَعْنَاهُ قَالَ فَحَزْرٌ » مصنف رحمته الله په لفظ د حدیث کښې د راویانو اختلاف بیانوی په رومبی سند کښې ایوب وو د هغوی په روایت کښې « فحزر علیهم » یعنی د زه په تقدیم سره او صحیح هم هغه دې، او په دویم روایت کښې راوی زید بن ابی الزرقاء دې هغوی په ځانې د « حزر » « حرز » اووې، قال النووی وفي بعض الروایات بتقديم الراء وهو مصحف (بذل) والحديث اخرجه ابن ماجة، قاله المنذرى.

[۳۴۱۲] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَانَ الْأَنْبَارِيُّ، حَدَّثَنَا كَثِيرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ هِشَامٍ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ بُرْقَانَ، حَدَّثَنَا مَيْمُونٌ، عَنْ مِقْسَمٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، حِينَ افْتَتَحَ خَيْبَرَ، فَذَكَرَ مَوْحِدِيَّةَ زَيْدٍ، قَالَ: فَحَزْرُ النَّخْلِ، وَقَالَ: فَأَنَا أَلَى جُذَاذِ النَّخْلِ، وَأَعْطَيْكُمْ نَصْفَ الَّذِي قُلْتُ.

د مقسم رحمته الله نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله کله خیبر فتح کړو، باقی روایت د تیر شوي روایت په شان دې او په دې کښې دا اضافه چه عبدالله بن رواحه کله د کجورو اندازه ولگوله نووڼې فرمائیل زه به د کجورو شکلولو پورې انتظار کوم او چه کومه اندازه مې لگولې ده ددې دنیم په برابر کجورې به تاسو ته درکوم.

### باب فی الخرص

په ونو کښې د میوو د اندازې لیکلولو بیان

د خرص باب په « کتاب الزکوة » کښې هم تیر شوي دې د خرص تعریف او د هغې سره متعلق ټول مباحث او اختلافات هلته تیر شوي دي، دلته د دې باب نه مخکښې دوه بابونه تیر شوي دي باب المزارعت او باب المساقات، د مساقات او مزارعت دواړو حکم هم تیر شوي دې د مزارعت جواز مختلف فیه دې او مساقات تقریبا د ټولو امامانو په نزد جائز دي

۱: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ٦٤٩٤) (صحیح الإسناد)

۲: انظر حديث رقم: (٣٤١٠)، (تحفة الأشراف: ٦٤٩٤) (صحیح الإسناد)



سوا د امام صاحب رحمته الله نه، رسول الله ﷺ د يهودو سره دا دوه معاملې او فرمايې د مزارعت هم او د مساقات هم دا دريم باب کوم چه د خرص په باره کښې دې دا مصنف رحمته الله دلته په دې مناسبت سره ذکر کړې دې چه د رسول الله ﷺ معمول وو چه هغوی به عبدالله بن رواحه رضي الله عنه خيبر ته ليرلو د هغوی د باغاتو د خرص کولو دپاره کوم چه رسول الله ﷺ او مسلمانانو د خيبر يهودو ته په طور د مساقات ورکړې وو.

[۳۴۱۳] (۱) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ، حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ، عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ: أَخْبَرْتُ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "يَبْعُثُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ رَوَاحَةَ، فَيَخْرُصُ النَّخْلَ حِينَ يَطِيبُ، قَبْلَ أَنْ يُؤْكَلَ مِنْهُ، ثُمَّ يُخْتَرِ يَهُودٌ، يَأْخُذُونَهُ بِذَلِكَ الْخَرْصِ، أَوْ يَدْفَعُونَهُ إِلَيْهِمْ بِذَلِكَ الْخَرْصِ، لِكَيْ تُحْصَى الزَّكَاةُ قَبْلَ أَنْ تُؤْكَلَ الثَّمَارُ وَتُفَرَّقَ".

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روايت دې فرمائي چه نبی ﷺ به عبدالله بن رواحه خيبر ته ليکلو د کجورو د اندازې لگولو دپاره او هغه به د کجورو اندازه لگوله کله چه به کجورې ښې پڅي شوي مخکښې د دينه چه دخوراک قابلي شي، بيا به نبی ﷺ يهوديانو ته اختيار ورکړه چه تاسوددې اندازې نيم ځان ته حواله کړي او وني ساتي اويا ددې اندازې دنيم برابر مسلمانانو ته ورکړي ددې دپاره چه په زکات کښې حساب شي، مخکښې د دينه چه کجورې او خورلې شي او جدا کړې شي.

**عدم جواز الخرص في المزارعة وكذا في المساقاة وجوازه في الزكاة عند الجمهور دون الحنفية**

خو دا ياد ساتي چه په كتاب الزكاة کښې په باب الحرص کښې دا مسئله تيره شوې ده (ان الخرص لا يجوز في الجبوب بالاجماع) او حافظ ابن عبدالبر رحمته الله - كما في التعليق الممجد - د دې خبر تصريح کړې ده چه خرص في المساقاة د چا په نزد هم جائز نه دې اوس په دې باندې دا اشکال پيدا شو چه هر کله خرص في المساقاة ناجائز دې نو بيا د عبدالله بن رواحه رضي الله عنه په ليرلو باندې خرص ولې کولې شو؟ د دې جواب هغوی هم دا ورکړې دې چه دا خرص د يو خارجي مصلحت دپاره وو (د الزام د حکم دپاره نه وو) ځکه چه يهود غير امناء وو په دې وجه به هغوی د صحيح مقدار نه خبرولې شو چه د زکوة يعنی د عشر په مسئله کښې نقصان او خلل واقع نه شي، (۲) پس عائشة د دې خرص په باره کښې فرمائي (لکي تحصى الزكاة قبل ان توکل الثمار وتفرق) خو عشر کوم چه د مسلمانانو په باغونو کښې په هغوی

(۱): انظر حديث رقم: (۱۶۰۶)، (تحفة الأشراف: ۱۶۵۳۱، ۱۶۷۵۲) (ضعيف الإسناد)

(۲) وبعبارة اخري په دې ځان داسې پوهه کړي چه دا خرص د مساقين د حصو د تقسيم دپاره نه وو، يعنی د اصل معاملې سره د دې تعلق نه وو بلکه زکوة يعنی عشر کوم چه د اونو په کل پيداوار کښې واجب وی د هغې د محفوظ او معين کولو دپاره وو، د ميوو د پخيدو او تياريدو نه مخکښې او د يهودو په دې کښې د تصرف کولو نه مخکښې چه د عشر په مقدار کښې څه کمې راشي، مثلاً د خرص نه پس خارص اووي چه په دې باغ کښې سل وسقه کهجورې دی لهذا په دې مقدار کښې به عشر يعنی لس وسقه د زکوة په نوم باندې اخستلې شي د دې نه پس به په وخت د شوکې د مساقين حصي د قاعدې مطابق کيلا (په تول او وزن سره) تقسيمولې شي، هغه وخت به د خارص د خرص لحاظ نه شي کولې، وهد معني قول عائشة رضي الله عنها لکي تحصى الزكاة قبل ان توکل الثمار وتفرق والله تعالى اعلم

باندې واجبېږي په دې کښې د جواز خرص بلکه د وجوب خرص شوافع وغيره حضرات قائل دي، او احناف کوم چه د خرص فی الزکوة قائل نه دی د هغوی دلائل په کتاب الزکوة کښې د جمهورو د دلائلو سره تیر شوی دی فارجع الیه لو شت.

[۳۴۱۴] (۱) حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي خَلْفٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَائِقٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ طَهْمَانَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّهُ قَالَ: "أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ خَيْبَرَ، فَأَقْرَهُمُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَمَا كَانُوا، وَجَعَلَهَا بَيْنَهُ وَبَيْنَهُمْ، فَبَعَثَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَوَاحَةَ فَخَرَصَهَا عَلَيْهِمْ".

د جابر بن عبدالله رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی کله چه الله تعالی خيبر نبی صلی الله علیه و آله ته په انعام کښې ورکړو نو نبی صلی الله علیه و آله ددغه ځانې خلق پخپل حال پریخودل او په فصلونو کښې ورسره شریک شو اوبیا ئې عبدالله بن رواحه رضي الله عنه ورولیږلو عبدالله چه کله خیبرته ورسیدو نودمیوو اندازه ئې ولگوله.

[۳۴۱۵] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يَقُولُ: خَرَصَهَا ابْنُ رَوَاحَةَ أَرْبَعِينَ أَلْفَ وَسُقٍ، وَدَعَمَ أَنَّ الْيَهُودَ لَمَّا خَيْرَهُمْ ابْنُ رَوَاحَةَ، أَخَذُوا أَلْفَ أَلْفٍ وَعَلَيْهِمْ عَشْرُونَ أَلْفَ وَسُقٍ.

د جابر بن عبدالله رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه عبدالله بن رواحه د کجورو اندازه څلویښت زره وسقه مقرر کړه، دراوی خیال دي چه کله عبدالله بن رواحه له دخيبر يهوديانو ته اختيار ورکړو نو هغوی میوې پخپل تحويل کښې واخستلې او شل زره وسقه کجورې ادا کول ئې منظور کړل.

﴿ أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يَقُولُ خَرَصَهَا ابْنُ رَوَاحَةَ أَرْبَعِينَ أَلْفَ وَسُقٍ الْخ ﴾

يعنی يو کړت عبدالله بن رواحه رضي الله عنه د دې باغونو د خرص کولو نه پس، چه کوم مقدار متعين کړې وو هغه څلویښت زره وسقه وو چه د هغې د نصف يعنی شلو زرو وسقو ذمه داری يهودو قبوله کړې وه، يو وسق اته صاع وی د څلویښتو زرو وسقو حساب اولگوئ څومره حساب جوړیږي زمونږ په حساب سره خو څلیرشت لاکهه صاع جوړیږي چه د هغې نیمه به یقیناً مسلمانانو ته ملاؤ شوي وی د معاهدې مطابق، هم په دې وجه وئیلې شی چه د خیبر د فتوحاتو نه پس مسلمانان مالدار شوي وو.

## کتاب الاجارة

### د اجارې بیان

امام بخاری رحمه الله د کتاب البيوع په آخر کښې د کتاب السلم باب قائم کړي دي د دې نه پس کتاب الشفعة مستقلا دي، د هغې نه پس کتاب الاجارة او هغوی د کتاب الاجارة لاندې ټول ابواب د اجارې متعلق ذکر کړي دي او امام ابوداؤد رحمه الله د کتاب البيوع ترمينځه د کتاب الاجاره عنوان قائمولو سره او د هغې نه پس بيا څو ابواب د اجارې متعلق ذکر کولو نه پس باقی ابواب البيوع چه په هغې کښې بيع السلم او شفعه هم داخله ده هغه ذکر کړي دي.

۱: (تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۲۶۴۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۶۷/۳) (صحيح)

۲: (انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۲۸۶۹) (صحيح الإسناد)



ځان پوهول پکار دی چه د تمليک دوه قسمونه دی تمليک الاعيان او تمليک المنافع، او بيا په دې دواړو کښې د هريو دوه قسمونه دی بعوض وبلا عوض، دغه شان دا څلور صورتونه جوړيږي، تمليک العين بالعوض بيع ده او تمليک العين بلا عوض دا هبه ده، او تمليک المنافع که بالعوض دې نو هغه اجاره ده او که بغير د عوض نه وی نو هغه عاریه او اعاره ده.

## باب فی کسب المعلم

د تعلیم ورکونکي دپاره په تعلیم بالادي د اجرت اخستلو بيان

استئجار على الطاعات کښې اختلاف ائمه :

د علوم دينيه په ذريعه کسب او گټه د شوافعو او مالکيانو په نزد جائز ده، د احنافو او حنابله په نزد ناجائز ده د حديث الباب نه چه د هغې مضمون وړاندې را روان دې د احنافو او د حنابله دمسلک يعنی عدم جواز تائيد کيږي، مصنف رحمه الله على القول الاشهر حنبلي دې، د استئجار على الطاعات مسئله په ابواب الاذان **« واتخذ مؤذنا لا ياخذ على اذانه اجرا »** الحديث د لاندې په الدر المنضود جلد اول کښې تيره شوې ده، او هم دغه شان په کتاب النکاح **« زوجتك بما معك من القرآن »** د لاندې هم

[۳۴۱۶] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الرَّوَّاسِيُّ، عَنْ مُغِيرَةَ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ نُسَيْمٍ، عَنِ الْأَسْوَدِ بْنِ ثَعْلَبَةَ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، قَالَ: "عَلَّمْتُ نَاسًا مِنْ أَهْلِ الصُّفَّةِ الْكِتَابَ وَالْقُرْآنَ، فَأَهْدَى إِلَيَّ رَجُلٌ مِنْهُمْ قَوْسًا، فَقُلْتُ: لَيْسَتْ بِمَالٍ وَأَرْمِي عَنْهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ لَا تَبْنَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَلَأَسْأَلَنَّهُ، فَأَتَيْتُهُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، رَجُلٌ أَهْدَى إِلَيَّ قَوْسًا مِنْ كُنْتُ أَعْلَمُهُ الْكِتَابَ وَالْقُرْآنَ، وَلَيْسَتْ بِمَالٍ وَأَرْمِي عَنْهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ، قَالَ: إِنْ كُنْتُ تُحِبُّ أَنْ تُطَوَّقَ طَوْقًا مِنْ نَارٍ فَأَقْبَلَهَا."

دعبادة بن الصامت رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه ما په اصحاب صفة کښې يو څو کسانوته دقران کریم د زده کولو او دليکلو تعلیم ورکړې وو، زما په شاگردانو کښې يو کس ماته په تحفه کښې يوه لينده راکړه ما دا سوچ او کړو چه داڅو کوم قيمتي خيزنه دې اوزه به په دې باندي دالله په لاره کښې غشي ولم خوبياهم زه دنبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شوم او عرض مې وکړو اي دالله رسوله ماچه چاته د قران کریم د زده کولو اودليکلو تعلیم ورکړې رو په هغوی کښې يو کس ماته يوه لينده په تحفه کښې راکړې وه اوزه به دالله په لار کښې په دې باندي جهادگوم، نبی ﷺ اوفرمايل که چرې ته داور يو طوق په غاړه کښې اچول غواړي نو دالينده دخان سره وساته.

قوله: **« عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ عَلَّمْتُ نَاسًا مِنْ أَهْلِ الصُّفَّةِ الْقُرْآنَ وَالْكِتَابَ فَأَهْدَى إِلَيَّ رَجُلٌ مِنْهُمْ قَوْسًا »** عبادة رضي الله عنه فرمائی چه ما څو اهل صفة ته قرآن اوبنودلو او کتابت يعنی ليکل، نو په هغوی کښې يو سړی ماته لينده هديه کړه نو ما په خپل زړه کښې اووې چه دا څه داسې مال خو دې نه يعنی چه هغې ته اجرت اووئيلي شي بله دا چه زه به دا په جهاد کښې

(۱) سنن ابن ماجه للتجار ۸ (۲۱۵۷)، (تحفة الأشراف: ۵۰۶۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۱۵/۵) (صحيح)

استعمال کړم (په خپل ضرورت کښې نه) خو بیا هم ما دا اراده اوکړه چه د رسول الله ﷺ د اجازت نه بغیر ئې نه اخلم پس زه د رسول الله ﷺ خدمت کښې حاضر شوم او د دې لینده په باره کښې مې ترې نه تپوس اوکړو نو هغوی اوفرمائیل (إِنْ كُنْتَ تُحِبُّ أَنْ تُطَوَّقَ طَوْقًا مِنْ نَارٍ فَأَقْبِلْهَا) یعنی که ته ددې په بدل کښې د اور طوق مرئ ته اچول غواړې نو دا هدیہ قبوله کړه. د دې حدیث د لاندې امام خطابی رحمه الله په (اخذ الاجرة على القرآن) کښې د علماء کرامو درې مذاهب نقل کړی دی یو مطلقا د عدم جواز، (وقال اليه ذهب الزهري وابوحنيفة واسحاق بن راهويه) دویم مذهب دا دې چه که بغیر د شرط نه څوک معاوضه ورکړی نو د هغې په قبول کښې څه باک نشته وهو قول الحسن البصري وابن سيرين والشعبي.... او دریم مذهب مطلقا د جواز وهو مذهب عطاء ومالك والشافعي، او د شوافعو دلیل (زوجتكها بما معك من القرآن) بیان کړې دې.

### توجيه الحديث عن الشافعية :

او د حدیث الباب جواب د شوافعو د طرف نه هغوی دا ورکړې دې چه د هغې وجه دا ده چه عبادۀ ﷺ د تعلیم د ابتداء په وخت د تبرع او احتساب نیت کړې وو په دې وجه رسول الله ﷺ د دې نیت احتساب نه پس د اجرت اخستلو نه منع اوکړه د ابطال اجر نه د بیج کیدو دپاره، او د دې مثال داسې دې چه که څوک د چا یو پټ مال اولتوی یا که د چا مال په دریاب کښې غرق شوي وو هغه حسبه او تبرعا د دریاب نه راوباسی نو د دې نیت نه پس د هغه اجرت اخستل جائز نه دی، خو که هغه د عمل نه مخکښې په دې کار باندې اجرت مقرر کړی نو بیا اخستل جائز دی. الی آخر ما ذکر. او د حضرت گنګوهی په تقریر کښې دی چه په دې حدیث کښې د دومره سخت وعید منشاء کیدې شی چه دا وی چه دلته معلم او متعلم خپل مینځ کښې د اجرت شرط لگولې وی یا دا چه اجرت اخستل منوی وی، ځکه رسول الله ﷺ دخپلو صحابه کرام ﷺ دپاره دا کار ناخوښه کړو اگر چه مجرد نیت حرام نه وو. الی آخر ما فی بسط (من البذل مختصرا) والحديث اخرجه ابن ماجة، قاله المنذرى

[۳۴۱۷] (حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ عُثْمَانَ، وَكَثِيرُ بْنُ عُبَيْدٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا بَقِيَّةٌ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَسَارٍ، قَالَ عُمَرُو، حَدَّثَنَا بَعْدَهُ عَنْ نُسَيْبٍ، عَنْ جُنَادَةَ بْنِ أَبِي أُمَيَّةَ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، نَحْوَ هَذَا الْخَبَرِ وَالْأَوَّلُ أَثَمٌ، فَقُلْتُ: مَا تَرَى فِيهَا يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَقَالَ: جَمْرَةٌ بَيْنَ كَتِفَيْكَ تَقْلُدُهَا أَوْ تَعْلُقُهَا).

دعباده بن صامت بدنه دتیرشوی روایت په شان روایت منقول دې لیکن اولنې روایت زیات کامل دې اوپه دې روایت کښې دا اضافه به چه ماعرض اوکړو ای دالله رسوله په دې سلسله کښې ستاسوڅه رائي ده؟ نبی ﷺ اوفرمائیل دا د اور یوه سگروته ده چه تا دخپلو اوږوپه مینځ کښې زورپنده کړې ده یا دې ترلې ده.



## باب فِي كَسْبِ الْأَطِبَاءِ د طبيبا نو دپاره د اجرت اخستلو بيان

[۳۴۱۸] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ أَبِي بَشِيرٍ، عَنْ أَبِي الْمُتَوَكِّلِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، "أَنَّ رَهْطًا مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ انْطَلَقُوا فِي سَفَرَةٍ سَأَفَرُوهَا، فَزَلُّوا بِحَيٍّ مِنْ أَهْلَاءِ الْعَرَبِ، فَاسْتَضَافُوهُمْ، فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّقُوا لَهُمْ، قَالَ: فَلَيْدَ غَرَسْتُ ذَلِكَ الْحَيَّ فَشَفَوَالَهُ بِكُلِّ شَيْءٍ لَا يَنْفَعُهُ شَيْءٌ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَوْ أَتَيْتُمْ هَؤُلَاءِ الرَّهْطَ الَّذِينَ نَزَلُوا بِكُمْ لَعَلَّ أَنْ يَكُونَ عِنْدَ بَعْضِهِمْ شَيْءٌ يَنْفَعُ صَاحِبَكُمْ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنْ سَيَدَنَا لَيْدٌ فَشَفِينَا لَهُ بِكُلِّ شَيْءٍ، فَلَا يَنْفَعُهُ شَيْءٌ، فَهَلْ عِنْدَ أَحَدٍ مِنْكُمْ شَيْءٌ يَشْفِي صَاحِبَنَا؟ يَغْنِي رُقِيَّةً، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: إِنِّي لَأَرْقِي، وَلَكِنْ اسْتَضَفْنَاكُمْ فَأَبَيْتُمْ أَنْ تُضَيِّقُوا، مَا أَنَا بِرَاقٍ حَتَّى تَجْعَلُوا لِي جُعْلًا، فَجَعَلُوا لَهُ قُطِيعًا مِنَ الشَّاءِ، فَأَنَاءَهُ، فَقَرَأَ عَلَيْهِ يَامِ الْكِتَابِ وَتَبَتَّلَ حَتَّى بَرَأَ، كَأَنَّمَا انْشَطَ مِنْ عِقَالٍ فَأَوْفَاهُمْ جُعْلَهُمُ الَّذِي صَاحَبُوهُ عَلَيْهِ، فَقَالُوا: اقْتَسِمُوا، فَقَالَ الَّذِي رَقَى: لَا تَفْعَلُوا حَتَّى تَأْتِيَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَسْتَأْمِرَ، فَقَدَّوْا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَذَكَرُوا ذَلِكَ لَهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مِنْ أَيْنَ عَلِمْتُمْ أَنَّهَا رُقِيَّةٌ؟ أَحْسَنْتُمْ وَأَضْرَبُوا لِي مَعَكُمْ بِسَهْمٍ".

د ابوسعيد خدری رضی اللہ عنہ نه روایت دي فرمائی چه دصحابه کرامویوه ډله په سفر روانه شوه اود عربو یو قبیلې ته ورسیدل اودهغوی نه ئې د میلستیا مطالبه وکړه لیکن هغوی د میلمنو قبلولونه انکار وکړو بیا ددغه قبیلې سردار مار یالوم وچیچل دهغه د علاج دپاره خلقو هر قسم کوشش اوکړو لیکن هغه نه جوړیدو په دوی کښې یوکس اووئیل کوم کسان چه په میلستیا راغلې دي هغوی ته څوک ولیږي کیدې شی چه دهغوی سره د زهر و دپاره څه علاج وي، په کومه باندې چه به ده ته فائده ورسیدی بیا په دوی کښې یوڅوکسان صحابه کراموته ورغلل او ورته ئې اووئیل چه زمونږ سردار مار یا لرم چیچلې دې ایایه تاسو کښې څوک دمگرې شته؟ یوکس اووئیل هو، زه به ورباندې دم واچوم، لیکن مونږه ستاسونه د میلستیا مطالبه اوکړه اوتاسوانکار وکړو اوس زه دم نه اچوم ترڅوچه تاسوماته ددې اجرت رانکړئ، نو ددغه علاقې خلقو ددوی دپاره دچیلویوه رمه مقررکړه بیا دغه کس ورغې او سورة فاتحه ئې ولوستله او توکانږي پري توکړي تردې چه هغه جوړ شو اوداسې روح شولکه غوټه چه کولاو کړې شي، بیاچه هغوی کومه معاوضه مقررکړي وه هغه ئې ورکړه صحابه کرامو عرض اوکړو رای وړی چه مونږ ئې تقسیم کړو مگر چا چه دم اچولې وو هغه اووئیل نه تاسو صبر وکړئ چه دښې عليه السلام نه تپوس اوکړو بیادښې عليه السلام په خدمت کښې حاضر شول او واقعه ئې ورته بیان کړه ښې عليه السلام اوفرمائیل داخبره تاسو دکوم ځانې نه معلومه کړې ده چه سورة فاتحه دم دې ډیرښه کار موکړې دې اوزما دپاره دخپلو ځانونو سره حصه مقررکړئ.

قوله: (عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّ رَهْطًا مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - انْطَلَقُوا فِي

(۱) صحیح البخاري / الإجارة ۱۶ (۲۲۷۶)، الطب ۳۳ (۵۷۳۶)، صحیح مسلم / السلام ۲۳ (۲۲۰۱)، سنن الترمذي / الطب ۲۰ (۲۰۶۳)، سنن ابن ماجه / التجارات ۷ (۲۱۵۶)، (تحفة الأشراف: ۴۲۴۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۳، ۴۴) وياتي هذا الحديث في الطب (۳۹۰۰) (صحیح)

سَفَرُهُ سَافَرُوهَا الْخ :

## مضمون د حدیث د دم یوه قصه :

دا ده چه ابوسعید خدری رضی الله عنه فرمایي چه د صحابه کرامو رضی الله عنهم یو جماعت په یو سفر باندې روان وو په لار کښې یو ځانې په عربو کښې هغه جماعت کوز شو او د هغه ځانې د دستور مطابق ئې د هغوی نه میلستیا طلب کړه، هغوی د میلستیا دپاره تیار نه شو، اتفاق سره د هغه قبیلې سردار لره یو زهریله څیز او چیچلو چه د هغې هغوی هر قسمه علاج اوکړو خو هیڅ فائده او نه شوه، د هغوی خپل مینځ کښې مشوره دا راغله چه دا د مسافرو قافله راغلي ده کیدې شی چه په دوی کښې چا سره د دې علاج وی پس هغوی هغه صحابه کرامو رضی الله عنهم ته راغلل او د دم کولو درخواست ئې اوکړو، په هغوی کښې یو صحابی او فرمائل چه ما سره یو دم دې خو مونږ بغیر د اجرت نه علاج نه کوو لکه چه تاسو زمونږ میلستیا نه ده کړې. **فَجَعَلُوا لَهُ قَطِيعًا مِنَ الشَّاءِ** یعنی هغوی د گډو بیزو یو کنډک ورکولو باندې فیصله اوکړه، د دې نه مراد دیرش بیزې دی لکه چه په هغه روایت کښې دی کوم چه مصنف رحمه الله په کتاب الطب کښې **(باب كيف الرقي)** کښې ذکر کړې دې فقد اعاد المصنف رحمه الله هذا الحديث هنا او وئیلې شوې دی چه دا جماعت هم د دیرشو کسانو وو، دې صحابی په هغه باندې سورة فاتحه لوستلو سره دم کوله او خپلې لارې مبارکې ئې په هغه باندې مزلې تردې چه هغه چیچلې شوې سردار بالکل روغ شو، لکه څاروی چه د پړې نه خلاص کړې شی او دې خلقو هغه حضراتو ته د خپلې وعدې مطابق د هغوی هغه عوض ورکړو. دې ملگرو خپل مینځ کښې اووې چه دا بیزې دې تقسیم کړې شی، خو اصل دم کونکي اووې چه تر څو پورې مونږ رسول الله صلی الله علیه و آله ته نه یو رسیدلي او د هغوی نه مو معلومات نه وی کړې تر هغه وخته پورې نه، بیا د رسول الله صلی الله علیه و آله خدمت کښې حاضر شو او رسول الله صلی الله علیه و آله ته ئې د دې واقعي ذکر او فرمائیلو نور رسول الله صلی الله علیه و آله د خوشحالی اظهار او فرمائیلو او تپوس ئې او فرمائیلو چه تاسو ته څنگه معلومه شوه چه سورة فاتحه رقیه ده او د دې صحابه کرامو رضی الله عنهم د نورې تسلی دپاره ئې او فرمائیل چه د خپل ځان سره زما حصه هم مقرر کړئ.

[۳۴۱۹] (۱) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِيهِ مَعْبُدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بِهَذَا الْحَدِيثِ.

معبد بن سیرین (دمحمد بن سیرین دررور) دابوسعید خدری رضی الله عنه نه دتیرشوی روایت په شان روایت بیان کړې دي.

[۳۴۲۰] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي السَّفَرِ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ غَارِجَةَ بْنِ الصَّلْتِ، عَنْ عَمْرِو، "أَنَّ مَرْيَمَ قَاتُوَةَ، قَالُوا: إِنَّكَ جِئْتَ مِنْ عِنْدِ هَذَا الرَّجُلِ بِخَيْرٍ، فَأَرْقِ لَنَا هَذَا

۱: صحيح البخاري / فضائل القرآن (۵۰۰۷)، صحيح مسلم / الطب ۲۳ (۲۲۰۱)، (تحفة الأشراف: ۴۳۰۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۸۳/۳) (صحيح)

۲: تقدمه أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۰۱۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۱۱/۵) ويأتي هذا الحديث في الطب (۳۸۹۶)، (صحيح) ۳۹۰۱



الرَّجُلُ، فَأَتَوْهُ بِرَجُلٍ مَعْتُوهُ فِي الْغُبُودِ، فَرَقَاةً بِأَمْرِ الْقُرْآنِ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ غُدُوَّةً وَعَشِيَّةً، وَكُلَّمَا خَافَهَا جَمَعَ بَزَاقَهُ، ثُمَّ تَفَلَّ، فَكَأَنَّمَا الْأَشْطَرُّ مِنْ عَقَالٍ فَأَعْطَوْهُ شَيْئًا، فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَذَكَرَهُ لَهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كُلْ فَلَعَمْرِي لَمْ يَأْكَلْ بِرُقِيَّةٍ بَاطِلٍ، لَقَدْ أَكَلْتَ بِرُقِيَّةٍ حَقٍّ.

خارجہ بن الصلت دخپل تره نه روایت کوی فرمائی چه دده دیوداسی قوم په خوا کښې تیریدل اوشول کوم چه ده ته راغلل او وټې وټیل چه تاددغه سرې (نبي ﷺ) نه خیر راوړي دي نو زمونږ په دې کس باندې ئې اولوله اوهغوی لارل او په پروتړلي شوي یولیونې ئې راوستونو هغه دغه لیونې درې ورځې سحر او ماښام په سورت فاتحه باندې دم کړو اوهره پیره چه به ئې فاتحه ختموله نوخپلې توانړې به لې راجمع کړي او په ده باندې به ئې وتوکلي بهرحال هغه کس داسې شو لکه دقیدنه چه خلاص شي نو هغه خلقو ورته یوڅه ورکړل نوده ددوی ددې واقعي اوددوی ورکړي ذکرنبی ﷺ ته وکړونو په دې وخت کښې نبی ﷺ اوفرمائیل: ددینه خوره زما دې په خپل عمر باندې قسم وي خلق ددروغوپه عمل (منترو باندې خوراک کویتا خودرښتیاوودم کړي دي (یعنی سورت فاتحه دهر مرض دپاره شفاء ده).

#### دویمه قصه :

د دې نه پس مصنف ﷺ هم د دې قسم یو بل حدیث چه د هغې راوی عم خارجہ دې ذکر فرمائیلې دې چه د هغې مضمون دا دې چه هغوی په سفر باندې روان وو په لاره کښې په یو کلی کښې هغه څه خلقو رامنع کړو چه ته داسې بزرگ ته روان ئې یعنی رسول الله ﷺ ته، زمونږ یو مریض دې معتوه یعنی لیونې کوم چه په زنځیرونو کښې تړلې شوې دې په هغه باندې دم واچوئ هغوی تر د درې ورځو پورې سحر او ماښام په سورة فاتحه باندې دم کړو، هر کرت به ئې د دمولو په وخت په هغوی باندې خپلې لارې مبارک ورتوکلې پس هغه بالکل روغ شو، (فَاعْطَوْهُ شَيْئًا) یعنی دې خلقو هغه صحابی ﷺ ته څه هدیه پیش کړه، د بعضو روایاتو نه معلومیږي چه هغه سل بیزي وې لکه خپله په ابوداؤد کښې دا حدیث د کتاب الاطعمه په آخر کښې را روان دې هلته ددې عدد تصریح ده، هغه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې راغلو او وې فرمائیل (کل فلعمری لمن اکل برقية باطل) (د دې جزا محذوف ده فعلیه وباله) رسول الله ﷺ اوفرمائیل ته دا خوړلې شي او قسم دې زما په نفس باندې چه کوم انسان په باطله رقیه باندې خوراک اوکړی په هغه باندې گناه ده د هغې، ته خود برحق رقیه په ذریعه خوراک کوي په دې کښې څه باک دې.

#### استنباط المصنف به حدیث الباب :

مصنف ﷺ په تعلیم القرآن باندې د اجرت عدم جواز لره لکه چه د حنابله مسلک دې د عبادة ﷺ د حدیث نه ثابت کړو (ان كنت تطوق طوقا من نار فاقبلها) او په هغې باندې ئې ترجمه قائم کړه (کسب المعلم) او د ابو سعید خدری ﷺ، او هم دغه شان د عم خارجہ حدیث چه د هغې جواز دجعل ثابتیږي په دې باندې ئې ترجمه قائم کړه (باب فی کسب الاطباء) هغوی دا دویمه واقعه په علاج وغیره باندې محمول کولو سره د دې په ذریعه د طبیب د اجر جواز ثابت کړو، کوم چه بالاتفاق جائز دې، امام ابوداؤد ﷺ دلته د ډیر لوټي

فقاہت ثبوت ورکړې دې، په احادیثو باندې چه په کتب احادیث کښې کوم عنوان او تراجم قائمولې شی هغه ډیر لوڼې اهمیت لری، پس مشهوره ده «**فقه المحدث فی تراجمه**» لکه چه یو جمله دا هم مشهوره ده، «**فقه البخاری فی تراجمه**» امام ترمذی رحمۃ اللہ علیہ د ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ په حدیث باندې دا ترجمه قائم کړې ده «**باب ما جاء فی اخذ الاجر علی التعویذ**» هغوی هم دا حدیث د مصنف رحمۃ اللہ علیہ په شان په رقیه او علاج باندې محمول کړې دې خو هغوی د حدیث د لاندې لیکي «**ورخص الشافعی للمعلم ان یأخذ علی تعلیم القرآن اجرا ویری له ان یشرط علی ذلک واحتج بهذا الحدیث**» امام ابوداؤد رحمۃ اللہ علیہ حدیث د عبادہ او حدیث د ابو سعید خدری رضی اللہ عنہ چه د هغې مضمون په ظاهر کښې تعارض لری په دواړو باندې د یو بل نه پس بیل بیل تراجم قائم کولو سره صحیح صورت حال واضح کړو چه د حدیث عبادہ رحمۃ اللہ علیہ تعلق د تعلیم القرآن سره دې او د حدیث ابی سعید رضی اللہ عنہ محمول علاج او معالجه او دکسب دطیب دې، **فله در المصنف. والحدیث أخرجه النسائی، قاله المنذری**

### باب فی کسب الحجام په ښکر لگولو باندې د اجرت اخستو بیان

#### ایضاح المسئلة :

دلته دوه څیزونه دی یو پیښه د حجامت یعنی حرفه، دویمه د هغې گټه، د جمهورو په نزد دواړه جائز دی او د امام احمد رحمۃ اللہ علیہ او د یو جماعت رائي دا ده چه د آزاد سړی په حق کښې احترام بالحجامه مکروه دې یعنی دا پیښه اختیارول او د دې گټه په خپل خان باندې خرچ کول د هغوی په نزد حرام دی، هغوی فرمائي چه که حر دا پیښه اختیار کړی نو د دې گټه دې په څاروو او غلامانو باندې خرچ کړی، او د غلام په حق کښې د هغوی په نزد نه په دې پیښه اختیارولو کښې څه گناه شته اونه ددې په گټه خوړلو کښ، **قاله الحافظ.**

[۳۴۲۱] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، أَخْبَرَنَا أَنَا، عَنْ يَحْيَى، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ يَعْنِي ابْنَ قَارِظٍ، عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «كَسْبُ الْحَجَّامِ خَبِيثٌ، وَتَمْنُ الْكَلْبِ خَبِيثٌ، وَمَهْرُ الْبَغِيِّ خَبِيثٌ».

د رافع بن خديج رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائي چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائيلى دی دښکر لگولونه کسب جوړول اوبیا ورباندې اجرت اخستل بدعمل دې اودسپي قيمت ناپاکه دې اوبدکاري ښځې اجرت ناکاره دې.

«**عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ « كَسْبُ الْحَجَّامِ خَبِيثٌ »**  
**شرح الحديث :**

د خبيث اطلاق په دوه معنو باندې کيږي حرام او نجس، دویم خلاف الطيب یعنی بيکاره څيز د جمهورو په نزد هم دا معنی مراد ده کذا قال القاری، خو د امام احمد رحمۃ اللہ علیہ په نزد که

۱: صحيح مسلم/المساقاة ۹ (۱۵۶۸)، سنن الترمذي/اليوبع ۴۶ (۱۲۷۵)، سنن النسائي/اللبائع ۱۵ (۴۲۹۹)، (تحفة الأشراف: ۳۵۵۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳/۴۶۴، ۴/۱۴۱) (صحيح)



حجام حروي نو بيا به په دې صورت کښې د خبيث دويمه معنی مراد وی یعنی حرام وړاندې مصنف رحمۍه ددې نه پس دوه احاديث نور ذکر کړي دي په هغې کښې هم غور او کړئ.

[۳۴۲۲] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ ابْنِ مُحَيْصَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ اسْتَأْذَنَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي إِجَارَةِ الْحَجَّامِ، فَتَهَاةٌ عَنْهَا، فَلَمْ يَزَلْ يَسْأَلُهُ وَيَسْتَأْذِنُهُ، حَتَّى أَمَرَهُ أَنْ أَغْلِفَهُ نَاضِحَكَ وَرَقِيقَكَ.

ابن محيصة دخپل پلار نه روایت کوي فرمائي چه دښې عليه السلام نه ئې اجازت وغوښتوپه باره داجرت دښکر لگولو کښې نونښې عليه السلام ورنه منع کړواوهغه به بار بار داسوال تکرار ولواواجازت به ئې غوښتلوتردې چه حکم ئې ورته وکړو په دغه اجرت باندې خپل اس له گياه واخله اويائي خپل غلام ته ورکړه.

(عن ابن شهاب عن ابن محيصة عن أبيه أنه استأذن رسول الله صلى الله عليه وسلم في إجارة الحجام) يعني محيصة د رسول الله صلى الله عليه وسلم نه د حجام د اجرت په باره کښې اجازت اوغوښتلو نو رسول الله صلى الله عليه وسلم هغه منع کړو هغه د رسول الله صلى الله عليه وسلم نه د دې په باره کښې تپوسونه کول تر دې چه رسول الله صلى الله عليه وسلم په آخر کښې هغه ته داسې اوفرمايل (*اغْلِفْهُ نَاضِحَكَ وَرَقِيقَكَ*) چه د دې گټه په خپلو غلامانو او خاروو باندې خوړلې شي. ددې حديث نه د حنابله تائيد کيږي.

[۳۴۲۳] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "اِخْتَجَمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَعْطَى الْحَجَّامَ أَجْرَهُ وَلَوْ عَلِمَهُ خَبِيثًا لَمْ يُعْطِهِ".

د ابن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائي ښکر عليه السلام ښکر ولگولو اوښکر لگونکي ته ئې دهغه اجرت ورکړو، که چرې داناپاکه وي نوښکر لگونکي ته به ئې هيڅ کله اجرت نه وو ورکړې. د دې حديث نه د حنابله تائيد کيږي.

(عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ اخْتَجَمَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- وَأَعْطَى الْحَجَّامَ أَجْرَهُ وَلَوْ عَلِمَهُ خَبِيثًا لَمْ يُعْطِ)

ابن عباس رضي الله عنه فرمائي چه رسول الله صلى الله عليه وسلم ښکر اولگولو او حجام ته ئې اجرت هم ورکړو وړاندې ابن عباس رضي الله عنه خپل استنباط بيانوي که چرې رسول الله صلى الله عليه وسلم د حجام اجرت حرام گنړلو نو ولې به ئې ورکولو، د دې حديث نه د جمهورو تائيد کيږي، خو په دې استدلال باندې دا نقد کيدې شي چه ظاهره دا ده چه د دې حجام نه مراد ابو طيبه دې لکه چه د دې نه پس په روايت کښې دی او هغه حرنه وو بلکه مملوک وو، خو جمهور دا وئيلي شي چه که ابو طيبه مملوک وو نو د دې نه دا استدلال څنگه صحيح دې چه غير مملوک ته اجرت ورکول ناجائز دی يا د هغه په حق کښې حرام دی دا خو اتفاقي امر دې چه په چا باندې رسول الله صلى الله عليه وسلم ښکر اولگولو هغه مملوک وو حرنه وو. والله تعالى اعلم

<sup>۱</sup>: سنن الترمذي/البیوع ۴۷ (۱۲۷۷)، سنن ابن ماجه/التجارات ۱۰ (۲۱۶۶)، (تحفة الأشراف: ۱۱۲۳۸)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/الاستئذان ۱۰ (۲۸)، مسند احمد (۴۳۶، ۴۳۵/۵) (صحيح)

<sup>۲</sup>: صحيح البخاري/البیوع ۳۹ (۲۱۰۳)، الإجارة ۱۸ (۲۲۷۹)، (تحفة الأشراف: ۶۰۵۱)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/الحج ۱۱ (۱۲۰۲)، مسند احمد (۳۵۱/۱) (صحيح)

[۳۴۲۴] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الطَّوِيلِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّهُ قَالَ: "حَجَّمَ أَبُو طَيْبَةَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَمَرَ لَهُ بِصَاعٍ مِنْ تَمْرٍ، وَأَمَرَ أَهْلَهُ أَنْ يُخَفِّقُوا عَنْهُ مِنْ خَرَجِهِ."

دانس بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دي فرمائی ابو طیبہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته بنکر و لگولو اونبی صلی اللہ علیہ وسلم دهغه دپاره دیوصاع کجورو و رکولو حکم وکړو اودده مالکانو ته ئې حکم وکړوچه دده سره په خراج کښې دتخفیف معامله وکړئ.

قوله: «عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّهُ قَالَ حَجَّمَ أَبُو طَيْبَةَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- فَأَمَرَ لَهُ بِصَاعٍ مِنْ تَمْرٍ وَأَمَرَ أَهْلَهُ أَنْ يُخَفِّقُوا عَنْهُ مِنْ خَرَجِهِ»: یعنی ابو طیبہ رضی اللہ عنہ رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم له بنکر اولگولو نو هغوی د دي په اجرت کښې هغه ته یو صاع د کهجورو و رکولو حکم او فرمائیلو اود هغه مالکانو ته ئې حکم اوکړو چه د هغه په گټه کښې چه کوم معین مقدار اخلئ په هغې کښې تخفیف اوکړئ، د ابو طیبہ نوم بعضو نافع لیکلې دي، خو صحیح دا ده چه د هغوی نوم معلوم نه دي، دا د انصارو غلام وو چونکه دي په بنکر لگولو باندي پوهیدو په دي وجه باندي د هغه مالک په هغه باندي هم دا کار کولو، او د ورځې ورځې یو معین مقدار مال به ئې د هغه نه اخستلو، د هغې نه پس به باقی د هغه وو، نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د هغه مالکانو ته او فرمائیل چه تاسو چه د هغه نه کوم مقدار د اخستلو مقرر کړې دي په هغې کښې لږ کمې اوکړئ. والحديث أخرجه البخاري ومسلم والترمذي، قاله المنذرى

## باب فِي كَسْبِ الرِّمَاءِ

دوينځود امدن اخستلو بيان

[۳۴۲۵] (۱) حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُحَادَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا حَازِمٍ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ كَسْبِ الرِّمَاءِ."

دابوهريره رضی اللہ عنہ نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم منع فرمائيلي ده دوينځود امدن نه.

[۳۴۲۶] (۲) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ، حَدَّثَنَا عِكْرَمَةُ، حَدَّثَنِي طَارِقُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقُرَشِيُّ، قَالَ: جَاءَ رَافِعُ بْنُ رِفَاعَةَ إِلَى مُجْلِسِ الْأَنْصَارِ، فَقَالَ: "لَقَدْ نَهَانَا نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْيَوْمَ فَذَكَرَ أَشْيَاءَ وَنَهَى عَنْ كَسْبِ الْأُمَةِ إِلَّا مَا عَمِلْتَ يَدُهَا، وَقَالَ: هَكَذَا بِأَصَابِعِهِ نَحْوُ الْخَبْزِ، وَالْقَزْلِ، وَالنَّفْثِ."

د طارق بن عبد الرحمن قرشي نه روایت دي فرمائی چه دانصارو یو مجلس ته لاړواو وئې وئیل یقینا مونږنبي صلی اللہ علیہ وسلم منع کړي وو دامدن دوينځومگرهغه کوم چه هغه په خپل لاس وگټي. اووئې وئیل داسې او په خپلو لاسونوئې اشاره وکړه لکه پخلي، وړئ ریشل، یادنقش نگار روزگار کول.

(۱): صحيح البخاري/اليبوع ۳۹ (۲۱۰۲)، ۹۵ (۲۲۱۰)، الإجارة ۱۹ (۲۲۷۷)، الطب ۱۳ (۵۶۹۶)، المساقاة ۱۱ (۲۳۷۰)، (تحفة الأشراف: ۷۳۵)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/اليبوع ۴۸ (۱۲۷۸)، سنن ابن ماجه/التجارات ۱۰ (۲۱۶۴)، مسند احمد (۱۰۷/۳، ۲۸۲)، سنن الدارمي/اليبوع ۷۹ (۲۶۶۴) (صحيح)

(۲): صحيح البخاري/الإجارة ۲۰ (۲۲۸۳)، الطلاق ۵۱ (۵۳۴۸)، (تحفة الأشراف: ۱۳۴۲۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۸۷/۲، ۳۴۷، ۳۸۲، ۴۳۷، ۴۵۴، ۴۸۰)، سنن الدارمي/اليبوع ۷۷ (۲۶۶۲) (صحيح)

(۳): تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۵۹۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۴۱/۴) (حسن)



[۳۴۲۷] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي قُدَيْكٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ يَعْْنَى ابْنَ هُرَيْرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ رَافِعٍ هُوَ ابْنُ خَدِيجٍ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ كَسْبِ الْأُمَةِ حَتَّى يُعْلَمَ مِنْ أَيْنَ هُوَ".

د رافع بن خديج رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائیلې ده د امدن د وینځې نه ترڅوچه معلومه شوي نه وي چې دا ئې د کوم ځانې به حاصل کړي دي.

﴿ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَنْ كَسْبِ الْأُمَةِ ﴾

د جاهلیت په زمانه کسبې به خلقو په خپلو وینځو باندې حرامه گته کوله او دا به ئې جائز گنلله او د هغوی په نزد دا هیڅ د شرم خبره نه وه، صرف دا نه بلکه د زنا په ذریعه به ئې نسب هم ثابت منلو لکه چې په کتاب الطلاق کسبې ﴿ باب فی ادعاء ولد الزنا ﴾ کسبې دا حدیث تیر شوې دې ﴿ لا مساعة فی الاسلام ﴾ اسلام راتلو سره زنا او زنا ته دعوت ورکونکی او د زنا گته دا ټول څیزونه حرام کړل، وړاندې په بل روایت کسبې دا زیادت دې ﴿ نَهَانَا عَنْ كَسْبِ الْأُمَةِ إِلَّا مَا عَمِلَتْ بِيَدِهَا. وَقَالَ هَكَذَا بِأَصَابِعِهِ نَحْوُ الْخَبَرِ وَالْقَزْلِ وَالنَّفْسِ ﴾ یعنې د وینځې د هغه گته نه ئې منع او فرمائیلې کومه چې د حرام کارې په ذریعه وی نه مطلقا، لهذا که د نورو جائز کارونو په ذریعه گته او کړی لکه د چا دودې پخول یا جولا گری کول هم دغه شان مالوچ وهل، دا گته د هغې جائز ده، په بذل کسبې لیکلې دی چې هغه چې د شرح وقایه په بعضو حواشی کسبې دی چې ﴿ ان اجرة الزانية حلال ﴾ د هغې نه مراد اجرة الزنا نه دې بلکه مطلب دا دې چې که یو وینځه چې زانیه هم ده د دې باوجود که هغه په څه بله څه طریقه باندې کسب کوی نو د هغې کسب جائز دې لکه چې دلته په حدیث الباب کسبې دی. آه حدیث ابی هريرة رضي الله عنه أخرجه البخاری، قاله المنذرى

[۳۴۲۸] (۲) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ، عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهُ "نَهَى عَنْ تَمَنِ الْكَلْبِ، وَمَمَرِ الْبَيْتِ، وَحُلْوَانِ الْكَاهِنِ".

د ابو مسعود رضي الله عنه نه روایت دې چې نبی کریم صلی الله علیه و آله د سپی قیمت، د زنا کارې بڼځې گته، اود کاهن (پالگر) د مزدورۍ اخستلو نه منع فرمائیلې ده.

### باب فِي عَسْبِ الْفَحْلِ

د څاروی په مال کولو باندې د اجرت اخستلو بیان

[۳۴۲۹] (۳) حَدَّثَنَا مُسَدَّدُ بْنُ مُسْرَهٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْحَكَمِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَسْبِ الْفَحْلِ".

۱: تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۳۵۸۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۴۱/۴) (حسن) بما قبله  
 ۲: صحيح البخاري/البیوع ۱۱۳ (۲۲۳۷)، الإجارة ۲۰ (۲۲۸۲)، الطلاق ۵۱ (۵۳۴۶)، الطب ۴۶ (۵۷۶۱)، صحيح مسلم/المساقاة ۹ (۱۵۶۷)، سنن الترمذي/البیوع ۴۶ (۱۲۷۶)، النكاح ۳۷ (۱۱۳۳)، الطب ۲۳ (۲۰۷۱)، سنن النسائي/الصبيد والذبائح ۱۵ (۴۲۹۷)، سنن ابن ماجه/التجارات ۹ (۲۱۵۹)، (تحفة الأشراف: ۱۰۰۱۰)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/البیوع (۲۶۱۰) (صحيح)  
 ۳: مسند احمد (۱۱۸/۴)، ۱۲۰، ۱۴۰، ۱۴۱، سنن الدارمي/البیوع ۳۴ (۲۶۱۰) (صحيح)  
 ۴: صحيح البخاري/الإجارة ۲۱ (۲۲۸۴)، سنن الترمذي/البیوع ۴۵ (۱۲۷۳)، سنن النسائي/البیوع ۹۲ (۴۶۷۵)، (تحفة الأشراف: ۸۲۳۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۴/۲) (صحيح)

د عبدالله بن عمر رضی الله عنہ نه روایت دي فرمائی چه نبی علیه الصلاة والسلام دڅاروي په مال کولو (جفتی کولو) باندې داجرت اخستونه منع فرمائیلي ده.

### شرح الحديث :

بفحل یعنی نر څاروي مطلقا فرسا کان او جملا او تيسا او عسب په معنی د ماء الحيوان او دهغي ضراب یعنی جفتی دواړه معنی لیکلې شوي دي، او په حديث الباب کښې دي «نَهَى رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- عَنْ عَسْبِ الْفَحْلِ» دلته په عبارت کښې مضاف محذوف دي یعنی «عن كراء عسب الفحل» یعنی د نر د جفتی کولو د اجرت نه رسول الله ﷺ منع او فرمائيله. او ويلي شوي دي چه د عسب اطلاق په اجرت اضراب باندې هم کيږي لهذا په دې صورت کښې به د مضاف د حذف منلو ضرورت نه وي د جمهور علماء گرامو او ائمه ثلاثه مذهب هم دا دي چه نر لره د جفتی کولو دپاره په کرايه باندې ورکول حرام دي ولې چه په دې کښې غرر دي ځکه چه نر کله جفتی کوي او کله نه کوي کله په هغي سره علوق یعنی حمل راځي او کله نه راځي بله دا چه ماء الفحل یعنی د دې مني مال غير متقوم دي. د اجرت اخستلو په صورت کښې گويا دا د هغي بيع ده چه فاسد ده خو په سوال باندې فحل ورکول پکار دي دا مندوب اليه ده پس په حديث کښې راځي «ومن حقها اطراق فحلها» خو په دې کښې د امام مالک رحمته الله عليه اختلاف منقول دي په داسې طريقه چه د ضراب موده معين کړې شي مثلاً ساعت يا نصف ساعت نو په دې باندې چه کوم اجرت واخستلې شي هغه به د ثمن په طور نه وي بلکه تاخيل څاروي د بل د کار دپاره د معينې مودې دپاره ورکړې دي دا د هغي مزدوري ده، د جمهورو په نزد په اجرت ورکول خو ممنوع دي خو که مستعير په طور د کرامت که څه ورکړي نو د هغي اخستل جائز دي. والحديث أخرجه الترمذي والنسائي، قاله المنذري

### باب فِي الصَّائِغِ د زرگر متعلق بيان

(د صائغ لغوی تحقیق):

صائغ او صواغ دواړه لغتونه دي او صياغ هم واو لره په ياء سره بدلوي، د صياغت معنی يو مادي لره ويلې کولو سره په يو خاص هيئت باندې يو څيز جوړونکې، او هم د دې نه ده صائغ الحلې یعنی زرگر، د سرو او سپينو زرو کالې جوړول، په مجمع البحار کښې دي، «وفيه واعدت صواغا من بنى قينقاع، وهو صائغ الحلې، من صاغ يصوغ، ومنه اكذب الناس الصواغون، د مصنف رحمته الله عليه غرض د دې ترجمه الباب نه د صياغت دحرفې کراحت لره بيانول دي لکه چه د حديث الباب نه معلومېږي.

[۳۴۳۰] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنِ الْعَلَاءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي مَاجِدَةَ، قَالَ: "قَطَعْتُ مِنْ أُذُنِ غُلَامٍ أَوْ قِطْعَةً مِنْ أُذُنِي، فَقَدِمَ عَلَيْنَا أَبُو بَكْرٍ حَاجًّا، فَأَجْتَمَعْنَا إِلَيْهِ، فَرَفَعْنَا إِلَى عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، فَقَالَ عُمَرُ: إِنَّ هَذَا قَدْ بَلَغَ الْقِصَاصَ أَدْعُوا لِي حَجَّامًا لِيَقْتَصَّ مِنْهُ، فَلَمَّا دُعِيَ الْحَجَّامُ،

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۶۱۳)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱۷/۱) (ضعيف)



قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِيَّيْ وَهَبْتُ لِحَاثِي غُلَامًا، وَأَنَا أَرْجُو أَنْ يَبَارَكَ لَهَا فِيهِ، فَقُلْتُ لَهَا: لَا تُسَلِّمِيهِ حَتَّامًا، وَلَا صَائِقًا، وَلَا قَصَابًا، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَى عَبْدُ الْأَعْلَى، عَنِ ابْنِ إِسْحَاقَ، قَالَ ابْنُ مَاجِدَةَ: رَجُلٌ مِنْ بَنِي سَكْمٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ.

د ابوماجد نه روایت دې فرمائی چه مادیو هلك غوږ پریکړو یا زما غوږ چا پریکړو (دراوی شک دې چه ابوماجده کومه جمله وئیلې ده) بیابوبکر صدیق زمونږ خواته د حج دپاره راغې، مونږ ټول هغه ته را جمع شو هغه مونږه عمره ته اولیرلو، عمر چه او فرمائیل په دې کښې قصاص واجب کیدې شي تاسو یونانی راوغواړی چه هغه په قصاص کښې دده غوږ پریکړي کله چه نائی راغې نو عمر نه. او فرمائیل مادنې عليه السلام نه اوریدلی دی چه فرمائیلې ئې وو کله چه ما خپلې ترور میمونه عليها السلام ته یو غلام په طور دجه پیش کړې وو زما دا امیدو چه په دې غلام کښې به ددوی دپاره خیر وبرکت وي، خو ما ورته وئیلې وو چه دا غلام به ښکر لگونکي یا زرگریا قصاب ته نه حواله کوی.

قوله: «عَنْ أَبِي مَاجِدَةَ قَالَ قَطَعْتُ مِنْ أُذُنِ غُلَامٍ - أَوْ قُطِعَ مِنْ أُذُنِي»

### شرح الحديث :

ابو ماجدة وائی چه ما د یو هلك غوږ کټ کړو، وړاندې د راوی شک دې چه یا هغوی وئیلې وو چه زما غوږ پرې کړې شو، بیا دا سې اوشوه چه مونږ ته د حج په زمانه کښې ابوبکر صدیق رضی الله عنه تشریف راوړو مونږ هغوی ته جمع شو او گویا د هغوی مخې ته د هغې اذن ذکر راغلو «فَرَفَعْنَا إِلَى عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ» یعنی ابوبکر صدیق رضی الله عنه زمونږ دا مقدمه د عمر رضی الله عنه په خدمت کښې اولیرلو، نو عمر رضی الله عنه واقعه اوریدو سره او فرمائیل چه دا قصه خود قصاص حد ته اورسیده یعنی دا فعل سبب د قصاص دې، او وې فرمائیل چه ما ته حجام راوړئ چه د دې قاطع نه قصاص واخستلې شی، راوی وائی چه کله حجام راغلونو عمر رضی الله عنه ته یو حدیث رایاد شو چه په هغې باندې هغوی او فرمائیل، ما د رسول الله صلی الله علیه و آله نه په یو موقع باندې اوریدلې وو. هغوی او فرمائیل چه ما خپلې ترورو ته یو غلام هبه کړې وو او زه امید کوم د دې خبرې چه زما د ترور دپاره به په دې کښې خیر او برکت وی او ما ترور ته د ورکړې په وخت وئیلې وو چه دا سړې حجام یا صائغ یا قصاب ته مه حواله کوه، یعنی په دې کسبونو کښې ورته یوه هم مه ښایه، پورته د مجمع البحار نه د صواغین په باره کښې اکذب الناس کیدل تیر شو، علماء کرامو لیکلې دی چه د صائغ مذمت ځکه کړې شوې دې چه هغه کالو جوړولو کښې ملاوت کوی، بله دا چه د هغوی په کلام کښې ټال متول او د دروغو وعدې ډیرې موندلې کیرې، او د حجام او د قصاب کراحت د هغه نجاست د وجې نه دې چه هغې سره د هغوی تعلق راځی.

[۳۴۳۱] (حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ الْقُضَيْلِ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِسْحَاقَ، عَنِ الْعَلَاءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحُرَقِيِّ، عَنِ ابْنِ مَاجِدَةَ السَّهْمِيِّ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، نَحْوَهُ.

۱: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۰۶۱۳) (ضعيف)

ابوماجده سهمی د عمر بن الخطاب فتنه او هغه د نبی علیه الصلاة والسلام نه دمخکني روایت په شان روایت نقل کړې دي،

[۳۴۳۲] (۱) حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ يَعْقُوبَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا الْعَلَاءُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحَرَقِيُّ، عَنْ ابْنِ مَاجِدَةَ السَّهْمِيِّ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، مِثْلَهُ.

ابوماجده سهمی د عمر بن الخطاب رضي الله عنه نه او هغه د نبی علیه الصلاة والسلام نه د تیرشوی روایت په شان روایت بیان کړې دي.

### بَابُ فِي الْعَبْدِ بَيَاعُ وَلَهُ مَالٌ

بابه که چرې یو غلام په داسې حال کښې خرڅ کړې شي  
چه مال ورسره موجود وي (نوددغه مال حقدار به څوکوي)

[۳۴۳۳] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ بَاعَ عَبْدًا، وَلَهُ مَالٌ، فَمَالُهُ لِلْبَّائِعِ إِلَّا أَنْ يَشْتَرِطَ الْمُبْتَاعُ، وَمَنْ بَاعَ تَخْلًا مُؤَبَّرًا، فَالْثَّمَرَةُ لِلْبَّائِعِ، إِلَّا أَنْ يَشْتَرِطَ الْمُبْتَاعُ".

سالم دخپل پلار عبداللہ رضي الله عنه نه روایت کوي فرمائي چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائي دي: څوک چه داسې غلام خرڅ کړي چه مال ورسره وي نو خرڅونکي ددې حقدار دي مگر هله چه خریدار شرط لگولي وي، چاچه پيوند شوي کجوره خرڅه کړه نوددی میوه به د خرڅونکي حق وي مگر داچه اخستونکي د خرڅونکي سره شرط مقرر کړي (چه کجوره به سره د میوو اخلم او خرڅونکي دا شرط قبول کړي نوددې میوه به خریدار اخلي).

قوله: «مَنْ بَاعَ عَبْدًا، وَلَهُ مَالٌ، فَمَالُهُ لِلْبَّائِعِ إِلَّا أَنْ يَشْتَرِطَ الْمُبْتَاعُ، وَمَنْ بَاعَ تَخْلًا مُؤَبَّرًا، فَالْثَّمَرَةُ لِلْبَّائِعِ، إِلَّا أَنْ يَشْتَرِطَ الْمُبْتَاعُ»

### شرح الحديث مع استنباط المسئلة :

يعني کوم انسان چه خپل داسې غلام خرڅ کړی چه د هغه دپاره مال وي نو هغه مال به د مالک يعني د بائع وي د مشتری دپاره به نه وي، مگر دا چه مشتری شرط اولگوي د هغه د مال هم، د ائمه اربعه هم دا مذهب دي، خو دلته سوال دا وارديږي چه آيا عبد هم د څه مال مالک کيږي شي؟ د دې جواب دا دي چه د جمهور علماء او ائمه ثلاث په نزد په عبد کښې د مالک جوړيدو صلاحيت نشته لهذا په حديث کښې د مال اضافت د عبد طرف ته مجازا دي يعني هغه سره چه کوم مال دي اگر که د هغه نه دي، په دې کښې د امام مالک رحمه الله اختلاف منقول دي هغوی فرمائي چه که مالک خپل غلام لره د څه مال مالک جوړ کړي نو هغه به مالک شي او هم دا د اهل ظاهر قول دي، په دې اختلاف باندې شارحانو په طور د

(۱): انظر حديث رقم: (۳۴۲۹)، (تحفة الأشراف: ۱۰۶۱۳) (ضعيف)

(۲): صحيح البخاري/البيوع ۹۰ (۲۲۰۳)، ۹۲ (۲۲۰۶)، المساقاة ۱۷ (۲۳۷۹)، الشروط ۲ (۲۷۱۶)، صحيح مسلم/البيوع ۱۵

(۱۵۴۳)، سنن الترمذي/البيوع ۲۵ (۱۲۴۴)، سنن النسائي/البيوع ۷۴ (۴۶۴۰)، سنن ابن ماجه/التجارات ۳۱ (۲۲۱۰)،

(تحفة الأشراف: ۶۸۱۹، ۸۳۳۰)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/البيوع ۷ (۱۰)، مسند احمد (۶۲)، سنن الدارمي/البيوع ۲۷

(۲۶۰۳) (صحيح)



اختلاف ثمر دا مسئله هم ليکلي ده چه د جمهورو په نزد د غلام دپاره تسري (۱) يعنې وطى بملک اليمين، او د امام مالک رحمه الله په نزد جائز ده، دويمه مسئله په دې حديث کښې د بيع نخل ده که يو سړى خپلې د کهجورو اونې د تاير نه پس خرڅې کړې نو په دې صورت کښې به ميوه د اونو تابع نه وي بلکه د بائع دپاره به وي مگر دا که مشترى صراحة شرط اولگوى نو بيا به د مشترى دپاره وي يعنې په بيع کښې به داخله شي، جمهور علماء کرامو او ائمه ثلاث په دې حديث کښې د موبرا د قيد اعتبار کولو سره هم دا وئيلي دي چه دا حکم د نخل موبر دې او که نخل غير موبر وي نو په دې صورت کښې به ثمر د بائع دپاره نه وي بلکه د اونو تابع کيدو سره به د مشترى دپاره وي، او د احنافو په نزد دا قيد اتفاقي دې احترازي نه دې، د هغوى په نزد قبل التاير او بعد التاير په دواړو صورتونو کښې به ميوه د بائع دپاره وي. او دلته يو دريم مذهب هم دې هغه دا چه د ثمر به په دواړو صورتونو کښې د مشترى دپاره وي، دې طرف ته تلې دې ابن ابى لیلی، د جمهورو استدلال په طريقه د مفهوم مخالف دې او احناف چونکه د مفهوم مخالف اعتبار نه کوي په دې وجه هغوى دا اختيار نه کړو، هغوى دا وائى چه ثمر مستقل خيز دې او اونې مستقل.

[۳۴۳] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، عَنْ عُمَرَ، عَنِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بِقِصَّةِ الْعَبْدِ، وَعَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بِقِصَّةِ النَّخْلِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَاخْتَلَفَ الزَّهْرِيُّ، وَنَافِعٌ، فِي أَرْبَعَةِ أَحَادِيثَ هَذَا أَحَدُهَا.

نافع د عبدالله ابن عمر رضي الله عنهما نه او هغه د نبی صلی الله علیه و آله نه صرف د غلام واقعه نقل کړې ده او همدارنگې نافع د ابن عمر نه په بل روایت کښې صرف د کجوري واقعه نقل کړې ده. امام ابو داؤد فرمائی چه زهري او نافع په څلورو احاديثو کښې اختلاف کړي او يو د هغوى نه دادي.   
 ﴿عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنْ عُمَرَ عَنِ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بِقِصَّةِ الْعَبْدِ وَعَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بِقِصَّةِ النَّخْلِ﴾

مصنف رحمه الله د راويانو اختلاف بيانوى، د دې حديث رومبې طريق سالم عن ابن عمر دې او دويم طريق ئې نافع عن ابن عمر دې، د سالم نه روایت کونکې امام زهري رحمه الله دې، او د نافع نه روایت کونکې مالک، نو دلته د سالم او د نافع اختلاف راځي هغه دا چه سالم د حديث دواړه اجزاء يعنې بيع نخل او بيع عبد دا دواړه د خپل پلار ابن عمر رضي الله عنهما نه روایت کړل، او نافع بيع النخل خو د ابن عمر نه روایت کړو، او بيع العبد ئې عن ابن عمر عن عمر رضي الله عنهما نه روایت کړو، يعنې د يو جزء راوی ئې عمر رضي الله عنهما کړو او د يو جزء راوی ابن عمر رضي الله عنهما په خلاف د سالم چه هغوى دواړه اجزاء د ابن عمر رضي الله عنهما نه روایت کړل.

په بعض نسخو کښې يو عبارت دې چه د هغې مطلب دا دې چه د محدثينو په نزد څلور احاديث داسې دي چه په هغې کښې د نافع او زهري اختلاف دې په هغه څلورو کښې يو دا هم دې، ياد دې چه د رفع يدين په بحث کښې د ابن عمر رضي الله عنهما د حديث د لاندې دا تير شوى

(۱) تسري، د سربته نه ماخوږ دې هغه وينځي ته وائى چه هغه انسان د وطى دپاره ساتى.  
 (۲) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۸۳۳۰، ۱۱۵۵۸) (صحيح)

دی چه د سالم او نافع په څلورو احادیثو کښې په رفع او وقف کښې اختلاف دی یو د هغې نه د رفع الیدین والا حدیث هم دې کوم چه سالم مرفوعا او نافع موقوفاً روایت کړې دې. و حدیث سالم اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

[۳۴۳۵] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ كَهَيْلٍ، حَدَّثَنِي مَنْ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ بَاعَ عَبْدًا، وَلَهُ مَالٌ فَمَالُهُ لِلْبَائِعِ إِلَّا أَنْ يَشْتَرِطَ الْمُبْتَاعُ".

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلي دي: څوك چه داسې غلام خرڅ كړي چه مال ورسره وي نو خرڅونكي ددې حقدار دي مگر هله چه خريدار شرط لگولي وي.

### باب فِي التَّلْقَى

بازارته دراتلونو نه مخكښې د سوداګرو سره د ملاویدو بیان

[۳۴۳۶] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "لَا يَبِعُ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضٍ، وَلَا تَلْقُوا السَّلَامَ حَتَّى يَهْبِطَ بِهَا الْأُسْوَاقُ".

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلي دي څوك دي د چاپه سودا باندې سودا نه كوي (يعنی يو خريدار دي دبل خريدار په سودا كښې كار نه لري او سودا دي كامل كيدو ته پريږدي) او ترڅو پورې چه تاجر بازارته خپل مال نه وي راوړې د دينه مخكښې ورسره سودا كول منع دي.

### د مسئله الباب تشریح مع اختلاف ائمة :

د تلقی نه مراد تلقی الجلب دې لکه چه د باب په حدیث ثانی کښې دی ﴿ نهی عن تلقی الجلب ﴾ جلب مصدر په معنی د مجلوب یعنی هغه سامان چه هغې لره د کلی نه ښهر ته د خرڅولو او تجارت دپاره راوړلې شی او تلقی په معنی د استقبال، لهذا مطلب دا شو چه کوم مال باندې چیان د کلونه د ښهرونو منډی ته د خرڅولو دپاره راوړی، که د ښهر یو فرد د هغه راتلونکي قافلې استقبال د هغه ښهر ته د رسیدو نه مخکښې او کړی او هغه سامان هم هلته په لاره کښې واخلي منډی ته رسیدو ته ئې نه پریږدی نو رسول الله صلی الله علیه و آله د دې نه منع فرمائیلي ده. د جمهورو په نزد تلقی رکبان مطلقاً ممنوع دې او په دې کښې اختلاف دې چه حرام دې که مکروه، او ابن المنذر د احنافو مذهب دا نقل کړې دې چه د هغوی په نزد بغیر د کراهت نه جائز دې خو په دې باندې حافظ تعقب کولو سره فرمائیلي دي چه په کتب د احنافو کښې خو دا دی چه تلقی په دوه صورتونو کښې مکروه دې، یو دا چه اهل بلد ته د هغې نه ضرر رسیږی، یا دا چه د دې ښهر والا د طرف نه تللیس سعر او مندلې شی، یعنی هغه غلط بیانی او کړی او دې قافلې ته د بازار صحیح قیمت بیان نه کړی بلکه د هغې نه ئې ورته کم یاد کړی آه حافظ صحیح فرمائیلي دي چه د احنافو په نزد نه تلقی مطلقاً مباح ده

(۱): تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۳۱۷۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۰۱/۳) (صحیح)

(۲): صحیح البخاری/البیوع ۷۱ (۲۱۶۸)، صحیح مسلم/البیوع ۵ (۱۵۱۷)، سنن النسائي/البیوع ۱۸ (۴۵۰۷)، سنن ابن ماجه/التجارات (۲۱۷۹)، (تحفة الأشراف: ۸۳۲۹، ۸۰۵۹)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/البیوع ۴۵ (۹۵)، مسند احمد (۹۱، ۶۳، ۲۲، ۷/۲) (صحیح)



او نه مطلقا مکروه لکه چه د جمهورو په نزد ده بلکه هم په دې دوه صورتونو کښې کراهت دې گڼي نشته کما فی البذل عن الهدایة وابن الهمام.

[۳۴۳۷] (۱) حَدَّثَنَا الرَّبِيعُ بْنُ نَافِعٍ أَبُو تَوْبَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ يَعْنِي ابْنَ عَمْرِو الرَّقِيِّ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ ابْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ تَلْقَى الْجَلْبِ فَإِنْ تَلَقَّاهُ مُتَلَقٍ مُشْتَرٍ، فَاشْتَرَاهُ، فَصَاحِبُ السَّلْعَةِ بِالْخِيَارِ إِذَا وَرَدَتِ السُّوقُ"، قَالَ أَبُو عَلِيٍّ: سَمِعْتُ أَبَا دَاوُدَ، يَقُولُ: قَالَ سُفْيَانُ: لَا يَبِعُ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضٍ، أَنْ يَقُولَ: إِنَّ عِنْدِي خَيْرًا مِنْهُ بِعَشْرَةٍ.

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله بازار ته دراوتلونه مخکښې د مال اخستلونه منع فرمائيلې ده او څوک چه مخکښې لاړ شي او مال واخلي (يعنی په کم قیمت، نودغلي مالک لره اختيار دې بازار ته دوتلو پوري. امام ابوداود فرمائی چه سفیان وئيلي دی په تاسو کښې دي يوکس ديوکس په سودا باندې دي سودانه کوي يعنی داسې به نه وائی چه زماسره د دينه بهتره سوداده او په لس روپۍ ده.

﴿فان تلقاه متلق مشتراً فاشتره فصاحب السلعة بالخيار اذا وردت السوق﴾ يعنی که يو انسان د دې راتلونکې قافلې نه يو څيز واخلي نو ښه رته د رسيدو نه پس صاحب سلعة يعنی بائع ته يه د رجوع عن البيع اختيار وی، د دې خيار رجوع اکثر علماء کرام قائل نه دی سوا د شافعي رحمته الله نه فانه اثبت الخيار للبائع قولاً بظاهر الحديث قاله الخطابي، د باب رومبي حديث کښې ﴿لَا يَبِعُ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضٍ﴾ مذكور دی په دې باره کښې د امام سفیان ثوري رحمته الله کلام مصنف رحمته الله نقل فرمائی ﴿قال ابوداود قال سفیان﴾ يعنی د بيع على بيع اخيه چه د هغې په حديث کښې معانعت دې سفیان رحمته الله د هغې تفسير کوی.

### د بيع على بيع اخيه، وضاحت:

چه دوه سړي په خپل مينځ کښې د اخستلو او خرڅولو خبره اوکړی نو په مينځ کښې ورته دريم سړي دا اوائی مشتري ته چه زه په دې ثمن کښې دا څيز د دې نه غوره تاته درکولې شم خو دا کراهت په هغه وخت کښې دې چه د اصل بائع او مشتري بيع کولو نه پس په څه مقدار ثمن باندې استقرار شوې وی، او ترڅو پورې چه استقرار نه وی شوې بلکه د کمی او زیاتۍ خبره شروع وی نو بيا د دې گنجائش شته، بيع على بيع اخيه کوم چه په حديث کښې راځی د دې شرح تفصيلاً په کتاب النکاح کښې ﴿لا يخطب على خطبة اخيه الحديث﴾ د لاندې تيره شوې ده ﴿فارجع اليه لو شئت﴾ وحديث ابن عمر رضي الله عنهما اخرجه البخاري ومسلم والنسائي وابن ماجة مختصراً ومطولاً، وحديث ابی هريرة رضي الله عنه اخرجه مسلم والترمذي والنسائي، قاله المنذري.

۱: سنن الترمذي البيوع (۱۲۲۱، ۱۲۲۳)، (تحفة الأشراف: ۱۴۴۸)، وقد أخرجه: صحيح مسلم البيوع ۵ (۱۵۱۹)، سنن النسائي البيوع ۱۶ (۴۵۰۵)، سنن ابن ماجة/التجارات ۱۶ (۲۱۷۹)، مسند احمد (۲/ ۲۸۴، ۴۰۳، ۴۸۸)، سنن الدارمي البيوع ۳۲ (۲۶۰۸) (صحيح)

## باب فی النہی عن النجش

د نجش (یعنی نورو اخستونکو ته د دھوکې ورکولو دپاره نرخ زیاتولو) د ممانعت بیان

[۳۴۳۸] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَمْرٍو بْنِ السَّرِّجِ، حَدَّثَنَا سَفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تَنَاجَشُوا".

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله وسلم فرمائي دي: چې نجش مه کوي (نجش دي ته. وائی چې دیوي سودا اخستل دخریدار مقصود نه وي بلکه صرف نرخ زیاتول اودوکه ورکول ئې غرض وي)

### د مسئلة الباب تشریح عند الفقهاء :

د نجش (۲) مطلب دا دي چې د يو خيز د اخستونکي مخکښې زيات قيمت اولگولې شي سره د دي چې د اخستلو اراده ئې هم نه وي چې هغه اخستونکې د دي خيز په ثمن کښې اضافه اوکړي، په دي حديث کښې د دي ممانعت دي. « لا تناجشوا » ځکه چې دا د هوكه ده خو په بدائع کښې ليکلې شوې دي چې د نجش کراهت په هغه صورت کښې دي چې کله مشترې هغه سامان لره د ثمن په مثل باندې اخلي يعنی پوره قيمت لگولو سره، او که هغه دي خيز لره اخستل غواړي د ثمن مثل نه په کم باندې تنو په دي صورت کښې څوک نجش اوکړي چې هغه خريدار دا خيز په ثمن مثل باندې واخلي يعنی په بازار کښې چې کوم د هغه خيز قيمت وي نو بيا دا نجش مکروه نه دي، اگر چې د ناجش اراده د اخستلو نه وي. آه (بذل) او امام نووي رحمته الله عليه فرمائي چې نجش بالاجماع حرام دي او بيع صحيح ده او منعقد کيږي او گناه د ناجش سره خاص ده که دا نجش بغير د علم د بائع نه وي، او که د دواړو په موافقت او سازش سره وي نو بيا به دواړه گناهگار وي، او د امام مالک رحمته الله عليه يو روایت دا دي چې د نجش په صورت کښې بيع باطل ده هغوی نهی لره مقتضي د فساد منلې ده. (عون)

والحديث أخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجة مختصراً، قاله المنذرى

## باب فی النہی أن یبیع حاضر لباد

د باندېچي دپاره دي بنهر والا سودا نه خرڅوي

حاضر يعنی حضري، بنهر والا، باد په معنی د باندېچي او کلی وال

[۳۴۳۹] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ ثَوْرٍ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ،

(۱): صحيح البخاري/البيوع ۵۸ (۲۱۴۰)، صحيح مسلم/النكاح ۶ (۱۴۱۳)، والبيوع ۴ (۱۵۲۰)، سنن الترمذي/البيوع ۶۵ (۱۳۰۴)، سنن النسائي/البيوع ۱۲ (۴۴۹۲)، سنن ابن ماجة/التجارات (۲۱۷۴)، (تحفة الأشراف: ۱۳۱۲۳)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/البيوع ۴۵ (۹۶)، مسند احمد (۳۳۸/۴، ۳۵۴، ۳۹۴، ۴۰۲، ۴۱۰) (صحيح)

(۲) النجش بفتحين وروي النجش بالسكون، اصله من نجش الصيد وهو اثارته (مغرب ملخصاً) من هاشم محمد عوامه، وفي البذل قال النووي رحمته الله عليه النجش بسكون الجيم ان يزيد في الثمن لا لرغبته بل ليخدع غيره

(۳): صحيح البخاري/البيوع ۶۸ (۲۱۵۸)، ۷۱ (۲۱۶۳)، الإجارة ۱۴ (۲۲۷۴)، صحيح مسلم/البيوع ۶ (۱۵۲۱)، سنن النسائي/البيوع ۱۶ (۴۵۰۴)، سنن ابن ماجة/التجارات ۱۵ (۲۱۷۷)، (تحفة الأشراف: ۵۷۰۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۳۸۱) (صحيح)



قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَبِيعَ حَاضِرٌ لِبَادٍ، فَقُلْتُ: مَا يَبِيعُ حَاضِرٌ لِبَادٍ؟ قَالَ: لَا يَكُونُ لَهُ بَيْعٌ سَرًّا".

دعبد الله بن عباس رضي الله عنه نه روايت دي فرماني چه نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائيلي ده ددينه چه یونبار والا سري د باند چي دپاره سوداخرخه کړي، ماعرض اوکړوددي خه مطلب دي؟ نبی صلی الله علیه و آله اوفرمائيل دهغه دلالي دي نه کوي.

قوله: ﴿ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَنْ يَبِيعَ حَاضِرٌ لِبَادٍ ﴾

### د مسئله الباب تشریح :

وراندې په روايت کښې دي چه شاگرد د استاد نه تپوس اوکړو چه د دي حديث خه مطلب دي نو هغوی اوفرمائيل مطلب دا دي چه د ښهر سري لره د کلی وال دپاره دلال جوړيدل نه دي پکار، کلی وال چه د کلی نه کوم مال ښهر ته د خرخولو دپاره راوړي نو چونکه په ښهر کښې د هغوی د قيام باقاعده خائي نه وي نو هغوی دي خيز لره بسعر اليوم خرڅ کړي او لاړ شي، يعنی د هغه خيز چه هغه ورځ په منډي کښې کوم نرخ وي په هغې سره، او چونکه په منډي کښې د خيز نرخ کميږي زياتيږي په دي وجه يو ښهر والا خپل پيژندگلو کلی وال ته دا اووايي چه ته خپل سامان ماسره کيږده په کومه ورځ باندې چه د منډي نرخ مناسب وو په هغه ورځ باندې به زه دا ستا د طرف نه خرڅ کړم نو په هغې کښې اگر چه د دي کلی وال خو فائده ده خو د عامو خلقو نقصان دي په دي وجه شريعت په دي انفرادي فائده باندې اجتماعي فائدي لره ترجيح ورکولو سره د داسې کولو نه منع اوفرمائيله پس د باب په آخری حديث کښې راځي ﴿ لَا يَبِيعُ حَاضِرٌ لِبَادٍ وَذَرُوا النَّاسَ يَرْزُقُ اللَّهُ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ ﴾ يعنی دا کلی وال پريږدي او څنگه چه هغوی معامله په خپله کوي د ښهر والو سره ارزانه يا گرانه هر څنگه چه وي پريږدي چه اوکړي، الله پاک د يو نه بل ته فائده رسوي.

### په مسئله الباب کښې مذاهب د ائمه :

اوس پاتې شوه دا خبره چه دا ممانعت په کوم صورت کښې دي د جمهورو مسلک دا دي چه کراهت مطلقا دي په دي شرط چه هغه خيز د خلقو عام حاجت او ضرورت وي، او په شرط د علم بالنهي، او د احنافو په نزد يو خو شرط هم دغه دي چه کوم خيز داسې وي چه هغې ته اهل مصر محتاج وي، او دويمه دا چه زمانه د گراني وي (عندنا مختص بزمان الغلاء وبما يحتاج اليه اهل مصر)

### (د امام بخاري رحمه الله مسلک)

دريم مذهب د امام بخاري رحمه الله وغيره دي چه دا کراهت او نهی په دي صورت کښې ده چه کله د ښهر والا دا کار په مزدوري باندې اوکړي (کمیشن) والا فلا يکړه، وقال النبي صلی الله علیه و آله اذا استنصح احدکم اخاه فليصح له، ورخص فيه عطاء، شارحينو د امام بخاري رحمه الله مسلک هم دا ليکلي دي چه کراهت د اجر په صورت کښې دي گيني بيا په دي کښې هيڅ کراهت نشته، بلکه هغه خو د باب د نصيحت نه دي، خو د اجرت اخستلو په صورت کښې نصيحت نشته بلکه خود غرضي ده. والحديث اخرجه البخاري ومسلم والنسائي وابن ماجه، قاله المنذري

[۳۴۴۰] (۱) حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ الزُّبَيْرِ قَالَ أَبَاهُمَا حَدَّثَهُمْ، قَالَ زُهَيْرٌ: وَكَانَ ثِقَةً، عَنْ يُونُسَ، عَنِ الْحُسَيْنِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "لَا يَبِيعُ حَاضِرُ لِبَادٍ، وَإِنْ كَانَ أَخَاهُ أَوْ أَبَاهُ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: سَمِعْتُ حَفْصَ بْنَ عُمَرَ يَقُولُ: حَدَّثَنَا أَبُو هَلَالٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: كَانَ يُقَالُ لَأَبِيهِمْ حَاضِرُ لِبَادٍ، وَهِيَ كَلِمَةٌ جَامِعَةٌ لَأَبِيهِمْ لَهُ شَيْئًا، وَلَا يَبْتَاعُ لَهُ شَيْئًا.

دا دانس بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلى دی د باندې چی دپاره دي دښار والاسودا نه خرخوی اکرکه دده ورور یا پلاروي. امام ابوداؤد وائی دحفص بن عمر نه مې اوریدلی دی وئیل ئې چه ماته حدیث بیان کړې دې ابو هلال هغه د محمد نه اوریدلی دی او هغه انس بن مالک رضی اللہ عنہ نه چه فرمائیلى ئې خلقيب وئیل چه دار د باندې چی دپاره دي ښار والاسودا نه خرخوی، یو جامع کلام دې دده دپاره به نه څه شې خرخوی اونه به دده دپاره خریداری کوی.

[۳۴۴۱] (۲) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ سَالِمِ الْمَكِّيِّ، أَنَّ أَعْرَابِيًّا حَدَّثَهُ، أَنَّهُ قَدِيمٌ مَحْلُوبَةٌ لَهُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَنَزَلَ عَلَى طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ، فَقَالَ: "إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى أَنْ يَبِيعَ حَاضِرُ لِبَادٍ، وَلَكِنْ أَذْهَبَ إِلَى السُّوقِ فَأَنْظُرَ مَنْ يَبَايِعُكَ، فَشَاوَرَنِي حَتَّى أَمَرَكُ أَنْ أَهْمَكَ".

د سالم مکي نه روایت دې فرمائی چه یو باندې چی راته وئیلی دی دښې رضی اللہ عنہ په زمانه کښې مې یوه النکه اوبښه یاد تجارت سامان راوړو او طلحه بن عبید الله رضی اللہ عنہ ته لارم هغه راته او وئیل چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم د باندې چی دپاره د ښاری د سودا خرخولونه منع فرمائیلي ده، پخپله بازار ته لاړ شه هلته به اوگوري چه څوک درسره داخستلو او خرخولو معامله کوي، بیابه زمانه مشهوره واخلي زه به درته اووایم چه خرڅ ئې کړه پائې مه خرڅوه (مگردانښي کیدې چه زه درسره لارشم اوستا دپاره دلال جوړشم).

قوله: (عَنْ سَالِمِ الْمَكِّيِّ أَنَّ أَعْرَابِيًّا حَدَّثَهُ أَنَّهُ قَدِيمٌ مَحْلُوبَةٌ لَهُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَنَزَلَ عَلَى طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ الْخ) یعنی یو اعرابی خپله واقعه بیان کړه چه هغه خپله یوه پي ورکونکي اوبښه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په زمانه کښې د باندې نه ښهر ته راوستله، او د طلحه بن عبید الله رضی اللہ عنہ سره کوز شو (او هلته په کوزیدو کښې د دې باندې چی مقصد دا وو چه فورا دا اوبښه منډئ ته بوتلو سره د خرخولو په ځانې د هغوی کره ولاړه وی او دې په خپل اختیار څه مناسب موقع باندې چه کله د دې خرخول او غواړی بازار ته بوتلو سره خرڅه کړی، خو طلحه رضی اللہ عنہ د دې دپاره تیار نه شو او وې فرمائیلى چه گوره روره رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د بیع الحاضر للبادی نه منع فرمائیلي ده لهذا ته خپله دا بازار ته بوځه بیا چه د چا په لاس باندې ستا د خرخولو رائې وی راشه او ما سره مشوره اوکړه، د دې نه زیات زه نه شم کولې. وحديث جابر رضی اللہ عنہ آخر احادیث الباب اخرجه مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجة، قاله المنذرى

<sup>۱</sup>: (سنن النسائي/اليبوع ۱۵ (۴۴۹۷)، (تحفة الأشراف: ۵۲۵، ۱۴۵۴)، حديث حفص بن عمر قد أخرجه: صحيح البخاري/اليبوع ۷۰ (۲۱۶۱)، صحيح مسلم/اليبوع ۶ (۱۵۲۳)، وحديث زهير بن حرب قد أخرجه (صحيح) <sup>۲</sup>: (تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۵۰۱۹) (ضعيف الإسناد)



[۳۴۴۲] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا يَبِعُ حَاضِرٌ لِيَا، وَذَرُوا النَّاسَ يَرْزُقُ اللَّهُ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ".

د جابر بن عبد الله رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلى دی دباندې چی دپاره دي بنارو الاسودانه خرخوی، او خلق پریردئ چه الله تعالی بعضوته دبعضوپه ذریعه رزق ورکړی.

### بَابُ مَنْ اشْتَرَى مُصْرَاةً فَكَرَّهَا

که چرې څوک لنجه چیلې یو وخت ونه لوشی او خرڅه یې کړی نو خریدار به څه کوی؟

[۳۴۴۳] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُسْلِمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الْأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "لَا تَلْقُوا الرُّكْبَانَ لِلْبَيْعِ، وَلَا يَبِعُ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضٍ، وَلَا تُصَرُّوا الْإِبِلَ وَالْقَنَمَ، فَمَنْ ابْتَاعَهَا بَعْدَ ذَلِكَ فَهُوَ بِخَيْرِ النَّظَرَيْنِ، بَعْدَ أَنْ يَحْلِبَهَا فَإِنْ رَضِيَهَا أَمْسَكَهَا، وَإِنْ سَخِطَهَا رَدَّهَا وَصَاعًا مِنْ تَمْرٍ".

د ابوهريره رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلى دی د سوداگرو د قافلو مخوته مه ورځئ (دارزان اخستلو اوگران خرڅولو دپاره) او یو څوک دي دبل چاپه سودا سودانه کوي او داوښو اوچیلو په غلانه څوکښې شوده مه جمع کوي، او څوک چه داسې اوښه یاچیلئ واخلې نو هغه ته دپیو ویستلونه پس دقبول کولو او واپس کولو اختیار دې که چرې خوښه ئې وي نو ساتلې شي او که واپس کول غواړي نو دیو صاع کجوروسره دي واپس کړي.

﴿ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- قَالَ ..... وَلَا تُصَرُّوا الْإِبِلَ وَالْقَنَمَ فَمَنْ ابْتَاعَهَا بَعْدَ ذَلِكَ فَهُوَ بِخَيْرِ النَّظَرَيْنِ بَعْدَ أَنْ يَحْلِبَهَا فَإِنْ رَضِيَهَا أَمْسَكَهَا وَإِنْ سَخِطَهَا رَدَّهَا وَصَاعًا مِنْ تَمْرٍ او دې نه روستو طریق کښې داسې دی ﴿ فَهُوَ بِالْخِيَارِ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ﴾ او وړاندې دی ﴿ رَدَّهَا وَصَاعًا مِنْ طَعَامٍ لَا سَمَرَاءَ ﴾ او د هغې نه روستو په حدیث د ابن عمر رضی اللہ عنہما کښې دی ﴿ فَإِنْ رَدَّهَا رَدَّ مَعَهَا مِثْلَ أَوْ مِثْلَى لَبَنَيْهَا قَمَحًا ﴾

### د حدیث المصراة شرح او په دې باندې کلام من حیث الفقه :

په دې باب کښې یو اهم او مشهور اختلاف مسئله ذکر شوې ده یعنې مسئله د بیع المصراة، مصراة د اسم مفعول صیغه ده د تصریه نه چه د هغې لغوی معنی حبس ده یعنې (بندول) او په عرف کښې وائی په غلانه کښې پئ بندولو ته، چه د هغې شرح دا ده چه بعض خلق چه کله د پیو والا یو څاروې خرڅول غواړی نو هغوی دا حرکت کوی چه په اراده د بیع سره یو دوه ورځې مخکښې د هغې پئ لوشل بند کړی چه پئ د هغې په غلانه کښې نو هغه مشتری دا گنړی چه دا څاروې ډیر زیات پئ ورکونکې دې او هغه هم په دې گنړلو باندې اخلی بیا چه کله هغه کور ته راوستلو سره او ترې نو یو ورځ دوه پس د هغه په پیو کښې کمې راشی نو هغه پریشانه شی او هغه ته د بائع د هوکې ورکولو علم اوشی داسې

۱: صحیح مسلم/البیوع ۶ (۱۵۲۲)، (تحفة الأشراف: ۲۷۲۱)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/البیوع ۱۳ (۱۲۲۳)، سنن النسائي/البیوع ۱۵ (۴۵۰۰)، سنن ابن ماجه/التجارات ۱۵ (۲۱۷۷)، مسند احمد (۳۷۹/۲، ۴۶۵) (صحیح)  
 ۲: صحیح البخاري/البیوع ۶۴ (۲۱۵۰)، صحیح مسلم/البیوع ۴ (۱۵۱۵)، سنن النسائي/البیوع ۱۵ (۴۵۰۱)، سنن ابن ماجه/التجارات ۱۳ (۲۱۷۲)، (تحفة الأشراف: ۱۳۸۰۲)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/البیوع ۱۳ (۱۲۲۳)، موطا امام مالك/البیوع ۴۵ (۹۶)، مسند احمد (۳۷۹/۲، ۴۶۵) (صحیح)

څاروی ته په عرف کښې مصرّاة وئیلې شی، اوس دا چه په دې قسم معامله کښې څوک اخته شی نو د هغې حل او حکم څه دې په حدیث الباب کښې دا دی چه په داسې صورت کښې هغه ته دواړه اختیاره دی که دې څاروی لره په دې موجوده حالت کښې ساتل غواړی نو او دې ساتی، او که واپس کول غواړی نو واپس دې کړی، او په یو روایت کښې په دې کښې د درې ورځو قید دې چه په درې ورځو کښې دننه دننه ئې واپس کولې شی نو واپس دې کړی، او په یو روایت کښې په دې کښې د درې ورځو قید هم دې چه په درې ورځو کښې دننه دننه ئې واپس کولې شی د دې نه پس نه، دا پکښې هم ده چه کله دا مصرّاة واپس کړی نو د دې سره دې یو صاع د تمر هم واپس کړی.

### مذاهب د ائمه :

په دې حدیث باندې د ائمه ثلاث او امام ابو یوسف رحمته الله عمل دې دا حضرات تصریه عیب گنړی او د عیب په صورت کښې چونکه خیار درکولو کیږی په دې وجه دلته هم د رد خیار منی طرفین یعنی امام ابو حنیفه او امام محمد رحمته الله وفی روایه لمالک ایضا: تصریه عیب نه دې ځکه چه د دې تعلق د ذات د مبیع سره نه دې بلکه وصف د مبیع سره دې، لهذا د تصریه د وجې نه به خیار رد نه حاصلیږی، بله دا چه خیار عیب د درې ورځو سره نه شی مقید کولې بلکه مطلقاً وی او دلته په حدیث کښې درې ورځو سره مقید دې چه په درې ورځو کښې ئې رد کولې شی روستو نه، بهر حال آخافو په دې حدیث باندې عمل نه دې کړی.

### حدیث المصرّاة د اصولو مخالف دې د اتو وجوه نه :

علامه عینی رحمته الله فرمائی «واقوی وجوه فی ترک العمل بها مخالفتها للاصول من ثمانية اوجه، یعنی د اخافو په دې حدیث باندې د عمل نه کولو وجه دا ده چه دا حدیث د اصولو او د قواعدو کلیو خلاف دې د اتو وجوه نه، بیا هغوی دغه وجوه ثمانیه په تفصیل سره بیان کړل، د علامه عینی دا پوره کلام په بذل المجهود کښې موجود دی، بعض د هغه وجوه نه دادی چه په دې حدیث کښې د صاع من تمر ورکولو حکم دې نو ښکاره خبره ده چه دا د هغه [۳۴۴۳] پیو عوض دې کوم چه مشتری خپل ځانې ته راوستلو سره رالوشلی دی، یعنی د هغې تاوان دې، خو په ضمان کښې خو مماثلت ضروری دې لقوله تعالی: «وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ» چه د هغې نه معلومیږی چه د ضمان دپاره ضروری ده چه هغه دې بالمثل وی، او د مثل دوه قسمونه دی مثل صوری کوم چه په ذوات الامثال کښې کیدې شی «او لبن په ذوات الامثال کښې دې، او دویم مثل معنوی، یعنی قیمت کوم چه ذوات القیم وی لکه حیوانات وغیره، او صاع تمر خو نه مثل صوری دې او نه مثل معنوی، بله دا چه دلته رد صاع کوم چه د ضمان په طور دې هغه کیدل نه دی پکار ځکه چه قاعده منصوصه دا ده «الغرم بالغنم، الخراج بالضمان» یعنی فائده هم د هغه وی چه په چا باندې ضمان واجب وی، او دلته دا حیوان یعنی مصرّاة په ضمان د مشتری کښې وو چه په دې دوران کښې چه هغه څاروی هلاک شی نو ظاهره ده چه د دې ضامن به مشتری وی لهذا په دې صورت کښې د دې ځناور چه نفع او ثمره دې یعنی پیو هغه هم د مشتری دپاره کیدل پکار دی بیا به په هغه باندې ضمان ولې واجب وی، په دې



حديث كنبې دې (ردھا وصاعا من تمر) د ظاهر حديث تقاضه ده چه صاع د تمر د هر مصرأة په مقابلې كنبې دې كه يو وي يا زيات، خو اكثر هغه حضرات كوم چه په حديث د مصرأة باندې د عمل قائل دي د هغوی مسلک دا دې چه هر يوه بيزه يا چه كوم هم خاروې وي مصرأة به د هغې په بدله كنبې يو يو صاع وي، د مصرأة د عدد مطابق، لكه بعض شوافع لكه ابو الحسن ماوردی د هغوی په نزد دا حكم مطلق مصرأة دپاره دې كه يو وي او كه د هغې نه زيات وي، (من شاة وكذا من الف شاة) په دې حديث كنبې دې (صاعا من طعام لا سمراء) چه د هغې مطلب دا دې چه هغه صاع د غنمو نه دی كيدل پكار د دې نه علاوه د بل خوراك خيز به وي، علامه شوكانی رحمته الله فرمائی (وينبغي ان يحمل الطعام على التمر المذكور في اكثر الروايات) بيا وړاندې هغه ليكي چونكه د طعام متبادر معنی غنم وو په دې وجه راوی د هغې نفی او كړه بقوله (لا سمراء) خود دې نه روستوروايت كنبې راخی (رد معها مثل او مثلى لبنها قمحا) په دې دواړو كنبې تعارض ظاهر دې چه په رومبي حديث كنبې د غنمو نفی وه او په دې كنبې اثبات، قلت اجاب عنه الحافظ بان اسناد هذا الحديث ضعيف، قال وقال ابن قدامة انه متروك الظاهر بالاتفاق، قال المنذرى، واخرجه ابن ماجة، وقال الخطابى وليس اسناده بذاك آه من العون، معلومه شوه چه دا دويم روايت د ابوداؤد نه علاوه صرف د ابن ماجة دې، او هغه روايت چه په هغې كنبې (لا سمراء) راغلي دې. هغه د صحيح مسلم روايت دې.

اهل اصول ليكلي دي چه حديث المصرأة خبر واحد دې، او په خبر واحد باندې د عمل شرط دا دې چه هغه د اصول خلاف نه وي، او حديث المصرأة خلاف الاصول دې اگر چه سنداً ثابت او صحيح دې، ځكه چه دا حديث د صحيحينو بلكه د صحاح سته روايت دې او د حضرت اقدس گنگوهی په افادات درسيه كنبې كوم لره چه زمونږ د شيخ والد مولانا محمد يحيى كاندهلوی نور الله مرقده قلم بند كړې دې، او كوم چه سهارنپوري دلتنه په بذل المجهود كنبې نقل فرمائيلى دې، د دې حاصل دا دې چه دا روايات د احنافو په نزد د خپل موارد سره خاص دي، د قواعد كلييه او د نورو نصوصو د خلاف كيدو د وجې نه، او كلمه د من كومه چه په دې رواياتو كنبې ده د هغې دپاره عموم جنسى يا نوعى لازم نه دې، ډير كرتنه دا لفظ په قضيه شخصيه كنبې مستعمل كيږي ځكه چه په خپل مقام باندې دا خبره ثابته ده چه اسم موصول ډير كرتنه د عهد دپاره هم استعماليږي لكه چه د عموم دپاره استعماليږي، او امام شافعى رحمته الله اگر چه د دې خبرې اقرار كوي چه دا روايات مخالف دي د كلياتو ملخصاً خود هغوی رائي دا ده چه دا روايات عام دي د خپل مورد سره خاص نه دي. آه

[۳۴۴۴] (١) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، وَهَشَامٍ، وَحَبِيبٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ اشْتَرَى شَاةً مُعْرَاةً فَهُوَ بِالْخِيَارِ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِنْ شَاءَ رَدَّهَا

(١): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ١٤٤٣١، ١٤٥٦٦)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/البيوع ٦٤ (٢١٤٩)، ٦٥ (٢١٥١)، صحيح مسلم/البيوع ٧ (١٥٢٥)، سنن الترمذي/البيوع ٢٩ (١٢٥٢)، سنن النسائي/البيوع ١٤ (٤٤٩٤)، سنن ابن ماجة/التجارات ٤٢ (٢٢٣٩)، موطا امام مالك/البيوع ٤٥ (٩٦)، مسند احمد (٢٤٨٧٢، ٣٩٤، ٤٦٠، ٤٦٥)، سنن الدارمي/البيوع ١٩ (٢٥٩٥) (صحيح)

وَصَاعًا مِنْ طَعَامٍ لَا سَمْرَاءَ".

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه نبی عليه السلام فرمائیلی دی چاچه تصریه شوي (غلانزني دڅوورځونه ډکه وي، چیلی واخستله نودغه کس ته د درې ورځو پورې اختیار دې دواپس کولوياد ساتلو خوددې سره به یو صاع خوراک ورکوي نه غنم.

[۳۴۴۵] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ التَّمِيمِيُّ، حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ يَعْنِي ابْنَ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، حَدَّثَنَا زَيْدٌ، أَنَّ ثَابِتًا مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زَيْدٍ، أَخْبَرَهُ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ اشْتَرَى غَنَمًا مَصْرَاءً اخْتَلَبَهَا فَإِنْ رَضِيَهَا أَمْسَكَهَا، وَإِنْ سَخِطَهَا فَبِئْسَ صَاعٌ مِنْ تَمْرٍ".

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه نبی عليه السلام فرمائیلی دی چاچه تصریه شوي (غلانزني دڅوورځونه ډکه وي، چیلی واخستله نودغه کس ته اختیار دې که چرې خوبښه شي نو ساتلی شي او که چرې خوبښه شي نه وي نوددې دلولوپه عوض کښي به یو صاع کجوري ورکوي.

[۳۴۴۶] (۲) حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا صَدَاقَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ جُمَيْعِ بْنِ عُمَيْرٍ التَّمِيمِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ ابْتَاغَ مُحَقْلَةً فَهُوَ بِالْخِيَارِ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ، فَإِنْ رَدَّهَا رَدَّ مَعَهَا مِثْلٌ أَوْ مِثْلِي لَبْنَهَا قَبْحًا".

د عبداللہ بن عمر نه روايت دې فرمائی چه نبی عليه السلام فرمائیلی دی چاچه ډکه کړې شوي غلانزي والا چیلی واخستله نوده ته ددریو ورځو پورې اختیار دې که چرې واپس کوی شي نو چه څومره پی شي ور نه لوشلي وي نو دهغي په برابر یا دهغي دوچنده غنم به ورسره واپس کوي.

## بَابُ فِي النَّهْيِ عَنِ الْحُكْرَةِ

د ذخیره اندوزی کولو بیان

حکرة او حكرة او احتکار د دې ټولو لغوی معنی د جمع او امساک ده، یو څیز لره بندول

د احتکار حقیقت او تعریف :

د احتکار چه په کوم حدیث کښي ممانعت دې د هغي تعریف امام نووی رحمته الله علیه دا لیکلي دي چه غلې لره د گرانې په زمانه کښي د تجارت په نیت باندي اخستلو سره ږدل او فی الحال هغه نه خرڅول د نورې گرانې په انتظار چه پیسې زیاتې حاصل شي، او ممانعت په دې صورت کښي دې چه کله دې غلې لره په خپل ښهر کښي اخستلو سره منع کړي، او که د بل ځایي نه شي اخستلو سره راوړې وی یا شي ارزان اخستلې وی او بیا هغه بند کړي د گرانې په زمانه کښي د خرڅولو دپاره، نو په دې کښي هیڅ گناه نشته، او په بدائع کښي لیکلي دي چه احتکار دا دې چه د خپل ښهر نه غله اخستلو سره ږدل او هغه نه خرڅول سره د دې چه د ښهر خلقو ته د دې نه نقصان رسیږي او که لوښې ښهر وی چرته چه په داسې کولو باندي خلقو ته نقصان نه رسیږي نو دا احتکار ممنوع نه دي، هم دغه شان شي که د یوې لرې علاقې نه غله راوړي او په خپل ښهر کښي هغه راوړلو سره هغه منع کړي بیا به هم په دې

(۱): صحيح البخاري/اليبوع ۶۵ (۲۱۵۱)، (تحفة الأشراف: ۱۲۲۲۷)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/اليبوع ۷ (۱۵۲۴) (صحيح)

(۲): سنن ابن ماجه/التجارات ۴۲ (۲۲۴۰)، (تحفة الأشراف: ۶۶۷۵) (ضعيف)



کښې اعتکار نه وی، او که یو ښهر ته نزدې ئې د آبادي نه راوړلو سره چه د هغې غله دې ښهر ته راځي جمع کړي او ښهر هم وړوکې وی نو بیا به هم محتکر وی. دا خو د احتکار ممنوع تعریف شو.

### احتکار په کومو کومو څیزونو کښې منع دې:

دویمه مسئله دلته دا ده چه احتکار په کومو کومو څیزونو کښې ممنوع دې دا مسئله مشهوره اختلافی ده، د امام شافعی او امام احمد په نزد «ما فيه عيش الناس واقوات البشر» یعنی په کوم څیز باندې چه د انسان د ژوند بنیاد وی چه د هغې په خوړلو سره خلق عام طور سره ژوند تیروي، او د طرفین (امام ابوحنیفه او محمد) په نزد «ما فيه عيش الناس وعيش البهائم» یعنی د انسانانو او څاروو دواړو په غذا او خوراک کښ، او د امام مالک رحمته الله علیه په نزد «فی کل شی غیر الفواکه» او د امام ابو یوسف رحمته الله علیه په نزد «فی کل ما تعم الحاجة اليه» یعنی هغه ټول څیزونه چه د عام حاجت او ضرورت وی.

[۳۴۷] حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ بَقِيَّةَ، أَخْبَرَنَا خَالِدٌ، عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ عَطَاءٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ مَعْمَرِ بْنِ أَبِي مَعْمَرٍ أَحَدِ بَنِي عَدِيٍّ بْنِ كَعْبٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا يَحْتَكِرُ إِلَّا خَاطِئٌ"، فَقُلْتُ لِسَعِيدٍ: فَإِنَّكَ تَحْتَكِرُ، قَالَ: وَمَعْمَرٌ كَانَ يَحْتَكِرُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَسَأَلْتُ أَحْمَدَ، مَا الْحِكْمَةُ؟ قَالَ: مَا فِيهِ عَيْشُ النَّاسِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَالَ الْأَوْزَاعِيُّ: الْمُحْتَكِرُ مَنْ يَعْتَرِضُ السُّوقَ.

د معمر بن ابی معمر نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلى دی دنا فرمانو او گنهیگارونه علاوه بل څوک ذخیره اندوزي نه کوي ددې په اوریدلو سره، محمد بن عمرو او وئیل چه ماسعید بن مسیب ته عرض وکړو چه تا خو ذخیره اندوزی کوله، امام ابوداؤد فرمائی ماداحمد بن حنبل نه تپوس اوکړو چه ذخیره اندوزي څه شې دې؟ هغه او وئیل په کوم څیز باندې چه دخلقوژوند روان وي، امام اوزاعي وئیلی دی محتکر هغه چاته وئیلې شي چه غلې بازار ته د راتلونه منع کوي.

«قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- «لَا يَحْتَكِرُ إِلَّا خَاطِئٌ». فَقُلْتُ لِسَعِيدٍ فَإِنَّكَ تَحْتَكِرُ قَالَ وَمَعْمَرٌ كَانَ يَحْتَكِرُ» د سعید بن المسیب رحمته الله علیه شاگرد هغوی ته اووې چه تاسو د نهی عن الاحتکار حدیث بیانوی او تاسو خپله احتکار کوئ، هغوی جواب ورکړو چه زما استاد به هم احتکار کولو.

د هغوی مطلب دا وو چه احتکار په هر څیز کښې نه وی، امام ابوداؤد رحمته الله علیه فرمائی چه ما د امام احمد رحمته الله علیه نه تپوس اوکړو چه احتکار څه څیز دې نو هغوی جواب راکړو، «ما فيه عيش الناس» وړاندې مصنف رحمته الله علیه د امام اوزاعي نه نقل کوي «المحتكر من يعترض السوق» یعنی محتکر هغه سړې دې چه د خپل ښهر د بازار نه غله اخستلو سره کیږدی او که څوک د دې قسم څیزونه د بهر نه راوړلو سره په خپل ښهر کښې جمع کړي نو هغه احتکار نه دې.

(۱): صحيح مسلم / المساقاة ۲۶ (۱۶۰۵)، سنن الترمذي / البيوع ۴۰ (۱۲۶۷)، سنن ابن ماجه / التجارات ۶ (۲۱۵۴)، تحفة الأشراف: (۱۱۴۸۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳/ ۴۵۳، ۴۰۰/ ۶)، سنن الدارمي / البيوع ۱۲ (۲۵۸۵) (صحيح)

[۳۴۴۸] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنُ قِيَّاسٍ، حَدَّثَنَا أَبِي. وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ الْقَيَّاسِ، حَدَّثَنَا هَمَامٌ، عَنْقَادَةَ، قَالَ: "لَيْسَ فِي الثَّمَرِ حِكْرَةٌ"، قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى: قَالَ: عَنِ الْحَسَنِ فَقُلْنَا لَهُ: لَا تَقُلْ عَنِ الْحَسَنِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا الْحَدِيثُ عِنْدَنَا بِأَصْلٍ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: كَانَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، يَحْتَكِرُ النَّوَى وَالْخَبْطَ وَالْبَزْرَ. وَأَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، يَقُولُ: سَأَلْتُ سُفْيَانَ، عَنْ كَبَسِ الْقَتِّ، فَقَالَ: كَانُوا يَكْرَهُونَ الْحِكْرَةَ، وَسَأَلْتُ أَبَا بَكْرٍ بَنَ عِيَّاشٍ، فَقَالَ: الْكِبْسَةُ.

دقتاده رحمته الله نه روایت دې فرمائی چه په کجور و کښې. احتکار نشته، ابن مثنی هم دادحسن نه نقل کړي دي، محمد بن يحيى وئیلی دی چه مونږ ورته اووئیل چه داسې مه وایه چه دا حدیث حسن بصری نه مروی دې، امام ابوداؤد فرمائی دازوایت زمونږ په نردباندي باطل دې امام ابوداؤد فرمائی چه سعید بن مسیب به زړي ذخیره کول امام ابوداؤد فرمائی ماداحمد بن یونس نه اوریدلی دی چه وئیل ئې ما دسفيان نه دخاروو دچراه گاه په باره کښې تپوس اوکړو نو هغه راته په جواب کښې اووئیل چه سلفو داهم ښه نه دي گنډلي ماهم ددې خبرې تپوس ابوبکر بن عیاش نه وکړو هغه راته اووئیل چه ددې ساتل جائز دي (یعنی ددې په ذخیره اندوزي کولو کښې څه حرج نشته).

﴿ قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى قَالَ عَنِ الْحَسَنِ فَقُلْنَا لَهُ لَا تَقُلْ عَنِ الْحَسَنِ ﴾

د مصنف رحمته الله په دې حدیث کښې دوه استاذان دی محمد بن يحيى او محمد بن المثنی، او دهغوی دواړو استاد يحيى بن قياض دې، ددې نه پس سند داسې دې ﴿عَنِ هَمَامٍ عَنْ قَتَادَةَ﴾ نو مصنف رحمته الله فرمائی چه زما استاد محمد بن المثنی په دې سند کښې دقتاده نه پس، ﴿عَنِ الْحَسَنِ﴾ هم زیاتې کړو، نو مونږ هغوی ته اووې چه ﴿عَنِ الْحَسَنِ﴾ مه وایه، غالبا دا په دې وجه چه ﴿لَيْسَ فِي الثَّمَرِ حِكْرَةٌ﴾ د امام قتاده رحمته الله قول دي حسن د دې قائل نه دې.

﴿ قَالَ أَبُو دَاوُدَ كَانَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ يَحْتَكِرُ النَّوَى وَالْخَبْطَ وَالْبَزْرَ ﴾

امام ابوداؤد رحمته الله د دې ځانې نه د بعض علماء کرامو مذاهب نقل فرمائی په دې باره کښې چه احتکار په کومو څیزونو کښې ممنوع دې او په کومو څیزونو کښې نه پس فرمائی چه سعید بن المسیب د اونو د پانړو او د کهجورو د هډوکو او د نور قسمونو د تخم اختکار کولو یعنی دهغوی په نزد په دې کښې اختکار ممنوع نه وو.

وراندې په روایت کښې دی ﴿سَأَلْتُ عَنْ كَبَسِ الْقَتِّ﴾ یعنی د سفيان ثوري رحمته الله د نه خاروو د خوراک د احتکار په باره کښې تپوس اوشو نو هغوی جواب ورکړو ﴿كَانُوا يَكْرَهُونَ الْحِكْرَةَ﴾ چه دهغې غالبا مطلب دا دې چه او علماء په دې کښې هم احتکار ناجائز گنړی او په دې جمله کښې دا احتمال هم دې چه هغوی د کبس القت د حکم بیانولو نه ځان ساتلي وی په وجه د علم یقیني نه کیدو په دې وجه ئې مطلقا اوفرمائیل چه علماء کرام احتکار لره مکروه گنړی، مجمله شان خبره ئې اوکړه ﴿وسألت ابابكر بن عياش﴾ یعنی ما د ابوبکر بن عیاش نه هم د دې سوال اوکړو یعنی د کبس القت نو هغوی د دې جواب دا ورکړو چه او دا ساتلي شی.



## باب فی کسر الدراهم

د سګې د ماتولو بیان

[۳۴۴۹] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ، قَالَ: سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ قُصَّاءٍ يُحَدِّثُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تُكْسَرَ سِكَّةُ الْمُسْلِمِينَ الْجَائِزَةُ بَيْنَهُمْ، إِلَّا مِنْ بَأْسٍ".

علقمه بن عبد الله دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه نبی ﷺ منع فرمائیلي ده ددینه چه څوک د مسلمانانو سکه ماته کړي (کومه چه په مسلمانانو کښې رائج ري) مگر د ضرورت په وجه باندې پاک نشته.

قوله: (نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تُكْسَرَ سِكَّةُ الْمُسْلِمِينَ الْجَائِزَةُ بَيْنَهُمْ إِلَّا مِنْ بَأْسٍ) شرح الحديث:

يعني رسول الله ﷺ د هغه سګې چه د مسلمانانو تر مینځه ئې رواج وی د ماتولو نه منع فرمائیلي ده مگر دا چه څه ضرورت یا مجبوری وی، د دې منع په علت کښې مختلف اقوال دی وئیلې شوی دی چه چونکه په سکه کښې ډیر کرته د الله پاک نوم لیکلې شوې وی حروف وی، په دې کښې د هغې بې ادبی ده، او وئیلې شوی دی چه په دې کښې د مال ضائع کول دی ځکه چه د سګې قیمت زیات وی د مطلق سرو او سپینو زرو نه، او وئیلې شوې دی چه د کسر نه مراد ماتول نه دی بلکه د دراهمو او دنانیرو غاړې نرئ نرئ اخستل دی چه په کوم صورت د دراهم او دنانیر سره معامله عددا وی نو بعض د هغې غاړې داسې واخلی چه د هغې وزن کم کړی د غلا او د هوکې د وجې نه د دې نه منع فرمائیلي شوې ده. والحديث اخرجه ابن ماجة، قاله المنذرى

## باب فی التسعیر

د نرخ مقررولو بیان

تسعیر د سعر نه اخستلې شوې دې، یعنی د څیزونو نرخ او قیمت متعین کول.

[۳۴۵۰] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُمَانَ الدِّمَشْقِيُّ، أَنَّ سُلَيْمَانَ بْنَ بِلَالٍ حَدَّثَهُمْ، حَدَّثَنِي الْعَلَاءُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَجُلًا جَاءَ، فَقَالَ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، سَعَرَ، فَقَالَ: بَلْ أَدْعُو، ثُمَّ جَاءَهُ رَجُلٌ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، سَعَرَ، فَقَالَ: بَلِ اللَّهُ يَغْفِضُ، وَيَرْفَعُ، وَإِلَى لَأَرْجُو أَنْ أَلْقَى اللَّهَ وَلَيْسَ لِأَحَدٍ عِنْدِي مَظْلَمَةٌ".

د ابوهريره رضی الله عنه روایت دې فرمائی چه یوکس د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او عرض ئې اوکړ وای د الله رسوله د څیزونو نرخونه مقرر کړه، نبی ﷺ او فرمائیل حقیقت دادې چه نرخونه الله تعالی مقرر وي اوزیاتوي، زه د الله تعالی سره په داسې حال کښې ملاویدل غواړم چه زما د طرف نه په چاباندې زیاتې نه وي شوې (یعنی که چېرې زه نرخ مقرر کړم اوددې په وجه باندې کوم خریدار یا سوداگر ته نقصان ورسیرې نودا یو قسم زیانې دې اوزه

(۱) سنن ابن ماجة للتجار ۵۲ (۲۲۶۳)، (تحفة الأشراف: ۸۹۷۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۱۹/۳) (ضعيف)

(۲) تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۴۰۲۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۳۷/۲، ۳۷۲) (صحيح)

دانه خوښوم چه زه په چاباندې دزياتي په حال كښې دالله سره ملا وشم.  
 ﴿أَنْ رَجُلًا جَاءَ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ سَعَزَ فَقَالَ « بَلْ أَذْغُو »﴾

### شرح الحديث او مذاهب الائمة په مسئله الباب كښې :

يو سړې د رسول الله ﷺ په خدمت كښې حاضر شو او عرض ئې او كړو يا رسول الله ﷺ! ترڅ متعین كړئ، په ظاهر كښې غله يا كوم خيز چه د هغې قائم مقام وى نو رسول الله ﷺ او فرماييل تسعير نه كوم بلكه دعا كوم، بيا يو بل سړې هم راغلو هغه هم دغه درخواست او كړو نو رسول الله ﷺ او فرماييل (په تسعير سره چرته گراني ختميرى بلكه) د خيزونو نرخ د الله پاك په لاس كښې دې دا هم هغه كموى او زياتوى، او زه اميد كوم د دې خبرې (يعنى زما كوشش دا دى) چه زه د الله پاك سره ملاقات او كړم په هغه حال كښې چه د چا حق په ما باندې نه وى، مظلمه وائى د چا هغه حق ته چه لاندې كړې شى او ادا نه كړې شى، په دې كښې اشاره ده دې خبرې طرف ته چه د حاكم وخت تسعير د خلقو او سوداگرو په حق كښې ظلم دى، په هدايه كښې ليكلې دى چه د قاضى يا حاكم دپاره دا جائز نه دى چه هغه تسعير او كړى مگر دا چه د طعام خاوندان د حد نه تجاوز او كړى نو بيا هيڅ باك نشته، هم دغه شان په درمختار كښې دى او په هغې كښې دا هم دى چه امام مالك رحمه الله فرمائى چه والى له پكار دى د گراني په زمانه كښې تسعير او كړى. **أهـ من هـامـش الـهـذلـ**.

[۳۴۵۱] (١) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، أَخْبَرَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ، وَقَتَادَةَ، وَحُمَيْدٌ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ النَّاسُ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، عَلَا السَّعَرُ، فَسَعَرْنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّعِيرُ الْقَائِضُ، الْبَاسِطُ، الرَّازِقُ، وَإِنِّي لَأَرْجُو أَنْ أَلْقَى اللَّهَ وَلَيْسَ أَحَدٌ مِنْكُمْ يُطَالِيَنِي بِمُظْلَمَةٍ فِي دَمٍ وَلَا مَالٍ".

دانس بن مالك ونه روايت دې فرمائى خلقونښې عليه السلام ته عرض او كړو اي دالله رسوله د ضرورت اشياء گران شول زمونږ دپاره نرخونه مقرر كړه نبى عليه السلام او فرماييل نرخ مقرر كونكې الله تعالى دې هغه تنگي هم راوولي او وسعت هم راوولي اورزقونه وركوي اوزما اميد دې چه زه به دالله تعالى سره په داسې حال كښې مخامخ كيږم چه په تاسو كښې به داسې خوك نه وي چه زمانه دخپل حق مطالبه كوي نه دمال په لحاظ باندې اونه دويني په لحاظ باندې (لهذا زه نرخ نشم مقرر كولى).

### بَابُ فِي النَّهْيِ عَنِ الْغَشِّ د ملاوت ټكولو د معانعت بيان

[۳۴۵۲] (١) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الْعَلَاءِ، عَنِ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "مَرَّ بِرَجُلٍ يَبِيعُ طَعَامًا، فَسَأَلَهُ كَيْفَ تَبِيعُهُ؟ فَأَخْبَرَهُ، فَأَوْحَى إِلَيْهِ أَنْ أَذْخِلَ يَدَكَ فِيهِ، فَأَذْخَلَ يَدَهُ فِيهِ، فَإِذَا هُوَ مَبْلُولٌ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَيْسَ مِنْ مَالِي غَشٌّ".

(١) سنن الترمذي/اليبوع ۷۳ (۱۳۱۴)، سنن ابن ماجه/التجارات ۲۷ (۲۲۰۰)، (تحفة الأشراف: ۳۱۸، ۱۱۵۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۸۶/۳)، دي/اليبوع ۱۳ (۲۵۸۷) (صحيح)

(٢) صحيح مسلم/الايمان ۴۳ (۱۰۲)، سنن الترمذي/اليبوع ۷۴ (۱۳۱۵)، سنن ابن ماجه/التجارات ۳۶ (۲۲۲۴)، (تحفة الأشراف: ۱۴۰۲۲)، وقد أخرجه: حم (۲۴۲/۲) (صحيح)



د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دي فرمائي چې نبی ﷺ په يوداسي کس باندې تيريدلو چه دخوراک څه شي کي خرڅولو نبی ﷺ ورته تپوس اوکړو څنگه ئې خرڅوي؟ نو هغه ورته خبر ورکړو، نبی ﷺ ته وحي راغله چه لاس ورته داخل کړه او وئي گوره نبی ﷺ علي السلام ورته لاس داخل کړو نو معلومه شوه چه هغه دننه لمده وه، نبی ﷺ او فرمايل څوک چه ملاوت کوي هغه زمونږ نه نه دي.

(أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- مَرَّ بِرَجُلٍ يَبِيعُ طَعَامًا فَسَأَلَهُ « كَيْفَ تَبِيعُ » الْخ ) يعني رسول الله ﷺ په يو داسي سړي باندې تير شو کوم چه د غلي دپاره ناست وو د بيع او تجارت دپاره نو رسول الله ﷺ د هغه نه د بيع په باره کښې سوال اوکړو غالباً قيمت ئې ترې نه معلوم کړو هغه اووې، هم هغه وخت په رسول الله ﷺ باندې وحي راغله چه د دي غلي په ډيري کښې لاس وردننه کړئ، چه رسول الله ﷺ هغې ته لاس وردننه کړو نو د هغه ډيري دننه حصه لونده راووتله، په دي باندې رسول الله ﷺ او فرمايل (لَيْسَ مِنَّا مَنْ غَشَّ)،

[۳۴۵۳] (١) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ، عَنْ عَلِيٍّ، عَنْ يَحْيَى، قَالَ: كَانَ سُفْيَانُ يَكْرَهُ هَذَا التَّفْسِيرَ لَيْسَ مِنَّا، لَيْسَ مِنَّا.

د يحيي نه روايت دي فرمائي چه سفیان، به دليس منا تشریح په ليس مثلنا باندې کوله. (كَانَ سُفْيَانُ يَكْرَهُ هَذَا التَّفْسِيرَ لَيْسَ مِنَّا لَيْسَ مِنَّا) يعني سفیان ثوري رحمه الله به علماء چه د دي حديث کوم تاويل کوي او د دي چه کومه معنی مرادی بيانوي هغوی به دا تاويل نه خوښولو ځکه چه د خلقو مخکښې د تاويل بيانولو په صورت کښې هغې سره د متکلم غرض فوت کيږي، يعني تخويف او توبيخ تاويل اصولاً خو ضروري دي د اهل سنت والجماعت د مسلک مطابق، خود عامو خلقو مخکښې به ئې د دي اظهار غوره نه گنړلو، او تاويل په دي وجه ضروري دي چه د ظاهر حديث نه دا معلوميږي چه کوم سړي مسلمان ته د هوکه ورکړي هغه د جماعت المسلمين نه خارج دي حال دا چه د غش د وجې نه د اسلام نه خو نه خارج کيږي، او دا تاويل چه کړې شوې دي هغه دا دي چه کوم مسلمان نورو ته د هوکه ورکړي هغه زمونږ په طريقه باندې نه دي، او زمونږ په سيرت باندې نه دي.

والحديث اخرجه مسلم والترمذي والنسائي وابن ماجة، نحوه، قاله المنذرى

### بَابُ فِي خِيَارِ الْمُتَبَايِعِينَ

د اخستونکي او خرڅونکي په مينځ کښې د خياري بيان

[۳۴۵۴] (١) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "الْمُتَبَايِعَانِ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا بِالْخِيَارِ عَلَى صَاحِبِهِ، مَا لَمْ يَفْتَرِقَا إِلَّا بَيْعَ الْخِيَارِ".

(١): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۷۶۹) (صحيح الإسناد)

(٢): صحيح البخاري/البیوع ۴۲ (۲۱۰۷)، ۴۳ (۲۱۰۹)، ۴۴ (۲۱۱۱)، ۴۵ (۲۱۱۲)، ۴۶ (۲۱۱۳)، صحيح مسلم/البیوع ۱۰

(۱۵۳۱)، (تحفة الأشراف: ۸۳۴۱، ۸۲۸۲)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/البیوع ۲۶ (۱۲۴۵)، سنن ابن ماجة/التجارات ۱۷

(۲۱۸۱)، موطا امام مالك/البیوع ۳۸ (۷۹)، مسند احمد (۴/۲، ۵۲، ۵۴، ۷۳، ۱۱۹، ۱۳۵) (صحيح)

د ابن عمر رضی الله عنہما نه روایت دې فرمالي چه نبی صلی الله علیه وسلم فرمائیلي دی د سودا خرخونکو اواختونکې په مینځ کښې ترهغې پورې اختیار دې ترخوچه دیوبل نه جدا شوې نه وي علاوه د دینه چه خیار ئې مقرر کړې وي.

### د خیار مجلس په ثبوت کښې د علماء گرامو اختلاف :

په بیع کښې چه کوم خیار وی د هغې خو قسمونه دی لکه چه تاسو په هدایه ثالث کښې لوستلي دی خیار شرط، خیار عیب، خیار رویت وغیره، یو قسم د خیار بل دې کوم چه مصنف رحمه الله دلته بیانوی یعنی خیار مجلس چه د هغې شوافع او جنابله قائل دی، احنافو او مالکیان ئې قائل نه دی، او د خیار مجلس مطلب د کوم چه شوافع قائل دی دا دې چه د بائع او مشتری تر مینځه د ایجاب او قبول کیدو نه پس چه ترخو پورې متعاقدین په مجلس عقد کښې موجود دی نو په هغوی دواړو کښې هر یو که بائع وی او که مشتری وی د بیع د باقی ساتلو او د فسخ کولو اختیار وی او د مجلس د ختمیدو نه پس باقی نه پاتې کیږي. گویا د هغوی په نزد په ایجاب او قبول سره بیع تام خو شی، خو لازمیرې نه، او د دې حضراتو استدلال د حدیث الباب نه دې **(الْمُتَّيِّعَانِ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا بِالْخِيَارِ عَلَى صَاحِبِهِ مَا لَمْ يَفْتَرَقَا إِلَّا بَيْعَ الْخِيَارِ)** یعنی په بائع او مشتری کښې هر یو ته دا اختیار حاصل دې په خپل ملگری باندې یعنی د بیع د باقی ساتلو او نه ساتلو ترخو چه هغوی دواړه جدا شوې نه وي. **(الا بیع الخیار)** د دې استثناء تشریح به مونږ وروستو کوو، په دې حدیث کښې د افتراق نه مراد د شوافعو په نزد د مجلس نه جدا کیدل دی یعنی تفرق بالابدان، او احناف او مالکیان کوم چه د خیار مجلس قائل نه دی د هغوی په نزد د افتراق نه مراد افتراق بالبدن نه دې بلکه افتراق بالقول دې او د حدیث مطلب دا دې چه په متعاقدینو کښې هر یو ته د خپل قول نه د رجوع کولو اختیار دې ترخو پورې چه هغوی دواړه خپلې خبرې وئیلو سره فارغ شوې نه وی، په اصل کښې ایجاب وائی اول کلام صدر عن احد المتعاقدين ته که هغه مشتری وی او که بائع، لهذا مطلب دا شو چه په بائع او مشتری کښې چه کوم هم رومبی خبره او کړی او ایجاب او کړی نو د دویم د قبلولو نه مخکښې دې صاحب ایجاب ته اختیار دې د دې خبرې چه هغه د خپل قول نه رجوع او کړی، او د بیع خبره ختمه کړی که د حدیث هم دا مطلب واخستلې شی نو بیا خبره بالکل صفا او واضحه ده یعنی دا معقول خبره ده چه احد المتعاقدين ته اختیار دې د دې خبرې چه هغه د خپل کلام د تلفظ نه پس فوراً هغه کالعدم کړی، دا خو شو عدم تفرق، او په حدیث کښې دی چه د د تفرق نه پس اختیار نه پاتې کیږي یعنی دواړه چه کله د خپل کلام نه فارغ شی او د ایجاب نه پس قبول هم اوشی نو اوس د هغې دپاره اختیار باقی نه پاتې کیږي بلکه د ایجاب او قبول نه پس بیع محقق او لازمه شوه او عقد مضبوط شو، ښکاره خبره ده چه که د حدیث مطلب دا واخستلې شی لکه چه احنافو اخستلې دې نو بیا په دې صورت کښې خیار مجلس هیڅ څیز نه دې بلکه د خیار مجلس خو د دې نه نوره هم نفی کیږي، او که څوک دا او وائی چه د تفرق نه متبادر او ظاهری معنی تفرق بالبدن یعنی د مجلس نه پاسیدل دی او د دې تفرق بالقول



کوم چه تاسو بیانوي ددې څه مثال بیان کړئ نو د هغې جواب دا دې چه آیت کریمه ﴿وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يَغْنِ اللَّهُ كَلًّا مِنْ سَعَتِهِ﴾ چه په دې کښې هم د تفرق نه تفرق بالقول مراد دې ځکه چه په طلاق کښې خو تفرق بالقول وی، هم دغه شان د احنافو نور تائیدات وړاندې هم را روان دی.

په دې حدیث کښې دا وو ﴿الایع الخیار﴾ چه د هغې په باره کښې مونږ وئيلي وو چه د هغې وضاحت به په آخر کښې لیکو، د دې استثناء په شرح کښې امام نووی رحمته الله علیه د علماء کرامو درې اقوال لیکلي دی اول (۱) دا چه د دې نه مراد تخایر فی المجلس دې او امضاء البیع یعنی د ایجاب او قبول نه پس د مجلس د قیام پورې متبایعین ته د بیع د باقی ساتلو او نه ساتلو اختیار وی خو د تخایر په صورت کښې سره د قیام مجلس هم خیار باقی نه پاتې کیږي، یعنی که په مجلس کښې د ایجاب او قبول نه پس خپل مینځ کښې بیع اختیار کړی هر یو بل ته او وائی چه او ما دا څیز واخستلو دویم دا او وائی چه او ما خرڅ کړو نو اوس بیع لازمه شوه خیار مجلس باقی نه پاتې کیږي، اوس دا نه فسخ کیږي، (۲) دئمه د دې نه مراد بیع بشرط الخیار ده یعنی الا بیعاً شرط فیهِ خیار الشرط یعنی که د بیع په وخت خیار شرط او موندلې شی درې ورځې یا د دې نه کم نو په دې صورت کښې به د افتراق باوجود خیار فسخ باقی وی مده مشروطه پورې (۳) درېمه معنی دا چه د متبایعین دپاره چه تر څو پورې د هغوی افتراق نه وی شوې د هغوی دپاره به خیار باقی وی مگر دا چه د عدم خیار شرط اولگولې شی نو په دې صورت کښې به سره د عدم تفرق خیار مجلس نه حاصلیږي، د دې دریمې معنی په باره کښې هغوی فرمائی وهذا تاویل من یصح البیع علی هذا الوجه، والاصح عند اصحابنا بطلانه بهذا الشرط، یعنی دا دریمه معنی د دې جملې د هغه خلقو په نزد ده کوم چه په دې طریقې باندې بیع جائز گنږي، گینې د شوافعو اصح قول خو دا دې چه داسې بیع صحیح نه ده یعنی په کوم کښې چه د خیار مجلس نه کیدو شرط اولگولې شی. آه (بذل) والحدیث أخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری.

[۳۴۵۵] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بِمَعْنَاهُ قَالَ، أَوْ يَقُولُ أَحَدُهُمَا لِصَاحِبِهِ: اخْتَرْ.

عبدالله بن عمر رضی الله عنہما د نبی صلی الله علیه وسلم نه د تیرشوی روایت په شان روایت بیان کړې دې (یعنی چه هغه دواړه دلي ترڅو پورې دیوبل نه جدا شوې نه وي یا داچه یوکس په دوی کښې بل ته ووائی چه تاته اختیار دې).

﴿عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بِمَعْنَاهُ قَالَ « أَوْ يَقُولُ أَحَدُهُمَا لِصَاحِبِهِ اخْتَرْ ﴾

یعنی په دې روایت کښې په ځانې د ﴿الایع الخیار﴾ نور الفاظ دی زه وایم دا چه نور الفاظ دی داهم هغه معنی اوله ده په هغه معانی ثلاثه کښې کوم چه پورته د ﴿الایع الخیار﴾ په شرح کښې تیر شو، امام نووی رحمته الله علیه دې معنی اول ته اصح الاقوال وئيلي دي، او د دې نه

(۱) صحیح البخاری/ البیوع ۴۳ (۲۱۰۹)، صحیح مسلم/ البیوع ۱۰ (۱۵۳۱)، (تحفة الأشراف: ۷۵۱۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۷۳، ۴/۲) (صحیح)

په روستو روایت کښې دې « مَا لَمْ يَفْتَرَقَا إِلَّا أَنْ تَكُونَ صَفْقَةً خِيَارٍ » دا په ظاهر کښې په دغه معانی ثلاثه کښې معنی ثانی ده.

[۳۴۵۶] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ ابْنِ عُجْلَانَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ الْعَاصِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "الْمُتَبَايعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَفْتَرَقَا إِلَّا أَنْ تَكُونَ صَفْقَةً خِيَارٍ، وَلَا يَحِلُّ لَهُ أَنْ يَفَارِقَ صَاحِبَهُ خَشْيَةً أَنْ يَسْتَقِيلَهُ".

د عبد الله بن عمرو بن العاص نه روایت دې فرمائی چې نبی ﷺ فرمائیلي دي اغستونکې خرڅونکې چې ترڅو پورې دیوبل نه جدا شوي نه وي دوی ته اختیاری (داغستلویا دواپس کولو) مگر دا چې اختیار مقرر کړې شي نو بیا د جدا کیدو نه پس هم اختیار باقی پاتې کیږي او په اخستونکې او خرڅونکې دواړو کښې د یو دپاره هم حلال نه دي چې د خرڅې شوي سودا دواپس کیدو دویري د وجې نه دیوبل نه جدا شي (یعنی مجلس بدل کړي).

د حدیث نه د مسلک احناف تائید :

قوله: « وَلَا يَحِلُّ لَهُ أَنْ يَفَارِقَ صَاحِبَهُ خَشْيَةً أَنْ يَسْتَقِيلَهُ »:

دا د عمرو بن شعيب عن ابيه عن جده روایت دې کوم چې په ابوداؤد، ترمذی او نسائی کښې دي، په دې کښې چې کومه آخری جمله ده، « وَلَا يَحِلُّ لَهُ أَنْ يَفَارِقَ الْخ » دا جمله د خیار مجلس منافی ده چې د هغې شوافع وغيره قائل دي، ځکه چې د استقاله معنی طلب او اقاله ده او اقاله د لزوم بیع نه پس راځي د دې نه معلومه شوه چې خیار مجلس هیڅ څیز نه دي، ځکه که خیار مجلس متبایعین ته حاصلیدي نو بیا په دې صورت کښې په متبایعین کښې به هر یو ته د فسخ اختیار وي، د طلب اقاله ضرورت به نه وو (۲) اوس به په دې صورت کښې د دې پوره حدیث مطلب دا وي چې د متبایعین دپاره د ایجاب او قبول نه پس دا مناسب نه دي چې د مجلس نه زر پاسی او لار شي په دې ویره چې هسې نه بل د بیع د فسخ کولو فرمائش اونکړي بلکه د نصیحت او خیر خواهی تقاضه دا ده چې داسې سوچ دې نه کوي.

سهارنپوری رحمه الله د حکیم بن حزام رحمه الله په حدیث کښې کوم چې وړاندې را روان دي د هغې په شرح کښې په دې مسئله کښې د مذهب حنفی په ترجیح کښې مختصر او جامع کلام فرمائیلي دي چې د هغې په اخیر کښې دا دي « وَيُؤَيِّدُ الْحَنْفِيَّةَ مَا رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ عَنْ ابْنِ عَمْرِو بْنِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ اشترى من عمر بکر اصعبا فوهبه رسول الله ﷺ لابن عمر بعد الشراء قبل ان يفترقا، فلو لم يكن التصرف حلالا لاقبل التفرق ولم يتم البيع كيف وهب رسول الله ﷺ البكر لابن عمر بذلك ان التصرف في المبيع بعد العقد ان لم يخير احدهما الآخر جائزا » آه

وحدیث عمرو بن شعيب عن ابيه عن جده أخرجه الترمذی والنسائی، قاله المنذرى

(۱) سنن الترمذی لا بیوع ۲۶ (۱۲۴۷)، سنن النسائی لا بیوع ۹ (۴۴۸۸)، (تحفة الأشراف: ۸۷۹۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۸۳/۲) (حسن)

(۲) ځکه چې د اقاله مطلب خو دا وي چې په بائع او مشتری کښې یو بل ته د معاملې د فسخ کولو درخواست اوکړي



[۳۴۵۷] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ جَمِيلِ بْنِ مُرَّةٍ، عَنْ أَبِي الْوَضِيِّ، قَالَ: غَزَوْنَا غَزْوَةً لَنَا فَتَرَلْنَا مَنْزِلًا، فَبَاعَ صَاحِبُ لَنَا فَرَسًا بِغَلَامٍ، ثُمَّ أَقَامَا بَقِيَّةَ يَوْمَيْهِمَا وَلَيْلَتَيْهِمَا، فَلَمَّا أَصْبَحَا مِنَ الْعَدِ حَضَرَ الرَّجُلُ، فَقَامَ إِلَى قَرِيبِهِ يُسْرِجُهُ، فَنَدِمَ فَأَتَى الرَّجُلَ وَأَخَذَهُ بِالْبَيْعِ، فَأَتَى الرَّجُلُ أَنْ يَدْفَعَهُ إِلَيْهِ، فَقَالَ: بَيْنِي وَبَيْنَكَ أَبُو بَرَزَةَ صَاحِبُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَتَيَا أَبَا بَرَزَةَ فِي نَاحِيَةِ الْعَسْكَرِ، فَقَالَا: لَهُ هَذِهِ الْقِصَّةُ، فَقَالَ: أَتَرْضَيَانِ أَنْ أَقْضِيَ بَيْنَكُمَا بِقَضَاءِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "الْبَيْعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا"، قَالَ هِشَامُ بْنُ حَسَّانٍ: حَدَّثَ جَمِيلٌ، أَنَّهُ قَالَ: مَا أَرَاكُمْ أَفْرَقْتُمَا.

د ابو الوضی رضی اللہ عنہ نہ روایت دی فرمائی چہ مونہ پہ جهاد تہ تلی وو او یو مقام تہ راغلو اوز مونہ یو ملگری غلام داس پہ بدل کنبی خرخ کرو او بیبا اخستونکی او خرخونکی دواړه ټوله ورځ او شپه دلته موجود وو کله چہ راتلونکی سحر راغی نو د روآنیدو وخت شو چاچہ اس خرخ کړې وو هغه پاخیدو او پخپل اس باندې ئې زین تړلو په دې وخت کنبی دده ملگری پیمانہ شویعنی اس خرخول ئې ښه ونه گنړل هغه اخستونکی تہ داس دواپس کولو په اراده ورغې هغه داس دواپس کولونه انکار وکړو ده ورته اووئیل رازہ چہ ابو برزہ صحابی تہ د فیصلي دپاره لار شو بیا دوی دواړه دلنسر په یوه کناره کنبی ابو برزہ تہ ورغلل او - واقعہ ئې ورته بیان کړه هغه ورته اووئیل ایا تاسو دواړه په دې باندې خوشحاله ئې چہ زه ستاسو په مینځ کنبی د نبی صلی اللہ علیہ وسلم د فیصلي مطابق فیصله وکړم؟ او بیبا ئې اووئیل نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلی دی اخستونکی او خرخونکی تہ اختیار دې ترخوچہ دیو بل نه جدا شوې نه دي اوماته خوداسې ښکاري چہ تاسو دواړه خو لاجدا شوې نه یئ.

﴿ عَنْ أَبِي الْوَضِيِّ قَالَ غَزَوْنَا غَزْوَةً لَنَا فَتَرَلْنَا مَنْزِلًا فَبَاعَ صَاحِبُ لَنَا فَرَسًا بِغَلَامٍ ثُمَّ أَقَامَا بَقِيَّةَ يَوْمَيْهِمَا وَلَيْلَتَيْهِمَا الْخ ﴾

### مضمون حدیث :

مضمون د روایت دا دې چہ مونہ د یو غزوې په سفر کنبی وو (په عرف الشدی کنبی په حواله د بیهقی لیکلې دی چہ دا واقعہ د کشتی په سفر کنبی پېښه شوې وه، کذا فی هامش البذل) په لار کنبی یو ځانې کنبی کوز شو نو زمونږ یو ملگری خپل آس د بل ملگری په لاس باندې د یو غلام په عوض کنبی خرخ کړو او په دې واقعہ باندې د ورځ باقی حصه او ټوله شپه تیره شوه، بیا په بله ورځ د سحر په وخت کنبی د هغه منزل نه د تلو وخت راغلو نو د هغه اس اخستونکی د خپل اس خواله لارو او په هغه باندې ئې کټه برابر کړه د سوریډو دپاره، په دې موقع باندې هغه خرخونکی په دې خپله بیع باندې پشیمانه شو او دې مشتری تہ لارو او د دې بیع فسخ کولو سره ئې خپل اس واپس اخستل او غوښتل مشتری د واپس کولو نه انکار او کړو، بائع اووې چہ په دې معامله کنبی زما او ستا تر مینځه ابو برزہ صحابی رضی اللہ عنہ قاضی او فیصله کونکی دې، پس دا دواړه د هغوی په خدمت کنبی حاضر شو او هغوی دواړو د دې خپلې بیع قصه بیان کړه، هغوی او فرمائیل چہ آیا تہ په دې باندې راضی ئې چہ زه ستا په دې مسئله کنبی د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم والا فیصله نافذ کړم، او بیا ئې

(۱) : سنن ابن ماجه /التجارات ۱۷ (۲۱۸۲)، (تحفة الأشراف: ۱۱۵۹۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۴۲۵) (صحيح)

ورته دا حدیث واورولو، «البیعان بالخیار مالم یفرقا» او دا ئې هم او فرمائیل «اما اراکما افتقرتما» چه زما رائي دا ده چه ستاسو دواړو د دې بیع نه پس تر اوسه پورې افتراق نه دې شوي (لهذا خیار مجلس باقی دې چه د هغې په وجه باندې دبیع د فسخ هر یو ته اختیار دې، دا د هغه صحابی خپل اجتهاد وو هغوی د افتراق په مفهوم کښې ډیر وسعت پیدا کړو او گویا یو لښکر او د یو سفر په معامله ئې د مجلس واحد معامله او گرزوله، د دې خو څوک هم قائل نه دی. (بذل)

[۳۴۵۸] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ الْجَرَّارِيُّ، قَالَ مَرْوَانُ الْقَزَارِيُّ: أَخْبَرَنَا، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَيُّوبَ، قَالَ: كَانَ أَبُو زُرْعَةَ إِذَا بَايَعَ رَجُلًا خَيْرَهُ، قَالَ: ثُمَّ يَقُولُ: خَيْرَنِي، وَيَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا يَفْتَرِقَنَّ اثْنَانِ إِلَّا عَنْ تَرَاضٍ".

د یحیی بن ایوب نه روایت دې فرمائی چه کله به ابوزرعه اخستل خرڅول کول نو هغه بل کس ته به ئې اختیار ورکول اویا به ئې وئیل ماته هم اختیار راکړه اودا به ئې هم وئیل مادابوهریره رضی الله عنه نه اوریدلی دی چه فرمائیل ئې نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی چه تاسو دواړه یعنی اخستونکی خرڅونکی دي دیوبل نه نه جدا کیږي مگر د دواړو په رضا سره.

«كَانَ أَبُو زُرْعَةَ (۲) إِذَا بَايَعَ رَجُلًا خَيْرَهُ قَالَ ثُمَّ يَقُولُ خَيْرَنِي» یعنی د ابوزرعه دا معمول وو چه کله به هغه د یو سړی سره د بیع معامله کوله نو د ایجاب و قبول نه پس به ئې خپل ملگری ته په مجلس عقد کښې اختیار ورکولو، یعنی هغه ته به ئې وئیل چه که ته په دې معاملې باندې راضی ئې نو باقی ئې پرېږده گینې فسخ ئې کړه، او بیا به ئې دې ملگری ته دا وئیل چه هم دغه شان ته هم ماته اختیار راکړه (چه د دواړو طرفونه په ښه طریقه باندې تراضی اوشی، او بیا به ئې هغه ته دا حدیث واورولو، «لَا يَفْتَرِقَنَّ اثْنَانِ إِلَّا عَنْ تَرَاضٍ» چه بائع مشتری دې د څه معامله کولو نه پس بغیر د اظهار رضامندی نه دیوبل نه نه جدا کیږي. والحديث أخرجه الترمذی ولم يذكر قصته إلى زرعة، قاله المنذرى

[۳۴۵۹] (۲) حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي الْخَلِيلِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "الْبَيْعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَفْتَرَقَا فَإِنْ صَدَقَا وَبَيْنَا بُورِكَ لَهْمَا فِي بَيْنِهِمَا، وَإِنْ كُتِمَا، وَكَذَّبَا مُحِقَّتِ الْبُرْكَهُ مِنْ بَيْنِهِمَا"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَكَذَلِكَ رَوَاهُ سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ، وَحَمَّادٌ، وَأَمَّا هَبَانٌ، فَقَالَ: حَتَّى يَفْتَرَقَا وَيَخْتَارَا ثَلَاثَ مَرَّاتٍ.

د حکیم بن حزام نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی دوه سوداگونکو ته اختیار د ترڅوچه جدا شوي نه وي که چرې دوی دواړه پخپل مینځ کښې صحیح عقد وکړي اود سودا عیب بیان کړي نو ددوی دپاره به په دې سودا کښې برکت و اچولې شي او که چرې

(۱) سنن الترمذی/البیوع ۲۷ (۱۲۴۸)، (تحفة الأشراف: ۱۴۹۲۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۵۳۷۷) (حسن صحيح)

(۲) دا حافظ ابوزرعه رازی نه دې بلکه دا ابوزرعه بن عمرو بن جریر البجلي د تابعینو ثقاتو نه دي

(۳) صحيح البخاري/البیوع ۱۹ (۲۰۷۹)، ۲۲ (۲۰۸۲)، ۴۲ (۲۱۰۸)، ۴۴ (۲۱۱۰)، ۴۶ (۲۱۱۴)، صحيح مسلم/البیوع ۱

(۱۵۳۲)، سنن الترمذی/البیوع ۲۶ (۱۲۴۶)، سنن النسائي/البیوع ۴ (۴۶۶۲)، (تحفة الأشراف: ۳۴۲۷)، وقد أخرجه: مسند

احمد (۴۰۲/۳، ۴۰۳، ۴۳۴) (صحيح)



دوی د سودا عیب پټ کړي او دروغ او وائي نو برکت به ختم کړي شي، امام ابو داؤد فرمائي چې د حماد او د سعيد نه هم د دې روايت په شان روايت مروی دې لیکن د همام په روايت کښې داسې دي چې نبی ﷺ او فرمائیل چې اخستونکې او خرڅونکې ته اختیار حاصل دې ترڅو چې دواړه دیوبل نه جدا شوې نه وي او یا دا چې درې پیرې ئې اختیار شرط مقرر کړې نه وي.

### باب فی فضل الإقالة

د اقالې یعنی د بیعې د واپس کولو بیان

اقاله په معنی د فسخ د باب افعال نه، او په مجرد کښې د سمع یسمع نه، قال یقال ففی القاموس: وقتله البیع بالكسر واقلته فسخته، واستقاله طلب الیه ان یقبله..... (بذل)

[۳۴۶۰] (۱) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ، حَدَّثَنَا حَفْصٌ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ أَقَالَ مُسْلِمًا أَقَالَ اللَّهُ عَثْرَتَهُ".

د ابو هريره رضی الله عنه نه روايت دې فرمائي چې نبی ﷺ فرمائي دي: څوك چې د يو مسلمان سره اقاله قبوله كړي نو الله تعالى به د قيامت په ورځ دده گناهونه معاف كړي.  
قوله: (قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- « مَنْ أَقَالَ مُسْلِمًا أَقَالَ اللَّهُ عَثْرَتَهُ »)

يعنى رسول الله ﷺ او فرمائیل چې کوم سړې د تمام بیع نه پس د خپل ملگری سره اقاله او کړې یعنی قبول کړې نو الله پاک به د قیامت په ورځ باندې د هغه گناهونه معاف کړي، د دې صورت به دا وی چې دوه کسانو خپل مینځ کښې د بیع او شراء معامله او کړه، د معاملې د تکمیل نه پس یو کس په هغې باندې پښیمانه شو په اخستلو یا خرڅولو باندې خفه وو او خپل ملگری ته ئې اووې چې که ته دا معامله فسخ کړې نو مهرباني به وی، بل د هغه دا درخواست قبول کړو، په دې حدیث کښې د اقاله قبولونکې دپاره د هغه د گناهونو د معاف کیدو زیرې دي.

او گوري بیع او شراء څه عبادت خو نه دې یو مباح کار دې کوم چې انسان د خپلو ضروریاتو دپاره اختیاروی خو که څوک په شریعت باندې عمل او کړې او احادیث مخې ته کیږدی نو مباحات هم د هغه د مغفرت ذریعه او گرځی، د عباداتو به څه وائي. والله تعالى الموفق والحديث اخرجه ابن ماجة، قاله المنذرى

### باب فیمن باع بیعتین فی بیعة

په یوه معامله کښې د دوه بیعو کولو د ممانعت بیان

[۳۴۶۱] (۲) حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ زَكْرِيَّا، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ باعَ بَيْعَتَيْنِ فِي بَيْعَةٍ فَلَهُ أَوْكُسُهُمَا أَوْ الرِّبَا".

د ابو هريره رضی الله عنه نه روايت دې فرمائي چې نبی ﷺ فرمائي دي: څوك چې په يوه معامله

(۱): سنن ابن ماجة/التجارات ۲۶ (۲۱۹۹)، (تحفة الأشراف: ۱۲۳۷۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۵۲/۲) (صحيح)  
(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۱۰۵)، وقد أخرجه: سنن الترمذي للبيوع ۱۸ (۱۲۳۱)، سنن النسائي للبيوع ۷۳ (۴۶۳۷۷)، موطا امام مالك للبيوع ۲۳ (۷۴)، مسند احمد (۴۳۲/۲، ۴۷۵، ۵۰۳) (حسن)

کښې دوه بیعی وکړي نو په بیعه کښې چه کومه معامله کمه وي هغه دي اختیاري ورنه دامعامله د سود ده.

### حدیث الباب او د دې مقام کامله تشریح :

قوله: «عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «مَنْ بَاعَ بَيْعَتَيْنِ فِي بَيْعَةٍ فَلَهُ أَوْكُسُهُمَا أَوْ الرُّبَا» دا حدیث په ترمذی کښې هم دې خو په هغې کښې داسې دی، «نهی رسول الله ﷺ عن بيعتين في بيعة» قال ابو عيسى حديث ابی هريرة حديث حسن صحيح، په دې باندې په تخفة الاخوذي کښې دا ليکلې دی قال الحافظ في بلوغ المرام «رواه احمد والنسائي وصححه الترمذی وابن حبان، ولا يابى داؤد : من باع بيعتين في بيعة فله اوكسهما او الربا انتهى» تاسو اوکتل چه د ابوداؤد په دې روايت کښې په دې حدیث کښې يو زیادت دې کوم چه په دویم حدیث کښې نشته، په دې زیادت باندې به مونږ کلام او د هغې شرح وړاندې کوو، ځکه چه د دې زیادت په وجه باندې معامله گرانه شوه، رومي دې د اصل او مشهور حدیث په مطلب باندې ځان پوه کړې شی، پس امام ترمذی رحمه الله فرمائی «والعمل على هذا عند اهل العلم» او بیا هغوی د دې حدیث په شرح کښې دوه صورتونه او مثالونه ليکلې دی اول دا چه په يو بيع کښې د دوه بیعو د ممانعت د کوم چه ممانعت کولې شی د هغې شکل دا دې چه يو انسان اخستونکی ته داسې اوای چه دا کپړه تاته په نقدو خو په لس درهمو درکوم او که په قرض باندې ئې اخلې نو په شل درهمو ئې درکوم اوس دا په يو بيع کښې دوه بيع شوې يو د لس درهمو والا او يو د شلو درهمو والا، نو اوس که قبل التفرق متبايعين په دې دوو کښې د يو تعين اوکړی او د تعين نه پس جدا شی نو بیا خو په دې کښې هيڅ گناه نشته بلکه جائز دې او که بغیر د تعين نه مبهم شان معامله اوکړی او جدا شی نو دا بالاتفاق ممنوع دې د جهالت د ثمن د وجې نه. په حدیث کښې هم د دې صورت نهی وارد ده، او بیا امام ترمذی رحمه الله د دې حدیث په شرح کښې يو بل صورت اولیکلو چه يو سرې بل ته اووایي چه «ايبيعك داری هذا بكذا على ان تبيعني غلامك بكذا الخ» یعنی زه په تا باندې دا کور په دومره پیسو خرڅوم په دې شرط چه ته په ما باندې خپل غلام په دومره پیسو خرڅ کړې پس که ته د خپل غلام بيع ما سره په دومره پیسو کوئ نو بیا به زما د کور بيع هم ستا دپاره اوشی، «وهذا تفارق عن بيع بغیر ثمن معلوم، ولا يدري كل واحد منهما على ما وقعت عليه صفتة» دا چه دویم مثال دې په دې کښې هيڅ يو شق د بيع د صحت نشته ځکه چه دا خو بيع بغیر د ثمن معلومه نه ده، ځکه چه د کور بائع په هغې باندې بغیر د غلام د بيع نه تیار نه دې چه د هغې نه معلومېږي چه په دې بيع د غلام کښې د هغه گټه ده نو گویا د ثمن څه حصه په دې بيع د غلام کښې داخله ده، او هغه څومره ده دا معلومه نه ده، په دې وجه دا وئیلې کیدې شی چه دا بيع د ثمن مجهول ده، او دا هم وئیلې کیدې شی چه دا بيع په شرط سره ده او د بيع بشرط په حدیث کښې ممانعت راغلې دې د دې ټولو نه پس تاسو د ابوداؤد حدیث واخلئ چه د هغې سياق ددې مشهور حدیث نه بالکل مختلف دې ځکه چه ددې مضمون دا دې چه کوم انسان په یو بيع کښې دوه بيع اوکړی نودهغه دپاره «اوکس الثمنين



یعنی اقل الثمنین) والا بیع جائز ده، او که هغه داسې نه کوی نو بیا به ربا لازمیری، د ربا نه مراد فساد د بیع دې څکه چه عقود فاسده چه څومره دی هغه په حکم د ربا کښې داخل گنرلې شی.

اوس د ابوداؤد د دې حدیث حاصل خو دا شو چه مونږ پورته د بیعتین فی بیعة چه کوم مخکښې مثال لیکلې وو چه زه دا څیز په قرض دومره باندې درکوم او په نقدو باندې په دومره درکوم نو په دې معامله کښې که بائع او مشتری د لسو درهمو والا صورت روستو اختیاروی نو بیا خو دا معامله صحیح ده، او که د زائد ثمن والا شق اختیاروی نو بیا دا بیع فاسد ده حال دا چه دا د چا مذهب هم نه دې چه بیع المذکور اقل ثمن والا خو صحیح کیدې شی او اکثر ثمن والا نه شی کیدې، (لم یذهب الیه احد من الائمة الاربعة) خو د امام اوزاعی رضی الله عنه نه هم دا منقول دی کوم چه د ابوداؤد په دې حدیث کښې دی، هم په دې وجه مونږ په شروع کښې وئیلی وو چه دا ابوداؤد دا حدیث ډیر گران دې، امام خطابی رحمته الله د دې حدیث توجیه دا کړې ده چه دا دې په یو خاص صورت باندې محمول کړې شی یعنی د بیع سلم په یو خاص شکل باندې هغه دا چه یو سړی د قفیز حنطه بیع په یو دینار کښې اوکړه تر یوې میاشتې پورې، بیا چه کله موده پوره شوه یعنی یو میاشت نو بائع اووې مشتری ته چه ستا چه کومه قفیز حنطه زما په ذمه دې هغه یو قفیز لره د قفیزین په بدله کښې زما په لاس باندې خرڅ کړه تر دوه میاشتو پورې نو په دې خاص صورت کښې چه کومه رومبی بیع وه هغه اوکس البیعتین وه، نو په دې صورت کښې خو به هغه جائز وی او دا دویم فاسد (۱) او حضرت په بذل کښې د حضرت اقدس گنگوهی د تقریر نه د دې یو بله توجیه نقل کړې ده هغه دا چه د بیعتین فی بیعة دپاره چه مونږ په شروع کښې کوم مثال لیکلې وو چه دا څیز که مشتری نقد واخلی نو د دومره پیسو دې او که قرض ئې واخلی نو د دومره پیسو دې او بیا د هغوی تفرق او شو بغیر د احد البیعتین د تعین نه نو دا بیع د حدیث په رنرا کښې فاسد ده د دې حکم دا وو چه دا بیع واجب الفسخ وه خو دلته دا اوشوه چه مبیع د مشتری سره هلاک شو یا هغه اوخوړلو نو اوس په دې صورت کښې بائع ته پکار دی چه د اصل ثمن اخستلو په ځانې یا خو د هغه مبیع مثل واخلی (ان کان من ذوات الامثال) یعنی مبیع لره د فسخ کولو په نیت سره یا د هغې قیمت، او قیمت چه کوم وی (۲) عادة اوکس من الثمن وی، او که بائع په صورة مذکوره کښې په ځانې د مثل یا قیمت ثمن واخلی نو ابقاء د بیع به وی، حال دا چه هغه بائع مامور دې د دې په فسخ باندې، او بیع فاسد بلکه ټول عقود فاسده د ربا په حکم کښې داخل دی هم دې ته په حدیث کښې وئیلې شوې دی چه (فله اوکسهما او الربا) چه که اوکس نه اختیاروی نو ربا به لازمیری.

(۱) دا د خطابی والامثال خو واقعی د حدیث الباب مطابق هم دې او د جمهورو د رائي موافق هم دې.  
(۲) قیمت خو د یو څیز د بازار په اعتبار سره وی هغه چه په څومره ملایړی او ثمن هغې ته وائی چه د متعاقدینو تر مینځه مقرر شی.

## بَابُ فِي النَّهْيِ عَنِ الْعَيْنَةِ

باب بیع عینه منع ده

د بیع عینه تعریف او حکم :

د بیع عینه تعریف ئې دا لیکلې دې « شراء ما باقل مما باع قبل نقد الثمن الاول » او که غواری نو داسې بیان کړئ « بيع ما اشترى باقل مما اشترى قبل نقد الثمن الاول » یعنی یو سړی خپل یو خیز په بل سړی باندې په لس درهمه باندې خرڅ کړو تر یو نیتې پورې لا تر اوسه پورې مشتری هغه ته ثمن نه وو ادا کړې چه بائع د ثمن د ادا کولو تقاضا او کړه او چه کله مشتری هغه ورنکړې شوه نو بائع مشتری ته اووې چه که تانه دا نشی کیدې نو داسې او کړه چه هغه خیز په ما باندې په پنځه درهمه خرڅ کړه بیا به ستا په څما پنځه درهمه باقی پاتې شی هغه روستو ادا کړه د دې په باره کښې ئې دا لیکلې دی چه دا بیع د ائمه ثلاث په نزد ناجائز ده او امام شافعی رحمه الله او د هغه اصحاب دا جائز کړې ده « قاله الشوكاني في النيل » (عون) او په بذل کښې ئې د درمختار نه نقل کړې دی چه بیع عینه مکروه ده او شرعا مذموم ده ځکه چه په دې کښې اعراض عن الاقراض دې یعنی بائع اول د قرض نه د بیج کیدلو دپاره دا صورت اختیاروی چه صورة قرض هم اوشی او خپله نفع ئې هم اوشی، په شامی کښې دی چه امام محمد رحمه الله فرمائی « هذا البيع في قلبی کامثال الجبال، ذمیم اختراعه اكلة الربا » یعنی هغوی فرمائی چه د دې بیع بوجه زما په زړه باندې د غرونو په شان دې، دا بیع ډیره مذمومه ده چه سود خورو پیدا کړې ده. (۱)

[۳۴۶۲] (۲) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمَهْرِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي حَبِيبَةُ بْنُ شَرِيحٍ، وَحَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ مُسَافِرٍ التَّيْسِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَحْيَى الْبُرَيْسِيُّ، حَدَّثَنَا حَبِيبَةُ بْنُ شَرِيحٍ، عَنْ إِسْحَاقَ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ سُلَيْمَانُ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْخُرَاسَانِيِّ، أَنَّ عَطَاءَ الْخُرَاسَانِيَّ حَدَّثَهُ، أَنَّ نَافِعًا حَدَّثَهُ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: « إِذَا تَبَايَعْتُم بِالْعَيْنَةِ، وَأَخَذْتُمُ أَذْنَابَ الْبَقَرِ، وَرَضِيتُمُ بِالزَّرْعِ، وَتَرَكْتُمُ الْجِهَادَ، سَلَّطَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ ذُلًّا لَا يَنْزِعُهُ حَتَّى تَرْجِعُوا إِلَى دِينِكُمْ »، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: الْإِسْبَارُ جَعْفَرٌ، وَهَذَا الْقُطْلَةُ.

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه د نبی صلی الله علیه و آله نه مې اوریدلی دی چه فرمائیل ئې کله چه تاسو بیع عناء وکړئ اودغوا لکئ ونیسئ او کر گرونده شروع کړئ او په دې خوشحاله اوشئ (یعنی هر وخت د دنیا په کارونو کښې خوشحاله یئ) او جهاد هم پریردئ نو الله تعالی به په تاسو باندې ذلت راولیږي او ذلت به ستاسونه لرې نکړي ترڅو چه تاسو خپل دین ته واپس رانشئ، امام ابوداؤد فرمائی چه دا د جعفر د روایت الفاظ دي. قوله: « عَنْ ابْنِ عُمَرَ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ » إِذَا تَبَايَعْتُم بِالْعَيْنَةِ وَأَخَذْتُمُ أَذْنَابَ الْبَقَرِ وَرَضِيتُمُ بِالزَّرْعِ وَتَرَكْتُمُ الْجِهَادَ سَلَّطَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ ذُلًّا لَا يَنْزِعُهُ حَتَّى تَرْجِعُوا إِلَى دِينِكُمْ »

۱، وفي الشرح الكبير من باع سلعة بثمن موجد ثم اشتراها باقل منه نقدا لم يجر، روي ذلك عن ابن عباس وعائشة والحسن وابن سيرين والشعبي والنخعي ویه قال الثوري والاوزاعي ومالك واسحق واصحاب الراشي واجازه الشافعي لان ثمن يجوز بيعها به من غير بائعها فجاز من بائعها كما لو باعها بمثل ثمنها... الي آخر ما في الاوجز (۷/۵)  
۲، تقرده ابوداود، (تحفة الأشراف: ۸۲۲۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۲/۲) (صحيح)



### د مسلمانانو دپاره په ترک جهاد باندې سخت وعید :

په دې حدیث کښې د بیع عینه په اختیارولو او ترک جهاد باندې ډیر سخت وعید دې پس رسول الله ﷺ فرمائی چې اې خلقو چه کله تاسو بیعه عینه کوئ او په پتو باندې راځی کیدو سره د غویانو لکئ او تیسئ او جهاد شاته گزار کړئ نو الله پاک به په تاسو باندې داسې ذلت مسلط کړی چه هغه به الله پاک تر هغه وخته پورې نه لرې کوی تر څو چه تاسو خپل دین ته رجوع نه وی کړې، او په قرینه د سیاق حدیث د رجوع الی الدین نه مراد بیع عینه لره پریخودل او جهاد لره په پتې باندې ترجیح ورکول دی، د دې حدیث په شرح کښې شارحینو لیکلې دی چه په اصل کښې جهاد کښې د اسلام اعزاز او د هغې غلبه ده په باقی ادیانو باندې، نو چه کله مسلمانان دا څیز پرېږدی چه په هغې کښې د اسلام عزت او غلبه ده نو د دې په سزا کښې به الله پاک په هغوی باندې د عزت نقیض یعنی ذلت مسلط کړی.

### باب فی السلف

#### د بیع سلف یعنی بیع سلم بیان

په دې کښې دویم لغت سلم دې. سلف د اهل عراق لغت دې او سلم د اهل حجاز، د دې بیع تعریف دا کړې شوې دې، بیع موصوفه فی الذمة، یعنی بائع د مبیع په ښه طریقه سره اوصاف وغیره بیانولو سره مکمل طریقه سره او هغه په خپله ذمه کښې اخستلو سره د نقد ثمن په مقابله کښې خرڅ کړی، د دې تعریف داسې هم کیدې شی، «بیع آجل بعاجل» یعنی د شی موجدل بیع په ثمن معجل سره، د دې بیع شریعت اجازت ورکړې دې خلاف قیاس دفعا لحاجة المفالیس یعنی د غریبانو حاجت او ضرورت لره په خیال کښې ساتل سره، گینې د قیاس تقاضا دا ده چه دا بیع دې جائز نه وی ځکه چه دا د هغه څیز بیع ده کوم چه غیر موجود عند البائع دې، په دې وجه د دې بیع د صحت دپاره د ډیرو شرطونو موجود کیدل ضروری دی.

#### د صحت د سلم دپاره شرائط :

پس په قدروی کښې دی : «ولا یصح السلم عند ابی حنیفة الا بسبع شرائط تذکر فی العقد جنس معلوم، ونوع معلوم، وصفه معلوم، ومقدار معلوم، واجل معلوم، ومعرفة مقدار راس المال، وتسمية المكان الذی یوافیه فیہ اذا کان له حمل ومؤنة آههم دغه شان په کومو څیزونو کښې چه دا بیع جائز ده هغه هم متعین دی «ففی القدری السلم جائز فی المکیلات والموزونات والمعدودات التی لا تفاوت کالجوز والبیض، وفی المدروعات، ولا یجوز السلم فی الحیوان، الی آخره» په دې کښې بعض نور اختلافی مسائل هم دی کوم چه وړاندې د حدیث په ضمن کښې را روان دی. معلومه دې وی چه په بیع سلم کښې ثمن ته راس المال او مبیع ته مسلم فیہ، بائع ته مسلم الیه او مشتری ته رب السلم وائی.

[۳۴۶۳] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي الْيَمْنَانِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَهُمْ يُسَلِفُونَ فِي الثَّمْرِ السَّنَةَ وَالسَّنَتَيْنِ وَالثَّلَاثَةَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ أَسْلَفَ فِي ثَمَرٍ، فَلْيُسَلِفْ فِي كَيْلٍ مَعْلُومٍ، وَقَدْ بَنَى مَعْلُومٌ إِلَى أَجَلٍ مَعْلُومٍ".

دعبد الله بن عباس نه روایت دی فرمائی چه نبی ﷺ کله مدینې منورې ته راغې او هلته به خلقو په میوو کښې په یو کال کښې دوه دوه او درې درې سلگونه کول نو ددې مطابق نبی ﷺ او فرمائیل چاچه د میوو داخستلو دپاره ایدوانس رقم ورکړې وي هغه لره پکار دي چه ددې موده وزن یا ناپ مقرر کړي.

قوله: (عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم الى المدينة وَهُمْ يُسَلِفُونَ فِي الثَّمْرِ السَّنَةَ وَالسَّنَتَيْنِ وَالثَّلَاثَةَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- « مَنْ أَسْلَفَ فِي ثَمَرٍ فَلْيُسَلِفْ فِي كَيْلٍ مَعْلُومٍ وَوزن مَعْلُومٍ إِلَى أَجَلٍ مَعْلُومٍ »)

يعنى چه كله رسول الله ﷺ هجرت فرمائيلو سره مدینې منورې ته تشریف یووړو نو رسول الله ﷺ اهل مدینه ته او کتل چه هغې به په کهجورو کښې د بیع سلم معامله کوله، د یو کال کهجورې یا د دوه کالو، او هم دغه شان د درې کالو، نو په دې باندې رسول الله ﷺ او فرمائیل چه کوم سرې د کهجورو په بیع کښې د تمر معامله کوی نو چونکه تمر کیلی دی په دې وجه کیل معلومیدل پکار دی یعنی د دې مقدار کیلا متعین کیدل پکار دی او که د دې بیع تعلق د شیئ موزون سره وی نو د مبیع وزن معلومیدل پکار دی او د دې نه علاوه یو شرط هغوی دا بیان او فرمائیلو چه د بیع سلم موده هم معلومیدل پکار دی، په دې آخری مسئله کښې د جمهور او ائمه ثلاث رائې خو دا ده خو د امام شافعی رحمه الله په دې کښې اختلاف دی، هغوی سلم حال لره جائز گنړی هغوی د دې حدیث تاویل دا کړې دې چه د رسول الله ﷺ مراد دا دې که چرې بیع سلم الی اجل وی نو بیا هغه معلومیدل پکار دی.

والحدیث أخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۴۶۴] (۲) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غَمْرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، وَحَدَّثَنَا ابْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جُمَالٍ، قَالَ: "اِخْتَلَفَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ شَدَادٍ، وَأَبُو بَرْدَةَ، فِي السَّلَفِ، فَبَعَثُونِي إِلَى ابْنِ أَبِي أُوَيْسٍ فَسَأَلْتُهُ، فَقَالَ: إِنْ كُنَّا يُسَلِفُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَبُو بَكْرٍ، وَعُمَرُ، فِي الْحِنْطَةِ وَالشَّعِيرِ وَالثَّمَرِ وَالزَّيْبِ، زَادَ ابْنُ كَثِيرٍ إِلَى قَوْلِهِ مَا هُوَ عِنْدَهُمْ، ثُمَّ اتَّفَقَا، وَسَأَلْتُ ابْنَ أَبِي زَيْدٍ، فَقَالَ: مِثْلُ ذَلِكَ.

دعبد الله بن مجالد نه روایت دی فرمائی چه دعبد الله بن شداد او د ابوبرده په مینځ کښې په سلف کښې اختلاف راغې نوزه ئې ولیرلم ابن ابی اوفیه ته اومادهغه نه تپوس اوکړو هغه اووئیل مونږ به نبی ﷺ اود ابوبکره اود عمر په زمانه کښې په غنمو وربشو کجورو او

(۱): صحيح البخاري/السلم ۱ (۲۲۳۹)، ۲ (۲۲۴۰)، ۷ (۲۲۵۳)، صحيح مسلم/المساقاة ۲۵ (۱۶۰۴)، سنن الترمذي/البيوع ۷۰ (۱۳۱۱)، سنن النسائي/البيوع ۶۱ (۴۶۲۰)، سنن ابن ماجه/التجارات ۵۹ (۲۲۸۰)، (تحفة الأشراف: ۵۸۲۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۲۱۷، ۲۲۲، ۲۸۲، ۳۵۸)، سنن الدارمي/البيوع ۴۵ (۲۶۲۵) (صحيح)  
(۲): صحيح البخاري/السلم ۲ (۲۲۴۲)، سنن النسائي/البيوع ۵۹ (۴۶۱۸)، ۶۰ (۴۶۱۹)، سنن ابن ماجه/التجارات ۵۹ (۲۲۸۲)، (تحفة الأشراف: ۵۱۷۱)، وقد أخرجه: حم (۴/۳۵۴، ۳۸۰) (صحيح)



وځکو کښې سلف کولر ابن کثیر دا اضافه کړې ده مونږ به دهغه خلقوسره دا معامله کوله د کوموسره چه به میوې موجودي نه وه باقی روایت د دواړو راویانو یوشان دې، دابن ابی ایزی نه تپوس او کړې شو هغه هم دارنگې بیان وکړو لکه څرنگه چه ابن ابی اوفی کړې دې، قوله: (أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُجَالِدٍ قَالَ اخْتَلَفَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ شَدَادٍ وَأَبُو بَرْدَةَ فِي السَّلَفِ الْخ) شعبه رحمه الله فرمائی چه ماته خبر را کړو محمد بن مجالد یا عبدالله بن مجالد (کذا فی اکثر النسخ، والصحيح ابن أبي مجالد، کذا فی البذل) چه د عبدالله بن شداد او د ابوبرده اختلاف شو د بیع سلم په باره کښې نو هغه وائی (محمد بن ابی مجالد یا عبدالله بن ابی مجالد) چه هغوی دواړو زه عبدالله بن ابی اوفی صحابی ته اولیرلم، ما د هغوی نه تپوس او کړو نو هغوی او فرمایل چه مونږ به در رسول الله ﷺ اود حضرات شیخین په زمانه کښې بیع سلم کوله په حنطه شعیر تمر او زیب تولو څیزونو کښ، او دا معامله به مو د داسې خلقوسره کوله چه هغوی سره به هغه مبیع د عقد په وخت موجود نه وو.

### شرح السند:

وراندې په روایت کښې راځی (الصَّوَابُ ابْنُ أَبِي الْمُجَالِدِ وَشُعْبَةُ أَخْطَأَ فِيهِ) امام ابوداؤد رحمه الله فرمائی چه صحیح ابن ابی المجالد دې د شعبه نه په دې کښې خطاء واقع شوې ده زمونږ په دې نسخه کښې هم داسې دی خو په دې نسخه باندې د مصنف رحمه الله د کلام مطلب واضحه نه دې ځکه چه شعبه خو ابن ابی المجالد وټیلي وو د حضرت تحقیق دا دې په بذل کښ چه په عبارت کښې داسې پکار دې (والصواب عبدالله بن ابی المجالد) په دې صورت کښې به مطلب دا وی چه صحیح خو عبدالله بن ابی المجالد دې، خو د شعبه نه په دې کښې غلطی شوې ده چه هغوی د راوی نوم محمد بن المجالد یا عبدالله بن ابی المجالد په شک سره بیان کړو (إِلَى قَوْمٍ مَا هُوَ عِنْدَهُمْ) کښې یو مسئله مضمرد، یعنی سلم فی المنقطع چه د هغې تفصیل به انشاء الله وړاندې راشی. والحديث أخرجه البخاري وابن ماجه، قاله المنذري.

[۳۴۶۵] (حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، وَابْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَا: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي الْمُجَالِدِ، وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ، عَنِ ابْنِ أَبِي الْمُجَالِدِ، بِهَذَا الْحَدِيثِ، قَالَ: عِنْدَ قَوْمٍ مَا هُوَ عِنْدَهُمْ؟ قَالَ أَبُو دَاوُدَ: الصَّوَابُ ابْنُ أَبِي الْمُجَالِدِ، وَشُعْبَةُ أَخْطَأَ فِيهِ.

د عبدالله بن ابی مجالد یا ابن مجالد نه هم داسې روایت نقل شوې دې چه هغوی به ددې خلقوسره بیع سلم کولو د کوموسره چه به مال موجود نه وو، امام ابوداؤد فرمائی ابن ابی مجالد درست دې او په دې روایت کښې د شعبه نه غلطی شوي ده.

[۳۴۶۶] (حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُصَفَّى، حَدَّثَنَا أَبُو الْمُؤَدِّبِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ أَبِي غَنِيَّةٍ، حَدَّثَنَا أَبُو اسْمَاعِيلَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى الْأَسْلَمِيِّ، قَالَ: "غَزَوْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الشَّامَ، فَكَانَ يَأْتِينَا الْبَاطِلُ مِنَ الْبَاطِلِ الشَّامِ، فَتُسَلِّفُهُمُ فِي الْبُرِّ وَالزَّيْتِ سَعْرًا مَعْلُومًا وَأَجَلًا مَعْلُومًا، فَقِيلَ لَهُ: مِمَّنْ لَهُ ذَلِكَ، قَالَ: مَا كُنَّا نَسْأَلُهُمْ."

(۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۵۱۱۷) (صحيح)  
(۲) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۵۱۶۸)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للمسلم ۳ (۲۲۴۱)، ۷ (۲۲۵۳) (صحيح)

د عبدالله بن ابی اوفی رضی الله عنه نه روایت دی فرمائی چې مونږه د نبی صلی الله علیه و آله سره د شام د جهاد په سفر کېنې شریک وو هلته به زموږ خواته د شام زمینداران راتلل او مونږ به دهغوی سره په تیلو او غنمو کېنې سلف کولو یعنی مخکېنې به موقیت ادا کړو، ددې څیزونو قیمت به موادا کولو اوددې میعاد به مو معین کولو، ددوینه چاتپوس او کړو چې ایا تاسو به ددوی سره سلف کولر دچا سره چې مال موجود وي هغوی جواب ورکړو مونږ به ددوینه ددې خبرې تپوس نه کولو (چې ایا ستاسو سره دا څیزونه موجود دي او که نه دي).

قوله: **«قَالَ غَزَوْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - الشَّامَ فَكَانَ يَأْتِينَا أَنْبَاطٌ مِنْ أَنْبَاطِ الشَّامِ فَنَسْأَلُهُمْ فِي الْبُرِّ وَالزَّيْتِ سَفَرًا مَعْلُومًا وَأَجَلًا مَعْلُومًا فَقِيلَ لَهُ مِنْ لَهْ ذَلِكَ قَالَ مَا كُنَّا نَسْأَلُهُمْ»**

عبدالله بن ابی اوفی رضی الله عنه فرمائی چې مونږ د رسول الله صلی الله علیه و آله سره د ملک شام په غزوه کېنې شریک شو، په ظاهر کېنې د دې نه مراد غزوه تبوک ده **«فانها وقعت فی نواحي الشام»** (بذل) نو د دې سفر په دوران کېنې به د ملک شام نبطیان مونږ ته راتلل نو مونږ به د هغوی سره په دې اشیاء مذکوره فی الحدیث کېنې د بیع سلم معامله کوله په سعر معلوم او اجل معلوم سره، چا د عبدالله بن ابی اوفی نه تپوس او کړو چې ستاسو خلقو دا د بیع سلم معامله به ایا د هغه خلقو سره کیدله چا سره چې به هغه شی مسلم فیه موجود وو؟ نو هغوی جواب ورکړو چې دا خبره به مونږ د هغوی نه نه تپوسله.

### د مسئله سلم فی المنقطع تفصیل :

معلومه دې وی چې معامله خو هم د هغه چا سره وی د جمهورو په نزد چې د هغه سره مبيع یعنی مسلم فیه د عقد په وخت موجود نه وی، خو مسئله دا ده چې د مسلم فیه په بازار کېنې موجود کیدل ضروری دی یا دا هم ضروری نه دی، په دې لحاظ سره د دې مسئلې څلور صورتونه دی، پس علامه عینی په شرح د بخاری کېنې، **«باب السلم الى من ليس عنده اصل»** د لاندې فرمائیلي دی چې د مصنف (امام بخاری رحمته الله) اشاره د سلم المنقطع طرف ته ده چې د احنافو په نزد جائز نه ده او بیا فرمائی چې د دې مسئلې څلور صورتونه کیدي شی ۱: یو دا چې مسلم فیه د عقد په وخت کېنې موجود وی او عند الاجل منقطع وی، دا بالاتفاق ناجائز دی. ۲: چې مسلم فیه په بازار کېنې د عقد د وخت نه د نیتې پورې موجود وی دا بغیر د خلاف نه جائز دي. ۳: دا چې منقطع وی د عقد په وخت او موجود وی د اجل په وخت ۴: دا چې په وخت د عقد او اجل موجود وی او په مینځ کېنې منقطع وی دا دریم او څلورم دواړه صورتونه د احنافو په نزد ناجائز دی او د ائمه ثلاث په نزد جائز دی. آه (الابواب والتراجم) پس حاصل دا چې د احنافو په نزد د مسلم فیه په بازار کېنې موجود کیدل د عقد د وخت نه الی حلول الاجل ضروری دی او د جمهورو په نزد په وخت د نیتې کېنې موجود کیدل ضروری دی. په دې حدیث کېنې د انباط ذکر دي نبط یو عجمی قوم دي کوم چې د عراقیانو تر مینځه اباد وو. آه مصباح اللغات، د عربو یو قوم دي کوم چې د رومیانو سره شامل شوي وو او په شام کېنې مقیم وو. (بذل)



## بَاب فِي السَّلَامِ فِي ثَمَرَةِ بَعِينَهَا

### د خاص ونې په ميوه كښې د سلم كولو بيان

[۳۴۶۷] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ رَجُلٍ ثَجْرَانِيٍّ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَجُلًا أَسْلَفَ رَجُلًا فِي تَخْلٍ، فَلَمْ تُخْرِجْ تِلْكَ السَّنَةَ شَيْئًا، فَاخْتَصَمَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: بِمَ تَسْتَحِلُّ مَالَهُ ارْزُدْ عَلَيْهِ مَالَهُ؟ ثُمَّ قَالَ: لَا تُسْلِفُوا فِي التَّخْلِ حَتَّى يَبْدُوَ صَلَاحُهُ.

دا بن عمر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چې یو کس دیو خاص وني په ميوه باندې د سلم معامله وکړه په دې کال کښې په دې ونه کښې ميوه ونشو دواړه دنبي عليه السلام په خدمت کښې حاضر شول او جگړه ئې پيش کړه، نبي عليه السلام خرخونکی ته وفرمائيل ته ددې کس مال دڅه شي په عوض کښې اخلي؟ ته دده مال واپس کړه، اوبيا ئې وفرمائيل د کجورې دونې په ميوه باندې د سلم معامله مه کوئ ترخوچه ميوه پخه شوي نه وي.

قوله: «عَنْ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَجُلًا أَسْلَفَ رَجُلًا فِي تَخْلٍ فَلَمْ تُخْرِجْ تِلْكَ السَّنَةَ شَيْئًا»

په ترجمه الباب کښې چې کومه مسئله ذکر شوې ده هغه دا ده چې د اشجار معينه په ميوو کښې بيع سلم جائز نه دي، ځکه چې ممکنه ده په دې کال په دې اونو باندې ميوه رانشي، په دې صورت کښې به مسلم فيه غير مقدور التسليم شي حال دا چې مقدور التسلم کيدل ضروري دي، «ففي القدروى، ولا فى طعام قرية بعينها، ولا فى ثمرة نخلة بعينها» آه

پس د حديث الباب مضمون هم دا دي چې يو سړى نخله معينه کښې د سلم معامله اوکړه او بيا په هغه کال په هغې باندې ميوه رانغله، چې په هغې باندې رسول الله عليه السلام تنبيه وفرمائيل «بِمَ تَسْتَحِلُّ مَالَهُ ارْزُدْ عَلَيْهِ مَالَهُ، ثُمَّ قَالَ، لَا تُسْلِفُوا فِي التَّخْلِ حَتَّى يَبْدُوَ صَلَاحُهُ» دا په ظاهر کښې مستقل يو بل حکم دي کوم چې مخکښې تير شوې دي يعنى نهى د بيع نه قبل بدو الصلاح.

## بَاب السَّلَفِ لَا يُحَوَّلُ

په بيع سلم کښې چې د کوم څيز خرڅول متعين شوي وي دهغې بدلول منع دي

[۳۴۶۸] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى، حَدَّثَنَا أَبُو بَدْرٍ، عَنْ زِيَادِ بْنِ خَيْثَمَةَ، عَنْ سَعْدِ بْنِ عَطِيَّةٍ، عَنْ عَطِيَّةِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَسْلَفَ فِي شَيْءٍ فَلَا يَصْرِفُهُ إِلَى غَيْرِهِ».

دا بوسعيد خدرى رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چې رسول الله فرمائيلی دی څوك چې ديو شي قيمت مخکښې ادا کړي نو هغه شي په نورو څيزونو مه بدلوی.

( قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - « مَنْ أَسْلَفَ فِي شَيْءٍ فَلَا يَصْرِفُهُ إِلَى غَيْرِهِ » )

۱: سنن ابن ماجه/التجارات ۶۱ (۲۲۸۴)، (تحفة الأشراف: ۸۵۹۵)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/البيوع ۲۱ (۴۹)، مسند

احمد (۲۵/۲، ۴۹، ۵۱، ۵۸، ۱۴۴) (ضعيف)

۲: سنن ابن ماجه/التجارات ۶۰ (۲۲۸۳)، (تحفة الأشراف: ۴۲۰۴) (ضعيف)

## شرح الحديث مع بيان المذاهب :

د دې حديث په مطلب كښې ئې دوه احتمال له ليكلي دي، اول دا چه كوم سړې د بل سره په يو خيز كښې د بيع سلم معامله كوي نو د دې معاملې كولو دپاره، يعنې د مشتري دپاره دا خبره جائز نه ده چه دې مسلم فيه خيز لره خپل غير ته منتقل كړي په اعتبار د بيع يا هبه، يعنې قبل القبض، او دويم احتمال دا چه كوم سړې د چا سره د كوم خيز معامله كړې ده نو د دې مسلم فيه په بدله كښې قبل القبض بل څه خيز وانخلي يعنې د مسلم فيه استبدال د بل څه سره قبل القبض كول جائز نه دي، كه رب السلم د مسلم فيه په عوض كښې بل څه خيز اخستل غواړي نو په شئ اول باندي د قبضي كولو نه مخكښې دا استبدال جائز نه دي، د قبضي نه پس ورته اختيار دي، د احتمال اول په صورت كښې، د «غيره» ضمير به د «من» طرف ته راجع وي، في قوله «من السلف» او په دويم صورت كښې به دا ضمير د شئ طرف ته راجع وي چه د هغې نه مراد مسلم فيه دي، مشهوره دا ده چه په مسلم فيه كښې استبدال قبل القبض د جمهورو په نزد چه په هغوي كښې احناف هم دي جائز نه دي او د امام شافعي رحمه الله په نزد جائز دي، لهذا دا حديث په دې مسئله كښې د جمهورو دليل دي.

والحديث أخرجه ابن ماجة، قاله المنذرى

## باب في وضع الجائحة

كه چرې په فصل باندي كوم قسم افتراشي نو خريدار لره نقصان وضع كول پكار دي مسئله اختلافيه :

ددې مسئلې متعلق حديث په «باب في بيع السنين» كښې هم تير شوي دي «وضع الجوائح» هلته دا هم تير شوي دي چه «امر بوضع الجوائح عند الجمهور من باب المعروف والاحسان» دي او د امام احمد او اكثر محدثينو په نزد على الوجوب دي، د جمهورو د طرف نه دا هم وئيلې شوې دي چه كه حديث په وجوب باندي محمول كړې شي نو دا به په يو خاص صورت كښې وي يعنې چه كله هغه ميوه هلاكه شي قبل التسليم الى المشتري فانها حينئذ في ضمان البائع، په دې وجه دي صورت كښې به ټول نقصان د بائع وي.

[۳۴۶۹] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ بُكَيْرٍ، عَنْ عِيَّاضِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّهُ قَالَ: "أَصِيبَ رَجُلٌ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي ثَمَارٍ ابْتِاعَهَا فَكُتِرَ دَيْنُهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تَصَدَّقُوا عَلَيْهِ، فَتَصَدَّقَ النَّاسُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَلْمُ ذَلِكَ وَقَاءَ دَيْنِهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: خُذُوا مَا وَجَدْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمْ إِلَّا ذَلِكَ".

د ابوسعید خدری رضی الله عنه نه روایت دي فرمائی چه د نبی صلی الله علیه و آله په زمانه كښې يو كس ميوه واخستله او بيا په دغه ميوه باندي څه افت نازل شو اودغه اخستونكي قرضدارې شونې عليه السلام خلقونه او فرمائيل چه ده ته صدقه وركړئ خلقو ورته صدقه وركړه په هغه صدقه باندي

(۱) صحيح مسلم / المساقاة ۴ (۱۵۵۶)، سنن الترمذي / الزكاة ۲۴ (۶۵۵)، سنن النسائي / البيوع ۲۸ (۴۵۳۴)، ۹۳ (۴۶۸۲)، سنن ابن ماجة / الأحكام ۲۵ (۲۳۵۶)، (تحفة الأشراف: ۴۲۷۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۵۸، ۵۷۳) (صحيح)



هم دده قرض ادا نشونوپه دي وخت كښې نبي ﷺ دده قرضدارونه او فرمائيل تاسوته چه دده دطرف نه څه ملاوشي هغه واخلي او ددينه علاوه به تاسوته څه نه ملاويږي.

﴿ أَصِيبَ رَجُلٌ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فِي ثَمَارٍ ابْتَاعَهَا فَكَثُرَ دَيْنُهُ ﴾

د حديث مضمون واضح دي، وړاندې په دي حديث كښې دي ﴿ خَذُوا مَا وَجَدْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمْ إِلَّا ذَلِكَ ﴾ يعنې د خلقو د صدقې كولو نه پس په مشتري باندې، مشتري سره چه څومره پيسې جمع شوې وې هغه ئې وركړې كومي چه د دين برابر نه وې د هغې نه كمې وې نو رسول الله ﷺ او فرمائيل چه بس هم دا يوسه ستا دپاره نور هيڅ نشته، د دي مطلب به د اصولو مطابق دا اخستلې شي چه د رسول الله ﷺ مراد دا دي چه في الحال ستا دپاره هم دغه دي باقي به درته روستو ادا كيږي.

والحديث اخرجه مسلم والترمذي والنسائي وابن ماجة، قاله المنذرى

[۳۴۷۰] (١) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمَهْرِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ الْهَمْدَانِيُّ، قَالَا: أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ جُرَيْجٍ، وَوَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ الْمَعْنَى، أَنَّ أَبَا الزُّبَيْرِ الْمَكِّيَّ أَخْبَرَهُ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "إِنْ بَعْتَ مِنْ أَخِيكَ بَقِيرًا حَقًّا، فَلَا تَجْعَلْ لَكَ أَنْ تَأْخُذَ مِنْهُ شَيْئًا بِمَ تَأْخُذُ مَالَ أَخِيكَ بِقَيْرٍ حَقًّا".

د جابر بن عبد الله ﷺ نه روايت دي فرمائي چه نبي ﷺ فرمائيلي دي كه چرې تاسو پخپل مسلمان ورور باندې ميوه خرڅه كړئ او بيا په دي ميوه باندې كوم افت راشي نو ستاسو دپاره دا خستونكي نه څه شي وصول كول جائزه دي دخپل ورور مال په ناجائزه طريقه باندې څنگه اخلي؟

﴿ بِمَ تَأْخُذُ مَالَ أَخِيكَ بِقَيْرٍ حَقًّا ﴾ دا حديث د حنابله په نزد خو په خپل ظاهر باندې دي او د جمهورو په نزد موؤل دي اي في التقوى، يا قبل التسليم الى المشتري باندې محمول دي لكه چه مخكښې تير شو، اخرجه مسلم والنسائي وابن ماجة، قاله المنذرى

### باب فِي تَفْسِيرِ الْجَائِزَةِ

[۳۴۷۱] (٢) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمَهْرِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عُثْمَانُ بْنُ الْحَكَمِ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ عَطَاءٍ، قَالَ: "الْجَوَائِزُ كُلُّ ظَاهِرٍ مُفْسِدٍ مِنْ مَطَرٍ، أَوْ بَرَدٍ، أَوْ جَرَادٍ، أَوْ رِيحٍ، أَوْ حَرِيقٍ".

ابن جريج د عطاء نه روايت كوي چه دافت نه مراد ښكاره تباهي ده لكه باران، يخني، گلن، ملخان، باد، سوزيدل.

﴿ عَنْ عَطَاءٍ قَالَ الْجَوَائِزُ كُلُّ ظَاهِرٍ مُفْسِدٍ مِنْ مَطَرٍ أَوْ بَرَدٍ أَوْ جَرَادٍ أَوْ رِيحٍ أَوْ حَرِيقٍ ﴾ يعنې جوائز چه د هغې د ساقط كولو او معاف كولو په حديث كښې حكم راغلې دي د دي نه داسې افت مراد دي كوم چه بالكل ښكاره وي، ميوو لره خرابونكي وي، لكه

(١): صحيح مسلم للمساقاة ٣ (١٥٥٤)، سنن النسائي للبيوع ٢٨ (٤٥٣١)، سنن ابن ماجة للتجارات ٢٣ (٢٢١٩)، (تحفة الأشراف: ٢٧٩٨)، وقد أخرجه: سنن الدارمي للبيوع ٢٢ (٢٥٩٨) (صحيح)  
(٢): تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ١٩٠٦٤) (حسن)

باران او گلئ، او ملخان، خکه چه د هغوی قطار کوم باغ ته هم اور سیرې هغه تباہ کوی. او هم دغه شان طوفان او تیزه هوا او اور لگیدل.

په حدیث کښې د (ظاهر) قید په دې وجه لگولې شوې دې چه په دې صورت کښې به د مشتری نقصان متیقن وی، او که هغه خیز ښکاره نه وی بلکه مشتری یو مخفی لره بیان کړی نو په دې کښې احتمال د هغه د کذب دې، پس د ښکاره کیدو په صورت کښې به چه په هغې باندې کوم حکم مرتب کیږي هغه به ختمی وی، او په دویم صورت کښې به د عفو حکم صرف دیانه وی. (بذل من تقریر الجنوهی)

[۳۴۷۲] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عُثْمَانُ بْنُ الْحَكَمِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، أَنَّهُ قَالَ: "لَا جَائِحَةٌ فِيمَا أَصِيبَ دُونَ ثُلُثِ رَأْسِ الْمَالِ". قَالَ يَحْيَى: وَذَلِكَ فِي سُنَّةِ الْمُسْلِمِينَ.

دیجی ابن سعیدنه روایت دې فرمائی که چرې ددریسی حصې نه په کم مال باندې افت راشي نودې ته افت نه وئیل کیږي یحی وئیلی دی دا د مسلمانانو طریقه ده که چرې ددریسی حصې نه کم مال ته نقصان ورسیرې نود خریدار دپاره نقصان وضع کول نشته.

[۳۴۷۱] (۲) عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ أَنَّهُ قَالَ لَا جَائِحَةٌ فِيمَا أَصِيبَ دُونَ ثُلُثِ رَأْسِ الْمَالِ - قَالَ يَحْيَى - وَذَلِكَ فِي سُنَّةِ الْمُسْلِمِينَ

توجه: یحی بن سعید وائی چه د رأس المال د دریسی حصې نه په کم مال باندې چه افت راشي نو هغې ته به افت نه شی وئیلی، یحی وائی چه په مسلمانانو کښې هم دا طریقه مشهوره ده.

تشریح: یحیی بن سعید رضی الله عنه فرمائی چه د میوو د نقصان پوره کولو چه په حدیث کښې کوم حکم دې نو هغه په دې صورت کښې دې چه کم از کم ثلث مال په هغه افتات سماویه سره ضائع شی، او که د ثلث نه کم خراب شوې وی نو هغې لره اعتبار نشته خکه چه لږ ډیر نقصان خو کیږي په سوداگرۍ کښ، وړاندې یحیی رضی الله عنه فرمائی چه زموږ په زمانه کښې د مسلمانانو عمل (عادت) هم دا دې.

## بَابُ فِي مَنَعِ الْمَاءِ

د فصل نه داوېود منع کولو د ممانعت بیان

[۳۴۷۳] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا يُمْنَعُ فَضْلُ الْمَاءِ لِمَنْعِهِ الْكَلَاءُ".

د ابوهریره رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائی دی دزیاتې شوو او بونه دي خوک منع کول نه کوي ددې دپاره چه گیاه بچ پاتې شی.

قوله: (۱) قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - لَا يُمْنَعُ فَضْلُ الْمَاءِ لِمَنْعِهِ الْكَلَاءُ

(۱) : تقدیر په ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۵۳۴) (حسن)

(۲) : تقدیر په ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۲۳۵۷)، وقد أخرجه: صحيح البخاري / المساقاة ۲ (۲۳۵۳)، صحيح مسلم / المساقاة ۸ (۱۵۶۶)، سنن الترمذي / البيوع ۴۵ (۱۲۷۲)، سنن ابن ماجه / الأحكام ۱۹ (۲۴۲۸)، موطا امام مالك / الأضحية ۲۵ (۲۹) (صحيح)



## شرح الحديث :

مقصد دا دې چه کومې اوبه د انسان د خپل ضرورت نه زیاتې وی د هغې د ورکړې نه انکار کول نه دی پکار دا نفی فی نفسه عام ده خو دلته دا حدیث د یو خاص صورت سره ذکر کړې شوې ده یعنې «لِيُمنَعَ بِهِ الْكَلَاءُ» یعنې د اوبو د ورکړې نه ځکه انکار کوی چه هغه ذریعه جوړه کړی د گیا د نه راختلو، چه د هغې مثال شارحینو دا لیکلې دې چه یو سړی په ارض موات کښې د هغې احیاء کولو سره په هغې کښې کوڅی او کنستلو چه د هغې په وجه باندې هغه د هغې کوڅی مالک شو او صورت حال دا دې چه د هغې په خوا کښې چه کوم موات قسم زمکې پرته دی چه په هغې کښې اتفاق سره گیا وغیره هم راتوکیږی نو چونکه دې سړی دا زمکې نه دی احیاء کړې په دې وجه د دې مالک شوې هم نه دې، په دې وجه اوصولا د دې زمکو گیا باندې د هغه حق نشته چه نور خلق د دې نه منع کوی چه هغوی خپل څاروی دلته راولی او وې خړوی، خو چه څاروی هلته د خریدو دپاره راځی نو هغوی ته به د گیا سره د اوبو ضرورت هم راځی، اوس دا سړی یعنې صاحب الماء دې څاروولره د خپل کوڅی د اوبه ځکلو نه منع کوی چه خلق دلته خپل څاروی راوستل پریږدی، نو په دې طریقه به د صاحب الماء دپاره دا گیا محفوظه شی، په دې حدیث کښې د دې نه منع راغلې ده چه د خپل ضرورت نه زیاتې اوبه مه منع کوئ چه د هغې په ذریعه خلق د گیا نه منع کړې شی. والحديث أخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجة من حديث الأعرج عن أبي هريرة رضي الله عنه قاله المنذري.

[۳۴۷۴] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "ثَلَاثَةٌ لَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: رَجُلٌ مَنَعَ ابْنَ السَّبِيلِ فَضْلَ مَاءٍ عِنْدَهُ، وَرَجُلٌ حَلَفَ عَلَى سِلْعَةٍ بَعْدَ الْعَصْرِ، يَعْنِي كَاذِبًا، وَرَجُلٌ بَايَعَ إِمَامًا فَإِنْ أَعْطَاهُ وَفَى لَهُ، وَإِنْ لَمْ يُعْطِهِ لَمْ يَفِ لَهُ".

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلى دی درې قسمه کسان داسې دي چه الله تعالى به ورسره د قیامت په ورځ خبرې ونکړي یوهغه کس دې د چاسره چه سیوانی اوبه موجود وي اودمسافرنه ئې منع کړي، دویم هغه کس دې څوک چه دمازیگرنه پس دخپلې سوداد خرڅولو دپاره په دروغه قسم وخوري دریم هغه کس دې چاچه دامام سره بیعت کړې وي بیا که چرې امام ده ته مال ورکړي نودې ورسره لوظ پوره کوی اوکه امام څه ورنکړي نودې ورسره لوظ نه پوره کوی (یعنی دده بیعت د دنیا حاصلولودپاره وي).

قوله: «ثَلَاثَةٌ لَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَجُلٌ مَنَعَ ابْنَ السَّبِيلِ فَضْلَ مَاءٍ عِنْدَهُ الْخ»

یعنی درې سړی داسې دی چه الله پاک به د قیامت په ورځ باندې هغوی سره د (نرم) کلام او رحم او کرم معامله نه کوی یو هغه سړی چه مسافر ته د خپل ضرورت نه د زیاتې اوبو ورکولو نه انکار اوکړی. د دې اوبو دوه صورتونه دی که دا د هغه خپل ملک وی نو بیا خو

۱: سنن الترمذي/السير ۳۵ (۱۵۹۵)، (تحفة الأشراف: ۱۲۴۷۲)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/الشهادات ۲۲ (۲۶۷۲)، الأحكام ۴۸ (۷۲۱۲)، المساقاة ۱۰ (۲۳۶۹)، صحيح مسلم للإيمان ۴۶ (۱۰۸)، سنن النسائي/البيوع ۶ (۴۴۶۷)، سنن ابن ماجة/التجارات ۳۰ (۲۲۰۷)، الجهاد ۴۲ (۲۸۷۰)، مسند احمد (۲۵۳/۲، ۴۸۰) (صحيح)





وَسَلَّمَ ثَلَاثًا، أَسْمَعُهُ يَقُولُ: "الْمُسْلِمُونَ شُرَكَاءُ فِي ثَلَاثٍ: فِي الْكَلِّ، وَالْمَاءِ، وَالنَّارِ".

ابو خداش په مهاجرینو صحابه کرامو کښې د یو کس نه روایت کوی فرمائیل ئې چې مادنې عليه السلام سره جهاد کړې دې ما دهغه نه درې پیري اوريدلی دی چه فرمائیل ئې مسلمانان د یوبل سره په درې خیزونو یعنی گيا، اوبه، او اور کښې شریک دي.

(الْمُسْلِمُونَ شُرَكَاءُ فِي ثَلَاثٍ فِي الْكَلِّ وَالْمَاءِ وَالنَّارِ)

د ابو په باره کښې تفصیل په کتاب الزکوة کښې تیر شوې دې چه اوبه درې قسمه دی د هر یو حکم ځانله ځانله دې د کلاء په باره کښې هم اوس خبره تیره شوه چه په ارض موات کښې چه کومه گيا وی چا دپاره هم جائز نه دی چه د هغې نه خلق منع کړی، او دریم خیز په دې حدیث کښې چه په هغې کښې ئې د مسلمانانو شرکت ښودلې دې هغه اور دې، په بذل کښې لیکلی دی چه په اور کښې د شرکت کیدل د هغې د رنړا او د گرمیدولو په اعتبار سره دې چه د هغې په خوا کښې د گرمیدو نه څوک منع نه کړی، او د دې نه گرمې سکروټې مراد نه دی، نه په ده باندې هغوی ته ورکول واجب دی او نه د بل دپاره اخستل بغیر د مالک د اجازت نه جائز دی.

### بَابُ فِي بَيْعِ فَضْلِ الْمَاءِ

د زیاتی اوبو د خرڅولو بیان

[۳۴۷۸] (حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النُّقَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْعَطَّارُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ أَبِي الْهَيْثَمِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ بَيْعِ فَضْلِ الْمَاءِ".

د ایاس بن عبد نه روایت دې فرمائی چه نبی عليه السلام د زیاتی اوبو د خرڅولو نه منع فرمائیلې ده. **(نَهَى عَنْ بَيْعِ فَضْلِ الْمَاءِ)** یعنی د خپل ضرورت نه د زیاتی اوبو د خرڅولو نه، یعنی پیسې اخستلو سره هغه ته د ورکولو نه رسول الله عليه السلام منع او فرمائیلې، اوبه که د صاحب الماء ملکیت دې نو بیا خود دې د بیع نه منع د معروف او احسان د باب نه ده، یعنی دا به خلاف اولی وی، او که غیر مملوک دې نو بیا به دا نهی د تحریم دپاره وی لکه چه اوس وړاندې تیر شو دا تفصیل. والحديث أخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، وقال الترمذی حديث حسن صحيح، قاله المنذرى

### بَابُ فِي ثَمَنِ السَّنَوْرِ

د پیښود قیمت اخستلو د ممانعت بیان

د ثمن کلاب باب کوم چه وړاندې را روان دې هغه خو مختلف فیه دې خو ثمن سنور یعنی د دې بیع په اتفاق د علماء کرامو جائز ده اگر چه د بعض سلفو په دې کښې هم اختلاف دې پس په بذل کښې د خطابې نه نقل دی. **(وكره بيعه ابوهريرة وجابر وطاؤس ومجاهد عليه السلام)** آه

۱: سنن الترمذی/البیوع ۴۴ (۱۲۷۱)، سنن النسائی/البیوع ۸۶ (۴۶۶۵)، سنن ابن ماجه/الرمون ۱۸ (۲۴۷۶)، (تحفة الأشراف: ۱۷۴۷)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱۳۸/۳، ۴۱۷)، سنن الدارمی/البیوع ۶۹ (۲۶۵۴) (صحيح)

[۳۴۷۹] (۱) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، م، وَحَدَّثَنَا الرَّيِّعُ بْنُ نَافِعٍ أَبُو تَوْبَةَ، وَعَلِيُّ بْنُ بَحْرٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا عِيسَى، وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ، أَخْبَرَنَا، عَنْ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُوْيَانَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ، وَالسَّنُورِ".

جابر بن عبدالله رضی اللہ عنہ نه روایت دی فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم دپیشو اودسپی دخرخولونه اودهغی دقیمت اخستلونه منع فرمائیلی ده.

[۳۴۸۰] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ زَيْدِ الصَّنَعَانِيِّ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ ثَمَنِ الْهَرَّةِ".

دجابر بن عبدالله رضی اللہ عنہ نه روایت دی فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم دپیشود قیمت اخستلونه منع فرمائیلی ده.

﴿ نَهَى عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ وَالسَّنُورِ ﴾ او د دی نه په روستو حدیث کنبی صرف د هره ذکر دی. ﴿ نَهَى عَنْ ثَمَنِ الْهَرَّةِ ﴾ ثمن هره خو د جمهورو په نزد جائز دی په دی وجه د دی حدیث خو جوابونه کړې شوي دي، په دی دوه احادیثو کنبی د رومبی حدیث په باره کنبی خو امام ترمذی رحمہ اللہ فرمائی: ﴿ هذا حديث في اسناده اضطراب الى آخر ما ذكر ﴾ او د دویم حدیث په باره کنبی په بذل کنبی لیکلې دی ﴿ قال الترمذي غريب ﴾ وقال النسائي هذا منكر اهـ او دویم جواب د نسخ ورکړې شوي دي، او دریم جواب دا دی چه دا په متوحش باندي محمول دی، یعنی کومه پیشو چه عاده نه وی د ځنگلی ځناورو په شان وی نو چونکه هغه غیر مقدور التسليم وی په دی وجه د هغی بیع ناجائز ده. حدیث جابر الثاني اخرجه الترمذي والنسائي وابن ماجه، قاله المنذري.

## باب فی اثمَانِ الْکَلَابِ

د سپود قیمت اخستلو بیان

[۳۴۸۱] (۳) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهُ "نَهَى عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ، وَمَهْرِ الْبَيْتِيِّ، وَخُلُوانِ الْكَاهِنِ".

د ابو مسعود رضی اللہ عنہ نه روایت دی فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم دسپی دقیمت: اخستلو اود زناکارې بشخي داجرت اخيستلو اود فال کتونکي دامن نه منع فرمائیلي ده.

قوله: ﴿ نَهَى عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ وَمَهْرِ الْبَيْتِيِّ وَخُلُوانِ الْكَاهِنِ ﴾

مذاهب د ائمة:

په دی حدیث کنبی د بیع د کلب نه منع کړې شوي ده، د امام شافعی او احمد رضی اللہ عنہ مذهب هم

<sup>۱</sup>: سنن الترمذي/البیوع ۴۹ (۱۲۷۹)، (تحفة الأشراف: ۲۳۰۹)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/المساقاة ۹ (۱۵۶۷)، سنن النسائي/الذبايح ۱۶ (۴۳۰۰)، البيوع ۹۰ (۴۶۷۲)، سنن ابن ماجه/التجارات ۹ (۲۱۶۱)، مسند احمد (۳۳۹/۳) (صحيح)

<sup>۲</sup>: سنن الترمذي/البیوع ۴۹ (۱۲۸۰)، سنن ابن ماجه/الصعيد ۲۰ (۳۲۵۰)، (تحفة الأشراف: ۲۸۹۴) ویأتي هذا الحديث في الأطعمه (۳۸۰۷) (صحيح)

<sup>۳</sup>: انظر حديث رقم: (۳۴۲۸)، (تحفة الأشراف: ۱۳۴۰۷، ۱۰۰۱۰) (صحيح)



دا دې د احنافو په نزد بيع د کلب جائز ده که هغه معلم وي او که غير معلم، د امام مالک رحمته الله عليه درې روايتونه دي د جواز او د عدم جواز، والثالث يجب القيمة لا الثمن، يعني بيع خوئي اگر که جائز بالکل هم نه ده خو که يو سړې د بل چا سپې مړ کړې يا ئې ضائع کړې، نو بيا د هغې قيمت يعني ضمان ورکول واجب وي، او د امام ابو يوسف رحمته الله عليه نه يو روايت دا دې چه د کلب عقور بيع جائز نه ده او عطاء او ابراهيم نخعي فرمائي «يجوز بيع كلب الصيد دون غيره، ويدل عليه ما أخرجه النسائي من حديث جابر قال لقي رسول الله ﷺ عن ثمن الكلب الا كلب صيد» الى آخر ما في العون.

دا حديث د شوافعو او د حنابلة خو موافق دې نو احنافو د دې جواب دا ورکړې دې چه دا حديث د هغه زمانې دې چه کله په امر د کلاب کښې تشديد وو تردې چه د هغوی د قتل حکم ورکړې شوې وو چه روستو د اکثرو په نزد منسوخ شو، په امر د کلاب کښې د تشديد بحث په کتاب الطهارة «باب الوضوء من سؤر الكلب» کښې تير شوې دې. والحديث أخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجه، قاله المنذري

[۳۴۸۱] (۱) حَدَّثَنَا الرَّبِيعُ بْنُ نَافِعٍ أَبُو تَوْبَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ يَعْنِي ابْنَ عَمْرٍو، عَنْ عَبْدِ الْكَرِيمِ، عَنْ قَيْسِ بْنِ حَبِثٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "مَنْ لَقِيَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ، وَإِنْ جَاءَ يَطْلُبُ ثَمَنَ الْكَلْبِ، فَأَمْلَأْكَهُ تَرَابًا".

د عبد الله بن عباس رضي الله عنه نه روايست سه فرمائي چه نبی ﷺ دسپې دقيمت اخستونه منع فرمائيلى ده، او کچري خوک درته دسپې دقيمت اخستودپاره راشي نودده لپه دخاورونه دکه کړئ (يعنى قيمت مه ورکوى).

[۳۴۸۲] (۲) حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنِي عَوْنُ ابْنِ أَبِي جَحِيفَةَ، أَنَّ أَبَاهُ، قَالَ: إِنْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "مَنْ لَقِيَ الْكَلْبِ".

ابوجحيفه دخپل پلارنه روايت کوى فرمائي چه نبی ﷺ دسپې دقيمت اخستونه منع فرمائيلى ده.

[۳۴۸۴] (۳) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَمْدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي مَعْرُوفُ بْنُ سُوَيْدٍ الْجَدَامِيُّ، أَنَّ عَلِيَّ بْنَ رِجَاءٍ اللَّخْمِيَّ، حَدَّثَهُ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا يَحِلُّ ثَمَنُ الْكَلْبِ، وَلَا حُلْوَانُ الْكَاهِنِ، وَلَا مَهْرُ الْبَيْتِ".

دابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه نبی ﷺ فرمائيلى دى حلال نه دى دچا دپاره دسپې قيمت اخستل اونه دفالگرددنه اونه دزنا کارې بنخي اجرت.

په دې حديث کښې دوه اجزاء نور دي چه د هغې نه منع کړې شوې ده «مهر البهي» يعني د زنا کارې د اجرت نه، چه هغې ته مجازا مهر ونيلې شوې دې او دويم خيز «حلوان کاهن» ي

۱: تفرد به أبو داود (تحفة الأشراف: ۱۳۳۲)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱/۲۳۵، ۲۷۸، ۲۸۹، ۳۵۰، ۳۵۶) (صحيح الإسناد)

۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۸۱۲)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للبيوع ۱۱۳ (۲۲۳۷) (صحيح)

۳: سنن النسائي للصيد والذبائح ۱۵ (۴۲۹۸)، (تحفة الأشراف: ۱۴۲۶۰) (صحيح)

هغه ته ورکړې شی، کاهن ته تلل، د هغه د تصدیق دپاره او هغه ته په کهانت باندې اجرت ورکول، ټول حرام دی، بلکه د دې خبرې تصدیق خو کفر دې که دهغه د علم غیب په اعتقاد سره وی، په کوکب الدرې کښې لیکلې دی چه که د کاهن تصدیق ترې په داسې انداز اوکړې شی چه بعض جنات د هغه تابع وی او هغوی راځی ده ته خبر ورکوی نو په دې صورت کښې به تصدیق کفر نه وی.

### بَابُ فِي ثَمَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْتَةِ

#### د شرابو او د مردارې د قیمت اخستویان

[۳۴۸۵] عَنْ عَبْدِ الْوَهَّابِ بْنِ بُحْتُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الْأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ الْخَمْرَ وَثَمَنَهَا، وَحَرَّمَ الْمَيْتَةَ وَثَمَنَهَا، وَحَرَّمَ الْخَنزِيرَ وَثَمَنَهُ».

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلى دی الله تعالى شراب او د شرابو قیمت او مرداره او د مردارې قیمت او خنزیر او د خنزیر قیمت حرام کړې دې.

«عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- قَالَ « إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ الْخَمْرَ وَثَمَنَهَا وَحَرَّمَ الْمَيْتَةَ وَثَمَنَهَا وَحَرَّمَ الْخَنزِيرَ وَثَمَنَهُ »

#### شرح الحديث من حيث الفقه :

په دې حدیث کښې د بیع د خمر او بیع د میتة او هم دغه شان د بیع خنزیر د دې درې واړو حرمت یو ځانې بیان کړو. د فقهاء په نزد د دې څیزونو تحریم او د بیع په نوعیت کښې فرق دې، د هدایه په متن کښې خو دا دی «واذا كان احد العوضين او کلاهما محرما فالبيع فاسد کالبيع بالمیته والدم والخمر والخنزیر» په دې باندې صاحب هدایه فرمائی چه د مصنف دا کلام مجمل دې تفصیل ته محتاج دې کوم چه به مونږ بیانوو، بیا وړاندې په تفصیل کښې هغوی فرمائی چه بیع بالمیته والدم او هم دغه شان بالحرية خو بیع باطل ده لانعدام رکن [۳۴۸۱] البیع وهو مبادلة المال بالمال په دې وجه دا څیزونه د چا په نزد هم مال نه شمیرلې کیږی، او بیا وړاندې فرمائی چه بیع الخمر والخنزیر دا دواړه بیع فاسدې دی نه باطل، د حقیقت بیع د موجود کیدو د وجې نه، یعنی مبادلة المال بالمال ځکه چه خمر مال دې، او خنزیر هم د بعضو په نزد مال دې یعنی عند اهل الكتاب، او بیع باطل د ملک دپاره مفیده نه وی په خلاف د بیع فاسد چه هغه مفید د ملک وی پس د قبض نه، د دې نه پس بیا صاحب هدایه نور تفصیل کړې دې او د فرق صورتونه ئې بیان کړی دی هغې ته رجوع اوکړه که غواړې.

د دې نه په روستو روایت کښې د میتة او د خنزیر نه پس د والاصنام زیادت دې یعنی بیع صنم حرامه کړې شوې ده په کوکب درې کښې لیکلې دی چه بیع د اصنام حرام ده په داسې حال کښې چه د اصنام بیع د اصنام کیدو په حیثیت سره اوکړې شی خو که یو سړې د هغې بیع په بل نیت سره اوکړې لکه یو سړې د لرگو بیع اوکړې چه په هغې کښې د لرگو نه تراشلې شوې بتان هم وی نو دا بیع به جائز وی په دې شرط چه دا بتان د لرگو په قیمت



باندې خرڅ کړی، مگر دا چه د یو داسې سړی په لاس باندې بیع کیږی چه د هغه په باره کښې دا معلومه وی چه دا سړی به د دې صنم تعظیم یا عبادت کوی. آه (کوکب ۳/۲۷۴)

[۳۴۸۶] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رِيَاحٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ عَامَ الْفَتْحِ وَهُوَ بِمَكَّةَ: "إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ بَيْنَهُمُ الْخَيْرَ وَالْمَيْتَةَ وَالْخَنْزِيرَ وَالْأَصْنَامَ، فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَرَأَيْتَ شُحُومَ الْمَيْتَةِ فَإِنَّهُ يُطْلَى بِهَا السُّفْنُ، وَيُذْهَنُ بِهَا الْجُلُودُ، وَيَسْتَصْبَحُ بِهَا النَّاسُ، فَقَالَ: لَا، هُوَ حَرَامٌ، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدَ ذَلِكَ: قَاتِلِ اللَّهَ الْيَهُودَ، إِنَّ اللَّهَ لَمَّا حَرَّمَ عَلَيْهِمْ شُحُومَهَا أَجْمَلُوهَا، ثُمَّ بَاعُوهَا فَأَكَلُوا ثَمَنَهَا."

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه د نبی صلی الله علیه و آله نه مې دمي دفتر په کال باندې اوریدلی دی او هغه په مکه کښې وو فرمائیل ئې چه الله تعالی د شرابو خرڅول او د مرداري او د خنزیر خرڅول او د بتانو خرڅول حرام کړيدي، په دې وخت کښې عرض او کړې شوي د الله رسوله په وازدر د مرداره کښې ستا څه خیال دې په دې باندې کشتی ته رنګ ورکولې شي او د دې تیل په خرمنو باندې لگولې شي او درنرادپاره ئې خلق استعمالوي نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل دا په هر حال کښې حرام دي او په همدې وخت کښې نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل: الله تعالی دي په یهودیانو لعنت او کړي هغوی په خلقو باندې وازده حرامه کړیده هغوی پخه کړه اوبیا ئې خرڅه کړه او دهغې قیمت ئې وخورلو.

قوله: ﴿فَقِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ شُحُومَ الْمَيْتَةِ فَإِنَّهُ يُطْلَى بِهَا السُّفْنُ وَيُذْهَنُ بِهَا الْجُلُودُ وَيَسْتَصْبَحُ بِهَا النَّاسُ فَقَالَ لَا هُوَ حَرَامٌ﴾

### شرح الحديث :

یعنی چه کله رسول الله صلی الله علیه و آله د مرداري د خرڅولو نه منع او فرمائیله نو په دې باندې بعض صحابه کرامو رضي الله عنهم رسول الله صلی الله علیه و آله ته عرض او کړو یا رسول الله صلی الله علیه و آله د مرداري د وازګې څه حکم دې ځکه چه دا په کشتو باندې مړلې شی (چه د غور والی د وجې نه دننه اوبه خورې نه شی، او هم دغه شان په خرمنو باندې مړلې شی د نرمولو دپاره او هم دغه شان خلق د دې په ذریعه رنرا حاصلوی یعنی په مصباح او ډیوه کښې ئې بلوی رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل دا جائز نه ده بلکه حرام ده.

په کوکب کښې لیکلې دی چه دلته دا سوال واردیږی چه کله رسول الله صلی الله علیه و آله د بیع د میتة حکم بیان فرمائیلې وو چه هغه حرام دې نو په میتة کښې د هغې ټول اجزاء داخل شوي وو، نو بیا د مرداري د وازګې په باره کښې مستقل سوال کول د څه په وجه باندې وو؟ د دې جواب ئې دا لیکلې دې چه چونکه صحابه کرامو رضي الله عنهم ته دا خبره د مخکښې نه معلومه وه چه بعض اجزاء د میتة داسې دی کوم چه جائز الاستعمال دی لکه د هغې خرمن او هم دغه شان عظام د میتة نو په دې وجه هغوی د شحم د میتة په باره کښې سوال او کړو چه

۱: صحیح البخاري/البیوع ۱۱۲ (۲۲۳۶)، المغازی ۵۱ (۴۲۹۶)، تفسیر سورة الأنعام ۶ (۴۶۳۳)، صحیح مسلم/المساقاة ۱۳ (۱۵۸۱)، سنن الترمذي/البیوع ۶۱ (۱۲۹۷)، سنن النسائي/الفرع والعتيرة ۷ (۴۲۶۱)، البیوع ۹۱ (۴۶۷۳)، سنن ابن ماجه/التجاراات ۱۱ (۲۱۶۷)، (تحفة الأشراف: ۲۴۹۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳/۳۲۴، ۳۲۶، ۳۷۰) (صحیح)

ممکنه ده چه هغه هم د اهاب وغيره په شان وی خصوصاً چه هر کله د شحم د ميتۀ په ډيرو خيزونو کښې ضرورت راځي چه د هغې طرف ته صحابه کرامو عليه السلام په خپله خپل سوال کښې اشاره کړې ده، بيا وړاندې په کوکب کښې ليکلې دي چه د رسول الله عليه السلام د جواب حاصل دا دي چه د ميتۀ د اجزاء نه د انتفاع د جواز بنياد د رطوبات نجسه په زوال باندې دي، او د شحم نه زوال رطوبت ممکن نه دي، بيا د دي نه روستو رسول الله عليه السلام دا حرمت موکد او فرمائيلو په روستو جمله کښې **« قاتل الله اليهود الخ »** آهد دې جملې تشرېح دا ده رسول الله عليه السلام فرماني چه الله پاک دې هلاک او برباد کړي يهودو لره چه الله پاک په هغوی باندې کله د مړي وازگه حرامه کړې وه نو هغوی د دي د تحليل دا حيله اختيار کړه چه وازگه ئې په اور باندې ويلې کړه او بيا ئې هغه خرڅوله او د هغې د ثمن نه ئې فائده اوچتوله، دا حيله په دې لحاظ سره وه چه په شحم باندې د شحم اطلاق تر هغه وخته پورې وی چه ترڅو هغه په اور باندې ويلې نه کړې شي او د ويلې کولو نه پس د هغې نوم بدل شي او په ځانې د وازگې ورته ډل وائی. خو په داسې کولو سره د هغې حقيقت او حکم خو نه بدليږي، امام خطابی رحمه الله په دي باندې ليکي چه د دي نه د هر هغه حيلې بطلان ثابتيږي چه هغه وسيله جوړه شي يو حرام ته د رسيدو، او دا چه صرف د هيئت په تغير او د اسم په تبديل سره د حرام خيز حکم نه بدليږي. آه

**« فقال : لا هو حرام »** د دي په شرح کښې اختلاف دي هغه دا چه هو ضمير څه ته راجع دي حافظ وائی چه بعض علماء کرام چه په هغوی کښې امام شافعي رحمه الله هم دي د دوی په نزد دا ضمير د بيع طرف ته راجع دي يعنی د شحوم دميتۀ بيع حرامه ده، او اکثر علماء کرامو د دي ضمير راجع کړې دي د انتفاع طرف ته، لهدا د هغوی په نزد نه صرف بيع د ميتۀ ناجائز ده بلکه مطلقاً انتفاع د هغې د ټولو اجزاء نه ناجائز ده سوا د هغې نه چه د هغې په تخصيص باندې دليل قائم دي يعنی جلد مدبوغ (داکلام خو وو د شحم ميتۀ سره متعلق) د دي نه پس هغوی د دهن متنجس يعنی کوم تيل وغيره چه د څه نجس خيز غورزیدو سره ناپاک شي په دي باره کښې ئې د علماء کرامو اختلاف بيان کړې دي هغه دا چه د جمهورو په نزد د هغې نه انتفاع جائز ده او د امام احمد رحمه الله او ابن الماجشون مالکی په نزد ناجائز ده. آه (من التحفة) امام خطابی رحمه الله هم د **« لا هو حرام »** تعلق د بيع سره بيان کړې دي (غالباً د امام شافعي رحمه الله د مسلک په تائيد کښې لکه چه د حافظ نه مخکښې نقل کړې شو) پس هغوی ليکي: وفيه دليل على جواز الاستصباح بزيت نجس وان بيعه لا يجوز **« آه خطابی شحم دميتۀ او دهن متنجس په يو درجه کښې اوساتل د شوافعو د مسلک د وجې نه گڼي د جمهورو په نزد د دواړو په حکم کښې فرق دي، ځکه چه د شحم د ميتۀ نه انتفاع د جمهورو په نزد ناجائز ده، او قسم ثاني يعنی د دهن متنجس نه انتفاع فی غير الاكل مثل الاستصباح جائز ده، خلاف ثابت دي امام احمد او ابن الماجشون لره لکه چه اوس تير شو په کلام د حافظ کښې عرف الشذی ۳۰۱ کښې د دي حديث د لاندې ليکلې دي چه په حديث الباب کښې اشاره ده دي طرف ته چه د نجس العين بيع باطله ده، امام ابو حنيفه رحمه الله فرماني چه شحم ميتۀ نجس دي،**



د دې نه مطلقا انتفاع جائز نه ده، او هغه غوړی یا تیل چه کوم د څه عارض په وجه باندې ناپاک شی مثلا سقوط د مړې چه په پریوتلو سره په دې کښې مړه شی نو دا تیل ناپاک ضرور دې خو نجس العین نه دې، د دې بیع هم جائز ده او انتفاع یعنی استصباح هم جائز ده، او د امام شافعی رحمته الله علیه په نزد د شحم د میتة نه هم انتفاع او استصباح جائز ده. آه پس خلاصه دا شوه چه د شحم د میتة بیع خو بالاتفاق ناجائز ده او انتفاع فی غیر الاکل والشرب کښې اختلاف دې د جمهورو په نزد هغه هم ناجائز ده، د امام شافعی رحمته الله علیه په نزد جائز دې، او د دهن متنجس نه انتفاع د جمهورو په نزد جائز ده د امام احمد رحمته الله علیه په نزد هغه هم ناجائز ده اوس پاتې شوه دا چه د دې د بیع څه حکم دې نو ښکاره خبره دا ده چه هر کله انتفاع جائز ده نو بیع او شراء به هم جائز وی پس په عرف الشذی کښې د احنافو په نزد د دې بیع ته جائز وئیلی شوي دی د نورو امامانو د مسلک دې تحقیق او کړې شی. والله تعالی اعلم.

[۳۴۸۷] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، قَالَ: كَتَبَ الْيَعْقُوبُ عَنْ جَابِرٍ، نَحْوَهُ، لَمْ يَقُلْ هُوَ حَرَامٌ.

د جابر رضی الله عنه نه ددې روایت په شان روایت منقول دي الیکن په دې روایت کښې دا الفاظ نشته چه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل نه هغه خو حرامه وه.

[۳۴۸۸] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، أَنَّ بَشَرَ بْنَ الْمُقْصِلِ، وَخَالِدَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَاهُمَا الْمَعْنَى عَنْ خَالِدِ الْحَدَّادِ، عَنْ بَرْكَةَ، قَالَ مُسَدَّدٌ فِي حَدِيثٍ، خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ بَرْكَةَ أَبِي الْوَلِيدِ ثُمَّ اتَّفَقَا، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسًا عِنْدَ الرِّكْنِ، قَالَ: فَرَفَعَ بَصَرَهُ إِلَى السَّمَاءِ فَضَحِكَ، فَقَالَ: "لَعَنَ اللَّهُ الْيَهُودَ ثَلَاثًا: إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَيْهِمُ الشُّحُومَ فَبَاغَوْهَا، وَآكَلُوا أَلْمَانَهُمَا، وَإِنَّ اللَّهَ إِذَا حَرَّمَ عَلَى قَوْمٍ أَكَلَ شَيْءٌ حَرَّمَ عَلَيْهِمْ ثَمَنَهُ." وَلَمْ يَقُلْ فِي حَدِيثِ خَالِدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الطَّحَّانِ رَأَيْتُ، وَقَالَ: "قَاتَلَ اللَّهُ الْيَهُودَ".

د عبدالله ابن عباس رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله می درکن (حجر اسود) یا رکن شای سره ناست ولیدو راوی وائی چه وئی فرمائیل او آسمان طرف ته ئی وکتل او درې خل ئی وخنډل اوبیا ئی او فرمائیل الله تعالی دي په. یهودیانو لعنت وکړي، کله چه الله تعالی په دوی باندې دخارور وازده حرامه کړه نودرې به خرخوله اوددې قیمت به ئی استعمالولو اویقینا کله چه به الله تعالی په کوم قوم باندې د کوم شی خورل حرام کړل نودهغې قیمت به ئی ورباندې هم حرامولو، دخالد بن عبدالله په حدیث کښې ددې ذکر نشته چه ماد کعبی درکن په خوا کښې نبی صلی الله علیه و آله ولیدو او په دې روایت کښې داسې دي چه الله تعالی دي یهودیان برباد کړي.

[۳۴۸۹] (۳) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، وَوَكَيْعٌ، عَنْ طُعْمَةَ بْنِ عَمْرِو الْجَعْفَرِيِّ، عَنْ عُمَرَ بْنِ يَسَارٍ الثَّقَلِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الْمُبَرِّقِ بْنِ شُعْبَةَ، عَنِ الْمُبَرِّقِ بْنِ شُعْبَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ بَاغَ الْخَمْرَ فَلْيَشْقِصْ الْخَنَازِيرَ".

(۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۲۴۹۴) (صحيح)

(۲) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۵۳۷۲)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱/ ۲۴۷، ۲۹۳، ۳۲۲) (صحيح)

(۳) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۵۱۵)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۴/ ۲۵۳)، سنن الدارمي للأشربة ۹ (۲۱۴۷) (ضعيف)

د مغیره بن شعبه نه روایت دې فرمائی چې نبی ﷺ فرمائیلى دى چاچه د شرابو خرڅول وکړل نو هغه دى بيا د خنزیرانو غوښې هم ټکړي ټکړي کوي ځکه چې د اهرم د شرابوپه شان حرام کاروباردې.

### شرح الحديث :

قوله: «عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- «مَنْ بَاعَ الْخَمْرَ فَلْيُشَقِّصِ الْخَنَازِيرَ» د تشقیص معنی الذبح بالمشقص، مشقص وائی د غشى تیره سوکې ته، په دې صورت کښې به دا ماخوځ وی د مشقص نه، او یا به د دې معنی جعل الشئ شقصا شقصا یعنی د یو خیز ځانله ځانله ټکړې کول لکه چې د څاروی د ذبح کولو نه پس د غوښې د اصلاح دپاره د هغې جدا جدا ټکړې کولې شی، د دې حدیث نه مخکښې احادیثو کښې د بیع د خمر او بیع د خنزیر د دواړو حکم یعنی په تحریم کښې مساوی کیدل تیر شو خو د ډیرو حلقو حال دا وی چې هغوی خنزیر لره خو عملا او اکلا حرام منی خو د شرابو څکلو او د دې د تجارت نه نه بچ کيږي او نه دا څه عیب گنږي، په دې وجه رسول الله ﷺ د تحریم خمر تاکید دا فرمائی چې کوم سړې عملا د شرابو د بیع او د هغې د تجارت نه ځان نه ساتي نو هغه له پکار دی چې د خنزیر د غوښې تجارت هم شروع کړي او د هغې خوراک دې هم جائز او گنږي ځکه چې شرعا په دواړو کښې څه فرق نشته.

[۳۴۹۰] حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِي الضَّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: "لَمَّا نَزَلَتِ الْآيَاتُ الْآخِرُ مِنْ سُورَةِ الْبَقَرَةِ، خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَرَأَهُنَّ عَلَيْنَا، وَقَالَ: حُرِّمَتِ التِّجَارَةُ فِي الْخَمْرِ."

ام المومنین عائشة رضی الله عنها نه روایت دې فرمائی کله چې د سورة بقره آخری آیت نازل شو نو نبی ﷺ تشریف راوړو او دغه آیت ئې مونږ ته واورولو او وئې فرمائیل د شرابو تجارت حرام کړې شو.

قوله: «عَنِ عَائِشَةَ قَالَتْ لَمَّا نَزَلَتِ الْآيَاتُ الْآخِرُ مِنْ سُورَةِ الْبَقَرَةِ خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- فَقَرَأَهُنَّ عَلَيْنَا وَقَالَ «حُرِّمَتِ التِّجَارَةُ فِي الْخَمْرِ»

عائشه رضی الله عنها فرمائی چې کله د سورة بقره آخری آیتونه نازل شو (چې په هغې کښې د ربا حرام والي ذکر دې) نو رسول الله ﷺ بهر تشریف راوړو او مونږ ته ئې هغه آیتونه واورول او وې فرمائیل چې د شرابو تجارت حرام دې.

### په ظاهر د حدیث باندې یو اشکال او د هغې جواب :

ددې حدیث په شرح کښې شارحینو لیکلی دی چې د تحریم خمر ذکر په سورة مائده کښې دې او د هغه آیت د ربا نه کوم چې د سورة بقره په اوخرو کښې دې ډیر مخکښې نازل شوې وو، ځکه چې مشهور ده چې آیت ربا آخر ما نزل یا من آخر ما نزل من القرآن دې، او د دې

۱: صحیح البخاري/ الصلاة ۷۳ (۴۵۹)، والبیوع ۲۵ (۲۰۸۴)، ۱۰۵ (۲۲۲۶)، وتفسیر آل عمران ۴۹ (۴۵۴۰)، ۵۲ (۴۵۴۳)، صحیح مسلم/ المساقاة ۱۲ (۱۵۸۰)، سنن النسائي/ البيوع ۸۹ (۴۶۶۹)، سنن ابن ماجه/ الأشربة ۷ (۳۳۸۲)، (تحفة الأشراف: ۱۷۱۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۷۶)، ۱۰۰، ۱۲۷، ۱۸۶، ۱۹۰، ۲۸۷، سنن الدارمي/ البيوع ۳۵ (۲۶۱۲) (صحیح)



حديث سياق د دې ترتيب منافی دې، د دې نه د تحريم خمر متاخر کيدل ښکاره کيږي، نو د هغې توجيه دې حضراتو دا کړې ده چه اگر که دا صحيح ده چه تحريم الخمر د ربا نه مخکښې دې خوکيدې شي چه د تجارت دخمر تحريم وی کوم چه په دې حديث کښې ذکر موخو وی د تحريم الخمر نه نو هيڅ اشکال پاتې نه شو او دا هم ممکنه ده چه رسول الله ﷺ د تحريم خمر په وخت هم د تحريم د تجارت خبر ورکړې وی او بيا دوباره مکرر آيت نزول ربا نه پس ئې هم د تحريم د تجارت خبر ورکړې وی د تاکيد او مبالغې دپاره امام بخاري رحمه الله په ابواب المساجد کښې باب قائم کړو (باب تحريم تجارة الخمر في المسجد) يعنی په جمات کښې د خلقو مخکښې د تجارت خمر حرمت بيانول چه تجارت خمر حرام دې، لکه څنگه چه د نورو څيزونو نصيحت په مساجدو کښې کيږي لهذا في المسجد دا ظرف د تحريم سره متعلق دې نه د تجارت سره، گيڼې مطلب به فاسد شي يعنی په جمات کښې د شرابو د تجارت حرام کيدل، نو آيا په غير د مسجد نه تجارت د خمر حرام نه دې؟، پس د بخاري په حديث الباب کښې دې چه د نزول د آيات نه پس رسول الله ﷺ مسجد ته تشریف يوړو او بيا ئې د تجارت دخمر د حرمت اعلان اوکړو.

والحديث اخرجه البخاري ومسلم والنسائي وابن ماجة، قاله المنذري

[۳۴۹۱] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الْأَعْمَشِ بِإِسْنَادِهِ وَمَعْنَاهُ، قَالَ: الْآيَاتُ الْأَوَاخِرُ فِي الرِّبَا.

د اعمش نه تير شوي روايت په شان روايت منقول دې البته په دې روايت کښې داسې ذکر دي چه د سورة بقرې آخری ايت دسود دحرمت په باره کښې نازل شوې دې.

### باب فِي بَيْعِ الطَّعَامِ قَبْلَ أَنْ يُسْتَوْفَى

بيان دغلي خرڅولو مخکښې دقبضي کولونه

[۳۴۹۲] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «مَنْ ابْتِاعَ طَعَامًا، فَلَا يَبْعُهُ حَتَّى يُسْتَوْفَى».

دعبد الله بن عمر رضی الله عنهما نه روايت ئې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائيلى دي څوك چه دخوراك څه شي واخلي نو دهغه وخته پورې دې دغه شي نه خرڅوى ترڅوچه ئې قبضه كړي نه وي. (عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- قَالَ « مَنْ ابْتِاعَ طَعَامًا فَلَا يَبْعُهُ حَتَّى يُسْتَوْفَى » او د دې نه پس د ابن عمر رضی الله عنهما په بل حديث كښې داسې دى (كُنَّا فِي زَمَنِ رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- لَبْتِاعُ الطَّعَامِ فَبِئْسَتْ عَلَيْنَا مَنْ يَأْمُرُنَا بِانْفِاقِهِ مِنَ الْمَكَانِ الَّذِي ابْتِغْنَاهُ فِيهِ إِلَى مَكَانٍ سِوَاهُ قَبْلِ أَنْ يَبْعَهُ - يَغْنَى - جَزَافًا )

(۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۷۳۶) (صحيح)

(۲) صحيح البخاري/اليبوع ۵۱ (۲۱۲۶)، ۵۴ (۲۱۳۳)، ۵۵ (۲۱۳۶)، صحيح مسلم/اليبوع ۸ (۱۵۲۶)، سنن النسائي/اليبوع ۵۳ (۴۵۹۹)، سنن ابن ماجة/التجارات ۳۷ (۲۲۲۶)، (تحفة الأشراف: ۸۳۲۷)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/اليبوع ۱۹ (۴۰)، مسند احمد (۵۷۱، ۶۳، ۲۳/۲، ۴۶، ۵۹، ۶۴، ۷۳، ۱۰۸، ۱۱۱، ۱۱۳)، سنن الدارمي/اليبوع ۲۶ (۲۶۰۲) (صحيح)

[۳۴۹۳] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّهُ قَالَ: "كُنَّا فِي زَمَنِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبْتَاعُ الطَّعَامَ، فَيَبْعُهُ عَلَيْنَا مَنْ يَأْمُرُنَا بِالتَّقَالِيهِ مِنَ الْمَكَانِ الَّذِي ابْتِغَاءُ فِيهِ إِلَى مَكَانٍ سِوَاهُ، قَبْلَ أَنْ نَبِيعَهُ" يَعْنِي جَزَافًا.

د عبدالله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه مونږ د نبی صلی الله علیه و آله په زمانه کښې دخوراک خیزونه اخستل اونبې صلی الله علیه و آله به مونږ ته یوکس رالیږلو او مونږ ته به ئې احکم کولو چه ددې ځانې نه غلې یوسي چرته ته تاسو خستلي دي ودرځولونه مخکښې ئې وزن کړئ. په دې ترجمه الباب او د دې په احادیثو کښې د بیع الطعام قبل الاستيفاء ممانعت دې، استيفاء بمعنی قبض او وصول کول، یعنی که یو سړې د غلې د قسم څه خیز واخلې او د اخستلو نه پس هغه څرخول غواړي نو هغه له پکار دی چه اول په هغې باندي قبضه اوکړي د هغې نه پس هغه څرخ کړي، خو د هر یو خیز قبضه او استيفاء د هغه خیز د حال مناسب وی، د بعضو خیزونو قبضه دا ده چه هغه خیز د بل په لاس کښې ورکړې شی او د بعضو خیزونو قبضه په تخلیه سره کیږي، یعنی بائع خیز لره د څرخولو نه پس مشتری ته دا اوائی چه ستا خیز مې دا دې کیخودلې دې ته چه دا د دې ځانې نه کله اوچتول غواړې اوچت ئې کړه، او په بعض صورتونو کښې قبضه په نقل د هغه خیز باندي کیږي یعنی مشتری چه هغه مبيع د کوم ځانې نه اخستلې ده د هغه ځانې نه هغه بل خوا منتقل کړي، او دا هلته کیږي چه له کوم ځانې کښې د غلې بیع جزافا وی یعنی غلې لره د یو ځانې نه بل ځانې ته منتقل کول د بیع جزافا په صورت کښې هم دا د دې قبضه ده لکه چه د باب په حدیث ثانی کښې دی او که خیز کیلا یا وزنا څرخ کړې شی نو هلته د هغې کیل کول یا وزن کول هم دا د هغې قبضه ده.

د بیع قبل القبض نه نهی په کومو خیزونه کښې ده:

د دې نه پس په دې ځان پوهه کول پکار دی چه دا حکم په طعام کښې خو متفق علیه دې چه د هغې بیع قبل القبض جائز نه ده په دیرو احادیثو کښې د دې تصریح ده، د طعام نه علاوه به په کومو کومو خیزونو کښې دا حکم جاری کیږي په دې کښې د علماء کرامو اختلاف دې:----- په دې کښې څلور اقوال مشهور دي:

۱: د امام شافعی او محمد رضی الله عنه په نزد د هر یو خیز حکم هم دا دې «سواء كان من المكيلات او الموزونات، ومن الماكول او المشروب والمنقول وغير المنقول»

۲: او د شیخینو امام ابوحنیفه او ابویوسف رضی الله عنه په نزد عقار (زمکه) نه علاوه د ټولو منقولاتو دا حکم دې، په دې مذهب کښې صرف د عقار استثناء ده، په خلاف د اول مذهب چه په هغې کښې د یو خیز استثناء هم نشته.

۳: د امام احمد رضی الله عنه په نزد د ټولو مکيلاتو او موزوناتو هم دا حکم دې، د دې نه علاوه د باقی خیزونو دا حکم نه دې.

۴: د امام مالک رضی الله عنه په نزد دا حکم صرف د ماکول او مشروب دې.

(۱) صحیح مسلم للبیوع ۸ (۱۵۲۷)، سنن النسائي للبیوع ۵۵ (۴۶۰۹)، سنن ابن ماجه للتجارات ۳۱ (۲۲۲۹)، (تحفة الأشراف: ۸۳۷)، وقد أخرجه: صحیح البخاري للبیوع ۵۴ (۲۱۳۱)، ۵۶ (۲۱۳۷)، ۷۲ (۲۱۶۶)، موطا امام مالك للبیوع ۱۹ (۴۲)، مسند احمد (۵۶۱، ۱۱۲، ۷/۲، ۱۵، ۲۱، ۴۰، ۵۳، ۱۴۲، ۱۵۰، ۱۵۷) (صحیح)



## د امام مالک او جمهورو یو بل اختلاف :

د دې نه پس دلته یو اختلاف بل دې په هغې باندې هم ځان پوهول پکار دی هغه دا چې د جمهور علماء کرامو او ائمه ثلاث په نزد بیع طعام مطلقا قبل القبض جائز نه ده، یعنی که هغه جزافا اخستلې شوې وی او که کیلا، او د امام مالک رحمته الله علیه په مشهور قول کښې په جزاف او غیر جزاف کښې فرق دی هغه دا چې هغه غله چې جزافا اخستلې شوې وی د هغې بیع قبل القبض جائز ده او کوم چې کیلا اخستلې شوې وی د هغې بیع قبل القبض جائز نه ده او د مشتری دې خیز لره کیل کول هم دا د دې قبضه ده، د امام مالک رحمته الله علیه استدلال د باب د خلورم حدیث نه دې چې هغه الفاظ دا دی

قوله: « نهی ان یبیع احد طعاما اشتراه بکیل حتی یتوفیه » یعنی رسول الله صلی الله علیه و آله منع او فرمائیلې د دې خبرې نه چې څوک هغه طعام لره کوم چې هغه کیلا اخستلې وی هغه د دې بیع د استیفاء نه مخکښې او کړې په دې حدیث کښې د اشتراه بکیل قید ذکر شوې دې، جمهور دا وائی « اشتراه بکیل » دا قید احترازی نه دې، چې د هغې قرینه د باب حدیث اول دې کوم چې مطلق دې، هم دغه شان د باب په حدیث ثانی او ثالث کښې سره د بیع جزاف د تصریح نه د هغې د منتقل کیدو حکم کړې شوې دې، او هم دا نقل خو استیفاء ده کما تقدم قریبا ان قبض کل شی بحسبه.

حدیث ابن عمر رضی الله عنهما الاول اخرجہ البخاری ومسلم والنسائی وابن ماجه، والثانی اخرجہ مسلم والنسائی، والثالث اخرجہ البخاری ومسلم والنسائی وابن ماجه بنحوه، والرابع اخرجہ النسائی، قاله المنذری.

[۳۴۹۴] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، أَخْبَرَنِي نَافِعٌ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: "كَانُوا يَبْكَأُيَعُونَ الطَّعَامَ جُزْأًا عَلَى السُّوقِ، فَتَنَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَبِيعُوهُ حَتَّى يَنْقَلَوْهُ".

د عبد الله بن عمر رضی الله عنهما نه روایت دې فرمائی چې د بازار په برنې حصه کښې به خلقو دغلي ډیري اخستل نونښی عليه السلام ددې خرڅولونه منع او فرمائیلې ترڅو چې داغله ددې ځانې نه بل ځانې ته نقل نکړې شي ددې دپاره چې داوولي خریدار په قبضه کښې راشي.

[۳۴۹۵] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَالِيمٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُو، عَنِ الْمُنْذِرِ بْنِ عَبْدِ الْمَدِينِيِّ، أَنَّ الْقَاسِمَ بْنَ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَهُ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ حَدَّثَهُ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "تَنَى أَنْ يَبِيعَ أَحَدٌ طَعَامًا اشْتَرَاهُ بِكَيْلٍ حَتَّى يَسْتَوْفِيَهُ".

ترجمه: د عبد الله بن عباس رضی الله عنهما نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله ددینه منع فرمائیلې ده چې څوک دې غله نه خرڅوی کومه چې یې په ناپ یا ټول باندې اخستلې وي ترڅو چې ده قبضه کړي نه وي.

(۱): صحيح البخاري / البيوع ۷۲ (۲۱۶۷)، سنن النسائي / البيوع ۵۵ (۴۶۱۰)، (تحفة الأشراف: ۸۱۵۴)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۲/ ۱۵، ۲۱) (صحيح)  
(۲): سنن النسائي / البيوع ۵۴ (۴۶۰۸)، (تحفة الأشراف: ۷۳۷۵)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۲/ ۱۱۱) (صحيح)

[۳۴۹۶] حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ، وَعُمَانُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَا: حَدَّثَنَا وَكَيْهٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ ابْتَاَعَ طَعَامًا فَلَا يَبِيعُهُ حَتَّى يَكْتَالَهُ"، زَادَ أَبُو بَكْرٍ، قَالَ: قُلْتُ لِابْنِ عَبَّاسٍ: لِمَ قَالَ لَا تَرَى أَنَّهُمْ يَتَّبَاعُونَ بِالذَّهَبِ وَالطَّعَامُ مُرْجَى؟

د عبد الله بن عباس رضی اللہ عنہ روایت دې فرمائی چې نبی ﷺ فرمائیلي دي: څوک چې غله واخلي نو هغه وخته پورې دي چې نه خرڅوی ترڅوچه ده پیمانې کړي نه وي، ابوبکر دا اضافه کړیده فرمائی چې ابن عباس ته مې اووئیل چې داممانعت په څه وجه باندې دې؟ هغه او فرمائیل خلقو به د سرو زرو په بدل کېنې غله خرڅوله او حالانکه دوی ته به ددې غلې دملاویدو امید هم وو.

قوله: «قُلْتُ لِابْنِ عَبَّاسٍ لِمَ قَالَ لَا تَرَى أَنَّهُمْ يَتَّبَاعُونَ بِالذَّهَبِ وَالطَّعَامُ مُرْجَاءُ» (۲)

ابن عباس رضی اللہ عنہ چې کله د رسول الله ﷺ دا حدیث نقل کړو چې کوم انسان غله واخلي نو ترڅو پورې چې هغه کیل نه کړی د بل په لاس باندې دې هغه نه خرڅوی نو شاگرد یعنی طاووس رضی اللہ عنہ د هغوی نه تپوس او کړو چې داسې ولې ده؟ نو هغوی د دې منع وجه په یو خاص مثال سره بیان او فرمائیل چې آیا ته گورئ نه چې ډیر خلق په درهم او دینار سره اخلي غله حال دا چې هغه غله موخر او موجل وی، هغوی دا مثال د بیع سلم ورکړو چې په هغې کېنې مبیع موجل وی، د ابن عباس رضی اللہ عنہ د جواب حاصل دا دې چې په قبل القبض بیع کولو کېنې ربا موندلې شی لکه چې یو سړی د بل سره بیع سلم او کړه یعنی د یو دینار په بدل کېنې چې قفیز د حنطه واخلي نو مشتری د قبض کولو نه مخکېنې هغه په دوه دینار باندې د چا په لاس باندې خرڅ کړو او وې وئیل چې د فلانی ځانې نه چې اوچت کړه نو اوس صورت حال دا شو چې بیع الدینار بالدینارین شوه کوم چې سراسر ربا ده ځکه چې مشتری د هغه غلې شکل هم نه دې لیدلې بلکه نتیجه دا شوه چې یو دینار لاړو او د هغې په بدل کېنې دوه راغلل، او د دې معاملې حرمت ښکاره او بدیهی دي.

والحدیث أخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه بنحوه، قاله المنذری

[۳۴۹۷] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، وَسَلِيمَانُ بْنُ حَرْبٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ وَحِيدٍ، عَنْ مُسَدَّدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، وَهَذَا لَفْظُ مُسَدَّدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ طَاوُسٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا اشْتَرَى أَحَدُكُمْ طَعَامًا فَلَا يَبِيعُهُ، حَتَّى يَقْبِضَهُ"، قَالَ سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ: حَتَّى يَسْتَوْفِيَهُ، زَادَ مُسَدَّدٌ قَالَ: وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: وَأَحْسِبُ أَنَّ كُلَّ شَيْءٍ مِثْلُ الطَّعَامِ

(۱): صحيح البخاري/البیوع ۵۴ (۲۱۳۲)، ۵۵ (۲۱۳۵)، صحيح مسلم/البیوع ۸ (۱۵۲۵)، سنن النسائي/البیوع ۵۳ (۶۷۰۱)، (تحفة الأشراف: ۵۷۰۷)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۲۱۵/۱، ۲۲۱، ۲۵۱، ۲۷۰، ۲۸۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۸۸، ۳۶۹) (صحيح)

(۲): د دې لفظ په ضبط کېنې نسخې مختلف دي په بعضو کېنې خو داسې دي کوم چې مونږ اختیار کړو یعنې په تخفیف د جیم سره او روستو د هغې نه همزه، وې بعضو النسخ بدون همزة مرجاء، وې بعضو النسخ مرجى بتشقیل الجیم وبعدها همزة، وې بعضو النسخ مرجى، وې النهایه ای موجلا موخرًا ویهمز ولا یهمز، وې کتاب الخطابی علی اختلاف نسخه مرجى بالتشدید للمبالغة (کذا فی تعلیق الشیخ محمد عوامه)

(۳): صحيح البخاري/البیوع ۵۵ (۲۱۳۵)، صحيح مسلم/البیوع ۸ (۱۵۲۵)، سنن الترمذي/البیوع ۵۶ (۱۲۹۱)، سنن النسائي/البیوع ۵۳ (۶۷۰۲)، سنن ابن ماجه/التجارات ۲۷ (۲۲۲۷)، (تحفة الأشراف: ۵۷۳۶)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۲۱۵/۱، ۲۲۱، ۲۷۰، ۲۸۵) (صحيح)



د عبد الله بن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلي دي: کله چې یوکس په تاسو کښې غله واخلي نو هغه دي نه خرڅوی ترڅوچه دده په قبضه کښې نه وي راغلي اود قبضي ذکر سليمان بن حرب هم په خپل روایت کښې کړي دي، اومسدد په دې روایت کښې دا اضافه کړې ده چې ابن عباس رضي الله عنه وویل زما خیال دي چې هریو خوراکي خیزد طعام په شان دي.

قوله: «وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ وَأَخِيبُ أَنْ كُلَّ شَيْءٍ مِثْلُ الطَّعَامِ»

د دې نه د ابن عباس رضي الله عنه مذهب معلوم شو چې د هغوی په نزد دا حکم بالکل عام دې، وړاندې د دې نه پس په دې باب کښې دوه روایتونه نور دي چې د هغې مفهوم ښکاره دې. والحديث أخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي، وابن ماجة بنحوه قاله المنذري.

[۳۴۹۶] (۱) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: "رَأَيْتُ النَّاسَ يُضَرِّبُونَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اشْتَرَوْا الطَّعَامَ جُزْأً، أَنْ يَبِيعُوهُ حَتَّى يَبْلُغَهُ إِلَى رَحْلِهِ".

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې د نبی صلی الله علیه و آله په زمانه کښې خلق اولیدل چې وهلي کیدل به دغلي دډیري داخستویه وجه باندې کوم چې به دوی کورته دوړلونه مخکښې خرڅول.

[۳۴۹۹] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَوْفٍ الطَّائِيُّ، حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَالِدٍ الْوُهَيْبِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ عَبْدِ بْنِ حَنْبَلٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: "اِبْتِغْتُ زَيْتًا فِي السُّوقِ فَلَمَّا اسْتَوْجَبْتُهُ لِنَفْسِي، لَقِينِي رَجُلٌ فَأَعْطَانِي بِهِ رِيحًا حَسَنًا، فَأَرَدْتُ أَنْ أَضْرِبَ عَلَى يَدِهِ، فَأَخَذَ رَجُلٌ مِنْ خَلْفِي بِذِرَاعِي فَالْتَفَعْتُ، فَإِذَا زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ، فَقَالَ: لَا تَبِعْهُ حَيْثُ اِبْتِغْتَهُ حَتَّى تَحْوِزَهُ إِلَى رَحْلِكَ، فَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى أَنْ تُبَاعَ السِّلَعُ حَيْثُ تُبْتَاعُ حَتَّى يَحْوِزَهَا التَّجَارُ إِلَى رِحَالِهِمْ".

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې په بازار کښې مې تیل واخستل کله چې ما دا معامله مکمل کړه نو یوکس راسره ملا وشواوما په دې کښې ډیره گټه کړي وه نو ما دا اراده وکړله چې دده سره معامله طي کړم یعنی په دغه خریدار تیل خرڅ کړم نو په دې وخت کښې یوکس در و ستونه زما لاسونه ونيول ماچه ورته وکتل نو هغه زید بن ثابت رضي الله عنه وو هغه راته وویل چې ترڅوچه داغله ددې ځانې نه خپل کورته وړي نه وي نو د اومه خرڅوه ځکه چې نبی صلی الله علیه و آله د دینه ممانعت فرمائیلي دي یعنی چرته چې کوم شي واخستل شي نو هلته ئې خرڅول نه دي پکار ترڅوچه تاجر دا مال خپل ځانې ته وړي نه وي.

### بَابُ فِي الرَّجُلِ يَقُولُ فِي الْبَيْعِ لَا خِلَابَةَ

کله چې د خرڅولو په وخت کښې څوک وواي چې په دې کښې دوکه نشته نو ددې څه حکم دې؟ خلابه بمعنی خدیه او د هوکه، یعنی یو سړي د یو خیز د بیع په وخت یا د شراء په وخت داسې اوواي چې گوره د د هوکې او د نقصان خبره نه دی کیدل پکار، یعنی په قیمت کښې

۱: صحيح البخاري/المحاريين ۲۹ (۶۸۵۲)، صحيح مسلم/اليوم ۸ (۱۵۲۷)، سنن النسائي/اليوم ۵۵ (۴۶۱۲)، تحفة الأشراف: ۶۹۳۳، وقد أخرجه: مسند احمد (۷/۲، ۱۵۰) (صحيح)

۲: تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۲۷۲۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۹۱/۵) (حسن)

زیات فرق نه دی کیدل پکار (ځکه چه زه د اخستلو او خرڅولو زیاته تجربه نه لرم)

[۳۵۰۰] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، "أَنَّ رَجُلًا ذَكَرَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهُ يُخَدِّعُ فِي الْبَيْعِ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا بَايَعْتَ فَقُلْ: لَا خِلَابَةَ، فَكَانَ الرَّجُلُ إِذَا بَايَعَ يَقُولُ لَا خِلَابَةَ."

د عبد الله بن عمر نه روایت دې فرمائی چه یو کس نبی ﷺ ته ددې خبرې ذکر وکړو چه خلق ماته دخريد فروخت په وخت کښې دوکه راکوي نبی ﷺ ورته او فرمائیل کله چه سودا کوي نو داسې به وائی لا خلابه یعنی دوکه به نه وي نو هغه چه به کله خريد وفروخت کولو نودا کلمات به ئې وئیل یعنی په دې بيع کښې به دوکه نه وي.

قوله: «عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَجُلًا ذَكَرَ لِرَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَنَّهُ يُخَدِّعُ فِي الْبَيْعِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «إِذَا بَايَعْتَ فَقُلْ لَا خِلَابَةَ»

### شرح الحديث :

د دې رجل نه مراد هغه صحابی رضی الله عنه دې چه د هغه نوم حبان بن منقذ دې، هغوی رسول الله ﷺ ته خپل حال عرض کړو چه زه په بيع کښې دهوکه خورم، په دې روایت کښې اختصار دې، په روستو روایت کښې کوم چه د انس رضی الله عنه مروی دې په هغې کښې داسې دی چه یو سړې کوم چه ضعیف العقل وو هغه به اخستل او خرڅول کول، یعنی د اخستلو او خرڅولو شوق ئې خو وو، د کانونو ته تلو سره به ئې هلته اخستل خرڅول کول خو په دې معامله کښې ناپوهه وو نو د هغوی د کور خلق د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او خپله پریشانی ئې ورته ښکاره کړه او دا عرض ئې اوکړو چه یا رسول الله ﷺ په هغه باندې بندیز اولگوئ چه بیا د چا سره اخستل او خرڅول اونکړې شی رسول الله ﷺ د کور والو په شکایت باندې هغه راطلب او فرمائیلو، او هغه ئې د بيع او شراء نه منع کړو، هغوی اووې یا رسول الله ﷺ مانه صبر نه کیږی بغیر د بيع نه، رسول الله ﷺ او فرمائیل ښه څه که ته بيع نه شي پریخودلې نو «فقل هاء و هاء ولا خلابه» نو بیا ته د بيع او شراء په وخت بائع یا مشتری ته د څیز د اخستلو په وخت یا ورکولو په وخت داسې وایه (چه واخله روره ثمن یا مبيع) او گوره د دهوکی خبره نه دی کیدل پکار.

### الكلام على الحديث من حيث الفقه وبيان مذاهب الأئمة في خيار المغبون

د دې حدیث نه امام احمد او بعض علماء کرامو رضی الله عنه دا استنباط کړې دې چه که یو سړې د بيع او شراء په وخت دا لفظ او وائی یعنی «لا خلابه» نو د هغې فائده به دا وی چه که په دې بيع کښې غبن بیا موندلې شو نو خيار رد به حاصل وی، جمهور علماء کرام چه پکښې احناف او شوافع هم دی د مغبون دپاره د خيار غبن قائل نه دی، او د دې حدیث جواب هغوی دا ورکړې دې «بانه واقعه حال لا عموم لها» قال ابن العربي انه کله مخصوص بصاحبه لا

۱: صحيح البخاري/اليبوع ٤٨ (٢١١٧)، الاستقراض ١٩ (٢٤٠٧)، الخصومات ٣ (٢٤١٤)، الحيل ٧ (٦٩٦٤)، سنن النسائي/اليبوع ١٠ (٤٤٨٩)، (تحفة الأشراف: ٧٢٢٩)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/اليبوع ١٢ (١٥٣٣)، موطا امام مالك/اليبوع ٤٦ (٩٨)، مسند احمد (١١٦، ٨٠، ٢/١٣٠، ١٢٩) (صحيح)



بتعدی الی غیره، او د امام مالک رحمہ اللہ قول اصح هم دا دې، او دویم قول د هغوی دا دې ﴿له الخیار بشرط ان یبلغ الغبن ثلث القیمة﴾ چه د مغبون دپاره به خیار غبن وی چه د هغې په وجه باندې هغه دا بیع فسخ کولې شی په دې شرط چه د دې غبن مقدار ثلث قیمت ته رسیږی، که د دې نه کم وی نو نشته، کذا فی هامش الترمذی، او بذل کنبې نقلا عن الخطابی، د امام مالک رحمہ اللہ قول ئې دا لیکلې دې چه په کوم صورت کنبې مشتری صاحب بصیرت نه وی او د هغه په بیع کنبې غبن او موندلې شی نو هغه ته به خیار حاصل وی او په بذل کنبې د خطابی نه د امام احمد رحمہ اللہ قول هغه نقل کړې دې کوم چه پورته مونږ ذکر کړو ﴿ان الامام احمد قال اذا بايعه فقال لا خلافة فله الرد﴾ پس د کلام حاصل دا راووتلو چه د اکثر علماء کرامو او د احنافو او شوافعو په نزد په دې حدیث باندې عمل نشته هغوی دا حدیث د صاحب واقعه سره خاص منی، او امام احمد او امام مالک رحمہما اللہ په احد القولین کنبې په دې حدیث باندې عمل کوی، مونږ د خپلو بعضو استاذانو نه اوریدلې دی د دې حدیث په توجیه کنبې چه په دې حدیث کنبې کوم څانې تصریح ده د دې خبرې چه د ﴿لا خلافة﴾ وئیلو نه پس خیار غبن حاصلیږی بلکه اصل خبره دا ده چه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم زمانه د خیر زمانه وه په خلقو کنبې د یو بل دپاره همدردی وه په دې وجه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغه صحابی ته دا مشوره ورکړه چه که ته د بیع نه نه شی منع کیدی نو کم از کم د بیع په وخت صرف دومره وایه چه تاسره معامله کونکې ستا لحاظ اوساتی او بس او که هم دا او وئیلې شی چه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم مراد دا وو چه په داسې وئیلو سره به تاته خیار غبن حاصل شی نویا به هم هغه جواب وی کوم چه پورته د شارحینو نه نقل کړې شوې دې چه داپه هغه صحابی پورې مخصوص دې. واللہ تعالی اعلم.

[۳۵۰۱] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَرْبُزِيُّ، وَإِبْرَاهِيمُ بْنُ خَالِدٍ أَبُو ثَوْرٍ الْكَلْبِيُّ الْمَعْنَى، قَالَا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ بْنُ عَطَاءٍ، أَخْبَرَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، "أَنَّ رَجُلًا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَبْتَاعُ وَفِي عَقْدَتِهِ ضَعْفٌ، فَأَتَى أَهْلَهُ نَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالُوا: يَا نَبِيَّ اللَّهِ، انْجِرْ عَلَى فُلَانٍ فَإِنَّهُ يَبْتَاعُ وَفِي عَقْدَتِهِ ضَعْفٌ، قَدَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَتَهَاةٌ عَنِ الْبَيْعِ، فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ، إِنِّي لَا أَضِيرُ عَنِ الْبَيْعِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنْ كُنْتَ غَيْرَ تَارِكٍ الْبَيْعِ، فَقُلْ: هَاءُ، وَهَاءُ، وَلَا خِلَافَةَ"، قَالَ أَبُو ثَوْرٍ: عَنْ سَعِيدٍ.

دنبی صلی اللہ علیہ وسلم په زمانه کنبې اخستل خرڅول کول دده په دماغو کنبې فرق وو دده رشته داران دنبی صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کنبې حاضر شول او عرض ښې وکړو ای دالله رسوله په ده باندې پابندی ولگوي ددې دپاره چه دده کوم لین دین درست نه وي (یعنی خلقو ته خبر ورکړه چه دده سره لین دین نه کوي) ځکه چه دې کاروبار کوي اودده په دماغو کنبې فرق دې، ده عرض اوکړو ای دالله رسوله بغیرد کاروبارنه زما گذاره نه کیږي نوپه دې وخت کنبې ورته نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل که چرې ته اخستل خرڅول نشي پریخودل نودبیع په وخت کنبې داسې

۱: سنن الترمذی/البیوع ۲۸ (۱۲۵۰)، سنن النسائي/البیوع ۱۰ (۴۴۹۰)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۲۴ (۲۳۵۴)، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۱۷/۳) (صحیح)

وايه خبردار په دې کښې به دوکه نه وي.

د دې حديث په ضمن کښې يو مسئله بله هم اختلافی ده يعنی حجر علی الکبير السفیه... د امام ابوحنيفه رحمه الله په نزد د اسباب حجر انحصار په درې خيزونو باندې دې، جنون، صبا او رق، فلا حجر عنده علی الکبير السفیه، يعنی کوم سرې چه سره د عاقل بالغ کيدو په معاملاتو کښې ناپوهه وی او د ناپوهی د وجې نه خپل مال ضائع کوی او خرابوی نو په هغه باندې بنديز لگول د ائمه ثلاث او صاحبينو په نزد جائز دی، او د امام صاحب په نزد جائز نه دی، فتوی د صاحبينو په قول باندې ده د دې حديث نه د دواړو مسلکونو تائيد کيږي **«فنهاه عن البيع»** سره د قائلينو تائيد کيږي، او د **«ان كنت غير تارك»** سره د امام صاحب رحمه الله تائيد کيږي، حديث ابن عمر رضي الله عنهما اخرجه البخاری ومسلم والنسائي، وحديث انس رضي الله عنه اخرجه الترمذی والنسائي وابن ماجه، قاله المنذري.

## باب في العُربان

### د بيع عربان بيان

عربان په ضمه د عين او سکون د راء سره او دې ته عربون هم وائی، د دې تفسير خپله په کتاب کښې د امام مالک رحمه الله نه نقل دې په حديث الباب کښې دی **«نَهَى رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- عَنْ بَيْعِ الْعُرْبَانِ. قَالَ مَالِكٌ وَذَلِكَ - فِيمَا تَرَى وَاللَّهِ أَغْلَمُ»**

[۳۵۰۲] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، قَالَ: قَرَأْتُ عَلَى مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ أَنَّهُ بَلَّغَهُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّهُ قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الْعُرْبَانِ"، قَالَ مَالِكٌ: وَذَلِكَ فِيمَا تَرَى وَاللَّهِ أَغْلَمُ أَنْ يَشْتَرِيَ الرَّجُلُ الْعَبْدَ أَوْ تَتَكَارَى الدَّابَّةُ، ثُمَّ يَقُولُ: أُعْطِيكَ دِينَارًا عَلَى أَنِّي إِنْ تَرَكْتُ السِّلْعَةَ أَوْ الْكَرَاءَةَ فَمَا أُعْطَيْتَكَ لَكَ.

عمرو بن شعيب د خپل پلار نه او هغه دده دنيکه نه روايت کوی فرمائی چه نبی صلی الله علیه وسلم منع فرمائيلې ده د بيع عربان نه، مالک راوی وئيلی دی د عربان معنی داده چه انسان يو غلام بایوه وينځه واخلې يا خرخونکې داسې او وائي زه به تاته په دې شرط باندې يو دينار درکوم چه زه دا غلام يا وينځه واخلم دغه دينار به ددې په قيمت کښې وي يا دا چه زه په دې خاړوي سورلي وکړم نو دا دينار به په کرايه کښې حسابيږي که چرې زه دا غلام يا وينځه واپس کوم او يا په خاړوي باندې سور نه شوم نو دا دينار به تاته مفت شي اوزه ئې واپس نه اخلم.

### د بيع عربان تعريف او بيان د مذاهبو:

بيع عربان چه د هغې نه په حديث کښې منع کړې شوې ده امام مالک رحمه الله د هغې تفسير فرمائی چه عربان دا دې چه يو سرې د بل نه غلام واخلې يا د هغه نه خاړوي په کرايه باندې واخلې او د دې بيع يا اجارې په وخت مشتری يا مستاجر ته داسې او وائي چه زه تاته دا دينار درکوم په داسې طريقه چه که ما دا خيز پريخودلو او په بيع مې وانخستلو يا مې په

(۱) سنن ابن ماجه/التجارات ۲۲ (۲۱۹۲)، (تحفة الأشراف: ۸۸۲۰)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/ البيوع ۱ (۱)، مسند



کرایه وانخستلو نو بیا چه ما څه تاته درکړې دی هغه ستا دپاره دی او که په بیع مې واخستلو یا په کرایه نو بیا به دا په دینار د ثمن او اجرت کښې شمارېږي، بیع عربان د جمهور علماء او ائمه ثلاث په نزد ناجائز ده، په ائمه کښې امام احمد او په صحابه کرامو رضی الله عنہم کښې عمرو او ابن عمر رضی الله عنہم نه د دې اباحت منقول دي، په بذل کښې د دې ټول هر څه لیکلو نه پس په آخر کښې دا دی ﴿قلت ويرد العربان اذا ترك العقد على كل حال بالاتفاق﴾ یعنی هغه دینار کوم چه دې مشتری یا مستاجر مخکښې ورکړې وو هغه به بهر حال واپس کولې شی بالاتفاق، یعنی د هغوی په نزد هم کوم چه د بیع عربان د جواز قائل دی، واللہ تعالی اعلم، قال الخطابی وقد اختلف الناس فی جواز هذا البيع فابطله مالک والشافعی للخبر ولما فيه من الشرط الفاسد والغرر، ويدخل ذلك فی اكل المال بالباطل، وابطله اصحاب الرائي ايضا، وقد روى عن ابن عمر وعمر انه اجاز هذا البيع، وما احمد بن حنبل الى القول باجازه. الى آخر ما فی البذل. امام احمد رضی الله عنہ د دې حدیث تضعیف کړې دي چه دا منقطع دي، خو علامه زرقانی دا تضعیف رد کړې دي.

دا باب په کتب سته کښې د ابوداؤد نه علاوه صرف په ابن ماجه کښې دي او هغوی هم دا د ابوداؤد والا حدیث په هغې کښې ذکر کړې دي ﴿يعني عن عمرو بن شعيب عن ابيه عن جده﴾ او امام ابن ماجه د عربان تفسیرهم ذکر کړې دي ﴿قال ابو عبدالله العربان ان يشتري الرجل دابة بمئة دينار فيعطيه دينارين عربونا فيقول ان لم اشتر الدابة فالديناران لك ه﴾ او امام مالک رضی الله عنہ په موطاء کښې په کتاب البيوع کښې شروع هم د دې باب نه کړې ده ﴿باب ماجاء فی بيع العربان﴾ وفي الاوجز العربان بضم العين وسكون الراء ويقال عربون وعربون بالفتح والضم، وبالهزمة (يعني اربون) بدل العين فی الثلاث والراء ساكن فی الكل - الى آخر ما ذكر من اختلاف اللغات وغيره. والحديث اخرجه ابن ماجه وهذا منقطع، واسنده ابن ماجه وفيه حبيب كاتب الامام مالك وعبدالله بن عامر الاسلمي ولا يحتج بهما، قاله المنذرى

### باب فِي الرَّجُلِ يَبِيعُ مَالَيْسَ عِنْدَهُ

کوم شي چه ستا سره موجود نه وي دهغي خرڅول منع دي

[۳۵۰۳] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ أَبِي بَشِيرٍ، عَنْ يُونُسَ بْنِ مَاهَكَ، عَنْ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ، قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، يَا بَنِي الرَّجُلِ فَيُرِيدُ مِنِّي الْبَيْعَ لَيْسَ عِنْدِي أَفَأَتْبَاعُهُ لَهُ مِنَ السُّوقِ. فَقَالَ: لَا تَبِيعْ مَالَيْسَ عِنْدَكَ.

دحکیم بن حزام نه روایت دي فرمائی چه ماعرض وکړو اي دالله رسوله که چرې ماته يوکس راشي او هغه زمانه داسې شي اخلي کوم چه زماسره موجود نه وي نو که چرې هغه شي زه دده دپاره په بازار کښې واخلم او ورته ئې راوړم نو ددې څه حکم دي نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل تاسره چه کوم شي موجود نه وي هغه مه خرڅوه.

(۱) سنن الترمذي للبيوع ۱۹ (۱۲۳۲)، سنن النسائي للبيوع ۵۸ (۴۶۱۵)، سنن ابن ماجه/التجارات ۲۰ (۲۱۸۷)، (تحفة الأشراف: ۳۴۳۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۰۲/۳، ۴۳۴) (صحيح)

« عَنْ حَكِيمِ بْنِ جَزَامٍ قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ يَأْتِينِي الرَّجُلُ فَيُرِيدُ مِنِّي الْبَيْعَ لَيْسَ عِنْدِي أَقَابَتَاغُهُ لَهُ مِنَ السُّوقِ فَقَالَ « لَا تَبِعْ مَا لَيْسَ عِنْدَكَ »

د دې حديث په مفهوم كښې بيع العبد الباقي او بيع الشيء قبل القبض او بيع مال غير بغير اذنه ټول داخل دي خو په دې آخري صورت كښې يعنې بيع فضولي كښې د علماء كرامو اختلاف دې كوم چه مخكښې تير شوې دې، د حديث مفهوم دا دې چه حكيم بن حزام رضي الله عنه رسول الله صلى الله عليه وسلم ته عرض او كړو چه بعض خلق ماته راځي او زما نه داسې خيز اخستل غواړي كوم چه ما سره نه وي نو آيا په دې صورت كښې زه د هغوی سره بيع كولې شم، يعنې رومي د هغه خيز بيع او كرم او بيا ئې روستو د بازار نه واخلم او هغه ته ئې وركړم، رسول الله صلى الله عليه وسلم د دې نه منع او فرمائيله.

والحديث أخرجه الترمذي والنسائي وابن ماجه.

[۳۵۰، ۴] (۱) حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ أَيُّوبَ، حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ شُعَيْبٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ أَبِيهِ حَتَّى ذَكَرَ، عَبْدَ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا يَحِلُّ سَلْفٌ وَبَيْعٌ، وَلَا شُرْطَانٌ فِي بَيْعٍ، وَلَا رِبْحٌ مَالٌ تَضْمَنَ، وَلَا بَيْعٌ مَالٍ لَيْسَ عِنْدَكَ".

د عبد الله بن عمرو بن العاص رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلى الله عليه وسلم فرمائیلى دى قرض او بيع جائز نه دي اونه په يوه بيع كښې دوه شرطونه لگول جائز دي اونه په هغه خيز كښې گټه كول جائز دي د كوم چه ذمه واري اخستلې شوي نه وي اونه دهغه خيز خرڅول جائز دي كوم چه ستاسره موجود نه وي.

قوله: « لَا يَحِلُّ سَلْفٌ وَبَيْعٌ وَلَا شُرْطَانٌ فِي بَيْعٍ وَلَا رِبْحٌ مَالٌ تَضْمَنَ وَلَا بَيْعٌ مَالٍ لَيْسَ عِنْدَكَ » شرح الحديث :

په دې حديث كښې څلور اجزاء ذكر دي چه د هغې شرح دا ده ۱: حلال نه دې بيع او قرض، يعنې بيع په شرط د قرض جائز نه ده، يا مطلب دا چه بيع په لاس د مقروض جائز نه ده، ځكه چه كله د مقروض سره بيع كولې شى نو مشترى به د قرض په رعايت كښې د ثمن كمې نه كوى بلكه كيدې شى چه دا كار په گران قيمت باندې واخلي، حال دا چه ضابطه دا ده «كل قرض جر نفعا فهو ربا» «ولا شرطان في بيع» د دې مفهوم د جمهورو په نزد خو دا دې «لا بيعان في بيع» لكه چه په حديث كښې دى «لهي عن بيعتين في بيعة» او امام احمد رحمه الله دا حديث په خپل ظاهر باندې كيخودلې دې يعنې دا چه په يو بيع كښې دوه شرطونه لگول جائز نه دي، او كه يو شرط وي نو هغه جائز دې، پس په ترمذي كښې دى «قال احمد: اذا قال ابيعك هذا الثوب وعلى خياطته وقصارتها فهذا من نحو شرطين في بيع، واذا قال ابيعك وعلى خياطته فلا باس به، او قال ابيعك وعلى قصارتها فلا باس به انما هو شرط واحد، قال اسحاق كما قال» يعنې كه يو سړې د چا په لاس باندې يو كپړه خرڅه كړي او بائع د خرڅولو په وخت په خپله ذمه دوه

۱: سنن الترمذي/البيوع ۱۹ (۱۲۳۴)، سنن النسائي/البيوع ۶۰ (۴۶۲۵)، سنن ابن ماجه/التجارات ۲۰ (۲۱۸۸)، (تحفة الأشراف: ۸۶۶۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/ ۱۷۴، ۱۷۸، ۲۰۵) (حسن صحيح)



شرطونه اولگوى چه زما په ذمه د دې گنډل هم دى او وينځل هم نو دا صورت خو ناجائز دې او که د بيع ثوب په وخت صرف د خياطت يا صرف د قصارت شرط اولگوى نو په دې کښې هيڅ باک نشته دا شرط واحد دې او په حديث کښې ممانعت د شرطين دې، جمهور د دې په جواب کښې دا وائى چه هر هغه شرط کوم چه د مقتضاء د عقد خلاف وي د هغې لگول جائز نه دى، مفسد د بيع دې ځکه چه په بل حديث کښې نهى عن بيع وشرط ۳: او د دې حديث دريم جزء دا دې چه کوم خيز د انسان په ضمان کښې داخل نه وي په هغې سره ربح حاصلول جائز نه دى، لکه بيع قبل القبض ۴: څلورم جزء هم هغه دې کوم چه په ترجمه الباب کښې مذکور دې چه د هغې مثال تير شوې دې. والحديث اخرجه الترمذى والنسائى وابن ماجة، قاله المنذرى

### باب فى شرط فى بيع

په بيع کښې د شرط لگول وبيان

د مصنف رحمته الله غرض په بيع کښې د شرط واحد جواز لره بيانول دى لکه چه د امام احمد رحمته الله مذهب دې او مصنف رحمته الله هم حنبلى دې په دې باب کښې مصنف رحمته الله د جابر رحمته الله د شراء جمل والا روايت ذکر کړې دې چه په هغې کښې دى. (واشترطت حملانه الى اهلى)

[۳۵۰۵] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَعْنَى ابْنُ سَعِيدٍ، عَنْ زَكْرِيَّا، حَدَّثَنَا عَامِرٌ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: بَعْتُهُ يَعْزِي بَعِيرَةً، مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاشْتَرَطْتُ حُمْلَانَهُ إِلَى أَهْلِي، قَالَ فِي آخِرِهِ: "تُرَانِي إِنَّمَا مَا كُنْتُكَ لِأَذْهَبَ بِحِمْلِكَ خُذْ حِمْلَكَ وَثُمَّتَهُ فَمَا لَكَ".

د جابر بن عبد الله رحمته الله نه روايت دې فرمائى چه ما په نبى عليه السلام باندې خپل اوښ خرڅ کړو اودا شرط مې ورباندې ولگوو چه زه به ورباندې سوريرېم اودخپل کوره پورې به په دې باندې خپل بار وړم اوبيا ئې واقعہ بيان کړه، په آخر کښې ورته نبى عليه السلام اوفرماييل ايا تاته معلومه ده چه زه تاداوس په اغستلو کښې په دې وجه، باندې شامل کوم چه ستا اوښ بوخم، لاړ شه خپل اوښ بوخه اوددې قيمت هم واخله دا دواړه ستاشو.

د جابر رحمته الله د شراء جمل والا حديث :

جابر رحمته الله فرمائى چه ما په رسول الله صلی الله علیه و آله باندې اوښ خرڅ کړو او ما د هغوى سره په دې اوښ باندې کور ته د تلو پورې په هغې باندې د سوريډو شرط اولگولو، دا شرط لکه چه اوس پورته ذکر شو د امام احمد رحمته الله په نزد مطلقا جائز دى او د شوافعو او د احنافو په نزد مطلقا ناجائز دې او وعند مالک الفرق بين المكان القريب والبعيد، يعنى د مختصر شان سفر قيد خو لگول جائز دى د هغوى په نزد، د اوږد سفر شرط لگول ناجائز دى، د احنافو او شوافعو د طرف نه د دې حديث جواب دا دې چه د دې قصې د رواياتو الفاظ مختلف راغلى دى په يو روايت کښې دى (افقرنى ظهره) يعنى رسول الله صلی الله علیه و آله دا اوښ د سوال په

(۱) : صحيح البخاري/اليوبوع ۳۴ (۲۰۹۷)، الاستقراض ۱ (۲۳۸۵)، ۱۸ (۲۴۰۶)، المظالم ۲۶ (۲۴۷۰)، الشروط ۴ (۲۷۱۸)، الجهاد ۴۹ (۲۸۶۱)، ۱۱۳ (۲۹۶۷)، صحيح مسلم/اليوبوع ۴۲ (۷۱۵)، الرضاع ۱۶ (۷۱۵)، سنن الترمذى/اليوبوع ۳۰ (۱۲۵۳)، سنن النسائى/اليوبوع ۷۵ (۴۶۴۱)، سنن ابن ماجة/التجارات ۲۹ (۲۲۰۵)، (تحفة الأشراف: ۲۳۴۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۹۹/۳، ۳۹۲) (صحيح)

طریقه باندې ماته د مدینې منورې پورې د رسیدو دپاره راکړې وو. د دې نه معلومېږي چه دلته په صلب عقد کښې هیڅ شرط نشته بلکه د سره شرط او نه. رسول الله ﷺ اوښ په سوال باندې ورکړې وو، قال فی آخره «ترانی انما ما کستک لاذهب بجملک خذ جملک ولمنه فهما لک» مصنف رحمه الله واثی چه د دې حدیث په آخر کښې دا دی چه رسول الله ﷺ جابر رضی الله عنه ته او فرمائیل چه آیا ستا حال زما په باره کښې دا دې چه ما ستا نه د اوښ اخستلو په وخت په قیمت کښې کمې په دې وجه کړې وو چه په کم قیمت باندې ستا اوښ واخلم (نه داسې نه وه بلکه) زه خپل اوښ دې هم بوځه، او د هغې ثمن هم، دواړه مونږ تاته درکړې، مصنف رحمه الله د خپل عادت مطابق دا دلته مختصراً بیان کړو، په صحیح بخاری کښې دا حدیث په ډیر کرته راغلې دې چرته مختصر او چرته مطول، په کتاب الشروط کښې په دې حدیث باندې هغوی «باب اذا اشترط البائع ظهر الدابة الى مكان مسمى جاز» ترجمه قائم کړې ده او هلته ئې چه کوم حدیث ذکر کړې دې په هغې کښې داسې دی چه زه په غزوه تبوک کښې د رسول الله ﷺ سره په داسې اوښ باندې سور روان اوم چه سترې شوې وو. رسول الله ﷺ چه کله زما خوا کښې تیر شو نو هغوی دا اوښ یو گزار اووهلو او دعا ئې هم او فرمائیله چه په هغې سره هغه ډیر تیز روان شو، هغوی فرمائی چه بیا رسول الله ﷺ ما سره د اخستلو خبره شروع کړه (تفریحا) او وې فرمائیل چه ماته دا په یو اوقیه باندې خرڅ کړه ما په نفی کښې جواب ورکړو. رسول الله ﷺ مکرر او فرمائیل، بیا وړاندې دا دی چه کله مونږ مدینې طیبې ته اورسیدو نو ما دا اوښ د رسول الله ﷺ په خدمت کښې پیش کړو رسول الله ﷺ واخستلو او ثمن ئې هم ماته راکړو، بیا چه کله زه روان شوم نو یو سرې ئې راولیرلو او زه ئې راطلب کړم او وې فرمائیل زمونږ ستا اوښ اخستل مقصود نه وو او اونیسو خپل اوښ دې هم کوم هم ستا خپل مال دې. الحدیث

والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجة، مختصر او طویلاً، قاله المنذرى

### باب فی عَهْدَةِ الرَّقِيقِ

د غلام اود وینځې داخستلو بیان

[۳۵۰۶] (۱) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبَانُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «عَهْدَةُ الرَّقِيقِ ثَلَاثَةُ أَيَّامٍ».

د عقبه بن عامر نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی د غلام اود وینځې د خرڅونکي دپاره د عهد میعاد درې ورځي دي.

قوله: «عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- قَالَ «عَهْدَةُ الرَّقِيقِ ثَلَاثَةُ أَيَّامٍ»

د مسئله مترجم بها تشریح سره د بیان المذاهب او دلیل:

د غلام د واپس اخستلو ذمه داری تر درې ورځو پورې وی، که یو سرې د چا په لاس باندې

(۱) سنن ابن ماجة/التجارات ۴۴ (۲۲۴۵)، (تحفة الأشراف: ۹۹۱۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۱۴۳، ۱۵۰، ۱۵۲)، سنن الدارمي/اليوم ۱۸ (۲۵۹۴) (ضعيف)



خپل غلام خرڅ کړی او بیا د مشتری سره په هغه غلام کښې څه عیب ښکاره شی نو په درې ورځو کښې دننه د بائع دپاره واپس اخستل ضروری دی یعنی د واپس اخستلو د هغه ذمه داری ده یعنی بغیر د گواهانو نه، او که د درې ورځو نه پس پکښې څه عیب ښکاره شو بیا بغیر د گواهانو د قیام نه مشتری ته د واپس کولو هیڅ حق نشته.

د دې حدیث تعلق د خیار عیب سره دې، د جمهور علماء او ائمه ثلاث په نزد مشتری ته د عیب د وجې نه چه کوم خیار عیب حاصل وی د هغې عام قاعده او ضابطه دا ده چه که هغه عیب داسې دې چه په دې موده کښې دهغې مشتری سره پیدا کیدل ممکن نه دی نو بیا خو بغیر د بینه نه مشتری دا مبیع واپس کولې شی. او که عیب داسې دې چه په دې موده کښې مشتری سره پیدا کیدې شی یعنی او دا احتمال هم دې چه هغه د مخکښې نه وی، په دې صورت کښې به مشتری د گواهانو په ذریعه ثابتوی چه دا عیب ماسره نه دې پیدا شوې بلکه د مخکښې نه دې، پس که مشتری دا گواهان پیش کړل نو بیا خو به د هغه د مبیع واپس کولو حق وی گینې نه به وی، د جمهورو په نزد دا قاعده کلیه ده هیڅ مسئله او

جزئیة د هغوی په نزد د دې نه مستثنی نه ده. د امام مالک رحمته الله علیه په نزد دې کښې یو استثناء ده کومه چه په حدیث الباب کښې ذکر شوې ده د کوم تعلق چه د غلام او وینځې د اخستلو سره دې یعنی که مبیع غلام یا وینځه وی او مشتری پکښې څه عیب بیا موندلو نو مشتری په درې ورځو کښې دا وینځه یا غلام په هر حال کښې بغیر د گواهانو نه واپس کولې شی. اگر که دا عیب هر څنگه وی. خو دا د هغوی په نزد په هغه صورت کښې چه کله بائع د براءت من کل عیب شرط لگولې نه وی، او که لگولې ئې وی نو بیا د هغوی په نزد هم دا مسئله نه ده، بهر حال دا حدیث د امام مالک رحمته الله علیه دلیل او د جمهورو خلاف دې د جمهورو د طرف نه د دې جواب دا ورکړې شوې دې چه دا حدیث ثابت نه دې. په بذل کښې دی ﴿ وضعف احمد بن حنبل عهدة الثلاث، وقال لا يثبت في العهدة حديث وقالوا لم يسمع الحسن من عقبة بن عامر شيئا ﴾ امام خطابی رحمته الله علیه فرمائی ﴿ كما في البذل وعهدة السنة من الجنون والجذام والبرص، ولا عهدة الا في الرقيق خاصة وهذا قول اهل المدينة وابن المسيب والزهری ﴾ یعنی لوئې بیمارئ لکه لیونتوب جذام او برگې په دې کښې د عهدة الرقيق موده زیاتیرې د درې ورځو په ځانې یو کال دې. هغوی فرمائی چه امام شافعی رحمته الله علیه په دې کښې نه درې ورځو ته اعتبار ورکوی او نه یو کال ته الی اخر ما ذکر (بذل). زه وایم او په موطاء د امام محمد رحمته الله علیه کښې دی: ﴿ لسنا نعرف عهدة الثلاث ولا عدة السنة الخ ﴾ چه مونږ ته معلومه نه ده چه عهدة الثلاث او عهدة السنة څه وی. مگر دا چه سړې د درې ورځو یا د یو کال شرط اولگوی نو بیا به هغه شرط معتبر وی یعنی عهدة الرقيق څه مستقل څیز نه دې د دې څه ثبوت نشته دې د حدیث مرفوع نه خو دلته خیار شرط معتبر او ثابت دې پس که مشتری د غلام یا وینځې... د اخستلو په وخت شرط اولگوی په عیب سره د واپس کولو مطلقا که هغه درې ورځې وی او که یو کال وی نو په دې حیثیت سره به هغه معتبر وی ځکه چه خیار شرط

شرعا ثابت دي او متفق عليه دي. (۱)

[۳۵۰۷] (۲) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الْعَمِيدِ، حَدَّثَنَا هَبَاءُ بْنُ قَتَادَةَ بِإِسْنَادِهِ وَمَعْنَاهُ: زَادَ ابْنُ وَجْدٍ دَاءً فِي الثَّلَاثِ لِيَأْتِيَ رَدُّ بَغِيرِ بَيْتَةٍ وَإِنْ وَجَدَ دَاءً بَعْدَ الثَّلَاثِ كِلْفَ الْبَيْتَةِ، أَنَّهُ اشْتَرَاهُ وَبِهِ هَذَا الدَّاءُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا التَّفْسِيرُ مِنْ كَلَامِ قَتَادَةَ.

د قتاده رحمته الله نه پخپل سند سره ددې روایت په شان روایت نقل شوې دي مگر ددې اضافي سره چه که چرې په غلام او وينځه کښې په درې ورځوي دننه عيب ظاهر شي نو خريدار ئې بغير د شهادت نه واپس کولې شي او که چرې ددرې ورځونه پس عيب ظاهر شي نو د خريدار نه به دواړه طلب کولې شي او درې ورځي به دهغه وخت نه حسابيږي په کوم وخت کښې چه سودا شوي وه، امام ابوداؤد فرمائي دا تشرېح د قتاده کلام دي.

### باب فِيْمَنْ اشْتَرَى عَبْدًا فَاسْتَعْمَلَهُ ثُمَّ وَجَدَ بِهِ عَيْبًا

څوک چه غلام واخلي او د استعمال نه پس په کښې عيب ظاهر شي

د مسئله مترجم بها تشرېح :

زمونږ په دې نسخه کښې داسې دي « فاستعمله » او په نسخه د خطابي کښې د دې په ځانې « فاستغله » دې استغلال د غله نه اخستلې شوې دي غله په معنی د نفع او گټه، لهذا د ترجمه الباب مطلب به دا وي چه کوم سړی غلام واخستلو او بيا ئې په هغه باندې گټه او کره او بيا مشتري په دې غلام کښې څه عيب بيا موندلو د دې په باره کښې مصنف رحمته الله دا مسئله بيان فرمائي چه کله په دې غلام کښې څه عيب راوتلو نو اوس ظاهره خبره ده چه مشتري ته به خیار عيب حاصل وي چه د هغې د وجې نه هغه دا غلام واپس کولې شي خو هغه گټه کومه چه مشتري د دې غلام نه په دې موده کښې حاصل کړې ده د هغې به څه کيږي هغه به هم د دې غلام سره واپس کوی يا که د هغې مستحق به خپله مشتري وي په

(۱) امام مالک رحمته الله په موطاء کښې ترجمه قائم کړې ده « العهدة في الرقيق » او بيا ئې د هغې لاتدي هغه مرفوع حديث نه دي ذکر کړي کوم چه دلته په ابوداؤد کښې دي بلکه د مديني د بعض اميرانو ابان بن عثمان او هشام بن اسماعيل طرز عمل ئې بيان کړو « انهما كانا يذكران في خطبتهما عهدة الرقيق في الايام الثلاث من حين يشتري العبد او الوليدة، وعهدة السنة » يعنی دي د مديني اميرانو به په خپلو خطبو کښې عهدة الرقيق او هم دغه شان عهدة الوليدة په درې ورځو او په کال کښې ذکر کولې، علامه باجي فرمائي چه د امام مالک رحمته الله مقصد دا دي چه دا عهدة الرقيق في الايام الثلاثة او في السنة په هغه امورو کښې دي کوم چه مشهور او معمول بها وو او د کومو چه به اميرانو اهتمام کولو تر دې چه په خطبو کښې به ئې هغه بيانولو. او امام محمد رحمته الله په موطاء کښې ترجمه قائم کړې ده « باب عهدة الثلاث والسنة » او بيا ئې هم هغه روايت ذکر کړو کوم چه په موطاء د مالک کښې دي په دې باندې امام محمد رحمته الله تعقب کولو سره او فرمايل « قال محمد لسانا نعرف عهدة الثلاث ولا عهدة السنة الا ان يشترط الرجل خيار ثلاثة ايام او خيار سنة فيكون ذلك علي ما اشترط واما في قول ابي حنيفة فلا يجوز الخيار الا ثلاثة ايام اهـ » امام محمد رحمته الله فرمائي چه د خيار شرط اعتبار شته عهدة الرقيق هيڅ څيز نه دي او دا هم فرمائي چه په خيار شرط کښې چه هر څومره ورځې اولگولې شي هغه صحيح دي زمونږ په نزد خو د امام ابو حنيفة رحمته الله په نزد په خيار عيب کښې د درې ورځو نه زياتول نشته.

(۲) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۹۹۱۷) (ضعيف) وسنده إلى قتادة صحيح



دې باره كښې چه مصنف رحمته الله عليه كوم حديث ذكر كړې دې هغه دا دي:

[۳۵۰۸] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنْ مُخَلَّدِ بْنِ خُفَّافٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْخَرَجُ بِالضَّمَانِ».

دام المومنين عائشه رضي الله عنها نه روايت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی دخراج حقدار هغه خوک دې چاچه ضمانت کړې وي.

(عَنْ عَائِشَةَ - رضي الله عنها - قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «الْخَرَجُ بِالضَّمَانِ» )

خراج په معنی د نفع او پیدوار، ای مستحق بسبب الضمان .... یعنی سرې د گټې او نفع مستحق کیږي د ضمان د وجې نه. پس چه کوم خیز د کوم سرې په ضمان کښې وی د هغې د گټې او د نفع مستحق به هم هغه وی. لهذا د دې حديث نه د ترجمه الباب والا مسئلې حکم معلوم شو هغه دا چه دا گټه به د مشتری دپاره وی، د غلام سره به نه واپس کیږي، ځکه چه که په دې دوران کښې هغه غلام د مشتری سره هلاک شی نو د دې ضامن به مشتری وی دا د الخراج بال ضمان والا مسئله تقریبا اجماعی ده د دې وجې نه احنافو په مسئله د مصرأة کښې هم دا مخکښې ساتلې ده خو جمهورو په دې مسئله کښې د دې حديث موافقت نه دې کړې.

والحديث أخرجه الترمذی والنسائي، قاله المنذرى

[۳۵۰۹] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ مُخَلَّدِ بْنِ خُفَّافٍ الْغَفَّارِيِّ، قَالَ: "كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ أَنَاسٍ شَرَكَةٌ فِي عَبْدٍ فَأَقْتَوَيْتُهُ، وَبَعْضُنَا غَائِبٌ فَأَعْلَلْتُ عَلَى غَلَّةٍ فَخَاصَمَنِي فِي نَصِيْبِهِ إِلَى بَعْضِ الْقَضَاةِ، فَأَمَرَنِي أَنْ أُرَدَّ الْغَلَّةَ، فَأَتَيْتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ فَحَدَّثْتُهُ، فَأَتَا عُرْوَةَ فَحَدَّثَهُ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «الْخَرَجُ بِالضَّمَانِ».

دمخلد غفاري رحمته الله عليه نه روايت دې فرمائی چه زما اودیوڅو کسانو په مینځ کښې شراکت وو په یرغلام کښې ما په دې غلام باندې کار کول شروع کړل دي غلام څه امدن حاصل کړو، کوم شریک چه غائب وو هغه دده په باره کښې زما سره جگړه کول شروع کړل او راته ئې اووئیل چه په دې کښې خو زما هم حصه ده او راته ئې راکړه اودقاضي په وړاندې ئې پري دعوي وکړه قاضي دافصله وکړه چه ده ته به حصه ورکوي، اوبیاددینه پس دعروه بن زبیره په خدمت کښې حاضر شوم او واقعئې ورته بیان کړه عروه ورته هغه حديث بیان کړو کوم چه ئې دعائشې رضي الله عنها نه اوریدلې وو چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی دغلام یاوینځې منافع به دهغه چاوي خوک چه زمه واري وي.

(عَنْ مُخَلَّدِ بْنِ خُفَّافٍ الْغَفَّارِيِّ قَالَ كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ أَنَاسٍ شَرَكَةٌ فِي عَبْدٍ فَأَقْتَوَيْتُهُ وَبَعْضُنَا غَائِبٌ فَأَعْلَلْتُ عَلَى غَلَّةٍ فَخَاصَمَنِي فِي نَصِيْبِهِ إِلَى بَعْضِ الْقَضَاةِ الْخ)

مخلد بن خفاف فرمائی چه زما او د بعض خلقو ترمینځه یو غلام مشترک وو نو داسې

(۱): سنن الترمذی/البیوع ۵۳ (۱۲۸۵)، سنن النسائي/البیوع ۱۳ (۴۴۹۵)، سنن ابن ماجه/التجارات ۴۳ (۲۲۴۲، ۲۲۴۳)، (تحفة الأشراف: ۱۶۷۵۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۹/۶، ۲۰۸، ۲۳۷) (حسن)

(۲): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۶۷۵۵) (حسن)

اوشوه چه زمونر بعض شریکان موجود نه وو. ما دا غلام په گټه باندې اولگولو او د هغه په ذریعه مې څه گټه او کړه. چه کله غائب شریک راغلو نو هغه د دې غلام والا گټې نه د خپلې حصې مطالبه او کړه او دا مسئله ئې د وخت قاضی ته یوړه. قاضی صاحب ماته دا حکم او کړ چه زه په دې گټه کښې د هغه حصه هم ورکړم زه د قاضی د دې فیصلې نه پس عروۀ بن الزبیر ته لارم او هغوی ته مې دا ټوله قصه او د قاضی فیصله بیان کړه. عروۀ په دې اوریدو باندې قاضی ته لارو او د قاضی ته ئې دا حدیث مرفوع کوم چه د عائشې رضی اللہ عنہا نه روایت کړې شوې دې **«الخراج بالضمنان»** بیان کړو. یعنی ستاسو دا فیصله صحیح نه ده د حدیث خلاف ده

[۳۵۱۰] حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مَرْوَانَ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ خَالِدٍ الزَّمَجِيُّ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، "أَنَّ رَجُلًا ابْتِاعَ غُلَامًا، فَأَقَامَ عِنْدَهُ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يُقِيمَ، ثُمَّ وَجَدَ بِهِ عَيْبًا فَنَاصَمَهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَرَدَّهُ عَلَيْهِ، فَقَالَ الرَّجُلُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَدْ اسْتَعْلَلْتُ غُلَامِي، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْخَرَاجُ بِالْضَمَّانِ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا إِسْنَادٌ لَيْسَ بِذَاكَ.

د ام المومنین عائشۀ رضی اللہ عنہا نه روایت دې فرمائی چه یوکس یو غلام واخستو او دده سره ئې څه موده تیره کړه بیاد دې نه پس په دې غلام کښې عیب ظاهر شو نو ده نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته خپله مقدمه پیش کړه نبی صلی اللہ علیہ وسلم دا فیصله وکړله چه خرخونکی ته دي واپس کړي شي خرخونکي عرض وکړو چه ای الله رسوله ده زما په غلام باندې مزدوري کړې ده او امدن ئې ورنه حاصل کړي دي، نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل فوائد به دهغه چارې څوک چه ذمه وار وي. امام ابو داؤد فرمائی چه ددی حدیث سند لره اعتبار نشته.

قوله: **«عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَجُلًا ابْتِاعَ غُلَامًا الْخ»** د دې مضمون د پورته حدیث په شان دې قوله: **قَالَ أَبُو دَاوُدَ هَذَا إِسْنَادٌ لَيْسَ بِذَاكَ.**

### الخراج بالضمنان والا حدیث د کومې درجې دې؟

سند که هر څنگه وی خو مسئله هم داسې ده، د دې سند د ضعف وجه کومه چه مصنف رحمہ اللہ بیان فرمائی لکه چه امام منذری رحمہ اللہ فرمائیلې دی چه په دې سند کښې مسلم بن خالی الزنجی دې چه ضعیف دې، منذری وائی خو امام ترمذی رحمہ اللہ دا حدیث په خپل جامع کښې په دې سند سره روایت کړې دې **«عمر بن علی المقدی عن هشام بن عروۀ عن أبيه عن عائشة ان النبي صلى الله عليه وسلم قضی ان الخراج بالضمنان وقال هذا حديث حسن صحيح من حديث هشام بن عروۀ اه»** په دې سند کښې مسلم بن خالد الزنجی نشته. او په ترمذی کښې دا هم دی **«قال ابو عيسى استغرب محمد بن اسماعيل هذا الحديث من حديث عمر بن علي قلت تراه تدليسا؟ قال لا اه»** په تهذيب السنن کښې امام منذری فرمائی: **«وحكى البيهقي عن الترمذی انه ذكره لمحمد بن اسماعيل البخاری فكا انه اعجبه»** یعنی چه امام بخاری رحمہ اللہ دا حدیث په دې سند باندې واوریږدو نو خوښ ئې کړلو ۱هـ. د دې نه پس حافظ منذری د عمر بن علی په باره کښې لیکلې دی: **«وقد اتفق البخاری ومسلم على الاحتجاج بحديثه ورواه عن عمر بن**

۱: سنن ابن ماجه / التجارات ۴۳ (۲۲۴۳)، (تحفة الأشراف: ۱۷۲۴۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۱۶/۸۰/۶) (حسن)



علی ابوسلمة یحیی بن خلف الجویباری وهو ممن یروی عنه مسلم فی صحیحہ، وهذا انساب جید ولهذا صححه الترمذی، وهو غریب کما اشار الیه البخاری والترمذی واللہ تعالی اعلم ﴿حافظ منذری د ترمذی د روایت والا د ٲولو راویانو ثقاہت ٲہ دٲ خیل دٲ کلام کنسی ذکر کرٲ دٲ او بیا ٲہ اخر کنسی فرمائی چہ دا سند جید دٲ ہم ٲہ دٲ وجہ امام ترمذی رحمہ اللہ د دٲ حدیث تصحیح کرٲ دہ. او اگر چہ غریب ہم دٲ خو غرابت د صحت منافی نہ دٲ لکہ چہ مشہورہ اصولی مسئلہ دہ او د حضرت شیخ ٲہ حاشیہ د بذل کنسی دی ﴿ ذکر تخریج الحدیث الحافظ فی التلخیص والمسئله اجماعیہ لهذا الحدیث کما فی الاوجز ﴾ امام ابوداؤد رحمہ اللہ دا حدیث د عائشہ رضی اللہ عنہا ٲہ درٲ مختلف سندونو سرہ ذکر کرٲ دٲ. ٲہ دٲ دریو کنسی ٹی ٲہ یو باندي کلام کرٲ دٲ.

### بَابُ إِذَا اخْتَلَفَ الْبَيْعَانِ وَالْمَبِيعُ قَائِمٌ

کله چہ ٲہ اخستونکی او خرخونکی کنسی اختلاف راشی اویع موجود وی

[۳۵۱۱] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ قَارِسٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ أَبِي عُمَيْسٍ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ قَيْسٍ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنِ الْأَشْعَثِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: اشْتَرَى الْأَشْعَثُ رَقِيقًا مِنْ رَقِيقِ الْخُمُسِ مِنْ عَبْدِ اللَّهِ بِعِشْرِينَ أَلْفًا، فَأَرْسَلَ عَبْدُ اللَّهِ إِلَيْهِ فِي مَتْنِهِمْ، فَقَالَ: إِنَّمَا أَخَذْتُهُمْ بِعَشْرَةِ أَلْفٍ. فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَأَخْتَرْتُ جَلًّا لِيَكُونَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ، قَالَ الْأَشْعَثُ: أَنْتَ بَيْنِي وَبَيْنَ نَفْسِكَ، قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "إِذَا اخْتَلَفَ الْبَيْعَانِ وَلَيْسَ بَيْنَهُمَا بَيِّنَةٌ، فَهُوَ مَا يَقُولُ رَبُّ السَّلْعَةِ أَوْ يَتَّزَكَانِ".

عمرو بن شعيب دخیل ٲلارنہ او هغه ددہ دنیکہ نہ روایت کوی فرمائی چہ زما ٲلاراشعت د عبد اللہ بن مسعود نہ یو خرغلامان ٲہ شل زرہ واخستل کوم چہ ابن مسعود تہ ٲہ خمس کنسی ورکرٲ شوٲ وو، ابن مسعود داشعت نہ د غلامانو د قیمت مطالبہ وکرٲلہ اشعت او وئیل مادا غلامان ٲہ لس زرہ اخستلٲ دی ابن مسعودہ ورتہ او وئیل یوکس خوبن کرہ چہ زما اوستا ٲہ مینخ کنسی فیصلہ وکرٲی، عبد اللہ بن مسعود رحمہ اللہ او وئیل مادنبی رحمہ اللہ نہ اوریڈلی دی چہ فرمائیل ٹی کله چہ دخریدار او خرخونکی ٲہ مینخ کنسی جگرہ ٲینبہ شی اودد واروسرہ گواہ موجود نہ وی نو ٲہ دٲ وخت کنسی د مال والا خبرٲ لرہ اعتبار دٲ او یا دٲ بیع فسخ کرٲ شی.

﴿ أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ قَيْسٍ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنِ الْأَشْعَثِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ اشْتَرَى الْأَشْعَثُ رَقِيقًا مِنْ رَقِيقِ الْخُمُسِ مِنْ عَبْدِ اللَّهِ بِعِشْرِينَ أَلْفًا ﴾

عبد الرحمن بن قیس روایت کوی د خیل ٲلار قیس نہ او قیس روایت کوی د عبد الرحمن د نیکہ محمد بن الاشعت نہ، محمد بن الاشعت د خیل ٲلار یعنی اشعت نہ واقعہ نقل کوی چہ یو کرت اشعت د بیت المال د غلامانو نہ خو غلامان د عبد اللہ بن مسعود رحمہ اللہ نہ واخستل ٲہ شل زرہ درهمہ باندي. عبد اللہ بن مسعود رحمہ اللہ د ثمن اخستلو د ٲارہ اشعت تہ سرٲی اولیرلو. اشعت او وٲ چہ ما هغه غلامان ٲہ لس زرہ درهمہ باندي اخستلٲ دی. (او

۱: سنن الترمذی/البیوع ۴۳ (۱۲۷۰)، سنن النسائي/البیوع ۸۰ (۴۶۵۲)، سنن ابن ماجه/التجارات ۱۹ (۲۱۸۶)، (تحفة الأشراف: ۹۳۵۸، ۹۵۴۶)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۴۴۷۱) (صحیح)

عبداللہ ﷺ فرمائیل چه په شل زره ئې اخستلې دی، چه کله په دې دواړو کښې اختلاف شو نو عبداللہ بن مسعود ﷺ او فرمائیل چه څوک زما او خپل مینځ کښې فیصله کونکې کړی، اشعث او وې زما او ستاسو تر مینځه خپله تاسو فیصله کونکې یی. په دې باندې عبداللہ بن مسعود ﷺ او فرمائیل چه ما د رسول اللہ ﷺ نه واوریدل چه هغوی به فرمائیل

﴿ إِذَا اخْتَلَفَ الْبَيْعَانِ وَلَيْسَ بَيْنَهُمَا بَيِّنَةٌ فَهُوَ مَا يَقُولُ رَبُّ السَّلْعَةِ أَوْ يَتَّزَكَّانِ ﴾

### شرح الحديث او بیان د مذاهب الائمة :

یعنی چه کله د بائع او مشتری تر مینځه د ثمن په مقدار کښې یا مبيع کښې اختلاف وی او بینه چا سره هم نه وی نو بیا به د رب السلعة یعنی بائع قول معتبر وی (یعنی سره د قسم نه) او یا دې دواړه دا معامله پرېږدی او یا دې فسخ کړی، یعنی یا خو دې مشتری د بائع قول سره د قسم نه اومنی او په هغې دې راضی شی، که داسې اوشی خو صحیح ده او که مشتری نه رضا کیږي نو بیا دې هغه هم په خپله خبره قسم او خوری او بیا دې قاضی د دواړو تر مینځه معامله فسخ کړی یعنی د مشتری ثمن دې مشتری ته واپس کړې شی او مبيع دې د مشتری نه اخستلو سره بائع ته ورکړې شی.

خان پوهه کول پکار دی چه دا مشهوره اختلافی مسئله ده د احنافو او شوافعو تر مینځه، او هغه اختلاف دا دې چه پورته په حدیث کښې چه کومه مسئله ذکر شوې ده هغه د امام احمد او شافعی ﷺ تر مینځه مطلقا ده که سلعه یعنی مبيع موجود وی یا هلاکه شوې وی، او په دې دویم صورت کښې به د تراد مطلب دا وی چه مشتری دې د مبيع قیمت واپس کړی او امام محمد ﷺ هم د هغوی سره دې او شیخین امام ابو حنیفه او امام ابویوسف او د امام مالک ﷺ په نزد دا حکم مذکور فی الحدیث هغه صورت کښې دې چه کله مبيع قائم وی او که مبيع هلاکه شوه نو بیا د دې دواړو په نزد القول قول مشتری مع یمنه، د شخینو دلیل دا دې چه د دې حدیث بعض طرقو کښې تصریح ده ﴿ اِذَا اخْتَلَفَ الْبَيْعَانِ وَالسَّلْعَةُ قَائِمَةٌ ﴾ چه د هغې طرف ته مصنف خپله هم اشاره کړې ده په ترجمة الباب کښې په دې وجه هغوی په ترجمة الباب کښې د ﴿ والمبيع قائم ﴾ قید اولگولو. لهذا په ترجمة الباب کښې د احناف تائید اوشو.

### تفصیل المسئلة :

دا چه تر اوسه پورې ذکر کړې شوه چه د حدیث الباب په شرح کښې او د هغې نه پس د فقهاء اختلاف دا هر څه په هغه صورت کښې وو چه په بائع او مشتری کښې د چا سره بینه نه وی، او که د یو سره .... بینه وی په خپله دعوی باندې نو د صاحب بینه په حق کښې دې فیصله اوکړې شی ..... او که هر یو بینه قائم کړه نو هغه وخت مسئله دا ده چه کوم بینه مثبتة وی زیادت لره نو هغه به اولی وی، د دې حدیث د لاندې په موطاء د امام محمد ﷺ کښې دی ﴿ قال محمد وبهذا ناخذ، اذا اختلفا فی الثمن تحالفا وترادا البیع وهو قول ابی حنیفة والعامۃ من فقہائنا اذا کان المبيع قائما بعینه، فان کان مشتری قد استهلكه فالقول ما قال مشتری فی الثمن فی قول ابی حنیفة (وابی یوسف) واما فی قولنا فیتحالفان ویتردان القيمة اه ﴾ په دې کښې امام محمد ﷺ تصریح کړې ده چه د هغوی رائي په دې کښې د امام صاحب ﷺ سره



نه ده بلکه په دې کښې هغوی د امام شافعی رحمہ اللہ ملگری دی لکه چه مونږ مخکښې په بیان المذاهب کښې ذکر کړل، والحديث اخرجه النسائي، قاله المنذري

[۳۵۱۲] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي لَيْلَى، أَنَّ الْقَاسِمَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ ابْنَ مَسْعُودٍ بَاغَرٍ مِنَ الْأَشْعَثِ بْنِ قَيْسٍ رَقِيقًا، قَدْ كَرَّمَعْنَاهُ وَالْكَلَامُ زَيْدٌ وَيَنْقُصُ.

عبد الرحمن دخپل پلار نه همد او اقعہ نقل کړیده چه عبد الله بن مسعود نه به اشعث باندي يو غلام خرڅ کړې وو او ددی روایت په الفاظو کښې څه قدرې کمی زیاتې دي.

## باب فِي الشُّفْعَةِ

د شفعي د احکامو بيان

د شفعي د لغوی او اصطلاحی معنی تحقيق او تنقيح:

د شفعه لغوی معنی ده ضم (۲) (قال القسطلانی وهی فی اللغة الضم علی الاشهر من شفعت الشئ ضمته فهی ضم نصیب الی نصیب، وفی الشرع حق تملک قهری یثبت للشریک القديم علی الحادث فیما ملک بعوض) او په فتح الباری کښې دی (وفی الشرع انتقال حصة شریک الی شریک کانت انتقلت الی اجنبی بمثل العوض المسمى ولم یختلف العلماء بمشروعيتها الا ما نقل انتقال حصة شریک الی شریک کانت انتقلت الی اجنبی بمثل العوض المسمى ولم یختلف العلماء بمشروعيتها الا ما نقل عن ابی بکر الاصم من انکارها اه) په دې تعریفونو کښې د جمهورو د مسلک رعایت کړې شوې دي چه د هغوی په نزد د شفعي ثبوت صرف د شریک دپاره وی په خلاف د احناف چه د هغوی په نزد د شفعي انحصار په شریک کښې نه دي بلکه د هغوی په نزد شفعه د گاونډي د وجې نه هم کیږي لکه چه وړاندې په تفصیل سره را روان دی حافظ چه کوم تعریف کړې دي د دې مطلب دا دي چه د احد الشریکین حصة چه د بیع د وجې نه غیر معروف سړی ته منتقل شوې ده (یعنی مشتری) د هغې منتقل کیدل د هغه غیر معروف سړی نه د شریک آخر طرف ته د عوض مسمى په بدله کښ، د دې نه مراد هغه ثمن دي کوم چه مشتری ادا کړې دي بائع ته، دا د احد الشریکین د حصې انتقال شریک آخر ته چه هغې ته شفعه وئیلې شی د هغې حصول چونکه د شریک آخر دپاره غیر اختیاری دي یعنی شرعی طور هغوی ته دا حق ملاوېږي، دا بیله خبره ده چه هغه دا خپل حق اخلي یا نه اخلي هم په دې وجه قسطلانی چه د شفعي په تعریف کښې (حق تملک قهری ای غیر اختیاری) وئیلې دی د دې مثال داسې دي لکه وراثت چه یو وارث ته د بل وارث د مال استحقاق غیر اختیاری طور سره کیږي. هم دغه شان شفعه هم ده چه شریعت احد الشریکین او د گاونډي دپاره د شریک آخر او د گاونډي په حصة کښې حصة ورکړې ده که هغه شریک غواړي نو د شریک آخر هغه حصة کومه چه بل سړی یعنی مشتری ته تلې ده، د هغه نه اخستلې شی په

(۱): سنن ابن ماجه/التجارات ۱۹ (۲۱۸۶)، (تحفة الأشراف: ۹۳۵۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۶۶۱) (صحیح)

(۲) د یو کور یا ځاني د بیع په وخت د شرکت یا گاونډي د وجې نه یو د دواړو شریکانو دپاره یا د گاونډي دپاره د تمليک حق حاصلیدل په ثمن د مشتری سره

خو کښې چه هغه خیز مشتری ته پریوتلې دې. په دې وجه زمونږ فقهاء د شفعي تریف داسې کړې دې «تملك البقعة بما قام على المشتري بسبب الشراكة او الجوار» په هره معنی اصطلاحی کښې د معنی لغوی لحاظ هم ساتلې شی. پس دلته هم په شفعه شرعی کښې د لغوی معنی یعنی ضم حصه الى حصه معنی موندلې شی یعنی یو شریک د بل شریک حصې لره د خپلې حصې سره یو ځانې کوی (وهذا غاية توضیح لهذا المقام)

### اسباب الشفعة عند الاثمة :

د دې نه پس دا هم پیژندل پکار دی چه په اسباب الشفعه کښې د ائمه کرام اختلاف دې، زمونږ په نزد د شفعي اسباب دوه دی شراکت او جوار، او بیا د شرکت دوه قسمونه دی شرکت فی نفس المبیع، او شرکت فی طریق المبیع د طریق هیڅ تخصیص نشته، بلکه مقصود شرکت فی حق من حقوق المبیع دې کالطریق والشرب ونحوهما، او د جمهورو او ائمه ثلاثه په نزد سببیت منحصر دې په شرکت فی نفس المبیع کښ، لهذا اسباب شفعه زمونږ په نزد درې دی او د جمهورو په نزد صرف یو، یعنی شرکت فی نفس المبیع، د باقی دوو هغوی قائل نه دی.

[۳۵۱۲] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبرَاهِيمَ، عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ أَبِي الزَّيْتَرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الشُّفْعَةُ فِي كُلِّ شَرِكٍ رُبْعَةٌ أَوْ خَائِطٌ لَا يَصْلُحُ أَنْ يَبِيعَ حَتَّى يُؤْذَنَ شَرِيكُهُ، فَإِنْ بَاعَ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ حَتَّى يُؤْذَنَ».

د جابر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم له فرمائیلي دی شفعه په هریو مشترک خیز کښې وي، کور وي او که باغ وي ترخوچه د شریک اجازت نه وي ددې خرڅول درست نسه دي او که چرې بغیر د اجازت نه خرڅ کړې شي نو ددې دوصول کول زیات حقدار هم هغه شریک ئې ترخوچه هغه منظور کړي نه وي.

« عَنْ جَابِرٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- « الشُّفْعَةُ فِي كُلِّ شَرِكٍ رُبْعَةٌ أَوْ خَائِطٌ لَا يَصْلُحُ أَنْ يَبِيعَ حَتَّى يُؤْذَنَ شَرِيكُهُ فَإِنْ بَاعَ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ حَتَّى يُؤْذَنَ »

رسول الله ﷺ فرمائی چه هر هغه مشترک خیز یعنی کور یا باغ کښې شفعه ثابت ده، په شریکینو کښې د یو دپاره هم جائز نه دی چه هغه خپله حصه بل چا باندې خرڅه کړي تر دې چه خپل شریک خبر نه کړی پس که هغه خپله حصه قبل الایذان خرڅه کړه نو د هغه بل شریک به د هغه د حصې زیات حقدار وی په نسبت د مشتری.

په دې حدیث کښې دوه مسئلې دی یو هم هغه پورته تیره شوې اختلافی مسئله چه حق شفعه صرف د شریک دپاره وی په مشترک خیز کښې یا د غیر شریک یعنی گاونډی دپاره هم وی، دویمه مسئله چه شفعه په کومو کومو خیزونو کښې وی، صرف په کور یا زمکه کښې او که د دې نه علاوه په نورو خیزونو کښې هم.

(۱) صحیح مسلم / المساقاة ۲۸ (۱۶۰۸)، سنن النسائي / البيوع ۷۸ (۶۵۰)، (تحفة الأشراف: ۲۸۰۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۱۲/۲، ۳۱۶، ۳۵۷، ۳۹۷)، سنن الدارمي / البيوع ۸۳ (۲۶۷۰) (صحیح)



## شفعه په کومو کومو خیزونو کښې وی :

دا دویمه مسئله هم اختلافی ده، خطابی فرمائی چې حدیث الباب دلیل دی په دې باندې چې شفعه صرف په کور او زمکه کښې واجب ده د دې نه علاوه په نورو خیزونو سامان او حیوان وغیره کښې نه وی. په ترمذی کښې د ابن عباس رضی الله عنه یو حدیث مرفوع روایت کړې شوې دي: «الشريك شفيع والشفعة في كل شيء» دا روایت په ترمذی کښې مرسله او مسند د دواړو طریقو سره روایت دي، خو امام ترمذی روایت مرسله ته اصح وښلې دي، او بیا د دې نه پس فرمائی: «وقال أكثر أهل العلم إنما تكون الشفعة في الدور والأرضين ولم يروا الشفعة في كل شيء وقال بعض أهل العلم الشفعة في كل شيء والأول أصح» په تحفة الاخوذی کښې ئې په «الشفعة في كل شيء» باندې لیکلی دی «وبه قال مالك في رواية وهو قول عطاء» او د امام احمد رحمه الله نه ئې نقل کړی دی چې د هغوی په نزد شفعه په منقولاتو کښې صرف په حیواناتو کښې ده، په باقی منقولاتو کښې نه، لکه چې په فتح الباری کښې دی (تحفه) والحديث أخرجه مسلم والنسائي قاله المنذري.

[۳۵۱۴] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْبُورٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "إِنَّمَا جَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الشُّفْعَةَ فِي كُلِّ مَالٍ يُقْسَمُ، فَإِذَا وَقَعَتِ الْحُدُودُ، وَصُرِفَتِ الطُّرُقُ فَلَا شُفْعَةَ."

جابر رضی الله عنه نه روایت دي فرمائی چې یقیناً ئې کریم ب شفعه په هر هغه خیز کښې مقرر کړی ده کوم چې تقسیم شوې نه وي کله چې حدود مقرر کړې شي اولاري جدا کړې شي نو د شفعي حق باقی پاتې نه شو ځکه چې شراکت ختم شو.

«عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ إِنَّمَا جَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- الشُّفْعَةَ فِي كُلِّ مَالٍ لَمْ يُقْسَمَ فَإِذَا وَقَعَتِ الْحُدُودُ وَصُرِفَتِ الطُّرُقُ فَلَا شُفْعَةَ»

یعنی شفعه په هر هغه مال مشترک کښې ده کوم چې تر اوسه پورې تقسیم کړې شوې نه وي او بیا چې د هر شریک د حصې حدود متعین کړې شي یعنې د هغه شرکت لره ختمولو سره د هر شریک حصه ممیز او جدا کړې شي او لارې ئې هم جدا جدا کړې شي نو بیا شفعه نه پاتې کیږي.

## حدیث کوم چې د جمهورو دلیل دي د احنافو د طرف نه دهغې توجیه

جمهور علماء کرام او ائمه ثلاثه په خپل مسلک باندې د هم دې حدیث نه استدلال کړې دي، زمونږ علماء کرامو د دې جواب دا ورکړې دي چې د حق شفعه مختلف اسباب دي چې په هغې کښې یو شرکت دي چې هر کله دا خبره ده نو بیا د دې حدیث مطلب به دا اخستلې شي چې د مکان مشترک یا ارض مشترک د تقسیم نه پس چې کوم حق شفعه د شرکت د وجې نه حاصل وو، د تقسیم نه پس اوس هغه پاتې نه شو. اوس که د یو حدیث نه د شرکت نه

۱: صحیح البخاري/البیوع ۹۶ (۲۲۱۳)، ۹۷ (۲۲۱۴)، الشفعة ۱ (۲۲۵۷)، الشركة ۸ (۲۴۹۵)، الحیل ۱۴ (۶۹۷۶)، سنن الترمذی/الأحكام ۳۳ (۱۳۷۰)، سنن ابن ماجه/الشفعة ۳ (۲۴۹۷)، (تحفة الأشراف: ۳۱۵۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۹۹، ۳۷۲۳) (صحیح)

علاوه د یو بل خیز سبب شفعه کیدل ثابتیږي نو بیا دا حدیث د هغې منافی نه دي. او مونږ وایو د نورو احادیثو نه شرکت فی الطريق او دغه شان د جوار سبب شفعه کیدل ثابت دي لهذا د هغې په دي حدیث کښې نفی نشته. (بذل)

والحدیث أخرجه البخاری والترمذی وابن ماجه، قاله المنذری

[۳۵۱۵] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ قَارِسٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، أَوْ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، أَوْ عَنْهُمَا جَمِيعًا عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا قُتِمَتِ الْأَرْضُ وَحْدَتْ فَلَا شَفْعَةَ فِيهَا».

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دي قرماني چه نښي عليه السلام فرمائيلى دي كله چه زمكه تقسيم كړې شي او حدونه مقرر كړې شي نو په دي كښې د شفعي حق باقى پاتې نه شو.

[۳۵۱۶] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مَيْسَرَةَ، سَمِعَ عَمْرَو بْنَ الشَّرِيدِ، سَمِعَ أَبَا رَافِعٍ، سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: «الْجَارُ أَحَقُّ بِسَقْبِهِ».

د ابو رافع رضي الله عنه نه روایت دي فرمائي چه دښي عليه السلام نه مې اوريدلى دي چه فرمائيلى ئې گاوندې دخپل نزدې كور زيات حقدار دي.

وراندې د هم دي مضمون حدیث د ابوهريره رضي الله عنه نه هم راروان دي ﴿إِذَا قُتِمَتِ الْأَرْضُ وَحْدَتْ فَلَا شَفْعَةَ فِيهَا﴾ أخرجه النسائي، وابن ماجه مسندا ومرسلا، قاله المنذری ﴿عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مَيْسَرَةَ سَمِعَ عَمْرَو بْنَ الشَّرِيدِ سَمِعَ أَبَا رَافِعٍ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَقُولُ «الْجَارُ أَحَقُّ بِسَقْبِهِ»﴾

سقب په معنی د قرب، یعنی د انسان گاوندې د خپل گاوندې د وجې نه زيات مستحق دي، یعنی په نسبت د هغه لرې مشترى، چا چه يو كور اخستلې دي.

دليل الاحناف او په دي باندي اشكال او جواب :

دا حدیث په شفعه لاجل الجوار كښې د احنافو دليل دي. خطابى په دي باندي څو تعقب كړې دي اول دا چه دا حدیث خو په خپل مضمون كښې مبهم دي، محتاج دي كشف او بيان ته په دي كښې د شفعي هيڅ ذكر نشته لهذا په دي كښې دواړه احتماله شته كيدې شي چه د دي نه مراد شفعه وي، او كيدې شي چه د دي نه مراد دا وي چه ﴿انه احق بالبر والمعونة﴾ یعنی د انسان گاوندې د گاوندې د وجې نه د دي مستحق دي چه د هغه سره نيكي او همدردى او كړې شي. او يو نقد ئې دا كړې دي چه د لفظ جار اطلاق په شريك باندي هم كيږي لكه چه په زوجه باندي هم د جاره اطلاق كيږي. دريم نقد ئې دا كړې دي چه د دي حدیث په سند كښې اضطراب دي او هغه احاديث په كومو كښې چه دا دي چه شفعه صرف د شريك دپاره وي ﴿اسانيدھا خيار ليس في شئ منها اضطراب﴾

(۱): تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۲۱۳، ۱۳۲۰۱)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه/الأحكام ۳ (۲۴۹۷) (صحيح)

(۲): صحيح البخاري/الشفعة ۲ (۲۲۵۸)، الحيل ۱۴ (۶۹۷۷)، ۱۵ (۶۹۷۸)، سنن النسائي/البيوع ۱۰۷ (۴۷۰۶)، سنن ابن

ماجه/الأحكام ۸۷ (۲۴۹۸)، (تحفة الأشراف: ۱۲۰۲۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۸۹/۴، ۳۹۰، ۱۰/۶) (صحيح)



د خطابی د اول نقد جواب دا دې چه (الجار احق بسقه) په دې حدیث کښې وئیلې کیدې شی چه د شفعی ذکر نشته خو د دې نه روستو روایت کښې د شفعی تصریح ده. (جار الدار احق بدار الجار) د دویم نقد جواب دا دې چه په بعضو روایاتو کښې تصریح ده د دې خبرې چه د جار نه مراد جار دې شریک نه دې لکه چه امام طحاوی په خپل سند سره بیان کړې دې (ثم قد روی عن رسول الله صلى الله عليه وسلم من اسبابه الشفعة بالجوار، وتفسير ذلك الجوار ما قد حدثنا.... عن عمر بن الشريد عن ابيه قال قلت يا رسول الله ﷺ ارض ليس لاحد فيها قسم ولا شرك الا الجوار بيعت قال الجار احق بسقه)

امام طحاوی رحمته الله فرمائی چه په دې حدیث کښې تصریح ده د دې خبرې چه د کومې زمکې په باره کښې سائل د رسول الله ﷺ نه تپوس کړې وو په هغې کښې د چا هیڅ قسم شرکت فی المبيع یا شرکت فی الطريق هیڅ نه وو سوا د جوار نه او د هغې باوجود رسول الله ﷺ د شفعی حق ثابت او فرمائیلو.

او د دریم نقد جواب دا دې چه اضطراب صرف د بعضو احادیثو په بعضو طرقو کښې دې، او بعض په دې کښې داسې هم دی کوم چه د هر قسم اضطراب او اختلاف نه محفوظ دی لکه چه حدیث د حسن (عن سمرة قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم جار الدار احق بالدار قال وفي الباب عن الشريد و أبي رافع و أنس قال أبو عيسى حديث سمرة حديث حسن صحيح) او بیا بعض راویانو چه په دې کښې کوم اختلاف کړې دې هغې لره د بیان فرمائیلو نه پس امام ترمذی فرمائی (والصحيح عند أهل العلم حديث الحسن عن سمرة.... الى آخر ما ذكر الترمذی من اختلاف الروایات وترجيح بعضها على بعض وفي آخره سمعت محمدا يقول كلا الحديثي عندي صحيح اه) والحديث اخرجه البخاری والنسائي وابن ماجه، قاله المنذرى.

[۳۵۱۷] (١) حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّلَيْسِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ سَمُرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "جَارُ الدَّارِ أَحَقُّ بِدَارِ الْجَارِ أَوِ الْأَرْضِ".

د سمره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی یو ګاونډي د بل ګاونډي د کور یا د زمکې داخستلو زیات حقدار دې.

[۳۵۱۸] (٢) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "الْجَارُ أَحَقُّ بِشَفْعَةِ جَارِهِ يُنْتَظَرُ بِهَا، وَإِنْ كَانَ غَائِبًا إِذَا كَانَ طَرِيقَهُمَا وَاحِدًا".

د جابر بن عبد الله نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی دخپل ګاونډي د شفعی ګاونډي زیات حقدار دې اور کچري دبیع په وخت کښې ګاونډي موجود نه وي نو په شفعه کښې به ورته انتظار کولې شي کله چه ددوی دواړو د کور لاره یوه وي.

(١): سنن الترمذی/الأحكام ۳۱ (۱۳۶۸)، (تحفة الأشراف: ۴۵۸۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۲/۵، ۱۳، ۱۸) (صحيح)  
(٢): سنن الترمذی/الأحكام ۳۲ (۱۳۶۹)، سنن ابن ماجه/الشفعة ۲ (۲۴۹۴)، (تحفة الأشراف: ۲۴۳۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۰۳/۳)، سنن الدارمي/اليومع ۸۳ (۲۶۶۹) (صحيح)

## بَاب فِي الرَّجُلِ يُفْلِسُ فَيَجِدُ الرَّجُلَ مَتَاعَهُ بِعَيْنِهِ عِنْدَهُ

څوک چه د چا نه څه شي واخلي او بيا مفلس شي او قرضدارې خپل مال او ويني نو څه به کوي؟

دې ترجمه الباب او حديث الباب باندې د پوهيدو نه مخکښې اصل مسئله او د علماء کرامو اختلاف واورئ...

د مسئله مترجم بها تشریح او په هغې کښې اختلاف علماء :

که یو سړې مديون مفلس وي (۱) د ډيرو قرضدارې وي نو هغه سره چه کوم مال وي يا د چرته نه راشي نو هغه به ټول ارباب حقوق ته په اعتبار د سرونو ورکولې شي يو ته هم په بل باندې ترجيح نه شي ورکولې خو که د چا بعينه مال د دې مديون سره وي نو په دې صورت کښې به ترجيح وي چه هغه مخصوص خيز به صرف د هغه خيز مالک ته ورکولې شي. اوس د دې نه پس ځان پوهه کړئ چه د دې مخصوص خيز نه څه مراد دې. مال وديعت، او مال غصب او عاريه خو بالاتفاق دی. په دې مال مخصوص کښې مال مبيع هم داخل دې يا نه؟ ځکه چه د ملک په بدلون سره حکما بدلون د عين راځي شرعا لکه چه په حديث د بريره رضي الله عنها کښې دی (ولک صدقة ولنا هدية) نه ثابت ده، لهذا مبيع باندې (فوجد الرجل ماله بعينه) صادق نه راځي. هم په دې وجه احناف وائي چه په مسئله مذکوره کښې به بائع احق بالمبيع نه وي بلکه اسوة للغرماء به وي او د ائمه ثلاث په نزد د دې حديث په مصداق کښې مبيع داخل ده هم په دې وجه باندې هغوی وائي چه بائع به احق بالمبيع وي، بيا په دې ائمه وکښې په خپل مينځ کښې بعض جزئياتو کښې اختلاف دې مثلا داچه د شوافعو په نزد دلته بائع ته ترجيح په هر حال کښې وي که هغه مړ وي او که ژوندې وي، او د مالکيانو په نزد باندې به د بائع په ژوند باندې خو هغه ته ترجيح وي يعنی بائع به احق بالمبيع وي او پس د مرگ ته به نه وي، هم دغه شان که مشتری بائع ته څه ثمن ادا کړې و نو د شوافعو په نزد په دې کښې هم عموم دې چه بائع ته به په دواړو صورتونو کښې ترجيح وي او د مالکيانو په نزد دا ده چه که بائع ته مشتری څه حصه هم د ثمن ادا کړې نه وي نو بيا خو به بائع ته ترجيح وي او که هغه د ثمن څه حصه ادا کړې وه نو بيا به ورته ترجيح نه وي.

دا دواړه اختلاف مسئلې د شوافعو او مالکيانو په باب کښې د راتلونکو احاديثو نه په فهم کښې راځي او د احنافو په نزد باندې به بائع ته په هيڅ حال کښې ترجيح نه وي.

د دې نه پس ځان پوهه کړئ چه د دې مسئلې په کومو رواياتو کښې چه د (فوجد الرجل ماله بعينه) سره د بيع ذکر نشته هلته خو به د احنافو په مسلک باندې هيڅ اشکال نه وي، هلته به احناف ښکاره دا وائي چه (ماله بعينه) صرف په ودائع او عواری وغيره باندې محمول دې مبيع په دې کښې داخل نه دې. خو که خپله په حديث کښې د بيع تصريح وي لکه چه په بعض روايات الباب کښې دی نو بيا به د احنافو توجيه څنگه چليرې؟ د دې جواب علامه

(۱) مديون مفلس يا مفلس هغه سړې دی چه د هغه په ذمه د خلقو قرضونه وي خو د ديواليه کيدو د وجې نه د قرض د بندولو (اداکولو) دپاره د هغه څه سره هيڅ نه وي، د دانينو (قرض غوښتونکو) د مراغه عند القاضي نه پس به قاضي پس د تحقيق نه د هغه د افلاس تصديق او کړي.



سندھی په حاشیه د نسائی دا ورکړې دې چه ﴿انه محمول علی الماخوذ علی سؤم الشراء او المبيع بشرط الخيار للبائع﴾ یعنی د بیع نه مراد مساومت دې یعنی د اخستلو دپاره د بائع سره سودا کول، او چه کوم خیز د سودا په وخت مشتری واخلی سره خپل کور ته اوړی د خوښولو دپاره دا خیز مقبوض علی سؤم الشراء دې څه ته چه مبيع هم وئیلې شی مجازا... او هم دغه شان هغه مبيع چه په هغې کښې خیار شرط د بائع دپاره وی، د دې قسم مبيع هم زموږ په نزد خالص د بائع حق وی، لکه چه تاسو په قدوری کښې لوستلې دې ﴿وخيار البائع يمنع خروج المبيع عن ملكه بخلاف خيار المشتري﴾ د مسئلې د دې تفصیل د بیان نه ترجمه الباب او حدیث الباب دواړه په فهم کښې راغلل، د دې نه معلومه شوه چه په حدیث کښې څه مسئله ده او په دې کښې څه اختلاف دې، او دا هم چه که حدیث د احنافو خلاف دې نو د هغې څه توجیه ده... فله الحمد والمنة..

[۳۵۱۹] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، وَحَدَّثَنَا النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا زُهَيْرُ الْمُعَنَّى، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ بْنِ مُحَمَّدٍ بْنِ عَمْرٍو بْنِ حَزْمٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "أَيُّمَا رَجُلٍ أَفْلَسَ فَأَذْرَكَ الرَّجُلُ مَتَاعَهُ بِعَيْنِهِ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ مِنْ غَيْرِهِ".

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلى دی چاچه دیومفلس سره خپل مال دخپل جنس په صورت کښې بیاموندو نودنورو قرضدارانو په نسبت دې دخپل مال داخستلو زیات حقداردې.

قوله: ﴿عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ «أَيُّمَا رَجُلٍ أَفْلَسَ فَأَذْرَكَ الرَّجُلُ مَتَاعَهُ بِعَيْنِهِ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ مِنْ غَيْرِهِ﴾ أخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجه قاله المنذرى.

[۳۵۲۰] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "أَيُّمَا رَجُلٍ بَاعَ مَتَاعًا فَأَفْلَسَ الَّذِي ابْتَاعَهُ وَلَمْ يَقْبِضْ الَّذِي بَاعَهُ مِنْ ثَمَمِهِ شَيْئًا فَوَجَدَ مَتَاعَهُ بِعَيْنِهِ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ، وَإِنْ مَاتَ الْمُشْتَرِي فَصَاحِبُ الْمَتَاعِ أَسْوَأُ الْفَرَمَاءِ".

د حارث بن هشام نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلى دی چاچه خپل مال خرڅ کړو اوبیاخريدار مفلس شو اوخرخونکي ته دخپل مال دنیست نه څه شي نه وي ملاوشوي او ده خپل مال بجنسه دخريدار سره بیاموندو نو ددې مال مالک ددې داخستلو زیات حقداردې اوکه چرې خريدار مړشوي وي نو دمال مالک دنورو قرضدارانو سره یو برابر دې،

قوله: ﴿عَنْ عُمَرَ بْنِ خَلْدَةَ قَالَ أَتَيْنَا أَبَا هُرَيْرَةَ..... فَقَالَ لَأَقْضِيَنَّ فِيكُمْ بِقَضَاءِ رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- «مَنْ أَفْلَسَ أَوْ مَاتَ فَوَجَدَ رَجُلٌ مَتَاعَهُ بِعَيْنِهِ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ»﴾

د بائع په احق بالمبيع کیدو کښې د شوافعو او مالکیانو ترمینځه دوه جزئی اختلافی مسئلې مونږ پورته بیان کړی دی په دې دواړو مسئلو کښې دا حدیث د مالکیانو دلیل دې

(۱): صحيح البخاري/الاستقراض ۱۴ (۲۴۰۲)، صحيح مسلم/المساقاة ۵ (۱۵۵۹)، سنن الترمذي/اليبوع ۲۶ (۱۲۶۲)، سنن النسائي/اليبوع ۹۳ (۶۸۰)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۲۶ (۴۳۵۸)، (تحفة الأشراف: ۱۴۸۶)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/اليبوع ۴۲ (۸۸)، مسند احمد (۲۲۸/۲، ۴۷، ۴۹، ۲۵۸، ۴۱۰، ۴۶۸، ۴۷۴، ۵۰۸)، دي/اليبوع ۵۱ (۲۶۳۲) (صحيح).  
(۲): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۴۸۶) (صحيح).

او د شوافعو خلاف دي، او بيا د دوه حديثو نه پس چه كوم دريم حديث راروان دي. (عَنْ عُمَرَ بْنِ خُلْدَةَ قَالَ أَتَيْنَا أَبَا هُرَيْرَةَ فِي صَاحِبٍ لَنَا أَفْلَسَ فَقَالَ لَا قُضِيَ فِيكُمْ بِقَضَاءِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «مَنْ أَفْلَسَ أَوْ مَاتَ فَوَجَدَ رَجُلٌ مَتَاعَهُ بِعَيْنِهِ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ» ) دا حديث د مالكيانو خلاف او د امام شافعي موافق دي. حديث عمر بن خلدۀ اخرجۀ ابن ماجه، قاله المنذري.

[۳۵۲۱] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ يَعْنِي ابْنَ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَنْ يُونُسَ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو بَكْرٍ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنُ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَدْ كَرَّمَنِي حَدِيثَ مَالِكٍ، زَادُوا فِي قَضَى مِنْ ثَمَمِيَّاتٍ فَهُوَ أَسْوَأُ الْغَرَمَاءِ فِيهَا.

د ابوهريره رضي الله عنه نه د تير شوي روايت په شان روايت منقول دي مگر په دي روايت كښي داسي دي كه چرې اخستونكي خرخونكي ته دقيمت څه حصه وركړي وي نو بيا اخستونكي په مطالبه كولو كښي دنورو قرضدارانو په شان دي او څوك چه مړ شوي وي اودهغه سره بعينه دكوم كس مال پيداشي برابره خبره ده چه خريدار اخستونكي ته دقيمت څه حصه وركړي وي او كه نه وي بهر حال دي به هم دنورو قرضدارانو په شان وي.

[۳۵۲۲] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَوْفٍ الطَّائِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْجَبَّارِ يَعْنِي الْحَبَّارِيَّ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ يَعْنِي ابْنَ عَيَّاشٍ، عَنْ الزُّبَيْدِيِّ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ وَهُوَ مُحَمَّدُ بْنُ الْوَلِيدِ أَبُو الْهَذَلِ الْجَنْصِيُّ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، نَحْوَهُ، قَالَ: فَإِنْ كَانَ قَضَاءٌ مِنْ ثَمَمِيَّاتٍ فَمَا بَقِيَ فَهُوَ أَسْوَأُ الْغَرَمَاءِ، وَإِنَّمَا أَمْرٌ هَلَكَ وَعِنْدَهُ مَتَاعٌ أَمْرٌ بِعَيْنِهِ اقْتَضَى مِنْهُ شَيْئًا، أَوْ لَمْ يَقْتَضِ فَهُوَ أَسْوَأُ الْغَرَمَاءِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: حَدِيثُ مَالِكٍ، أَصَحُّ.

د ابوبكر بن عبد الرحمن بن حارث بن هشام نه دمالك دحديث په شان روايت نقل شوي دي البته په دي روايت كښي صرف دا اضافه ده چه : كه چرې خريدار ددي مال دقيمت نه يوڅه اداكړي وي نو دمال مالك به دنورو قرضدارو سره مساوي وي، امام ابوداود فرمائي دمالك حديث زيات درست دي.

[۳۵۲۳] (۳) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ هُوَ الطَّائِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُئْبٍ، عَنْ أَبِي الْمُعْتَمِرِ، عَنْ عُمَرَ بْنِ خُلْدَةَ، قَالَ: أَتَيْنَا أَبَا هُرَيْرَةَ، فِي صَاحِبٍ لَنَا أَفْلَسَ، فَقَالَ: «لَا قُضِيَ فِيكُمْ بِقَضَاءِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ أَفْلَسَ أَوْ مَاتَ فَوَجَدَ رَجُلٌ مَتَاعَهُ بِعَيْنِهِ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ».

عمرو بن خلدۀ نه روايت دي فرمائي چه مونږ ديوكس دمعاملې په سلسله كښي د ابوهريره به په خدمت كښي حاضر شو څوك چه مفلس شوې وو، ابوهريره او وئيل زه به په تاسو كښي دنبي صلی الله علیه و آله دفيصلي په شان فيصله كوم اوهغه داده څوك چه مفلس شي يامر شي اوبيا دمال مالك خپل خيز بعينه ورسره پيدا كړي نو دنورو قرضدارانو په نسبت به د دخپل مال زيات حقدار وي.

(۱): انظر حديث رقم: (۳۵۱۹)، (تحفة الأشراف: ۱۴۸۶۱) (صحيح)

(۲): انظر حديث رقم: (۳۵۱۹)، (تحفة الأشراف: ۱۴۸۶۱) (صحيح)

(۳): سنن ابن ماجه/الأحكام ۲۶ (۲۳۶۰)، انظر حديث رقم: (۳۵۱۹)، (تحفة الأشراف: ۱۴۲۶۹) (ضعيف)



## باب فیمن اُحیا حسیراً

خوک چه ناکاره څاروي په خوراک یا علاج باندې تندرست کړي

د مسئلې مترجم بهر تشریح او اختلاف الاثمة :

حسیر اخستلی شوي دي د حسور نه په معنی د مانده شدن (سترې کیدل) هغه څاروي چه په سفر کښې په لاره باندې سترې کیدو سره د تلو نه عاجز کیدو سره اودریږي. دا خبره زیات ترپه اوبنانو کښې موندلې شی چه بعض وخت هغه سترې کیدو سره داسې کینی چه بیا د اودریدو نوم نه اخلی او بیا د هغه مالک مجبورا هغه لره هم په دې حال کښې پریخودلو سره وړاندې روان شی. د مصنف رحمته الله علیه غرض د دې قسم اوبن حکم بیانول دی. پس په حدیث الباب کښې دی ﴿مَنْ وَجَدَ ذَابَّةً قَدْ عَجَزَ عَنْهَا أَهْلُهَا أَنْ يَغْلِقُوهَا فَمَسَبَّوْهَا فَأَخَذَهَا فَأَخْيَاهَا فَهِيَ لَهُ﴾

[۳۵۲۴] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، رَوَاهُ مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبَانٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُمَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْجُمَيْرِيِّ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، وَقَالَ: عَنْ أَبَانٍ، أَنَّ عَامِرَ الشَّعْبِيِّ حَدَّثَهُ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ وَجَدَ ذَابَّةً قَدْ عَجَزَ عَنْهَا أَهْلُهَا أَنْ يَغْلِقُوهَا، فَمَسَبَّوْهَا، فَأَخَذَهَا، فَأَخْيَاهَا فَهِيَ لَهُ"، قَالَ: فِي حَدِيثِ أَبَانٍ، قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَقُلْتُ عَمَّنْ؟ قَالَ: عَنْ غَيْرِ وَاحِدٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَذَا حَدِيثٌ حَمَّادٍ، وَهُوَ أَثْبَتُ وَأَتَمُّ.

عامر شعبي نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائی دی خوک چه یوداسې څاروي بیاموي کوم چه خلقو دکمزورتیا په وجه پریخودلې وي یا ورته گیانشي ورکولې او خوک ورته خوراک او علاج وکړي اودکار قابل شي نو دا څاروي هم دده دي، ابان وئیلی دی مادشعبي نه تپوس اوکړو چه دنبی صلی الله علیه و آله دا حدیث دي دچانه اوریدلې دي. هغه اوئیل یونه ددیرونه مې اوریدلې دي. امام ابوداود فرمائی داد حماد روایت دي او دا روایت زیات واضح او کامل دي.

په دې حدیث کښې دا دی چه کوم سړی دا قسم ځناور کوم چه د هغه مالک په خپل ځانې باندې پریخودلې وي اونیسی او بیا د هغه احیاء اوکړی لکه چه د ارض موات احیاء کيږي یعنی په هغه باندې خوراک ځکاک اوکړی او خدمت ئې اوکړی چه په هغې سره هغه دوباره کار ته تکره شی ﴿فهی له﴾ نو دا څاروي د هغه شو، دامام احمد، اسحق او ابن راهویه رحمته الله علیه په دې حدیث باندې عمل دي. او مصنف رحمته الله علیه هم چونکه غالباً حنبلی دي هم په دې وجه هغوی دا باب قائمولو سره د حنابلې مذهب ثابت کړې دي. او جمهور دا وائی چه دا څاروي ظاهر دا ده چه لقطه ده او د لقطې حکم په احادیثو د لقطې کښې د دې خلاف ذکر شوي دي، او هغه احادیث د دې حدیث په نسبت زیات صحیح او مشهور دی لهذا هم په هغې باندې به عمل کولی شی ﴿من ترک ذابۃ بمهلک﴾ مهلک موضع د هلاکت، یعنی داسې غیر آباد ځانې چه هلته د گیا او اوبو نه کیدو په وجه باندې د څاروی د هلاکت ویره وي.

شرح السند :

د باب د رومبې حدیث په سند کښې داسې دی ﴿وقال عن ابان ان عامر الشعبي﴾ د قال ضمیر

(۱) : تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۶۰، ۱۸۸۶۳) (حسن)

د مصنف استاد موسی بن اسماعیل ته راجع دې او د موسی د دې حدیث په سند کښې دوه استاذان دی د حاء د تحویل نه مخکښې چه کوم سند دې په هغې کښې د هغوی [۳۵۲۳] استاد حماد دې او په روستو سند کښې استاد ابان دې، نو مصنف رحمه الله دا فرمائی چه موسی چه کله دا حدیث حماد ته بیان کړو نو هغه وخت کښې هغوی په سند کښې «عن الشعبي» او نیلو او د هغوی سند کوم چه د ابان نه دې په هغې کښې هغوی په ځانې د شعبي «ان عامر الشعبي» و نیلې دې گویا دوه فرقونه شويو د عن او ان (۱)..... او دویم دا چه په رومبی روایت کښې د شعبي نوم ذکر نه دې، او په دویم کښې د شعبي نوم عامر ذکر دې.

[۳۵۲۵] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ خَالِدِ الْحَدَّادِ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ حُمَيْدٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، يَرْفَعُ الْحَدِيثَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهُ قَالَ: "مَنْ تَرَكَ دَابَّةً بِمَهْلِكٍ فَأَحْيَاهَا رَجُلٌ، فَهِيَ لِمَنْ أَحْيَاهَا".

عبيد الله دا روایت د عامر شعبي نه مرفوع نقل کړې دې چه نبی عليه السلام فرمائیلى دی څوک چه یو څاروي د تباهی په حال کښې پریږدی او بل څوک ئې بوځي او دوباره ئې تندرست کړي نو دا څاروي به دده وي چاچه دده خدمت کړې وي.

### باب فِي الرَّهْنِ د کړو (کانه) بیان

[۳۵۲۶] (۳) حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، عَنِ ابْنِ الْمُبَارَكِ، عَنْ زَكْرِيَّا، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "لَبَنُ الدَّرِّ يُخْلَبُ بِنَفَقَتِهِ إِذَا كَانَ مَرْهُونًا، وَالظَّهْرُ يَرْكَبُ بِنَفَقَتِهِ إِذَا كَانَ مَرْهُونًا، وَعَلَى الَّذِي يَرْكَبُ وَيَخْلَبُ النَّفَقَةَ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهُوَ عِنْدَنَا صَحِيحٌ.

ابوهريره رضي الله عنه د نبی عليه السلام نه روایت کوی فرمائی چه دلنگ څاروي پئ به د مالک په خرچه باندي لوشلي شي کله چه څاروي رهن کړي شوي او همدارنگې په رهن کړي شوي څاروي باندي د سوريډو مسئله هم ده او څوک چه څاروي لوشي دده په ذمه باندي ددغه څاروي خوراک هم دي او چه څوک ورباندي سورلي کوي دده په ذمه هم ددغه څاروي خوراک دي. امام ابوداؤد فرمائی دا حدیث اگرچه د قیاس خلاف دي لیکن د سند په اعتبار سره زمونږ په نزد باندي زیات صحیح دې.

قوله: «عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ «لَبَنُ الدَّرِّ يُخْلَبُ بِنَفَقَتِهِ إِذَا كَانَ مَرْهُونًا وَالظَّهْرُ يَرْكَبُ بِنَفَقَتِهِ إِذَا كَانَ مَرْهُونًا وَعَلَى الَّذِي يَرْكَبُ وَيَخْلَبُ النَّفَقَةَ»

### شرح الحديث من حيث الفقه وبيان المذاهب :

په حدیث الباب کښې چه کومه مسئله ذکر شوي ده یعنی انتفاع المرتهن بالمرهون اول په دې باندي ځان پوهه کړئ، هغه دا چه د امام احمد رحمه الله مسلک دا دې چه مرهون څیز که څه حیوان

(۱) والفرق بينهما ان الرواية بعن يكون من التلميذ عن استاذه بخلاف الرواية بان

(۲) : تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۶۰۱، ۱۸۸۶۳) (حسن)

(۳) : صحيح البخاري/الرهن ۴ (۲۵۱۱)، سنن الترمذي/اليروع ۳۱ (۱۲۵۴)، سنن ابن ماجه/الرهن ۲ (۲۴۴۰)، (تحفة الأشراف: ۱۳۵۴۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۲۸/۲، ۴۷۲) (صحيح)



دې د سورلي لائق يا د پيو قابل نو د مرتهن دپاره د هغې نه منتفع كيدل جائز دی. يعنی دهغې پي دې هغه خپله اولشی او كه د سورلي ځناوروی نو په هغې باندي دې سوريږي، او په دې صورت كښې به گيا دانه او خرچه د مرتهن په ذمه وي. هم هغه به پرې خوراك كوي او هم هغه به ترې نه فائده اخلي گيڼې مالک خو به ترې نه هسې هم د مالک كيدو په حيثيت منتفع وي. او هم د هغه په ذمه به د دې نفقه وي. د ائمه ثلاثه په نزد د مرتهن د شئ مرهون نه منتفع كيدل جائز نه دی، د حنابله استدلال د حديث الباب نه دي او مصنف چونكه حنبلي دي نو په ظاهر كښې د هغوی مقصد هم دا دي. حنابله په نفقه كښې بآء ته سببيه وئيلي ده يعنی مرتهن د نفقې په سبب د هغې پي لوشلې شي او په هغې باندي سوريږي شي،

### (د جمهورو د طرفه جوابونه)

د جمهورو د طرف نه په دې حديث كښې دوه جوابونه دي:

(پرومې جواب): يو دا چه دا حديث منسوخ دي، دويم دا چه دا د هغه وخت خبره ده چه د ربا حرمت نازل شوې نه وو، بيا چه كله د ربا حرمت نازل شو نو دا حديث هم منسوخ شو، د مرتهن د مرهون څيز نه فائده اخستل گويا د خپل قرض نه فائده اخستل دي. ﴿كل قرض جز نفعاً فهو ربا﴾ قاعده كليده ده،

(دويم جواب): دويم جواب دا وركړې شوې دي چه ﴿بنفقه﴾ كښې با سببيه نه ده بلكه بآء دپاره د الصاق ده او د يحلب چونكه فاعل ذكر نه دي چه څوك دي په دې وجه د هغې فاعل به اصل مالک منلي شي. او بآء به د الصاق دپاره وي او د الدر نه مراد چونكه په حديث كښې ذات الدر دي نو د پوره حديث مطلب به دا شي چه د ذات الدر پي به لوشلې شي د هغه د خرچ سره، يعنی چه كله د ذات الدر مالک، د مالک كيدو په حيثيت سره د هغې پي لوشی نو د هغې سره به د هغې نفقه هم دهغه په ذمه باندي وي په دې صورت كښې به دا حديث د جمهورو خلاف نه وي.

قوله: ﴿قال ابو داؤد: هو عندنا صحيح﴾ مصنف رحمته الله په ظاهر كښې دا فرمائی چه د دې حديث كومه معنی چه متبادر ده چه كه مرتهن كه د ذات الدر پي لوشی نو د هغه نفقه هم د هغه په ذمه ده دا حكم زمونږ په نزد صحيح او ثابت دي. (۱) يعنی اگر كه د قياس خلاف دي خو چونكه حديث ثابت دي په دې وجه چه كوم حكم ددې نه مستفاد كيږي هغه هم صحيح او قابل عمل دي، منسوخ او فاسد نه دي.

والحديث اخرجه البخاري، والترمذي وابن ماجه، قاله المنذري

[۳۵۲۷] (۱) حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعُمَرَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَا: حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقُعْقَاعِ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ بْنِ عَمْرٍو بْنِ جَرِيرٍ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ مِنْ عِبَادِ اللَّهِ لَأَنَاسًا مَا هُمْ بِأَنْبِيَاءَ، وَلَا شُهَدَاءَ يُعْطِيهِمُ الْأَنْبِيَاءُ، وَالشُّهَدَاءُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِمَكَانِهِمْ مِنَ اللَّهِ تَعَالَى، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، تُخَيِّرُنَا

(۱) د امام ترمذي رحمته الله په قول ﴿هذا حديث حسن صحيح﴾ باندي چه كوم مشهور اشكال او جواب دي په هغې كښې حافظ ابن حجر رحمته الله دا فرمائی ﴿صحيح اي من حيث الحكم وحسن من حيث السند﴾  
(۲) تقرده ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۱۰۶۶۱) (صحيح)

مَنْ هُمْ؟ قَالَ: هُمْ قَوْمٌ تَحَابُّوا بِرُوحِ اللَّهِ عَلَى غَيْرِ أَرْحَامٍ بَيْنَهُمْ، وَلَا أَمْوَالٍ يَتَعَاطَوْنَهَا، فَوَاللَّهِ إِنْ وُجِّهَهُمْ لَنُورٌ، وَإِنَّمُهُمْ عَلَى نُورٍ، لَا يَخَافُونَ إِذَا خَافَ النَّاسُ وَلَا يَحْزَنُونَ إِذَا حَزَنَ النَّاسُ، وَقَرَأَ هَذِهِ الْآيَةَ: «أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ» سورة يونس آية ۲۳.

د عمر بن الخطاب رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلي دي: يقيناً د الله تعالى په بندگانو کېنې داسې خلق شته کوم چې انبياء نه دي اونه شهداء دي لیکن انبياء او شهداء به ورباندې غبطه کوي په وجه د مرثي ددوی د الله تعالى سره په ورځ د قیامت باندې، خلق و عرض و کړ وای د الله رسول له ایا مونږ به خبرنکړي چې دوی څوک دي؟ نبی صلی الله علیه و آله او فرمایل: په غیر درشته داری نه د الله درضا دپاره په خپل مینځ کېنې دیوبل سره محبت کوي او په غیر ددین په خپل مالونه ئې یوبل ته ورکړي وي، په الله قسم ددوی مخونه به دنورنه وي او دوی به په نور باندې وي او دوی به ویرېږي نه کله چې خلق ویرېږي اونه به دوی غمژن کېږي کله چې خلق غمژن وي او بیا ئې دا ایت کریمه ولوستو: «أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفَ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ».

### بَابُ فِي الرَّجُلِ يَأْكُلُ مِنْ مَالِ وَلَدِهِ

د خپل اولاد د آمدن د استعمالو لوی بیان

[۳۵۲۸] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ عَمَّتِهِ، أَنَّهَا سَأَلَتْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، فِي جُجْرِي يَتِيمٍ أَفَاكُلُ مِنْ مَالِهِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنْ مِنْ أَطْيَبِ مَا أَكَلَ الرَّجُلُ مِنْ كَسْبِهِ وَوَلَدَهُ مِنْ كَسْبِهِ».

عائشه رضي الله عنها نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلي دي د انسان دپاره ډیر پاک اوصاف خوراک هغه دې کوم چې ده پخپل محنت سره حاصل کړې وي او د بچي گټه د پلار گټه ده.   
«عَنْ عُمَارَةَ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ عَمَّتِهِ أَنَّهَا سَأَلَتْ عَائِشَةَ رضي الله عنها فِي جُجْرِي يَتِيمٍ أَفَاكُلُ مِنْ مَالِهِ فَقَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- «إِنْ مِنْ أَطْيَبِ مَا أَكَلَ الرَّجُلُ مِنْ كَسْبِهِ وَوَلَدَهُ مِنْ كَسْبِهِ»»

شرح الحديث :

د عماره د ترور نه روایت دې هغه فرمائی چې ما د عائشې رضي الله عنها نه تپوس او کړو چې زما په پالنه کېنې یو یتیم ماشوم دې. ممکنه ده چې هغه یتیم د هغې ځوئې وی یا ئې نمسې وی (بذل) نو آیا زه د هغې په مال کېنې څه خورلې شم؟ په دې باندې عائشې رضي الله عنها جواب ورکړو چې د رسول الله صلی الله علیه و آله ارشاد دې چې غوره روزی او خوراک د انسان هغه دې کوم چې خپله د هغه د گټې نه وي او د سړي اولاد هم د هغه د گټې نه دې لهزد اولاد گټه خپله د هغه گټه شوه. د دې نه معلومه شوه چې د مور پلار دپاره د اولاد د گټې نه اخستل حلال او جائز دی. یعنی اگر چې بغیر د هغوی د اجازت نه وي، خو فقهاء کرامو دا د حاجت سره مقید کړې دې یعنی د حاجت په وخت اخستلې شی. او که حاجت نه وي نو بیا بغیر د اجازت نه اخستل جائز نه دی. (بذل)

(۱) سنن الترمذي/الأحكام ۲۲ (۱۳۵۸)، سنن النسائي/البيوع ۱ (۴۴۵۴)، سنن ابن ماجه/التجارات ۱ (۲۱۳۷)، ۶۴ (۲۲۹۰)، (تحفة الأشراف: ۱۵۹۶۱، ۱۷۹۹۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۱/۶، ۴۲، ۱۲۷، ۱۶۲، ۱۹۳، ۲۲۰)، سنن الدارمي/البيوع ۶ (۲۵۷۹) (صحيح)



[۳۵۲۹] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ مَيْسَرَةَ، وَعُمَرَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ الْمَعْنَى، قَالَا: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ غَمَارَةَ بْنِ غَمِيرٍ، عَنْ أُمِّهِ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهُ قَالَ: "وَلَدُ الرَّجُلِ مِنْ كَسْبِهِ مِنْ أَطْيَبِ كَسْبِهِ فَكُلُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: حَمَادُ بْنُ أَبِي سَلِيمَانَ زَادَ فِيهِ إِذَا اخْتَجْتُمْ، وَهُوَ مُنْكَرٌ.

عائشه رضی اللہ عنہ روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلى دى دانسان دپاره دهغه اولاد هم دده امدن دې بلکه دا بهتر امدن دهې تاسو د خپل اولاد دمال نه خورئ. امام ابوداود فرمائی حماد بن اني سليمان په دې روایت کښې داذا اختجتم لفظ زیاتي کړې دې لیکن دااضافه بده گنرلې شوي ده.

(۲) قَالَ أَبُو دَاوُدَ حَمَادُ بْنُ أَبِي سَلِيمَانَ زَادَ فِيهِ «إِذَا اخْتَجْتُمْ». وَهُوَ مُنْكَرٌ. یعنی د حماد بن ابی سليمان په روایت کښې په حدیث مذکور کښې د عند الاحتیاج د قید اضافه ده، پورته مونږ لیکلې دى چه فقهاء کرام هم داسې فرمائی چه دا حکم عند الاحتیاج دې، خو مصنف ﷺ په حدیث کښې د دې زیادت انکار کړې دې هغوی دا زیادت ثابت نه منی او منکر ورته وائی، د مصنف ﷺ په دې رائي باندې حضرت په بذل کښې کلام فرمائیلي دې او دا چه دا منکر نه بلکه زیات د ثقه دې. والحديث أخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۵۳۰] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْبَيْهَقِ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا حَبِيبُ الْمَعْلَمِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ رَجُلًا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنْ لِي مَالًا وَلَوْلَدًا وَإِنِّي أَلِدِي يَحْتَاجُ مَالِي، قَالَ: أَنْتَ وَمَالُكَ لِوَالِدِكَ، إِنْ أَوْلَادُكُمْ مِنْ أَطْيَبِ كَسْبِكُمْ، فَكُلُوا مِنْ كَسْبِ أَوْلَادِكُمْ".

عمرو بن شعيب د خپل پلار نه او هغه دده دنيکه نه روایت کوی فرمائی چه يو کس د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او عرض ئې وکړو أي دالله رسوله زما سره مال دې اوزما اولاد هم شته اوزما پلار زما مال ته محتاج دې نبی ﷺ او فرمائيل ستامال ستاد پلار دپاره دې خکه چه ستاد پاره ستا اولاد غوره امدن دې اوته دخپل اولاد دگټلې شوي مال نه خوره.

**باب فِي الرَّجُلِ يَجِدُ عَيْنَ مَالِهِ عِنْدَ رَجُلٍ**  
که څوک خپل يوشې د بل چا سره اووینی نو هغه اخستلې شي

د ترجمه الباب والا مسئلې تشریح :

د دې نه مخکښې نزدې چه کوم باب تیر شو (باب فی الرجل یفلس فیجد الرجل متاعه بعینه) په هغه او دې باب کښې د فرق کتلو ضرورت دې کوم چه د دې باب په حدیث کښې د غور کولو نه معلوم شوې دې هغه دا چه د باب اول تعلق د غاصب یا سارق سره نه دې او نه د مديون سره دې بلکه د مشتری من الغاصب او مشتری من السارق سره دې. یعنی یو کس د بل کس مال غلا کړو او بیا هغه غل دا مال په چا باندې خرڅ کړو او بیا اصل مالک دا خپل خیز د دې مشتری سره اولیدو، هم په دې باندې قیاس کولو سره غصب، چه یو کس د بل مال غصب کړو او بیا هغه غاصب دا مال د بل سړي په لاس باندې خرڅ کړو او بیا اصل

(۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۷۹۹۲) (حسن صحيح)

(۲) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۶۷۰، ۸۶۷۵)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه/التجارات ۶۴ (۲۲۹۲)، مسند احمد

(۱۷۹/۲) (حسن صحيح)

مالک دا خپل خیز د مشتری من الغاصب سره اولیدو. نو د دې په باره کښې په حدیث الباب کښې دا دی.

[۳۵۳۱] (۱) حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ مُوسَى بْنِ السَّائِبِ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ وَجَدَ عَيْنَ مَالِهِ عِنْدَ رَجُلٍ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ، وَيَتَّبِعُ الْبَيْعَ مَنْ بَاعَهُ."

د سمره بن جندب نه روایت دې فرمائی چې نبی ﷺ فرمائیلى دى کوم يو کس چې بعينه خپل مال د چاسره بيا موي نودې ددې خيز ريات حقداردې او چاچه دا اخستلى وي نو هغه دي د خرخونکي نه مطالبه وکړي.

﴿ مَنْ وَجَدَ عَيْنَ مَالِهِ عِنْدَ رَجُلٍ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ وَيَتَّبِعُ الْبَيْعَ مَنْ بَاعَهُ ﴾

بيع په معنى د مشتری، يعنى دې سړى دا خپل مال چا سره اوليدو نو هغه مالک د دې زيات مستحق دې او مشتری له پکار دى چې هغه اولگى په خپل بائع پسې. يعنى په صورت مذکوره کښې دې هغه مالک خپل خيز د مشتری نه واخلي او بيا هغه مشتری له پکار دى چې د خپل ثمن مطالبه د بائع نه اوکړي. د بائع نه مراد غاصب او سارق دې چې کوم حکم په دې حدیث کښې ذکر دې، فقهاء کرام هم د دې په باره کښې دغه شان فرمائی خو په داسې طريقه چې هغه مالک د مشتری مخکښې په بينه سره ثابت کړى چې دا خيز زما دې. والحديث اخرجه النسائي، قاله المنذرى.

### باب فِي الرَّجُلِ يَأْخُذُ حَقَّهُ مِنْ تَحْتِ يَدِهِ

که چرې څوک د امانت د مال نه د خپل حق په اندازه څه وصول کړى؟

[۳۵۳۲] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ هَذَا أُمَّ مُعَاوِيَةَ، جَاءَتْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ: "إِنَّ أَبَا سُفْيَانَ، رَجُلٌ شَجِيحٌ، وَإِنَّهُ لَا يُعْطِينِي مَا يَكْفِينِي وَبَنِي، فَهَلْ عَلَى جَنَاحٍ أَنْ أَخْذَ مِنْ مَالِهِ شَيْئًا؟" قَالَ: خُذِي مَا يَكْفِيكَ وَبَنِيكَ بِالْمَعْرُوفِ."

عائشه رضی الله عنها نه روایت دې فرمائی چې د معاويه مور، هنده، د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضره شوه او عرض ئې ورته اوکړو چې ابوسفيان يو کجوس سړى دې ماته دومره مال نه راکوي چې زما او زما د چودپاره کافي شي که چرې زه دده د مال نه دومره آخلم نو ايا په ما باندې به څه گناه وي؟ نبی ﷺ او فرمائيلى درواج مطابق دومره مال اختلې شي کوم چې ستا او ستا د چودپاره پوره کيږي (يعنى د دينه زيات مه اخله).

﴿ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ هَذَا أُمَّ مُعَاوِيَةَ جَاءَتْ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَقَالَتْ إِنَّ أَبَا سُفْيَانَ رَجُلٌ شَجِيحٌ الْخ ﴾

(۱): سنن النسائي/البيوع ۹۴ (۴۶۸۵)، (تحفة الأشراف: ۴۵۹۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۳/۵)، (۱۸)، (ضعيف)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۷۲۶۱، ۱۶۹۰۴)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/البيوع ۹۵ (۲۲۱۱)، المظالم ۱۸ (۲۴۶۰)، النفقات ۵ (۵۳۵۹)، ۹ (۵۳۶۴)، ۱۴ (۵۳۷۰)، الأيمان ۳ (۶۶۴۱)، الأحكام ۱۴ (۷۱۶۱)، صحيح مسلم/الأقضية ۴ (۱۷۱۴)، سنن النسائي/آداب القضاة ۳۰ (۵۴۲۲)، سنن ابن ماجه/التجارات ۶۵ (۲۲۹۳)، مسند احمد (۳۹/۶)، (۵۰)، (۶۰۲)،



عائشه رضی اللہ عنہا فرمائی چه د معاویہ مور هندہ رضی اللہ عنہ د رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضرہ شوه او د خپل خاوند ابوسفیان رضی اللہ عنہ شکایت ئې اوکړو چه هغه شوم سرې دې او زما د خرچ دپاره دومره نه راکوی چه زما او زما د اولاد دپاره کافی شی نو آیا زه د هغه په مال کښې بغیر د اجازت نه څه اخستلې شم؟ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل او... په قدر د حاجت اخستلې شې یعنی په عرف او عادت کښې چه عام طور څومره کافی کیږي د هغې مطابق اخستلې شې.

### د مسئلة الظفر تشریح او مذاهب ائمه :

په دې حدیث کښې چه کومه مسئلة ذکر شوې ده د هغې نوم دې مسئلة الظفر یعنی د یو سړي د بل سړي په ذمه څه حق دې کوم چه هغه نه ادا کوی نو آیا په دې صورت کښې هغه صاحب حق خپل حق د هغه سړي په مال کښې بغیر د اجازت نه په پټه اخستلې شی یا نه؟ د دې حدیث نه خو هم دا معلومیږي چه اخستلې شی، په فقهاء کرامو کښې د امام احمد رحمہ اللہ مسلک د دې خلاف دې د هغوی په نزد مطلقاً نه شی اخستلې هغوی دې ته خیانت وائی او د هغوی استدلال د هغه حدیث نه دې کوم چه هم په دې باب کښې د دې نه پس راروان دې. د باقی ائمه ثلاث په نزد صاحب حق خپل حق اخستلې شی خو په تفصیل کښې لږ اختلاف دې **« فعند الشافعي ياخذ من جنس حقه الا اذا تعذر الجنس فمطلقا »** یعنی د امام شافعی رحمہ اللہ په نزد صاحب حق خپل حق اخستلې شی خو چه کوم څیز اخلي هغه من جنس حقه کیدل پکار دی، خلاف جنس اخستل جائز نه دی. مثلاً د کپړې په بدل کښې کپړه اخستلې شی دراهم او دنانیر وغیره نه شی اخستلې خو دا چه جنس حقه اخستل متعذر وی نو بیا د هغوی په نزد خلاف جنس هم اخستلې شی او د احنافو په نزد په دې کښې دوه روایتونه دی، په یو روایت کښې مطلقاً نه شی اخستلې، یعنی یو روایت دا دې چه مطلقاً جائز نه دې لکه چه د امام احمد رحمہ اللہ مذهب دې او دویم روایت دا دې چه صرف من جنسه حق اخستلې شی (والنقدان ای الدرهم والدنانیر من جنس واحد) او د امام مالک رحمہ اللہ نه په دې کښې درې روایتونه دی د مذاهب ثلاثه مذکوره په شان. والحديث أخرجه البخاري ومسلم وابن ماجه، قاله المنذري.

[۳۵۲۳] (۱) حَدَّثَنَا خُشَيْشُ بْنُ أَصْرَمَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: جَاءَتْ هِنْدٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ أَبَا سَفْيَانَ، رَجُلٌ مِنْكَ، قَهْلٌ عَلَى مِنْ حَرَجٍ أَنْ أُلْفِقَ عَلَى عِيَالِهِ مِنْ مَالِهِ بِغَيْرِ إِذْنِهِ؟" فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا حَرَجَ عَلَيْكَ أَنْ تُنْفِقِي بِالْمَعْرُوفِ."

عائشه رضی اللہ عنہا نه روایت دې فرمائی چه هندہ د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضرہ شوه او عرض ئې ورته اوکړو چه ابوسفیان بخیل سرې دې ایاز مادپاره څه خرج شته چه زه دده د مال نه وأخلم او هغه په ده او دده د اولاد په خوراک څښاک باندې خرچ کړم نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل که چرې ته د دستور مطابق دده په اولاد باندې خرچ اوکړي نو ستادپاره څه گناه نشته.

(۱) صحیح مسلم / الأقضية ۴ (۱۷۱۴)، سنن النسائي / آداب القضاة ۳۰ (۵۴۲۲)، (تحفة الأشراف: ۱۶۶۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۲۵/۶) (صحیح)

[۳۵۴] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، أَنَّ يَزِيدَ بْنَ زُرَيْعٍ حَدَّثَهُمْ، حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ الطَّوِيلُ، عَنْ يُونُسَ بْنِ مَاهَكٍ الْمَكِّيِّ، قَالَ: "كُنْتُ أَكْتُبُ لِفُلَانٍ نَفَقَةَ أَيْتَامٍ، كَانَ وَلِيُّهُمْ فَعَالَطُوهُ بِالْفِ دَرْهَمٍ، فَأَذَاهَا إِلَيْهِمْ فَأَذْرَكْتُ لَهُمْ مِنْ مَالِهِمْ مِثْلَهَا، قَالَ: قُلْتُ: أَقْبِضُ الْآلِفَ الَّذِي ذَهَبُوا بِهِ مِنْكَ، قَالَ: لَا، حَدَّثَنِي أَبِي، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: أَدِ الْأَمَانَةَ إِلَى مَنْ ائْتَمَكَ، وَلَا تَخُنْ مَنْ خَانَكَ."

د یوسف بن ماهک مکي نه روایت دي فرمائي چه مابه د یوکس حساب کتاب لیکلودهغه یتیمانانو د مال د چاچه ده پرورش کولونو هغوی یوخل دده نه په دوکه کښې زر درهمه زیات یوړل نو په یو وخت کښې دده لاس ته دهغوی د مال نه ددې دوچند مال راغې ماورته ووئیل چه خپل زر درهمه ورنه واخله په کومو کښې چه ئي ته دوکه کړې وی هغه ووئیل هیڅ کله نه ماته زما پلار حدیث بیان کړې دي کوم چه هغه د نبی ﷺ نه اوریدلي وو چه فرمائیل في: چاچه درسره امانت ایخودلي وي هغه ته خپل امانت وسپاره او چاچه درسره خیانت کړې وی ته دهغه سره خیانت مه کوه.

﴿عَنْ يُونُسَ بْنِ مَاهَكٍ الْمَكِّيِّ قَالَ كُنْتُ أَكْتُبُ لِفُلَانٍ نَفَقَةَ أَيْتَامٍ كَانَ وَلِيُّهُمْ فَعَالَطُوهُ بِالْفِ دَرْهَمٍ فَأَذَاهَا إِلَيْهِمْ فَأَذْرَكْتُ لَهُمْ مِنْ مَالِهِمْ مِثْلَهَا الْخ﴾

یوسف بن ماهک وائی چه فلانی سړې کوم چه د بعض یتیم ماشومانو متولی وو د هغوی د خرچ حساب به ئي کولو یو کورت داسې اوشوه چه دي یتیمو ماشومانو (یعنی چه کله هغوی هوښیار شو) خپل متولی ته زر درهمو سره په مغالطه کښې واچولو، متولی د هغوی د خبرو اعتبار کولو سره زر دراهم ادا کړل نو هغه یوسف کوم چه د هغوی محاسب وو هغوی وائی چه خو ورځې پس په حساب کتاب کښې زه یو داسې ځانې ته اورسیدم چه په هغې کښې زما دپاره دا خبره ډیره آسانه وه چه هغه زر درهم د هغوی د هغه یتیمانو په مال کښې واخلم، پس ما د هغه په باره کښې د هغه سړی یعنی متولی نه معلومه کړه چه که ستاسو اجازت وی نو زه به ستاسو زر درهمه د حساب نه اوباسم نو هغوی زه منع کړم او د رسول الله ﷺ دا حدیث ئي راته واوړلو کوم چه هغه ته د هغه د پلار په واسطه رارسیدلې وو. ﴿أَدِ الْأَمَانَةَ إِلَى مَنْ ائْتَمَكَ وَلَا تَخُنْ مَنْ خَانَكَ﴾ چه کوم سړی ته خپل امین جوړ کړې ئي د هغه امانت هغه ته پوره پوره حواله کړه. او کوم سړی چه تاسره خیانت کوی ته د هغه سره خیانت مه کوه په دې مسئله الظفر کښې د امام احمد ﷺ هم دا حدیث دلیل دي، خو جمهور دا وائی چه په دې حدیث کښې خو د خیانت نه منع کړې شوې ده او د چا نه خپل حق وصول کول چه هغه هر څنگه وی بغیر د چا د اجازت نه دي ولي نه وی دا خیانت چرته دي. یوسف بن ماهک کوم چه د حدیث راوی دي هغه چه د کوم صاحب کاتب وو یعنی متولی ایتام د هغه نوم خو دلته په روایت کښې ذکر نه دي، هغوی دا حدیث د خپل پلار په حوالې سره نقل کړې دي لهذا د هغوی پلار هم مجهول شو په دې وجه په دې پورته متن والا راوی کوم صحابی دي دا معلومه نه شوه. د دې نه پس مصنف ﷺ هم دا متن په روایت د ابوهریره ﷺ مرفوعا ذکر کړې دي.

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۷۰۸)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۴/۱۴۱) (صحيح)



[۳۵۳۵] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، وَأَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَا: حَدَّثَنَا طَلْقُ بْنُ عَنَّا، عَنْ شَرِيكٍ، قَالَ ابْنُ الْعَلَاءِ، وَقَيْسٌ، عَنْ أَبِي حُصَيْنٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا أَمَانَةٌ إِلَى مَنِ اتَّيَمَّنَكَ، وَلَا تَخُنْ مَنْ خَانَكَ".

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دي فرمائي چه نبی کریم صلی الله علیه و آله فرمائي دي: چاچه درسره امانت ايخودلي وي هغه ته خپل امانت وسپاره او چاچه درسره خیانت کړې وي ته دهغه سره خیانت مه کوه.

قال المنذرى وحديث ابى هريرة أخرجه الترمذى وقال حسن غريب اهـ (عون المعبود)

## باب فِي قَبُولِ الْهُدَايَا

### د تحفود قبلولوييان

د دې نه مخکښې په کتاب الخراج کښې د هدايا العمال په عنوان سره باب تير شوې دي چه په هغې کښې مصنف د ابن اللتييه حديث ذکر کړې دي، او دا باب چه کوم دي مطلق د هديه سره متعلق دي، د عمالو سره د دې تعلق نشته خو د هدايا العمال په عنوان سره يو مستقل باب په کتاب القضاء کښې هم راوان دي يعنی د کتاب القضاء په مناسبت سره، او د دې نه مخکښې چه کوم تير شوې دي هغه د کتاب الخراج په مناسبت سره وو او چونکه د مال مسئله ډيره زيات احتياط طلب ده په دې وجه د هغې د اهميت د وجې نه منصف رحمه الله دوه خايه د دې باب قائم کړې دي.

[۳۵۳۶] (۲) حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ بَحْرٍ، وَعَبْدُ الرَّحِيمِ بْنُ مُطَرِّفٍ الرَّؤَاسِيُّ، قَالَا: حَدَّثَنَا عِيسَى وَهُوَ ابْنُ يُونُسَ بْنِ أَبِي اسْتَحَقَّ السَّيِّعِيُّ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقْبَلُ الْهُدْيَةَ وَيُثِيبُ عَلَيْهَا.

عائشه رضي الله عنها نه روايت دي فرمائي چه رسول الله صلی الله علیه و آله به تحفي قبلولي اودهغې بدلې به ئې هم ورکولي.

قوله: (عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - كَانَ يَقْبَلُ الْهُدْيَةَ وَيُثِيبُ عَلَيْهَا)

يعنی د رسول الله صلی الله علیه و آله عام عادت شريفه د هديه د قبلولو وو او دا هم چه رسول الله صلی الله علیه و آله به خپل مهدي ته هم هديه ورکوله. امام خطابی رحمه الله فرمائي چه د رسول الله صلی الله علیه و آله هديه قبلول دا د محاسن اخلاق د باب نه ده چه د هغې په ذريعه به رسول الله صلی الله علیه و آله د خلقو تاليف قلوب فرمائيلو. او هديه قبلولو سره د هغې خوراک دا د هغوی خاص شان او علامت د کوم ذکر چه په تيرو آسماني کتابو کښې هم راغلې دي، يعنی دا چه هغوی به هديه قبلوي او صدقه به نه قبلوي، او د هديه د قبلولو نه پس د رسول الله صلی الله علیه و آله خپله هغه ته هديه ورکول دا مصلحت ښکاره کوي چه رسول الله صلی الله علیه و آله د بل چا د احسان لاندې رانشي. (بذل) والحديث

(۱): سنن الترمذي/البیوع ۳۸ (۱۲۶۴)، (تحفة الأشراف: ۱۲۸۳۶، ۱۸۶۲۳)، وقد أخرجه: سنن الدارمي/البیوع ۵۷ (۲۶۳۹)

(حسن صحيح)

(۲): صحيح البخاري/الهبه ۱۱ (۲۵۸۵)، سنن الترمذي/البر والصلة ۳۴ (۱۹۵۳)، (تحفة الأشراف: ۱۷۱۳۳)، وقد أخرجه:

مسند احمد (۹۰/۶) (صحيح)

اخرجه البخاري والترمذي، قاله المنذري

[۳۵۳۷] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو الرَّازِيُّ، حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ الْفَضْلِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "وَأَيُّمُ اللَّهِ، لَا أَقْبَلُ بَعْدَ يَوْمِي هَذَا مِنْ أَحَدٍ هَدِيَّةً، إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَهَاجِرًا قُرَشِيًّا، أَوْ أَنْصَارِيًّا، أَوْ دَوْسِيًّا، أَوْ ثَقَفِيًّا".

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چې نبی کریم صلی الله علیه و آله فرمائي دي: په الله قسم دنن نه پس به دهیچا تحفه نه قبلوم مگر هله چې د قريشي مهاجر یا د انصاري یا د دوسي یا د ثقفی کس هديه وي.

قوله: ﴿وَأَيُّمُ اللَّهِ لَا أَقْبَلُ بَعْدَ يَوْمِي هَذَا مِنْ أَحَدٍ هَدِيَّةً إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَهَاجِرًا قُرَشِيًّا أَوْ أَنْصَارِيًّا أَوْ دَوْسِيًّا أَوْ ثَقَفِيًّا﴾ دا حدیث دلته مختصر دې کوم چې امام ترمذی رحمته الله علیه د کتاب المناقب په آخر کښې مفصلاً ذکر کړې دې هغه دا چې یو اعرابي د هغوی په خدمت کښې یو اوښه په طور د هدیه پیش کړه کومه چې رسول الله صلی الله علیه و آله قبوله کړه او بیا ئې روستو هغه اعرابي ته د هغې اوښې په عوض کښې شپږ اوښې ورکړې خو هغه په دې باندي هم خوشحاله نه چې کله رسول الله صلی الله علیه و آله ته دا خبره اورسیده نو په دې باندي رسول الله صلی الله علیه و آله دا ارشاد او فرمائیلو چې د هغې حاصل دا دې چې هر سړې او د هر خاندان فرد د دې لائق نه وي چې د هغه هدیه دې قبول کړې شی. او بیا ئې د خو قبائلو نومونه اخستلو سره او فرمائیلي چې د دوی نه علاوه به زه بیا د چا هدیه هم نه قبلوم. ﴿ایم الله﴾ د قسم د الفاظو نه دی ﴿فقی المجمع وایم الله لفظ قسم ذولغات، وهمزتها وصل، وقد تقطع، تفتح وتکسر اه﴾... والحديث أخرجه الترمذي والنسائي، قاله المنذري

### باب الرَّجُوعِ فِي الْهَبَةِ

هبه کړې شوي څيز واپس غوښتل

[۳۵۳۸] (۱) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبَانُ، وَهَمَّامٌ، وَشُعْبَةُ، قَالُوا: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "الْعَائِدُ فِي هَبَّتِهِ كَالْعَائِدِ فِي قَبِيهِ" قَالَ هَمَّامٌ: وَقَالَ قَتَادَةُ: وَلَا نَعْلَمُ الْقِيَّعَ إِلَّا حَرَامًا.

د ابن عباس رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چې نبی کریم صلی الله علیه و آله فرمائي دي: هبه کړې شوي څيز واپس غوښتل داسې دي لکه څوک چې خپلې قې (اولتنې) په خپله خورۍ همام راوی وئيلي دي چې قتاده وئيلي دي مونږ به قې حرام گنړلو نو همدارنگې هبه کړې شوي څيز واپس غوښتل به هم حرام وي.

[۳۵۳۹] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ الْمُعَلِّمِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ،

(۱): سنن الترمذي/المناقب ۷۴ (۳۹۴۶)، (تحفة الأشراف: ۱۴۳۲۰) (صحیح)

(۲): صحیح البخاري/الهيبة ۱۴ (۲۵۸۸)، صحیح مسلم/الهيبة ۲ (۱۶۲۲)، سنن النسائي/الهيبة ۲ (۳۷۷۲)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۵ (۲۳۸۵)، (تحفة الأشراف: ۵۶۶۲)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/اليبوع ۶۲، (۱۲۹۹)، مسند احمد (۲۵۰/۱)، ۲۸۹، ۲۸۰، ۲۹۱، ۳۳۹، ۳۴۲، ۳۴۵، ۳۴۹ (صحیح)

(۳): سنن الترمذي/اليبوع ۶۲ (۱۲۹۹)، الولاء والبراء ۷ (۲۱۳۲)، سنن النسائي/الهيبة ۲ (۳۷۲۰)، سنن ابن ماجه/الهيبة ۱ (۲۳۷۷)، (تحفة الأشراف: ۵۷۴۳، ۷۰۹۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۷۸، ۲۷/۲) (صحیح)



عَنْ طَاوُيسَ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، وَابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «لَا يَحِلُّ لِرَجُلٍ أَنْ يُعْطِيَ عَطِيَّةً أَوْ يَهَبَ هِبَةً فَيَرْجِعَ فِيهَا، إِلَّا الْوَالِدَ فِيمَا يُعْطَى وَلَدَهُ، وَمِثْلَ الَّذِي يُعْطَى الْعَطِيَّةُ، ثُمَّ يَرْجِعُ فِيهَا كَمِثْلِ الْكَلْبِ يَأْكُلُ فَإِذَا شَبِعَ قَاءَ ثُمَّ عَادَ فِي قَيْبِهِ».

داین عمر رضی اللہ عنہ نه روایت دی فرمائی چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلی دی: حلال نه دی دیوکس دپاره چه یوشی هبه کړي او بیا ئې واپس اخلي مگر پلار چه خپل بچي ته څه شي ورکړي او واپس ئې ورته اخلي نوباک نشته، او مثال دهغه کس چه هديه چاته ورکړي او بیا ئې واپس غواړي په شان دسپی دی چه خوراک وکړي او مورشي اوقې وکړي او بیا بیرته خپل قې خوری.

### د مذاهب ائمه تحقیق مع الدلائل :

دا مسئله اختلافی ده، د امام مالک او د شافعی او احمد په نزد د واهب دپاره رجوع کول ناجائز ده مگر دا چه دا هبه د پلار د طرف نه د ځوی دپاره وی نو د پلار دپاره رجوع فی الهبة جائز ده. د دې حضراتو استدلال د باب د حدیث ثانی نه دې چه په هغې کښې دی «الا الوالد فيما يعطى ولده» او د امام شافعی رحمته الله د پلار نه علاوه په نورو اصولو کښې دوه روایتونه دی، په اصح قول کښې د باقی اصولو هم هغه حکم دې کوم چه د والد دې او د احنافو په نزد د دې برعکس دې د هغوی په نزد د واهب دپاره په هديه اجانب کښې رجوع کول جائز دی په دې شرط چه د موهوب له د طرف نه هغه ته عوض نه وی ملاؤ شوې گینې جائز نه دې، بله دا چه د احنافو په نزد زوجین په دې مسئله کښې د ذی رحم محرم په حکم کښې دی. د امام مالک رحمته الله د مسلک په باره کښې علامه عینی رحمته الله لیکلی دی: «وليس لغير الاب الرجوع عند مالك الا ان عنده ان الام لها الرجوع ايضا اذا كان ابوه حيا وهذا هو الاظهر عند مالك وروى عنه المنع اه» (تراجم) او قاضی عیاض فرمائی: «وجوز مالك الرجوع مطلقا الا في هبة احد الزوجين من الاخر اه» د احنافو دلیل په دې مسئله کښې دا دې «اذا كانت الهبة لدى رحم محرم لم يرجع» رواه الحاكم من حديث الحسن عن سمرة مرفوعاً. یو روایت د دې نه مخکښې تیر شوې دې «الواهب احق بهبته مالم يثب منها» اخرجه ابن ماجة والدارقطني من حديث ابی هريرة مرفوعاً (تحفة)

### د احنافو د طرف نه د حدیث الباب توجیه :

او احنافو د جمهورو د دلیل یعنی د باب د دویم حدیث «لا يحل لرجل ان يعطى عطية او يهب هبة فيرجع فيها الا الوالد فيما يعطى ولده» د دې استثناء جواب دا دې چه دا استثناء منقطع ده، یعنی په دې سره مقصود رجوع فی الهبة لره بیانول نه دی بلکه نفس تصرف دې په مال د ځوی کښې یعنی عند الحاجة کومه چه متفق علیه مسئله ده چه د پلار دپاره د ځوی په مال کښې تصرف د حاجت په وخت مطلقا جائز دې (کذا فی الکوکب ۲/۴۷۱) او دا چه په حدیث کښې دی «لا يحل لاحد ان يعطى عطية الخ» د دې مطلب عدم جواز نه دې بلکه مقصد دا دې چه داسې کول مناسب نه دی لکه چه وئیلې شی «لا يحل للواجد رد السائل» او په دې معنی باندې د حدیث د محمول کولو حاجت ځکه دې چه د نورو احادیثو سره ئې تعارض

رانشی د کومو نه چه د رجوع فی الهبة جواز ثابتیږي، دغه شان د ﴿العائد فی هبته كالعائد فی قینه﴾ نه هم په عدم جواز باندې استدلال صحیح نه دي ځکه چه په بل روایت کښې دي ﴿كالکلب يعود فی قینه﴾ ځکه چه د کلب فعل ته حرام نه شی وئیلې کیدی، بلکه په دې سره مقصود تشنیع او تقبیح ده.

والحدیث الاول عن ابن عباس رضی الله عنهما اخرجہ البخاری ومسلم والنسائی وابن ماجه والحدیث الثانی اخرجہ الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

[۳۵۴۰] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ النَّهْرِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي أَسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ، أَنَّ عَمْرُو بْنَ شُعَيْبٍ حَدَّثَهُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَثَلُ الَّذِي يَسْتَرِدُّ مَا وَهَبَ كَمَثَلِ الْكَلْبِ يَقْبِيءُ فَيَأْكُلُ قَيْنَهُ، فَإِذَا اسْتَرَدَّ الْوَاهِبُ فَلْيَوْقِفْ، فَلْيَعْرِفْ بِمَا اسْتَرَدَّ، ثُمَّ لِيُدْفَعْ إِلَيْهِ مَا وَهَبَ".

ابن عمر رضی الله عنهما نه روایت دي فرمائی چه نبی کریم صلی الله علیه وسلم فرمائیلي دی مثال دهغه کس چه دیوشي دهبه کولو نه پس هغه شي واپس غواړي لکه دسپی دي چه قې وکړي او بیا ئې بیرته خوري نوڅوک چه هبه وکړي او بیا ئې واپس اخستل غواړي نو لکه څنگه چه هغه څیز هبه کړي شوي دي دهغه دواپس کولو وجه دي معلومه کړي شي ﴿مَثَلُ الَّذِي يَسْتَرِدُّ مَا وَهَبَ كَمَثَلِ الْكَلْبِ يَقْبِيءُ﴾

یعنی د هغه سړی حال چه د هبه کولو نه پس خپل څیز لره واپس واخلی د سپی په شان دي چه قې اوکړی او واپس ئې اوختی په وړاندې روایت کښې دی چه کله یو سړې خپله هدیه واپس اخستل غواړی نو دي موهب له لره پکار دی چه خپل واهب دي د ټولو خلقو مخکښې اودروی او کومه هدیه چه هغه واپس اوړی د خلقو مخکښې دي د هغې تشهير اوکړی او د هغې نه پس دي بیا واپس کړی

د دي حدیث نه هم دا معلومه شوه چه د واهب دپاره د رجوع حق ثابت دي د جواز په درجه کښې خودا ډیره د بې غیرتۍ خبره ده. والحدیث اخرجہ النسائی وابن ماجه بنحوه، قاله المنذری

### بَابُ فِي الْهَدِيَّةِ لِقَضَاءِ الْحَاجَةِ

دچا د ضرورت پوره کولو نه پس دهغه د هدې قبولو بیان

[۳۵۴۱] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَمْرٍو بْنِ السَّرِّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَالِكٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي جَعْفَرٍ، عَنْ خَالِدِ بْنِ أَبِي عَمْرٍو، عَنْ الْقَاسِمِ، عَنْ أَبِي أَمَامَةَ، عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ شَفَعَ لِأَخِيهِ بِشَفَاعَةٍ فَأَهْدَى لَهُ هَدِيَّةً عَلَيْهَا فَقَبِلَهَا، فَقَدْ أَقْبَى بَابًا عَظِيمًا مِنْ أَبْوَابِ الرَّبِّ".

د ابو امامه رضی الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی کریم صلی الله علیه وسلم فرمائیلي دی څوک چه په څه معامله کښې دیو مسلمان ورور سفارش وکړي او بیا دهغه نه تحفه قبوله کړي نو ده دسود په یوه لویه دروازه راتگ وکړو.

(۱): سنن ابن ماجه ۲ (۲۳۷۸)، سنن النسائي ۲ (۳۷۱۹)، (تحفة الأشراف: ۸۷۲۲، ۸۶۶۰)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۷۵/۲) (حسن صحيح)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۴۹۰۲)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۲۶۱/۵) (حسن)



قوله: «مَنْ شَفَعَ لِأَخِيهِ بِشَفَاعَةٍ فَأَهْدَى لَهُ هَدِيَّةً عَلَيْهَا فَقَبِلَهَا فَقَدْ أَتَى أَبَا عَظِيمًا مِنْ أَبْوَابِ الرَّبِّ»  
 په دې حديث كښې په شفاعت باندې په هديه قبلولو وعيد دې او دې ته رشوت وئيلي شوي دي ځكه چه شفاعت حسنه شرعا مندوب اليه دي او په بعض صورتونو كښې واجب كيږي هم نوبيا روستو په هغه باندې هديه اخستل د شفاعت اجر لره ضائع كول دي، لكه چه په بيع كښې په سود اخستلو سره اصل بيع چه كومه حلال وه ضائع او پرياديږي.

## باب فِي الرَّجُلِ يُفْضِلُ بَعْضَ وَلَدِهِ فِي النَّحْلِ

په ځامنو كښې يو كس ته زيات مال وركول

د ترجمه الباب والا مسئلي تفصيل او مذهب الائمة :

نحل په معنی د عطيه، د يو سړي خپل اولاد كښې بعضو لره په بعضو باندې ترجيح وركول په عطيه كښې دا شرعا مذموم ده. په حديث كښې د دې مذمت راغلي دي. اوس دا چه صرف مذموم ده يا ناجائز او حرام؟ په دې كښې اختلاف دي، د جمهور علماء او ائمه ثلاثه په نزد دا خلاف اولی او مكروه دي، د بعض علماء كرامو په نزد لكه امام احمد او اسحاق بن راهويه د هغوی په نزد تسوية في النحل واجب، او تفصيل حرام دي. اوس دا چه د تسوية نه مراد څه دي؟ د بعضو شوافعو او مالكيانو او د امام احمد او زموږ د امام محمد رحمه الله په نزد د دې نه مراد د ميراث د قاعدې په شان «للكر مثل حظ الانثيين» مراد دي. او د اكثر علماء كرامو رأيي دا ده چه په ژوند كښې چه څه وركولې شي په هغې كښې د ذكر او انثي فرق معتبر نه دي. پس په يو روايت كښې دي «اولادكم في العطية فلو كنت مفضلا احد الفضلت النساء» اخرجه سعيد بن منصور والبيهقي اهـ (تحفة الاخوذی) امام ترمذي رحمه الله  
 د حديث الباب د لاندې فرمائي

«وَالْعَمَلُ عَلَى هَذَا عِنْدَ بَعْضِ أَهْلِ الْعِلْمِ يَسْتَحِبُّونَ التَّسْوِيَةَ بَيْنَ الْوَلَدِ حَتَّى قَالَ بَعْضُهُمْ يَسْوِي بَيْنَ وَلَدِهِ حَتَّى فِي الْقَبْلَةِ وَقَالَ بَعْضُهُمْ يَسْوِي بَيْنَ وَلَدِهِ فِي النَّحْلِ وَالْعَطِيَّةِ (يعني الذكر والأنثى سواء) وهو قول سفيان الثوري وقال بعضهم التسوية بين الولد أن يعطي للذكر مثل حظ الأنثيين مثل قسمة الميراث وهو قول أحمد وإسحق»

[۳۵۴۲] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا سَيَّارٌ، وَأَخْبَرَنَا مُغِيرَةُ، وَأَخْبَرَنَا دَاوُدُ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، وَأَخْبَرَنَا مُجَالِدٌ، وَإِسْمَاعِيلُ بْنُ سَالِمٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنِ النُّعْمَانَ بْنِ بَشِيرٍ، قَالَ: "أَتَحْلِي أَبِي نُحْلًا، قَالَ إِسْمَاعِيلُ بْنُ سَالِمٍ، مِنْ بَيْنِ الْقَوْمِ نُحْلَةٌ غُلَامًا لَهُ، قَالَ: فَقَالَتْ لَهُ أُمِّي عُمَرَةُ بِنْتُ رَوَاحَةَ: إِيَّاكَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَشْهَدُهُ، فَأَيُّ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَشْهَدُهُ، فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ، فَقَالَ: إِيَّاكَ نُحْلْتُ أَيْبَى النُّعْمَانَ نُحْلًا، وَإِنْ عُمَرَةُ، سَأَلْتَنِي أَنْ أَشْهَدَكَ عَلَى ذَلِكَ، قَالَ: فَقَالَ: أَلَيْكَ وَلَدٌ سِوَاهُ؟ قَالَ: قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: فَكُلُّهُمْ أُعْطِيَتْ مِثْلَ مَا أُعْطِيَتْ النُّعْمَانُ؟ قَالَ: لَا، قَالَ: فَقَالَ بَعْضُ هَؤُلَاءِ الْمُحَدِّثِينَ: هَذَا جَوْرٌ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: هَذَا تُلْجُئَةٌ، فَأَشْهَدُ عَلَى هَذَا غَيْرِي"، قَالَ مُغِيرَةُ فِي حَدِيثِهِ: أَلَيْسَ يَسْرُكَ أَنْ يَكُونُوا لَكَ فِي الْبِرِّ وَاللُّطْفِ سَوَاءً؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَأَشْهَدُ

۱: صحيح البخاري/الهبه ۱۲ (۲۵۸۷)، الشهادات ۹ (۲۶۵۰)، صحيح مسلم/الهبهات ۳ (۱۶۲۳)، سنن النسائي/النحل ۱ (۳۷۰۹)، سنن ابن ماجه/الهبهات ۱ (۲۳۷۵)، (تحفة الأشراف: ۲۱۶۲۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۶۷/۴، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۳، ۲۷۶) (صحيح)

عَلَى هَذَا غَيْرِي". وَذَكَرُ مُجَالِدٍ فِي حَدِيثِهِ: "إِنَّ لَهُمْ عَلَيْكَ مِنَ الْحَقِّ أَنْ تُعْدِلَ بَيْنَهُمْ، كَمَا أَنَّ لَكَ عَلَيْهِمْ مِنَ الْحَقِّ أَنْ يَبْرُوكَ". قَالَ أَبُو دَاوُدَ: فِي حَدِيثِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ بَعْضُهُمْ: "أَكَلَ بَنِيكَ"، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: "وَلَدِكَ"، وَقَالَ ابْنُ أَبِي خَالِدٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ فِيهِ: "أَلَكْ بَنُونَ سِوَاهُ"، وَقَالَ أَبُو الضَّحَى، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ: "أَلَكْ وَلَدٌ غَيْرُهُ".

دنعمان بن بشير رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه زما پلار ماته څه راکړل ددې حدیث په راویانو کښې یو راوی اسماعیل بن سالم وئیلی دی چه نعمان ته ئې بوغلام ورکړې وو زما مور عمره بنت رواحه زما پلار ته او وئیل چه نبی صلی الله علیه و آله ته حاضر شه او په دې باندې ئې گواه کړه، هغه دنبی صلی الله علیه و آله په خدمت کښې حاضر شو او عرض ئې وکړو ما خپل نعمان خوي ته یوشې هبه کړې دې ماته عمری او وئیل چه زه تاپه دې باندې گواه کړم، نبی صلی الله علیه و آله ورته او فرمائیل ایا دنعمان نه علاوه نور څامن دې شته؟ ده او وئیل ولي نه، نبی صلی الله علیه و آله او فرمائی ټولو څامنو ته دې دده په شان ورکړې دي؟ هغه وئیل نه، په بعضې روایاتو کښې راغلې دي چه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل دا ظلم دې او محدثین وائی چه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل داد مجبورې او د احتیاط په وجه باندې ده (یعنی دا کار ته پخپله خوښه نه کوي) ته زمانه علاوه بل څوک په دې باندې ئې گواه کړه مغیره پخپل روایت کښې وئیلی دی چه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل ایا خوښه دي نه ده چه ستا ټول څامن په فرمان بردارې کښې یوشان وي؟ ده او وئیل ولي نه، نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل چرته بل څوک په دې باندې گواه کړه، او دمجالد په روایت کښې دی چه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل په تاباندې ددوی ټولو حق دې چه ته ددوی په مینځ کښې دانصاف او د مساوات معامله وکړې لکه څنگه چه ستا په دوی ټولو باندې فرمانبرداري کول حق دي، ابن ابی مجالد په واسطه دشعبي دا الفاظ نقل کړې دیر الک بنون سواه،، یعنی دده نه دي علاوه نور څامن شته؟ او ابو الضحی په واسطه دنعمان بن بشیر دا الفاظ نقل کړې دي:،، أَلَكْ وَلَدٌ غَيْرُهُ،،

( حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا سَيَّارٌ وَأَخْبَرَنَا مَغِيرَةُ وَأَخْبَرَنَا دَاوُدُ عَنِ الشَّعْبِيِّ وَأَنْبَأَنَا مُجَالِدٌ وَإِسْمَاعِيلُ بْنُ سَالِمٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ رضي الله عنه )

### شرح السند :

په دې حدیث کښې د مصنف استاد امام احمد بن حنبل رضي الله عنه او د هغوی استاد هشیم دې بیا هشیم دا روایت د خپلو پنځو استاذانو نه روایت کوی سیار، مغیره، داؤد، مجالد، اسماعیل او دا پنځه واړه د شعبي نه روایت کوی، پس په کتاب الاطراف کښې د ابوداؤد دا سند داسې نقل کړې شوې دې ( عن ابن حنبل عن هشيم عن سيار ومغيره وداود بن ابي هند، ومجالد، واسماعيل بن سالم، خمستهم عن الشعبي اه ) (بذل) خو د دې سند تعبیر گران دې د غور کولو نه پس هم په فهم کښې نه راځي.

### مضمون حدیث :

قوله: (عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ أُنْخَلِيَ أَبِي نُحْلًا قَالَ إِسْمَاعِيلُ بْنُ سَالِمٍ مِنْ بَيْنِ الْقَوْمِ ابْنُ خَلَّةٍ غُلَامًا لَهُ) نعمان بن بشير رضي الله عنه فرمائی چه ماته زما پلار یو ځیز هدیہ کړو. د هشیم په استاذانو کښې څلورو خو داسې اوئیل او پنځم استاد یعنی اسماعیل د دې ورکړې تعین په غلام سره او کړو چه ماته زما پلار یو غلام هبه کړو. د دې نه پس هغوی وائی چه زما مور عمره



زما پلار یعنی بشیر ته اووې چه رسول الله ﷺ ته لار شئ او په دې خپله هبه باندې رسول الله ﷺ گواه کړئ، هغه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او رسول الله ﷺ ته ئې صورت حال بیان کړو. رسول الله ﷺ ترې نه تپوس او کړو چه آیا ستا نور ځامن شته د نعمان نه علاوه؟ هغوی عرض او کړو چی شته نور هم... رسول الله ﷺ ترې نه تپوس او کړو چه تا هغه نورو ته هم غلامان ورکړی دی څنگه چه دې نعمان ته ورکړې دې؟ هغوی عرض او کړو چه هغوی ته خو مې نه دی ورکړی... په دې باندې رسول الله ﷺ او فرمائیل په دې کښې د هسیم دا پنځه استاذان مختلف دی. د بعضو په روایت کښې دی چه رسول الله ﷺ او فرمائیل «هذا جور» او بعضو او فرمائیل «هذا تلجنة» یعنی رسول الله ﷺ او فرمائیل چه دا بعضو ته ورکول او بعضو ته نه ورکول دا ظلم دې. او د بعضو په روایت کښې چه کوم دویم لفظ دې. «وهذا تلجنة» د دې په ظاهر کښې مطلب دا دې چه دا کار په تاباندې زبردستی کړې شوي دې. یعنی ستا ښځې په تاباندې زور اچولو سره داسې کړې دی کوم چه تا خپله هم نه غوښتلو... «فاشهد علی هذا غیری» رسول الله ﷺ او فرمائیل زه خو گواه نه جوړیږم، په دې باندې بل څوک گواه کړه.

دې سره د جمهورو د مسلک تائید کيږی د ترجمة الباب والا مسئله کښې چه داسې کول حرام نه دی صرف مکروه دی ځکه چه که حرام وي نو رسول الله ﷺ به بل چا لره د گواه جوړولو اجازت نه ورکولې. او د دې نه مخکښې چه کوم لفظ راغلې وو... «هذا جور» په دې سره د امام احمد بن حنبل رحمه الله د مذهب تائید کيږی او د دې نه روستو روایت کښې دی «قال لا قال فاردده» یعنی رسول الله ﷺ او فرمائیل چه خپله هبه ترې نه واپس واخله د دې نه د رجوع فی الهبة جواز معلوميږی چه اختلافی مسئله ده او اوس نزدې تیره شوه... هغه دا چه د جمهورو په نزد د پلار دپاره د ځوی په حق کښې رجوع فی الهبة جائز ده او د احنافو په نزد ناجائز ده، د دې جواب د احنافو د طرف نه دا کيږی شی چه سیدنا بشیر رضی الله عنه رسول الله ﷺ ته د اشتشهاد فی الهبة دپاره راغلې وو یا د هبه کولو په باره کښې مشورې له راغلې وو چه آیا هغه هبه اوکړی یا نه؟ د دې په باره کښې شارحینو دواړه احتمالات لیکلی دی او علامه عینی د بعضو روایاتو د الفاظ نه د دې د استشاره کیدو ته ترجیح ورکړې ده، لهذا ثابت شوه چه لا تر اوسه پورې د هبه تحقق نه وو شوي. په دې صورت کښې به د فاردده مطلب دا وی چه ته د خپلې هبه کولو دا اراده ترک کړه.

### په حدیث الباب کښې اختلاف روایات :

دا حدیث مشهور دې، په ټولو صحاح سته کښې ذکر کړې شوي دې. په دې ټولو روایاتو کښې د هبه تعین د غلام سره راغلې دې او په صحیح ابن حبان او طبرانی کښې د غلام په ځانې حدیقه ذکر شوي ده... یعنی د نعمان رضی الله عنه د خپل خاوند نه نعمان رضی الله عنه ته د یو باغ هبه کولو ترغیب ورکړو، ابن حبان دا په تعدد د واقعي باندې محمول کړې دې هغه دا چه د نعمان د ولادت په موقع باندې د هغوی مور د اعطاء حدیقه فرمائش اوکړو. او بیا چه کله نعمان لوټي شو هغه وخت کښې ئې ترې نه دوباره د عطیه اصرار اوکړو، او دا دویمه عطیه

غلام وو، حافظ عليه السلام یو بله توجیه اختیار کړې ده هغه دا چه په شروع کښې بشیر نعمان ته حدیقه هبه کړې وه خو روستو ئې د هغې نه رجوع او کړه، په دې باندې عمره دوباره اصرار شروع کړو د څه څیز په ورکولو باندې نو هغوی په دویم کړت باندې هغه ته غلام هبه کړو خو چونکه د دې نه مخکښې ئې هبه کولو سره رجوع کړې وه په دې وجه د هغوی کور و الا د غلام په هبه کولو باندې د اشهاد مطالبه او کړه (هذاکله ماخوذن الاوجه/۲۲۹)

د دې واقعي په باره کښې د احقر په ذهن کښې د همیشې نه دا خبره ده چه داسې معلومېږي چه نعمان بن بشیر عليه السلام به د عمره بنت رواحه سکه خوئي وی او چه کوم نور اولاد ئې وو چه د هغوی د موجود کیدو تصریح په دې روایت کښې ذکر شوې ده هغه په ظاهر کښې د بشیر عليه السلام د نورو بیبیانو نه به وی، هم په دې وجه عمره عليها السلام صرف د خپل خوی په باره کښې د خپل خاوند نه د دې هبه په اصرار سره مطالبه او کړه. واللہ تعالی اعلم د کتب الرجال نه د دې تحقیق ته حاجت دې.

والحدیث أخرجه البخاری ومسلم والنسائی وابن ماجه بنحوه، وأخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه من حدیث حمید بن عبد الرحمن بن عوف ومحمد بن نعمان بن بشیر عن النعمان بن بشیر عليه السلام، قاله المنذری.

[۳۵۴۳] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، حَدَّثَنِي النُّعْمَانُ بْنُ بَشِيرٍ، قَالَ: "أَعْطَا أَبُوهُ غُلَامًا، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا هَذَا الْغُلَامُ؟ قَالَ: غُلَامِي، أَعْطَانِيهِ أَبِي، قَالَ: فَكُلْ إِخْوَتِكَ أَعْطَى كَمَا أَعْطَاكَ؟ قَالَ: لَا، قَالَ: فَارْدُدْهُ."

د نعمان بن بشیر عليه السلام نه روایت دې فرمائی چه زما پلار ماته یو غلام را کړو او نبی عليه السلام ورنه تپوس او کړو دا غلام څنگه د هغه عرض وکړو دا زما غلام دې کوم چه ماته زما پلار را کړې دې نبی عليه السلام او فرمائیل ایا ستانورو ورنوړته ئې هم داسې غلامان ورکړي دي لکه څنگه چه ئې تاته درکړې دې؟ هغه او وئیل نه نبی عليه السلام او فرمائیل بیاته دا غلام واپس کړه.

[۳۵۴۴] (۲) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ حَاجِبِ بْنِ الْمُفَضَّلِ بْنِ الْمُهَلَّبِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: سَمِعْتُ النُّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اغْدِلُوا بَيْنَ أَوْلَادِكُمْ، اغْدِلُوا بَيْنَ أَبْنَائِكُمْ."

حاجب بن مفضل دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه د نعمان بن بشیر نه مې اوریدلی دی هغه وئیل چه نبی عليه السلام فرمائیلی دی انصاف کوئ پخپل اولاد کښې او انصاف کوئ پخپلو خامنو کښې.

[۳۵۴۵] (۳) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَتْ امْرَأَةٌ بَشِيرٍ: اَتَحِلُّ ابْنِي غُلَامًا، وَأَشْهَدُ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَتَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ:

۱: صحيح مسلم/اللهيات ۳ (۱۶۲۳)، (تحفة الأشراف: ۱۱۶۳۵)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/اللهية ۱۲ (۵۲۸۶)، سنن الترمذي/الأحكام ۳۰ (۱۳۶۷)، سنن ابن ماجه/اللهيات ۱ (۲۳۷۵)، موطا امام مالك/الأقضية ۳۳ (۳۹)، مسند احمد (۲۶۷۴) (صحيح)  
۲: سنن النسائي/التحليل (۳۷۱۷)، (تحفة الأشراف: ۱۱۶۴۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۷۵/۴، ۲۷۸) (صحيح)  
۳: صحيح مسلم/اللهيات ۳ (۱۶۲۴)، (تحفة الأشراف: ۲۷۲۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۲۷۳) (صحيح)



إِنَّ ابْنَةَ فُلَانٍ، سَأَلَتْنِي أَنْ أُحْمَلَ ابْنَهَا غُلَامًا، وَقَالَتْ لِي: أَشْهَدُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: لَهُ إِخْوَةٌ؟ فَقَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَكُلُّهُمْ أُعْطِيَتْ مِثْلُ مَا أُعْطِيَتْهُ؟ قَالَ: لَا، قَالَ: فَلَيْسَ يَصْلَحُ هَذَا، وَإِنِّي لَا أَشْهَدُ إِلَّا عَلَى حَقٍّ.

دجابر رضي الله عنه نه روايت دي فرمائي چه بشيرته خپلې ښځې او وئيل داخپل غلام دي زما ځوي ته هبه كړه (كوم چه دهغې په گيره وو) او په دې خبره به نبی صلی الله علیه و آله گواه كړي نو بشيردنبی عليه السلام په خدمت كښې حاضر شو او غرض ئې وكړو چه دفلاني لور ماته وئيلې دى چه زه دهغې ځوي ته غلام هبه كړم اودائې هم وئيلې دى چه په دې خبره باندې تا گواه كړم، په دې وخت كښې نبی صلی الله علیه و آله او فرمائيل ايا تادده ټولو روڼو ته داسې وركړي دي كوم چه تاده ته وركړې دي؟ هغه او وئيل نه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائيل داخونامناسب خبره ده اوزه درښتونې خبرې نه علاوه په بله خبره باندې نه گواه كيږم.

### بَابُ فِي عَطِيَّةِ الْمَرْأَةِ بِغَيْرِ إِذْنِ زَوْجِهَا

د ښځې دپاره د خپل خاوند د مال نه دهغه د اجازت نه بغير چاته وركول

په كتاب الزكوة كښې «باب المرأة تصدق من بيت زوجها» تير شوې دې د دې باب په احاديثو باندې كلام هلته تير شوې دې،  
امام بخاري رحمه الله باب ترلې دې «هبة المرأة بغير زوجها»

[۳۵۴۶] حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، وَحَبِيبِ الْمَعْلَمِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "لَا يَجُوزُ لِمَرْأَةٍ أَمْرٌ فِي مَالِهَا إِذَا مَلَكَ زَوْجُهَا عَصَمَتَهَا".

عمرو بن شعيب د خپل پلار نه او هغه دده دنيكه نه روايت كوي فرمائي چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائيلې دى ښځې لره د خاوند د مال نه وركول جائز نه دي كوم چه ددې سره دې ځكه چه خاوند ددې دعزت مالك دې.

په مسئله الباب كښې اختلاف د علماء كرامو:

د زنانه د هبه كولو دوه صورتونه دي يو د خاوند د كور نه يعنى كوم څيز چه خاوند هغې ته كور د خرچ دپاره وركړې دې، د زنانه د هغې نه صدقه كول دويم دا چه زنانه د خپل مال نه صدقه كوي. په دويم صورت كښې د جمهورو په نزد د زنانه دپاره صدقه وغيره كول چه هغه څنگه غواړي جائز ده د جمهور علماء كرامو هم دا مسلك دي. په دې كښې د امام مالك رحمه الله اختلاف دې هلته په كتاب الزكوة كښې تير شوې دى د هغوى په نزد زنانه د خپل مال په زيات نه زيات صرف ثلث كښې تصرف كولې شى يعنى بغير د اذن د زوج نه د دې نه په زياتى كښې نه شى كولې.

قال الحافظ وخالف طاؤس فمنع مطلقا، وعن الليث لا يجوز مطلقا الا فى الشئ التافه وادلة الجمهور من الكتاب والسنة كثيرة اه (من التراجع ۳/ ۲۵)

۱: سنن النسائي للزكاة ۵۸ (۲۵۴۱)، العمري (۳۷۸۷)، سنن ابن ماجه/التهبات ۷ (۲۳۸۸)، (تحفة الأشراف: ۸۷۷۹، ۸۶۶۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/ ۲۲۱) (حسن صحيح)

[۳۵۴۷] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ، حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، أَنَّ أَبَاهُ أَخْبَرَهُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "لَا يَجُوزُ لِمَرْأَةٍ عَطِيَّةٌ إِلَّا بِإِذْنِ زَوْجِهَا".

د عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہ روایت دې فرمائی چې نبی ﷺ فرمائیلى دى ديوي ښځې دپاره دا جائز نه دي چې دخپل خاوند د مال نه چاته ورکړي مگر په اجازت دهغه سره.

### باب فِي الْعُمَرَى

د ټول عمر دپاره چاته يو څيز ورکول جائز دی

او د دې نه روستو بل باب راروان دې (باب في الرقي)

[۳۵۴۸] (۲) حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّلِيبِيُّ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ النَّضْرِ بْنِ أُنَيْسٍ، عَنْ بَشِيرِ بْنِ نَهِيكٍ، عَنِ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "الْعُمَرَى جَائِزَةٌ".

د ابوهريره بدنه روایت دې فرمائی چې نبی ﷺ فرمائي دي چې چاته يوشې دټول عمر دپاره ورکول جائز دي.

[۳۵۴۹] (۳) حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ سَمُرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، مِثْلَهُ.

حسن دسمرة رضي الله عنها او هغه د نبی ﷺ نه ددې روایت په شان روایت بیان کړې دې.

### د عمری تعریف او د هغې حکم شرعی :

عمری او رقی د هبه دوه خاص صورتونه دی کوم چې د جاهلیت د زمانې نه راروان وو، د دې دواړو په باره کښې روایات منعا او جوازا مختلف راغلي دي، لکه چې د دواړو بابونو د روایتونو کتلو نه معلومیږي، لهذا د دې دواړو په باره کښې د فقهاء کرامو راځي معلومیدل پکار دی. او د هر یو طریقو او تعریف هم، د عمری صورت دا وی چې یو سړې بل ته وائی «داری لک عمری» یا داسې او وائی «اعمرتک داری» چې د هغې مطلب دا وی چې زه دا کور تا ته هبه کوم ستا د ټول عمر دپاره د جمهور علماء کرامو او ائمه ثلاثه په نزد که یو سړې داسې او وائی نو جائز ده خو هغه کور به صرف د ټول عمر دپاره نه وی بلکه د معمر له د ژونده پورې وی د هغه دپاره او د هغه د وفات نه پس به د هغه د وارثانو دپاره وی. گویا د ټول عمر قید لگولو لره به اعتبار نه وی. په دې کښې د امام مالک رحمه الله اختلاف دې هغوی فرمائی چې د عمری دوه صورتونه دی که معمر صرف هغه الفاظ اووې کوم چې پورته تیر نشوي دی یعنی «داری لک عمری» نو په دې صورت کښې خو به کور د معمر له دپاره صرف

(۱) سنن الترمذي / الديات ۳ (۱۳۹۰)، سنن النسائي / الزكاة ۵۸ (۲۵۴۱)، العمري ۱ (۳۷۸۷، ۳۷۸۸)، (تحفة الأشراف: ۸۶۸، ۸۶۸۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۷۹/۲، ۱۸۰، ۲۰۷، ۲۱۲)، دي / الديات ۱۶ (۲۴۱۷)، ويأتي هذا الحديث برقم (۲۵۶۶) (حسن صحيح)

(۲) صحيح البخاري / الهبة ۳۲ (۲۶۲۶)، صحيح مسلم / الهبات ۴ (۱۶۲۶)، سنن النسائي / العمري ۴ (۳۷۸۵)، (تحفة الأشراف: ۱۲۲۱۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۴۷/۲، ۴۲۹، ۴۶۸، ۴۸۹، ۳۱۹/۳) (صحيح)

(۳) سنن الترمذي / الأحكام ۱۵ (۱۳۴۹)، (تحفة الأشراف: ۴۵۹۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۸/۵، ۱۳، ۲۲) (صحيح)



د هغه د ژونده پورې وی او د هغه د مرگ نه پس به معمر ته واپس کولې شی، او که هبه کونکي د «داری لک» سره «ولعقبک بعدک» هم وئیلې وو نو بیا به دا هبه د همیشه دپاره نافذ شی او د معمر له د مرگ نه پس به د هغه د وارثانو دپاره وی. او که د هبه په وخت ئې دا زیادت نه وو وئیلې نو بیا به د معمر له د مرگ نه پس هغه کور د واهب طرف ته واپس شی. اصل کښې دا اختلاف د عمری په حقیقت باندې متفرع دې د جمهورو په نزد د عمری حقیقت تملیک الرقبة دې یعنی د عین دار مالک جوړول. او د امام مالک رحمته الله علیه په نزد د دې حقیقت تملیک المنفعة دې هم په دې وجه د هغوی په نزد معمر له د اصل مکان مالک نه وی. اونه د هغوی په نزد په دې کښې میراث جاری کیږي یعنی من حیث الملك، او که د هبه په وخت هغه «لک ولعقبک بعدک» اوئیلو نو په دې صورت کښې د هغوی په نزد میراث جاری کیږي یعنی هم د هم هغه منفعت په لحاظ سره، لا من حیث الملك.

حدیث ابی هريرة رضی الله عنه أخرجه البخاری ومسلم والنسائي، وحديث جابر من طريق ابي سلمة أخرجه البخاری ومسلم والنسائي، ومن طريق عروة عنه أخرجه النسائي، قاله المنذري، والحديث الرابع من حديث جابر بلفظ «ايما رجل اعمر عمرى له ولعقبه» الحديث أخرجه مسلم والترمذى والنسائي ابن ماجه بنحوه، قاله المنذري.

[۳۵۰] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبَانُ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، كَانَ يَقُولُ: "الْعُمَرَى لِمَنْ وَهَبَتْ لَهُ".

د جابر رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله به فرمائی: عمري دهغه چادپاه ده چاته چه بخښلي شوي وي.

[۳۵۱] (۲) حَدَّثَنَا مُؤَمَّلُ بْنُ الْفَضْلِ الْحَرَّانِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ شُعَيْبٍ، أَخْبَرَنِي الْأَوْزَاعِيُّ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ أَعْمَرَ عُمَرَى فَبِهِ لَهْ، وَلَعَقِبَهُ يَوْمَئِذٍ مَنْ يَوْمُهُ مِنْ عَقِبِهِ".

د جابر رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائی دي: چاچه چاته دتول عدم ردپاره یوشي (دهي په طور) ورکړونو هغه دهغه چاشو چاته چه ورکړي شوي دي ترخوچه ژوندي وي دي به ددې مالک وي اودده دمرگ نه پس به دده وارثانوته ورکولي شی.

[۳۵۲] (۳) عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، وَعُرْوَةَ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بِمَعْنَاهُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَكَذَا رَوَاهُ اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرٍ.

جابر رضی الله عنه د نبی صلی الله علیه و آله نه دتیر شوي روایت په شان روایت بیان کړي دي. امام ابو داؤد فرمائی چه همدارنگې داروایت لیث بن سعد د زهري نه او هغه د ابو سلمه او هغه د جابر رضی الله عنه نقل کړي دي.

۱: صحيح البخاري/الهبه ۳۲ (۲۶۲۵)، صحيح مسلم/الهبه ۴ (۱۶۲۵)، سنن الترمذي/الأحكام ۱۵ (۱۳۵۰)، سنن النسائي/العمرى ۲ (۳۷۷۲)، سنن ابن ماجه/الهبه ۳ (۲۳۸۰)، (تحفة الأشراف: ۳۱۴۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۰۲/۳، ۳۰۴، ۳۶۰، ۳۹۳، ۳۹۹) (صحيح)  
 ۲: سنن النسائي/العمرى (۳۷۷۱)، (تحفة الأشراف: ۲۳۹۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۰۲/۳، ۳۰۴، ۳۶۰، ۳۹۳، ۳۹۹) (صحيح)  
 ۳: انظر حديث رقم: (۳۵۰)، (تحفة الأشراف: ۳۱۴۸) (صحيح)

## باب مَنْ قَالَ فِيهِ وَلَعَقِيهِ

څوک چه چاته د ټول عمر د پاره يوشي ورکړي او د  
ورکولو په وخت کښې د وارثانو ذکر هم وکړي

[۳۵۵۳] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ قَارِسٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَا: حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ يَحْيَى ابْنِ أَنَسٍ، عَنِ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "إِنَّمَا رَجُلٌ أَعْمَرَ عُمُرِي لَهُ وَلَعَقِيهِ، فَإِنَّمَا لِي لَذِي يُعْطَاهَا لَا تَرْجِعُ إِلَى الَّذِي أُعْطَاهَا، لِأَنَّهُ أُعْطِيَ عَطَاءً وَقَعَتْ فِيهِ الْمَوَارِيثُ".

د جابر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلي دي: چاته چه د ټول عمر د پاره يوشي (دهبي په طور) ورکړي شواود ورکولو په وخت دا اوواڼي چه ماداشي فلانی ته اودده وارثانوته د ټول عمر د پاره ورکړونودغه شي دده اودده اولاد ملکیت دي او دا داسې ملکیت دي کوم چه هبه کونکي ته نشي ملاويدي ځکه چه ده يوه داسې عطيه کړې ده په کومه کي چه وارث لره دخل دې.

[۳۵۵۴] (۲) حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ أَبِي يَعْقُوبَ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، بِإِسْنَادِهِ وَمَعْنَاهُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَكَذَلِكَ رَوَاهُ عَقِيلٌ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، وَيزِيدُ بْنُ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، وَاخْتَلَفَ عَلَى الْأَوْزَاعِيِّ فِي لَفْظِهِ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، وَرَوَاهُ فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ مِثْلَ حَدِيثِ، مَالِكٍ.

صالح په خپل سند سره د ابن شهاب نه د تیرشوي روایت په شان روایت بیان کړي. امام ابو داود فرمائی چه همدارنگي رانقل کړي دي عقیل د ابن شهاب نه او یزید بن ابی حبيب هم د ابن شهاب نه نقل کړي دي اوداوضاعي په الفاظو کښې اختلاف دې او همدا رنگي ددوینه علاود فلیح بن سلیمان هم په دې طریقې بندي د روایت بیان کړي دي.

[۳۵۵۵] (۳) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "إِنَّمَا الْعُمُرِي الَّتِي أُجَازَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَقُولَ: هِيَ لَكَ وَلَعَقِيكَ، فَأَمَّا إِذَا قَالَ: هِيَ لَكَ مَا عَشْتُ فَإِنَّمَا تَرْجِعُ إِلَى صَاحِبِهَا".

د جابر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی د کومې عمره چه اجازت ورکړې شوې دې هغه داده چه هبه کونکې چه چاته څه ورکوي هغه ته داسې اوواڼي چه داشې ستا اوستاد ولاد د پاره دې اوکه چرې داسې نې اونه وئیل بلکه داسې ینی اووئیل چه داخیز ستاد پاره دی ترڅوچه ته ژوندې بي نودغه خیز دده دوفات نه پس ورکونکی ته به واپس کولی شي.

[۳۵۵۶] (۴) حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "لَا تَرْقِبُوا، وَلَا تُعْمِرُوا، فَمَنْ أَرْقَبَ شَيْئًا، أَوْ أَعْمَرَ قَهْلًا وَلَوْ رَتِيَهُ".

د جابر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلي دي: تاسو عمرې او عقبې مه کوئ

۱: انظر حديث رقم: (۳۵۵۰)، (تحفة الأشراف: ۳۱۴۸) (صحيح)

۲: انظر حديث رقم: (۳۵۵۰)، (تحفة الأشراف: ۳۱۴۸) (صحيح)

۳: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۱۶۰)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/التهات ۴ (۱۶۲۶)، مسند احمد (۲۹۶۳) (صحيح)

۴: سنن النسائي/العمرى (۳۷۶۲)، (تحفة الأشراف: ۲۴۵۸) (صحيح)



که چرې څوک عمرې او عقیبې او کړې نو کوم څیز چه ئې چاته ورکړې دې هغه به دهغه اودهغه د وارثانو شی.

[۳۵۵۷] حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ يَعْنَى ابْنِ أَبِي ثَابِتٍ، عَنْ مُحَمَّدٍ الْأَعْرَجِ، عَنْ طَارِقِ الْمَكِّي، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي امْرَأَةٍ مِنَ الْأَنْصَارِ، أَعْطَاهَا ابْنُهَا حَدِيقَةً مِنْ تَخْلٍ، فَمَاتَتْ، فَقَالَ ابْنُهَا: إِنَّمَا أُعْطِيتُهَا حَيَاتِهَا، وَلَهُ إِخْوَةٌ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هِيَ لَهَا حَيَاتُهَا وَمَوْتُهَا، قَالَ: كُنْتُ تَصَدَّقْتُ بِهَا عَلَيْهَا، قَالَ: ذَلِكَ أَبْعَدُ لَكَ."

د جابر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله دیوي انصاری زنانه په باره کښې فیصله وکړه چه خپل څوي ورته دکجورو یو باغ ورکړې وو، کله چه هغه وفات شوه نو څوي ئې او وئیل ماڅو ورله دا باغ دهغې دژونده پورې ورکړې وو، اوددغه کس نور رونړه هم وو، نبی صلی الله علیه و آله اوفرمائیل دا باغ دهغې دې په ژوند کښې هم او په مرگ کښې هم څوي ئې او وئیل داماهغې ته په صدقه کښې ورکړې وو نبی صلی الله علیه و آله اوفرمائیل تاته ددې واپس کیدل دحیرانتیا خبره ده.

### باب فی الرُّقْبَى درقبې بیان

درقبې تعري :

رقبې دا هم د هبه یو طریقه ده د عمرې په شان، چه د هغې صورت دا وی چه یو سړې بل ته اوای. (داری لک رقبې) یا (ارقبک داری) چه د هغې مطلب دا وی چه یو سړې بل ته اوای چه زه دا خپل کور تا ته په دې طریقه درکوم چه که پومبې زما مرگ واقع شو نو بیا به دا کور ستا وی او که ستا مرگ مخکښې شو نو بیا به دا کور ماته واپس کیږي. دا لفظ د مراقبه نه اخستلې شوې دې چه د هغې معنی ده انتظار ځکه چه د هبه په دې نوع کښې واهب او موهوب له هریو د بل د مرگ منتظر وی په دې وجه ددې دا نوم کیخودلې شو.

[۳۵۵۸] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا دَاوُدُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "الْعُمَرَى جَائِزَةٌ لِأَهْلِهَا، وَالرُّقْبَى جَائِزَةٌ لِأَهْلِهَا."

د جابر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلې دي: عمرې د خپل خاوند دپاره ده اورقبې دخپل خاوند دپاره ده (دحدیث مطلب دادې چه په دواړه ذکر شوو صورتونو کښې دغه څیز ورکونکي ته واپس نشي ملاویدې).

درقبې په حکم کښې اختلاف دې د امام شافعی او احمد په نزد جائز ده په شان د عمرې. او د امام ابوحنیفه او مالک په نزد ناجائز ده. په صاحبین کښې امام ابویوسف رحمته الله علیه د امام شافعی سره دې. او امام محمد رحمته الله علیه د امام صاحب رحمته الله علیه سره او مقصد د اختلاف دا دې چه د دې ائمه اربعه په حقیقت درقبې کښې اختلاف دې چه هغه څه څیز دې؟ د جواز د قائلینو په نزد تملیک بشرط فاسد دې، شرط فاسد د هغه دا وینا چه که ته مخکښې مړ شوې نو

۱: تفرده ابوداود، (تحفة الأشراف: ۲۲۸۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۹۹/۳) (ضعيف)

۲: سنن الترمذي بالأحكام ۱۶ (۱۳۵۱)، سنن النسائي/العمرى (۳۷۶۹)، سنن ابن ماجه/الهبات ۴ (۲۳۸۳)، (تحفة

الأشراف: ۲۷۰۵)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/الهبات ۴ (۱۶۲۶)، مسند احمد (۳۰۲/۳، ۳۰۳، ۳۱۲) (صحيح)

زما او که زه مړ شوم نو ستا، د دې حضراتو په نزد تمليک پاتې کېږي او دا شرط فاسد کالعدم دې، لهذا دا تمليک صحيح شو او په هر صورت کښې به مکان د هغه دپاره وي، او کوم فقهاء چه د جواز قائل نه دي د هغوی په نزد د دې حقيقت تمليک نه دې بلکه تعليق التملیک علی خطر دې. چه په هغې کښې د قمار معنی موندلې شي کوم چه ناجائز دې. حديث جابر رضي الله عنه أخرجه الترمذی والنسائي وابن ماجه، وحديث زيد بن ثابت أخرجه النسائي وابن ماجه، قاله المنذري

[۳۵۵۶] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، قَالَ: قَرَأْتُ عَلَى مَعْقِلٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ طَاوُسٍ، عَنْ جُحَيْرٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ أَعْمَرَ شَيْئًا فَهُوَ لِمُعْمَرِهِ فَحْيَاةً، وَمَمَاتُهُ وَلَا تَرْقُبُوا، فَمَنْ أَرْقَبَ شَيْئًا فَهُوَ سَيِّئُهُ".

د زيد بن ثابت رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائي دي: چاچه چاته دتول عمر دپاره يوشي (دهبي په طور) ورکړو نو داده دپاره دې په ژوند کښې هم او په مرگ کښې هم او تاسو رقي مه کوئ ځکه چاته چه په رقي کسي څه شي ورکړې شو هغه دهغه شو.

[۳۵۶۰] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْحَجَّاجِ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ مُوسَى، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ الْأَسْوَدِ، عَنْ مُجَاهِدٍ، قَالَ: "الْعُمَرَى أَنْ يَقُولَ الرَّجُلُ لِلرَّجُلِ: هُوَ لَكَ مَا عِشْتَ، فَإِذَا قَالَ ذَلِكَ: فَهُوَ لَهُ وَلِوَرَثَتِهِ، وَالرَّقْبَى هُوَ أَنْ يَقُولَ: الْإِنْسَانُ هُوَ لِلْآخِرِ مَتْنِي وَمِنْكَ".

د مجاهد نه روايت دې فرمائی عمري دپته وائی چه يو کس بل ته او وائی چه داستاشو ترخوچه ته ژوندي بي نو کله چه دا او رواني نودغه خيزدده شو او دده دوار ثانوشو او رقي دي ته وائی چه يو کس بل ته ووائی داشت به په ما او تادواړو کي دهغه چاوي څوک چه ورسته مړ شي.

## بَابُ فِي تَضْمِينِ الْعَارِيَةِ

څوکه چه د چانه يوشي وغواړي او بيا ضائع شي

مسئله الباب کښې مذاهب ائمه :

د عارية نه اخستلې شوې دې يعنی مستعار خيز. يعنی که يو سړې خپل خيز چا ته عارية ورکړي او بيا خيز د مستعير سره بغير د هغه د تعدی نه هلاک يا ضائع شي نو په دې صورت کښې په مستعير باندې د هغې ضمان واجب دي يا نه؟ مسئله اختلافی ده، امام شافعی او امام احمد د ضمان قائل دي. او د احنافو په نزد ضمان نشته. د امام مالک رضي الله عنه په نزد تفصيل دي، «ما ظهر هلاک لا ضمان فيه وما خفي هلاک فهو مضمون» يعنی که مستعار داسې خيز وي چه د هغې هلاکيدل ښکاره وي يعنی قياسي وي لکه حيوان نو په هغې کښې ضمان نشته او د کرم خيز هلاکيدل چه مخفی يا پټ وي لکه کپړه نو په دې کښې به ضمان واجب وي. (بذل عن الخطای)

(۱): سنن النسائي / الرقي ۱ (۳۷۴۶)، سنن ابن ماجه / الهيات ۳ (۲۳۸۱)، (تحفة الأشراف: ۳۷۰۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۵۰/۱) (حسن صحيح الإسناد)

(۲): تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۲۷۱) (صحيح الإسناد)



[۳۵۶۱] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدُ بْنُ مُسْرَهْدٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ ابْنِ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ سَمُرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "عَلَى الْيَدِ مَا أَخَذْتُ حَتَّى تُؤَدِّيَ، ثُمَّ إِنَّ الْحَسَنَ لَيْسَ، فَقَالَ هُوَ: أَمِينُكَ لَا ضَمَانَ عَلَيْهِ".

سمره عليه السلام د نبی صلی الله علیه و آله نه روایت کوی چه فرمائیل ئی دلاس په ذمه باندې دهغه خیز واپس کول دي کوم چه ده اخستلې زي ترخوچه دغه خیز ادا کړي ددینه پس د حسن نه هیر شوي دي هغه وئیلی دی تاسو چه کوم شي دجانه وغواړئ نو هغه ستا امانتدار دي اوپه دي کس باندې ضمانت نشته.

### شرح الحديث :

قوله: ﴿عَنْ قَتَادَةَ عَنِ الْحَسَنِ عَنْ سَمُرَةَ عَنِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ: عَلَى الْيَدِ مَا أَخَذْتُ حَتَّى تُؤَدِّيَ﴾ ديد نه مراد صاحب يد، يعنی کوم سرې چه د چا خیز واخلی په سوال باندې نو هغه د هغه په ذمه دي ترخو چه هغه ادا نه کړی.

د ادا تعلق د عین ما وجب سره وی او د قضاء او ضمان تعلق د مثل ما وجب سره نو په دي حديث کښې د ادا ذکر دي نه د ضمان او قضاء چه د هغې تقاضا دا ده چه په عاریة کښې ضمان نه وی شی مستعار که موجود او محفوظ دي نو د هغې واپس کول واجب دی او که ضائع شی..... نو بیا د هغې مثل یعنی ضمان واجب نه دي.

پس د دي روایت حاصل دا شوچه ﴿العاریة مؤداة﴾..... او که عاریة کښې ضمان وي نو د دي دپاره به داسې وي. ﴿العاریة مضمونة﴾ حال دا چه د باب په آخری حديث کښې تصریح ده چه عاریة مضمونه نه ده بلکه مؤداة دي. بیا وړاندې روایت کښې دي ﴿ثم ان الحسن نسی فقال هو امینک لا ضمان علیه﴾ دا د قتاده عليه السلام کلام دي چه زمونږ استاد حسن به دا وئیل چه مستعیر امین وی په هغه باندې ضمان واجب نه وی، قتاده دا بیان فرمائی چه کیدی شي زمونږ استاد خپل بیان کړې شوي حديث هیر کړو یعنی ﴿على اليد ما اخذت الخ﴾ دا د قتاده خپل گمان دي چه صحیح نه دي، هغوی دا گنړلي ده چه حسن چه کوم مرفوع حديث نقل کړې دي هغه مقتضى دي ضمان د عاریة ته، حال دا چه داسې نه ده، د احادیثو د الفاظو خپله تقاضه هم دا ده چه ضمان نه دی کیدل پکار. (بذل الايضاح) والحديث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۵۶۲] (۲) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ، وَسَلَمَةُ بْنُ شَيْبٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ رُقَيْعٍ، عَنْ أُمِّئَةَ بْنِ صَفْوَانَ بْنِ أُمِّئَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "اسْتَعَارَ مِنْهُ أَدْرَاعًا يَوْمَ حُنَيْنٍ، فَقَالَ: أَغْصَبَ يَا مُحَمَّدُ، فَقَالَ: لَا، بَلْ عَارِيَةٌ مَضْمُونَةٌ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَذِهِ رِوَايَةُ يَزِيدَ، بِبَغْدَادَ، وَفِي رِوَايَتِهِ بِوَأَسِطٍ تَغْيِيرٌ عَلَى غَيْرِ هَذَا.

۱: سنن الترمذی/البیوع ۳۹ (۱۲۶۶)، سنن ابن ماجه/الصدقات ۵ (۲۴۰۰)، (تحفة الأشراف: ۴۵۸۴)، وقد أخرجه: مسند

احمد (۱۲/۵، ۱۳)، سنن الدارمی/البیوع ۵۶ (۲۶۳۸) (ضعیف)

۲: تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۴۹۴۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۰۱/۳، ۴۶۵/۶) (صحیح)

صفوان بن امیه دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه نبی ﷺ زما دپلار نه دغزوه حنین په ورځ زغري عاریتا او غوښتلي هغه ورته او وئیل ای محمد په زور ئې اخلي نبی ﷺ او فرمائیل نه، بلك عاریتانه غواړم او درته به ئې واپس کوم. امام ابوداؤد فرمائی دا روایت دهغه وخت دې کله چه یزید په بغداد کښې وو او کوم روایت چه به ده په واسطه کښې بیانولو ددې دواړو په مینځ کښې تبدیلی ده.

قوله: « عَنْ أُمِّةَ بْنِ صَفْوَانَ بْنِ أُمِّةٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- اسْتَعَارَ مِنْهُ أَذْرَعًا يَوْمَ حُنَيْنٍ فَقَالَ أَغْضَبَ يَا مُحَمَّدُ فَقَالَ « لَا بَلْ عَارِيَةٌ مَضْمُونَةٌ » »

### شرح الحديث :

امیه بن صفوان د خپل پلار صفوان بن امیه رضی الله عنه نه نقل کوی د غزوه حنین په موقع باندې رسول الله ﷺ د صفوان نه خو زغري عاریة واخستلې، نو د ورکړې په وخت ترې نه صفوان تپوس او کړو یا محمد ﷺ تاسو دا زغري د قبضې په طور اوړئ یا عاریة؟ (دغه وخته پورې صفوان اسلام نه وو قبول کړې) رسول الله ﷺ او فرمائیل د غصب په طور نه بلکه عاریة، او عاریة هم داسې چه ضمان به پکښې وی.

### توجيه الحديث على مسلك الحنفية :

د دې حدیث نه د قائلین ضمان تائید کیږي. خو دا حدیث د باب په آخر کښې هم راروان دې په هغې کښې داسې دی :

« قَالَ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَعَارِيَةٌ مَضْمُونَةٌ أَوْ عَارِيَةٌ مُؤَدَّاةٌ قَالَ « بَلْ مُؤَدَّاةٌ » »

لهذا په داسې صورت کښې په ضمان باندې استدلال صحیح نه دې. او حضرت په بذل کښې د « بل عاریة مضمونة » جواب دا ورکړې دې چه د رسول الله ﷺ دا اشاره قاعده کلیه او په طور د بیان حکم شرعی نه ده بلکه چونکه صفوان دغه وخته پورې اسلام نه وو قبول کړې او هلته مسلمانانو ته د وسلې حاجت وو په دې وجه ئې خاص د دې موقعې په باره کښې رسول الله ﷺ دا فرمائیلې وو چه نه بلکه عاریة به ضمان والا وی چه صفوان ئې په عاریة ورکولو باندې مطمئن شی او د مسلمانانو وقتی ضرورت پوره شی او دا د دې خبرې دلیل نه دې چه د ټولو عواری حکم دا دې. اه چه د هغې قرینه دا ده چه په وړاندې روایت کښې دا راروان دی چه رسول الله ﷺ چه کومې زغري د صفوان نه عاریة اخستلې وې نو چه کله د هغې د واپس کولو وخت راغلو نو په هغې کښې خو زغري په تعداد کښې کمې وې په دې باندې رسول الله ﷺ صفوان ته او فرمائیل چه ستاسو خو زغري ورکې شوې « فهل نعزم لك؟ قال لا يا رسول الله » یعنی رسول الله ﷺ او فرمائیل آیا مونږ د هغې ضمان درکړو؟ هغه عرض او کړو نه یا رسول الله ﷺ. ځکه چه زما په زړه کښې نن هغه خبره ده کومه چه هغه وخت نه وه. والحديث اخرجه النسائي، قاله المنذرى



[۳۵۶۳] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ رُقَيْعٍ، عَنْ أَنَاسٍ مِنْ آلِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ صَفْوَانَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "يَا صَفْوَانُ، هَلْ عِنْدَكَ مِنْ سِلَاحٍ؟ قَالَ: عَارِيَّةٌ، أَمْ غَضَبًا؟ قَالَ: لَا بَلْ عَارِيَّةٌ، فَأَعَارَهُ مَا بَيْنَ الثَّلَاثَيْنِ إِلَى الْأَرْبَعِينَ دِرْعًا، وَغَزَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حُنَيْنًا، فَلَمَّا هَزِمَ الْمُشْرِكُونَ جُمِعَتْ دُرُوعُ صَفْوَانَ، فَقَفَدَ مِنْهَا أَذْرَاعًا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَصَفْوَانَ: إِنَّا قَدْ فَقَدْنَا مِنْ أَذْرَاعِكَ أَذْرَاعًا، فَبَلْ نَغْرِمُ لَكَ؟ قَالَ: لَا يَا رَسُولَ اللَّهِ، لِأَنَّ فِي قَلْبِي الْيَوْمَ مَا لَمْ يَكُنْ يَوْمَئِذٍ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَكَانَ أَعَارَهُ قَبْلَ أَنْ يُسَلِّمَ، ثُمَّ أَسْلَمَ.

عبدالعزيز دال صفوان نه روایت کوی فرمائی چه نبی ﷺ فرمائی دی ای صفوان ایا خه اسلحه درسره شته؟ هغه عرض اوکړوپه جبرئې غواړئ اوکه عاریتاً نبی ﷺ او فرمائیل زبردستی او جبر نشته بلکه عاریتاً ئې غواړو نو هغه ورته دیرش یا خلوینست زغري ورکړې نبی ﷺ په غزوه حنین کښې جنگ اوکړو کله چه کفارونه شکست ورکړې شو نو د صفوان زغري راجمع کړې شوي په دې کښې یوڅو زغري وري شوي وي نبی ﷺ او فرمائیل ای صفوان زموږ نه ستایوڅو زغري وري شوي دي که چرې ستاخوښه وي مونږ به درته دهغې تاوان درکړو؟ صفوان او وئیل هیڅ کله نه ای دالله رسوله نن زما په زړه کښې هغه خبره ده کومه چه په کښې مخکښې نه وه (یعنی مخکښې مشرک وم اوس مې اسلام قبول کړې دې.

[۳۵۶۴] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الْأَحْوَصِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ رُقَيْعٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ أَنَاسٍ مِنْ آلِ صَفْوَانَ، قَالَ: اسْتَعَارَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَذَكَرَ مَعْنَاهُ.

عطاء د صفوان په کورنۍ کښې د یوڅو کسانو نه روایت کوی فرمائی چه نبی ﷺ یوڅو زغري عاریتاً غوښتلې وي او باقی روایت د تیر شوي روایت په شان دې.

[۳۵۶۵] (۳) حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابُ بْنُ نَجْدَةَ الْخَوْطِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ عِيَّاشٍ، عَنْ شُرَحْبِيلَ بْنِ مُسْلِمٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا أَمَامَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: "إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ قَدْ أَعْطَى كُلَّ ذِي حَقٍّ حَقَّهُ، فَلَا وَصِيَّةَ لِي وَارِثٍ، وَلَا تَنْفِقُ الْمَرْأَةُ شَيْئًا مِنْ بَيْتِهَا إِلَّا بِإِذْنِ زَوْجِهَا، فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَلَا الطَّعَامَ، قَالَ: ذَاكَ أَفْضَلُ أَمْوَالِنَا، ثُمَّ قَالَ: الْعَارِيَةُ مُؤَدَّاةٌ، وَالْيَمْنَةُ مُرْدُودَةٌ، وَالذَّيْنُ مُقْضَى، وَالزَّعِيمُ غَارِمٌ".

د ابو امامه رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه د نبی ﷺ نه مې اوریدلی دی چه فرمائیل ئې الله تعالی هر حقدار ته خپل حق ورکړې دې اوس د وارث دپاره وصیت کول جائزه دي اویوه ښځه به دخپل کور نه څه شې نه خرچ کوي مگر په اجازت دخاوند، عرض اوکړې شوي دالله رسوله ایا ډوډۍ به هم نه ورکوي بغیر اجازته؟ نبی ﷺ او فرمائیل داڅو په ټولو مالونو کښې غوره مال دې اویا ئې او فرمائیل امانتي غوښتلې څیز واپس کول پکار دي اود پیو دپاره چه لنگ څاروي غوښتلې شوې وي هغه هم واپس کول پکار دي اود قرض ادا کول ضروری دی اود چا ذمه واري قبلونک ضامن دې یعنی څوک چه دکوم شي ذمه واري واخلي دهغې ادا کول لازمي دي.

(۱): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۴۹۴۵) (صحيح)

(۲): انظر حديث رقم: (۳۵۶۲)، (تحفة الأشراف: ۴۹۴۵) (صحيح)

(۳): سنن الترمذي/الزكاة ۳۴ (۱۲۶۵)، الوصايا ۵ (۲۱۲۰)، سنن ابن ماجه/الوصايا ۶ (۲۷۱۳)، (تحفة الأشراف: ۴۸۸۲)،

وقد أخرجه: مسند احمد (۲۶۷/۵) (صحيح)

قوله: ﴿الْعَارِيَةُ مُؤَدَّاةٌ وَالْمِنْحَةُ مَرْذُودَةٌ وَالذَّيْنُ مَقْضِيٌّ وَالزَّعِيمُ غَارِمٌ﴾

یعنی د عاریه خیز لره د هغې مالک ته رسول ضروری دی دغه شان د منیحه مالک ته واپس کول ضروری دی، د منیحه ذکر ډیر کرته راغلی دې یعنی د پیو والا خاروې، یا میوه داره اونه چه کومه د خو ورخو دپاره چاته د انتفاع دپاره ورکړې شی او د دین ادا کول واجب دی او کفیل ضامن وی ه زعامه په معنی د کفالت، او غارم ماخوځ دې د غرم نه چه د هغې معنی ده د شی لازم ادا کول.

والحدیث أخرجه الترمذی وابن ماجه مختصراً، قاله المنذری

[۳۵۶۶] (۱) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُسْتَمِرِّ الْعُصْفَرِيُّ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ هِلَالٍ، حَدَّثَنَا هَبَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ يَعْلَى، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا أَتَيْتَ رَسُولِي فَأَعْطِيهِمْ ثَلَاثِينَ دِرْعًا وَثَلَاثِينَ بَعِيرًا، قَالَ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَعَارِيَةٌ مَضْمُونَةٌ، أَوْ عَارِيَةٌ مُؤَدَّاةٌ؟ قَالَ: بَلْ مُؤَدَّاةٌ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: حَبَّانُ خَالَ هِلَالٍ الرَّأْيِي.

صفوان بن یعلی دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه نبی ﷺ راته فرمائیلی دی کله چه درته زما استاذې درشی نودیرش زغري ورکړه اودیرش اوبنان هم ورکړه صفوان وائی ماوئیل ای دالله رسوله دعاریت په طورې درکړم دکومې چه ضمان لازمی وي اوکه دهغه عاریت په طورې درکړم کوم چه مالک ته واپس کیږي نبی ﷺ او فرمائیل دهغه عاریت په طورې راکړه کوم چه مالک ته واپس کولې شی.

قوله: ﴿عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ يَعْلَى عَنْ أَبِيهِ﴾

په دې روایت کښې داسې دی چه د هغې نه معلومیږي چه صاحب قصه او په عاریه باندي ورکولو والا یعلی وو. حال دا چه په تیر روایت کښې دی چه هغه صفوان بن یعلی وو. ولم يتعرض له فی شی من الشروح التي بایدینا فلیفتش..... والحدیث أخرجه النسائي، قاله المنذری

### بَابُ فِي مِمَّنْ أَفْسَدَ شَيْئًا يَغْرُمُ مِثْلَهُ

باب: کوم سړې چه د چا خیز خراب یا ضائع کړی نو دهغه شي په شان خیزد ورکولو ذمه واردي د وجوب ضمان قاعده:

په دې ترجمه الباب سره د مصنف غرض ضمان المتلفات لره بیانول دی. او ضابطه د هغې دا ده چه د خیزونو دوه قسمونه دی ذوات الامثال او ذوات القيم، د قسم اول په ضمان کښې مثل واجب دې یعنی مثل حسی، او په قسم ثانی کښې مثل معنوی واجب وی یعنی قیمت، مکیلات او موزونات دا ټول ذوات الامثال دی، او حیوانات په ذوات القيم کښې دی.

[۳۵۶۷] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، "كَانَ عِنْدَ بَعْضِ نِسَائِهِ، فَأَرْسَلَتْ إِحْدَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ مَعَ خَادِمِهَا بِقِصْعَةٍ

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۸۴۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۲۲/۴) (صحيح)

(۲): صحيح البخاري/المظالم ۳۴ (۲۴۸۱)، والنكاح ۱۰۷ (۵۲۲۵)، سنن الترمذي/الأحكام ۲۳ (۱۳۵۹)، سنن النسائي/عشرة النساء ۴ (۳۴۰۷)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۱۴ (۲۳۳۴)، (تحفة الأشراف: ۶۳۳، ۸۰۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۰۵/۳، ۲۶۳)، سنن الدارمي/البيوع ۵۸ (۲۶۴۰) (صحيح)



فِيهَا طَعَامٌ، قَالَ: فَضَرَبْتُ يَدَيَّهَا، فَكَسَرَتِ الْقُصْعَةَ، قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى: فَأَخَذَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْكِسْرَتَيْنِ فَضَمَّ أَحَدَهُمَا إِلَى الْأُخْرَى فَجَعَلَ يَجْمَعُ فِيهَا الطَّعَامَ، وَيَقُولُ: غَارَتْ أَمْكُمُ، زَادَ ابْنُ الْمُثَنَّى، كُلُّوْا فَأَكَلُوْا حَتَّى جَاءَتْ قُصْعَتُهَا الَّتِي فِي بَيْتِهَا، ثُمَّ رَجَعْنَا إِلَى لَفْظِ حَدِيثِ مُسَدِّدٍ، قَالَ: كُلُّوْا، وَحَبَسَ الرَّسُولُ وَالْقُصْعَةَ حَتَّى فَرَعُوا، فَقَدَّمَ الْقُصْعَةَ الصَّحِيحَةَ إِلَى الرَّسُولِ، وَحَبَسَ الْمَكْسُورَةَ فِي بَيْتِهَا.

دانس بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم دخپلوب بیانونه دیوي تني په کور کښې وونويوي ام المومنین ورته دخپل خادم په لاس باندې یوه کاسه ولیږله چه دخوراک څه شي پکښې ووراوی وائی چه هغې ام المومنین دچاپه کور کښې چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم تشریف فرماوو کاسه په لاس باندې ووهله اوماته شوه ، دابن المثنی په روایت کښې دې چه دکاسې دواړه ټکړې (ټکړې) نبی صلی اللہ علیہ وسلم راواخستلې او یوځانې ئې کړې اوشروع شوچه طعام ئې پکښې راټولولو اوفرمائیل ئې چه ستاسو مور غیرت کړې دي ابن المثنی دا اضافه کړې ده چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم اوفرمائیل خورئ نوهغوی وخوړل تردې چه هغې دخپل کور کاسه راوړله باقی الفاظ دمسدد دروایت دې چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم اوفرمائیل خورئ ، کاسه اوخادم ئې ایسارکړوتردې چه دوی دخوراک نه فارغ شول بیا ئې خادم ته بله روغه کاسه ورکړه اوماته شوي ئې په خپل کور کښې ایساره کړه.

### د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د کمال حسن معاشرت حکایت :

قوله: ﴿عَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- كَانَ عِنْدَ بَعْضِ نِسَائِهِ فَأَرْسَلَتْ إِحْدَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ الْخ﴾

د بعض نساء نه مراد عائشه رضی اللہ عنہا ده، یعنی یو کورت رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د عائشې رضی اللہ عنہا په نمبر کښې د هغې سره وونو د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په بیبيانو کښې یو زوجه محترمه (قيل هي صفية او حفصة او ام سلمة، ويحتمل تعدد الواقعة) د خپل خادم سره یو پلیټ راوړلې چه په هغې کښې خوراک وو. چه کله خادم د هغه خوراک سره دننه داخل شو نو عائشې رضی اللہ عنہا په هغې باندې خپل لاس اوهلو چه په هغې سره هغه پلیټ غورځیدو سره مات شواو دوه ټکړې شو. رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغه دواړه ټکړې اوچتې کړې او خپل مینځ کښې یو ځانې کولو سره ئې هغه غورځیدلې خوراک په هغې کښې جمع کول شروع کړل او بغیر د څه ناراضگۍ د اظهار او غصې نه ئې دعائشې رضی اللہ عنہا دطرف نه په طور د معذرت داسې اوفرمائیل ( غارت امکم ) چه ستاسو مور ته د بل دکور نه په خوراک راتلو باندې غیرت راغلو (او د بنو خپل مینځ کښې غیرت او تنافس معروف دې کوم چه یو فطری څیز دې چه په هغې کښې انسان مجبور کیږي. رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هم د عائشې رضی اللہ عنہا دا فعل په غیرت ضرائر باندې محمول کولو سره هیڅ او نه فرمائیل او ډیر د حکمت عملی نه ئې کار واخستلو (اصل کښې د سړی د جوش او غصې په وخت هغه ته نصیحت مفید نه وی په دې وجه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هیڅ نصیحت او تنبیه اونکړه، روستو چه د هغې غصه او بهراس اوتلو نو هغې خپله معافی اوغوښتنه بلکه د کفارې صورت لټول ئې شروع کړل په دې حدیث کښې ډیر لوئې سبق دې د حسن معاشرت او مکارم اخلاق او د زنانو د جذباتو د رعایت، سره د هغوی د فهمائش او خبرداری کولو

نه، صلى الله عليه وسلم اللهم وفقنا لمكارم الاخلاق التي بعث لاتمامها نبينا ﷺ) پس دهغي اثر فوراً او شو چه عائشه رضی اللہ عنہا شرمنده شوه او وې وئيل «يا رسول الله ﷺ ما كفارة ما صنعت؟» يعنى څه چه ما او كړل دهغي د كفاري به څه صورت وې؟ نو رسول الله ﷺ او فرمائيل «اناء مثل اناء و طعام مثل طعام» پس عائشي رضی اللہ عنہا د دننه يو بل پليټ په بدل كښې راوړلو، پس د دې مات شوى پليټ په بدله كښې هغه صحيح پليټ د هغه قاصد په لاس چا چه خوراك راوړلې وو اوليرلې شو. وړاندې په بل روايت كښې دا هم دى: عائشه رضی اللہ عنہا فرمائى چه ما د صفيې رضی اللہ عنہا په شان خوراك جوړونكې زنانه نه ده ليدلې. هغوى فرمائى چه كله هغي خوراك تيار كړو او رسول الله ﷺ ته ئې راوړلو «فاخذنى افكل» نو ماله سخته غصه راغله.

مونږ د ترجمة الباب په تشریح كښې وئيلې وو چه د مصنف ﷺ غرض دې باب سره ضمان المتلفات لره بيانول دى خو قصعه او طعام په ذوات الامثال كښې نه دى. لهذا په دې كښې ضمان بالمثل نه دې بلكه بالقيمة دې. خو چونكه دا حقيقة ضمان نه وو ځكه چه دواړه پليټونه د رسول الله ﷺ ملك وو، د كورونو اكثر سامان د خاوند ملكيت وى، بلكه مقصود په دې سره د صفيې رضی اللہ عنہا خيال ساتل وو پس په دې كښې هيڅ اشكال نشته.

حديث انس رضي الله عنه أخرجه البخاري والترمذي والنسائي وابن ماجه، وحديث عائشة رضي الله عنها أخرجه النسائي، قاله المنذرى

[۳۵۶۸] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنِي فُلَيْتُ الْعَامِرِيُّ، عَنْ جَسْرَةَ بِنْتِ دَجَاجَةَ، قَالَتْ: قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: "مَا رَأَيْتُ صَانِعًا طَعَامًا مِثْلَ صَفِيَّةَ صَنَعَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَعَامًا، فَبَعَثَتْ بِهِ فَأَخَذَنِي أَفْكَلُ فَكَسَّرْتُ الْإِنَاءَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، مَا كَفَّارَةٌ مَا صَنَعْتُ؟، قَالَ: إِنَاءٌ مِثْلُ إِنَاءٍ، وَطَعَامٌ مِثْلُ طَعَامٍ."

د جسرۍ بنت دجاجة رضی اللہ عنہا نه روايت دي فرمائى چه ام المومنين عائشه رضی اللہ عنہا او فرمائيل داسې خوراك تيارونكي مې چرته نده ليدلې څنگه چه به ام المومنين صفية رضی اللہ عنہا تيارلو، هغي د نبى ﷺ دپاره خوراك تيار كړي وو او هغي ورته راوړلو او ماته غصه راغله او دغصې نه مې لوبښي مات كړو نبى ﷺ ته مې عرض وكړو زما ددې عمل دپاره كفاره څه شي دي؟ نبى ﷺ او فرمائيل دلوبښي په عوض كښې ددې لوبښي په شان لوبښي او د خوراك په بدل كښې ددې خوراك په شان بل خوراك.

### باب المَوَاشِي تَفْسِدُ زَرْعَ قَوْمٍ

كله چه دچا څاروى دچا فصل خراب كړي

[۳۵۶۹] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ أَبِي حَبْدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حَرَامِ بْنِ مُخَبِّصَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ نَاقَةَ لِلْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ دَخَلَتْ حَابِطَ رَجُلٍ، فَأَفْسَدَتْهُ عَلَيْهِمْ، فَقَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أَهْلِ الْأَمْوَالِ حِفْظَهَا بِالنَّهَارِ، وَعَلَى أَهْلِ الْمَوَاشِي حِفْظَهَا بِاللَّيْلِ."

(۱) سنن النسائي / عشرة النساء ۴ (۳۴۰۹)، (تحفة الأشراف: ۱۷۸۲۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۴۸۶، ۲۷۷) (ضعيف)  
(۲) سنن ابن ماجه / الأحكام ۱۳ (۲۳۳۲)، (تحفة الأشراف: ۱۷۵۳، ۲۳۳۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۳۷۵)، موطا امام مالك / الأفضية ۲۸ (۳۷) (صحيح)



حرام بن محیصه دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه دبراء بن عازب رضی الله عنه او بنس دیوکس باغ ته داخل شوي وو او فصل ئې خراب کړي وو، نوددې متعلق نبی صلی الله علیه و آله فیصله او کړله چه دڅاروو دورځي دوخت دنقصان ذمه وار دفصل مالک دي او دشیپې په وخت کښې دنقصان ذمه وارد ارور مالک دي.

قوله: ﴿ أَنَّ نَاقَةَ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ دَخَلَتْ حَائِطَ رَجُلٍ فَأَفْسَدَتْهُ عَلَيْهِمْ فَقَضَى رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَلَى أَهْلِ الْأَمْوَالِ حِفْظَهَا بِالنَّهَارِ وَعَلَى أَهْلِ الْمَوَاشِي حِفْظَهَا بِاللَّيْلِ ﴾

دبراء بن عازب رضی الله عنه او بنس دیوکس باغ ته لاړه او هغه ئې خراب کړو. نو په دې موقع باندې رسول الله صلی الله علیه و آله فیصله او فرمائیله چه د باغ او پتو والا په ذمه دی د خپلو باغونو او پتو حفاظت کول د ورځې، او د څاروو والا په حق کښې ئې دا فیصله او کړه چه د هغوی په ذمه ده چه د خپلو څاروو حفاظت او کړی د شیپې په وخت یعنی څاروی خو دې د شیپې تړلې اوساتلې شی چه د چا باغ او پتې خراب نه کړی، او د ورځې د پتې والو ذمه داری ده چه هغوی د خپل پتې حفاظت پخپله او کړی.

### مسئلة الباب کښې مذاهب ائمه :

د دې حدیث نه معلومیږي چه که د شیپې د چا څاروو د یو بل سړی پتې خراب کړی نو په هغه باندې به د دې ضمان واجب وی، که نقصان د شیپې شوې وی نو بیا په اهل مواشی باندې هیڅ ضمان نشته، د جمهورو مذهب هم دا دي، د احنافو په نزد د شیپې او د ورځې په دې کښې هیڅ فرق نشته ﴿ لحديث العجماء جرحها جبار ﴾ دا حدیث د حدیث الباب نه زیات صحیح دي او متفق علیه یعنی د صحیحینو روایت دي او حدیث الباب د سنن روایت دي خو یو شرط د ضمان بل دي او هغه متفق علیه دي او هغه دا دي چه د دې څاروو سره سائق (خرونکې) نه وی. که سائق (خرونکې) وو نو په دې صورت کښې به ضمان وی ځکه چه په دې صورت کښې به هغه فعل دابه (افساد وغیره) د سائق طرف ته منسوب کیږي. او په کوم صورت کښې چه د څاروو سره سائق (خرونکې) نه وی هغه وخت به د فعل دابه نسبت دابه طرف ته کیږي، او په حدیث کښې فعل دابه ته جبار او عفو کړې شوې ده. لهذا د ضمان او عدم ضمان دپاره خو دا قید بالاتفاق معتبر دي خو دا د ورځې او د شیپې والا خبره مختلف فیه ده. والحديث اخرجه النسائي، قاله المنذرى

[۳۵۷۰] (١) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا الْفَرْيَابِيُّ، عَنِ الْأَوْزَاعِيِّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حَرَامِ بْنِ مُخَيَّصَةَ الْأَنْصَارِيِّ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ: كَانَتْ لَهُ نَاقَةٌ ضَارِبَةٌ فَدَخَلَتْ حَائِطًا، فَأَفْسَدَتْ فِيهِ فَكَلَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيهَا، فَقَضَى أَنْ حِفْظَ الْحَوَائِطِ بِالنَّهَارِ عَلَى أَهْلِهَا وَأَنْ حِفْظَ الْمَاشِيَةِ بِاللَّيْلِ عَلَى أَهْلِهَا وَأَنْ عَلَى أَهْلِ الْمَاشِيَةِ مَا أَصَابَتْ مَاشِيَتُهُمْ بِاللَّيْلِ.

حرام بن محیصه انصاری دبراء بن عازب رضی الله عنه نه روایت کوی فرمائی چه دبراء بن عازب رضی الله عنه دضاریه په نوم باندې یو او بنس وو او دیوکس باغ ته داخل شوي وو او فصل ئې خراب کړي وو، نوددې متعلق دنبی صلی الله علیه و آله سره خبرې وکړي شوي، نبی صلی الله علیه و آله فیصله او کړله چه دفصل

(١): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ١٧٥٣) (صحیح)

حفاظت دورځي په وخت کښې دخپل مالک په ذمه دي او د څارو و حفاظت د شپې په وخت کښې دخپل مالک په ذمه دي.

«عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ كَانَتْ لَهُ نَاقَةٌ ضَارِيَةٌ» ناقة ضاريه هغه اوښه چه د پرانستلې کيدو په وجه باندې دخلغو په پتو کښې د خريدو عادت وي، براء بن عازب رضي الله عنه خپله دا واقعه په خپله بيان کړه چه د هغوی يو اوښه داسې وه او بيا رسول الله ﷺ داسې فيصله فرمائيلې وه. والحديث أخرجه النسائي، قاله المنذري

﴿اخر کتاب البيوع﴾

بسم الله الرحمن الرحيم

کتاب الأقضية

د قضاوتونو (فیصلو کولو) بیان

او په بعض نسخو کښې دی ﴿کتاب الاقضية﴾ امام ترمذی رحمه الله د کتاب البيوع نه پس کتاب الاحکام عنوان قائم کړې دي او مصنف د کتاب القضاء، د دواړو حاصل يو دي. صرف د تعبیر فرق دې ځکه چه د احکام نه مراد په ترمذی کښې احکام قاضی دی، لهذا د دواړو حاصل يو شو. په کتاب البيوع او قضاء کښې مناسبت ښکاره دې هغه دا چه بیوع او معاملاتو کښې ډیر کرته اختلافات ښکاره کيږي چه د هغې د فیصلې دپاره د قاضی طرف ته رجوع کولې شي. د کتاب الاحکام عنوان په صحیح بخاری کښې هم دې کوم چه هغوی د تقریبا د کتاب په اخیر کښې د کتاب الفتن نه پس ذکر کړې دي.

باب فی طلب القضاء

د قضاء د منصب د مطالبې کولو بیان

[۳۵۷۱] (۱) حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، أَخْبَرَنَا فَضِيلُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ أَبِي عَمْرٍو، عَنْ سَعِيدِ الْمُقْبَرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «مَنْ وَلِيَ الْقَضَاءَ فَقَدْ ذُبِحَ بِغَيْرِ سَكِينٍ».

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرماني چه رسول الله ﷺ فرمائيلې دي: څوك چه قاضی مقرر كړي شونو گريا كښې داسې ده لكه چه بغير چارې ذبحه كړې شوې وي.

شرح الحديث :

قوله: ﴿عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ «مَنْ وَلِيَ الْقَضَاءَ فَقَدْ ذُبِحَ بِغَيْرِ سَكِينٍ﴾ په الكوكب الدرې كښې د ﴿فقد ذبح بغير سكين﴾ معنى دا ليكلي شوې ده چه هغه د هميشه دپاره په مصيبتونو كښې اخته شو. بغير سكين سره دې طرف ته اشاره ده. ځكه چه كومه ذبح په سكين سره كيږي هغه د لږ ساعت مصيبت او تكليف وي، او كله چه بغير د سكين نه كيږي نو په هغې كښې مشقت ډير اوږد وي. بيا د دې اوږد مشقت نه پس

(۱) سنن الترمذی / الأحكام ۲ (۱۳۲۵)، (تحفة الأشراف: ۱۳۰۰۲)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه / الأحكام ۱ (۲۳۰۸)، مسند احمد (۳۶۵/۲) (صحيح)



دوه صورتونه دي يا خو به د خپلي دينداري او انصاف د وجې نه د لوڼې ثواب مستحق وي يا به په فيصلو كښې ظلم كولو سره د دنيا سره سره آخرت هم ختم كړي. آه او امام خطابي رحمه الله د بغير سكين يو معنى دا هم كړې ده چه دا ئې په دې وجه او فرمايل چه معلومه شى چه د رسول الله صلی الله علیه و آله په كلام كښې د ذبح او هلاكت نه حسى نه دې مراد بلكه هلاكت معنوى يعنى دينى نقصان مراد دي، او علامه سندھي په فتح الودود حاشيه د ابوداؤد كښې ليكلى دي چه دا جمله صوره خبريه ده خو معنى ئې د انشاء ده، يعنى كوم سرې چه قاضى كړې شى هغه لره پكار دي چه هغه خپل دننه خواهشات نفسانيه ذبح كړي او خپل نفس دې د خپو لاندې كړي هله به هغه په صحيح معنو كښې خپل فرائض منصبى سر ته اورسولې شى. او يا دا د عهده قضاء مذمت دي چه په دې كښې رغبت نه دي كول پكار ځكه چه په دې كښې لويه خطر هلاكت دي. والحديث أخرجه الترمذی قاله المنذرى

[۳۵۷۲] (۱) حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، أَخْبَرَنَا بِشْرُ بْنُ عُمَرَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَعْفَرٍ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ مُحَمَّدٍ الْأَخْنَسِيِّ، عَنْ الْمُقْبَرِيِّ، وَالْأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ جَعَلَ قَاضِيًا بَيْنَ النَّاسِ، فَقَدْ دُبِعَ بِغَيْرِ سَكِينٍ".

ترجمه: دابوهريره رضي الله عنه نه روايت دي فرمائي چه رسول الله صلی الله علیه و آله فرمايلي دي څوك چه قاضى مقرر كړي شو دپاره دفيصلو كولو په مينځ دخلقوكښې نويقينا دي بغير چارې نه ذبحه كړې شو.

## باب فِي الْقَاضِيِ يُخْطِئُ

كه چرې قاضى په فيصله كولو كښې خطا شى

[۳۵۷۳] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَسَّانَ السَّمْعِيُّ، حَدَّثَنَا خَلْفُ بْنُ خَلِيفَةَ، عَنْ أَبِي هَاشِمٍ، عَنْ ابْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "الْقَضَاءُ ثَلَاثَةٌ: وَاحِدٌ فِي الْجَنَّةِ، وَاثْنَانِ فِي النَّارِ، فَأَمَّا الَّذِي فِي الْجَنَّةِ فَرَجُلٌ عَرَفَ الْحَقَّ فَقَضَى بِهِ، وَرَجُلٌ عَرَفَ الْحَقَّ فَجَارَ فِي الْحُكْمِ فَمَوُفَى النَّارِ، وَرَجُلٌ قَضَى لِلنَّاسِ عَلَى جَهْلِ فَمَوُفَى النَّارِ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَذَا أَصَحُّ شَيْءٍ فِيهِ، يَعْنِي حَدِيثَ ابْنِ بُرَيْدَةَ الْقَضَاءُ ثَلَاثَةٌ.

ابوبريدة دخپل پلار نه روايت كوي فرمائي چه ئې على الصلاة والسلام فرمايلي دي: درې كسان داسې دي چه يوبه ددوى نه په جنت كښې وي اودوه به په اور كښې وي نوپه جنت كښې به هغه كس وي چاچه حق پيژندلي وي او په هغې باندې ئې فيصله كړې وي، بل هغه كس دي چاچه حق پيژندلي وي او په خپله فيصله كښې ئې دظلم نه كار اخستلې وي نودا قسم قاضى به په اور كښې وي، او بل هغه كس دي څوك چه دجهالت په بنياد دخلقوفيصلي كوي نوداسې قاضى به هم په اور كښې وي.

قوله: (عَنِ ابْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ « الْقَضَاءُ ثَلَاثَةٌ وَاحِدٌ فِي الْجَنَّةِ وَاثْنَانِ فِي النَّارِ الْخ »)

۱: سنن ابن ماجه/الأحكام ۱ (۲۳۰۸)، (تحفة الأشراف: ۱۲۹۹۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۶۵/۲) (صحيح)  
۲: سنن ابن ماجه/الأحكام ۳ (۲۳۱۵)، (تحفة الأشراف: ۲۰۰۹)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/الأحكام ۱ (۱۳۲۲) (صحيح)

د دې حديث حواله په كتاب الخراج باب فى العرافة كښې تيره شوې ده. يعنى د قاضى درې قسمونه دى چه په هغوى كښې به يو قسم خو جنت ته ځي او دوه به جهنم ته ځي يو هغه قاضى دې كوم چه حق پيژندلو سره د هغې مطابق فيصله او كړي، او دويم قسم هغه دې چه چا د حق د پيژندگلو نه باوجود د هغې خلاف فيصله او كړه، او دريم قسم هغه دې چه د سره ئې حق او نه پيژندلو، دا دواړه قسمونه جهنميان دي.

والحديث اخرجه الترمذى وابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۵۷۴] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ مَيْسَرَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنِي يَزِيدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْهَكَدِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي قَيْسٍ مَوْلَى عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا حَكَمَ الْحَاكِمُ، فَاجْتَهَدَ فَأَصَابَ فَلَهُ أَجْرَانِ وَإِذَا حَكَمَ فَاجْتَهَدَ فَأَخْطَأَ فَلَهُ أَجْرٌ»، فَحَدَّثْتُ بِهِ أَبَا بَكْرٍ حَزْمٍ، فَقَالَ: هَكَذَا حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ.

د عمرو بن العاص رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائيلى دي: كله چه بو حاكم دغور او فكر كولونه پس دخلقود معاملاتو فيصله وكړله اوفصيله ئې صحيح وه نودداسې حاكم دپاره دوچند اجر دي او چاچه دغور اوفكرنه پس فيصله وكړله ليكن دخطاكيدو په وجه حق ته ونه رسيدونودده دپاره يواجر دي.

(عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- « إِذَا حَكَمَ الْحَاكِمُ فَاجْتَهَدَ فَأَصَابَ فَلَهُ أَجْرَانِ الْخ »)

يعنى كله چه يو حاكم فيصله او كړي په خپل اجتهاد سره (يعنى فروغ محتمله غير منصوصه كښ)، او د هغه اجتهاد صحيح وو يعنى د اصل حكم شرعى موافق وو نو د هغه دپاره دوه اچرونه دي يو اجر د اجتهاد او بل اجر الاصابة. او كه حاكم د اجتهاد نه پس فيصله او كړه چه په هغې كښې ترې نه خطاء واقع شوه او اصل حكم شرعى ته او نه رسيدله نو بيا هم د هغه دپاره اجر دي خو يو يعنى د اجتهاد اجر ځكه چه د قاضى او مفتى اجتهاد د هغه عبادت دي. او كومه خطا چه د هغه نه اوشوه هغه معاف كولې شي.

والحديث اخرجه البخارى ومسلم والترمذى والنسائى وابن ماجه مطولا ومختصرا، قاله المنذرى

[۳۵۷۵] (۲) حَدَّثَنَا عَبَّاسُ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا مَلَا زُمْرٍ عَنْ عَمْرِو، حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ نَجْدَةَ، عَنْ جَدِّهِ يَزِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَهُوَ أَبُو كَثِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «مَنْ طَلَبَ قَضَاءَ الْمُسْلِمِينَ حَتَّى يَنَالَهُ، ثُمَّ غَلَبَ عَدْلُهُ جُورَةَ فَلَهُ الْجَنَّةُ، وَمَنْ غَلَبَ جُورُهُ عَدْلُهُ فَلَهُ النَّارُ».

دابوهريره رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائيلى دي څوك چه دمسلमानانو قاضى جوړيدل غواړي تردې چه ده ته دقضا منصب حواله كړي شي اوببادده په ظلم باندي دد، انصاف غالب شي نودداسې قاضى دپاره جنت دي، اودكوم قاضى په انصاف باندي چه ظلم غالب شي نودده دپاره به دجهنم اوري.

(۱): صحيح البخاري/الاعتصام ۲۱(۷۳۵۲)، صحيح مسلم/الأقضية ۶(۱۷۱۶)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۳(۲۳۱۴)، (تحفة الأشراف: ۱۵۴۳۷، ۱۰۷۴۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۹۸۷/۴، ۲۰۴) (صحيح)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۴۸۴۵) (ضعيف)



## شرح الحديث :

قوله: «مَنْ طَلَبَ قَضَاءَ الْمُسْلِمِينَ حَتَّى يَنَالَهُ ثُمَّ غَلَبَ عَدْلُهُ جُورُهُ فَلَهُ الْجَنَّةُ وَمَنْ غَلَبَ جُورُهُ عَدْلُهُ فَلَهُ النَّارُ» په بډل کښې د دې حديث په شرح کښې ليکلي دي چه اگر چه د عهده قضاء طلب مکروه او مذموم دي خو يو سړی دا مذموم عهده حاصله هم کړه او بيا د هغه عدل او انصاف د هغه په ظلم او زياتي باندې غالب وو نو د هغه دپاره جنت دي او هغه کامياب دي او د چا ظلم چه د هغه په انصاف باندې غالب وو نو د هغه دپاره اور دي. اهـ (ثم غلب عليه جوره) په ظاهر کښې ئې دا مطلب دي چه د دې قاضي صفت عدل په صفت جور باندې غالب پاتې شو يعنې په هره فيصله کښې د هغه عدل په ناانصافي باندې غالب پاتې او دا مطلب ئې نه دي چه د کوم قاضي زياتي فيصلې په عدل او انصاف باندې مېنې وې او بعض په غير انصاف باندې نو د هغه دپاره د جنت زيرې دي. والله تعالى اعلم

[۳۵۷۱] (۱) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حُمَزَةَ بْنِ أَبِي يَحْيَى الرَّمْلِيُّ، حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ أَبِي الزَّرْقَاءِ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَتْبَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ إِلَى قَوْلِهِ الْفَاسِقُونَ سورة المائدة آية ۲۴-۲۵ هَؤُلَاءِ الْآيَاتِ الثَّلَاثِ نَزَلَتْ فِي الْيَهُودِ خَاصَّةً فِي قُرَيْظَةَ وَالنَّضِيرِ".

دعبد الله بن عباس رضی اللہ عنہ روایت دي فرمائی چه لاندي ذکر شوي درې اياتونه : «ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الكافرون» (دیهودیانو په باره کښې نازل شوي دي او خصوصاً دبنی قریظه او بنی النضیر په باره کښې.

## باب فِي طَلَبِ الْقَضَاءِ وَالتَّسَرُّعِ إِلَيْهِ

په فيصله کولو کښې د جلتی کولو او د قضاء د منصب د خواهش کولو بیان

[۳۵۷۷] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَا: أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنْ رَجَاءِ الْأَنْصَارِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ بَشِيرٍ الْأَنْصَارِيِّ الْأَزْرَقِيِّ، قَالَ: "دَخَلَ رَجُلَانِ مِنْ أَبْوَابِ كِنْدَةَ، وَأَبُو مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيُّ جَالِسٌ فِي حَلْقَةٍ، فَقَالَا: أَلَا رَجُلٌ يُنْفِقُ بَيْنَنَا؟ فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْحَلْقَةِ: أَنَا، فَأَخَذَ أَبُو مَسْعُودٍ كَفَّامِينَ حَصَى فَرَمَاهُ بِهِ، وَقَالَ: مَهْ إِنَّهُ كَانَ يَكْرَهُ التَّسَرُّعَ إِلَى الْحُكْمِ".

دعبد الرحمن بن بشر انصاری نه روایت دي فرمائی چه دکنده قبیلې دوه کسانو مسجد ته خپله مقدمه په داسې وخت کښې راوړله کله چه ابو مسعود انصاری نه په مسجد کښې په حلقه کښې ناست وو دوی دواړو او وئیل ایا داسې څوک شته چه زمونږ فيصله وکړي نو دحلقې والانه یوکس ورته او وئیل زه به ستاسو فيصله وکړم، ابن مسعود قه یوموتې کانړي راواخستل او دې بي ورباندې اوویشتلو او وئې وئیل لږ صبرخو وکړه، ابن مسعود نه به په فيصله کولو کښې جلتی کول بد گنرل (ځکه چه په جلتی کولو سره دغلطی امکان زیات وې).

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۵۸۲۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۳۸/۱، ۲۷۱) (حسن، صحيح الإسناد)

۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۹۹۷) (ضعيف الإسناد)

[۳۵۷۸] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيلُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى، عَنْ بِلَالٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: "مَنْ طَلَبَ الْقَضَاءَ وَاسْتَعَانَ عَلَيْهِ وَكَلَّ إِلَيْهِ، وَمَنْ لَمْ يَطْلُبْهُ وَلَمْ يَسْتَعِنْ عَلَيْهِ أَنْزَلَ اللَّهُ مَلَكًا يُسَدِّدُهُ"، وَقَالَ وَكِيعٌ: عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ عَبْدِ الْأَعْلَى، عَنْ بِلَالٍ بْنِ أَبِي مُوسَى، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَالَ أَبُو عَوَانَةَ: عَنْ عَبْدِ الْأَعْلَى، عَنْ بِلَالٍ بْنِ مِرْدَاسٍ الْقَزَارِيِّ، عَنْ خِيَمَةَ الْبَصْرِيِّ، عَنْ أَنَسٍ.

دانس بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه مې اوریدلی دی چه فرمائیل ئې څوک چه د قضا منصب طلب کړي اود دې منصب د حاصلولو دپاره دخلقو نه امداد غواړي نو دابه ده ته حواله کړې شي په داسې حال کښې چه د الله تعالی امداد به ورسره نه وي او څوک چه د دې منصب د حاصلولو مطالبه نه کوي اونه دخلقونه سفارشونه غواړي نو الله تعالی به یوه فرشته نازلې کړي څوک چه به رده معاملات درست کوی.

[۳۵۷۹] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا قُرَّةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ هِلَالٍ، حَدَّثَنِي أَبُو بَرْدَةَ، قَالَ: قَالَ أَبُو مُوسَى، قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَنْ نَسْتَعْمِلَ أَوْلَا نَسْتَعْمِلَ عَلَى عَمَلِنَا مَنْ أَرَادَهُ".

د ابو موسی رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمایلي دې مونږ په خپل کار (قضاء) کښې هغه څوک نه مقرر و څوک چه د دې غوښتنه کوی.

﴿ قَالَ أَبُو مُوسَى قَالَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - « لَنْ نَسْتَعْمِلَ - عَلَى عَمَلِنَا مَنْ أَرَادَهُ » ﴾  
دا حدیث دلته مختصر دې د کتاب الحدود په شروع کښې مفصلاً راروان دې. او د دې نه مخکښې هم د دې ذکر په کتاب الطهارة کښې په ﴿ باب کیف یستاک ﴾ کښې راغلې دې. او د نسائی شریف په شروع کښې په ابواب الوضوء کښې روایت مفصله ذکر شوې دې.  
والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والنسائی بطوله، اخرجه ابوداؤد فی کتاب الحدود بطوله،  
قاله المنذری

### باب فی گراهیه الرشوة درشوت دمعانعت بیان

[۳۵۸۰] (۳) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذَلْبٍ، عَنْ الْحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: "لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الرَّاشِيَّ وَالْمُرْتَشِيَّ".

د عبد الله بن عمرو نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم په رشوت اخستونکي او رشوت ورکونکي باندې لعنت فرمائيلې دې.

<sup>۱</sup>: سنن الترمذي/الأحكام ۱ (۱۳۲۳)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۱ (۲۳۰۹)، (تحفة الأشراف: ۲۵۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۱۸۳، ۲۲۰) (ضعيف)

<sup>۲</sup>: صحيح البخاري/الإجارة ۱ (۲۶۶۱)، المرتدين ۲ (۶۹۲۳)، صحيح مسلم/الإجارة ۳ (۱۷۳۳)، سنن النسائي/الطهارة ۴ (۴)، (تحفة الأشراف: ۹۰۸۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۰۹/۴)، وأعادته المؤلف في الحدود (۴۳۵۴) (صحيح)

<sup>۳</sup>: سنن الترمذي/الأحكام ۹ (۱۳۳۷)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۲ (۲۳۱۳)، (تحفة الأشراف: ۸۹۶۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۶۴/۲، ۱۹۰، ۱۹۴، ۲۱۲) (صحيح)



قوله: ﴿لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- الرَّاشِيَّ وَالْمُرْتَشِيَّ﴾

راشي رشوت ورکونکې او مرتشي رشوت اخستونکې. ﴿والرشوة مثلثة الرءاء ما يعطى لا بطل حق او يعطى لا حقاق باطل﴾ د رشوت ذکر او دا تعريف په کتاب الخراج ﴿باب في كراهية الافتراض في آخر الزمان﴾ کښې تير شوې دې،  
والحديث أخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى

## باب فِي هَدَايَا الْعُمَّالِ

قاضيا نوته د تحفوملاويدواحكام

اوس خو بابونه مخکښې يو باب تير شو ﴿باب في قبول الهدايا﴾ په هغه باب کښې د موجوده ترجمة الباب حواله او د دې نه مخکښې په کتاب الخراج کښې د ﴿هدايا العمال﴾ يو باب تير شوې دې د ټولو حواله په تير باب کښې راغلي ده.

[۳۵۸۱] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، حَدَّثَنِي قَيْسٌ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَدِيُّ بْنُ عَمِيْرَةَ الْكِنْدِيُّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ، مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ لَنَا عَلَى عَمَلٍ فَكَتَمْنَا مِنْهُ مَخِيطًا فَمَا فَوْقَهُ فَهُوَ غُلٌّ يَأْتِي بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ، أَسْوَدُ كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَقْبَلْ عَنِّي عَمَلُكَ، قَالَ: وَمَا ذَاكَ؟ قَالَ: سَمِعْتُكَ تَقُولُ: كَذَا وَكَذَا، قَالَ: وَأَنَا أَقُولُ ذَلِكَ مَنْ اسْتَعْمَلَنَاهُ عَلَى عَمَلٍ فَلْيَاثَ بَقْلِيلِهِ وَكَثِيرِهِ، فَمَا أُوتِيَ مِنْهُ أَخَذَهُ وَمَا مَنَى عَنْهُ انْتَهَى».

دعدي بن عميرة الكندي نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ اوفرمائیل ای خلقو زمونږ دطرفه چه په تاسو کښې څوک عامل (قاضی یا حاکم) مقرر شي او هغه دیوې ستنې په برابر یوخیز پټ کړي نو دې په خیانت کرنکو کښې داخل شو او دغه حاکم به دقیامت په ورځ ددغه شي سره پیش کیږي په دې وخت کښې دانصارونه یوتور رنگ والا سرې پاخیدو راوی وائی لکه چه زه ئې اوس هم وینم او عرض ئې اوکړو ای دالله رسوله ته زمانه دخپل کار زمه واري واپس واخله نبی ﷺ اوفرمائیل ته څه وائی؟ هغه اووئیل ستانه مې دا دا خبرې واوریدی چه تاوئیل نبی ﷺ اوفرمائیل دا خبره خو زه اوس هم کوم چه په مونږ کښې یوکس دڅه کار دپاره ولیږلې شي برابره خبره ده چه کار کم وي او که زیات وي ده ته چه څه ملاو شي هغه دي راوړي اوده ته چه دده دکار معاوضه ملاو شي هغه دي وصول کړي او دکوم څیزنه چه دې منع کولې شي هغه دې پریرېدی.

قوله: ﴿حَدَّثَنِي عَدِيُّ بْنُ عَمِيْرَةَ الْكِنْدِيُّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- قَالَ «يَا أَيُّهَا النَّاسُ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ لَنَا عَلَى عَمَلٍ الْخِ﴾

مضمون حدیث :

رسول الله ﷺ ارشاد اوفرمائیلو ای خلقو په تاسو کښې چه کوم سرې زمونږ په یو عمل باندي عامل جوړ کړې شی او بیا هغه زمونږ نه دیوې ستنې یا د هغې نه لوئې څیز پټ کړي (بغیر د اجازت نه) ﴿مَخِيطٌ﴾ په کسري د میم سره یعنی ستن نو د هغې پټول به غلول وی او

(۱) صحیح مسلم / الامارة ۷ (۱۸۳۳)، (تحفة الأشراف: ۹۸۸۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۹۲/۴) (صحیح)

د غلول حکم دا دې «ومن یغلل یات بما غل يوم القيامة» یعنی غلول کړې څیز به هغه د قیامت په ورځ ځان سره راوړي. راوی وائی چې د رسول الله ﷺ په دې ارشاد باندې یو انصاری صحابی چې تور رنگ ئې وو پاسیدو (او دا واقعه زما په ذهن کښې داسې مستحضره ده) گویا زه ورته اوس گورم، هغه عرض اوکړو یا رسول الله ﷺ! واخلي دا خپل عمل (رسول الله ﷺ به هغه لره د یو ځانې عامل جوړ کړې وو نو په دې ارشاد اوریدو سره هغه داسې اووې) رسول الله ﷺ ترې نه تپوس اوکړو څه خبره ده؟ نو هغه اووې چې ما ستاسو نه اوس یو مضمون واوریدو، رسول الله ﷺ او فرمایل او دا خبره خو زه اوس هم کوم او رسول الله ﷺ هغه خبره دوباره او فرمائیله بیا وړاندې په روایت کښې څه داسې ذکر نشته چې هغوی خپل عمل ته لارل که نه.

### د قاضی یا عامل دپاره قبول هدیه کله جائز ده؟

مصنف رحمه الله په دې حدیث باندې د «هدایا العمال» ترجمه قائم کړې ده دې خبرې طرف ته اشاره کولو دپاره چې عامل که د یو سړي هدیه قبوله کړي نو هغه هم د غلول په حکم کښې ده. لهذا یا خو هغوی لره هدیه قبولول پکار نه دی او که مصلحه ئې واخلي نو په مال صدقه کښې ئې ایخودل پکار دی. د دې نه مخکښې د دې سلسلې حدیث د ابن اللتیبه په خپل محل کښې تیر شوې دې «هلا جلس فی بیت ابیه او امه الحدیث» په دې باندې شارحینو لیکلې دی چې کومه هدیه قاضی یا عامل ته د یو داسې سړي نه ملاؤ شی چې هغه ته ئې صرف د قضاء د عهدې د وجې نه ورکړي ممانعت د داسې هدیه د قبولولو دې ځکه چې په دې کښې د نیت فاسده قوی احتمال دې چې هغه عامل به د زکوٰۃ د وصول کولو په وخت د مزکي رعایت کوی او هم دغه شان به قاضی او که دې عامل یا قاضی ته هدیه ورکونکې د خپل قدیم ذاتی تعلق په بناء باندې هدیه ورکوی چې په هغې کښې د فساد نیت وغیره احتمال نه وی نو بیا په دې صورت کښې قبولول جائز دی.

### بَابُ كَيْفِ الْقَضَاءِ

#### د فیصلې کولو طریقه

[۳۵۸۲] حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ عَوْنٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ، عَنْ سِمَاكِ، عَنْ حَنْشٍ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: "بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الْيَمَنِ قَاضِيًا، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، تُرْسِلُنِي وَأَنَا حَدِيثُ السِّنِّ، وَلَا عِلْمَ لِي بِالْقَضَاءِ، فَقَالَ: إِنَّ اللَّهَ سَيَهْدِي قَلْبَكَ، وَيُثَبِّتُ لِسَانَكَ، فَإِذَا جَلَسَ بَيْنَ يَدَيْكَ الْخَصْمَانِ فَلَا تَقْضِيَنَّ حَتَّى تَسْمَعَ مِنَ الْآخَرِ كَمَا سَمِعْتَ مِنَ الْأَوَّلِ فَإِنَّهُ آخَرُ أَنْ يَكْتَبِينَ لَكَ الْقَضَاءَ"، قَالَ: فَمَا زِلْتُ قَاضِيًا أَوْ مَا شَكَّكْتُ فِي قَضَائِهِ بَعْدُ.

د علی کرم الله وجهه نه روایت دې فرمائی چې زه نبی ﷺ یمن ته د قاضی توپ دپاره ولیږلم ما ورته عرض اوکړو ای دالله رسوله ته خو ما لیږې او زما عمر کم ده او په قضا باندې نه پوهیږم نبی ﷺ او فرمایل الله تعالی به دقضا طریقه ستا په زړه کښې واچوی او ستا ژبه به

۱: سنن الترمذی/الأحكام ۵ (۱۳۳۱)، مسند احمد (۱۱۱/۱) وعبدالله بن أحمد فی زوائدی الأحمد (۱۴۹/۱)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۱ (۲۳۱۰)، (تحفة الأشراف: ۱۰۰۸۱، ۱۰۱۱۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۸۳/۱) والحاكم (۱۳۵/۳) بسند آثرية انقطاع (حسن).



مضبوطه کړي کله چه تاته دوه اختلاف کونکي مخامخ شي نو تر هغې پورې فيصله مه کوه ترڅو چه دي دبل نه هم اوریدلي نه وي لکه څنگه چه تا داوړیدلي نه اوریدلي دی ځکه چه دا ډیره نزدې ده چه ته حقه فیصله وکړي علی ته وائی ددینه پس چه ما څومره قضاگانې کړي دي په یوه کښې مې هم شک نه دې کړې.

قوله: (عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- إِلَى الْيَمَنِ قَاضِيًا فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ تُرْسِلْنِي وَأَنَا حَدِيثُ السُّنَنِ وَلَا عِلْمَ لِي بِالْقَضَاءِ)

سیدنا علی رضی الله عنہ فرمائی چه رسول الله ﷺ زه یمن ته د قاضی په طور اولیرلم، هغوی فرمائی ما عرض اوکړو یا رسول الله ﷺ تاسو ما داسې کار له لیرې حال دا چه زما عمر کم دی او ماته د قضاء علم هم نشته. شارحینو لیکلې دی چه د دې نه د مطلق علم نفی نه ده مراد بلکه په دې سره د عادت او تجربې نفی مراد ده. رسول الله ﷺ هغوی ته د دعا په طور او فرمائیل چه الله پاک به ستا د زړه صحیح فیصلې کولو ته رهنمائی فرمائی او ستا ژبه به په حق باندې کلکه کړي یعنی د هغې په ذریعه به صحیح فیصله کوئ. بیا ئې هغوی ته د فیصلې په باره کښې د یوې قاعدې کلپې طرف ته رهنمائی او فرمائیل هغه دا چه کله په مجلس کښې تاسره خصمین یعنی مدعی او مدعی علیه حاضر شی نو د یو سړی بیان اوریدو سره هرگز فیصله مه کوه ترڅو چه دې د هغه د خصم خبره نه وی اوریدلې. څنگه چه دې په تفصیل سره خبره واوریده نو (فانه احرى ان يتبين لك القضاء) په دې صورت کښې یعنی د فریقینو د خبرې اوریدو نه پس به د صحیح فیصلې ښکاره کیدل په تا باندې ډیر نزدې وی، سیدنا علی رضی الله عنہ فرمائی چه (د رسول الله ﷺ د دې دعا په برکت باندې او د رسول الله ﷺ د دې بیان کړې قاعدې کلپې په وجه باندې) ما ته په خپله یو فیصله کښې هم شک او تردد نه دې پیدا شوې.

د قضاء علی الغائب په جواز کښې اختلاف :

قوله: (حتى تسمع من الآخر) باندې شارحینو لیکلې دی چه دا دلیل دې د دې خبرې چه د حاکم دپاره د دویم فریق د خبرې اوریدلو نه مخکښې فیصله کول جائز نه دی نو د خصم د غائب کیدو په صورت کښې په عدم جواز کښې په طریق اولی نه دی. امام خطابی رحمه الله فرمائی (ومن ذهب إلى ذلك شريح وعمر بن عبد العزيز وهو قول أبي حنيفة وابن أبي ليلى. وقال مالك والشافعي يجوز القضاء على الغائب إذا تبين للحاكم أن فراره واستخفاءه إنما هو فرار من الحق ومعاندة للخصم)

یعنی د ابو عبید په نزد قضاء علی الغائب په هغه صورت کښې جائز ده چه حاکم ته د دې خبرې یقین وی چه د بل فریق عدالت ته نه حاضریدل او پتیدل هغه د حق د ادا کولو دپاره او د خپل مقابل د دشمن د وجې نه دی. د سیدنا علی رضی الله عنہ فیصلې ډیر مشهورې دی په قضاء او احکامو کښې د هغوی مهارت ضرب المثل دې تاسو به د نحو په څه کتاب کښې لوستلې وی (قضية ولا ابا حسن لها) او حدیث هم مشهور دې کوم چه په ډیرو خطبو کښې لوستلې شی. (واقضاهم علی) داسې قسم روایات په مناقبو کښې کتلې کیدې شی. والحديث اخرجه الترمذی مختصراً (وقال حديث حسن، قاله المنذرى).

## باب فِي قَضَاءِ الْقَاضِي إِذَا أَخْطَأَ

که چرې قاضي په قضاوت کېنې خطاء شي

[۳۵۸۳] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ زَيْنَبِ بِنْتِ أُمِّ سَلَمَةَ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ وَإِنِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ إِلَيَّ، وَلَعَلَّ بَعْضَكُمْ أَنْ يَكُونَ الْحَنُّ بِحُجَّتِهِ مِنْ بَعْضٍ فَأَقْضِيَ لَهُ عَلَى نَحْوِ مَا أَسْمَعُ مِنْهُ، فَمَنْ قَضَيْتُ لَهُ مِنْ حَقِّ أَخِيهِ شَيْءٌ فَلَا يَأْخُذْ مِنْهُ شَيْئًا، فَإِنَّمَا أَقْطَعُ لَهُ قِطْعَةً مِنَ النَّارِ».

دام سلمه رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلى دی یقینا زه یو انسان یم او تاسو ماته خپلي مقدي راوړی کیدی شي چه په تاسو کېنې یوه ډله دپستي او خوږې ژبي والوي اودبلي ډلي نه ئې ژبه تیزه وي او زه دهغوی په حق کېنې فیصله وکړم، ماچه دچا دپاره دهغه دورور دحق نه فیصله وکړه یادده دورور دمال دده په حق کېنې نوده لره پکار دي چه دغه خیز واخلي حکم چه زه ده ته داور یوه تکره ورکوم.

﴿ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- « إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ وَإِنَّكُمْ تَخْتَصِمُونَ إِلَيَّ وَلَعَلَّ بَعْضَكُمْ أَنْ يَكُونَ الْحَنُّ بِحُجَّتِهِ مِنْ بَعْضٍ فَأَقْضِيَ لَهُ عَلَى نَحْوِ... الخ ﴾

رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائی بیشکه زه هم انسان یم او تاسو په خپلو مخاصماتو او منازعاتو کېنې د فیصلې کولو دپاره ماته راځئ (دې باره کېنې زما نه یوه خبره په غور سره واورئ، هغه دا چه کیدی شي چه په تاسو کېنې ډیر فصیح او قادر الکلام وی خپلي خبرې او دلیل لره ښه بیانولي شي د بل په مقابل کېنې، نو په داسې صورت کېنې امکان دي د داسې خبرې چه زه د الحن او افصح د تقریر مطابق د هغه په حق کېنې فیصله او کړم (او بالفرض وی هغه فیصله خلاف واقع د فریق آخر د خبرې به ښه طریقي سره د نه پوهه کولو د وجې نه، نو په داسې صورت کېنې واورئ چه زه د کوم سړی په حق کېنې فیصله او کړم نو هغه له به یقینا جائز نه وی بلکه هغه دي داسې او گنړی چه ما د هغه دپاره د اور فیصله کړې ده.

د قضاء القاضی نفاذ صرف په ظاهر باندې وی

یا ظاهر او باطن دواړو باندې؟

په دې حدیث کېنې یو مشهوره اختلافی مسئله ذکر شوې ده هغه دا چه د قضاء قاضی نفاذ ظاهراً او باطناً هر دواړو لحاظو سره وی یا که صرف ظاهراً وی د دنیوی احکامو په اعتبار سره. په دې مسئله کېنې د احنافو رائې دا ده چه قضاء قاضی نفاذ ظاهراً او باطناً دواړو طریقو سره وی. او د جمهورو په نزد د دې نفاذ صرف ظاهراً وی یعنی د دنیاوی احکامو په اعتبار سره. باطناً وعند الله نه... یعنی د قاضی دهرې فیصلې دپاره دا ضروری نه ده چه هغه دي داسې وی، بلکه په هغې کېنې د غلطی د امکان د کیدو د وجې نه د خلاف حق کیدو

(۱): صحيح البخاري / المظالم ١٦ (٢٤٥٨)، الشهادات ٢٧ (٢٦٨٠)، الحيل ١٠ (٦٩٦٧)، الأحكام ٢٠ (٧١٦٩)، ٢٩ (٧١٨١)، ٣١ (٧١٨٥)، صحيح مسلم / الأفضية ٣ (١٧١٣)، سنن الترمذي / الأحكام ١١ (١٣٣٩)، سنن النسائي / القضاة ١٢ (٥٤٠٣)، سنن ابن ماجه / الأحكام ٥ (٢٣١٧)، (تحفة الأشراف: ١٨٢٦١)، وقد أخرجه: موطا امام مالك / الأفضية ١ (١)، مسند احمد (٣٢٠، ٣٠٧/٨) (صحيح)



احتمال هم دي. د دې اختلاف د پیژندګلو نه پس اوس تاسو په دې باندې ځان پوهه کړئ چې دا حدیث په ظاهر کېنې د احنافو د مسلک خلاف دې ځکه چې رسول الله ﷺ فرمائی چې زما په فیصله کولو سره به هغه څیز د هغه سړي دپاره عندالله حلال نه وی، د دې جواب دا دې چې د احنافو مسلک چې کوم پورته ذکر دې د هغې تعلق د عقود او فسوخ سره دې که د هغه عقد تعلق د طلاق او نکاح سره وی یا د اموالو سره، املاک مرسله کېنې زمونږ دا مسلک نه دي، د عقود فسوخ مثال لکه یو سړی په بل باندې دعوی او کړی چې دې سړی زما په لاس باندې د فلانی څیز بیع کړې ده او هغه دویم سړی د بیع منکر دي. مدعی دوه دروغژن گواهان په خپله دعوی باندې قائم کړل حاکم د مدعی په حق کېنې فیصله او کړه نو په دې صورت کېنې به د قاضی د قضا د وجې نه اگر چې بیع د مخکېنې نه منعقد نه وه اوس یعنی د فیصلې نه پس به منعقد شی، او د مشتری په ذمه به د ثمن ادا کول او بیا په هغه څیز کېنې تصرف کول جائز وی، هم دغه شان که یو سړی په زنانه باندې د نکاح دعوی او کړه چې ما تا سره نکاح کړې وه. زنانه انکار کولو خو سړی د قاضی په مجلس کېنې دوه دروغژن گواهان پیش کړل چې د هغې په وجه باندې قاضی د سړی په حق کېنې فیصله او کړه یعنی د ثبوت نکاح نو په دې مثال کېنې سره د دې چې مخکېنې نکاح نه ده شوی د قاضی د فیصلې د وجې نه به شرعا او د الله پاک په نزد نکاح منعقد شی چې کله د احنافو د مسلک تحقیق او شونو اوس ځان پوهه کړئ چې دا حدیث زمونږ خلاف نه دي، مونږ دا وایو چې دا حدیث د عقود او فسوخ متعلق نه دي بلکه مونږ د دې تعلق د املاک مرسله سره منو یعنی چرته چې دعوی او خصمین کېنې اختلاف په نفس ملک کېنې وی مثلاً یو سړی وائی چې د فلانی سړی سره چې کومه زمکه ده هغه د هغه ملک نه دي بلکه زما ده د هغه په هغې باندې غاصبانه قبضه ده، د دې مسئلې تعلق د عقد بیع و شراء سره نه دي نو په دې مسئله باندې مدعی دروغژن گواهان پیش کړل او قاضی د هغه په حق کېنې فیصله او کړه یا په واقع کېنې هغه زمکه د مدعی وه، خو هغه سره د بینه نه کیدو د وجې نه قاضی د مدعی علیه په یمین باندې د هغه په حق کېنې فیصله او کړه. په دې مثال کېنې د قاضی فیصلې سره به هغه څیز د مقضی له دپاره جائز او حلال وی، او د قاضی دا فیصله به صرف ظاهراً نافذ کیږي باطناً نه، د احنافو دلیل دا دي چې د قاضی او د حاکم ولایت عامه (۱) حاصلیدو د وجې نه د خلقو ترمینځه د عقد و فسخ حق شرعا حاصل دي لهذا چې کله هغه د دوه سړو ترمینځه د اصول او قواعدو مطابق د عقد یا فسخ فیصله او کړی نو د هغه دا فیصله به شرعا معتبر او نافذ وی خو قاضی ته د دې خبرې حق نه دي حاصل، چې په یو څیز کېنې غیر د مالک دپاره [یعنی د مالک نه علاوه بل چا دپاره] ملکیت په خپله فیصله باندې ثابت کړی پس د حدیث الباب تعلق هم د دویم صورت سره دي، او د احنافو په تائید کېنې هغه واقعه هم پیش کولې شی کومه چې امام محمد رحمه الله په خپل تصنیف کتاب الاصل کېنې

(۱) ولا یخالفنا هذا الحدیث فان الحدیث یقتضي من قضیت له من حق اخیه شینا وفي العقود والفسوخ لا یقتضي القاضي

بحق اخیه شینا بل یحکم بالعقد او الفسخ الذي هو حق الحاكم الي آخر ما في البذل

ذکر کړې ده کومه چه د علامه انور شاه کشمیری په العرف الشذی کښې هم ذکر شوې ده هغه دا چه یو سړی علی عليه السلام ته تلو سره د یوې زنانه سره د نکاح دعوی او کړه او بیا ئې په هغې باندې دوه دروغژن گواهان هم پیش کړل چه په هغې باندې هغوی د نکاح فیصله او کړله. په دې باندې هغه زنانه پاسیده او هغې اووې چه دا سړې دروغژن دي او ای امیر المومنین چه هر کله دا خبره ده نو بیا زما ده سره نکاح او کړئ چه دواړه گناهگار نه شو، په دې باندې علی عليه السلام او فرمائیل «شاهدک زوجاک» یعنی اوس په دې مجلس کښې د دوه گواهانو گواهی باندې ما د نکاح فیصله کړې ده هم په دې سره د عقد نکاح تحقق اوشو. د دې نه پس په عرف الشذی کښې دادی چه «ذکره محمد فی الأصل، ولا یذکرون سند هذه الواقعة ولم أجد السند وظني أنها لا تكون بلا أصل، وممر الحافظ على هذا الأثر ولم يرده زيادة الرد ولم يقبله أيضاً، فدل على أنه ليس بلا أصل» یعنی حافظ ابن حجر رحمته الله دا واقعه نقل کړې ده او رد کړې ئې نه ده اگر چه قبول کړې ئې هم نه ده، پس داسې معلومیږي چه دا واقعه بې اصل نه ده. (العرف الشذی) (عرف الشذی ص ۴۰۶) والحديث أخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجه، قاله المنذري

[۳۵۸۴] (۱) حَدَّثَنَا الرَّبِيعُ بْنُ يَافِعٍ أَبُو تَوْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ أَسَمَةَ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَافِعٍ مَوْلَى أُمِّ سَلَمَةَ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ: أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلَانِ يَخْتَصِمَانِ فِي مَوَارِيثَ لَهُمَا لَمْ تَكُنْ لِهَمَا بَيِّنَةٌ إِلَّا دَعَوَاهُمَا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قَدْ كَرِهْتُهُمَا، فَبَكَى الرَّجُلَانِ، وَقَالَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا: حَقِّي لَكَ، فَقَالَ لِهَمَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَمَّا إِذْ فَعَلْتُمَا مَا فَعَلْتُمَا، فَأَقْسِمَا وَتَوَخَّيَا الْحَقَّ، ثُمَّ اسْتَخِيَمَا، ثُمَّ تَحَالَلا.

دام سلمه عليها السلام نه روایت دې فرمائی چه نبی عليه السلام ته یوځل دوه جگړه کونکي راغلل چه دمیراث په باره کښې یسې جگړه وه او د دوی سره گواهان نه وو مگر صرف دعوی ددوی نبی عليه السلام او فرمائیل باقی روایت دتیر شوي روایت په شان دې، مگر په دې کښې دا اضافه ده چه هغه دوه کسانو وژړل او په دوی کښې هریوکس اووئیل چه ماخپل حق تاته درکړو نبی عليه السلام ورته او فرمائیل کله چه تاسو داسې خبره کوئ نو پخپل مینځ کښې مال تقسیم کړئ اودحق تلاش وکړئ او عمل پري وکړئ او په قرعه اندازی سره خپل حصي وصول کړی او پخپل مینځ کښې یوبل ته معافی وکړئ.

قوله: «عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ أَتَى رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- رَجُلَانِ يَخْتَصِمَانِ فِي مَوَارِيثَ لَهُمَا لَمْ تَكُنْ لِهَمَا بَيِّنَةٌ إِلَّا دَعَوَاهُمَا فَقَالَ النَّبِيُّ -صلى الله عليه وسلم- قَدْ كَرِهْتُهُمَا»

دا حدیث هم هغه دې کوم چه پورته ذکر شو خو رومبې حدیث مختصر وو او په دې کښې زیادت دې چه دوه سړی د رسول الله عليه السلام په خدمت کښې د میراث په مسئله کښې جهگړه کولو سره راغلل، او بینه د چا سره هم نه وه په دې باندې رسول الله عليه السلام هغه حدیث ارشاد او فرمائیلو کوم چه مخکښې تیر شو. د دې نه پس دلته روایت کښې دی چه د رسول الله عليه السلام وعید اوریدو سره دواړه سړی په ژړا شو او هر یو په هغوی کښې خپل حق بل ته ورکولو،

(۱) تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۱۷۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۲۰/۶) (صحیح)



په دې باندې رسول الله ﷺ او فرمائیل «أَمَّا إِذْ فَعَلْتُمَا مَا فَعَلْتُمَا فَأَقْتَسِمَا وَتَوَخَّيَا الْحَقَّ. ثُمَّ اسْتَهَمَا ثُمَّ تَخَالَا» دا پورته تیر شو چه د دې دواړو اختلاف د میراث یا ترکه په باره کښې وو، په ترکه کښې متفرق خیزونه وی په دې وجه رسول الله ﷺ هغوی ته او فرمائیل چه هغه دواړه خیزونه برابر برابر دوه ځایه کړئ. او هر یو دې په دې تقسیم سره د خپل حق د اخستلو اراده او کړی، یعنی د دې نه د زیاتۍ دې نه کوی. بیا چه کله هغه ټول مال دوه ځایه کیځودلې شی نو قرعه اندازی کوی د تعیین حصه په باره کښ، بیا چه د چا په نوم باندې کومه حصه راوځی هغه دې واخلی او د هغې باوجود دې هم خپل مینځ کښې یو بل ته خپل حق معاف کړی، یعنی احتیاطا.

[۳۵۸۵] (۱) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، أَخْبَرَنَا عِيسَى، حَدَّثَنَا أَسَامَةُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَافِعٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَمْرَسَلَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بِهَذَا الْحَدِيثِ، قَالَ: يَخْتَصِمَانِ فِي مَوَارِيثَ وَأَشْيَاءَ قَدْ دَرَسَتْ، فَقَالَ: إِنِّي إِنَّمَا أَقْضِي بَيْنَكُمْ بِرَأْيِي فِيمَا لَمْ يُنْزَلْ عَلَيَّ فِيهِ.

د ام سلمه رضی الله عنها نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی دا روایت هم د مخکني روایت په شان دې مگر په دې کښې دا اضافه ده راوی وائی ددوه کسانو د میراث په مسئله کښې جگړه وه او دیوڅو زړو خیزونو په باره کښې ئې جگړه وه نبی ﷺ او فرمائیل د کومو خیزونو په باره کښې چه په ما وځي نه نازلېږي نوزه به ستاسو فیصله دخپلې رای مطابق کوم.

قوله: «يَخْتَصِمَانِ فِي مَوَارِيثَ وَأَشْيَاءَ قَدْ دَرَسَتْ» یعنی اختلافه د میراث په مال او داسې خیزونو کښې وو چه زارۍ شوې وو «فَقَالَ إِنِّي إِنَّمَا أَقْضِي بَيْنَكُمْ بِرَأْيِي فِيمَا لَمْ يُنْزَلْ عَلَيَّ فِيهِ» یعنی رسول الله ﷺ دا هم او فرمائیل چه د کومې مسئلې په باره کښې په ما باندې وحی نه نازلېږي په هغې کښې خپله رائي او اجتهاد سره فیصله کوم.

د رسول الله ﷺ دپاره اجتهاد جائز دي :

دا حدیث صریح دلیل دي په دې خبره باندې چه د رسول الله ﷺ دپاره په احکاماتو کښې اجتهاد جائز وو، مسئله اختلافی ده د جمهورو رائي هم دا ده یعنی د جواز، په دې مسئله کښې څلور اقوال دی کوم چه په ابواب الوضوء کښې «لولا ان اشق علی امتی لامرئهم بالسواک» د حدیث د لاندې تیر شوې دی.

[۳۵۸۶] (۲) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمَهْرِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ هُوَ عَلَى الْبَيْتِ: "يَا أَيُّهَا النَّاسُ، إِنَّ الرَّأْيَ إِنَّمَا كَانَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُصِيبًا لِأَنَّ اللَّهَ كَانَ يُرِيهِ وَإِنَّمَا هُوَ مِنَ الظَّنِّ وَالتَّكَلُّفِ".

د ابن شهاب نه روایت دې فرمائی چه عمر فاروق نه په معبري باندې او فرمائیل اي خلقو د نبی ﷺ رای درست ووځکه چه الله تعالی ورته سمه لارښودلې وه، اوزماراي یوگمان اومحنت دې.

(۱): تفرد به أبو داود، وانظر ما قبله (تحفة الأشراف: ۱۸۱۷۴) (صحيح)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۴۰۶) (ضعيف)

قوله: (عَنْ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ الرِّأْيَ إِنَّمَا كَانَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - مُصِيبًا لِأَنَّ اللَّهَ كَانَ يُرِيهِ وَإِنَّمَا هُوَ مِنَّا الظَّنُّ وَالتَّكَلُّفُ)

یعنی یو کړت عمر رضی الله عنه په خپله خطبه کښې په منبر باندې دا خبره او فرمائيله چه اې خلکو! بيشکه اصل رائي چه صحيح او حق وی هغه خود رسول الله صلی الله علیه وسلم وه ځکه چه الله تعالی به هغوی په حق خبره باندې پوهه کول او زموږ رائي خو بس د یو گمان او تکلف درجه لری. دا روایت مرسل دې یعنی منقطع، ځکه چه د ابن شهاب سماع د عمر رضی الله عنه نه ثابت نه ده او گوري! عمر رضی الله عنه د خپلې رائي په باره کښې څه فرمائي او هغې ته څومره کم حیثیت ورکوی حالانکه خپله رسول الله صلی الله علیه وسلم د هغوی په باره کښې د اصابت رائي او د حق وینا شهادت ورکړې دې (فقی الترمذی عن ابن عمر رضی الله عنه ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال ان الله جعل الحق على لسان عمر وقلبه)

[۳۵۸۷] (١) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ الصَّغِيِّ، أَخْبَرَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو عُمَانَ الشَّامِيُّ "وَلَا إِخَالَنِي رَأَيْتُ شَامِيًّا أَفْضَلَ مِنْهُ" يَعْنِي حُرَيْزُ بْنُ عُثْمَانَ.

معاذ بن معاذ فرمائي چه ماته ابو عثمان شاي او وئيل چه زما په راي دشام څوك اوسيدونكي د حريز بن عثمان نه افضل نه دې.

قوله: (حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ الصَّغِيِّ) دا په اكثر نسخو کښې نشته کما فی تعلیق الشيخ محمد عوامه او د دې د دلته کیدو وجه هم په فهم کښې نه راځي. (کما فی البذل)

### بَابُ كَيْفَ يَجْلِسُ الْخَصْمَانِ بَيْنَ يَدَيِ الْقَاضِي

د قاضي په وړاندې به دوه جگړه کونکي څنګه کيڼي

[۳۵۸۸] (٢) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، حَدَّثَنَا مُصْعَبُ بْنُ ثَابِتٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، قَالَ: "قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ الْخَصْمَيْنِ يَقْعَدَانِ بَيْنَ يَدَيِ الْحَكَمِ".

د عبد الله بن الزبير نه روایت دې فرمائي چه نبی صلی الله علیه وسلم حکم کړي دي چه مدعی او مدعی علیه دې قاضي ته مخامخ کيڼي.

قوله: (عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ قَالَ قَضَى رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَنَّ الْخَصْمَيْنِ يَقْعَدَانِ بَيْنَ يَدَيِ الْحَاكِمِ)

یعنی رسول الله صلی الله علیه وسلم ارشاد او فرمائیلو چه قاضي له پکار دی چه په خصمینو کښې د یو سره هم امتیازی برتاؤ او نکرې بلکه دواړه دې خپلې مخې ته کینوی. په بذل کښې یو اشکال لیکلې دې چه په دې حدیث کښې کیفیت د جلوس مذکور نه دې لهذا په ترجمه الباب کښې لفظ: کیف: لیکل نه وو پکار، خود دې جواب دا کیدې شی چه په خصمین کښې د هر یو د حاکم مخې ته کیناستل هم دا کیفیت د جلوس دې.

(١): تفرد به أبو داود (صحیح)

(٢): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۵۲۸۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۴) (ضعيف الإسناد)



## بَابُ الْقَاضِي يَقْضِي وَهُوَ غَضَبَانُ

### قاضیان دې د غصې په وخت کښې فیصلې نه کوی

[۳۵۸۹] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ كَتَبَ إِلَى ابْنِهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا يَقْضِي الْحَكَمُ بَيْنَ اثْنَيْنِ، وَهُوَ غَضَبَانُ".

عبدالرحمن بن ابی بکره دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه ماخپل خوي ته وليکل چه نبی ﷺ فرمائیلى دی فیصله کونکي دي ددوه کسانو په مینځ کښې په داسې حال کښې فیصله نه کوی چه دې غصه وی

قوله: «لَا يَقْضِي الْحَكَمُ بَيْنَ اثْنَيْنِ وَهُوَ غَضَبَانُ» یعنی که قاضی صاحب د مخکښې نه په څه خبره باندې غصه وی نو په دغه وخت کښې ورله د دعوی سماعت او د هغې فیصله نه دی کول پکار، کیدې شی په دې حالت کښې هغه په معامله باندې کما حقہ پوهه نه شی، هم دغه شان په بذل کښې لیکلې دی چه جوع او عطش (لوږه او تنده) وغیره احوالو کښې هم فیصله نه دی کول پکار.

والحدیث اخرجه البخاری والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى

## بَابُ الْحُكْمِ بَيْنَ أَهْلِ الدِّمَةِ

### قاضی به د کافرانو په مینځ کښې فیصله څنګه کوی؟

[۳۵۹۰] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَوْزِي، حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ يَزِيدَ النَّخَوِيِّ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "إِنْ جَاءُوكَ فَاحْكَمْ بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ سَوْءَ الْمَائِدَةِ آيَةٌ ۲۲" فَنَسِخْتُ، قَالَ: فَاحْكَمْ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ سَوْءَ الْمَائِدَةِ آيَةٌ ۲۸".

د عبد الله بن عباس نه روایت دې فرمائی چه مخکنی حکم داوو: «إِنْ جَاءُوكَ فَاحْكَمْ بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ» بیا دا حکم په لاندیني ایت سره منسوخ شو: «فاحْكَمْ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ».

په مسئله الباب کښې مذاهب ائمه:

یعنی مسلمان قاضی لره په دارالاسلام کښې د ذمیانو فیصله کول پکار دی یا نه؟ د امام مالک رحمته الله رائي په دې کښې د تخیر ده، او د احنافو په نزد د مرافعه په صورت کښې د فیصلې حکم دې هم داسې نه دې. د امام شافعی رحمته الله په دې کښې دوه قوله دی یو هم دا یعنی وجوب عند المرافعه، دویم دا چه مطلقا واجب دې.

۱: صحيح البخاري/الأحكام ۱۳ (۷۱۵۸)، صحيح مسلم/الأقضية ۷ (۱۷۱۷)، سنن الترمذي/الأحكام ۷ (۱۳۳۴)، سنن النسائي/آداب القضاة ۱۷ (۵۴۰۸)، ۳۱ (۵۴۲۳)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۴ (۲۳۱۶)، (تحفة الأشراف: ۱۱۶۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۷۵، ۳۷، ۳۸، ۴۶، ۵۲) (صحيح)  
۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۶۲۶۳) (حسن الإسناد)

[۳۵۹۱] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ الْحَصِينِ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ" سُورَةُ الْمَائِدَةِ آيَةُ ۴۲، وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ سُورَةُ الْمَائِدَةِ آيَةُ ۴۲، قَالَ: كَانَ بَنُو النَّضِيرِ إِذَا قَتَلُوا مِنْ بَنِي قُرَيْظَةَ أَدَّوْا نِصْفَ الدِّيَةِ، وَإِذَا قَتَلَ بَنُو قُرَيْظَةَ مِنْ بَنِي النَّضِيرِ أَدَّوْا إِلَيْهِمُ الدِّيَةَ كَامِلَةً، فَسَوَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَهُمْ."

د عبد الله بن عباس نه روایت دې فرمائی کله چه دا ایت نازل شو: «إِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ» الایه، مخکښې دا معمول وو چه کله به قبيله بنو نضیر د قبیلې بنی قریظه کوم کس لره مړ کړو نو نیم دیت به ئې ورته ادا کولو او چه کله به بنو قریظه د بنو نضیر نه څوک مړ کړو نو پوره دیت به ئې ادا کولو ددې ایت په نازلیدو سره نبی ﷺ په دیت کښې مساوات قائم کړو.

قوله: (قَالَ كَانَ بَنُو النَّضِيرِ إِذَا قَتَلُوا مِنْ بَنِي قُرَيْظَةَ أَدَّوْا نِصْفَ الدِّيَةِ الْخ)

دا روایت تفصیلا په کتاب الحدود کښې راغلي دي، بنو نضیر او بنو قریظه د یهودو دوه مشهورې قبیلې دي چه په مدينه طيبه کښې آبادې وې چه په هغې کښې بنو قریظه کمې درجې والا گنرلې کیدل او بنو نضیر د اوچتې درجې والا په دې وجه به په هغوی کښې دا بې انصافی موندلې شوه چه که د بنو نضیر یو سړی به څوک قرظی سړی قتل کړو نو د هغه به ئې نیم دیت ادا کولو، او که بنو قریظه به په بنو نضیر کښې څوک قتل کړل نو هغوی به کامل دیت ورکولو، دا راوی وائی چه رسول الله ﷺ د هغوی نه دې تفريق ختمولو سره د دواړو تر مینحه د مساوات فیصله او کړه.

د هغه آیت کریمه مطابق کوم چه په روایت کښې ذکر شوې دي. (وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ) (بذل)

والحدیث أخرجه النسائي، قاله المنذرى

### بَابُ اجْتِهَادِ الرَّأْيِ فِي الْقَضَاءِ

په فیصله کولو کښې خپلې رای لره دخل ورکول

[۳۵۹۲] (۱) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي عَوْنٍ، عَنِ الْحَارِثِ بْنِ عَمْرٍو أَخِي الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، عَنْ أَنَاسٍ مِنْ أَهْلِ جَمْعٍ، مِنْ أَصْحَابِ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، لَمَّا أَرَادَ أَنْ يَبْعَثَ مُعَاذًا إِلَى الْيَمَنِ، قَالَ: "كَيْفَ تَقْضِي إِذَا عَرَضَ لَكَ قَضَاءٌ؟" قَالَ: أَقْضِي بِكِتَابِ اللَّهِ، قَالَ: فَإِنْ لَمْ تَجِدْ فِي كِتَابِ اللَّهِ؟ قَالَ: فَبِسُنَّةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: فَإِنْ لَمْ تَجِدْ فِي سُنَّةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَلَا فِي كِتَابِ اللَّهِ؟ قَالَ: أَجْتَهِدُ رَأْيِي وَلَا أَلُو، فَضَرَبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَدْرَهُ، وَقَالَ: الْحَدُّ لِلَّهِ الَّذِي وَفَّقَ رَسُولَ اللَّهِ لِمَا يَرْضَى رَسُولُ اللَّهِ."

(۱) سنن النسائي / القسامة ۵ (۴۷۳۷)، (تحفة الأشراف: ۶۰۷۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۶۳/۱) (حسن)

(۲) سنن الترمذي / الأحكام ۳ (۱۳۲۷)، (تحفة الأشراف: ۱۱۳۷۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۳۰/۵، ۲۳۶، ۲۴۲)، سنن

الدارمي / المقدمة ۲۰ (۱۷۰) (ضعيف)



حارث بن عمرو د معاذ بن جبل رضی اللہ عنہ په ملگرو کښې د یوکس نه روایت کوی فرمائی چه کله نبی صلی اللہ علیہ وسلم یمن ته د معاذ رضی اللہ عنہ دلیرلو اراده وکړه نو معاذ رضی اللہ عنہ ته ئې او فرمائیل کله چه تاته یوه معامله راشي نو فیصله به څنگه کوي؟ معاذ او وئیل د الله د کتاب مطابق فیصله به کرم: نبی صلی اللہ علیہ وسلم افرمائیل که چرې د الله په کتاب کښې ئې بیانه موي معاده عرض او کړو د نبی ئې د سنت مطابق فیصله به کوم بیانی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل که چرې د رسول په سنت کښې دغه خبره بیانه موي معاذ عرض او کړو بیابه زه پخپله پوهه او غور او فکر کولو سره مسئله معلوموم (او د معاملي په فیصله کولو کښې به څه قسم کوتاهی نه کوم، راوی وائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم د معاذ نه په سینه گذار وکړو او وئې فرمائیل ټول تعریفونه الله تعالی لره دي چاچه دهغه د رسول قاصد لره د دې خبرې توفیق ورکړو په کومې چه د الله رسول خوشحاله شو.

قوله: «أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- لَمَّا أَرَادَ أَنْ يَبْعَثَ مُعَاذًا إِلَى الْيَمَنِ قَالَ « كَيْفَ تَقْضِي إِذَا عَرَضَ لَكَ قَضَاءٌ ». قَالَ أَقْضِي بِكِتَابِ اللَّهِ. قَالَ « فَإِنْ لَمْ تَجِدْ فِي كِتَابِ اللَّهِ ». قَالَ فِيسُنَّةِ رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم-... الخ»

د دې حدیث مضمون خو ظاهر دې چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د معاذ رضی اللہ عنہ نه تپوس او کړو چه یمن ته تلو سره به ته څنگه فیصله کوي؟ نو هغوی جواب ورکړو چه د کتاب الله مطابق، او که په هغې کښې ملاؤ نه شو نو د سنت رسول صلی اللہ علیہ وسلم مطابق، رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ترې نه تپوس او کړو چه که په دواړو کښې ئې بیا نه مومي نو بیا به څنگه فیصله به کوي؟ نو هغوی جواب ورکړو چه زه به په خپله رائې باندې اجتهاد کوم «ولا الو» او په دې اجتهاد کولو کښې به هیڅ کوتاهی او کمې نه کوم. یعنی د وس مناسب به د صحیح فیصلې کوشش کوم. رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د هغوی جواب اوریدو سره د هغوی په سینه مبارکه باندې لاس کیخودلو او وې فرمائیل: ټول تعریفونه د هغه الله دپاره دی چا چه د خپل رسول صلی اللہ علیہ وسلم قاصد ته توفیق ورکړو د هغه څیز کوم چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم خوښوی.

امام خطابی رحمته الله فرمائی «اجتهاد رائی» نه خپله ذاتی رائې مراد نه ده چه کومه د هغوی په ذهن کښې راځی بغیر د استناد نه کتاب او سنت ته. بلکه د رائې نه مراد په طریقه د قیاس ده چه د هغې ماخذ کتاب او سنت وی، او بیا د هغې نه پس فرمائی: «وفی هذا اثبات القیاس وایجاب الحكم اه» پس ټول فقهاء کرام قاطبه د دې حدیث نه په حجیت قیاس باندې استدلال کوی.

### د حدیث الباب په سند باندې کلام او د محدثینو د طرف نه د هغې جواب

د دې نه پس بیا ځان پوهه کول پکار دی چه دا حدیث سنداً ضعیف دې په دې کښې یو راوی دې حارث بن عمرو چه مجهول دې بالاتفاق بله دا چه هغه روایت کوی دې لره د اصحاب معاذ من اهل حمص نه چه هغه هم مجهول دي. امام ترمذی رحمته الله هم د دې حدیث په سند باندې کلام کړې دې او د دې حدیث د تخریج نه پس فرمائی «لا نعرفه الا من هذا الوجه ولس اسناده عندی بمتصل» او جوزقانی دا روایت په موضوعات کښې شمار کړې دې

علامه سیوطی رحمۃ اللہ علیہ په مرقاة الصعود کښې د دې ټولو د نقل کولو نه پس فرمائی «قلت لكن الحديث له شواهد موقوفة عن عمر بن الخطاب وابن مسعود وزيد بن ثابت وابن عباس رضي الله عنهم، وقد اخرجها البيهقي في سننه عقبه تخريجه لهذا الحديث تقوية له اه» (بذل) حافظ ابن القيم رحمۃ اللہ علیہ په خپل مشهور تصنيف اعلام الموقعين عن رب العالمين کښې دا حديث د قياس په حجيت کښې پيش کړې دې او په دې سند کښې چه کومې کمزورې دي چه د هغې پورته بيان او شو د هغې د طرف نه ئې جواب کړې دې، او دا چه دا حديث د شهرت حد ته رسيدلې دې او د اصحاب معاذ رضي الله عنه شهرت په علم او دين او فضل او صدق کښې دومره دې کوم چه په چا باندې پټ نه دې. او دا هم فرمائی چه شعبه کوم چه په دې حديث کښې حامل لواء دې د هغوی شان دا دې چه بعض ائمه حديث د هغوی په باره کښې فرمائی «اذا راثيت شعبه في اسناد حديث فاشدد يديک به» چه کله ته د يو حديث په سند کښې شعبه راوی وينې چه هغه پکښې موجود دې نو بيا هغه حديث په مضبوطيا سره اونيسه او خطيب بغدادی د دې حديث يو بل سند بيان کړې دې چه د هغې سند متصل او رجال معروف بالثقاہه دی، د دې ټولو خبرو نه علاوه لويه خبره دا ده چه اهل علم دا حديث نقل کوی او په حجيت قياس باندې د دې نه استدلال کوی «فوقنا بذلك على صحته عندهم» يعنی د څه نه چه معلومېږي چه دا حديث د هغوی په نزد صحيح او ثابت دې او بيا هغوی د دې نه پس ډير داسې احاديث د مثال په طور ذکر کړي دی کوم چه د سند په لحاظ سره قوي نه دی، خو د علماء کرامو د نقل د پاسه نقل کول د هغې د صحت دپاره کافی او مستغنی عن طلب الاسناد شو (ملخصا من العون، والحديث اخرجه الترمذی، قاله المنذری

**تنبيه :** حافظ ابن القيم رحمۃ اللہ علیہ په تهذيب السنن کښې فرمائی چه امام ابن ماجه هم د دې حديث تخريج په يو بله طريقه باندې کړې دې «عَنْ عُبَادَةَ بْنِ نُسَيْبٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ غَنَمٍ، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ، قَالَ : لَمَّا بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الْيَمَنِ ، قَالَ : لَا تَقْضِينَ وَلَا تَفْصِلَنَّ إِلَّا بِمَا تَعْلَمُ، وَإِنْ أَشْكَلَ عَلَيْكَ أَمْرٌ، فَقِفْ حَتَّى تَبَيَّنَهُ ، أَوْ تَكْتُبْ إِلَيَّ فِيهِ » حافظ ابن القيم رحمۃ اللہ علیہ فرمائی : «وهذا اجود اسنادا من الاول ولا ذكر فيه للرائي اه»

[۳۵۹۳] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ شُعْبَةَ، حَدَّثَنِي أَبُو عَوْنٍ، عَنْ الْحَارِثِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ نَائِسٍ، مِنْ أَصْحَابِ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، لَمَّا بَعَثَهُ إِلَى الْيَمَنِ، فَقَدْ كَرَّمَعْنَاهُ.

معاذ بن جبل د نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه د تیر شوي روایت په شان روایت بیان کړې دې.

### باب فی الصلح

د صلح بیان

دا کتاب القضاء شروع دې په دې باب سره مصنف رحمۃ اللہ علیہ دا فرمائیل غواړي چه څنگه د قاضي دا فرض منصبی دې چه هغه د خصمین ترمینځه د اصولو مطابق شرعی فیصله اوکړي هم

(۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۱۳۷۳) (ضعيف)



دغه شان قاضی ته د دې هم حق حاصل دي چه د خصمین ترمینځه رفعاً للنزاع صلح او کړي لکه چه د کعب بن مالک او ابن ابی حدود ترمینځه رسول الله ﷺ صلح کړې وه.

[۳۵۹۴] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمُهْرِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ. م وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ الْوَاحِدِ الدِّمَشْقِيُّ، حَدَّثَنَا مَرْوَانُ يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ، أَوْ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ شَكَ الشَّيْخُ، عَنْ كَثِيرِ بْنِ زَيْدٍ، عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ رَبَاجٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "الصُّلْحُ جَائِزٌ بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ"، زَادَ أَحْمَدُ إِلَّا صُلْحًا أَحَلَّ حَرَامًا، أَوْ حَرَّمَ حَلَالًا وَزَادَ سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ، وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْمُسْلِمُونَ عَلَى شُرُوطِهِمْ.

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه رسول الله او فرمائل د مسلمانانو په مینځ کښې صلح کول مناسب عمل دي د امام احمد په روایت کښې دومره اضافه ده چه هغه صلح درسته نه ده کوم چه حرام حلالوي او حلال حراموي اود سليمان بن داود په روایت کښې دا اضافه ده چه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائل مسلمانان دي پخپلو شرطونو عمل وکړي.

قوله: (الصُّلْحُ جَائِزٌ بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ إِلَّا صُلْحًا أَحَلَّ حَرَامًا أَوْ حَرَّمَ حَلَالًا الخ)

د امام ترمذی رحمته الله علیه د حدیث الباب په باره کښې

تصحیح او په هغې باندې د محدثینو اعتراض

د حدیث مضمون خو ښکاره دي، د دې حدیث په باره کښې امام ترمذی رحمته الله علیه او فرمائل (هذا حدیث حسن صحیح) د امام ترمذی رحمته الله علیه په دې رائي باندې علماء کرامو اشکال کړې دي چه د دې حدیث په سند کښې چه کوم ترمذی دي هغه کثیر بن عبد الله بن عمرو بن عوف المزنی دي چه د هغه په باره کښې داسې ده چه (هو ضعیف جدا وقال النسائي ليس بثقة وقال ابن معين ليس بشي) حافظ ذهبي رحمته الله علیه فرمائي چه امام ترمذی رحمته الله علیه د کثیر بن عبد الله په روایت سره دا حدیث الصلح جائز بین المسلمین روایت کولو نه پس د هغې تصحیح کړې ده (فلهذا لا يعتمد العلماء على تصحيحه) خو حافظ ابن حجر رحمته الله علیه د امام ترمذی رحمته الله علیه د طرف نه اعتذارا دا فرمائي دي (وكانه اعتبر بكثرة طرقه) یعنی امام ترمذی رحمته الله علیه په دې حدیث باندې د صحت حکم صرف د خپل بیان کړې شوی سند په اعتبار سره نه دي لگولي بلکه د هغوی په نظر کښې د دې نور طرق هم دي د چا نه چه دا حدیث روایت کړې شوې دي. (بذل) پس د ابوداؤد په دې سند کښې دا راوی نشته لکه چه ته وینې، په دې حدیث باندې من حیث الفقه نور هم کلام کړې شوې دي، د صلح مختلفو انواعو ته کتلو سره چه د هغې دپاره تفصیل پکار دي نورو شروحو ته رجوع اوکړه.

(۱) تفرده ابوداود، (تحفة الأشراف: ۱۴۸۰۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۶۷۲) (حسن صحیح)

[۳۵۹۵] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ كَعْبٍ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّكَعْبَ بْنَ مَالِكٍ أَخْبَرَهُ، "أَنَّهُ تَقَاضَى ابْنُ أَبِي حَذْرَةَ دَيْنًا كَانَ لَهُ عَلَيْهِ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ، فَأَرْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا، حَتَّى سَمِعَهُمَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِي بَيْتِهِ، فَخَرَجَ إِلَيْهِمَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى كَشَفَ سِجْفَ حُجْرَتِهِ، وَنَادَى كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ، فَقَالَ: يَا كَعْبُ، فَقَالَ: لَبَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَأَشَارَ لَهُ يَدِهِ أَنْ ضَعِ الشَّظْرَمَ مِنْ دَيْنِكَ، قَالَ كَعْبٌ: قَدْ فَعَلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قُمْ فَأَقْضِهِ."

د کعب بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه دابن ابی حذر د په ذمه باندې زما قرض وو دکوم چه په دوري نبوي کښې په جومات کښې دننه مطالبه شوي وه، په دې دوران کښې ددوی اوازونه اوچت شول تردې چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم واوریدل په دې وخت کښې نبی صلی اللہ علیہ وسلم پخپل کور کښې موجود وو ددې شور په اوریدوسره بهر راووتو اودخپلې کمري پرده ئې پورته کړه اوکعب بن مالک ته ئې اواز اوکړو، کعب بن مالک عرض اوکړو حاضریم ای دالله رسوله نبی صلی اللہ علیہ وسلم ورته په لاس اشاره وکړه چه نیم قرض معاف کړه کعب عرض اوکړو ای دالله رسوله نیم قرض می ورته معاف کړو بیانی صلی اللہ علیہ وسلم ابن ابی حذر د ته اوفرمائیل پاڅه اودده قرضه ادا کړه. قوله: «أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ كَعْبٍ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ تَقَاضَى ابْنُ أَبِي حَذْرَةَ دَيْنًا كَانَ لَهُ عَلَيْهِ الْخ» مضمون د حدیث دا دې چه د کعب بن مالک خوی عبدالله د خپل پلار مالک رضی اللہ عنہ نه نقل کوی چه هغوی ماته خپله هغه واقعه بیان کړه چه زما ابن ابی حذر د باندې قرض وو د کوم چه ما د هغه نه غوښتنه اوکړه په مسجد کښ، چه په هغې سره د دواړو اوازونه اوچت شو تردې چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم چه په خپله حجره شریفه کښې وو د هغوی په آواز اوریدو سره دروازې ته تشریف راوړو او په هغې باندې چه کومه پرده پرته وه هغه ئې لرې کړه او د کعب بن مالک نوم اخستلو سره ئې هغوی ته آواز اوکړو هغوی عرض اوکړو «لیک یا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم» رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغوی د گوتې په اشارې سره پوهه کړل چه خپل نیم قرض معاف کړه. هغوی عرض اوکړو جی ما داسې اوکړل. په دې باندې رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم عبدالله بن ابی حذر د ته اوفرمائیل چه پاسه او نیم ورته ادا کړه، چه په هغې باندې صلح اوشوه. والحديث أخرجه البخاري ومسلم والنسائي وابن ماجه، قاله المنذرى

## بَابُ فِي الشَّهَادَاتِ

### دشهادتونو بیان

[۳۵۹۶] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ الْهَمْدَانِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ السَّرْحِ، قَالَا: أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ، أَنَّ أَبَاةَ أَخْبَرَهُ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرِو بْنِ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانٍ أَخْبَرَهُ، أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ

(۱): صحيح البخاري/الصلاة ۷۱ (۴۵۷)، ۸۳ (۴۷۱)، والخصومات ۴ (۲۴۱۸)، ۹ (۲۴۲۴)، والصلح ۱۰ (۲۷۰۶)، ۱۴ (۲۷۱۰)،

صحيح مسلم/المساقاة ۴ (۱۵۵۸)، سنن النسائي/القضاة ۲۱ (۵۴۱۰)، سنن ابن ماجه/الصدقات ۱۸ (۲۴۲۹)، (تحفة الأشراف:

۱۱۳۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳/ ۴۵۴، ۴۶۰، ۳۸۷۶، ۳۹۰)، سنن الدارمي/اليوم ۴۹ (۲۶۲۹) (صحيح)

(۲): صحيح مسلم/الأقضية ۹ (۱۷۱۹)، سنن الترمذي/الشهادات ۱ (۲۲۹۶)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۲۸ (۲۳۶۴)، (تحفة

الأشراف: ۳۷۵۴)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/الأقضية ۲ (۳) (صحيح)



أَبِي عَمْرَةَ الْأَنْصَارِيِّ أَخْبَرَهُ، أَنَّ زَيْدَ بْنَ خَالِدٍ الْجُهَنِيَّ أَخْبَرَهُ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ الشَّهَادَةِ الَّذِي يَأْتِي بِشَهَادَتِهِ أَوْ يُخْبِرُ بِشَهَادَتِهِ قَبْلَ أَنْ يُسْأَلَ؟» شَكََّ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ أَمْتَهُمَا، قَالَ: قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَالَ مَالِكٌ: الَّذِي يُخْبِرُ بِشَهَادَتِهِ وَلَا يَعْلَمُ بِهَا الَّذِي هِيَ لَهُ، قَالَ الْهَمْدَانِيُّ: وَيَرْفَعُهَا إِلَى السُّلْطَانِ، قَالَ ابْنُ السَّرْحِ: أَوْ يَأْتِي بِهَا الْإِمَامُ وَالْإِخْبَارُ فِي حَدِيثِ الْهَمْدَانِيِّ، قَالَ ابْنُ السَّرْحِ: ابْنُ أَبِي عَمْرَةَ، لَمْ يَقُلْ عَبْدُ الرَّحْمَنِ.

د زید بن خالد جهنی نه روایت دی فرمائی چه نبی ﷺ او فرمائیل ایاتاسوته دهرچانه بهتر گواه ونه بنایم؟ کله چه څوک گواهی ورکوي او بیان کوي چه زه ددې معاملې گواه یم مخکښې ددینه چه ده ته او وئیلې شي، د عبد الله بن ابی بکر شک دې چه په دې دواړو کښې کوم یوشهادت مراد دې هغه وائی امام ابوداؤد فرمائیل دی دامام مالک بیان دې چه ددینه هغه گواه مراد دې څوک چه دخپل شهادت اظهار وکړي اوده ته ددې خبرې علم نه وي چه دده داشهادت دچا دپاره فایدمند دې، همداني وئیل دی چه دې دي بادشاه ته بوتلې شي دابن سرح قول دې چه گواه دي امام ته بوتلې شي، دهمداني په روایت کښې لفظ داخبار مذکور دې او ابن سرح پخپل روایت کښې عبدالرحمن نه دې ذکر کړې بلکه ابن عمرو ئې ذکر کړې دې.

قوله: «أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- قَالَ «أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ الشَّهَادَةِ الَّذِي يَأْتِي بِشَهَادَتِهِ أَوْ يُخْبِرُ بِشَهَادَتِهِ قَبْلَ أَنْ يُسْأَلَ؟» يعني رسول الله ﷺ او فرمائیل چه په گواهانو کښې بهترین گواه هغه دې چه شهادت ورکړی مخکښې د دې نه چه د هغه نه د شهادت درخواست اوکړې شي دا خو بنسکاره ده چه د شهادت نه صحیح شهادت مراد دې، او چونکه د گواهانو گواهی د مدعی په واجب حق کښې د ثبوت ذریعه ده په دې وجه رسول الله ﷺ د هغه مدح او ترغیب فرمائی.

﴿ قَالَ أَبُو دَاوُدَ قَالَ مَالِكٌ الَّذِي يُخْبِرُ بِشَهَادَتِهِ وَلَا يَعْلَمُ بِهَا الَّذِي هِيَ لَهُ ﴾

### دفع التعارض بين الحديثين :

امام مالک ﷺ د چا قول چه مصنف ﷺ نقل کوی د هغوی غرض په دې کلام سره دفع التعارض بين الحديثين دې ځکه چه په يو بل حديث کښې په مقام د مذمت کښې فرمائیلې شوې دي ﴿ الذين يشهدون ولا يستشهدون ﴾ چه هغوی داسې دي چه بغير د طلب نه شهادت ورکوي، امام مالک ﷺ د دې توجيه دا فرمائی چه د شهادت قبل الاستشهاد مدح په هغه مقام باندې ده چرته چه مدعی ته دا معلومه نه وي چه زما څوک شاهد شته يا نه، لهذا په داسې موقع باندې چه کوم سړی ته د مدعی د صدق دعوی علم وي هغه له پکار دی چه هغه په اودريدو سره گواهی ورکړی د هغه حق لره د ضائع کولو نه د بچ کولو دپاره. او په کوم حديث کښې چه د شهادت قبل الاستشهاد مذمت راغلې دې د هغې نه مراد هم هغه صورت دې چرته چه مدعی ته د خپل شهود علم وي لهذا هلته څه ضرورت دې بغير د استشهاد نه شهادت ورکولو ته، دا توجيه خو د امام مالک ﷺ نه منقول ده. او د دې تعارض نور توجيهات هم کړې شوي دي مثلاً دا چه چرته مذمت راغلې دې د هغې نه مراد شهادة الزور دې او چرته چه مدح راغلې ده د هغې نه مراد رشتيا شهادت دې، امام

ترمذی رحمۃ اللہ علیہ په جامع ترمذی کښې هم په دې تعارض باندې کلام کړې دې او خپله هغوی د دې توجیه دا بیان کړې ده چه په مقام د مدح کښې «الذی یاتی بشهادته قبل ان یسألها» د دې نه مراد شهادت قبل الطلب نه دې بلکه د دې نه مراد استعجال فی اداء الشهادة دې یعنی هغه گواه ډیر ښه گواه دې چه کله د هغه نه شهادت طلب کړې شی نو فوراً بغير د تاخیر نه د دې کار دپاره اودریږي. دې استعجال او عدم تاخیر لره مبالغه په قبل الطلب سره تعبیر کړې شوې دې. والحديث أخرجه مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى

### باب فِيمَنْ يُعِينُ عَلَى خُصُومَةٍ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَعْلَمَ أَمْرَهَا

خوک چه په فریقینو کښې دچا سره تعاون وکړی او دا معلومه نه وی چه کوم فریق په حقه دې؟

[۳۵۹۷] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا عُمَارَةُ بْنُ غَزِيَّةَ، عَنِ يَحْيَى بْنِ رَاشِدٍ، قَالَ: جَلَسْنَا لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، فَخَرَجَ إِلَيْنَا فَجَلَسَ، فَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "مَنْ حَالَتْ شَفَاعَتُهُ دُونَ حَدٍّ مِنْ حَدِّ اللَّهِ فَقَدْ ضَادَّ اللَّهَ، وَمَنْ خَاصَمَ فِي بَاطِلٍ وَهُوَ يَعْلَمُ لَمْ يَزَلْ فِي سَخَطِ اللَّهِ حَتَّى يَنْزِعَ عَنْهُ، وَمَنْ قَالَ فِي مُؤْمِنٍ مَا لَيْسَ فِيهِ أَسْكَنَهُ اللَّهُ رَذْعَةَ الْحَبَالِ، حَتَّى يَخْرُجَ مِمَّا قَالَ".

دیحی بن راشد نه روایت دې فرمائی چه مونږ د عبد الله بن عمر رضی اللہ عنہما په انتظار کښې ناست وو هغه راغې او د کیناستو نه پس ئې وویل: مادنې عليه السلام نه اوريدلی دی چه فرمائیل ئې چاچه د الله تعالی په په حدودو کښې دیوحد د بندولو دپاره سفارش وکړونودغه کس د الله تعالی سره ضد وکړو، او چاچه په ناحقه بصدا جگړه وکړله نو الله تعالی به ددغه کس نه دهمیشه دپاره خفه وي ترخوچه ده دا جگړه پریښودلې نه وي او خوک چه دیو ایمان دار متعلق داسې خبره وکړي کومه چه په هغه کښې نه وي نودې به په خیرو اوختو اوچترو کښې وي ترخوچه ده توبه نه وي کړي.

قوله: «مَنْ حَالَتْ شَفَاعَتُهُ دُونَ حَدٍّ مِنْ حَدِّ اللَّهِ فَقَدْ ضَادَّ اللَّهَ»

یعنی کوم سړې چه په بل سړی باندې د ثبوت حد نه پس د تنفیذ حد نه مخکښې د هغه د سفارش دپاره اودریږي اود عدم تنفیذ حد کوشش اوکړی نو هغه سړی د الله تعالی د حکم سخت مخالفت اوکړو، قاضی صاحب ته د مسئلې او د معاملې د رسیدو نه مخکښې په دې خبره کښې کوشش پکار دې چه په څه طریقه باندې حد ثابت نه شی هغه بل امر دې. په حدیث کښې په دې باندې وعید نشته بلکه دا خو محمود او غوره دې خو قاضی ته د رسیدو نه پس بیا سفارش کول لکه چه مونږ پورته لیکلي دی دا ناجائز او مذموم دې، د حدود شرعیه نفاذ ډیر اهم او موجب د خیر او برکت دې... کماورد فی الکتاب والسنة.

قوله: «وَمَنْ خَاصَمَ فِي بَاطِلٍ وَهُوَ يَعْلَمُ لَمْ يَزَلْ فِي سَخَطِ اللَّهِ حَتَّى يَنْزِعَ» د حدیث دا دویم جزء د ترجمه الباب سره متعلق دې، د دوه کسانو په څه معامله کښې اختلاف دې چه په هغې کښې یو په باطل باندې دې او دویم په حق باندې نو په داسې صورت کښې دې یو هم د هغه

(۱) : تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۵۶۲)، وقد أخرجه: سلسلة الأحاديث الصحيحة، للالباني (۴۳۷)، مسند احمد (۷۰/۲، ۷۰/۲، ۷۰/۲) (صحیح)



خصم تائید او امداد نه کوی چه په هغې سره د هغه په باطل باندې کیدل معلوم دی د دې په باره کښې دا وعید دې چه داسې سرې به همیشه د الله پاک په غصه او ناراضگۍ کښې اخته وی ترڅو چه د دې نه توبه او رجوع اونکړی.

﴿ وَمَنْ قَالَ فِي مُؤْمِنٍ مَا لَيْسَ فِيهِ أَسْكَنَهُ اللَّهُ رِزْقَهُ الْخَبَالِ حَتَّى يَخْرُجَ مِنْهَا قَالَ ﴾ دا د

حدیث دریم جزء دې چه کوم سرې په یو مومن کښې داسې صفت بیان کړی یعنی د یو داسې عیب په هغه باندې الزام اولگوی کوم چه په هغه کښې نه دې، او هغه د هغې صفت نه بری دې نو د داسې سرې په باره کښې رسول الله ﷺ او فرمائیل چه الله تعالی به هغه په آخرت کښې د جهنم په هغه طبقه کښې ساتی چرته چه به د جهنمیانو د زخمونو پیپ وی، ﴿ رِزْقَهُ الْخَبَالِ اِی التراب المخلوط بعصارة اهل النار ﴾ د جهنمیانو د وینې د پیپ گند... رسول الله ﷺ فرمائی د هغه استوگنه به په هغې کښې تر هغې پورې وی ترڅو چه هغه د خپل قول نه بهر رانشی. خو ظاهره خبره ده چه کوم سرې خبره او کړه هغه به د هغې نه څنگه واپس شی په دنیا کښې خو رجوع کولې شی د توبې او کفارې په ذریعه، ډیر سخت وعید دې الله پاک دې ترې زموږ حفاظت او فرمائی.

[۳۵۹۸] (۱) حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْحُسَيْنِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ زَيْدٍ الْعُمَرِيُّ، حَدَّثَنِي الْمُثَنَّى بْنُ زَيْدٍ، عَنْ مَطَرٍ الْوَرَّاقِ، عَنْ ثَائِفٍ، عَنِ ابْنِ عَمْرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَعْنَاهُ، قَالَ: وَمَنْ أَعَانَ عَلَى خُصُومَةٍ يَظْلِمُ، فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ.

نافع د عبد الله بن عمر رضی الله عنهما نه او هغه د نبی ﷺ نه د تیرشوي روایت په شان روایت بیان کړې دې مگر د دې اضافي سره چه نبی ﷺ او فرمائیل: څوک چه په یوه معامله کښې د ظالم امداد وکړي نو دې د الله تعالی په غضب باندې اخته شو.

### بَابُ فِي شَهَادَةِ الزُّورِ

په دروغه د شهادت کولو بیان

[۳۵۹۹] (۲) حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ مُوسَى الْبَلْخِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، حَدَّثَنِي سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنٍ الْعَصْفَرِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ النُّعْمَانِ الْأَسَدِيِّ، عَنْ خُرَيْمِ بْنِ قَاتِكٍ، قَالَ: "صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةَ الصُّبْرِ، فَلَمَّا انْصَرَفَ قَامَ قَائِمًا، فَقَالَ: عِدَلْتُ شَهَادَةَ الزُّورِ، بِالْإِشْرَافِ بِاللهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ قَرَأَ: فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ. حُنْفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ سُورَةُ الْحَجِّ آيَةٌ ٢٥-٢٠."

د خريم بن قاتك رضی الله عنه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ د سحر مونځ وکړ او د مونځ د فارغیدو نه پس او دریدو او درې پیري نه او فرمائیل په دروغه گواهی (شهادت کول) د الله تعالی سره د شرک کولو برابر دي درې پیري نه او فرمائیل اوبیاني دا ایت مبارک تلاوت کړو: ﴿ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ \* حُنْفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ﴾.

(۱): سنن ابن ماجه/الأحكام ۶ (۲۳۲۰)، (تحفة الأشراف: ۸۴۴۵) (حسن).

(۲): سنن ابن ماجه/الأحكام ۳۲ (۲۳۷۲)، (تحفة الأشراف: ۳۵۲۵)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/الشهادات ۳ (۲۲۹۹)،

مسند احمد (۲۳۱/۴) (ضعيف)

قوله: « فَقَالَ » غَدَلْتُ شَهَادَةَ الزُّورِ بِالْإِشْرَافِ بِاللَّهِ ». ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ قَرَأَ (فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ حُنْفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ)

### شرح الحديث :

رسول الله ﷺ فرمائی چه دروغژنه گواهی د شرک برابر ده، دا خبره رسول الله ﷺ درې کرته او فرمائیله او د دې په تائید کښې رسول الله ﷺ دا آیت کریمه تلاوت او فرمائیله، تائید یا خو په دې طریقه چه په دې آیت کریمه کښې « اجتناب من الزور » او « اجتناب من عبادة الاوثان » دواړه یو ځایې ذکر شوې دی اگر چه اقتران فی الذکر اقتران فی الحکم لره مستلزم نه دې خو کم از کم مناسبت او قربت لره خو مستلزم دې، او یا بیا استدلال د آیت نه د روستو حصې نه دې « حنفاء لله غیر مشرکین به » د حضرت ګڼګوهری ﷺ په تقریر کښې دی چه د قول زور ډیر مراتب دی او په دې کښې څه شک دې چه اشراک بالله هم د دې یو قسم دې ځکه چه په دې کښې قول زور کیدل صادق راځی چه د هغې تائید په « حنفاء لله

والحدیث اخرجه الترمذی وابن ماجه، قاله المنذری

### بَابُ مَنْ تَرَدَّدَتْ شَهَادَتُهُ

باب مردود الشهادات څوک دې؟

[۳۶۰] (۱) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غَمْرٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَاشِدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ مُوسَى، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَدَّ شَهَادَةَ الْخَائِنِ، وَالْخَائِنَةِ، وَذِي الْغَمْرِ عَلَى أَخِيهِ، وَرَدَّ شَهَادَةَ الْقَانِعِ لِأَهْلِ الْبَيْتِ، وَأَجَاذَهَا لِغَيْرِهِمْ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: الْغَمْرُ الْحِنَةُ، وَالشُّحْنَاءُ، وَالْقَانِعُ الْأَجِيرُ التَّائِبُ مِثْلُ الْأَجِيرِ الْخَاصِّ.

عمرو بن شعيب دخپل پلار نه او هغه دده دنيکه نه روايت کوي فرمائی چه نبی ﷺ د خیانت کونکي سرې او د خیانت کونکي ښځې او د مسلمان سره د کینه کونکي شهادت رد کړې دې او همدارنگې په کورو لاباندې ئې دهغه د نوکر گواهی رد کړې ده البته دنورو خلکو په حق کښې ددغه نوکر گواهی قبوله ده. امام ابوداود فرمائی د حقد او شحنا مفهوم يودې، اوقانع دپخوانی نوکر په معنی راځی ددې حکم هم دخاص مزدور په شان دې.

« عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - رَدَّ شَهَادَةَ الْخَائِنِ وَالْخَائِنَةِ وَذِي الْغَمْرِ عَلَى أَخِيهِ »

### شرح الحديث من حيث الفقه :

د خیانت نه مراد عام دې که هغه خیانت فی اموال الناس وی یا فی احکام الله وفرائضه، په دواړو صورتونو کښې سرې فاسق وی، او د غمړ معنی ده حقد او دشمنی، یعنی دشمن او کینه ګر شهادت د خپل رور خلاف، « یعنی شهادة العدو على العدو » رسول الله ﷺ دا دواړه « شهادة الخائن و شهادة الخائنة » رد او فرمائیله. د جمهور مسلک دا دې « لا تجوز شهادة العدو على العدو » د احنافو مذهب هم دا دې خو بعضو شارحینو دا لیکلي دی چه دا

(۱): تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۸۷۱۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/ ۱۸۱، ۲۰۳، ۲۰۴، ۲۲۵) (حسن)



حدیث د احنافو خلاف دې ځکه چه هغوی شهادة العدو علی العدو ته جایز وائی، خو دا نقل صحیح نه دې، زموږ په نزد شهادة العدو علی العدو په هغه صورت کښې معتبر دې چه کله هغه [۳۵۹۹] عداوت، عداوت دینیه وی او که عداوت دنیویه دې نو بیا زموږ په نزد هم ناجائز دې. «ثم اختلفوا (ای الحنفية فقیل مطلقا وقیل بل اذا كانت موجبة للفسق).....»  
 ﴿وَرَدَّ شَهَادَةُ الْقَانِعِ لِأَهْلِ الْبَيْتِ وَأَجَازَهَا لِبَغِيرِهِمْ﴾ د قانع اهل البيت نه مراد خادم دې کوم چه د چا په کور باندې صرف په دودئ باندې صبر کړې وی. ښکاره خبره ده چه د داسې سړی شهادت د هغه کور د خلقو په حق کښې شکي دې «واجازها لغيرهم» یعنی د دې قانع شهادت رسول الله ﷺ مطلقا رد نه دې فرمائیلي بلکه خاص د هغه کور والا د خلقو دپاره د هغوی نه علاوه ئې د نورو په حق کښې معتبر منلې دې. ځکه چه هغه د تهمت مقام نه دې. والحدیث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى.

دا حدیث د عائشي رضی الله عنها نه په ترمذی شریف کښې هم منقول دې. او امام ترمذی رحمه الله په دې باندې من حیث الفقه هم کلام فرمائیلي دې لهذا هغه دې هم اوکتلي شی بله دا چه په دې مقام کښې دې الکوکب الدری هم اوکتلي شی، مفید به ثابت شی.

[۳۶۰۱] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَلْفٍ بْنُ طَارِقِ الرَّازِيِّ، حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ عُبَيْدٍ الْخَزَاعِيُّ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ مُوسَى، بِإِسْنَادِهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تَجُوزُ شَهَادَةُ خَائِنٍ وَلَا خَائِنَةٍ، وَلَا زَانٍ، وَلَا زَانِيَةٍ، وَلَا ذِي غَمْرٍ عَلَى أَخِيهِ".

سليمان بن موسى پخپل سند سره دښی علیه السلام نه روایت کړې دې فرمائی چه نبی علیه السلام فرمائیلي دی دخیانت کونکي سړي او ښځې شهادت قبول نه دې اوڅوک چه دخپل مسلمان ورور سره بغض ساتي دهغه شهادت هم قبول نه دې (چه د دنیاوی عرض دپاره ورسره دشمنی کوی)

## باب شَهَادَةُ الْبَدَوِيِّ عَلَى أَهْلِ الْأَمْصَارِ

په ښار والا باندې د باندې د گواهي کولو بیان

[۳۶۰۲] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ الْأَمَدَانِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَثَافِعُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ ابْنِ الْمُبَارَكِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ غَمْرٍ وَبْنِ عَطَاءٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: "لَا تَجُوزُ شَهَادَةُ بَدَوِيٍّ عَلَى صَاحِبِ قَرْيَةٍ".

د ابوهريره رضی الله عنه روایت دې فرمائی چه دښی علیه السلام نه مې اوریدلی دی چه فرمائی ئې د ښار په اوسیدونکو باندې د باندې (کلی) د اوسیدونکی گواهي جائز نه ده ځکه چه اکثر باندچیان کم عقل وی.

﴿لَا تَجُوزُ شَهَادَةُ بَدَوِيٍّ عَلَى صَاحِبِ قَرْيَةٍ﴾ یعنی د ځنگلي او د کلی وال شهادت د ښهر د اوسیدونکی په خلاف کښې جائز او معتبر نه دې.

(۱): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۸۷۱۱) (حسن)

(۲): سنن ابن ماجه/الأحكام ۳۰ (۲۳۶۷)، (تحفة الأشراف: ۱۴۲۳۱) (صحیح)

شارحینو لیکلې دی چه د امام مالک رحمۃ اللہ علیہ په دې حدیث باندې عمل دې، او جمهور وائی چه دا حدیث د قاعده کلیه په طور نه دې بلکه داسې په دې وجه فرمائیږي شوي دي چه عموماً د باندو خلق جاهل او بې علم وی د شهادت صلاحیت او اهلیت په هغوی کښې نه وی، خو که په چا کښې د دې اهلیت وی نو بیا به د هغه شهادت هم معتبر وی.

والحدیث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذری

## بَابُ الشَّهَادَةِ فِي الرِّضَاعِ

په رضاعت (تې ورکولو) باندې د شهادت کولو بیان

مسئله الباب کښې مذاهب ائمه :

دا مسئله مختلف فیه ده، د امام احمد رحمۃ اللہ علیہ په نزد د ثبوت رضاعت دپاره د یوې زنانه شهادت کافی دې، او د مالک په نزد د دوه زنانو شهادت، او د احنافو په نزد د عام قاعدې مطابق شهادت د عدلین او عدل او عدلتین یعنی دوه عادل سړي یا یو عادل سړي او دوه عادلې زنانې، او د امام شافعي رحمۃ اللہ علیہ په نزد هم دغه شان دې څنگه چه د احنافو په نزد دې، خو هغوی فرمائی چه صرف زنانه وی نو که هغه څلور وی نو د هغوی شهادت به معتبر وی، د احنافو په نزد داسې نه ده.

[۳۶۰۳] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، حَدَّثَنِي عَقْبَةُ بْنُ الْحَارِثِ، وَحَدَّثَنِي صَاحِبُ لِي عَنْهُ، وَأَنَا لِحَدِيثِ صَاحِبِي أَخْفَظُ، قَالَ: "تَزَوَّجْتُ أُمَّ يَحْيَى بِنْتَ أَبِي إِهَابٍ، فَدَخَلْتُ عَلَيْهَا امْرَأَةً سَوْدَاءَ، فَرَعَمْتُ أَنَّهَا أَرْضَعَتْنَا جَمِيعًا، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ فَأَعْرَضَ عَنِّي، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّمَا لَكَ ذِبَّةٌ، قَالَ: وَمَا يُدْرِيكَ؟ وَقَدْ قَالَتْ: مَا قَالَتْ دَعَا عَنْكَ."

د ابو مليکه نه روایت دې فرمائی چه ماته عقبه بن حارث حدیث بیان کړې دې او دهغه نه زما یو دوست هم دا اوریدلې دې او ماته دخپل دوست روایت ډیرښه یاد دې: عقبه وئیلی دی ما دام يحيى بنت اهاب سره نکاح وکړه او مونږ ته دتور رنگ والا یوه ښځه راغله هغې او وئیل ماتاسو دواړو ته تې درکړې دې ماچه دا واوریدل نو دښې عليه السلام په خدمت کښې حاضر شوم او عرض مې وکړو خونښې عليه السلام راته توجه ونکړله ماعرض اوکړو اي دالله رسوله هغه ښځه دروغزنه ده نبی عليه السلام او فرمائیل تاته څنگه معلومه شوه هغه خوهمداسی وائی څه چه یسې وئیلی دي، اوته خپله ښځه پرېږده.

﴿ حَدَّثَنِي عَقْبَةُ بْنُ الْحَارِثِ وَحَدَّثَنِي صَاحِبُ لِي عَنْهُ - وَأَنَا لِحَدِيثِ صَاحِبِي أَخْفَظُ قَالَ تَزَوَّجْتُ أُمَّ يَحْيَى بِنْتَ أَبِي إِهَابٍ فَدَخَلْتُ عَلَيْهَا امْرَأَةً سَوْدَاءَ فَرَعَمْتُ أَنَّهَا أَرْضَعَتْنَا جَمِيعًا ﴾

عقبه بن الحارث فرمائی چه ما د یوې زنانه ام يحيى بنت ابی اهاب سره واده اوکړو. د واده نه یو څو ورځې پس یو توره زنانه مونږ کړه راغله او وې وئیل چه ماتاسو ته په ماشومتوب کښې پي درکړې دی یعنی بیا تاسو واده څنگه اوکړو؟ عقبه فرمائی چه زه

۱: خ العلم ۲۶ (۸۸)، البيوع ۳ (۲۰۵۲)، الشهادات ۴ (۲۶۴۰)، ۱۳ (۲۶۵۹)، ۱۴ (۲۶۶۰)، النکاح ۲۳ (۵۱۰۴)، سنن الترمذي للرضاع ۴ (۱۱۵۱)، سنن النسائي للنکاح ۵۷ (۳۳۳۲)، (تحفة الأشراف: ۹۹۰۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۷/۴)، سنن الدارمي للنکاح ۵۱ (۲۳۰۱) (صحیح)



په دې خبره اوریدو باندې د رسول الله ﷺ خدمت کښې حاضر شوم او هغوی ته مې مسئله بیان کړه «هغوی مسئله په دې انداز کښې بیان کړې وه چه گویا دا زنانه دروغزنه ده» رسول الله ﷺ زما په خبره اوریدو باندې اعراض او فرمائیلو، هغوی فرمائی چه ما رسول الله ﷺ ته صفا عرض او کړو چه هغه دروغزنه ده، رسول الله ﷺ او فرمائیل تا ته څه خبر دې چه هغه دروغزنه ده «دعها عنک» پریرده دغه زنانه.

امام احمد بن حنبل رحمه الله د دې حدیث په ظاهر باندې عمل کولو سره د مرضعه واحده شهادت کافی گنرلې دې. جمهور وائی چه دا حدیث په ورع او تقوی باندې محمول دې، وفي الرد المختار: الرضاع حجة المال وهي شهادة عدلين او عدل وعدلتين، ولا تقع الفرقة الا بتفريق القاضي، الى آخر ما في حاشية الكوكب صفحه ۳۴۲... یعنی د احنافو په نزد د رضاعت په مسئله کښې هم هغه دلیل معتبر دې کوم چه په عام حقوق مالیه کښې معتبر وی..... او په حقوق مالیه کښې هم د داسې «شهادة عدلين او عدل او عدلتين» په خلاف د حدود چه هلته د څلورو کسانو گواهی پکار ده، او په خلاف د خالص امور دینیه چه هلته د عدل واحد شهادت هم معتبر دې لکه په روية هلال د رمضان کښ، لکن اذا كان بالسما علة. والحدیث اخرجه البخاری والترمذی والنسائی، قاله المنذری.

[۳۶۰۴] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي شُعَيْبٍ الْحَرَّانِيُّ، حَدَّثَنَا الْحَارِثُ بْنُ عَمِيْرٍ الْبَصْرِيُّ، وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَلِيٍّ كِلَاهُمَا عَنْ أَبِي يُوسُفَ، عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ، عَنْ عَقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ، وَقَدْ سَمِعْتُهُ مِنْ عَقْبَةَ، وَلَكِنِّي لِحَدِيثِ عُبَيْدٍ أَحْفَظُ فَذَكَرْتُ مَعْنَاهُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: نَظَرْتُ حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ إِلَى الْحَارِثِ بْنِ عَمِيْرٍ، فَقَالَ: هَذَا مِنْ ثِقَاتٍ أَصْحَابِ أَبِي يُوسُفَ.

ابن ابی ملیکه د عقبه بن حارث نه د تیرشوي روایت په شان روایت بیان کړې دې او وئیلی یې دې چه دا روایت ماد عقبه نه اوریدلی دې لیکن دعبید روایت راته ښه یاد دې او باقی روایت دې د تیرشوي روایت په شان ذکر کړو. امام ابوداؤد فرمائی چه حماد بن زید حارث عمیره وکتل او وئې وئیل چه دې دایوب په ثقه شاگردانو کښې دې.

### بَابُ شَهَادَةِ أَهْلِ الدِّمَةِ وَفِي الْوَصِيَّةِ فِي السَّفَرِ

د سفر په دوران کښې د وصیت متعلق د کافر، ذمی گواهی کول

د اهل ذمه شهادت په مسلم باندې د احمد رحمه الله په نزد په دې خالص صورت کښې کوم چه په ترجمه الباب کښې ذکر شوي دې یعنی په وصیت فی السفر کښې معتبر دې، د ابراهیم النخعی او اوزاعی رائي هم دا ده، مصنف رحمه الله حنبلی دې لکه مخکښې ډیر کرته تیر شو هم په دې وجه ئې د حنابلې د مسلک مطابق ترجمه قائم کړې ده.

[۳۶۰۵] (۱) حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ أَبِي يُوْسُفَ، حَدَّثَنَا هُثَيْمٌ، أَخْبَرَنَا زَكْرِيَّا، عَنْ الشَّعْبِيِّ، "أَنَّ رَجُلًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ خَصَرَتْهُ الْوَقَاةُ بِدِفْءِ هَذِهِ، وَلَمْ يَجِدْ أَحَدًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ يَشْهَدُ عَلَى وَصِيَّتِهِ، فَأَشْهَدَ رَجُلَيْنِ مِنَ أَهْلِ الْكِتَابِ، فَقَدِمَا الْكُوفَةَ فَأَتَيَا أَبَا مُوسَى الْأَشْعَرِيَّ، فَأَخْبَرَاهُ، وَقَدِمَا بِتَرْكِه، وَوَصِيَّتِهِ، فَقَالَ الْأَشْعَرِيُّ: هَذَا أَمْرٌ لَمْ يَكُنْ بَعْدَ الَّذِي

(۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۹۹۰۵) (صحيح)  
(۲) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۰۱۳) (صحيح الإسناد)

كَانَ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَخْلَفَهُمَا بَعْدَ الْعَصْرِ بِاللَّهِ مَا خَانَا وَلَا كَذَبًا وَلَا بَدَلًا وَلَا كُفْرًا وَلَا غَيْرًا، وَإِنَّهُمَا لَوَصِيَّةُ الرَّجُلِ وَتَرْكُهُ فَاْمَضَى شَهَادَتَهُمَا».

دشعبی نه روایت دې فرمائی چه په مسلمانانو کښې د یو کس د وفات وخت راغې او هیڅ یو مسلمان ورته ملاونه شو چه پخپل وصیت ئې گواه کړي نو د اهل کتابونه ئې دوه کسان گواهان کړل بیا هغوی دواړه کوفي ته راغلل او هغوی ابو موسی اشعری ته بیان وکړو او دده ترکه ئې هم راوړي وه او وصیت ئې هم بیان کړو، ابو موسی اشعری او فرمائل دا خو یوه داسې خبره ده کومه چه یو ځل د نبی ﷺ په دور کښې هم یو ځل پښه شوي وه او بیا د دینه پس نه ده پښه شوې د دینه پس ابو موسی اشعریه دغه دوه کسانوته د مازیگر نه پس قسم ورکړو داسې چه په الله قسم مون خیانت نه دې کړې اونه مو دروغ او وئیل اونه مو خبره بدل کړی ده اونه مو کومه خبره پته ساتلي ده او یقینا داددغه سړي وصیت وو اوداددغه ترکه ده بیا ابو موسی اشعریه ددغه کسانو په شهادت باندې حکم ورکړو.

قوله: ﴿فَقَالَ الْأَشْعَرِيُّ هَذَا أَمْرٌ لَمْ يَكُنْ بَعْدَ الَّذِي كَانَ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ﴾ په دې حدیث کښې چه کومه واقعه ذکر شوې ده هغه خو دا ده کومه چه د ابو موسی اشعری رضی الله عنه په زمانه کښې پښه شوې وه او د رسول الله ﷺ په زمانه کښې د راپښیدونکې کومې واقعې چه هغوی حواله ورکړې ده هغه د باب په دویم حدیث کښې ذکر کړې شوې.

[۳۶۰۶] حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي الْقَاسِمِ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ سَعِيدٍ بْنِ جَبْرِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "خَرَجَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي سَهْمٍ، مَعَ تَمِيمِ الدَّارِيِّ، وَعَدِي بْنِ بَدَاءٍ، فَمَاتَ السَّهْمِيُّ بِأَرْضٍ لَيْسَ فِيهَا مُسْلِمٌ، فَلَمَّا قَدِمَا بِتَرْكِتِهِ فَقَدُوا جَامَ فِضَّةٍ مُخَوَّصًا بِالذَّهَبِ، فَأَخْلَفَهُمَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ وَجَدَ الْجَامُ بِمَكَّةَ، فَقَالُوا: اشْتَرَيْنَاهُ مِنْ تَمِيمٍ وَعَدِيٍّ، فَقَامَ رَجُلَانِ مِنَ أَوْلِيَاءِ السَّهْمِيِّ فُخْلَفَا لَشَهَادَتِنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا، وَإِنَّ الْجَامَ لِمَصَاحِبِهِمْ قَالَ: فَزَلْتُ فِيهِمْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةَ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدُكُمْ الْمَوْتُ سَوْرَةُ الْمَائِدَةِ آيَةُ ١٠٦".

د عبد الله بن عباس رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه یو مسلمان کس د قبیلې بنی سهم والا د تمیم داری او عدی بن بداء سره اورتو او بیا ددغه کس په داسې ملک کښې انتقال وشو چه هلته هیڅ یو مسلمان موجود نه وو کله چه دغه دوه کسانو دده ترکه راوړله نو په دې کښې د سپینوزرو یو گلاس وړک ووپه کوم باندې چه د سرو زرو کار شوې وو، نبی ﷺ دوی دواړوته قسم ورکړو او بیا هغه گلاس په مکه کښې پیدا شو دچا سره چه پیدا شو هغوی او وئیل چه دامونږه د تمیم او عدی نه اخستلي دي د دینه پس ددغه کس د وارثانوته دوه کسان پاخیدل او قسم ئې وکړو چه زمونږه گواهی ددوی د گواهی نه ریښتونې ده او گلاس زمونږ د ملگري دې نو په دې وخت کښې د ایست کریمه: «یا ایها الذین آمنوا شهادة بینکم إذا حضر أحدکم الموت» نازل شو.

قوله: ﴿عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ خَرَجَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي سَهْمٍ مَعَ تَمِيمِ الدَّارِيِّ وَعَدِيٍّ بْنِ بَدَاءٍ فَمَاتَ السَّهْمِيُّ بِأَرْضٍ لَيْسَ فِيهَا مُسْلِمٌ فَلَمَّا قَدِمَا بِتَرْكِتِهِ فَقَدُوا جَامَ فِضَّةٍ مُخَوَّصًا بِالذَّهَبِ﴾



## د عدی بن بداء او تمیم داری قصه :

په دې حدیث کښې چه کومه واقعه ذکر کړې شوې ده هغه د ترجمه الباب موافق ده او دا هم هغه واقعه ده د کومې حواله چه په پورته روایت کښې تیره شوې ده، او هم دا واقعه د سورة [۳۶۰۶] سبب دې. واقعه دا ده چه د قبيله بنو سهم یو مسلمان سړی چه د هغه نوم بدیل وو د تجارت دپاره د خپل کور نه روان شو په دې سفر کښې د هغه دوه ملگری وو د اهل کتابو نه یعنی نصرانی تمیم داری او عدی بن بداء، نو په لاره کښې دا قصه پیښه شوه چه هغه رجل سهمی مرگ ته نژدې شو نو هغه دواړو لره خپل وصی جوړ کړو او بیا ئې خپل ټول سامان او مال تجارت هغه دواړو ته حواله کړو خپل کور ته د رسولو دپاره، دې خلقو مکه مکرمه ته رسیدو سره د هغه سهمی هغه سامان د هغه د کور خلقو ته اورسولو، په دې سامان کښې د چاندئ یو پیاله وه چه په هغې کښې د سرو زرو کانړی لگیدلې وو او دا د هغه د سامان قیمتی جزء وو د هغه هغوی خیانت اوکړو او سامان سره ئې ورنکړو. چه کله د سهمی اولیاء دا پیاله د یو دکاندار سره اولیده. دکاندار ورته د تپوس کولو نه پس اوئیل چه ما خو دا پیاله د تمیم داری او عدی بن بداء نه اخستلې ده، دوباره دا مقدمه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې پیش شوه نو هغوی دواړو دا چال اوچلولو چه دا خو مونږ د دې مړ کیدونکی رجم سهمی نه په بیع اخستلې وو، اولیاء سهمی د دې نه انکار اوکړو، دې کرت معامله برعکس شوه، په شروع کښې د سهمی ورته مدعی وو او دا دواړه نصرانی مدعیاً علیه شو، په دې وجه دې وخت کښې د دواړو نه قسم واخستلې شو اوس د دې نه د دوباره په قضیه کښې دا دواړه نصرانی مدعی شو. یعنی مدعی شراء او اولیاء سهمی د هغې منکر، د مدعین سره هیڅوک گواه وو نه لهذا اولیاء سهمی کوم چه منکر وو د هغوی په قسم باندې د هغې موافق فیصله اوکړې شوه، د دې واقعه دا پوره مضمون په حدیث الباب کښې نه دې ذکر شوې. د مختلفو روایتونو د جمع کولو نه حاصلیږي. والله تعالی اعلم بالصواب، فهذا شرح هذا الباب وحديثه، والحديث اخرجه الترمذی، واخرجه البخاری تعلیقا، قاله المنذری

## باب إِذَا عَلِمَ الْحَاكِمُ صِدْقَ الشَّاهِدِ

## الْوَاحِدِ يَجُوزُ لَهُ أَنْ يَحْكُمَ بِهِ

کله چه قاضی ته د یو گواه صداقت معلوم شی نو فیصله پرې کولې شی

## قضاء القاضي بعلمه کښې مذاهب ائمه :

په دې ترجمه الباب کښې چه کومه مسئله ذکر شوې ده هغه ده د قضاء القاضي بعلمه مسئله. د ترجمه الباب مضمون دا دې چه که په یوه فیصله کښې مدعی صرف یو گواه پیش کړې شواو دویم گواه د هغه سره نه وو خو حاکم او قاضی ته ذاتی طور د دې شاهد د شهادت صدق معلوم وی، خو د شهادت نصاب پوره نه وی نو په داسې صورت کښې قاضی د مدعی په حق کښې فیصله کولې شی یا نه، یعنی علم د قاضی قائم مقام د یو گواه کیدې شی یا نه؟ نو د دې په باره کښې دا ده چه په حدودو کښې خو قضاء القاضي بعلمه بالاجماع جائز نه ده، او په غیر حدود کښې د امام شافعی او صاحبینو په نزد مطلقا ناجائز

ده. او د امام احمد او مالک په نزد مطلقا جائز ده، او د امام مالک رحمته الله علیه په نزد تفصیل دې هغه دا چه د قاضی علم که د قاضی د جوړیدو نه پس قاضی ته حاصل شوې دې نو د دې علم اعتبار خو به وی او په هغې سره به فیصله کول جائز وی او که هغه علم د قاضی قبل القضاء دې یعنی د قاضی جوړیدو نه مخکښې نو هغه معتبر نه دې.

[۳۶۰۷] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ قَارِسٍ، أَنَّ الْحَكَمَ بْنَ نَافِعٍ حَدَّثَهُمْ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ خُزَيْمَةَ، أَنَّ عَمَّهُ حَدَّثَهُ، وَهُوَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "ابْتَاَعَ فَرَسًا مِنْ أَعْرَابِيٍّ، فَاسْتَبَعَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِقَضِيئِهِ ثُمَّ فَرَسَهُ، فَاسْتَرْعَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَشَى وَأَبْطَأَ الْأَعْرَابِيَّ، فَطَفِقَ رَجُلٌ يَغْتَرِضُونَ الْأَعْرَابِيَّ فَيَسْأَلُونَهُ بِالْفَرَسِ، وَلَا يَشْعُرُونَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ابْتَاَعَهُ، فَنَادَى الْأَعْرَابِيُّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: إِنْ كُنْتَ مُبْتَاعًا هَذَا الْفَرَسِ وَالْأَبْعَثَهُ، فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ سَمِعَ نِدَاءَ الْأَعْرَابِيَّ، فَقَالَ: أَوْلَيْسَ قَدْ ابْتَعْتَهُ مِنْكَ، فَقَالَ الْأَعْرَابِيُّ: لَا وَاللَّهِ مَا بَعْتُكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بَلَى، قَدْ ابْتَعْتَهُ مِنْكَ، فَطَفِقَ الْأَعْرَابِيُّ يَقُولُ: هَلُمَّ شَهِيدًا، فَقَالَ خُزَيْمَةُ بْنُ ثَابِتٍ: أَنَا أَشْهَدُ أَلَيْكَ قَدْ بَايَعْتَهُ، فَأَقْبَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى خُزَيْمَةَ، فَقَالَ: بِمَ تَشْهَدُ؟ فَقَالَ: بِتَصَدِيقِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَهَادَةَ خُزَيْمَةَ بِشَهَادَةِ رَجُلَيْنِ."

ابن خزيمه دخپل تره نه څوك چه د نبی صلی الله علیه و آله په صحابه كرامو كښې دي روايت كوی فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله د یو اعرابي نه یو اس واخستوار ورته ئې او فرمائیل چه په ما پسي رازه ددې دپاره چه داس قيمت درته دركړم نونبې صلی الله علیه و آله تيز تلوو اعرابي سست روان وونويو خو كسان دي اعرابي ته را روان شواودده داس دقيمت خبرې ئې كوكي او هغوی ته داپته نه وه چه دده اس نبی صلی الله علیه و آله اخستلې دي نو په دې وخت كښې ديهاتي نبی صلی الله علیه و آله ته اواز وكړو او اوئې وئيل: كه چرې دا اس ته اخلي خوڅه ده ورنه زه ئې خرڅوم، نبی صلی الله علیه و آله چه دا واوريدل نو اودريدو او اوئې فرمائيل: اياماستانه دا اس نه دی اخستل؟ ديهاتي وئيل هيڅكله نه په الله قسم ماپتا اس نه دی خرڅ كړي، نبی صلی الله علیه و آله او فرمائيل چه تاخوپه ما باندي اس خرڅ كړي دي ديهاتي وئيل چه گواه پيش كړه په دې وخت كښې خزيمه بن ثابت وئيل چه زه گواهی وركوم، په دې وخت كښې نبی صلی الله علیه و آله خزيمه ته متوجه شو او ورته ئې او فرمائيل: ته په څه بنياد شهادت وركوي؟ هغه وئيل په دې وجه چه زه تارښتونې گنرم نو په دې خبره نبی صلی الله علیه و آله دخزيمه شهادت ددوه شهادتونو قائم مقام مقرر كړو.

قوله: (عَنْ عُمَارَةَ بْنِ خُزَيْمَةَ أَنَّ عَمَّهُ حَدَّثَهُ أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - ابْتَاَعَ فَرَسًا مِنْ أَعْرَابِيٍّ فَاسْتَبَعَهُ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - لِقَضِيئِهِ ثُمَّ فَرَسَهُ)

د رسول الله صلی الله علیه و آله د اس اخستلو يوه عبرتناكه واقعه :

د عماره تره چه د هغه نوم عماره بن ثابت دې د هغوی نه روايت دې چه یو كرت رسول الله صلی الله علیه و آله (چرته په لاره كښ) د یو اعرابي نه د هغه اس واخستلو، چه كله رسول الله صلی الله علیه و آله اعرابي ته پخپله ملگرتيا كښې د تلو اووې چه كور ته رسيدو سره هغه ته د اس ثمن ادا كړی، پس رسول الله صلی الله علیه و آله په تيزی سره روان شو، اعرابي په مزه مزه روان وو، په لاره كښې چه كوم خلق



هغه سره ملاؤ شو هغوی هغه سره د هغه د اس په باره کښې د اخستلو خبرې کولې، هغوی ته دا معلومه نه وه چه رسول الله ﷺ دا اس اخستلې دې (اوس اوگورئ د اعرابی په نیت کښې فساد راغلو) او هغه رسول الله ﷺ ته آواز اوکړو چه که تاسو دا اس اخلئ نو واخلئ گڼې زه دا خرخوم رسول الله ﷺ د اعرابی په دې خبره اوریدو باندې اودریدو او د هغه طرف ته کتلو سره ئې وفرمائیل «اولیس قد ابتغته منك» آیا ما دا اس ستا نه اخستلې نه دې؟ اعرابی انکار اوکړو او په دې باندې ئې قسم هم اوخوړلو رسول الله ﷺ وفرمائیل داسې نه ده بلکه دا ما ستا نه اخستلې دې، اعرابی اووې چه گواه راولئ (په دې موقع باندې اتفاقا خزیمه بن ثابت راورسیدو) هغوی وفرمائیل زه گواهی ورکوم چه تا د دې اس د رسول الله ﷺ سره بیع کړې ده، د هغوی په شهادت باندې رسول الله ﷺ هغوی ته متوجه شو او وې فرمائیل «بم تشهد» چه ته څنگه شهادت ورکوی ته خو د بیع وخت کښې موجود نه وې. «فقال بتصدیقک یا رسول الله» نو هغوی جواب کښې عرض اوکړو چه صرف ستاسو د قول د تصدیق دپاره، (۱) یعنی چونکه تاسو د بیع خبره کوئ هم دا زما د شهادت مبنی ده ځکه چه ستاسو خبره د حق نه سوا هیڅ نه ده او کیدې هم نه شی، لهذا ستاسو د تصدیق په طور زه گواهی ورکوم، رسول الله ﷺ د هغوی انتهائی وزنی او قیمتی خبره اوریدلو سره هغوی ته هغه تمغه ورکړه چه د همیشه دپاره ئې د هغوی شهادت ځانله د دوه شهادتونو برابر اوگرځولو، د دې اعرابی نوم په بعض روایتونو کښې سواء بن الحارث راغلې دې او په بعضو کښې سواء بن قیس، خو دې ته حافظ وهم وئیلې دې، د دې قصې تکمله دا ده چه بیا کله ټولو خلقو ته د رسول الله ﷺ د شراء قصه معلومه شوه نو بیا چا هم د دې نه پس هغه اس د دې اعرابی نه وانخستلو، حال دا چه د هغه مقصد هغې لره خرڅول وو خو چه کله چاهغه وانخستلو نوبیا مجبورا هغه ماښام کور ته بوتلو او کور کښې ئې اوتړلو، سحرچه کله هغه پاسیدو نو هغه د خپل اس عجیبه حال اولیدو چه هغه مړ شوې وو او یوه خپه دهغه پورته اوچته شوې وه «فاصبحت رافعة رجلها» کذا فی الشفاء للقاضی عماض په دې حدیث کښې وئیلې کیدې شی چه قضاء القاضی بلعمه موندلې شوې ده یعنی بما علمه بعد القضاء هم هغه صورت کوم چه د امام صاحب رحمه الله په نزد معتبر دې ځکه چه رسول الله ﷺ وفرمائیل «قد ابتغته» خو دا بیله خبره ده چه رسول الله ﷺ په خپل حق کښې د فیصلې فرمائیلو نه پس هغه اختیار نه کړه بلکه اس ئې واپس کړو. خو که ځان سره ئې ساتل غوښتل نو رسول الله ﷺ ته حق حاصل وو. والحدیث اخرجه النسائی، قاله المنذری.

(۱) بتصدیقک.... دویم مطلب ئې دا هم کیدې شی چه ستاسو د تصدیق د وجې نه، یعنی چونکه اول د ایمان راوړلو په وخت ما ستاسو تصدیق کړې دې چه تاسو څه هم راوړې دی او چه څه هم فرمایئ ټول رشتیا دی په دې وجه دا هم رشتیا دی)

## بَابُ الْقَضَاءِ بِالْيَمِينِ وَالشَّاهِدِ

په یو قسم او د یو گواه په گواهی باندې د فیصلې کولو بیان

[۳۶۰۸] حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَالْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، أَنَّ زَيْدَ بْنَ الْحَبَابِ حَدَّثَهُمْ، حَدَّثَنَا سَيْفُ الْمَكِّيِّ، قَالَ: عُثْمَانُ، سَيْفُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ قَيْسِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "قَضَى بِالْيَمِينِ وَالشَّاهِدِ".

د عبد الله بن عباس رضی اللہ عنہ روایت دې فرمائی چې نبی ﷺ په یو گواه او یو قسم باندې فیصله کړې ده.

قوله: ﴿عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- قَضَى بِالْيَمِينِ وَالشَّاهِدِ﴾  
او د دې نه روستو طریق کښې دا زیادت دې ﴿قال عمرو: في الحقوق﴾  
د مسئله الباب وضاحت او مذاهب ائمه:

که په یو قضیه کښې مدعی سره صرف یو گواه وی نو په داسې صورت کښې یمین مدعی د شاهد اخر قائم مقام کیدې شی یا نه؟ او بیا د مدعی په حق کښې فیصله کول جائز دی یا نه؟ د ائمه ثلاث په نزد جائز دې خو صرف په هغه دعاوی کښې چې د هغې تعلق د حقوق او مال سره وی نه د حدود سره او د احنافو په نزد جائز نه دې، په حدیث الباب کښې د جمهور مذهب ثابتېږي، د احنافو دلیل هغه مشهور حدیث دې کوم چې حد د تواتر ته نژدې دې، ﴿البينة على المدعى واليمين على من انكر﴾ او په حدیث الباب کښې په دې مسئله کښې احتمال دې ځکه چې د دې په معنی کښې دویم احتمال هم دې هغه دا چې رسول الله ﷺ د یو گواه په موجودگي کښې په یمین د مدعی علیه باندې فیصله او کړه، یعنی څنگه چې د مطلقا شاهد نه کیدو په صورت کښې په یمین د مدعی علیه باندې فیصله کیږي دغه شان د یو گواه د موجود کیدو په صورت کښې هم رسول الله ﷺ داسې او کړل، په دې مسئله کښې امام بخاری رحمه الله هم د احنافو سره دې، پس هغوی ترجمه قائم کړې ده ﴿باب اليمين على المدعى عليه﴾ حضرت شیخ په تراجم د بخاری کښې مسئله د قضاء بيمين کښې د امامانو د اختلاف د لیکلو نه پس لیکلې دی: ﴿قلت وميل البخاري الى مسلك الحنفية واستدل عليه بالحصص في قوله ﷺ شاهدك او يمينه، وبقصته ابن شبرمة، وبحديث ابن عباس اه﴾ زه وایم چې په حدیث الباب یعنی ﴿قضى بيمين وشاهد﴾ کوم چې د جمهورو مستدل دې، په دې مسئله کښې دا روایت د افراد مسلم نه دې او د احنافو دلیل متفق علیه دې لکه چې اوس په تراجم کښې تیر شو د رسول الله ﷺ ارشاد ﴿شاهدك او يمينه﴾ هم دغه شان امام بخاری په کتاب الرهن کښې باب قائم کړې دې ﴿اذا اختلف الراهن والمرتهن ونحوه بالبينة المدعى واليمين المدعى عليه﴾ او بیا ئې د هغې د لاندې دا حدیث د ابن عباس رضی اللہ عنہما ذکر کړو ﴿ان النبي ﷺ قضى ان اليمين المدعى عليه﴾ دا حدیث د ابن عباس رضی اللہ عنہما لره امام بخاری رحمه الله په کتاب

۱: صحيح مسلم/الأقضية ۲ (۱۷۱۲)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۳۱ (۲۳۷۰)، (تحفة الأشراف: ۶۲۹۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۲۴۸، ۳۱۵، ۳۲۳) (صحيح)



الشهادات كنبی ﴿باب اليمين على المدعى عليه في الاموال والحدود﴾ د لاندې ذکر کړې دې  
والحديث اخرجه مسلم والنسائي وابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۶۰۹] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، وَسَلْمَةُ بْنُ شَيْبٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، بِإِسْنَادِهِ وَمَعْنَاهُ، قَالَ سَلْمَةُ فِي حَدِيثِهِ، قَالَ عَمْرُو: فِي الْحَقُّوقِ.

عمر و بن دینار هم د دې روایت په شان روایت بیان کړې دې او سلمه په خپل روایت کنبی دا  
اضافه کړه ده چه دا فیصله د حقوقو په سلسله کنبی شوي وه.

[۳۶۱۰] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ أَبُو مُصْعَبٍ الزُّهْرِيُّ، حَدَّثَنَا الدَّرَاوَزْدِيُّ، عَنْ رِبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "قَضَى بِالْيَمِينِ مَعَ الشَّاهِدِ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَزَادَنِي الرَّبِيعُ بْنُ سَلِيمَانَ، الْمُؤَدِّنُ فِي هَذَا الْحَدِيثِ، قَالَ: أَخْبَرَنِي الشَّافِعِيُّ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، قَالَ: فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِسُهَيْلٍ، فَقَالَ: أَخْبَرَنِي رِبِيعَةُ، وَهُوَ عِنْدِي ثِقَةٌ أَنِّي حَدَّثْتُهُ إِثَاءً وَلَا أَحْفَظُهُ، قَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ: وَقَدْ كَانَ أَصَابَتْ سُهَيْلًا عِلَّةٌ أَذْهَبَتْ بَعْضَ عَقْلِهِ وَنَسِيَ بَعْضَ حَدِيثِهِ فَكَانَ سُهَيْلٌ بَعْدَ يُحَدِّثُهُ، عَنْ رِبِيعَةَ عَنْهُ، عَنْ أَبِيهِ.

د ابو هريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله په یوگواه او په یو قسم باندې فیصله وکړه  
امام ابو داود فرمائی ربیع بن سلیمان موذن ماته په دې حدیث کنبی دا اضافه بیان کړې ده  
او وئیلی ئې دې چه ماته شافعی د عبد العزیز نه خبر را کړې دې ماددې ذکر سهیل ته وکړو  
هغه او وئیل خبر را کړې دې ماته ربیع او هغه زما په نزد باندې ثقه دې چه ماته ته حدیث  
بیان کړې دې خو ماته یاد نه دي عبد العزیز وئیلی دی سهیل په داسې مرض اخته شوی وو  
په کوم باندې چه دده عقل خراب شوی وو او څه حدیثونه ورنه هیر شوي وو سهیل به  
د ربیع نه دهغه دپلار په واسطه روایتونه بیانول.

﴿حَدَّثَنَا الدَّرَاوَزْدِيُّ عَنْ رِبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ﴾ او د دې نه  
پس راځی، ﴿أَخْبَرَنَا الشَّافِعِيُّ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِسُهَيْلٍ فَقَالَ أَخْبَرَنِي رِبِيعَةُ - وَهُوَ  
عِنْدِي ثِقَةٌ - أَنِّي حَدَّثْتُهُ إِثَاءً وَلَا أَحْفَظُهُ﴾

### شرح السند :

د رومبې سند نه معلومېږي چه دا حدیث عبد العزیز ته (د دراوردي نوم عبد العزیز دې) د  
سهیل نه په واسطه د ربیع را رسیدلې وو، په دې بل سند کنبی عبد العزیز دا وائی چه زه  
روستو براه راست د سهیل سره ملاؤ شوم او هغوی ته مې دا روایت ذکر کړو او دا چه  
ستاسو دا حدیث ماته په واسطه د ربیع را رسیدلې دې (په ظاهر کنبی خو مطلب دا دې  
چه اوس زه دا براه راست ستاسو نه اوریدل غواړم چه علو سند حاصل شی) نو هغوی په دې  
باندې دا اووې چه ماته ربیع دا خبره بیان کړه چه ربیع زما په نزد ثقه دی لهذا کیدې شی  
چه دا حدیث ما هغوی ته بیان کړې وی اگر چه ماته یاد نه دې، دا امر اخر دې.

﴿فَكَانَ سُهَيْلٌ بَعْدُ يُحَدِّثُهُ عَنْ رِبِيعَةَ عَنْهُ عَنْ أَبِيهِ﴾ یعنی د عبد العزیز د دې خبرې نه پس  
د سهیل بن ابی صالح دا معمول جوړ شوی وو چه هغوی دا حدیث داسې بیان کړې وې چه

(۱): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۶۲۹۹) (صحیح)

(۲): سنن الترمذي/الأحكام ۱۳ (۱۳۴۳)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۳۱ (۲۳۸)، (تحفة الأشراف: ۱۲۶۴۰) (صحیح)

ما دا حدیث اوریدلې دې د ربیعہ نه او ربیعہ خپله زمانه. او بیا چه وړاندې کوم سند دې هغه بیانوی، یعنی سهیل کوم چه فی الواقع استاد دې د ربیعہ. او ربیعہ د هغوی شاگرد دې خو چونکه سهیل دا حدیث هیر کړې وو. په دې وجه هغوی د دې حدیث د روایت کولو دا صورت اختیار کړو کوم چه پورته ذکر شوې دې. (سهیل بن ابی صالح عن ربیعہ عن سهیل) لهذا اوس دا حدیث د اهل اصول په نزد د (من حدث ونسی) د قبیل نه شو، د دې سند مثال په ترمذی شریف باب المنديل بعد الوضوء کښې تیر شوې دې. (حدثنا جریر قال حدثني علي بن مجاهد، عن وهب عن عدي ثقة) جریر هم دا حدیث د علی بن مجاهد نه بیان کولو سره هیر کړې وو. دلته په کتاب کښې دا هم دی، عبدالعزیز وائی چه په اصل کښې سهیل باندي څه بیماری لگیدلې وه داسې چه په هغې سره د هغوی ذهن او حافظه کمزورې شوې وه.

والحدیث اخرجہ الترمذی وابن ماجه، قاله المنذری

[۳۶۱۱] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ دَاوُدَ الْإِسْكَنْدَرَانِيُّ، حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ يَعْنَى ابْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ، عَنْ رَبِيعَةَ، بِإِسْنَادٍ أَبِي مُضْعَبٍ وَمَعْنَاهُ، قَالَ سُلَيْمَانُ: فَلَقِيتُ سُهَيْلًا فَسَأَلْتُهُ عَنْ هَذَا الْحَدِيثِ، فَقَالَ: مَا أَعْرِفُهُ، فَقُلْتُ لَهُ: إِنَّ رَبِيعَةَ أَخْبَرَنِي بِهِ عَنْكَ، قَالَ: فَإِنْ كَانَ رَبِيعَةُ أَخْبَرَكَ عَنِّي فَحَدِّثْ بِهِ، عَنْ رَبِيعَةَ عَنِّي.

سليمان وئيلي دی کله چه ماسهیل سره ملاقات وکړو نو ددې حدیث متعلق مې ورته تپوس او کړو هغه شروع شو چه وئیل ئې ماته ددې علم نشته ماورته او وئیل ربیعہ ماته ستا په ذریعہ باندي دا حدیث بیان کړې دې هغه او وئیل که چرې داسې وي نوبیاته دا حدید دربیعہ اوزماپه ذریعہ بیانوه.

[۳۶۱۲] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا عَمَّارُ بْنُ شُعَيْبٍ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْبِ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنِي أَبِي، قَالَ: سَمِعْتُ جَدِّي الزُّبَيْبَ، يَقُولُ: "بَعَثَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَيْشًا إِلَى بَنِي الْعَنْبَرِ، فَأَخَذُوا مِنْهُمْ بَرَكَةً مِنْ نَاحِيَةِ الطَّائِفِ فَاسْتَأْذَنُوا، إِلَى نَبِيِّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَكِبْتُ فَسَبَقْتُهُمْ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ: السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللَّهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، أَتَانَا جُنْدُكَ فَأَخَذُوا، وَقَدْ كُنَّا أَسْلَمْنَا وَخَضَرْنَا أَذَانَ النِّعَمِ، فَلَمَّا قَدِمَ بَلْعَنْبَرٍ، قَالَ لِي نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَلْ لَكُمْ بَيْنَهُ عَلَى أَنْتُمْ أَسْلَمْتُمْ قَبْلَ أَنْ تُوْخَذُوا فِي هَذِهِ الْأَيَّامِ؟ قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: مَنْ بَيْنَتْكَ؟ قُلْتُ: سَمْرَةَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي الْعَنْبَرِ، وَرَجُلٌ آخَرُ سَمَاءَةٌ لَهُ، فَشَهِدَ الرَّجُلُ، وَأَبَى سَمْرَةُ أَنْ يَشْهَدَ، فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قَدْ أَبَى أَنْ يَشْهَدَ لَكَ فَتَخْلِفُ مَعَ شَاهِدِكَ الْآخَرَ، قُلْتُ: نَعَمْ، فَاسْتَخْلَفْنِي، فَخَلَفْتُ بِاللَّهِ، لَقَدْ أَسْلَمْنَا يَوْمَ كَذَا وَكَذَا، وَخَضَرْنَا أَذَانَ النِّعَمِ، فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اذْهَبُوا، فَقَاسِمُوهُمْ أَنْصَافَ الْأَمْوَالِ، وَلَا تَمْسُوا أَرْبَابَهُمْ، لَوْلَا أَنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ ضَلَالَةَ الْعَمَلِ مَا رَزَيْنَاكُمْ عِقَالًا، قَالَ الزُّبَيْبُ: قَدْ عَتْنِي أَبِي، فَقَالَتْ: هَذَا الرَّجُلُ أَخَذَ زُرْبَيْتِي، فَانْصَرَفْتُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْنِي فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ لِي: احْبِسْهُ، فَأَخَذْتُ بِتَلْبِيئِهِ، وَقُمْتُ مَعَهُ مَكَانًا، ثُمَّ نَظَرُ الْيَنَانِيُّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَائِمِينَ، فَقَالَ: مَا تُرِيدُ بِأَسِيرِكَ؟ فَأَرْسَلْتُهُ مِنْ يَدِي، فَقَامَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لِلرَّجُلِ: رُدَّ عَلَيَّ هَذَا زُرْبِيَّةَ أُمِّهِ الَّتِي أَخَذْتَ مِنْهَا، فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ، إِنَّهَا خَرَجَتْ مِنْ يَدِي، قَالَ: فَاخْتَلَمَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَيْفَ الرَّجُلِ فَأَعْطَانِيهِ، وَقَالَ لِلرَّجُلِ: اذْهَبْ فَرِذَّةً أَصْعَامٍ طَعَامٍ، قَالَ: فَرَأَيْتَنِي أَصْعَامٍ شَعِيرٍ."

۱: (انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۲۶۴۰) (صحيح)

۲: (تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۶۱۹) (ضعيف)



د زيبب عنبري رضي الله عنه نه روايت دې وئيل ئې چې نبی عليه السلام د قبيله بنی العنبر په طرف باندې یولښکر ولیرلو لښکریانو ده لره په رکهبه مقام (طائف ته نزدې یو کلي دې) کښې گرفتار کړو او دې بی د گرفتاری په حال کښې د نبی عليه السلام په خدمت کښې حاضر کړو زه مخکښې راغلم او نبی عليه السلام ته مې سلام وکړو ماداسې او وئیل السلام علیکم یا نبی الله ورحمة الله وبرکاته ستالښکر مونږ ته راغلی وو او مونږه ئې ونيولواو حال دادې چې مونږه اسلام قبول کړې وو او مونږه د څاروو غوړونه پري کړي وو کله چې د بني العنبر قبیلې خلق راغلل نوماته نبی عليه السلام او فرمائیل ایستاسو سره گواه موجود دې چې تاسو د گرفتار کیدونه مخکښې اسلام قبول کړې وو ماو وئیل ولې نه نبی عليه السلام او فرمائیل څوک دې؟ ما عرض اوکړو سمره څوک چې د بني العنبر قبیلې یوکس وو او یوبل کس دچانوم چې زيبب اخستلې وو بیادغه کس شهادت پیش کړو اوسمره د شهادت نه انکار وکړو په دې وخت کښې نبی عليه السلام او فرمائیل چې سمره خودگواهی ورکولونه انکار وکړو نوایا اوس ستاسو دخپل گواه سره قسم کولې شی هغوی عرض اوکړو هو، بیانیې عليه السلام ماته په الله قسم راکړو ما په الله قسم وکړو اوومې وئیل چې یقینا مونږه په فلانئ فلانئ ورځ باندې اسلام قبول کړې وو او مونږه دخپلو څارور غوړونه څیرلي وو، نبی عليه السلام لښکریانو ته او وئیل تاسولاړ شی اوددوئ نیم مال تقسیم کړئ اوددوئ داولاد سره کار مه لرئ، که چېرې الله تعالی ته دمجاهدینو دکوشش ضایع کیدل بدنه ښکاره کیدې نومونږ به ستاسو دمال نه یوه رسئ هم نه وه اخستني زهیب او وئیل زما مور زه راوغوښتلم او راته ئې او وئیل دي کس زمانه غلا کړې ده زه د نبی عليه السلام په خدمت کښې حاضر شوم او عرض مې وکړو نبی عليه السلام او فرمائیل دې ونیسئ مادده په مرئ کښې څادر واچوو اوزه په خپل ځانې ددې کس سره پاڅیدم نبی عليه السلام چې مونږ دواړه ولاړ ولیدو وبې فرمائیل ته دخپل قیدی سره څه کول غواړی؟ ماده لره پریخودو بیانیې عليه السلام اودریدو اودغه کس ته ئې او فرمائیل ته ددغه کس دمور توشدان ورکړه کوم چې تا اخستلې دې هغه عرض اوکړو ای دالله رسوله هغه زمانه ضایع شوې دې بیانیې عليه السلام ددغه کس توره ماته راکړه اوده ته ئې او وئیل ته لاړ شه او یو څوصاعه غلې دانې ورته اضافي ورکړه زهیب وائی چې ماته ئې یو څوصاعه وربشي راکړي.

﴿حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ سَمِعْتُ جَدِّي الزُّبَيْبَ يَقُولُ بَعَثَ نَبِيُّ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - جَيْشًا إِلَى بَنِي الْعَنْبَرِ فَأَخَذُوهُمْ بِرُكْبَةٍ مِنْ نَاحِيَةِ الطَّائِفِ الْخ﴾

يو اوږد حديث او دهغي شرح :

عمار بن شعيت وائی چې ماته زما پلار شعيت بيان اوکړو چې ما د خپل پلار زيبب عنبري ته واوریدل هغوی وئیل چې رسول الله ﷺ يو لښکر د جهاد او قتال دپاره قبيله بنو العنبر طرف ته اولیرلو (کوم چې خپله د حديث د راوی یعنی د زيبب قبيله وه) دې لښکر بنو العنبر قيد کړل د مقام رکهبه په هغه حصه کښې کومه چې د طائف طرف ته ده، او د دې ټولو د قيد کولو نه پس ئې د رسول الله ﷺ په طرف باندې مدينې طبيې طرف ته روان کړل زيبب عنبري وائی : ﴿فرکبت فسبقهم الى النبي ﷺ﴾ یعنی زه د دې لښکر نه بچ شوم او سوريډو

سره د هغه ټولو خلقو نه مخکښې د رسول الله ﷺ خدمت ته حاضر شوم، او هغوی ته مې سلام عرض کړو ﴿السلام عليك يا نبي الله ورحمة الله وبركاته﴾ او ما هغوی ته عرض او کړو چه ستاسو رالېږلې لښکر مونږ ته راوړسیدو هغوی مونږ ټول اونیولو یعنی زمونږ ټوله قبيله، حال دا چه مونږ اسلام قبول کړې وو او د علامت په طور مو د خپلو څارو نه لږ لږ غوږونه پرې کړې وو، یعنی د اسلام قبلولو په وخت (یعنی دې قبیلې اگر چه اسلام قبول کړې وو خو نه هغوی مدینې ته هجرت او کړو او نه هغوی د خپل اسلام رسول الله ﷺ ته خبر ورکړو) رسول الله ﷺ د زیب عنبري په دې خبره اوړیدو سره خاموش شو بیا چه لږ ساعت پس دا قبيله کومه چه د مسلمانانو په لاس کښې قید وه مدینې طیبې ته د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضره شوه نو اوس رسول الله ﷺ زما نه تپوس او کړو چه تاسو سره په دې باندې گواه شته چه تاسو اسلام قبول کړې وو د قید کیدو نه مخکښې په دې ورځو کښې؟ زیب وائی ما عرض او کړو او جی گواهان شته. رسول الله ﷺ او فرمائیل چرته دی؟ ما عرض او کړو یو خو سمره نومې سړې دې هم د دې قبیلې او د یو سړی نوم ئې واخستلو کوم چه د راوی نه هیر شوې دې، پس دا دواړه گواهان راطلب کړې شو، په دې دوو کښې سمره خود شهادت ورکولو نه انکار او کړو خو دویم کس گواهی ورکړه، رسول الله ﷺ زیب ته او فرمائیل چه اوگوره سمره خود شهادت نه انکار او کړو صرف یو کس گواهی ورکړه، نو آیا ته د یو شاهد سره خپله قسم خوړلې شې؟ زیب عرض او کړو چه خوړلې شم، پس ما قسم او خوړلو داسې ﴿لقد اسلمنا بالله يوم كذا وكذا وخضرمنا اذان النعم﴾ چه کله د دې یو سړی گواهی او د دې یو سړی قسم بیا موندلې شو نو اوس رسول الله ﷺ دا فیصله او فرمائیله چه صحابه کرامو ته ئې او فرمائیل: لا شیئ چه کوم مال د غنیمت په طور تاسو سره د بنو العنبر موجود دې هغه نیم نیم تقسیم کړئ، یعنی نیم بنو العنبر ته ورکړئ او نیم تاسو خپله واخلي، او دا ئې هم او فرمائیل چه دې ماشومانو او زنانو ته لاس مه اوړئ..... ﴿لَوْلَا أَنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ ضَلَالَةَ الْعَمَلِ مَا رَزَيْنَاكُمْ عِقَالاً﴾ چه که دا خبره نه وې چه الله پاک د چا عمل لره ضائع کول نه خوښوی نو مونږ به ستاسو په مال کښې یو رسئ هم نه کموله. یعنی د نیم په ځانې به مو ټول مال تاسو ته واپس درکړې وې.

د عمل نه مراد عمل د صحابه کرامو ﷺ یعنی جهاد مراد دې، مطلب دا دې چه چونکه شرعا مال غنیمت د مجاهدینو حق دې نو که اوس زه ټول د دوی نه واخلم او تاسو ته ئې واپس کړم نو دا مناسب نه ده، نو په دې صورت کښې خو به گویا د دوی عمل جهاد ضائع وی. او الله پاک د چا د عمل ضائع کیدل نه خوښوی په دې وجه زه ټول تاسو ته نه واپس کوم (گینې زړه مې هم دا غواړی چه په څه طریقه ټول تاسو ته واپس شی) د مصنف ﷺ غرض د دې واقعي د دې حصې نه حاصلېږي گینې ورپسې خو مصنف ﷺ د دې قصې باقی حصه هم ذکر کړې ده کومه چه به مونږ وروستو بیانوو. مصنف ﷺ گویا دا فرمائیل غواړی چه په دې واقعه کښې قضاء بیمین وشاهد



موندلې شوې ده (۱) خو احناف خو د دې قائل نه دي، زمونږ د طرف نه به د دې جواب دا وي چې قضاء بيمین و شاهد خو به هغه وخت وي چې کله پوره مال واپس کړې شوې وي، لهذا دا استدلال څنگه دي؟ بلکه مونږ دا وايو چې دا چې کومه فيصله شوې ده دا په طور د اصلاح ذات البين شوې ده، والله اعلم.

باقی حصه دا ده ﴿ قَالَ الزُّبَيْدُ قَدَعْنِي أُمِّي فَقَالَتْ هَذَا الرَّجُلُ أَخَذَ زَيْنَتِي الْخ ﴾

زبيد وائي چې د رسول الله ﷺ د دې فيصلې نه پس زما مور زه راطلب کړم او يو لښکري طرف ته ئې اشاره کولو سره اووې چې ده زما خادر اخستلې دي، زه د رسول الله ﷺ خدمت ته لاړم او هغوی ته مې د دې خبرې خبر ورکړو هغوی او فرمائيل چې د کوم سړي سره هغه خادر دي هغه اودروه، ما د هغه گريوان اونيولو او هغه مې اودرولو، رسول الله ﷺ زما طرف ته اوکتل دواړو لره داسې په يو ځانې ليدولو باندې هغوی د لرې نه ما ته او فرمائيل چې ته د خپل قيدي سره څه کول غواړي ما په دې اوریدو باندې فورا هغه پريخودلو بيا رسول الله ﷺ هغه سړي (يعني لښکري) ته اووې چې د ده د مور خادر ده ته ورکړه هغه عرض اوکړو يا رسول الله ﷺ هغه خادر خو زما د لاس نه وتلو، چې کله هغه داسې اووې نو رسول الله ﷺ داسې اوکړل چې دهغه سړي په لاس کښې چې کومه توره وه هغه ئې د هغه د لاس نه واخستله او ما ته ئې راکړه (مور ته د رسولو دپاره د خادر په بدل کښې او هغوی دې لښکري ته او فرمائيل چې هغه لره يعني زبيد ته نور هم څو صاعه د اوسکو ورکړه پس هغه هم داسې اوکړل.

### بَابُ الرَّجُلَيْنِ يَدَّ عِيَانٍ شَيْئًا وَلَيْسَتْ لَهُمَا بَيِّنَةٌ

کله چې دوه کسان د يوشی دعوی لري او گواه ورسره نه وي؟

يعني دوه سړي د يو څيز په باره کښې دعوی کوي هر يو وائي چې دا زما دي، په داسې صورت کښې چې د يو سره هم بينه نشته، په دې ترجمه کښې يو قيد بل هم ملحوظ دي چې مذکور نه دي هغه دا چې هغه څيز په دې دواړو کښې د چا په قبضه کښې هم نه وي بلکه د يو دريم کس په قبضه کښې وي، يا که وي نو د دواړو په لاس کښې وي، د دې صورت حکم د فقهاء کرامو په نزد دا دي. احناف او شوافع وائي چې برابر دي هغه څيز دواړو ته ورکړې شي، د دې تنصيف دي اوکړې شي او امام احمد ﷺ په دې صورت کښې د قرعه قائل دي، چې په قرعه کښې د کوم سړي نوم راوخيږي نو د هغه نه دي قسم اخستلو سره هغه ټول څيز هغه سړي ته ورکړې شي، او د امام مالک ﷺ مذهب دا دي چې ﴿ هَذَا الشَّيْءُ لِلْعَدْلِ مِنَ الرَّجُلَيْنِ ﴾ يعني په دواړو سړو کښې چې کوم سړي زيات عادل وي هغه ته دي ورکړې شي (هكذا المذهب في حاشية الشيخ)

(۱) من حيث ان زبيد العنبري كان مدعيًا وشهد له شاهد واحد وانكر الآخر عن الشهادة فاخذ النبي ﷺ الحلف عن المدعي بدل شهادة شاهد آخر وقضي له

[۳۶۱۳] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْبُهَالِ الضَّرِيرُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ، "أَنَّ رَجُلَيْنِ ادَّعِيَا بَعِيرًا أَوْ ذَابَّةً إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَتْ لِوَاحِدٍ مِنْهُمَا بَيِّنَةٌ، فَجَعَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَهُمَا".

د ابو موسی اشعری رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه دوه کسانو په یو اوبښ بابل خاروي باندې دعوه کړې وو او فیصله ئې نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته راوړه او پدې کښې دیوکس هم گواه موجود نه وو نو نبی صلی اللہ علیہ وسلم داسې فیصله وکړله چه دغه څیز ئې د دواړو په مینځ کښې مشترک وگرځولو. **قوله:** «عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ أَنَّ رَجُلَيْنِ ادَّعِيَا بَعِيرًا أَوْ ذَابَّةً»

یعنی د یو خاروی په باره کښې دوه سړو د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضریدو سره دعوی او کره هریو وئیل چه دا زما دې او گواه د یو سره هم نه وو نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د دواړو ترمینځه مشترک کړو، د حدیث نه د احنافو او شوافعو تائید کیږی کوم چه په صورت مذکوره کښې د تنصیف قائل دی. والحديث أخرجه النسائي وابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۶۱۴] (۲) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحِيمِ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ إِسْنَادٍ وَمَعْنَاءُ.

سليمان د سعيد نه په خپل سند سره د دې روایت، هم معنی روایت بیان کړې دې.

[۳۶۱۵] (۳) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ بِمَعْنَى إِسْنَادِهِ، أَنَّ رَجُلَيْنِ ادَّعِيَا بَعِيرًا عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَبَعَثَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا شَاهِدَيْنِ، فَقَسَمَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَهُمَا نِصْفَيْنِ.

د قتاده رضی اللہ عنہ نه په دې سند سره روایت دې فرمائی چه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په زمانه کښې دوه کسانو په یو اوبښ باندې دعوی او کره او هریوکس دخپلې دعوی د مضبوطولو دپاره دوه گواهان په دربار نبوت کښې پیش کړل نبی صلی اللہ علیہ وسلم دغه اوبښ په دغه دوه کسانو باندې نیم په نیمه تقسیم کړو.

[۳۶۱۶] (۴) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْبُهَالِ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ جَلَّاسٍ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، "أَنَّ رَجُلَيْنِ اخْتَصَمَا فِي مَتَاعٍ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ لِوَاحِدٍ مِنْهُمَا بَيِّنَةٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اسْتَهِمَا عَلَى الْيَمِينِ مَا كَانَ أَحَبَّ ذَلِكَ أَوْ كَرَهَا".

د ابوهريره رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه دوه کسانو نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته د یو شي په باره کي جگړه راوړله او په دوی دواړو کښې دیوسره هم گواه موجود نه وو نو نبی صلی اللہ علیہ وسلم د دوی دواړو په مینځ کښې په قرع اندازی کولو حکم وکړو برابر خبره ده چه د اقسام خوراک دوی خوښوي او که بد ئې گنږي.

**قوله:** «عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَجُلَيْنِ اخْتَصَمَا فِي مَتَاعٍ « اسْتَهِمَا عَلَى الْيَمِينِ مَا كَانَ أَحَبَّ ذَلِكَ أَوْ كَرَهَا »

۱: سنن النسائي / آداب القضاة ۳۴ (۵۴۲۶)، سنن ابن ماجه / الأحكام ۱۱ (۲۳۳۰)، (تحفة الأشراف والإرواء: ۲۶۵۶)، وقد

أخرجه: مسند احمد (۴۰۲/۴) (ضعيف)

۲: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۹۰۸۸) (ضعيف)

۳: انظر حديث رقم: ۳۶۱۳، (تحفة الأشراف: ۹۰۸۸) (ضعيف)

۴: سنن ابن ماجه / الأحكام ۱۱ (۲۳۲۹)، (تحفة الأشراف: ۱۴۶۶۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۸۹/۲، ۵۲۴) (صحيح)



دا حدیث مسئله مترجم بها کښي د امام احمد رحمته الله علیه د مذهب دلیل دی چه وائی چه په دې صورت کښي دې استهمام یعنی قرعه اندازی او کړې شی او په قرعه اندازی کښي چه د چا نوم راوخیږي د هغه نه دې قسم اخستلو سره د هغه په حق کښي فیصله او کړې شی.

والحدیث أخرجه النسائي، قاله المنذري

[۳۶۱۷] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، وَسَلَمَةُ بْنُ شَيْبٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ أَحْمَدُ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "إِذَا كَرِهَ الْإِثْنَانِ الْيَمِينَ أَوْ اسْتَحَبَّاهَا فَلَيْسَتْ بَاعِلِيهَا" قَالَ: أَيْ خَيْرًا مَعْمَرٌ، وَقَالَ: إِذَا كَرِهَ الْإِثْنَانِ عَلَى الْيَمِينِ."

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دی فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی کله چه دوه کسان قسم کول ښه وگنړي بائي بد او گنړي نوپه دې باندې قرع اندازې کوي، سلمه وائی په دې حدیث باندې معمر مونږ ته خبر راکړې دې اودر: «إِذَا كَرِهَ الْإِثْنَانِ الْيَمِينَ» په ځاني باندې .. «إِذَا كَرِهَ الْإِثْنَانِ عَلَى الْيَمِينِ»، وئیلی دي.

[۳۶۱۸] (۲) حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ، بِإِسْنَادٍ ابْنِ مِنْهَالٍ مِثْلَهُ، قَالَ: فِي دَابَّةٍ وَلَيْسَ هُمَا بَيِّنَةٌ، فَأَمَرَهُمَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَسْتَمَا عَلَى الْيَمِينِ.

د سعيد بن ابی عربو نه هم په دې سند سره روایت دی چه دوه کسانو د یوڅاروي په معامله کښي جگړه وکړه او په دوی دواړو کښي دیوسره هم گواه موجود نه وو نونبی صلی الله علیه و آله ددوی دقسم کولو په باره کښي دقرع اندازی کولو حکم وکړو.

## بَابُ الْيَمِينِ عَلَى الْمُدَّعَى عَلَيْهِ

که چرې د مدعی سره گواه نه وی نو مدعا علیه به قسم کوي

[۳۶۱۹] (۳) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ، عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، قَالَ: كَتَبَ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "قَضَى بِالْيَمِينِ عَلَى الْمُدَّعَى عَلَيْهِ".

د ابن ابی ملیکه نه روایت دی فرمائی چه ماته عبداللہ بن عباس رضي الله عنه اولیکل چه نبی صلی الله علیه و آله مدعا علیه (په چا باندې چه دعوي شوي وي) تا دقسم کولو حکم فرمائیلي دي.

دا مسئله اجماعی ده د ائمه ثلاث په نزد مطلقا ده او د امام مالک رحمته الله علیه په نزد مقید ده په یو قید باندې هغه دا چه که د مدعی او مدعی علیه تر مینځه خپل مینځ کښي اتفاق وی نو بیا داسې ده او که په هغوی دواړو کښي څه قسم جوړ یا مناسبت نه وی مثلاً یو سړې ډیر پرهیزگار وی او دویم سړې ډیر عیاش وی چه د هغوی خپل مینځ کښي د لین دین هیڅ تعلق نه وی داسې سړې که عدالت ته لار شی او دعوی او کړې نو د هغه دعوي ته به غور نه

۱: صحيح البخاري/الشهادات ۲۴ (۲۶۷۴)، (تحفة الأشراف: ۱۴۶۹۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۱۷/۲)، وقد أخرجه:

سنن النسائي/الكبرى (۶۰۰۱) (صحيح)

۲: انظر حديث رقم: (۳۶۱۶)، (تحفة الأشراف: ۱۴۶۶۲) (صحيح) بما قبله

۳: صحيح البخاري/الرهن ۶ (۲۵۱۴)، الشهادات ۲۰ (۲۶۶۸)، تفسير آل عمران ۳ (۴۵۵۲)، صحيح مسلم/الأقضية ۱ (۱۷۱۱)، سنن الترمذي/الأحكام ۱۲ (۱۳۴۲)، سنن النسائي/آداب القضاة ۳۵ (۵۴۲۷)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۷ (۲۳۲۱)،

(تحفة الأشراف: ۵۷۵۲، ۵۷۹۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۶۳، ۳۵۶، ۳۵۱، ۳۴۲/۱) (صحيح)

شی کیخودلې او د هغه په دعوی باندې به د مدعی علیه نه قسم نه شی اخستلې، دا قید هغوی په دې وجه باندې لگولې دې چه لوفر قسم خلق علماء او فضلاء بغیر د څه وجې نه پریشان نه کړی خود دې قید هیڅ اصل په کتاب او سنت کښې نشته. (کذا فی البذل وکذا فی حاشیة السنن عن الطبری)

## باب کیف الیمین

د قسم ورکولو طریقہ

[۳۶۲۰] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الْأَحْوَصِ، حَدَّثَنَا عَطَاءُ بْنُ السَّائِبِ، عَنْ أَبِي يَحْيَى، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ يَغْنَى لِرَجُلٍ حَلْفُهُ: «أَخْلَفَ بِاللَّهِ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ، مَا لَهُ عِنْدَكَ شَيْءٌ»، يَغْنَى لِلْمُدَّعَى، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَبُو يَحْيَى اسْمُهُ زِيَادٌ كُوفِي ثِقَةٌ.

د ابن عباس رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم یوکس ته او وئیل چه قسم ئې ورته ورکولو، په هغه الله باندې قسم وکړه چه دهغه نه علاوه بل معبود نشته دې چه ستا په ذمه باندې د دعوي کونکي یعنی د مدعی څه شي نشته.

«أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ - يَغْنَى لِرَجُلٍ حَلْفُهُ - «أَخْلَفَ بِاللَّهِ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ مَا لَهُ عِنْدَكَ شَيْءٌ». يَغْنَى لِلْمُدَّعَى»

یعنی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغه سړی ته او فرمائیل د چا نه چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم قسم اخستلو یعنی مدعی علیه چه په دې الفاظو سره قسم او خوری کوم چه په حدیث کښې مذکور دی. په ظاهر کښې د مصنف رحمہ اللہ غرض په دې ترجمې سره دا دې چه که قاضی په الفاظو د قسم کښې د تغلیظ ضرورت او گنړی نو په کوم قسم الفاظو سره چه هغه غواړی قسم اخستلې شی. والحديث أخرجه النسائي قاله المنذرى.

## باب إِذَا كَانَ الْمُدَّعَى عَلَيْهِ ذِمِّيًّا أَيْخَلَفَ

که چرې مدعی علیه ذمی وي نو آیا قسم به ورته ورکولې شی؟

[۳۶۲۱] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ الْأَشْعَثِ، قَالَ: «كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ رَجُلٍ مِنَ الْيَهُودِ أَرْضٌ، فَجَحَدَنِي، فَقَدَّمْتُهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلَاكَ بَيِّنَةٌ، قُلْتُ: لَا، قَالَ لِلْيَهُودِيِّ: أَخْلَفَ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِذَا أَخْلَفَ وَيَذْهَبُ بِمَالِي، فَأَنْزَلَ اللَّهُ: إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا سَوْفَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ، إِلَى آخِرِ الْآيَةِ».

د اشعث نه روایت دې فرمائی چه زما او دیو یهودي په مینځ کښې څه زمکه شریکه وه یهودي زما د حصی نه انکار وکړو ما نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته بوتلو نبی صلی اللہ علیہ وسلم ماته او فرمائیل ایاستاسره گواه موجود دې ماعرض او کړو نه نبی صلی اللہ علیہ وسلم یهودي ته او فرمائیل ته به قسم کوي ماعرض

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۵۴۳۱)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۲۸۸/۱) (ضعيف الإسناد)

(۲): صحيح البخاري / المساقاة ۴ (۲۳۵۶)، الرهن ۶ (۲۵۱۵، ۲۵۱۶)، الشهادات ۱۹ (۲۲۶۶، ۲۲۶۷)، التفسير ۳ (۴۵۴۹)، الإيمان ۱۱ (۶۶۵۹، ۶۶۶۰)، الأحكام ۳۰ (۷۱۸۳، ۷۱۸۴)، صحيح مسلم / الإيمان ۶۱ (۱۳۸)، سنن الترمذي / البيوع ۴۲ (۱۲۹)، سنن ابن ماجه / الأحكام ۷ (۲۳۲۲)، (تحفة الأشراف: ۱۵۸، ۹۲۴۴)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۲۱۱/۵) (صحيح)



او کړو ای د الله رسول له که چرې دې قسم وکړي نو زما مال خوبه واخلی نو په دې وخت کښې الله تعالی دا ایت کریمه: «إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ» نازل کړو. یعنی مدعی علیه که ذمی وی نو آیا د هغه نه به قسم اخستلې شی. جواب دا دې چه اخستلې به شی ترې نه، لکه چه په حدیث الباب کښې دی دا حدیث په کتاب الایمان والنذور کښې تیر شوې دې.

### بَابُ الرَّجُلِ يَحْلِفُ عَلَى عَلَيْهِ فِيمَا غَابَ عَنْهُ

چاته د واقعي د علم په بڼا باندې قسم ورکول کله چه دغه واقعه دده په موجود کي کښې نه وی شوې

[۳۶۲۲] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا الْفَرَيَّابِيُّ، حَدَّثَنَا الْحَارِثُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنِي كُرْدُوسٌ، عَنِ الْأَشْعَثِ بْنِ قَيْسٍ، "أَنَّ رَجُلًا مِنْ كِنْدَةَ، وَرَجُلًا مِنْ حَضْرَمَوْتَ، اخْتَصَمَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أَرْضٍ مِنَ الْيَمَنِ، فَقَالَ الْحَضْرَمِيُّ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنْ أَرْضِي اغْتَصَبْنِيهَا أَبُو هَذَا، وَهِيَ فِي يَدِهِ قَالَ: هَلْ لَكَ بَيِّنَةٌ؟ قَالَ: لَا، وَلَكِنْ أَحْلَفُهُ وَاللَّهِ مَا يَعْلَمُ أَنَّهَا أَرْضِي اغْتَصَبْنِيهَا أَبُو هَذَا الْكِنْدِيُّ يَعْنِي لِلْيَمَنِ وَسَأَقُ الْحَدِيثَ."

داشعث بن قيس نه روایت دې فرمائی چه دکنده قبیلې دیوسرې اود حضر موت دقبیلې یوسرې. نبی ﷺ ته دیمن دزمکې په باره کښې جگړه راوړله حضرتي اووئیل ای دالله رسول له ده زمازمکه قبضه کړیده او په زوره ئې اخستلې ده نبی ﷺ دغه کس ته اوفرمائیل ایا ستاسره گواه موجود دې؟ عرض ئې وکړو نا نوبیا ئې اوفرمائیل زه به دي کندي ته په دې خبره قسم ورکوم چه ده ته دا خبره نه ده معلومه چه دازمازمکه ده اودده پلار په زبردستی سره په دې باندې قبضه کړي وه نوکندي په قسم کولو باندې راضي شو اوبیا ئې مذکوره بالا حدیث بیان کړو.

### د ترجمه الباب تشریح :

یعنی د کومې معاملې تعلق چه براه راست د خپل ځان سره وی هلته د مدعی علیه نه قسم د هغه په علم باندې اخستل پکار دی یعنی په نفس الامر باندې ترې نه قسم وانخستلې شی، د احتیاط تقاضا هم دا ده لکه چه په حدیث الباب کښې دی، دا حدیث هم په کتاب الایمان والنذور کښې تیر شوې دې، په دې حدیث کښې دا دی چه مدعی اووې چه مدعی علیه سره چه کومه زمکه ده هغه زما ده، د مدعی علیه پلار زما نه غصب کړې وه، اوگوری دلته د غصب تعلق چونکه براه راست د مدعی علیه سره نه وو بلکه د هغه د پلار سره وو په دې وجه دلته قسم په علم باندې واخلستلې شو. پس مدعی علیه قسم کښې اووې چه والله زما په علم کښې نشته دا خبره چه زما پلار د مدعی دا زمکه غصب کړې وه.

[۳۶۲۳] (۲) حَدَّثَنَا هَنَادُ بْنُ السَّرِيِّ، حَدَّثَنَا أَبُو الْأَحْوِسِ، عَنْ سِمَاكِ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَاہِلٍ بْنِ حُجْرٍ الْحَضْرَمِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: "جَاءَ رَجُلٌ مِنْ حَضْرَمَوْتَ، وَرَجُلٌ مِنْ كِنْدَةَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ الْحَضْرَمِيُّ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ هَذَا غَلَبَنِي عَلَى أَرْضٍ كَانَتْ لِأَبِي، فَقَالَ الْكِنْدِيُّ: هِيَ أَرْضِي فِي يَدِي أَرْضُهَا لَيْسَ لَهُ فِيهَا حَقٌّ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلْحَضْرَمِيِّ: أَلَكْ بَيِّنَةٌ؟ قَالَ: لَا، قَالَ: فَلَكَ يَمِينُهُ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّهُ قَاجِرٌ."

(۱): انظر حديث رقم: (۳۲۴۴)، (تحفة الأشراف: ۱۵۹) (صحيح)  
(۲): انظر حديث رقم: (۳۲۴۵)، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۸) (صحيح)

لَيْسَ يُبَالَى مَا حَلَفَ لَيْسَ يَتَوَرَّعُ مِنْ شَيْءٍ، فَقَالَ: لَيْسَ لَكَ مِنْهُ إِلَّا ذَلِكَ".

علقمه بن وائل بن حجر الحضرمي دخپل پلار نه روايت كوي فرمائي چه دحضرموت قبيلي يوسري اردكننده قبيلي يوسري نبي عليه السلام ته راغلل حضري اوويل اي دالله رسوله ده زما دپلار زمكه غصب كړې ده كندي عرض او كړو چه دازمازمكه ده زه په دې كښې فصل كرم دده په دې زمكه كښې هيڅ حق نشته نبي ﷺ حضري ته او فرمائيل ايا ستاسره گواه موجود دې ده عرض او كړونه، نبي ﷺ او فرمائيل بيا به ستا په وړاندي دې قسم كوي حضري عرض او كړو اي دالله رسوله داخويو فاسق سرې دې دده په قسم كولو هيڅ پرواه نشته هر قسمة قسم كولې شي اومتقي نه دې نبي ﷺ ده ته او فرمائيل چه د قسم نه علاوه ستاسو دپاره بله هيڅ چاره نشته.

## بَابُ كَيْفَ يَحْلِفُ الدِّمِيُّ

كافر دمي ته به په كومه طريقه باندي قسم وركولې شي؟

[۳۶۲۴] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنُ قَارِسٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْبَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنَا رَجُلٌ مِنْ مَزِينَةَ وَمِنْ عِنْدَ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَغْنِي لِلْيَهُودِ: "أَنْشُدْكُمْ بِاللَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ التَّوْرَةَ عَلَى مُوسَى، مَا تَجِدُونَ فِي التَّوْرَةِ عَلَى مَنْ زَنَى وَسَاقَ الْحَدِيثُ فِي قِصَةِ الرَّجْمِ".

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه نبي ﷺ يهوديانوته او فرمائيل تاسوته په هغه ذات قسم دركوم چاچه تورات نازل كړي دي په موسى عليه السلام باندي چه په تورات كښې دهغه چا دپاره څه حكم دې څوك چه زنا وكړي «دا قسم وركول په هغه وخت كښې شوي ووكله چه يهوديانو دزناكار دسنگسار كولو نه انكار كړي وو او دا حديث تر آخره پورې په قصه درجم كښې بيان شوي دي.

[۳۶۲۵] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ يَحْيَى أَبُو الْأَصْبَغِ، حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ يَعْنِي ابْنَ سَلَمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الْحَدِيثِ وَيَأْسَنَادُهُ، قَالَ: حَدَّثَنِي رَجُلٌ مِنْ مَزِينَةَ مِمَّنْ كَانَ يَتَّبِعُ الْعِلْمَ وَيُعِيهِ، يُحَدِّثُ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمَعْنَاهُ.

اسحاق هم دزهري نه په خپل سند سره دا روايت نقل كړي دي وائي چه حديث بيان كړې دې ماته يومزني چه د سعيد بن المسيب نه ئې روايت بيانونو او د حديث متن ئې دتير شوي روايت په شان بيان كړو.

[۳۶۲۶] (۳) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عِكْرَمَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهُ يَغْنِي لِابْنِ صُورِيَا: "أَذْكُرْكُمْ بِاللَّهِ الَّذِي تَجَاكُمُ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ، وَأَقْطَعَكُمْ الْبَحْرَ، وَظَلَّلَ عَلَيْكُمْ الْغَمَامَ، وَأَنْزَلَ عَلَيْكُمْ الْمَنَ وَالسَّلْوَى، وَأَنْزَلَ عَلَيْكُمْ التَّوْرَةَ عَلَى مُوسَى أَتَجِدُونَ فِي كِتَابِكُمُ الرَّجْمَ؟" قَالَ: ذَكَرْتَنِي بِعَظِيمٍ وَلَا يَسْغُنِي أَنْ أَكْذِبَكَ، وَسَاقَ الْحَدِيثَ.

(۱): تفرد به أبو داود، وانظر حديث رقم (٤٨٨)، (تحفة الأشراف: ١٥٤٩٢) (ضعيف)

(۲): تفرد به أبو داود، وانظر حديث رقم (٤٨٨)، (تحفة الأشراف: ١٥٤٩٢) (ضعيف)

(۳): تفرد به أبو داود (صحيح)



د عکرمه نه روایت دې فرمائی چې نبی ﷺ د یهودیانو یو عالم، ابن صوریاته ووثیل زه تاسوته هغه الله رایادوم چاچه تاسوته دفرعون نه نجات درکړواوستاسو دپاره ئې په سمندر کښې لاره جوړه کړه او په تاسو باندې ئې دوریزی سوري وکړو او بیائې من اوسلوي نازل کړل، او بیائې په موسی ﷺ تورات نازل کړو ایاتاسوپه تورات کښې د رجم حکم نه دی لیدلي؟ ابن صوریاهه جواب کښې ووثیل ډیر لوي ذات دي یاد کړو اوس زما دپاره ددروغو ووثیلوهیخ گنجائش پاتې نشو او حدیث ئې تر اخره پورې بیان کړو.

د ترجمه الباب او حدیث نه معلومیدې چې د ذمی نه چه یهودی وو د هغه د عقیدې مطابق قسم واخستلې شو (بالله انزل التوراة علی موسی) دا حدیث په کتاب الحدود کښې په خپل مقام باندې راروان دې.

### بَابُ الرَّجُلِ يَحْلِفُ عَلَى حَقِّهِ

په خپل حق باندې د قسم کولو بیان

[۳۶۲۷] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابُ بْنُ نَجْدَةَ، وَمُوسَى بْنُ مَرْوَانَ الرَّقِّيُّ، قَالَا: حَدَّثَنَا بَقِيَّةُ بْنُ الْوَلِيدِ، عَنْ بَجْرِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ، عَنْ سَيْفٍ، عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّهُ حَدَّثَهُمْ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَضَى بَيْنَ رَجُلَيْنِ، فَقَالَ الْمَقْضِيُّ عَلَيْهِ لَمَّا أَدْبَرَ: حَسْبِيَ اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ يَلُومُ عَلَى الْعَجْزِ، وَلَكِنْ عَلَيْكَ بِالْكَيْسِ، فَإِذَا غَلَبَكَ أَمْرٌ، فَقُلْ: حَسْبِيَ اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ.

د عوف بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چې یوخل نبی ﷺ ددوه کسانو فیصله وکړله، چاچه مقدمه بیلي وو هغه د فیصلي اوریدونه پس چه کله روانید و نو اوئې وئیل زما دپاره الله تعالی کافی دې، اونبې ﷺ ورته اوفرمائیل یقینا الله تعالی انسان په خپل [۳۶۲۴] په څه وجه باندې کومه مقدمه و بیلی نو پکارده چه داسې اووایی الله تعالی زما دپاره کافی دې او هغه بهترین کار ساز دې.

#### شرح الحديث :

قوله: (أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَضَى بَيْنَ رَجُلَيْنِ. فَقَالَ الْمَقْضِيُّ عَلَيْهِ لَمَّا أَدْبَرَ حَسْبِيَ اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ الخ) یعنی رسول الله ﷺ د دوه سرو ترمینځه په یو قضیه کښې یو فیصله اوفرمائیل د کوم سړی خلاف چه هغه فیصله وه چه کله هغه روان شو نو وې وئیل (حسبی الله ونعم الوکیل) چه ښه ده زمونږ مالک هم الله دې په ظاهر کښې د هغه مطلب دا وو چه دا فیصله صحیح نه ده شوې حق فی الواقع زما وو نو په دې باندې رسول الله ﷺ هغه سړی ته خبردارې ورکړو او وې فرمائیل ای روره! الله پاک عاجز او بې وسه کیدل نه خوښوی، سړی له پکار دی چه د خپلې پوهې نه کار واخلی او د حصول مقصد دپاره کوشش او کړی خپه په خپه دې نه کینی، خو چه ټول تدبیرونه اختیار کړی او یو شکل ئې په فهم کښې رانشی نو بیادې دا دعا اوایی (حسبی الله ونعم الوکیل)

(۱): تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۹۱۰)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۲۵/۶) (ضعيف)

په دې ترجمه الباب سره د مصنف رحمۃ اللہ علیہ څه غرض دې تر یوې مودې پورې پکښې بنده غور کولو، یو غرض مې دا په فهم کښې راغلو چه که مدعی بینه پیش نه کړې شی نو قاضی له پکار دی چه بغیر د تاخیر نه د مدعی علیه نه قسم اخستلو سره د هغه په حق کښې فیصله اوکړی اگر چه په بعض قرائنو او آثارو سره صدق د مدعی ښکاره کیږي. خود هغې پروانه دی کول پکار، د دې حدیث په مضمون کښې غور کولو نه هم دا په فهم کښې راځي. واللہ تعالیٰ اعلم، والحديث اخرجہ النسائي، قالہ المنذري.

### باب فِي الْحَبْسِ فِي الدَّيْنِ وَغَيْرِهِ

د قرض په معامله کښې د مقروض د تړلو بیان

یعنی مدیون که د دین په ادا کولو کښې تاخیر اوکړی سره د مالداري او قدرت علی قضاء الدین نه نودهغه تال متول باندې هغه قید کولی شي، حدیث الباب په دې کښې ښکاره دې.

[۳۶۲۸] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ وَبَرِ بْنِ أَبِي دَلِيلَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ مَيْمُونٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الشَّرِيدِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "لَى الْوَاجِدِ يُجَلَّ عِرْضُهُ وَعُقُوبَتُهُ"، قَالَ ابْنُ الْمُبَارَكِ: يُجَلَّ عِرْضُهُ: يُغْلَظُ لَهُ، وَعُقُوبَتُهُ: يُحْبَسُ لَهُ.

عمرو بن شريد دخپل پلار نه روايت کوی نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلى دی د مالداره سرې قرض نه ادا کول دده د عزت خرابول ثابتوي او دده د پاره سزا ثابتوي،

[۳۶۲۹] (۲) حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، أَخْبَرَنَا هِرْمَاسُ بْنُ حَبِيبٍ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْبَادِيَةِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: "أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِغَيْرِمِ لِي، فَقَالَ لِي: الزَّمُهُ، ثُمَّ قَالَ لِي: يَا أَخَانِي تَمِيمٌ، مَا تُرِيدُ أَنْ تَفْعَلَ بِأَسِيرِكَ؟".

ابن مبارك وټیلی دی د عزت خرابیدونه مراد داد چه ده ته به سختي خبرې وشي اود سرانه مراد قید کیدل دی.

[۳۶۳۰] (۳) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ بَهْزِ بْنِ حَكِيمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "حَبَسَ رَجُلًا فِي تَهْمَةٍ".

هرماس بن حبيب چه د خنگل اوسیدونکي دې دخپل پلار نه او هغه دده د نیکه نه روايت کوی فرمائی چه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې مې خپل یو قرضدارې حاضر شونی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل دده سره یو خانې گرځه اوبیا ئې او فرمائیل ای دیني تمیم وروره ته دخپل قيدي سره څه کول غواړي؟

قوله: ﴿عَنْ بَهْزِ بْنِ حَكِيمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - حَبَسَ رَجُلًا فِي تَهْمَةٍ﴾

(۱): سنن النسائي للبيوع ۹۸ (۶۹۳)، سنن ابن ماجه/الصدقات ۱۸ (۲۴۲۷)، (تحفة الأشراف: ۴۸۳۸)، وقد أخرج: مسند احمد (۳۸۹، ۳۸۸، ۲۲۲/۴) (حسن)

(۲): سنن ابن ماجه/الصدقات ۱۸ (۲۴۲۸)، (تحفة الأشراف: ۱۵۵۴۴) (ضعيف)

(۳): سنن الترمذي للديات ۲۱ (۱۴۱۷)، سنن النسائي لقطع السارق ۲ (۴۸۹۰)، (تحفة الأشراف: ۱۱۳۸۲)، وقد أخرج: مسند احمد (۴۴۷/۴، ۴، ۲/۵) (حسن)



## شرح الحديث :

يعني رسول الله ﷺ يو سړې صرف د شبه په وجه باندې او د هغه د تهمتې كيدو په وجه باندې، هغه قيد كړو خو ورځې، د دې حديث نه ثابتېږي چه د قاضي دپاره شخص متهم لره قيد كول د تحقيق حال او تفتيش دپاره جائز دى، د دې حبس نوم حبس استظهار دې نه حبس عقوبت، مثلاً په يو محله كښې غلا اوشوه په هغه محله كښې بعض خلق داسې دى چه د هغوى په باره كښې د غلا شك او شبهه د هغوى د ظاهري حال پيش نظر ده نو دلته كه قاضي مناسب گنړي او ضرورت گنړي چه د اصل غل تحقيق او تفتيش اوشى دې خو كسانو لره نظر بند كړي نو په دې كښې هيڅ باك نشته بلكه عين مصلحت دې.

[۳۶۳۱] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ قُدَامَةَ، وَمُؤَمَّلُ بْنُ هِشَامٍ، قَالَ ابْنُ قُدَامَةَ، حَدَّثَنِي إِسْمَاعِيلُ، عَنْ بَهْزِ بْنِ حَكِيمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ ابْنُ قُدَامَةَ: إِنَّ أَخَاهُ أَوْعَمَةَ، وَقَالَ مُؤَمَّلٌ: إِنَّهُ قَامَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَخْطُبُ، فَقَالَ: جِيرَانِي بِمَا أَخَذُوا، فَأَعْرَضَ عَنْهُ مَرَّتَيْنِ، ثُمَّ ذَكَرَ شَيْئًا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: خَلَّوْا لَهُ عَنْ جِيرَانِهِ، لَمْ يَذْكُرْ مُؤَمَّلٌ وَهُوَ يَخْطُبُ.

بهبز بن حكيم دپلارنه او هغه دده دنيكه نه روايت كوي چه نبى ﷺ يو سړې دتهمت په وجه قيد كړې وو بهبز بن حكيم دپلارنه او هغه دده دنيكه نه روايت كوي چه ابن قدامه په خپل روايت كښې دورور ياتره ذكر كړې دې او مؤمل پخپل روايت كښې ونيلى دى چه هغه نبى ﷺ ته راغې او ودریدو اونبى ﷺ په دې وخت كښې خطبه وركوله هغه اوونيل زما گاونډيانو زما حق وهلي دې نبى ﷺ دده نه دوه پيري مخ واړولو اوبيا ئې دڅه شي ذكر وكړو نبى ﷺ او فرمايل دا كس دخپلو گاونډيانو نه خلاص كړئ په دې روايت كښې مؤمل ..وهو يخطب، لفظ نه دې بيان كړې.

قوله: «عَنْ بَهْزِ بْنِ حَكِيمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ - إِنَّهُ قَامَ إِلَى النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَهُوَ يَخْطُبُ فَقَالَ جِيرَانِي بِمَا أَخَذُوا. فَأَعْرَضَ عَنْهُ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ ذَكَرَ شَيْئًا فَقَالَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - « خَلَّوْا لَهُ عَنْ جِيرَانِهِ »

## شرح الحديث :

د بهز د نيکه نوم معاويه بن حیده ﷺ دې هغه روايت كوي چه كله رسول الله ﷺ خطبه وركوله نو ما د هغوى خوا كښې اودريدو سره عرض او كړو چه زما گاونډيان ولې نيولي شوي دي؟ رسول الله ﷺ دې طرف ته التفات او نه فرمائيلو دوه كرتې دې ته ضرورت راغلو، راوى وائى چه بيا معاويه نور هم څه عرض او كړو لږ ساعت پس رسول الله ﷺ او فرمائيل د دې سړي گاونډيان دې پريخودلې شي.

ظاهره دا ده چه د معاويه گاونډيان به د څه واقعي په پيښيدلو سره د څه شك او شبهه په بناء باندې قيد كړې شوي وو، كوم چه قيد كړې شو هغوى د معاويه گاونډيان وو، هغوى رسول الله ﷺ ته د هغوى د طرف نه صفائي پيش كړه په دې باندې رسول الله ﷺ هغوى پريخودل.

۱: (تقرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۳۸۹) (حسن الإسناد)

دا چه د حديث مونږ كومه شرح كړې ده په دې صورت كښې به «بم اخذوا» فعل مجهول وي او كه دا د معروف صيغه اولوستلې شي «بم اخذوا» نو په دې صورت كښې د دې دا مطلب كيدې شي «خل جيرانى بما اخذوا اى على ان اودى عنهم ما اخذوا» زما گاونډيان پرېږدئ په داسې طريقه چه زه به د هغوى اخستلې شوې قرض د هغوى د طرف نه ادا كړم، يعنى دا خلق د قرض د نه ادا كولو د وجې نه قيد وو دې صحابى د هغوى د طرف نه د اداء قرض كفالت قبول كړو نو هغوى پريخودلي شو.

## بَابُ فِي الْوَكَالَةِ

### دوكالت بيان

(دكتاب القضاء سره مناسبت):

د كتاب القضاء بيان شروع دې او د قضا دپاره وكيلا ن هم وي.

[۳۶۳۲] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعْدٍ بْنُ إِبرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا عُمَى، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ ابْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي نُعَيْمٍ وَهَبِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّهُ سَمِعَهُ يُحَدِّثُ، قَالَ: "أَرَدْتُ الْخُرُوجَ إِلَى خَيْبَرَ، فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، وَقُلْتُ لَهُ: إِنِّي أَرَدْتُ الْخُرُوجَ إِلَى خَيْبَرَ، فَقَالَ: إِذَا أَتَيْتَ وَكَيْلِي فَخُذْ مِنْهُ خَمْسَةَ عَشَرَ وَسَقًا، فَإِنْ ابْتَغَى مِنْكَ آيَةً فَضَعْ يَدَكَ عَلَى تَرْقُوَتِهِ."

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه ماخيبر ته د تلو اراده وكړه اودنبي صلى الله عليه وسلم په خدمت كښې حاضر شوم اود سلام كولو نه پس مې عرض وكړو چه زماخيبر ته دتلو اراده ده نبي صلى الله عليه وسلم راته اوفرمايل كله چه زما دوكيل سره ملاو شي نو پنځلس وسقه كجورې ورنه واخله كه چرې هغه ستانه دنخي طلب وكړي نوته خپل لاس دهغه په مړۍ باندې كيږده (دادهغه علامه وه).

### مضمون حديث :

جابر رضي الله عنه فرمائي چه يو كرت زما اراده خيبر ته د تلو اوشوه زه د رسول الله صلى الله عليه وسلم په خدمت كښې حاضر شوم او هغوى ته مې سلام عرض كړو او د خپل سفر اراده مې ورته ښكاره كړه نو په دې باندې رسول الله صلى الله عليه وسلم ماته اوفرمايل چه ته كله خيبر ته زمونږ فلانى وكييل ته لاړ شي نو د هغه نه پنځلس وسقه كهجورې يا غله زما په نوم واخله. كه هغه په دې باندې څه دليل يا علامت طلب كړي نو د هغه په ترڼو (تشدت) باندې خپل لاس كيږده. يعنى د خلق نه په لاندې حصه باندې، رسول الله صلى الله عليه وسلم به غالبا خپل وكييل ته فرمايلې وو چه كه تانه څوك زما په نوم باندې څوك څه غواړي نو كه هغه ستا په دليل طلب كولو باندې هغه ځانې كښې لاس كيږدى نو پوهه شه چه هغه زما د طرف نه دې.

(۱) : تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۳۱۳۱) (ضعيف)



## باب فِي الْقَضَاءِ د قضا د احکامو بیان

[۳۶۳۳] (۱) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا الْمُثَنَّى بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ بُشَيْرِ بْنِ كَعْبٍ الْعَدَوِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «إِذَا تَدَارَأْتُمْ فِي طَرِيقٍ فَاجْعَلُوا سَبْعَةَ أَذْرُعٍ».

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و سلم فرمایلي دي کله چې تاسود لاري په باره کښې په جگړه کښې مبتلا شې نو لار به داوه لاسونو په اندازه پرېږدئ.

### شرح الحديث :

قوله: «عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ «إِذَا تَدَارَأْتُمْ فِي طَرِيقٍ فَاجْعَلُوا سَبْعَةَ أَذْرُعٍ»» د دې حديث مطلب دا دې چې که يو زمکه په ميراث کښې د خو ورنړو تر مينځه يا د خو کسانو تر مينځه مشترکه وي او اوس هغوی د هغې د ابادولو اراده او کړی چې په هغې کښې ئې دواړو طرفونو ته د کور جوړولو خيال دې نو اوس چې په مينځ کښې کومه لاره پريخودلې شې د کورونو په مينځ کښې د تلو راتلو هغه څومره کيدل پکار دې پس که هغوی ټول په يو خاص مقدار باندې متفق شې نو ښه ده او که اختلاف ئې راشي نو بيا په دې صورت کښې هغه څه کول پکار دې کوم چې په حديث الباب کښې دې يعنې د اووه ذرع په قدر پلنه کلي دې پريخودلې شې.

والحديث أخرجه الترمذي وابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۶۳۴] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، وَابْنُ أَبِي خَلْفٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ الْأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا اسْتَأْذَنَ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ أَنْ يَغْرِزَ خَشَبَةً فِي جِدَارِهِ فَلَا يَمْنَعُهُ، فَتَنَكَّسُوا، فَقَالَ: مَا لِي أَرَاكُمْ قَدْ أَعْرَضْتُمْ؟ أَلَقِيَّتَهَا بَيْنَ أَكْتَافِكُمْ» قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَذَا حَدِيثُ ابْنِ أَبِي خَلْفٍ وَهُوَ أَثَمٌ.

د ابوهريره رضي الله عنه نه چې نبی صلی الله علیه و سلم فرمایلي دي کله چې يو کس په تاسو کښې دخپل مسلمان ورور نه دهغه په ديوال دلرگي ايخودلو اجازت وغواړي نو انکار دي ورته روایت دې فرمائی نه کوي، خلقو چې دا خبره واوریده نوسرونه ئې ښکته کړل، بيا ابوهريره رضي الله عنه او فرمايل څه وجه ده چې تاسودا حديث په پوره توجه سره نه اورئ دا حديث به زه ستاسو داوږوپه مينځ کښې اچوم يعنې بار بار به ئې درته اوروم.

قوله: «إِذَا اسْتَأْذَنَ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ أَنْ يَغْرِزَ خَشَبَةً فِي جِدَارِهِ فَلَا يَمْنَعُهُ»

### شرح الحديث :

يعنې که په تاسو کښې يو سړې د خپل ورور نه د دې خبرې اجازت او غواړي چې هغه د هغه په ديوال کښې يو لرگي ښخ کړي مثلاً د هغه په ديوال باندې د خپل چمت تير کيږدي يا يو

(۱): سنن الترمذي/الأحكام ۲۰ (۱۳۵۶)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۱۶ (۲۳۳۸)، (تحفة الأشراف: ۱۲۲۲۳)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/المظالم ۲۹ (۲۴۷۳)، صحيح مسلم/المساقاة ۳۱ (۱۶۱۳)، مسند احمد (۴۷۴، ۴۶۷۲) (صحيح)  
(۲): صحيح البخاري/المظالم ۲۰ (۲۴۶۳)، صحيح مسلم/المساقاة ۲۹ (۱۶۰۹)، سنن الترمذي/الأحكام ۱۸ (۱۳۵۳)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۱۵ (۲۳۳۵)، (تحفة الأشراف: ۱۳۹۵۴)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/الأقضية ۲۶ (۳۲)، مسند احمد (۲۴۰/۲، ۲۷۴، ۲۹۶، ۴۶۳) (صحيح)

ګاونډی د بل ګاونډی په دیوال کښې میخ ټک وهی نو هغه له پکار دی چه انکار دې نه کوی. د امام احمد رحمته الله علیه په نزد دا نهی د تحریم دپاره ده او د جمهورو په نزد د تنزیه دپاره، د هغوی په نزد دا حدیث په حسن معاشرت باندې محمول دې، وړاندې په روایت کښې دې **﴿فَنَكْسُوا فَقَالَ مَا لِي أَرَأَيْكُمْ﴾** راوی وائی چه کله ابوهریره رضی الله عنه دا حدیث د خلقو مخکښې بیانولو نو هغوی لږ شان سر ښکته کړو په ځانې د دې چه سر اوچتولو سره ئې د حدیث سماع په ښه طریقه کولې، ابوهریره رضی الله عنه هغوی اورتل او خفه کیدو سره ئې او فرمائیل: څه خبره ده د دې حدیث په اوریدو باندې اعراض ولې کوی تاسو که هر څه کوی زه به دا حدیث ستاسو وړاندې بیانوم، او یا دا مطلب دې چه دا میخ به زه ستاسو په سینو کښې ټک وهم او هغه کړی به ستاسو په اوږو باندې ضرور ږدم. دا د ابوهریره رضی الله عنه د طرف نه حاضرینو ته په مضمون حدیث باندې عمل کولو دپاره په سختی سره تاکید او تنبیه ده.

[۳۶۳۵] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ، عَنْ لُؤْلُؤَةَ، عَنْ أَبِي صِرْمَةَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: غَيْرَ قُتَيْبَةَ فِي هَذَا الْحَدِيثِ، عَنْ أَبِي صِرْمَةَ صَاحِبِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهُ قَالَ: "مَنْ ضَارَّ أَضَرَ اللَّهُ بِهِ، وَمَنْ شَاقَّ شَاقَّ اللَّهُ عَلَيْهِ".

امام ابو صرمه فرمائی چه امام ابوداؤد وئیلی دی دقتیبه نه علاوه نورو راویانو ددې روایت په سند کښې دلفظ صاحب النبی ذکر کړې دې چه دهغه نه روایت دې چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی څوک چه چاته تکلیف یا نقصان ورسوي نوالله تعالی به هغه ته نقصان او تکلیف ورسوي او څوک چه دچاسره عداوت او دشمنی کوي نوالله تعالی به دده سره عداوت اودشمنی وکړي.

**﴿مَنْ ضَارَّ أَضَرَ اللَّهُ بِهِ وَمَنْ شَاقَّ شَاقَّ اللَّهُ عَلَيْهِ﴾** کوم سړې چه نورو ته ضرر ورکوی نو الله پاک هغه ته ضرر رسوی او کوم سړې چه نور په مشقت کښې اچوی الله پاک په هغه باندې مشقت اچوی.

والحدیث اخرجه الترمذی والنسائی، قاله المنذری  
د دې حدیث د باب سره څه مناسبت دې، په ظاهر کښې خو دا دې چه قاضیانو ته د قسم قسم خلقو مقدمات او فیصلې راځی نو په هغوی کښې بعض ظالمان او بعض مظلوم وی نو کیدې شی چه مصنف رحمته الله علیه دې طرف ته اشاره کوی چه په داسې موقعه کښې پکار دی چه د موقع او محل مناسب د وعد او وعید احادیث خصمینو ته واوروی. کیدې شی چه په هغوی کښې کوم یو په باطل باندې وی د هغه په حق کښې دا وعید موثر شی او په خپله د خپل ناحق خصومت نه منع شی لکه چه په احادیثو کښې د دې مثالونه ملایوږی، (والله تعالی اعلم)

(۱): سنن الترمذی للبر والصله ۲۷ (۱۹۴۰)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۱۷ (۲۳۴۲)، (تحفة الأشراف: ۱۲۰۶۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۵۳/۳) (حسن)



[۳۶۳۶] حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْعَتَكِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا وَاصِلٌ مَوْلَى أَبِي عِيْنَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا جَعْفَرٍ مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ حَدَّثْتُ، عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ "أَنَّهُ كَانَتْ لَهُ عَصَدٌ مِنْ نَخْلٍ فِي حَاطِطٍ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ، قَالَ: وَمَعَ الرَّجُلِ أَهْلُهُ، قَالَ: فَكَانَ سَمُرَةُ يَدْخُلُ إِلَى نَخْلِهِ فَيَتَأَذَّى بِهِ وَيَشْقَى عَلَيْهِ، فَطَلَبَ إِلَيْهِ أَنْ يَبِيعَهُ، فَأَبَى، فَطَلَبَ إِلَيْهِ أَنْ يُنَاقِلَهُ، فَأَبَى، فَأَبَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ، فَطَلَبَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَبِيعَهُ، فَأَبَى، فَطَلَبَ إِلَيْهِ أَنْ يُنَاقِلَهُ، فَأَبَى، قَالَ: فَهَبْهُ لَهُ وَلَكَ كَذَا وَكَذَا أَمْرًا رَغْبَةً فِيهِ، فَأَبَى، فَقَالَ: أَنْتَ مُضَارٌّ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلْأَنْصَارِيِّ: أَذْهَبَ فَأَقْلَعُ نَخْلَهُ."

د سمره بن جندب رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه دیوانصاري په باغ کښې دکجورو یوڅوونې وي اودده سره دده ښځه اودده بچی هم وو، نوسمره چه به کله خپلو ونوله تلو نوانصاري ته به تکلیف وو اودده په راتلوسره به هغه ته تکلیف رسیدو نوانصاري اوغوبنسل چه دغه ونې دسمره نه په قیمت واخلي سمره دخرڅولونه انکاروکړو، بیا ئې ورنه دغه ونې په تبادله وغوښتلي نوسمره بیا هم انکار وکړو بهرحال هغه نبی صلی الله علیه و آله ته ددې ذکر وکړو نبی صلی الله علیه و آله سره ته اوفرمائیل خپلې ونې خرڅې کړه هغه دنبی صلی الله علیه و آله خبره ونه منله نویا ورته نبی صلی الله علیه و آله اوفرمائیل خپلې ونې ورسره بدل کړه لیکن داخبره ئې هم ونه منله نونبی صلی الله علیه و آله اوفرمائیل دغه ونې دي انصاری ته هبه کړه اوددې په عوض کښې دا واخله نبی صلی الله علیه و آله ډیر ترغیب ورکړو مګر سره یوه خبره هم ونه منله، په دې وخت کښې نبی صلی الله علیه و آله اوفرمائیل ته نورو خلکو ته تکلیف رسونکې یې اوبیا ئې انصاری ته اوفرمائیل دده ونې وباسه.

«عن سمرة بن جندب رضي الله عنه انه كانت له عصدة من نخل في حائط رجل من الانصار»

### مضمون حدیث :

سیدنا سمره رضي الله عنه خپله واقعه پخپله بیانوي چه ما څو بوتې د یو انصاری په باغ کښې لګولې وو. سمره رضي الله عنه فرمائی نچچه دي انصاری سره په باغ کښې د هغه بال بچ هم وو، هغوی فرمائی چه زه به د خپلو بوتو د خیال ساتلو دپاره هغه باغ ته تلم راتلم چه د هغې په وجه به هغه باغ والا ته تکلیف وو او هغه به په مشقت کښې پریوتلو، هغوی فرمائی چه د باغ والا ماته درخواست اوکړو چه زه خپل بوتې د هغه په لاس باندې خرڅ کړم ما د بیع نه انکار اوکړو، بیا هغه مانه د دې خبرې درخواست اوکړو چه زه خپل بوتې د هغه د باغ نه منتقل کړم، ما د دې نه هم انکار اوکړو، هغه انصاری لاړو او رسول الله صلی الله علیه و آله ته ئې زما شکایت اوکړو، هغوی فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله زه راطلب کړم او هم دغه شان ئې دواړه خبرې زما مخې ته کیخودلې کومې چه هغه انصاری کړې وې ما رسول الله صلی الله علیه و آله ته هم انکار اوکړو رسول الله صلی الله علیه و آله دریم څیز زما مخې ته کیخودلو چه خپل څیز هغه ته هبه کړه په دې باندې به تاته دومره دومره ثواب ملاوښی. ما د دې نه هم انکار اوکړو په دې باندې رسول الله صلی الله علیه و آله ما ته اوفرمائیل «انت مضار» چه ته ډیر ضرر رسونکې ئې او رسول الله صلی الله علیه و آله هغه انصاری ته اووې چه د ده بوتې اوباسه او بهر ئې اوغورځوه.

سیدنا سمره رضي الله عنه چه دا خپله واقعه چه په هغې کښې د هغوی ضد موندلې شی دا هغوی

(۱) : تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۶۶۳۳) (ضعیف)

خپله بیان فرمائی او گویا خپله پکښې خپل عیب او کمې بیانوی دا د دې حضراتو د غایت اخلاص او دیانت دارئ خبره ده چه کوم حدیث ئې څنگه د رسول الله ﷺ نه اوریدلې دې هغه بعینه هم هغه شان نقل کړې شی اگر که هغه خپله د هغوی خلاف ولې نه وی،  
 ﴿سکت المنذرى عن تخريج الحديث واقتصر على قوله فى سماع الباقر من سمرة بن جندب نظر فقد نقل من مولده و وفاة سمرة يتعذر معه سماعه منه وقيل فيه ما يمكن معه السماع منه.... والله عزوجل اعلم اهـ (عون)﴾

[۳۶۳۷] حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ حَدَّثَهُ: "أَنَّ رَجُلًا خَاصَمَ الزُّبَيْرَ فِي شِرَاجِ الْحَرَّةِ الَّتِي يَسْقُونَ بِهَا، فَقَالَ الْأَنْصَارِيُّ: سَرَحَ الْمَاءَ يَمْرُ، فَأَبَى عَلَيْهِ الزُّبَيْرُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلزُّبَيْرِ: اسْقِ يَا زُبَيْرُ، ثُمَّ أُرْسِلْ إِلَى جَارِكَ، فَقَضِبَ الْأَنْصَارِيُّ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَنْ كَانَ ابْنُ عَمَّتِكَ؟ فَتَلَوْنَ وَجْهَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ قَالَ: اسْقِ، ثُمَّ أَحْبَسَ الْمَاءَ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَى الْجَدْرِ، فَقَالَ الزُّبَيْرُ: فَوَاللَّهِ إِنِّي لَأَحْسَبُ هَذِهِ الْآيَةَ نَزَلَتْ فِي ذَلِكَ: فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ سُورَةَ النَّسَاءِ آيَةً ٦٥."

د عبد الله بن زبیر نه روایت دې فرمائی چه یو کس د زبیر سره دنالو د معاملي په باره کښې په جگړه وو کوي چه دکار ژني زمکې د طرف نه راغلې وي اود دې نالونه به پتې سراب کیدل انصاری او وئیل اوبه مه بندوه اوزبیر نه ددې نه انکار وکړو نبی ﷺ زبیر ته اوفرمائیل خپل پتې اوبه کړه اوبیا اوبه خپل گاونډي ته پرېږده راوی وائی په دې خبره باندي انصاری ته غصه ورغله او وئې وئیل ای دالله رسوله زبیر خوستا د ترور څوي د نبی ﷺ چه دا خبره واوریده نومخ مبارک ئې د غصې نه سور شو اوزبیر ته ئې اوفرمائیل چه خپل پتې اوبه کړې نو اوبه بندي کړه تردې پورې چه اوبه به دپتو په پولو باندي رواني شي، زبیر او وئیل په الله قسم زما خیال دې چه دا ایت مبارکه: «فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك» په دې سلسله کښې نازل شوې دې.

### مضمون حدیث :

قوله: ﴿عَنْ عُرْوَةَ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ حَدَّثَهُ أَنَّ رَجُلًا خَاصَمَ الزُّبَيْرَ فِي شِرَاجِ الْحَرَّةِ الَّتِي يَسْقُونَ بِهَا﴾ الخ ﴿دا مشهور حدیث دې چه د هغې مضمون دا دې عبد الله بن زبیر ﷺ د خپل پلار واقعہ نقل فرمائی چه یو سړې زما د پلار زبیر سره شراج حره یعنی د مقام حره د اوبو د لختو په باره کښې چه د هغې په ذریعه به خلقو پتې اوبه کول جهگړه اوشوه هغه انصاری سړې زما پلار ته وئیل چه ته اوبه پرېږده چه هغه تیریدو سره زما پتې ته راشی، زبیر ﷺ د داسې کولو نه انکار او کړو ځکه چه قاعده دا ده چه د کوم سړې پتې او زمکه پورته طرف ته وی یعنی نهر سره تړلې، اول حق هغه ته د خړوب کولو دي د هغه نه پس د هغه نه د لاندې پتې، او دې انصاری سړې په زبیر ﷺ باندي د دې خلاف کول غوښتل چه کله دا مسئله رسول

۱: صحیح البخاری/المساقاة ۶ (۲۳۶۰)، ۸ (۲۳۶۲)، الصلح ۱۲ (۲۷۰۸)، تفسیر سورة النساء ۱۲ (۴۵۸۵)، صحیح مسلم/الفضائل ۳۶ (۲۳۵۷)، سنن الترمذی/الأحكام ۲۶ (۱۳۶۳)، تفسیر النساء (۳۲۰۷)، سنن النسائي/القضاء ۲۶ (۵۴۱۸)، سنن ابن ماجه/المقدمة ۲ (۱۵)، الرهون ۲۰ (۲۴۸۰)، (تحفة الأشراف: ۵۲۷۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۱۶۵) (صحیح)



الله ﷺ ته راغله نو هغوی د قاعدې مطابق زبیر رضی الله عنه ته هم دغه او فرمائیل چه ته خپل پټې خړوب کړه د هغې نه پس لاندې د خپل گاونډی دپاره پرېږده په دې باندې هغه انصاری خفه شو او وې وئیل «ان کان ابن عمک» (چه ستاسو دا فیصله هم په دې وجه ده) چه هغه ستاسو د ترور خوښې دې، زبیر بن العوام رضی الله عنه د رسول الله ﷺ د ترور صفیه بنت عبدالمطلب خوښې دې (لم تسلم من عمامته الا هي على الصحيح كذا في التجريد للذهبي) «فَتَلَوْنَ وَجْهَ رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم الخ» د انصاری په دې قول باندې د رسول الله ﷺ د مخ مبارک رنگ بدل شو او هغوی زبیر رضی الله عنه ته او فرمائیل چه رومبې هم ته اوبه ورکړه او ترخو پورې چه اوبه د پټې آخری سر ته نه وی رسیدلې مه ئې پرېږده یعنی اول خو رسول الله ﷺ د مسامحت او ايثار حکم فرمائیلې وو چه د خپل حق پوره کیدو نه مخکښې اوبه پرېږده خو چه کله هغوی د دې انصاری طرز عمل اولیدو نو بیا رسول الله ﷺ په هغه باندې زجرا او تنبیها زبیر رضی الله عنه ته د استیفاء حق حکم او فرمائیلو (چه دا سرې د رعایت قابل نه دي) (په بذل المجهود کښې لیکلې دی که دا انصاری مسلمان وو نو د هغه دا قول زلت شیطانی وو په غصه کښې هغه ته احساس پیدا نه شو چه زه څه وایم او که منافق وو نو بیا خود اشکال هیڅ خبره نشته او په هغه باندې به د انصاری اطلاق بناء بر اتحاد قبيله وی. قال المنذرى واخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه واخرجه البخاری ومسلم من حديث عبد الله بن زبیر عن ابيه واخرجه البخاری والنسائی من حديث عروة بن زبیر عن ابيه آه (عون)

[۳۶۳۸] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أَسَامَةَ، عَنِ الْوَلِيدِ يَعْنِي ابْنَ كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي مَالِكٍ بْنِ نَعْلَبَةَ، عَنْ أَبِيهِ نَعْلَبَةَ بْنِ أَبِي مَالِكٍ، أَنَّهُ سَمِعَ كِبْرَاءَهُمْ يَذْكُرُونَ: أَنَّ رَجُلًا مِنْ قُرَيْشٍ كَانَ لَهُ سَهْمٌ فِي بَنِي قُرَيْظَةَ، فَخَاصَمَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي مَهْزُورٍ يَعْنِي السَّيْلِ الَّذِي يَقْتَسِمُونَ مَاءَهُ، فَقَضَى بَيْنَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ الْمَاءَ إِلَى الْكُعْبَيْنِ لَا يَخُوسُ الْأَعْلَى عَلَى الْأَسْفَلِ.

دثعلبه بن ابی مالک رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه مادخپلو مشرانونه اوریدلی دی چه یو قریشی دبنی قریظه قبیلې دیو کس سره په اوبو کښې شریک وو نودغه کس یوخل نبی صلی الله علیه و آله ته داوبو دهغې ولې په باره کښې فریاد وکړو چه دکومې ولې اوبه به خلقو پخپل مینځ کښې تقسیمولې، نبی صلی الله علیه و آله فیصله وکړه ددوی په مینځ کښې چه کله اوبه دگیتو پورې ورسیرې نو پاسنې کس به په لاندیني کس باندې اوبه نه بندوي.

قوله: «أَنَّ رَجُلًا مِنْ قُرَيْشٍ كَانَ لَهُ سَهْمٌ فِي بَنِي قُرَيْظَةَ فَخَاصَمَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- فِي مَهْزُورٍ الخ» مهزور د بنی قریظه د یوې وادی نوم دې او دلته د دې نه مراد سیل مهزور دې لکه چه د دې نه روستو روایت کښې دی یعنی د سیل مهزور په باره کښې د یو قریشی سرې چه د هغه څه زمکه یا باغ په ارض بنو قریظه کښې وو چا سره د اوبه خور په سلسله کښې اختلاف شو نو د هغې په باره کښې رسول الله ﷺ فیصله او فرمائیله چه پورته

(۱) پس امام بخاری رحمته الله په دې حدیث باندې باب قائم کړې دې باب اذا اشار الامام بالصلح فابی حکم علیه بالحکم البین)

(۲) تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۵۳۸)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه/الرهون ۲۰ (۲۴۸۱) (صحيح)

پټی کښې چه کله اوبه پورته گیتو ته راورسی نو د هغې نه پس دې اوبه بندوی بلکه وړاندې دې ورکړی. (والحدیث سکت عنه المنذری اهـ) (عون)

[۳۶۳۹] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنِي أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنُ الْحَارِثِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "قَضَى فِي السَّيْلِ الْمَهْزُورِ أَنْ يُمْسِكَ حَتَّى يَيْلَمَ الْكُعْبَيْنِ، ثُمَّ يُرْسِلَ الْأَعْلَى عَلَى الْأَسْفَلِ".

عمرو بن شعيب دخپل پلار نه اوهغه دده دنيکه نه روايت کوي فرمائي چه نبی ﷺ دمهور (د يو وادی نوم دې) دنهر په سلسله کښې داسې فيصله کړيوه کله چه ددې نهر اوبه گیتو پورې ورسيرې نو دا دې پاسنی کس (دچا چه زمکه بره وي) په لاندینی کس باندې اوبه بندي کړي اوبياچی برني کس لاندینی ته اوبه پریردی.

[۳۶۴۰] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ عُمَانَ حَدَّثَهُمْ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي طَوَالَةَ، وَعَمْرُو بْنُ يَحْيَى، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ: "اخْتَصَمَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلَانِ فِي حَرِيمٍ نَخْلَةٍ فِي حَدِيثٍ أَحَدُهُمَا، فَأَمَرَ بِهَا قَدْرَ عَتٍّ، فَوُجِدَتْ سَبْعَةُ أَذْرَعٍ، وَفِي حَدِيثِ الْآخَرِ، فَوُجِدَتْ خَمْسَةُ أَذْرَعٍ، فَقَضَى بِذَلِكَ"، قَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ: فَأَمَرَ بِجَرِيدَةٍ مِنْ جَرِيدِهَا قَدْرَ عَتٍّ.

د ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ نه روايت دې فرمائي چه دوه کسانو نبی ﷺ ته دهغې زمکې په باره کښې جگړه راوړه کومه چه دباغ خواته وه، دیوراري بیان دې چه نبی ﷺ ددې زمکې دناپ کولو حکم وکړو نودغه زمکه اوه لاسه وختله او بل راوی وئیلی دی چه پنځه لاسه وختله اونبی ﷺ ددې فيصله وکړه، عبد العزیز وئیلی دی چه نبی ﷺ هندي ونو په لختوباندې ددې زمکې دناپ کولو حکم کړې وو، اوبیادازمکه ناپ کړې شوه.

### شرح الحديث:

قوله: (عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ اخْتَصَمَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- رَجُلَانِ فِي حَرِيمٍ نَخْلَةٍ الخ: د حریم نه مراد خوا کښې ځانې دې لکه چه وئیلې شی حریم د مصلی د کوم ذکر چه په ابواب السترة کښې تیر شوي دي په دې حدیث کښې د خریم نخله ذکر دې یعنی د اونې نه لاندې هغه ځانې کوم چه د دې اونې حق گنرلې شی، مضمون حدیث دا دې چه د دوه سرو په خریم نخله کښې اختلاف پیدا شو د دې تشریح دا ده چه یو سړی د خپل ځان دپاره د ارض موات احیاء کول غوښتل [شاره زمکه ئې آبادوله] اوس په دواړو زمکو باندې د فصل [جداوالی] دپاره د ځانې پریخودلو ضرورت وو اوس دا وه چه فصل ته څومره ځانې پریخودلې شی د هغې د مقدار په باره کښې د دې دواړو سره خپل مینځ کښې اختلاف شو، په دې باندې رسول الله ﷺ دا فیصله او فرمائیله چه هغه نخله دې ناپ کړې شی پس هغه اووه ذراع وه رسول الله ﷺ څومره چه د نخله طول وو هم د هغې په اندازه ئې د حریم [جداوالی] مقدار متعین کړوپس اوس دهمیشه دپاره هم داقاعده او ضابطه شوه چه د دوه ارض موات تر مینځه دې هم د دې مطابق د فصل [جداوالی] دپاره ځانې پریخودلې شی.

(۱) سنن ابن ماجه/الرهون ۲۰(۲۴۸۲)، (تحفة الأشراف: ۸۷۳۵) (حسن صحيح)

(۲) تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۴۴۰۸) (صحيح)



قوله: ﴿ قَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ فَأَمَرَ بِجَرِيدَةٍ مِنْ جَرِيدِهَا قُذِرَتْ ﴾ يعنى رسول الله ﷺ دا او فرمائيل چه د دې نخله د يو ښاخ په مقدار دې ذراع اخستلو سره ناپ کړې شى پس هم داسې اوکړې شوه. والحديث سکت عنه المنذرى (عون)

وهذا آخر کتاب القضاء وهو آخر ما اردت ايراده فى هذا الجزء وهو الجزء الخامس من الدر المنضود، وقد شرعت فيه العشرة الاخيرة من شهر رمضان ١٤٢٣ هـ الذى هو شهر الصبر والقرآن الذى انزل فيه القرآن، فى المدينة المنورة (١) على صاحبها الف الف تحية وسلام، وقد كنت نازلا فى العوالى فى بيت حبيب الله قربان على المظاهرى، وهو الذى اعانى فى جمع المواد والاملاء والتحرير حسب اعانته فى الجزء الرابع فجزاه الله تعالى وسائر من اعانى فى هذا التاليف احسن الجزاء وانا ارجو من لطف الله تعالى وكرمه ان يتم هذا الشرح فى ستة اجزاء فكانه بقى جزء واحد، واسأل الله سبحانه وتعالى السداد والتوفيق لما يحب ويرضى وان يكمل هذا الشرح ويجعله خالصا لوجهه الكريم ولا حول ولا قوة الا بالله العلى العظيم وصلى الله تعالى على خير خلقه سيدنا ومولانا محمد واله وصحبه اجمعين. آمين.

بسم الله الرحمن الرحيم

أَوَّلُ كِتَابِ الْعِلْمِ

د علم متعلق بيان

(ما قبل سره ربط او مناسبت):

د دې کتاب د ما قبل سره مناسبت دا په ذهن کښې راځي چه د دې نه مخکښې د کتاب القضاء په شروع کښې حديث تير شوې دې. ﴿ الْقَضَاءُ ثَلَاثَةٌ وَاحِدٌ فِي الْجَنَّةِ وَاثْنَانِ فِي النَّارِ الْحَدِيثُ ﴾ چه په هغې کښې دا دی چه کوم قاضى صاحب حق لره په حق پيژندلو سره د هغې مطابق فيصله اوکړې هغه به جنت ته ځي، او کوم قاضى چه په جهالت سره فيصله اوکړې هغه به جهنم ته ځي، د دې حديث نه د علم ضرورت او اهميت معلومېږي.

په صحيح مسلم کښې هم کتاب العلم په آخر د کتاب کښې ذکر دې او هم دغه شان په جامع ترمذی کښې هم، مونږ په ﴿ الحل المفهم ﴾ کښې د علم حقيقت او د هغې انواع علوم شرعيه او غير شرعيه، او د علم د حصول حکم شرعی هلته ذکر کړې دې د هغې طرف ته دې رجوع اوکړې شى هلته مونږ دا خبره کړې ده چه په ظاهر د قياس تقاضه دا ده چه کتاب العلم په شروع کښې راوړلې شى لکه چه په صحيح بخارى کښې دی چه په هغې کښې د ټولو نه مخکښې کتاب الايمان، او په هغې پسې متصل کتاب العلم په شروع کښې ذکر شوې دې. په دې باره کښې هلته دا نکته ليکلې شوې ده: يمكن ان يقال لعل فيه اشارة لطيفة الى ان منتهى علمنا يساوى مبتداه، فان العلم لا نهاية له، لا سيما علم الشريعة فانه بحر لا ينقذ، لکه چه د بعض اکابرينو صوفياء نه نقل دی چه کله د هغوى نه د تصوف د انتهاء او کمال په باره کښې تپوس اوکړې شو چه هغه څه دې: ما النهاية؟ فقال: العود الى البداية او هم دا مطلب

(١) الاثنته احاديث من الباب الاخير فاني كتبتها بعد الرجوع الى الهند في سهارنپور

د یو صوفی د دې مقولې دې - هنوز روز اول است... چه لا خو اوس زمونږ د بسم الله ورځې دی (یعنی په تصوف کښې مو قدم کیخودلې دې) شیخ الهند نور الله مرقده په تراجم د بخاری کښې یو ځانې کښې دا لیکلې دی چه د هر سړی جهل د هغه د علم نه زیات دې ځکه چه فی نفسه معلومات (هغه امور چه علم په هغې پورې متعلق وی) خو غیر متناهی دی او د هر سړی خپل معلومات متناهی ده. اه پس د هر سړی علم محدود او متناهی شو او د هغه جهل غیر متناهی.

### (د علم تعریف)

د علم حقیقت او د هغې انواع، او مختلف نوع سره د هغې تقسیمات او هم دغه شان رؤس ثمانیه او د علم شرف او فضیلت وغیره امور په تفصیل سره نواب صدیق حسن خان په خپل مشهور تصنیف، ابجد العلوم... کښې ذکر کړې دی او هم دغه شان په کشف الظنون کښې هم دی او ددې نه مخکښې طابش کبری زاده په مفتاح السعادة ومصباح السيادة کښ. د منطق په کتابونو کښې هم د علم په تعریف او تحقیق باندې کلام کړې شوې دې، پس یو تعریف دا کړې شوې دې: «الصورة الحاصلة من الشيء عند العقل» او په شرح عقائد نسفیه کښې د علم تعریف داسې کړې شوې دې «هو صفة يتجلى بها المذكور لمن قامت هي به» یعنی د یو څیز علم دا دې چه کله د هغه څیز نوم واخستلې شی نو فوراً د هغه څیز صورت او نقشه ذهن ته راشی مثلاً چه کوم سړی زید پیژنی او د هغه نه خبر دې نو کله چه د هغه مخکښې د زید نو فوراً د زید شکل او صورت د هغه اوریدونکی ذهن ته منتقل کیږی، او که هغه زید نه پیژنی نو هغه وخت به ئې هیڅ هم په ذهن کښې نه راځی.

### (بَابُ الْحَثِّ عَلَى طَلَبِ الْعِلْمِ)

### بَابُ فِي فَضْلِ الْعِلْمِ

### د علم د فضیلت بیان

[۳۶۴۱] (١) حَدَّثَنَا مُسَدَّدُ بْنُ مُسْرَهْدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دَاوُدَ، سَمِعْتُ عَاصِمَ بْنَ رَجَاءَ بْنَ حَبِوَةَ يُحَدِّثُ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ جَمِيلٍ، عَنْ كَثِيرِ بْنِ قَيْسٍ، قَالَ: "كُنْتُ جَالِسًا مَعَ أَبِي الدَّرْدَاءِ فِي مَسْجِدِ دِمَشْقَ، فَجَاءَهُ رَجُلٌ، فَقَالَ: يَا أَبَا الدَّرْدَاءِ، إِنِّي جِئْتُكَ مِنْ مَدِينَةِ الرَّسُولِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحَدِّثُ بَلْغَنِي أَنَّكَ تُحَدِّثُهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، مَا جِئْتُ لِحَاجَةٍ، قَالَ: فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: "مَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَطْلُبُ فِيهِ عِلْمًا سَلَكَ اللَّهُ بِهِ طَرِيقًا مِنْ طُرُقِ الْجَنَّةِ، وَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ لَتَضَعُ أَجْنَحَتَهَا رِضًا لَطَالِبِ الْعِلْمِ، وَإِنَّ الْعَالِمَ لَيَسْتَغْفِرُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالْجِبَتَانِ فِي جَوْفِ الْمَاءِ، وَإِنَّ فَضْلَ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ كَفَضْلِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ عَلَى سَائِرِ الْكَوَاكِبِ، وَإِنَّ الْعُلَمَاءَ وَرَثَةُ الْأَنْبِيَاءِ، وَإِنَّ الْأَنْبِيَاءَ لَمْ يَمُوتُوا دِينَارًا وَلَا دِرْهَمًا وَرَثُوا الْعِلْمَ فَمَنْ أَخَذَهُ أَخَذَ بِحَبْطِ وَافِرٍ".

د کثیر بن قیس نه روایت دې فرمائی چه زه د دمشق په جومات کښې د ابو الدرداء ظهري ناست وم په دې وخت کښې هغه نه یوکس راغې او ورته ئې اووئیل چه زه تاته د نبی ﷺ

(۱): سنن الترمذي/العلم ۱۹ (۲۶۸۲)، سنن ابن ماجه/المقدمة ۱۷ (۲۲۳)، (تحفة الأشراف: ۱۰۹۵۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۹۶۵)، سنن الدارمي/المقدمة ۳۲ (۳۵۴) (صحیح)



دکلی مدینې نه راغلې یم دیوحدیث په باره کښې ما اوریدلې دی چه ته ئې د نبی ﷺ نه بیانوي، اوزه تاته دبل غرض دپاره نه یم راغلی، ابوالدرداء رضی الله عنه اووئیل یقینا مادنبی ﷺ نه اوریدلې دی چه فرمائیل ئې څوک چه دعلم دزده کولو دپاره په یوه لاره روان شي نوالله تعالی به ورته جنت ته دتلو په لاروکښې یوه لاره اسانه کړي، اودعلم دزده کونکي د خوشحالو دپاره فرشتي خپلې وزري غوړوي او یقینا کوم مخلوق چه په زمکه او اسمان کښې وسیري هغوی ټول دده دپاره مغفرت غواړي تردې پورې چه په اوبوکښې مهیان (کبان) هم دده دپاره مغفرت غواړي او په عبادت کونکي باندې دعالم دومره فضیلت دي لکه څنگه چه دخوارلسمي شپې دسپوږمۍ فضیلت په ټولو ستورو باندې دي اویقینا عالمان دانبیاء وارثان دي اوانبیاء درهم اودینار په میراث کښې نه دي پریخودلي هغوی خوصرف علم په میراث کښې پریخودلې دي، یقیناچاچه علم حاصل کړو ده الویه برخه حاصله کړه.

### مضمون حدیث :

قوله: « عَنْ كَثِيرِ بْنِ قَيْسٍ قَالَ كُنْتُ جَالِسًا مَعَ أَبِي الدَّرْدَاءِ فِي مَسْجِدِ دِمَشْقَ فَجَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ يَا أَبَا الدَّرْدَاءِ الْخ » کثیر بن قیس فرمائی چه زه یوه ورځ د ابوالدرداء رضی الله عنه سره ناست اوم نو یو سړې د هغوی خدمت ته راغلو او عرض ئې اوکړو چه زه تاسو ته د مدینې طیبې نه د یو حدیث اوریدو دپاره راغلې یم چه د هغې په باره کښې ماته معلومه ده چه تاسو هغه د رسول الله صلی الله علیه و آله نه روایت کوئ، زما د دې راتلو مقصد د دې نه سوا هیڅ نه دي، نو هغوی اوفرمائیل چه ما د رسول الله صلی الله علیه و آله نه اوریدلې دی « يَقُولُ » « مَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَطْلُبُ فِيهِ عِلْمًا سَلَكَ اللَّهُ بِهِ طَرِيقًا إِلَى الْجَنَّةِ » شارحینو لیکلې دی چه په دې کښې دوه احتمال له دیو دا چه دې سائل ته د ابوالدرداء رضی الله عنه نه هم دا حدیث مطلوب وو کوم چه هغوی اوریدل غوښتل. دویم دا چه حدیث مطلوب خو به ورته هغوی روستو اورولې وی خو دا حدیث ئې د هغه د عمل د تحسین او تبشیر دپاره واورلو، چه کوم انسان د علم د حصول دپاره سفر کوی نو گویا الله پاک هغه د جنت په لاره باندې بوځی یعنی د علم د حصول دپاره تلل دا د انجام په لحاظ داسې دی لکه د جنت په لاره تلل او د دې نه د روستو حدیث الفاظ دا دی « الاسهل الله له به طريقا الى الجنة » چه د طالب العلم دپاره الله پاک د جنت لاره آسانوی، په دې وجه علم ذریعه ده د عمل او عمل سبب دې د دخول جنت.

### شرح الحديث :

« وَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ لَتَضَعُ أَجْنَحَتَهَا رِضًا لِطَالِبِ الْعِلْمِ الْخ » د حدیث د دې جملې په وضاحت کښې په بذل کښې د امام خطابی رحمته الله علیه نه درې مطلبونه لیکلي دي:  
 ۱ د وزرو کیخودلو نه مراد تواضع ده یعنی د طالب العلم مخکښې ملائک په تواضع سره راځی، کقوله تعالی واحفض لهما جناح الذل.....

۲ الامساك عن الطيران والنزول عنده، یعنی که په زمکه باندې طالب العلم وی او مټک پورته الوځی نو هغه د دې طالب العلم د وجې نه خپل الوتل ختمولو سره لاندي به ته

راکوزیرې لکه دا قول د رسول الله ﷺ: ﴿ما من قوم یذکرون الله تعالی الا حفت بهم الملائكة وغشيتهم الرحمة﴾

۳: د دې نه مراد د ملائکو خپلو وزرو لره د طالب العلم دپاره خورول دی هغه لره په خپل ځان باندې د سورولو دپاره چه هغه منزل مقصود ته اورسوی، مراد ترې نه اعانت دې او تیسیر په طلب د علم کښی. اه

وړاندې په حدیث کښې دی چه د عالم دپاره آسمان او زمکې والا استغفار کوی تر دې چه په اوبو کښې دننه مهیان (گویا دا استغفار د برنه تر بحر ته رسیږی)

او دا چه علماء د انبیاء کرامو وارثان دنی ځکه چه د انبیاء کرام ﷺ میراث درهم او دینار نه وی بلکه د هغوی میراث علم وی (لهذا طالبان او علماء د انبیاء ﷺ وارثان شو)

قوله: ﴿لمن اخذه اخذ بحظ وافر﴾ دا جمله یا خو خبر دې چه کوم سړی علم حاصل کړو هغه لوئی دولت حاصل کړو، او یا انشائیة ده چه کوم سړی علم حاصل کړی او د هغې طالب وی نو هغې لره په ښه طریقہ حاصلول پکار دی. د دې حدیث په روستو طریق کښې دا جمله هم ذکر شوې ده ﴿ومن ابطاء به عمله لم يسرع به نسبه﴾ یعنی کوم سړی لره چه د هغه عمل روستو کړی نو د هغه عالی نسب ئې نه شی مخکښی کولی.

#### د علم فضیلت او برتری:

د احادیث الباب نه د علم فضیلت ښکاره دې د ملائکو د طالب العلم سره په تواضع باندې پیش کیدل، د هغه دپاره د جنت لاره برابرول، د انبیاء ﷺ وارث کیدل یقینا دا د انتهائی درجې اعزاز دې. حضرت شیخ رحمه الله په حاشیه د بذل کښې د علامه شامی نه په ۲۸۹/۵ کښې نقل کړی دی: ﴿مذاكرة العلم ساعة خير من احياء ليلة وله الخروج لطلبه بدون اذن الوالدین لو ملتحیا، اما الامر فالا﴾ یعنی د لږ ساعت علمی مذاکره د ټولې شپې د عبادت نه افضل ده، بله دا چه د طلب علم دپاره د کور نه وتل بغیر د والدینو د اذن نه هم جائز دې په دې شرط چه هغه وتلو والا د گیری والا وی، د بې گیری هلک دپاره جائز نه دی. والحديث الاول اخرجه الترمذی وابن ماجه، والحديث الثاني اخرجه مسلم اتم منه واخرجه الترمذی مختصرا، قاله المنذری.

[۳۶۴۲] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْوَزِيرِ الدِّمَشْقِيُّ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، قَالَ: لَقِيتُ شَيْبَةَ بْنِ شَيْبَةَ فَحَدَّثَنِي بِهِ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ أَبِي سُوْدَةَ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ يُعْنِي، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَعْنَاهُ.

ابو سودة د ابو الدرداء رضی الله عنه او هغه د نبی ﷺ نه د تیر شوي روایت په شان روایت بیان کړې دې.

[۳۶۴۳] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زَابِدَةُ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَا مِنْ رَجُلٍ يَسْلُكُ طَرِيقًا يَطْلُبُ فِيهِ عِلْمًا إِلَّا سَهَّلَ اللَّهُ لَهُ بِهِ طَرِيقَ الْجَنَّةِ، وَمَنْ أَبْطَأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ".

۱: تفرد به أبو داود، انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۰۹۵۱) (صحيح)

۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۲۳۷۷)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/الذكر والتوبة ۱۱ (۲۶۹۹)، سنن الترمذی/العلم

۲ (۲۶۴۶)، سنن ابن ماجه/المقدمة ۱۷ (۲۲۶)، مسند احمد (۲۵۲/۲)، سنن الدارمي/المقدمة ۳۲ (۳۵۶) (صحيح)



د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائيلي دي هرڅوك چه ددين دعلم دحاصلولو دپاره په يوه لارباندي روان شي نوالله تعالى به ده ته دجنت لاره اسانه كړي او چالره چه خپل عمل وروسته ديكه كړو نودده نسب ده لره نشي مخكښي كولې.

## بَابُ رِوَايَةِ حَدِيثِ أَهْلِ الْكِتَابِ

باب د اهل كتابونه روايت بيانول

يعني اهل كتاب چه كوم مضمون بيان كړي نو آيا د اهل اسلام دپاره هغې لره نقل كول او د روايت كولو اجازت شته.

[۳۶۴] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ ثَابِتٍ الْمُرُوزِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي ثَمَلَةَ الْأَنْصَارِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ يَتِمُّ هُوَ جَالِسٌ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعِنْدَهُ رَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ مَرَّ بِجَنَازَةٍ، فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، هَلْ تَتَكَلَّمُ هَذِهِ الْجَنَازَةُ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اللَّهُ أَعْلَمُ، فَقَالَ الْيَهُودِيُّ: إِنَّمَا تَتَكَلَّمُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا حَدَّثَكُمْ أَهْلُ الْكِتَابِ فَلَا تُصَدِّقُوهُمْ وَلَا تُكْذِّبُوهُمْ، وَقُولُوا: آمَنَّا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ، فَإِنْ كَانَ بَاطِلًا لَمْ تُصَدِّقُوهُ، وَإِنْ كَانَ حَقًّا لَمْ تُكْذِّبُوهُ".

دابونمله رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه دنبي ﷺ سره ناست وم اودهغه سره يو يهودي هم موجود وو او په دې وخت كښې يوجنازه تيريدله يهودي اووئيل اي محمد ايا دا مړې خبرې كوي كوي نبي ﷺ اوفر مائيل الله تعالى ښه خبر دي ددينه پس يهودي اووئيل داجنازه خبرې كوي ليكن ددنيا خلق ددې خبرې نه آوري نبي ﷺ اوفرمائيل تاسوته چه اهل كتاب كوي خبرې وكړي نوتاسوبه دهغې نه تصديق كوي اونه تكذيب بلكه داسې به وائي چه مونږه په الله اودهغه په رسولانو ايمان راوړې دې په دې وخت كښې كه چرې دغه خبره دروغ وي نوتاسو ورته ريشتيا اونه وئيل او كه چرې رښتياوي نوتاسو دروغ ونه گنرله.

قوله: « فَقَالَ يَا مُحَمَّدُ هَلْ تَتَكَلَّمُ هَذِهِ الْجَنَازَةُ فَقَالَ النَّبِيُّ -صلى الله عليه وسلم- « اللَّهُ أَعْلَمُ » الخ » د دې حديث راوی ابو نمله صحابی دې چه د هغه نوم عمار بن معاذ رضي الله عنه دي او د هغوی نه روايت كونكي د هغوی ځوئي ابن ابی نمله دي چه د هغه نوم نمله دي.

د حديث مضمون دا دي چه يو كرت د رسول الله ﷺ مخكښي يو جنازه تيره شوه، يو يهودي د رسول الله ﷺ نه تپوس وكړو چه آيا دا جنازه خبرې كوي؟ رسول الله ﷺ اوفرمائيل "الله اعلم" هغه يهودي اووئيل چه او خبرې كوي كيدي شي هغه دا خبره په خپل كتاب كښې ليدلې وي چه د هغې په بناء باندې هغه داسې اووئيل. د يهودي په دې خبره باندې رسول الله ﷺ خاموش پاتې شو او صحابه كرامو رضي الله عنهم ته ئې اوفرمائيل چه دا يهود چه كومه خبره تاسو ته كوي په هغې كښې مه د هغوی تصديق كوي او مه ئې تكذيب، بلكه وايي چه « امانا بالله ورسوله » چه نه د باطل تصديق اوشي او نه د حق تكذيب. د دې نه معلومه شوه چه د اهل كتابو حديث نه دي روايت كول پكار.

رسول الله ﷺ د كلام جنازه په باره كښې اوفرمائيل "الله اعلم" حالانكه د نورو احاديثو نه په

(۱): تفرد به، ابوداود، (تحفة الأشراف: ۱۲۱۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۳۷۴) (ضعيف)

قبر کښې د ملائکو د سوال په جواب کښې د مړي خبرې کول په کثرت سره راغلي دي اوس يا خو دې داسې اوئيلى شي چه دا حديث د شروع دې کوم وخت چه رسول الله ﷺ ته په قبر کښې د ملکين او د مړي د سوال جواب علم نه وو. او يا دې داسې اوئيلى شي چه په دې حديث کښې رسول الله ﷺ د مړي د کلام په باره کښې توقف فرمايلى دې په دې وجه چه د دې حديث تعلق مخصوص هغه مړي سره وونه دمطلق کلام ميت سره، افاده العلامة السندی.

### په دوه مختلفو بابونو کښې تطبيق :

د دې نه پس ځان پوهه کړه چه وړاندې په کتاب کښې د څو ابوابو نه پس هم د دې سلسلې يو باب راروان دې، باب الحديث عن بنی اسرائيل چه په هغې کښې مصنف رحمه الله دوه احاديث ذکر فرمايلى دي په رومبي حديث کښې دې (حدثوا عن بنی اسرائيل ولا حرج) په دې باندې بعض شراح خطابی وغيره ليکلي دي چه د يهودو نه د روايت حديث ممانعت په شروع د اسلام کښې وو، د احکام اسلاميه او قواعد دنيه د استقرار نه مخکښ، بيا چه کله د احکام اسلاميه استقرار اوشو او صحابه کرام رحمه الله د يهود د تحريفاتو او تخليطاتو نه خبر شو نو بيا رسول الله ﷺ صحابه کرامو ته د حديث اهل کتاب د روايت اجازت ورکړو چه په دې صورت کښې کذب او صدق او د حق او باطل ترمينځه د خلط کيدو خطره نه وه. گويا دا هم داسې اوشو څنگه چه رسول الله ﷺ په شروع کښې د کتابت حديث نه صحابه کرام رحمه الله منع کړې وو د حديث د قرآن کریم سره د التباس او د خلط کيدو د وجي نه، او بيا رسول الله ﷺ دا نهی منسوخ کړه او د کتابت حديث اجازت ئې ورکړو چه هر کله د خلط ويره پاتې نه شوه.

او امام مالک رحمه الله د (حدثوا عن بنی اسرائيل) په باره کښې فرمائی، (المراد جواز التحديث عنهم بما كان من امر حسن اما ما علم كذبه فلا) يعنى مراد دا دې چه اهل کتاب چه کومې ښه ښه خبرې تاسو ته بيانوي د هغې د نقل اجازت دې خو د کومې خبرې غلط کيدل چه معلوم وي ښکاره ده چه هغه په دې کښې داخل نه ده (كذا في العون عن الفتح) او په حاشيه د بذل کښې دې (قال القارى في المرقاة : لا حرج في نقل الا عا جيب عنهم، وفي الرد المختار عن ابن حجر : هذا الحديث يقيد حل السماع الا عا جيب والغرائب كل ما لا يتيقن كذبه لقصد الفرحة لا الحجة) د امام خطابی رحمه الله په نزد د باب اول حديث منسوخ او د باب دوم د هغې دپاره ناسخ شو او د امام مالک رحمه الله په نزد د اول حديث تعلق د احکام او مسائلو سره دې او د دويم تعلق د عام مفيدو خبرو سره يا غرائبو سره دې احکامو سره نه، د دواړو احاديثو محمل بيل بيل دي لهذا د ناسخ او منسوخ منلو حاجت نشته.

### د اسرائيلياتو حکم :

په تفسير معارف القرآن کښې مفتي محمد شفيع رحمه الله په مقدمه کښې دعنوان "د اسرائيلياتو حکم" لاندې ليکلي دي : اسرائيليات هغه روايتونو ته وائی کوم چه د اهل کتابو يعنى يهودو او نصاراو نه مونږ ته رارسيدلي دي، حافظ ابن کثير رحمه الله ليکلي دي چه د اسرائيلياتو درې قسمونه دي ۱: هغه روايات چه د هغې صداقت د قرآن او حديث د نورو



دلانو نه ثابت دي مثلاً د فرعون غرق کيدل او د موسی عليه السلام کوه طور ته تشریف اورل ۲: هغه روایات د کوم دروغون کيدل چه د قرآن او حدیث د نورو دلائلو نه ثابت وی مثلاً په اسرائیلی روایاتو کښې ذکر دی چه سلیمان عليه السلام په آخر عمر کښې (والعیاذ باللہ) مرتد شو د دي تردید د قرآن کریم نه ثابت دي د الله پاک ارشاد دي ﴿وما کفر سلیمان ولکن الشیطن کفروا﴾ هم دغه شان مثلاً په اسرائیلی روایاتو کښې ذکر شوی دی (معاذ الله) چه داؤد عليه السلام د خپل سپه سالار اوریا بنحی سره زنا کړې وه یا ئې هغه په مختلفو تدبیرونو سره قتل کړو او د هغه د بنحی سره ئې نکاح اوکړه، دا هم ښکاره دروغ دی او دا قسم روایات غلط گنرل لازم دی. ۳: هغه روایات چه د هغې په باره کښې قرآن او سنت او نور شرعی دلائل خاموش دی لکه د تورات احکام وغیره، دغه شان روایاتو په باره کښې د رسول الله ﷺ تعلیم دا دي چه د هغې په باره کښې دي سکوت اختیار کړې شی، نه دي د هغې تصدیق اوکړې شی او نه تکذیب، خو په دي مسئله کښې د علماء کرامو اختلاف دي چه آیا د داسې روایاتو نقل کول هم جائز دی یا نه؟ حافظ ابن کثیر رحمه الله قول فیصل دا بیان فرمائیلي دي چه د هغې نقل کول جائز خو دی خو د هغې نه هیڅ فائده نشته ځکه چه شرعی اعتبار سره هغه حجت نه دي. (مقدمه تفسیر ابن کثیر)

دویم حدیث په دي باب کښې چه کوم مصنف رحمه الله ذکر کړې دي هغه دا دي، ﴿کان رسول الله ﷺ یحدثنا عن بنی اسرائیل حتی یصبح﴾ یعنی ډیر کرته به رسول الله ﷺ مونږ ته د شپې د بنی اسرائیلو حالات د ناوخته پورې بیانول تر دي چه صبا به شو، د رومی باب نه غرض د مصنف رحمه الله اخذ الروایة عن اهل الکتاب نه منع کول یعنی د هغوی نه دي روایت وانخستلي شی لکه چه د دي باب د حدیث نه معلومیږي، او د دویم باب غرض حدیث د بنی اسرائیلو نه یعنی د هغوی نه روایت کول او د هغوی قصص او واقعات نقل کول چه دا جائز او ثابت دی لکه چه د دي باب په دویم حدیث کښې ذکر شوې دی، او د دي باب حدیث اول یعنی ﴿حدثنا عن بنی اسرائیل ولا حرج﴾ دي هم په دي معنی باندې محمول کړې شی یعنی ﴿ذکر قصصهم واحوالهم﴾ په دي صورت کښې به په دي دواړو کښې هیڅ اختلاف نه وي چه د هغې دپاره د څه توجیه پیش کولو ضرورت راشي، هذا ما عندی ان کان صوابا فمن الله تعالی وان کان خطاء فمنی.

[۳۶۴۵] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ خَارِجَةَ يَعْنِي ابْنَ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، قَالَ: قَالَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ: "أَمَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَعَلَّمْتُ لَهُ كِتَابَ يَهُودَ، وَقَالَ: "إِنِّي وَاللَّهِ مَا أَمَنُ يَهُودَ عَلَى كِتَابِي، فَتَعَلَّمْتُهُ، فَلَمْ تَمُرِّي إِلَّا نِصْفَ شَهْرٍ حَتَّى حَدَّثْتُهُ، فَكُنْتُ أَكْتُبُ لَهُ إِذَا كُتِبَ، وَأَقْرَأُ لَهُ إِذَا كُتِبَ إِلَيْهِ".

د زيد بن ثابت نه روایت دي فرمائي چه نبی ﷺ راته حکم وکړو چه ديهوديانو تحرير زده کړم چنانچه مادنبی ﷺ دپاره ديهوديانو ليکل زده کړل اوراته ئې او فرمايل په الله مې دي

۱: صحيح البخاري / الأحكام ۴۰ (۷۱۹۵ تعليقا)، سنن الترمذي / الاستذنان ۲۲ (۲۷۱۵)، (تحفة الأشراف: ۳۷۰۲)، وقد أخرج: مسند احمد (۱۸۷۵) (حسن صحيح)

قسم وي زما په يهوديانو اعتماد نشته چه هغوی به زما د طرف به صحيح تحرير وکړي زید وائی نیمه میاشت نه وه تیره شوي چه ماددي خلقو لیکل په نبي طريقي سره زده کړل بيا چه به کله نبي ﷺ دڅه لیکلو حکم کولو نو هغه لیکل به ماکول او کله چه به نبي ﷺ ته کوم تحرير راغي نو هغه به ورته مالوستلو.

﴿ قَالَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ أَمَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- فَتَعَلَّمْتُ لَهُ كِتَابَ يَهُودَ وَقَالَ « إِنْ وَاللَّهِ مَا آمَنُ يَهُودَ عَلَى كِتَابِي ». فَتَعَلَّمْتُهُ فَلَمْ يَمُرَّ بِي إِلَّا يَصْفُ شَهْرٍ حَتَّى حَذَقْتُهُ الْخَ »

زید بن ثابت رضی اللہ عنہ فرمائی چه رسول الله ﷺ ماته حکم او فرمائیلو چه زه د يهودو ژبه لیکل او لوستل زده کړم، او وي فرمائیل چه زما په دې باندې اطمینان نشته چه يو يهودی زما مضمون اولیکي، هغوی فرمائی چه د هغوی د حکم په تعميل کښې ما د يهودو ژبه د نیمې میاشتې نه هم په کمه موده کښې زده کړله، او په دې کښې ماته ښه مهارت حاصل شو، نو د دې نه پس به ما د رسول الله ﷺ د طرف نه يهودو ته لیکل کول او کله چه به د هغوی د طرف نه هغوی ته څه خط راتلو نو هغه به ورته ما اورولو.

**فانده :** مشهوره دا ده چه انجيل په سرياني ژبه کښې دې لهذا د نصاری ژبه هم هغه شوه او تورات په عبراني ژبه کښې دې لهذا په ظاهر د يهودو ژبه هم هغه شوه. د صحيح بخاری په رومبي باب کښې د ورقه بن نوفل رضی اللہ عنہ په باره کښې ذکر دی.

﴿ وَكَانَ يَكْتُبُ الْكِتَابَ الْعِبْرَانِيَّ فَيَكْتُبُ مِنَ الْإِنْجِيلِ بِالْعِبْرَانِيَّةِ ﴾ وفي هامش اللامع عن القسطلاني : قيل : ان التوراة عبرانية والانجيل سرياني، وعن سفيان : ما نزل من السماء وحى الا بالعربية وكانت الانبياء ﷺ ترجمه لقومها اه وفيه عن الكرمانى : يفهم منه ان الانجيل ليس عبرانيا وهو المشهور اه.

**د کاتبين وحى صحابه گراموزي ﷺ تعين او نومونه :**

د دې حديث نه معلومه شوه چه زید بن ثابت رضی اللہ عنہ د رسول الله ﷺ د کاتبينو نه وو، مشهور کاتبين د وحى شپږ حضرات دی: ۱: عثمان بن عفان، علی بن ابی طالب، ابی بن کعب، زید بن ثابت، معاويه بن ابی سفيان، عبدالله بن سعد بن ابی السرح رضی اللہ عنہ د ډيرو علماء گراموزي رسول الله ﷺ په کاتبينو باندې مستقل تصانيف دی چه د هغې فهرست ډير اوږد دي (۱) چه د هغې دوه قسمونه دی کاتبين وحى يعنى قرآن وغيره، د دې په باره کښې خو هم دا لیکلې دی چه هغوی شپږ کسان دی، او دويم قسم مطلق کاتبين د قرآن کریم د وحى نه علاوه، د هغوی تعداد بعض مصنفينو يو ديرش لیکلې دي (واحد وثلاثون) بعضو د دې نه کم او زيات لیکلې دي. والحديث اخرجه الترمذی وقال حسن صحيح، واخرجه البخاری تعليقا في كتاب العلم، قاله المنذرى.

۱ مخکښې هم لیکلې شوې دي او اوس هم مثلامخکښې المصباح المضى فی کتاب النبی، او په نوې کتابونو کښې کتاب الوحی د احمد عبدالرحمن عیسی او کتاب النبی ﷺ د محمد مصطفى الاعظمی



## باب فی کتابۃ العلم

### د علم د لیکلو بیان

اوپه بعض نسخو کښې «باب کتابۃ العلم» او په بعضو کښې «باب فی کتاب العلم» په دې مسئله او ددې متعلق احادیثو باندې کلام د الدر المنصود په مقدمه کښې تیر شوې دې.

[۳۶۴۶] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْأَخْنَسِ، عَنْ الْوَلِيدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي مُغَيْثٍ، عَنْ يُونُسَ بْنِ مَاهَكٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: "كُنْتُ أَكْتُبُ كُلَّ شَيْءٍ أَسْمَعُهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرِيدُ حِفْظَهُ، فَتَهْتَنِي قُرَيْشٌ، وَقَالُوا: أَتَكْتُبُ كُلَّ شَيْءٍ تَسْمَعُهُ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَشْرِي بِتَكَلُّمِهِ فِي الْغَضَبِ وَالرِّضَا؟ فَأَمْسَكْتُ عَنِ الْكِتَابِ، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَوْمَأَ بِأَصْبَعِهِ إِلَيَّ فِيهِ، فَقَالَ: أَكْتُبْ، فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، مَا يَخْرُجُ مِنْهُ إِلَّا حَقٌّ."

د عبد الله بن عمرو رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی کله چه به مادنې عليه السلام نه یو حدیث واوریدونود بادولو دپاره به مې لیکلو بیا زه قریشیانو د لیکلو نه منع کړم او راته ئې اووئیل به چه دنې علیه السلام نه هره خبره واورې هغه لیکي، حالانکه نبی عليه السلام هم برانسان دې نه خودغمي اود خوشحالی په دواړو حالتونو کښې خبرې کوي ملجه دا واوریدل نولیکل کول مې پریخول او ددې ذکر مې نبی عليه السلام ته وکړونې عليه السلام پخپلو گوتو باندې دخپل مخ طرف ته اشاره وکړه او حکم ئې وکړو په لیکل کوه په هغه پاک ذات مې دې قسم وي دچاپه قبضه کښې چه زما روح دې ددې خولې نه دحق نه علاوه بله خبره نه وځي.

[۳۶۴۷] (۲) حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، أَخْبَرَنَا أَبُو أَحْمَدَ، حَدَّثَنَا كَثِيرُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ الْمُطَّلِبِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حَنْطَبٍ، قَالَ: دَخَلَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ عَلَى مُعَاوِيَةَ، فَسَأَلَهُ عَنْ حَدِيثٍ، فَأَمَرَ أَنْسَاثًا يَكْتُبُهُ، فَقَالَ لَهُ زَيْدٌ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "أَمَرَنَا أَنْ لَا نَكْتُبَ شَيْئًا مِنْ حَدِيثِهِ، فَحَاهَا".

د عبد الله بن حنطب نه روایت دې فرمائی چه زید بن ثابت رضي الله عنه معلوه رضي الله عنه ته لاړو اودیو حدیث په باره کښې ئې ورنه تپوس وکړو او یو کس ته ئې حکم وکړو چه وي لیکي، زید ورته اووئیل یقینا مونږ ته نبی عليه السلام حکم کړي دي چه مونږ به دهغه احادیث نه لیکو نو هغه لیکلی شوی حدیث وران کړو.

[۳۶۴۸] (۳) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا أَبُو شَهَابٍ، عَنْ الْحَدَّاءِ، عَنْ أَبِي الْمُتَوَكِّلِ النَّاجِي، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ: "مَا كُنَّا نَكْتُبُ غَيْرَ التَّشْهِيدِ وَالْقُرْآنِ".

د ابوسعید خدری رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه مونږ به (دنبی عليه السلام نه) د تشهد او قران نه علاوه نور لیکل نه کول.

[۳۶۴۹] (۴) حَدَّثَنَا مُؤَمَّلٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، حَدَّثَنَا الْعَبَّاسُ بْنُ الْوَلِيدِ بْنِ مَزِيدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنِ الْأَوْزَاعِيِّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ، قَالَ:

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۹۵۵)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱۶۲/۲، ۱۹۲)، سنن الدارمي للمقدمة ۴۳ (۵۰۱) (صحيح)  
(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۷۴۰)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱۸۲/۵) (ضعيف الإسناد)  
(۳): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۴۲۵۸) (شاذ)  
(۴): انظر حديث رقم: (۲۰۱۷)، (تحفة الأشراف: ۱۵۳۸۳) (صحيح)

"لَمَّا فَتَحَتْ مَكَّةَ قَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ الْخُطْبَةَ خُطْبَةَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: فَقَامَ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ يَقُولُ لَهُ: أَبُو شَاهٍ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، اكْتُبُوا لِي، فَقَالَ: اكْتُبُوا لِأَبِي شَاهٍ."

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چې كله مكه فتحه شوه نوښي عليه السلام دخپلي ورکولو دپاره اودريدو، راوی وائی چې یویمني سرې هم اودريدو کوم چې په ابوشاه باندې مشهور وو، عرض ئې وکړوچې اې دالله رسوله دا خطبه دې زما دپاره وليکلی شي نبی عليه السلام اوفرمايل د ابوشاه دپاره ئې وليکئ.

[۳۶۵۰] (۱) حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ سَهْلٍ الرَّمْلِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي عَمْرٍو: "مَا يَكْتُبُوهُ؟" قَالَ: "الْخُطْبَةُ الَّتِي سَمِعَهَا يَوْمَ بَيْدِ مِنْهُ."

د وليد نه روايت دې فرمائی چې ابوعمرونه ئې روئيل دده دپاره ئې څه شي ليکل؟ هغه اووئيل چې دنتی ورځي اورولي شوې خطبه.

## بَابُ فِي التَّشْدِيدِ فِي الْكَذِبِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

نبی علیه السلام نه ددروغود نسبت کولود سزا بیان

[۳۶۵۱] (۲) حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ، أَخْبَرَنَا خَالِدٌ. ح وَحَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا خَالِدُ الْمَعْنَى، عَنْ يَيَّانِ بْنِ بَشِيرٍ، قَالَ: مُسَدَّدٌ أَبُو بَشِيرٍ، عَنْ وَبَرَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قُلْتُ لِلزُّبَيْرِ: مَا يَمْنَعُكَ أَنْ تُحَدِّثَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَمَا يُحَدِّثُ عَنْهُ أَصْحَابُهُ؟ فَقَالَ: "أَمَّا وَاللَّهِ لَقَدْ كَانَ لِي مِنْهُ وَجْهٌ وَمَنْزِلَةٌ، وَلَكِنِّي سَمِعْتُهُ يَقُولُ: مَنْ كَذَبَ عَلَى مُتَعَيِّدٍ، فَلْيَتَّبِعُوا مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ."

عامرين عبدالرحمن بن زبير دخپل پلار نه روايت کوي فرمائی چې مازبیرته روئيل ته دنورصحابه کراموپه شان دنبی عليه السلام نه (په کثرت سره) حديث روايت ولي نه کوي هغه ووئيل خبردار ماته د نبی عليه السلام دیرتقرب حاصل ووليکن ما دهغه نه اوریدلي وو چې فرمائيل ئې څوک چې په قصد سره کومه دروغ خبره ماته منسوب کړي نو هغه دي دخان دپاره په جهنم کښې کورجوړ کړي.

قوله: ﴿عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ قُلْتُ لِلزُّبَيْرِ مَا يَمْنَعُكَ أَنْ تُحَدِّثَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ﴾

### شرح الحديث :

عبدالله بن زبير رضي الله عنه د خپل پلار زبير رضي الله عنه نه تپوس اوکړو، چې ستاسو دپاره د احاديثو په بيانولو کښې څنگه چې ستاسو ملگری بيانوی څه څيز مانع دې؟ نو هغوي اوفرمائيل چې والله زما چې رسول الله صلی الله علیه و آله سره کومه مرتبه او خپلولی ده هغه ښکاره ده (۳) (چې د هغې په

(۱): انظر حديث رقم (۲۰۱۷)، (تحفة الأشراف: ۱۵۳۸۳) (صحيح)

(۲): صحيح البخاري/العلم ۳۸ (۱۰۷)، سنن ابن ماجه/المقدمة ۴ (۳۶)، (تحفة الأشراف: ۳۶۲۳)، وقد أخرجه: مسند احمد

(۱/۱۶۵، ۱۶۶)، سنن الدارمي/المقدمة ۲۵ (۲۳۹) (صحيح)

(۳): حضرت زبير بن العوام (رض) د عشره مبشره اصحابو نه دې اود حضور پاک (ص) د ترور خوښي (پهيوبي زاد) وو. هم ددوی باره کښې وئيلي شوی وو په شراج حره والا حديث کښې چې: ان كان ابن عمك، كما تقدم.



وجه باندې ما د رسول الله ﷺ نه په کثرت سره احادیث واوریدل، خو د دې باوجود د ترک روایت وجه دا ده چه، ما د رسول الله ﷺ نه دا حدیث اوریدلې دې چه کوم سرې په ما باندې قصدا دروغ او اوائی نو هغه دې په جهنم کښې خپلې استوگنې ته لاړ شی. په یو حدیث کښې دی چه د هغې مضمون داسې دې که هغه مسلمان وی او که کافر دواړو ځایونو کښې ئې استوگنه جوړه ده په جنت کښې هم او په جهنم کښې هم، چه د ایمان د راوړلو په صورت کښې جنت والا استوگنې ته او د ایمان نه راوړلو په صورت کښې د جهنم والا استوگنه کښې هغه اوساتلې شی. وفي الفتح : قوله : فليتبوا ای فليتخذ لنفسه منزلاً، فهو امر بمعنى الخبر وبمعنى التهديد او بمعنى التحکم، او دعاء على فاعل ذلك ای بواه الله ذلك اه امام بخاری رحمه الله دا حدیث او د دې قسم مضمون نور روایات په (باب اثم من کذب على النبی ﷺ) کښې ذکر کړی دی، د بخاری په حدیث کښې د (متعمدا) لفظ نشته، او حافظ په هغې باندې کلام هم کړې دې او وئیلې ئې دی چه د زبیر رضي الله عنه د دې حدیث نه په استدلال کولو کښې د دې خبرې دلیل دې چه د کذب اطلاق مطلقاً په خلاف واقع خبر ورکولو باندې دې که هغه عمدا وی یا خطاء او هم دا صحیح قول دې، او د خطا په صورت کښې اگر چه گناه نشته. (۱) خو زبیر رضي الله عنه ته په اکثار فی الحدیث کښې خطره پیدا شوه د دې خبرې چه هسې نه هغه په خطاء کښې واقع شی چه د هغې ورته شعور هم نه وی، او په مختصر د مندری کښې دی: واخرجه البخاری عن الزبیر انه قال : والله ما قال متعمدا وانتم تقولون متعمدا اه..... امام ابن ماجه رحمه الله د خپل سنن په شروع کښې داسې مضامین او ابواب قائم کړې دی، باب التوقی فی الحدیث عن رسول الله ﷺ او دغه شان باب التغلیظ فی تعمد الکذب على رسول الله ﷺ.....

## باب الکلام فی کتاب الله بغير علم

بغير دپوهې نه دقرآن کریم معنی بیانول

[۳۶۵۲] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِسْحَاقَ الْمُقَرَّبِيُّ الْحَضْرَمِيُّ، حَدَّثَنَا سَمِيعُ بْنُ مِهْرَانَ أَخِي حَزْمِ الْقُطَيْبِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرٍو، عَنْ جُنْدُبٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ قَالَ فِي كِتَابِ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ بِرَأْيِهِ فَأَصَابَ فَقَدْ أَخْطَأَ".

د جندب رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم ﷺ فرمائیلی دی چاچه په قران کریم کښې دخپل عقل نه څه ووئیل نو که ده صحیح هم وئیلې وي بیا ئې هم غلطی وکړه. ﴿عَنْ جُنْدُبٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- « مَنْ قَالَ فِي كِتَابِ اللَّهِ بِرَأْيِهِ فَأَصَابَ فَقَدْ أَخْطَأَ »﴾

شرح الحدیث :

کوم سرې چه د کتاب الله تفسیر په خپله رائي باندې اوکړی نو که هغه تفسیر صحیح هم وی نو هغه بیا هم خطا اوکړه، د (برایه) په مطلب کښې دوه احتماله دی اول دا چه په خپله

(۱) قلت وفيه انه اذا لاثم فكيف الوعيد.  
(۲) سنن الترمذی/تفسیر القرآن ۱ (۲۹۵۲)، (تحفة الأشراف: ۳۲۶۲) (ضعیف)

رائې باندې ئې اوکړې بغير د دليل نه د خپل خواهش د لاندې د خپل غرض د موافقت دپاره، دويم مطلب دا دې چه صرف په ظاهر عربيت باندې نظر ساتلو سره قواعد د صرف او نحو او لغت مخې ته کيخودلو سره بغير د دې نه چه د قران کريم غرائب او مبهمات وغيره کښې سماع او منقول طرف ته رجوع اوکړي، په مجمع البحار کښې ليکلې دي چه د دې دويمې معنی د اخستلو په صورت کښې د ممانعت هيڅ وجه نشته اهلهذا اول معنی مراد شوه. د اکابرينو د کلام نه معلومېږي د کوکب او د فيض الباري وغيره نه چه کوم تفسير د قواعد عربيه او اصول شرعيه په رنړا کښې په خپل اجتهاد باندې اوکړې شي هغه صحيح او معتبر دې بلکه کتب تفسير ددې قسم تفسير نه ډک دي ځکه چه هغه تفسير کوم چه براه راست د رسول الله ﷺ نه منقول وي هغه ډير کم او اقل قليل دي، لهذا تفسير بالرائي په دې معنی باندې ممنوع نه دې، او که د هر آيت د تفسير منصوص من الشارع کيدل ضروري وي نو بيا د رسول الله ﷺ دعاء د ابن عباس رضی الله عنه په باره کښې ﴿اللهم فقه في الدين وعلمه التأويل﴾ په ظاهر کښې غير مفيد کيږي. د دې حديث په شرح ليکلو سره غور کولو باندې يو خبره په ذهن کښې راتلله بيا هم دغه شان خبره د معارف القرآن په مقدمه کښې په ښه انداز کښې ملاؤ شوه هغه دلته نقل کولې شي په اختصار سره.

#### (د تفسير ماخذ)

د ماخذ تفسير په باره کښې هغې کښې ليکلې شوې دي چه د علم تفسير د کتابونو مراجع او سرچينې شپږ دي:

۱: قران کريم، د علم تفسير روميې ماخذ خپله قران کريم دې پس اکثر داسې کيږي چه يو آيت مجمل وي او وضاحت ته محتاج وي نو خپله د قران کريم دويم آيت د هغې مفهوم لره واضح کړي (بيا دې لره په هغه مقدمه کښې په مثال سره واضح کړې شوې دي).

۲: حديث: د هغې وضاحت په هغه مقدمه کښې کړې شوې دي، خود الدر المنضود په مقدمه کښې د علم حديث چه کوم تعريف او غرض بيان کړې شوې دې هغه د دې د وضاحت دپاره کافی دي.

۳: دريم او څلورم ماخذ د صحابه کرامو رضی الله عنهم اقوال او د تابعينو اقوال دي. او پنځم ماخذ لغت د عربو هغوی ليکي: د قران کريم ډير آيتونه داسې دي چه د هغې په پس منظر کښې چونکه څه شان نزول يا بل څه فقهی يا کلامی مسئله نه وي په دې وجه د هغې په تفسير کښې د رسول الله ﷺ يا صحابه او تابعينو اقوال منقول نه وي پس د هغې د تفسير ذريعه صرف لغت عرب وي او د لغت په بنياد باندې د هغې تشريح کولې شي، د دې نه علاوه که د يو آيت په تفسير کښې څه اختلاف پيدا شي نو په مختلفو آراء کښې د محاکمې دپاره هم د علم لغت نه کار اخستلې شي، شپږم ماخذ تدبر او استنباط... دا د دې آخری ماخذ دې د قران کريم نکات او اسرار يو داسې لوئې سمندر دې چه د هغې هيڅ حد او غايه نشته پس کوم سړی ته چه الله پاک په اسلامي علومو کښې بصيرت ورکړې وي هغه چه څومره څومره په دې کښې غور کوي هم هغه څومره اسرار او نکات ئې مخې ته راځي، پس مفسرين کرام د خپل خپل



تدبر نتائج هم په خپلو تفسیرونو کښې بیان کړې دي، خو دا اسرار او نکات هغه وخت قابل قبول وي چه کله هغه د ذکر کړې شوې پنځو ماخذو سره تصادم نه ساتي..... الی اخره.

﴿مَنْ قَالَ فِي كِتَابِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ بِرَأْيِهِ فَأَصَابَ فَقَدْ أَخْطَأَ﴾ چا چه د قرآن کریم تفسیر په خپله رائي باندې اوکړو پس که هغه صحیح هم وي نو هغه خطاء او غلطې اوکړو هغه لره د خپل طرف نه تفسیر نه وو کول پکار، د شارحینو د کلام نه معلومېږي چه دا حدیث په خپل عموم او ظاهر باندې نه دي بلکه موؤل دي نچه د هغې وجه هم ښکاره ده ځکه چه خپله قرآن کریم وائي چه کوم خلق د لغت عرب نه خبر دي او د چا ژبه چه عربي ده د هغوی دپاره د قرآن کریم پوهه آسانه ده لکه چه د دي آیت کریمه مقتضی ده ﴿حَمْدُ - وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ - إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ﴾ اهل عربو ته خطاب دي چه مونږ دا کتاب په عربي ژبه کښې (کومه چه ستاسو مورنئ ژبه ده) په دي وجه نازل کړې دي چه تاسو په دي باندې بغير د واسطې نه پوهه شی.

قوله: ﴿وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ - قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ - وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ﴾ لهذا د دي آیتونو په رنډا کښې به د دي حدیث مطلب دا اخستلې شی چه د قرآن کریم د کومو آیتونو د مفهوم د فهم دپاره صرف د لغت عرب نه خبریدل او په هغې کښې مهارت کافی نه دي بلکه د هغې د فهم دپاره د نور علم ضرورت دي. اسباب نزول یا نور علوم شرعیه سره مناسبت نو هلته بغير د هغه معلوماتو نه صرف په خپلې رائي او پوهې سره تفسیر کول جرأت او غلطی ده اگر چه هغه رائي صحیح ولې نه وي، په حدیث کښې د ﴿برایه﴾ لفظ هم دي طرف ته اشاره کوي ځکه چه ښکاره ده چه د رائي د استعمال ضرورت خو هم هلته پېښېږي چرته چه صرف د لغت په پوهه باندې کار نه شی چلیدي، هم د داسي موقعو په لحاظ سره په دي حدیث کښې فرمائیلې شوې دي چه په خپله رائي دي مطلب نه متعین کوي بلکه د نقل طرف ته دي رجوع اوکړې شی هم دغه شان علماء کرام فرمائي چه په کومو آیتونو کښې د وعظ او نصیحت مضمون دي د هغې پوهه خو هر هغه چا دپاره آسانه ده چه په عربي باندې پوهیږي. خو د آیتونو نه استنباط د احکام شرعیه گران کار دي، د هغې دپاره د متعلقه علومو نه واقفیت ضروري دي. واللہ تعالی اعلم بالصواب. والحديث أخرجه الترمذی والنسائی، وقال الترمذی هذا حديث غريب، وقد تكلم بعض اهل العلم في سهيل بن ابي حزم قاله المنذرى.

### باب تګریر الحديث د یو حدیث د بار بار وئیلو بیان

[۳۶۵۳] حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مَرْزُوقٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي عَقِيلٍ هَاشِمِ بْنِ بِلَالٍ، عَنْ سَائِقِ بْنِ نَاجِيَةَ، عَنْ أَبِي سَلَامٍ، عَنْ جُبَلِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا حَدَّثَ حَدِيثًا أَعَادَهُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ.

ابو سلام د داسې کس نه روایت کوی چاچه د نبی ﷺ خدمت کړي دي فرمائیل شي چه رسول الله ﷺ به کله څه خبره کوله نو درې ځله به شي تکراروله (ددې دپاره چه ښه یاد شي).  
**﴿ اَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - كَانَ إِذَا حَدَّثَ حَدِيثًا أَعَادَهُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ﴾**

### شرح الحديث :

يعني چه کله به رسول الله ﷺ څه خبره بيان فرمائيله نو هغه به شي درې کرته فرمائيله. د دې نه هر کلام او هره خبره مراد نه ده بلکه بعض هغه خبرې دي کومې چه زیاتې مهتم بالشان وي، چه هغه ښه یادې کړې شي، د تکرار دا وجه چه هغه ښه یادې شي خپله په بعضو روایاتو کښې راغلې ده، پس په بخاری کښې یو روایت دې ﴿ کان اذا تکلم بکلمة اعادها ثلاثا حتى تفهم عنه ﴾ او د ترمذی په یو روایت کښې دی ﴿ حتی تعقل عنه ﴾ او په بذر کښې دی، قلت ﴿ ويحتمل ان يكون التكرار لاجل سهولة الحفظ ﴾ د بخاری شریف په دې روایت کښې د کوم چه پورته حواله ورکړې شوې ده د کوم راوی چه انس رضی الله عنه دې (۱) دا زیادت دې ﴿ واذا اتى على قوم فسلم عليهم سلم عليهم ثلاثا، وفي رواية انه كان اذا سلم سلم ثلاثا ﴾ د رسول الله ﷺ د درې کرته سلام په باره کښې مختلف توجیهات کړې شوي دي، یو داچه ددې نه سلام د استیذان مراد دې چه د هغې حد ثلاثا دې لکه چه د ابو موسی اشعری رضی الله عنه په حدیث کښې ذکر شوي دي، او یو توجیه دا کړې شوي ده چه دا په هغه صورت کښې ده چه کله د هغوی دا خیال وي چه دا سلام ټولو نه دې اوریدلې، کذا فی الفتح، او یو توجیه دا هم کړې شوي ده چه د اول سلام نه مراد سلام د استیذان، او د دویم سلام نه مراد سلام تحیه، یعنی مجلس ته د داخلیدو په وخت، او دریم سلام عند الرجوع عن المجلس.

### باب فی سرد الحديث د زرد خبرو کولو بیان

[۳۶۰۴] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَنْصُورٍ الطُّوسِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، قَالَ: جَلَسَ أَبُو هُرَيْرَةَ إِلَى جَنْبِ حُجْرَةَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا وَهِيَ تُصَلِّي، فَجَعَلَ يَقُولُ: "اسْمِعِي يَا رَبِّةَ الْحُجْرَةِ مَرَّتَيْنِ، فَلَمَّا قَضَتْ صَلَاتَهَا، قَالَتْ: أَلَا تَعْجَبُ إِلَى هَذَا وَحَدِيثِهِ؟ إِنْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيَحْدِثُ الْحَدِيثَ لَوْ شَاءَ الْعَادُّ أَنْ يُحْصِيَهُ أَحْصَاءٌ".

د عروه نه روایت دې فرمائي چه ابوهريره رضی الله عنه دام المومنین عائشي د حجرې په خوا کښې ناست وو او هغه په مونځ کښې مشغوله وه او ابوهريره به همدا خبره کوله چه اي حجرې والا واوره دوه پيري ام المومنين چه کله دمونځ نه فارغه شوه نو اوښ وئيل اي عروه اياته ددې کس (ابوهريره) د خبرونه تعجب نه کوي؟ نبی ﷺ چه به کله خبرې کولې نو داسې به وي که چرې شمارونکي شميرلي نو شميرلي شي شوي (يعني په صافو الفاظو سره به شي خبرې کولي).  
**قوله:** سرد الحديث یعنی مسلسل او زرد خبره کول.

(۱) په ظاهر دلته کتاب کښې ﴿ عن رجل خدع النبي ﷺ ﴾ نه مراد هم هغوی دي.  
 صحیح البخاری/ المناقب ۲۳ (۳۵۶۷)، تحفة الأشراف: (۱۶۴۵)، وقد أخرجه: صحیح مسلم/ الزهد ۷۱ (۲۴۹۳) (صحیح)



قوله: « عَنْ عُرْوَةَ قَالَ جَلَسَ أَبُو هُرَيْرَةَ إِلَى جَنْبِ حُجْرَةَ عَائِشَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - وَهِيَ تُصَلِّي الْخ »  
 عروه رضی اللہ عنہا فرمائی چه یو کرت ابوهریره رضی اللہ عنہ د عائشہ رضی اللہ عنہا حجرې ته نزدې کیناستلو او هغې دننه مونځ کولو، نو ابوهریره رضی اللہ عنہ یو یا دوه کرته چه مور بی بی لږه خبره واورئ لږه خبره واورئ! ډیر احادیث ئې زر زر واورول او لاړو. غالباً دا احادیث اورول به د استصواب او تصدیق دپاره وو. عروه فرمائی چه کله موریبې رضی اللہ عنہا مونځ پوره کړو نو د ابوهریره رضی اللہ عنہ په دې استعجال باندې ئې د تعجب اظهار او نکیر کولو سره او فرمائیل چه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د کلام طریقہ خودا وه چه دومره په اطمینان به ئې خبره فرمائیله چه که یو شمیر کونکي د هغوی الفاظ شمیر کول غوښتل نو شمیرلې ئې شو. ددې نه د روستو حدیث مضمون هم داسې دې.

والحدیث اخرجه البخاری ومسلم باحوه، قاله المنذری

[۳۶۵۵] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمَهْرِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّ عُرْوَةَ بِنَ الزُّبَيْرِ حَدَّثَتْهُ، أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَتْ: "أَلَا يَعْبُجُكَ أَبُو هُرَيْرَةَ؟ جَاءَ فَجَلَسَ إِلَى جَانِبِ حُجْرَتِي يُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُسَمِعُنِي ذَلِكَ، وَكُنْتُ أَسْتَحْ، فَقَامَ قَبْلَ أَنْ أَقْضِيَ سُبْحَتِي، وَلَوْ أَدْرَكْتُهُ لَرَدَدْتُ عَلَيْهِ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَكُنْ يَسْرُدُ الْحَدِيثَ مِثْلَ سَرْدِكُمْ".

د عروه نه روایت دې فرمائی چه م المومنین عائشې وویل ایاد ابوهریره رضی اللہ عنہ نه تعجب نه کوي چه راغلې دي او زما د حجرې په خوا کښې ناست دې؟ او د نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه حدیث بیانوي اوماته ئې اوروي او زه په مونځ کښې مشغوله وم اوزما د فارغیدونه مخکښې پاڅیدو اولارو، که چرې مالیدلي رې نرما به ورته وئيلي ووچه نبی صلی اللہ علیہ وسلم به ستاپه شان زر زر گفتگونه کوله.

## باب التَّوَقُّي فِي الْفُتْيَا

په فتوی ورکولو کښې د احتیاط بیان

[۳۶۵۶] (۲) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، حَدَّثَنَا عِيسَى، عَنِ الْأَوْزَاعِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَعْدٍ، عَنِ الصَّنَائِحِيِّ، عَنْ مُعَاوِيَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنِ الْغُلُوطَاتِ".

دمعاویه بن ابی سفیان رضی الله صلی اللہ علیہ وسلم نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم منع فرمائیلې ده دمغالطې ورکولونه.

« عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - نَهَى عَنِ الْغُلُوطَاتِ »

او په یو روایت کښې دې « عَنْ الْاِغْلُوطَاتِ » چه د هغې واحد اغلوطه دې بروزن افعوله. لکه .  
 احموقه د خمق نه، لکه چه د ابن عباس رضی اللہ عنہ په حدیث کښې د تقسیم غنیمت په روایت کښې تیر شوې دی چه هغوی د نجده حروی په باره کښې فرمائیلې وو، لولا ان یاتی احموقه لما کتبت الیه.....

(۱): صحيح البخاري/الناقب ۲۳ (۳۵۶۸ تعلیقاً)، م فضائل الصحابة ۳۵ (۲۴۹۳)، (تحفة الأشراف: ۱۶۶۹۸)، وقد أخرجه:

سنن الترمذي/المناقب ۹ (۲۶۴۳)، مسند احمد (۱۱۸/۶، ۱۵۷) (صحيح)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۴۲۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۳۵/۵) (ضعيف)

## شرح الحديث :

يعني رسول الله ﷺ د نادر او مشکل مسائلو په باره کښې د سوال کولو نه منع فرمائيلې ده کومو ته چه تعنتی سوالونه وئيلې شي او په عربي کښې ورته احاجی او الغاز، خکه چه دا قسم سوالاتو سره مقصود مخاطب لاندې ښکاره کول او د هغه شرمنده کول وي، شارحينو ليکلي دي « وفيه كراهية التعق والتكلف بما لا حاجة للانسان اليه من المسئلة » او په بذل کښې د گنگوهي ﷺ د تقرير نه نقل دي « ولا ضير فيه اذا كان لتدريب التلامذة » يعني استاد که د شاگردانو نه داسې سوالات او کړي چه په هغوی کښې بيداري او پوهه پيدا کړي نو په دې کښې هيڅ باک نشته لکه چه امام بخاري ﷺ دې طرف ته اشاره کړې ده په مستقل ترجمه الباب سره « باب طرح الامام المسئلة على اصحابه ليختبر ما عندهم من العلم »

او په دې کښې د ابن عمر رضی الله عنهما والا حديث « ان من الشجر شجرة لا يسقط ورقها انها مثل المسلم حدثوني ما هي » الحديث ذکر فرمائيلې دې، په دې باندې حافظ ﷺ ليکي: والنهي الوارد في ابي داؤد محمول على مالا نفع فيه او خرج على سبيل التعنت.....

## (د باب سره مناسبت)

د دې حديث د باب سره مناسبت چه د هغې مضمون احتياط في الفتوى دې داسې کيدې شي چه په داسې قسم سوالاتو کښې ويره ده د عدم احتياط د مجيب د طرف نه.

[۳۶۵۷] (۱) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمُقَرَّبُ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ يَعْنِي ابْنَ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ بَكْرِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ مُسْلِمِ بْنِ يَسَارٍ أَبِي عُمَانَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ أَفْتَى

د ابو هريره رضی الله عنه روايت دې فرماني چه نبی ﷺ فرمائيلي دي څوك چه بغيرد علم نه فتري وركوي ددې گناه به په ده باندې وي.

(۱) وَحَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، عَنْ بَكْرِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ عَمْرٍو بْنِ أَبِي نُعَيْمَةَ، عَنْ أَبِي عُمَانَ الطَّنَبُذِيِّ رَضِيعِ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ مَرْوَانَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ أَفْتَى بِغَيْرِ عِلْمٍ كَانَ إِيْمُهُ عَلَى مَنْ أَفْتَاهُ"، زَادَ سُلَيْمَانُ الْمَهْرِيُّ فِي حَدِيثِهِ: وَمَنْ أَشَارَ عَلَى أَخِيهِ بِأَمْرٍ يَعْلَمُ أَنَّ الرُّشْدَ فِي غَيْرِهِ فَقَدْ خَانَهُ، وَهَذَا لَفْظُ سُلَيْمَانَ.

د ابو هريره رضی الله عنه روايت ده فرماني چه نبی ﷺ فرمائيلي دي څوك چه بغيرد علم نه فتوي وركوي ددې گناه به په ده باندې وي، سليمان نهري په خپل روايت كښې دا اضافه كړې ده چا په خپل يو مسلمان ورور ته په قصد سره داسې مشوره وركړه چه هغه ته نقصان رسوي نو يقينا ده خيانت او كړو، دا د سليمان د روايت الفاظ دي.

« سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- « مَنْ أَفْتَى بِغَيْرِ عِلْمٍ كَانَ إِيْمُهُ عَلَى مَنْ أَفْتَاهُ » يعني كوم سړی ته چه د هغه د استفتاء جواب بغير د تحقيق نه وركړې شري

۱: سنن ابن ماجه/المقدمة ۸ (۵۳)، (تحفة الأشراف: ۱۴۶۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۲۱/۲، ۳۶۵)، سنن الدارمي/المقدمة ۲۰ (۱۶۱) (حسن)

۲: سنن ابن ماجه/المقدمة ۸ (۵۳)، (تحفة الأشراف: ۱۴۶۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۲۱/۲، ۳۶۵)، سنن الدارمي/المقدمة ۲۰ (۱۶۱) (حسن)



وی او بیا دې مستفتی عامی د هغه فتویٰ مطابق عمل کړې وی نو د هغې ګناه به په مستفتی باندې نه وی بلکه په مفتی باندې به وی، خو د دې مفتی نه مراد هغه جاهل مفتی دې کوم چه د علماء په هیئت او صورت کښې وی، او که یو عامی د ځان په شان عامی سړی نه تپوس کولو سره په هغې باندې عمل او کړی نو په دې صورت کښې به ګناه په سائل باندې وی.

د مفتی په غلطه فتویٰ ورکولو باندې څه حکم دې؟ په دې باندې څه اندازه کلام په ابواب التیمم باب فی المجروح یتیمم کښې تیر شوې دې. هغې ته رجوع او کړئ. والحدیث اخرجہ ابن ماجه مقتصر علی الفصل الاول بنحوه، قاله المنذری.

### باب کراهیة منہ العلم

د علم پټولو د ګناه بیان

[۳۶۵۸] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ الْحَكِيمِ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ سَبَلَ عَنْ عِلْمٍ فَكَتَمَهُ اللَّهُ بَلِجَامٍ مِنْ نَارِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ".

د ابوهریره رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلى دی څوک چه دچانه دعلم ديوي مسئلې تپوس اوکړي او هغه ورته جواب ورنکړي او مسئله پټه کړي نو د قیامت په ورځ باندې به دې کس ته د اور واګې واچولې شي.

قوله: «عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- «مَنْ سَبَلَ عَنْ عِلْمٍ فَكَتَمَهُ اللَّهُ بَلِجَامٍ مِنْ نَارِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ»»

### شرح الحديث :

يعنى د کوم سړی نه چه څه مسئله او تپوسلې شي چه هغه ته پرې علم وی او هغه ئې پټه کړی نو د قیامت په ورځ باندې به هغه مفتی ته الله پاک په خوله کښې د اور واړې واچوی. (اعاذنا الله منه)

په خوله کښې د واړو کیدل د کلام کولو نه مانع وی، نو چونکه دا سړې هم د مسئلې د بیانولو نه منع وو او گویا هغه په خپله خوله کښې واړې اچولې وې نو دغه شان به الله پاک هم هغه ته د هغه د ګناه مشابه سزا ورکوی. قال الخطابی : وخرج هذا على معنى مشكلة العقوبة اللب كقوله تعالى {الذين ياكلون الربا لا يقومون} په دې حدیث کښې چه د کوم علم د کتمان نه منع کړې شوې ده د دې نه مراد هغه علم دې چه د هغې

تعلیم لازمی او ضروری دې، لکه چه یو کافر د اسلام د قبولولو اراده اوکړی او د چا نه تپوس اوکړی چه ماته بیان کړئ دین اسلام څه څیز دې، د دې څه حقیقت دې، یا لکه چه څنگه یو جاهل سړی چه هغه له د مانځه طریقه نه ورځی او حال دا چه د مانځه وخت راغلو او هغه د چا نه د مانځه کیفیت او طریقه معلومه کړی، او دغه شان نور مسائل، او کوم علم

(۱) سنن الترمذی/العلم ۳ (۲۶۴۹)، سنن ابن ماجه/المقدمة ۲۴ (۲۶۱)، (تحفة الأشراف: ۱۴۱۹۶)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۲/۲۶۳، ۳۰۵، ۳۴۴، ۳۵۳، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۹، ۵۰۸) (حسن صحيح)

چه د مستحباتو د قبيلې نه وی چه د هغې د پیژندلو خلقو ته څه خاص ضرورت نه وی هغه علم په دې کښې داخل نه دی (بذل عن الخطائی) او په حاشیه د بذل کښې دې « وقيل المراد به علم الشهادة كذا في المرقاة » یعنی یو سړی ته د مدعی د کلام د صادق کیدلو علم دې او د هغه نه دې باره کښې شهادت طلب کړی نو هغه انکار او کړی، وفيها ایضا وقیده فی الکوکب بان لا تكون فی الاظهار مقسدة اه...

### ایا حدیث الباب موضوعی دې؟

د دې حدیث په باره کښې په حاشیه د بذل کښې لیکلې دی: « تکلم بعضهم علی الحدیث بانه ضعیف بل موضوع، وفي المقاصد الحسنة: حسنه الترمذی وصححه الحاكم » اه د دې کتاب په مقدمه کښې هم د دې حدیث په باره کښې او د دې نه علاوه هم چه په کومو احادیثو باندې ابن الجوزی رحمه الله د وضع حکم لگولې دې، ذکر کړې شوې دی او دا چه د دې قسم په ابوداؤد کښې نهه احادیث دی، حافظ منذری رحمه الله د دې حدیث په باره کښې لیکي: واخرجه الترمذی وابن ماجه، وقال الترمذی حدیث حسن، هذا آخر کلامه، وقد روی عن ابی هريرة رضی الله عنه من طریق منها فیها مقال، والطریق التي اخرجها بها ابوداؤد طریق حسن، فانه رواه عن التبوذکی وقد احتج به البخاری ومسلم عن حماد بن سلمة وقد احتج به مسلم واستشهد به البخاری عن علی بن الحکم وهو ابو الحکم البنانی، قال الامام احمد لیس به باس، وقال ابوحاتم الرازی لا باس به صالح الحدیث، عن عطاء بن ابی رباح وقد اتفق الامامان علی الاحتجاج به

د دې نه پس هغوی فرمائی چه دا حدیث د ډیرو صحابه کرامو نه نقل دې چه د هغوی نومونه ئې ذکر کړی دی، فی کل منها مقال، او حافظ ابن القیم په تهذیب السنن کښې په دې باندې نور هم تفصیلی کلام فرمائیلې دې فارجع الیه لو شت...

### باب فَضْلِ نَشْرِ الْعِلْمِ

د علم نشر کولو او خورولو بیان

[۳۶۵۹] (۱) حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعُمَرَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَا: حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ الْأَعْمَشِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ عُسَيْدِ بْنِ جَبْرِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَسْمَعُونَ، وَيُسْمَعُ مِنْكُمْ، وَيُسْمَعُ مِنْكُمْ».

د ابن عباس رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلې دي تاسو زمانه علم اورئ او خلق به ستاسونه علم آوری او ستاسونه چه اعلم واوریدو د هغوی نه به ئې نور خلق واورئ. قوله: «عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- «تَسْمَعُونَ وَيُسْمَعُ مِنْكُمْ وَيُسْمَعُ مِنْكُمْ»

رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائی صحابه کرامو ته چه تاسو علم زمانه اورئ او بیا به روستو ستاسو نه اوریدلې شی او د هغوی نه پس به بیا د هغه چا نه اوریدلې شی چا چه ستاسو نه اوریدلې



وی، یعنی صحابه کرام رضی الله عنہم به دین اوری د رسول الله صلی الله علیہ وسلم نه او تابعین به اوری د صحابه کرام رضی الله عنہم نه او تبع تابعین به ئې اوری د تابعینو نه، وهلم جرا.... گویا په دې کښې تحریض دې په نشر د علم باندې چه تاسو دا علم زما نه ښه محفوظ کړئ او دا خپلو روستو خلقو ته اورسوی او هغوی دې هم روستو خلقو ته اورسوی.

[۳۶۶۰] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ شُعْبَةَ، حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ مِنْ وَلَدِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «نَضَّرَ اللَّهُ أَمْرًا سَمِعَ مِنْ أَحَدِنَا فَحَفِظَهُ حَتَّى يُلَاقَهُ، فَرُبَّ حَامِلٍ فِيهِ إِلَى مَنْ هُوَ أَفْقَهُ مِنْهُ، وَرُبَّ حَامِلٍ فِيهِ لَيْسَ بِفَقِيهِ».

د زید بن ثابت رضی الله عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیہ وسلم و مې اوریدلی دی چه فرمائیل ئې الله تعالی دي هغه کس تر اوتازه اوساتي چا چه زمونږ نه حدیث واوریدو او یاد ئې کړو تردې چه دایی نورو ته هم ورسوو ځکه چه ډیر خلق داسې دی چه ددین خبره دخپل ځان نه پوهو خلقو ته هم رسوي څوک چه پخپله فقیهان نه دې.

«عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَقُولُ « نَضَّرَ اللَّهُ أَمْرًا سَمِعَ مِنْ أَحَدِنَا فَحَفِظَهُ الْحَدِيثُ » ددې حدیث شرح وغیره ددې کتاب په مقدمه کښې تیره شوې ده.

والحدیث أخرجه الترمذی والنسائی، وقال الترمذی: حدیث حسن وأخرجه ابن ماجه من حدیث عباد والدیحمی عن زید بن ثابت رضی الله عنہ قاله المنذری.

[۳۶۶۱] (۲) حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «وَاللَّهِ لَأَنْ يَهْدِيَ اللَّهُ بِهَذَاكَ رَجُلًا وَاحِدًا خَيْرٌ لَكَ مِنْ خُمُرِ النَّعَمِ».

سهل بن سعید د نبی کریم صلی الله علیہ وسلم نه روایت بیانوي فرمائی چه نبی صلی الله علیہ وسلم فرمائی دي په الله ئې دي قسم وي که چرې بوکس ته ستا په ذریعه هدایت وکړی شي نو دا ستاد پاره دسرو او ښانونه غوره دي.

«عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ عَنِ النَّبِيِّ -صلى الله عليه وسلم- قَالَ « وَاللَّهِ لَأَنْ يَهْدِيَ اللَّهُ بِهَذَاكَ رَجُلًا وَاحِدًا خَيْرٌ لَكَ مِنْ خُمُرِ النَّعَمِ »

د حدیث مضمون واضح دې چه که د یو سړي په کوشش سره یو سړي هم هدایت بیا مومی نو هغه د هغه دپاره د سرو او ښانو نه افضل دې کوم چه د عربو په نزد محبوب ترین څیز وو، د دې نه هم د نشر علم فضیلت معلومیږي.

والحدیث أخرجه البخاری ومسلم والنسائی مطولا في عزوة خيبر، وقوله هذا على رضی الله عنہ، قاله المنذری.

### باب الْحَدِيثِ عَنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ د بنی اسرائیلو نه د روایت نقل کولو بیان

په دې باب باندې کلام څو ابواب مخکښې په «باب حدیث اهل الكتاب» کښې تیر شو.

(۱) سنن الترمذی/العلم ۷ (۲۶۵۶)، (تحفة الأشراف: ۳۶۹۴)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه/المقدمة ۱۸ (۱۲۳۰)، مسند احمد (۳۷/۱، ۴۳۷/۵)، سنن الدارمي/المقدمة ۲۴ (۲۳۵) (صحیح)

(۲) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۴۷۳۰)، وقد أخرجه: صحیح البخاری/الجهاد ۱۰۲ (۲۹۴۲)، ۱۴۳ (۳۰۰۹)، المناقب (۳۷۰۱)، المغازی ۳۸ (۴۲۱۰)، صحیح مسلم/الفضائل الصحابة ۴ (۲۴۰۶)، مسند احمد (۱۸۵/۱) (صحیح)

[۳۶۶۲] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "حَدِّثُوا عَنِ ابْنِي إِسْرَائِيلَ وَلَا حَرَجَ".

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی علیه، السلام فرمائیلى دى دبنی اسرائیلونه حدیث بیانوی او په دې کښې هیڅ حرج نشته.

[۳۶۶۳] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُعَاذٌ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي حَسَّانٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: "كَانَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحَدِّثُنَا عَنْ ابْنِي إِسْرَائِيلَ حَتَّى يُصْبِحَ مَا يَقُومُ إِلَّا إِلَى عَظِيمِ صَلَاةٍ".

دعبداللہ بن عمرو رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه مونږ ته به نبی کریم صلی الله علیه و آله دبنی اسرائیلو واقعات بیانول تردې چه سحر به شواونه به پاڅیدو مکرده مونږ په اراده باندې.

## بَابُ فِي طَلَبِ الْعِلْمِ لِغَيْرِ اللَّهِ تَعَالَى

باب د غیر الله دپاره د علم حاصلولو د بدې بیان

[۳۶۶۴] (۳) حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا سُرَيْجُ بْنُ النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ، عَنْ أَبِي طَوَالَةَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مَعْمَرٍ الْأَنْصَارِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ تَعَلَّمَ عِلْمًا مِمَّا يُتَّقَى بِهِ وَجْهُ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ لَا يَتَعَلَّمُهُ إِلَّا لِيُصِيبَ بِهِ عَرَضًا مِنَ الدُّنْيَا لَمْ يَجِدْ عَرَفَ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ"، يَعْنِي رِجْهًا.

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلى دى څوك چه ديني علم د دنیا د غرض دپاره حاصل کړي نو د قیامت په ورځ به د جنت بوټي قدرې هم محسوس نکړي.  
 قوله: ﴿ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- « مَنْ تَعَلَّمَ عِلْمًا مِمَّا يُتَّقَى بِهِ وَجْهُ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ لَا يَتَعَلَّمُهُ إِلَّا لِيُصِيبَ بِهِ عَرَضًا مِنَ الدُّنْيَا لَمْ يَجِدْ عَرَفَ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الْخ ﴾  
 يعنى کوم سړي چه د داسې علم په ذریعه چه په هغې باندې د الله پاک رضا حاصلولې شی. يعنى علم دین وشریعت، هغه د یو متاع دنیوی د حصول دپاره زده کړی نو د قیامت په ورځ باندې به هغه د جنت خوشبوټی بیانه مومی.

### شرح الحديث :

په دې حدیث کښې د داسې سړي دپاره علی وجه المبالغة د دخول جنت نفی ده چه جنت څه د هغې خوشبوټی به هم لاندې نه کړی. خو د اهل سنت په نزد داسې قسم احادیث موؤل دی، او تاویل دا دې چه د دې نه د دخول اول نفی مراد ده، يعنى بغیر د سزا خوړلو نه جنت ته نه شی داخلیدې، یو تاویل دا هم کړې شوې دې چه اگر چه داسې سړي که جنت ته داخل هم شی د هغه ځانې خوشبوټی به ورته حاصله نه وی، او یو تاویل مسموع د بعض مشائخو نه دا دې چه نیکان خلق کوم چه به د قیامت په ورځ جنتیان وی هغوی ته به په قیامت کښې د جنت ټټکلې خوشبوټی محسوسیږي، نو په دې حدیث کښې د دې نفی ده کومه چه د ﴿ مِمَّا ﴾

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۰۷۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۷۷۴، ۵۰۲، ۵۶، ۶۷۳) (صحيح)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۹۳۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۴۲۷) (صحيح الإسناد)

(۳): سنن ابن ماجه/المقدمة ۲۳ (۲۵۲)، (تحفة الأشراف: ۱۳۳۸۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۳۳۸) (صحيح)



پتښی وجه الله) د قید نه مستفاد کیرې چه دا وعید د علم دین په باره کښې دې که یو سړې دنیوی علومو لره د دنیا د گتې دپاره حاصل کړی نو په دې کښې هیڅ پاک نشته، اصل کښې دا دنیوی علوم کوم چه حقیقه علم هم نه دې بلکه د کار کسب د قبیل نه دې. علم حقیقی هم هغه دې چه په هغې سره د حق معرفت حاصل شی او د الله پاک او د هغه د رسول ﷺ د اطاعت او د رضا کولو طریقه معلومه شی. قال الله تعالی ﴿انما یخشی الله من عباده العلماء﴾ والحديث أخرجه ابن ماجه، والترمذی وقال: هذا حديث حسن، قاله المنذری

## باب فی القصص د قصویا نولویان

[۳۶۶۵] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُسْهَرٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ بْنُ عَبَّادٍ الْخَوَّاصُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي عَمْرٍو السَّيَّانِي، عَنْ عَمْرِو بْنِ عَبْدِ اللَّهِ السَّيَّانِي، عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ الْأَشْجَعِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: «لَا يَقْصُ إِلَّا أَمِيرٌ أَوْ مَأْمُورٌ أَوْ مُخْتَالٌ».

د عوف بن مالک اشجعي رضی الله تعالی عنه نه روایت دې فرمائی چه (په وعظ او نصیحت کښې). قصي نه بیانوي مگر امیر یا مامور او مغرور او متکبره کس. قوله: ﴿عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ الْأَشْجَعِيِّ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَقُولُ « لَا يَقْصُ إِلَّا أَمِيرٌ أَوْ مَأْمُورٌ أَوْ مُخْتَالٌ »﴾

### شرح الحديث:

قصص یعنی وعظ او تذکیر هم د دې نه دې قاص یعنی واعظ او مبلغ، په دې حدیث کښې دا دی چه دا عمل قصص یا خو امیر کوی، یا د هغه نه لاندې مامور، او که د دې دواړو نه علاوه ئې بل څوک کوی نو هغه دریم سړې مختال او متکبر دې. (اشکال: ایا هر مسلمان وعظ نه شی کولی؟)

دلته سوال دا واردیږی چه وعظ نصیحت خو هر عالم او مومن کولی شی، او د دې حدیث نه معلومیږی چه دا کار صرف د امیر یا مامور دې، دبل چا دپاره مناسب یا جائز نه دی، په دې وجه بعض شراح د دې دا تاویل کړې دې چه دا په خطبه باندې محمول دې، مطلق وعظ او نصیحت نه دې مراد ځکه چه خطبه ورکول هغه د امیر یا د مامور منصب دې، یو تاویل دا هم په فهم کښې راځی چه ممکن ده دا مراد وی چه ﴿فی حضرة الامير او المامور ولا یقص الا مختال﴾ یعنی کوم سړې چه د امیر یا د هغه د مامور په موجودگي کښې وعظ او نصیحت کوی هغه متکبر دې لهذا امام یا هغه سړې چه د امام د طرف نه وی د هغه په موجودگي کښې بل سړی له نه دی پکار که هغه داسې کوی نو پوه شه چه هغه متکبر دې، د ټولو نه غوره توجیه هغه ده کوم چه د جناب گنگوهی په تقریر د ابوداؤد کښې ده: ﴿القاص المخلص مأمور من الله تعالى، وذكر فان الذكرى تنفع المؤمنين﴾ یعنی په اخلاص سره وعظ او تقریر کونکې هم د الله پاک د طرف نه مامور دې لکه چه په آیت کریمه کښې دی پس د آیت کریمه

۱: تفرد به ابوداؤد، (تحفة الأشراف: ۱۰۹۱۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۳/۱، ۲۷، ۲۹) (حسن صحيح)

په عموم کښې به دا ذکر کړې شوې سړې هم داخل شي (فله در الشيخ رحمه الله)

[۳۶۶۶] (حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ الْمُعَلَّى بْنِ زِيَادٍ، عَنْ الْعَلَاءِ بْنِ بَشِيرٍ الْمَزْنِيِّ، عَنْ أَبِي الصِّدِّيقِ النَّاجِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ: "جَلَسْتُ فِي عَصَابَةٍ مِنْ ضُعَفَاءِ الْمُهَاجِرِينَ، وَإِنْ بَعْضُهُمْ لَيَسْتَبْرُ بِبَعْضٍ مِنَ الْعَرَبِيِّ، وَقَارِئٌ يَقْرَأُ عَلَيْنَا إِذْ جَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَامَ عَلَيْنَا، فَلَمَّا قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَكَتَ الْقَارِئُ، فَسَلَّمَ، ثُمَّ قَالَ: مَا كُنْتُمْ تَصْنَعُونَ؟ قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّهُ كَانَ قَارِئٌ لَنَا يَقْرَأُ عَلَيْنَا، فَكُنَّا نَسْتَمِعُ إِلَى كِتَابِ اللَّهِ، قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي جَعَلَ مِنْ أُمَّتِي مَنْ أَمَرْتُ أَنْ أَصْبِرَ نَفْسِي مَعَهُمْ، قَالَ: فَجَلَسَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَسَطَنَا لِيُعْدِلَ بِنَفْسِهِ فِينَا، ثُمَّ قَالَ بِيَدِهِ: هَكَذَا فَتَحَلَّقُوا وَبَرَزْتُ وَجُوهُهُمْ لَهُ، قَالَ: فَمَارَأَيْتُمْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَرَفَ مِنْهُمْ أَحَدًا غَيْرِي، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَبْشِرُوا يَا مَعْشَرَ صَعَالِكِ الْمُهَاجِرِينَ بِالنُّورِ التَّامِرِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ قَبْلَ أَغْنِيَاءِ النَّاسِ يَنْصُفُ يَوْمَ ذَلِكَ خُمْسُ مِائَةِ سَنَةٍ".

د ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه زه دغریبو فقیرانو مهاجرینوپه ډله کښې کښیناستم اوپه مونږ کښې دقران یوقاري دقران تلاوت کولو په دې وخت کښې نبی صلی اللہ علیہ وسلم راغې او مونږ ته مخامخ ودریدو نو قاري خاموش شواو نبی صلی اللہ علیہ وسلم په مونږ سلام و اچولو او تپوس ئې وکړو تاسو څه کول؟ مونږ عرض وکړو دي قاري د قران کریم تلاوت کولو او مونږ قران کریم ته غوږ ایخودلې وړ بیا نبی صلی اللہ علیہ وسلم اوفرمايیل ټول تعریفونه دهغه الله تعالی دپاره دي چاچه زماپه امت کښې داسې خلق پیدا کړل دچاسره چه دکښیناستلوماته حکم شوې دې، راوی وائی بیانبی صلی اللہ علیہ وسلم زمونږ په مینځ کښې کښیناستو ددې دپاره چه مونږ ټولوته یو برابر نزدې وی اوبیا ئې دخپلو مبارکو لاسونونه حلقه جوړه کړه او کښیناستونه به اشاره وکړه نونول خلق دحلقې په شکل کښې کښیناستل اودتامو کسانو مخونه نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته متوجه شول، ابوسعید خدری رض فرمائی ماته معلومه شوه چه زمانه کې علاوه په دې کسانو کښې بل کس نه پیژندو نبی صلی اللہ علیہ وسلم اوفرمايیل ای دفقیرانو اود مهاجرینو بلي تاسوته دې دقیامت په ورځ باندي دپوره نور بشارت وي، تاسو خوشحاله شی چه تاسویه دمالداره خلقونه نیمه ورځ مخکښې جنت ته ځي او هغه نیمه ورځ به دپنځه سوو کالوسره برابروی.

(مضمون الحديث)

﴿ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ جَلَسْتُ فِي عَصَابَةٍ مِنْ ضُعَفَاءِ الْمُهَاجِرِينَ وَإِنْ بَعْضُهُمْ لَيَسْتَبْرُ بِبَعْضٍ مِنَ الْعَرَبِيِّ وَقَارِئٌ يَقْرَأُ عَلَيْنَا ﴾

د حديث مضمون واضح دې (وان بعضهم ليستر بعض) يعنى دې حضراتو سره د اغوستلو دپاره کپړې هم نه وې چه د هغې په وجه باندي د يو بل نه شاته خپل بدنونه پټول. ﴿ فَجَلَسَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- وَسَطًا لِيُعْدِلَ بِنَفْسِهِ فِينَا ﴾ نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم زمونږ ترمينځه کيनाستلو مونږ سره دخپلې برابرئ ښکاره کولو دپاره، يعنى د تواضع په طور هغوی داسې اوکړل. ﴿ ثُمَّ قَالَ بِيَدِهِ هَكَذَا فَتَحَلَّقُوا وَبَرَزْتُ وَجُوهُهُمْ لَهُ ﴾ يعنى بيا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خپل لاس

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۹۷۸)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه / الزهد ۶ (۱۴۲۲)، (قوله: فقراء المهاجرين يدخلون الجنة قبل أغنياء الناس) - مسند احمد (۹۶، ۶۳/۳) (ضعيف)



مبارک سره اشاره کولو سره په دې باندې پوهه کړل چه تاسو ټول حلقه کښې کيښئ، پس هغوی ټول د حلقې شکل کښې کيښاستل او د ټولو مخونه د رسول الله ﷺ طرف ته شو. ﴿أَبْشِرُوا يَا مَغَشَرَ صَعَالِكِ الْمُهَاجِرِينَ بِالنُّورِ الثَّامِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الْخ﴾ رسول الله ﷺ او فرمائل ای د مهاجرینو د غریبو جماعت ته زه تاسو ته د قیامت په ورځ د کامل نور بشارت درکوم او رسول الله ﷺ دا هم او فرمائل چه تاسو یعنی فقراء مهاجرین به جنت ته د مالدارو خلقو نه پنځه سوه کاله مخکښې جنت داخلېږئ.

دا حدیث په ترمذی شریف کښې په مختلفو الفاظو سره راغلې دې ﴿ففي رواية منه يدخل الفقراء الجنة قبل الاغنياء بخمس مائة عام نصف يوم قال الترمذی حسن صحيح، وفي رواية يدخل فقراء المسلمين، وفي رواية ان فقراء المهاجرين يدخلون قبل اغنيائهم بخمس مائة عام، وفي رواية يدخل فقراء المسلمين الجنة قبل اغنيائهم باربعين حريفا﴾

[۳۶۶۷] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلَامِ يَعْنِي ابْنَ مُطَهَّرٍ أَبُو ظَفَرٍ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ خَلْفٍ الْعَيْثِيُّ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَأَنْ أَقْعُدَ مَعَ قَوْمٍ يَذْكُرُونَ اللَّهَ تَعَالَى مِنْ صَلَاةِ الْغَدَاةِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أُعْتِقَ أَرْبَعَةً مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ، وَلَأَنْ أَقْعُدَ مَعَ قَوْمٍ يَذْكُرُونَ اللَّهَ مِنْ صَلَاةِ الْعَصْرِ إِلَى أَنْ تَغْرُبَ الشَّمْسُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أُعْتِقَ أَرْبَعَةً».

دانس بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم فرمائلې دی یقیناکه چرې زه دداسې خلقو سره کښینم څوک چه د سحر دمونځ نه پس د نمر دختر پورې د الله په ذکر کښې مشغول وي نو ماته دا عمل د اسماعیل په اولاد کښې د څلورو غلامانو آزادولونه زیات محبوب دې، او یقیناکه چرې زه دداسې خلقو سره کښینم څوک چه د مازیگر دمونځ نه پس د نمر پریوتو پورې د الله ذکر کوي نو د ماته د څلورو غوره غلامانو آزادولونه بهتره ده.

قوله: ﴿عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- «لَأَنْ أَقْعُدَ مَعَ قَوْمٍ يَذْكُرُونَ اللَّهَ تَعَالَى مِنْ صَلَاةِ الْغَدَاةِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أُعْتِقَ أَرْبَعَةً مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ الْخ﴾

رسول الله ﷺ فرمائی چه د ذکر کونکو سره د سحر د مانځه نه د نمر ختلو پورې زه کینم نو دا خبره ماته د دې نه ډیره خوښه ده چه څلور غلامان آزاد کړم د اولاد اسماعیل عليه السلام نه، یعنی خالص عرب، او د حدیث په دویم جزء کښې بعینه هم دا مضمون د مازیگر د مانځه نه تر د نمر د پریوتلو په باره کښې دې.

### د ذکر اجتماعی ثبوت او د هغې فضیلت:

د دې حدیث نه اول خو ذکر اجتماعی ثابتېږي او بل خاص د دې دوه وختونو فضیلت.

### (مسئله استرقاق العرب)

ددې حدیث نه د استرقاق العرب جواز هم معلومېږي، مسئله اختلافی ده د احنافو په نزد جائز نه دې، د احنافو د طرف نه بعض حضراتو د دې توجیه داسې کړې ده چه انه محمول علی المبالغة.

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۳۵۱) (حسن)

[۳۶۶۸] حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، عَنْ الْأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اقْرَأْ عَلَى سُرَّةِ النَّسَاءِ، قَالَ: قُلْتُ: أَقْرَأُ عَلَيْكَ وَعَلَيْكَ أَنْزَلَ؟ قَالَ: إِنِّي أَحِبُّ أَنْ أَسْمَعَهُ مِنْ غَيْرِي، قَالَ: فَقَرَأْتُ عَلَيْهِ حَتَّى إِذَا انْتَهَيْتُ إِلَى قَوْلِهِ: فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ سُرَّةِ النَّسَاءِ آيَةً ۖ فَرَفَعْتُ رَأْسِي، فَإِذَا عَيْنَاهُ تَهِيلَانِ".

د عبد الله ﷺ نه روایت دي فرمائی چه نبی ﷺ راته وفرمائیل ماته سورة النساء واورو ماعرض اوکړو اپازه تاته اورو احوال دادې پنه تا باندې خوتران نازل شوې دي، نبی ﷺ او فرمائیل زه داغواړم چه دبل چادرې نه ئې واورم بيا مادهنه په وړاندې تلاوت شروع کړو کله چه زه دي آيت کریمه: «فكيف إذا جئنا من كل أمة بشهيد» ته ورسيدم نوماخپل سر راپورته کړو اووي کتل چه د نبی ﷺ دسترگونه اوبښکي رواني وي (په دې نکرباندې چه زه به هم پخپل امت بانې گواه جوهرېم او معلومه نه ده چه زما امت به دڅه قسم اعمالو ارتکاب کوي.

﴿ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- « اقْرَأْ عَلَى سُرَّةِ النَّسَاءِ ». قَالَ قُلْتُ أَقْرَأُ عَلَيْكَ وَعَلَيْكَ أَنْزَلَ قَالَ « إِنِّي أَحِبُّ أَنْ أَسْمَعَهُ مِنْ غَيْرِي » ﴾

دا حديث مصنف ﷺ په باب القصص کښې ذکر فرمائيلې دي په ترجمه الباب او حديث کښې ظاهرا خو هيڅ مناسبت نه معلومېږي مگر دا که اوئيلې شي چه قرآن کریم خو د وعظ او نصيحت د ټولو نه جامع کتاب دي بيا د هغې تلاوت داسې کول چه يو ئې بل ته اوروي په معاني کښې د غور او فکر سره دا سواد قصص او تذکیر نه هيڅ نه دی. والحديث أخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي قاله المنذري. (آخر كتاب العلم)

## کتاب الأشربة

د ځکلو د څيزونو د احکامو بيان

(ما قبل سره ربط او مناسبت):

مصنف ﷺ اول بيوع او تجارتونه او اجارې بيان کړې کوم چه د اسباب کسب نه دی فالان يذکر ما لاجله الکسب ای الاکل والشرب... پس د کتاب الاشربة نه پس ئې کتاب الطعمة راوړلې دي، په اطعمه او اشربه دواړو کښې چه مصنف ﷺ کوم ترتيب اختيار کړې دي يعنی د اشربه تقديم په اطعمه باندې حال دا چه شرب د طعام نه پس وی، پس په صحيح بخاري او سنن ترمذي کښې ابواب الاشربة د ابواب الطعمة نه پس دی، په دې کښې به دا وئيلې شي چه د پيدائش په شروع کښې يعنی د ماشوم د خوراک شروع د مشروب نه کيږي پس مصنف ﷺ هم په دې کښې د دې لحاظ کولو سره داسې اوکړل.

۱: صحيح البخاري/تفسير القرآن ۹ (۴۵۸۲)، فضائل القرآن ۳۲ (۵۰۴۹)، ۳۳ (۵۰۵۰)، ۳۵ (۵۰۵۵)، صحيح مسلم/المسافرين ۴۰ (۸۰۰)، سنن الترمذي/تفسير سورة النساء ۵ (۳۰۲۵)، (تحفة الأشراف: ۹۴۰۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۳۲، ۳۸۰/۱) (صحيح)



## باب فِي تَحْرِيمِ الْخَمْرِ

د شرابو د حرمت بيان

د شرابو حرمت د موافقات عمری عليه السلام نه دې لکه چه په حديث الباب کښې ذکر شوې دې، د شرابو تحريم په قرآنی آيتونو کښې په تدريج سره شوې دې، په دې سلسله کښې اول د بقرې آيتونه «يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ الْخ» نازل شو چه په هغې کښې دا فرمايلي شوې دې چه خمر د لوڼې گناه خيز دې خو په دې کښې منافع هم دې، چه کله دا آيت کریمه نازل شو نو عمر عليه السلام دعا اوکړه «اللهم بين لنا في الخمر بيانا شفاء» چه اي الله د شرابو په باره کښې تشفی ورکونکې حکم نازل او فرمايه، د دې نه روستو د سورة النساء آيت نازل شو «يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَى» چه په هغې کښې صرف د مانځه په وخت کښې د شرابو حرمت بيان کړې شو، پس د رسول الله عليه السلام د طرف نه به د مونځونو په وختونو کښې يو منادی آواز کولو «إِلا لا يقربن الصلاة سكران» په دې باندې هم عمر عليه السلام هم هغه دعا اوکړه کومه چه ئې مخکښې کړې وه، په دې باندې د سورة المائدة آيت نازل شو «يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رَجَسٌ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ الْخ» چه ددې په آخر کښې دې «فَهَلْ أَنْتُمْ مُتَّقُونَ» په دې آيت کریمه کښې صفا د خمر تحريم بيان کړې شوې دې او او فرمايلي شو چه تاسو د دې نه منع کيدونکي يئ او که نه سيدنا عمر عليه السلام چه کله دا آيت کریمه واوريدو نو ديريات خوشحاله شو او وې فرمايل «انتهينا» اي الله مونږ به ترې نه ضرور ځان ساتو. دا ټول مضمون د باب په دويم حديث کښې ذکر شوې دې، نحریم خمر په تاريخ د خميس کښې ليکلې دې چه د دې نزول په شپږمه هجري کښې اوشو او په تلقيح د ابن الجوزي کښې د دې په ځانې دريمه هجري ليکلې شوې ده بعد احد (کذا في هامش البذل)

[۳۶۶۹] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبُو حَيَّانَ، حَدَّثَنَا الشَّعْبِيُّ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، عَنْ عُمَرَ، قَالَ: "نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ يَوْمَ نَزَلَ وَهِيَ مِنْ خَمْسَةِ أَشْيَاءَ: مِنَ الْعَنْبِ، وَالنَّمْرِ، وَالْعَسَلِ، وَالْخِنْطَلَةِ، وَالشَّعِيرِ، وَالْخَمْرُ مَا خَامَرَ الْعَقْلَ، وَتِلْكَ وَدِدْتُ أَنْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يُفَارِقْنَا حَتَّى يَعْهَدَ إِلَيْنَا فِيهِنَّ عَهْدًا نُنْتَقِي إِلَيْهِ: الْجَدُّ، وَالْكَلَالَةُ، وَأَبْوَابٌ مِنْ أَبْوَابِ الرِّبَا."

د عمر فاروق عليه السلام نه روايت دې فرمائی کله چه د شرابو د حرمت متعلق آيت کریمه نازل شو نو په دغه وخت کښې به شراب د پنځه خيزونو نه جوړيدل انگور، کجوري، شهد، وريشي، او غنم او هر هغه شې کوم چ عقل ختموي هغه د شرابو په حکم کښې دې ارماد اغوښتل چه نبی عليه السلام زمونږ نه دهغه وخته پورې جدا نشي ترڅو چه ئې مونږ ته ددې خيزونو په باره کښې معلومات نه وي را کړې يوخوپه وراثت کښې دنیکه حصه، دويم د کلاله په باره کښې او دريم د سود د يوڅو مقدماتو په باره کښې.

۱: صحيح البخاري/تفسير سورة المائدة ۱۰ (۴۶۱۹)، الأشربة ۲ (۵۵۸۱)، ۵ (۵۵۸۸)، صحيح مسلم/التفسير ۶ (۳۰۳۲)، سنن الترمذي/الأشربة ۸ (۱۸۷۴ تعليقاً)، سنن النسائي/الأشربة ۲۰ (۵۵۸۱)، (تحفة الأشراف: ۱۰۵۳۸) (صحيح)

«عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنْ عُمَرَ قَالَ نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ يَوْمَ نَزَلَ وَهِيَ مِنْ خَمْسَةِ أَشْيَاءَ مِنَ الْعَنْبِ وَالتَّمْرِ وَالْعَسَلِ وَالْحِنْطَةِ وَالشَّعِيرِ وَالْخَمْرُ مَا خَامَرَ الْعَقْلَ وَثَلَاثٌ وَدِدْتُ أَنْ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- لَمْ يُقَارِقْنَا حَتَّى يَغْهَدَ إِلَيْنَا فِيهِنَّ عَهْدًا نَنْتَهِيَ إِلَيْهِ الْجَدُّ وَالْكَلَالَةُ..... الخ»

### شرح الحديث :

په دې حديث كښې دوه اجزاء دي د يو تعلق د الاشربة سره دې كوم چه به مونږ روستو بيانوو او د دويم جزء تعلق د كتاب الفرائض او ربا سره دې، عمر رضي الله عنه فرمائي چه درې مسئلې داسې داسې دي چه د هغې په باره كښې زما خواهش دا وو چه خومره به ښه وه كه رسول الله صلى الله عليه وسلم د دې وضاحت فرمائيږي وي په خپل ژوند كښې چه مونږ په هغې باندي په ښه طريقې سره عمل كړې وي او بيا ئې د هغه درې مسائلو تعين او فرمائيلو په هغه دريو كښې ۱: د ميراث مسئله، ۲: د كلاله مسئله، ۳: د ربا مسئله..... حافظ رحمته الله عليه فرمائي چه د جد نه مراد دهغه دميراث مقدار دي چه په هغې كښې د صحابه كرامو رضي الله عنهم ډير اختلاف پاتې شوې دي، پس په كتاب الفرائض د بخاري كښې راځي د عمر فاروق رضي الله عنه په باره كښې چه خپله د هغوی نه په دې كښې دوه فيصلې منقول دي، او دويم څيز كلاله يعنې د هغې مصداق چه په هغې كښې د علماء كرامو اختلاف دې «من لا ولد له ولا والد، او بنو العم الا باعد او غير ذلك كما في العون» او د ابواب الربا نه مراد په ظاهر كښې ربا الفضل ده ځكه چه د ربا دويم قسم ربا النسيئه د دې حرمت خو د صحابه كرامو رضي الله عنهم تر مينځه متفق عليه دي او په ربا الفضل كښې د ابن عباس او ابن عمر رضي الله عنهم اختلاف په كتاب البيوع كښې تير شوې دي، حافظ فرمائي: د عمر رضي الله عنه د دې كلام نه معلومېږي چه هغوی سره په بعض ابواب الربا كښې نص موجود وو او د بعضو په باره كښې نه وو هم په دې وجه ئې د هغې د معلوماتو خواهش لرلو.

### خمر د گومو څيزونو نه جوړولې شو:

او د حديث رومبي جزء دا دي چه كله د تخريم خمر حكم نازل شو نو هغه وخت خمر عام طور د پنځو څيزونو نه جوړولې شو، عنب، تمر، عسل، حنطه، شعير..... په دې سلسله كښې روايات د حديث مختلف دي، پس په صحيح مسلم كښې د انس رضي الله عنه نه روايت دي «لَقَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ الْآيَةَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ فِيهَا الْخَمْرَ وَمَا بِالْمَدِينَةِ شَرَابٌ يُشْرَبُ إِلَّا مِنْ تَمْرٍ» او هم د انس رضي الله عنه په صحيح بخاري كښې دي: «حُرِّمَتْ عَلَيْنَا الْخَمْرُ حِينَ حُرِّمَتْ وَمَا نَجِدُ، يَغْنِي بِالْمَدِينَةِ - خَمْرُ الْأَعْنَابِ إِلَّا قَلِيلًا وَعَامَّةُ خَمْرِنَا الْبُسْرُ وَالتَّمْرُ»

او په صحيح بخاري كښې د ابن عمر رضي الله عنهم نه روايت دي «نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ وَإِنْ فِي الْمَدِينَةِ يَوْمَئِذٍ لَخَمْسَةُ أَشْرَبَةٍ مَا فِيهَا شَرَابُ الْعَنْبِ» او په صحيحينو كښې د انس رضي الله عنه نه روايت دي: «كُنْتُ أَسْقِي أَبَا عُبَيْدَةَ وَأَبَا طَلْحَةَ وَأَبِي بَن كَغَبٍ مِنْ فَضِيخٍ زَهْوٍ وَتَمْرٍ فَجَاءَهُمْ آتٍ فَقَالَ إِنَّ الْخَمْرَ قَدْ حُرِّمَتْ فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ فَمَ يَا أُنْسُ فَأَهْرِقْهَا فَأَهْرِقْتُهَا» وفي لفظ قال عبدالعزيز بن صهيب قلت لانس ما هو؟ قال بسرو رطب. (كذا في تهذيب السنن لابن القيم)



## د اشربه په باره د احنافو او د جمهور علماء کرامو اختلاف، مدلل او مفصل

د دې نه پس ځان پوهه کړئ چه د اشربه مکروه ډیر قسمونه دی، خمر، سکر، فضیح، نقیع الذبیب، طلاء، باذق، المنصف، المثلث، الخلیطان، مزر وغیره وغیره، شیخین (امام ابوحنیفه او امام ابویوسف) په نزد د دې احکام مختلف دی لکه چه وړاندې په تفصیل سره راځی. او د باقی ائمه ثلاث او د امام محمد رحمته الله علیه په نزد د دې ټولو یو حکم دی. د دې حضراتو په نزد که شراب د انگورو نه جوړ شی که د کجهورې نه که د شهدونه او که د غلو نه، د مسکر کیدو نه پس په ټولو باندې د خمر اطلاق کیږی. او د ټولو حکم یو شان دی چه په دې قسمونو کښې د هر یو څاڅکې څکل هم جائز نه دی بلکه حرام دی، اگرچه د قلت په وجه باندې مقدار د مسکر پیدا نه شی د حدیث «ما اسکر کثیره فقليله حرام» نه استدلال کوی اود «کل مسکر حرام» او د «والخمر ما حامر العقل» وغیره وغیره نه هم،  
(اقسام اشربه)

او د شیخینو رحمهما الله په نزد د اشربه محرمه درې قسمونه دی او درې درجات دی.  
قسم اول:

خمر دی کوم چه یو د خاص قسم شرابو نوم دې یعنی النبی من ماء العنب اذا اشتد وغلا وقذف بالزبد، یعنی د انگورو شیره چه پخ کړې شوې نه وی چه هغه په زمانه تیریدو سره ټینگه او غلیظه شی او زگونه پکښې پیدا شی.

### قسم ثانی او درجه ثانیه:

د دې مصداق درې قسم شرابونه دی:

۱: عصیر العنب المطبوخ دون المثلث، یعنی د انگور شیره چه هغه دومره پخه کړې شی چه هغه د دوه ثلث نه کم اوسوزی، هغې ته طلاء هم ویلې شی (۱)

۲: او نقیع التمر او دریم نقیع الذبیب یعنی د تمر او زبیب نیذ غیر مطبوخ په شرط د اشتداد او قذف الزبد سره، یعنی کله چه دا زږیدو سره خراب شی اونشه پکښې پیدا شی.

### قسم ثالث:

د دې نه مراد هغه باقی اشربه او انبذه ددی کوم چه د مختلفو غلو وغیره نه جوړولې شی

(۱) پس که د ادنی درجې طبخ ده نو هغې ته باذق وائی، او که طبخ نه نیم اوسوزی نو هی ته منصف وائی او که د نیم نه زیات اوسوزی او د دوه ثلث نه کم سوزیدلې وی نو دې ته طلاء وائی لکه چه په هدایه کښې دی د جامع الصغیر نه، دا درې واړه قسمونه عصیر مطبوخ باذق منصف او طلاء په حکم د حرمت کښې برابر دی، خو د طلاء اطلاق په مثلث باندې هم کیږی یعنی هغه عصیر العنب چه دومره پوخ کړې شی چه دوه ثلث اوسوزی دا طلاء حلال ده کوم ته چه مثلث عنبی هم وائی: فقی موطاء الامام محمد رحمه الله لا یاس بشرب الطلاء الذي قد ذهب ثلثاه وبقي ثلثه وهو لا یسکراه وفي هامش قوله الذي قد ذهب ثلثاه قیدب هلان الطلاء الذي ذهب اقل من ثلثیه لا یحل کما قال فی الجامع الصغیر، محمد عن یعقوب عن ابی حنیفه قال الخمر حرام قلیلها وکثیرها والسكر وهو النبی وبه ینظر ان تدافع بین کلمات الفقهاء حیث حکم بعضهم علی الطلاء بالحرمة وبعضهم بالحلة بان الطلاء یطلق علی امرین احدهما حلال والا حرام کما حققه الفقیه حسن الشرنبلالی فی رسالته نزاهة ذوی النظر لمحاسن الطلاء والتمر... اهد طلاء ذکر په متن کښې په باب الداذی کښې هم راروان دې)

لکه غنم او اوربشي او جوار او شهد که هغه مطبوخ وی او که غیر مطبوخ هم دغه شان مثلث عینی یعنی د انگورو هغه شیره چه د هغې د طبخ د وجې نه دوه ثلثه حصه اوسوزی او صرف یو ثلث ئې باقی پاتې شی. د دې تفصیل نه معلومه شوه چه د احنافو په نزد په شرابو کښې اصل دوه خیزونه دی اول عنب د دې نه خو خمر حقیقی جوړیږي دویم تمر او زبيب، زبيب اگر چه حقیقه عنب دې خو د دې حکم د عنب نه جدا دې، د حکم په لحاظ سره هغه د تمر برابر دې، د دې نه علاوه چه د نورو غلو نه کوم شراب جوړیږي هغه د دریمې درجې دی د هغې حکم بیل دې، بله دا چه عنب د کوم نه چه خمر اصلی جوړیږي په هغې کښې هم اصل دا ده چه هغه مطبوخ نه وی په اور باندې نه وی بدلي شوې گینې په طبخ سره هغه خمر د اول درجې نه دویمې درجې ته راځی او د هغې حکم بدلېږي.

### (احکام اشرب)

اوس تاسو د دې پورته ذکر کړې شوو اقسام ثلاثه حکم اوپیژنئ. د قسم اول یعنی خمر حکم دا دې چه د دې یو قطره څکل هم حرام دی او که چا اوڅکله نو حد به پرې جاری کیږي اگر چه د قلت په وجه باندې نشه نه پیدا کوی او قسم ثاني یعنی طلاء، نقیع الزبيب د دې حکم دا دې چه د دې څکل مطلقا حرام دی خو حد به هغه وخت جاری کیږي چه کله ئې دومره مقدار څکلي وی چه په هغې سره نشه پیدا شوې وی، او د دریم قسم حکم دا دې چه د هغې دومره مقدار چه مفضی الی السكر نه وی په نیک نیتئ یعنی د تقوی په نیت سره ئې څکل جائز دی، او د تلهی او مستئ په نیت ئې څکل حرام دی خو حد به هم هغه وخت جاری کیږي چه په څکلو والا باندې نشه اوخیږي، او د امام محمد او ائمه ثلاثه په نزد د ټولو اشربه او انبذه حکم هم هغه دې کوم چه مونږ سره د قسم اول حکم دې (۱)، ددې نه معلومه شوه چه د جمهورو په نزد د اشربه په حکم کښې تشدد دې او د احنافو په نزد د دې په بعض قسمونو کښې گنجائش دې.

### احناف د ټولو شرابو د تحریم ولې قائل نه دی:

اوس که څوک سوال اوکړي چه احنافو په دې کښې د احتیاط اړخ ولې اختیار نه کړو لکه چه د جمهورو مسلک دې؟ د دې جواب دا دې چه د احنافو مسلک په دې سلسله کښې په ژور نظر باندې بناء دې، ځکه چه د خمر په باره کښې د اهل لغت دوه اقوال دی یو دا چه هغه د عنب سره خاص دې صرف د انگورو شراب ته خمر وائی (۲)، دویم قول دا هم دې چه خمر

(۱) وفي هامش البذل: وخلاصة مذهب الحنفية ان الاشربة ثلاثة اقسام، الخمر حرام مطلقا وله عشرة احكام، الثاني الاشربة الثلاثة العصير وهو نوعان الباذق والمنصف، ونقيع التمر وهو السكر، ونقيع الزبيب هذه حرام قليلها وكثيرها لكن حرمتها ظنية والثالث باقي الاشربة والمتخذة من الحبوب وغيرها حلال عند الشنخين مالم يسكر، وحرام عند محمد والائمة الثلاث قليلها وكثيرها وبه يفتي، ويحد علي السكر من كلها علي الصحيح بخلاف الخمر فيحد علي قطرة منها وان لم يسكر، هذا خلاصة ما في الكوكب الدرّي اهـ بتصريف يسير

(۲) او امام نووی رحمه الله د جمهور قول هم دې ته وئيلي دې پس هغوی فرمائی: اتفق اصحابنا علي تسمية جميع هذه الانبذة خمرًا لكن قال اكثرهم هو مجاز وانما حقيقة الخمر عصير العنب وقال جماعة منهم هو حقيقة اهـ من هامش الكوكب (۱۳/۲)



عام دی که انگوری وی او که غیر انگوری اگر چه صاحب هدایه خو تردې پورې فرمائیلي دی چه د خمر د انگورو سره خاص کیدو باندې د اهل علم اتفاق دې هغوی فرمائی : ولنا انه اسم خاص باطابق اهل اللغة فيما ذكرناه، ولهذا اشتهر استعماله فيه، وفي غيره غيره اه خو په دې باندې شیخ ابن الهمام رحمته الله نقد کړې دې او د خمر په باره کښې ئې د اهل لغت دواړه اقوال لیکلي دی، بله دا چه وړاندې په کتاب کښې راځي «باب الخمر مما هي» چه په هغې کښې مصنف رحمته الله مختلف روایتونه راوړې دی په یو روایت کښې دی «الخمر من هاتين الشجرتين النخلة والعنب» په دې روایت سره د خمر د کهجورې او عنب سره خاص کیدل مستفاد کیږي په یو لحاظ سره د دې حدیث نه د شیخینو د مسلک تائید کیږي. په دې وجه د هغوی په نزد د خمر په اقسام ثلاثه کښې قسم ثاني هم دا ی کوم چه د انگور او کهجورو نه جوړ کړې شی کوم چه د احنافو په نزد هم مطلقا حرام دې او عام طور سره په احادیثو کښې چه په مختلفو قسمونو باندې کوم د خمر اطلاق شوې دې د دې نه مقصود بیان د لغت او اطلاق لره بیانول نه دی بلکه مقصود بالذات بیان د حکم دې چه هر خومره شرابونه چه مسکر دی هغه هم د خمر په شان حرام دی. د رسول الله صلی الله علیه و آله مقصد بیان حقائق نه دې بلکه بیان شرائع دې، او دویم مقصد د احنافو په دې تفصیل او تجزیه سره دا هم دې چه که د شرابو ټولو قسمونو باندې په هر صورت کښې مطلقا د حرمت فتوی اولگولې شی نو په دې کښې به ډیر اشکال پیدا شی، د کومو صحابه کرام رضی الله عنهم نه چه د تحریم خمر نه پس هم شرب نیید ثابت دې چه د هغې روایات په بذل المجهود کښې ذکر شوې دی پس په هغې کښې دی «قال في البدائع وأبو حنيفة وأبو يوسف رضي الله عنهما اختجا بخديث رسول الله صلى الله عليه وسلم وآثار الصحابة الكرام رضي الله عنهم. (أما) الحديث فما ذكره الطحاوي رحمه الله في شرح الآثار عن عبد الله ابن عمر رضي الله تعالى عنهما { أَنَّ النَّبِيَّ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ أَمَرَ بِبَيْدٍ فَشَمَهُ فَقَطَّبَ وَجْهَهُ لِشِدَّتِهِ، ثُمَّ دَعَا بِمَاءٍ فَصَبَّهُ عَلَيْهِ وَشَرِبَ مِنْهُ } (وَأما) الآثارُ فَمِنْهَا مَا رَوَى عَنْ سَيِّدِنَا عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ كَانَ يَشْرَبُ النَّبِيذَ الشَّدِيدَ، وَمِنْهَا مَا رَوَى عَنْ سَيِّدِنَا عَلِيٍّ رضی الله عنه أَنَّهُ أَضَافَ قَوْمًا فَسَقَاهُمْ فَسَكَرَ بَعْضُهُمْ فَحَدَّهُ، فَقَالَ الرَّجُلُ تَسْقِينِي ثُمَّ تَحَدَّنِي، فَقَالَ عَلِيٌّ إِنَّمَا أَحَدُكَ لِلسَّكَرِ وَغَيْرِ ذَلِكَ مِنَ الرِّوَايَاتِ الْمَذْكُورَةِ فِي الْبَدَلِ وَفِي آخِرِهِ : فَإِذَا ثَبَتَ الْإِحْلَالُ مِنْ هَؤُلَاءِ الصَّحَابَةِ الْكَرَامِ رضی الله عنهم فَالْقَوْلُ بِالتَّحْرِيمِ يَرْجِعُ إِلَى تَفْسِيْقِهِمْ، وَلِهَذَا عَدَّ أَبُو حَنِيفَةَ رحمته الله إِحْلَالَ الْمَثَلِثِ مِنْ شُرَاطِ مَذْهَبِ السُّنَّةِ وَالْجَمَاعَةِ، فَقَالَ فِي بَيِّنَاتِهَا : إِنْ يَفْضُلُ الشَّخِيقُ وَيَحِبُّ الْخَتْنَيْنِ وَإِنْ يَرَى الْمَسْحَ عَلَى الْخَفَيْنِ وَإِنْ لَا يَحْرُمُ نَبِيذُ التَّمْرِ، لَمَّا إِنْ فِي الْقَوْلِ بِتَحْرِيمِهِ تَفْسِيْقُ كِبَارِ الصَّحَابَةِ رضی الله عنهم، وَالْكَفُّ عَنْ تَفْسِيْقِهِمْ وَالْإِمْسَاكُ عَنِ الطَّعْنِ فِيهِمْ مِنْ شُرَاطِ السُّنَّةِ وَالْجَمَاعَةِ، وَأَمَّا مَا وَرَدَ مِنَ الْإِخْبَارِ فِيهَا طَعْنٌ ثُمَّ بِهَا تَأْوِيلٌ ثُمَّ قَوْلٌ بِمُوجِبِهَا، إِلَى إِنْ قَالَ : أَمَّا التَّأْوِيلُ فَهُوَ أَنَّهَا مَحْمُولٌ عَلَى الشَّرْبِ لِلتَّهْلِي تَوْفِيْقًا بَيْنَ الدَّلَائِلِ صِيَانَةً لَهَا عَنِ التَّعَارُضِ، وَأَمَّا الْقَوْلُ بِالْمُوجِبِ فَهُوَ إِنْ الْمَسْكِرُ عِنْدَنَا حَرَامٌ وَهُوَ الْقَدَحُ الْآخِرُ لِأَنَّ الْمَسْكِرَ مَا يَحْصُلُ بِهِ الْإِسْكَارُ وَإِنَّهُ يَحْصُلُ بِالْقَدَحِ الْآخِرِ وَهُوَ حَرَامٌ قَلِيلُهُ وَكَثِيرُهُ، وَهَذَا قَوْلٌ بِمُوجِبِ الْإِحَادِيثِ إِنْ ثَبَتَ بِحَمْدِ اللَّهِ تَعَالَى اه، وَفِي هَامِشِ الْبَدَلِ : قَالَ ابْنُ عَابِدِينَ قَالَ الْإِمَامُ أَبُو حَنِيفَةَ لَا أَفْتِي بِحَرْمَةِ

النبيذ ولو اعطيت الدنيا لان فيه تفسيق بعض الصحابة ولا اشربها ولو اعطيت الدنيا لانه لا حاجة اليه، فله در فتواه وتقواه آه: د صاحب بدائع په شان په بعض رواياتو د اباحت كښې په حاشيه د نصب الرايه كښې هم ذكر شوې دى، په هغې كښې دا هم دى چه روايات د منع لكه ﴿ كل خمر مسكر، وما اسكر الفرق منه فملاء الكف من حرام، هذا كله منسوخ نسخه شربه الصلب ﴾<sup>(۱)</sup> يوم حجة الوداع، قالوا: ومن الدليل على ذلك انه كان ينهى وفد عبدالقيس عن شرب المسكر فوفدوا اليه بعد فراهم مصفرة الوانهم سيئة حالهم فساءلهم عن قصتهم فاعلموه انه كان لهم شراب فيه قوام ابد انهم فمنعهم من ذلك فاذن لهم فى شربه، وان ابن مسعود رضي الله عنه قال: شهدنا التحريم وشهدنا التحليل وغبتم، وانه كان يشرب الصلب من نبيذ التمر حتى كثرت الروايات عنه به وشهت واذيعت، واتبعه عامة التابعين من الكوفيين. الى آخر ما ذكر.

﴿ ما اسكر كثيرة فقليله منه حرام ﴾ دې كښې زمونږ علماء كرامو تاويل كړې دې، يا خو دې داسې او وئيلې شى چه د دې نه هغه شرب مراد دې كوم چه لِّلْتَلْهَى وى نه لِّلْتَقْوَى، او يا د دې نه مراد آخرى جرعه (گوټ) مراد دې چه د هغې نه سكر پيدا شوې دى چه د هغې كثير او قليل ټول حرام دى، او يا دې بيا دې لره د شرابو په اقسام ثلاثه كښې په قسم اول يا ثانى باندې محمول كړې شى د دې دواړو قسمونو په باره كښې زمونږ رائي هم دا ده، او يو جواب په دې كښې د نسخ دې كوم چه اوس ذكر شوې دې، او يو جواب دا دې چه د حرمت نه مراد دا دې چه ملاء الكف حرام دې يعنى مفضى الى الحرام دې ځكه چه كوم څكل بغير د تقوى د نيت نه وى يعنى د تلهى دپاره وى هلته به لږ څكل باعث وى د پاره د شرب كثير، پس دا شرب قليل به سبب وى د حرام او كوم خيز چه سبب وى د حرامو دپاره هغه خپله هم حرام وى، او كه دا څكل په نيت د تقوى على الطاعة وى نو په دې صورت كښې به منجر الى الكثير نه وى، كذا فى الكوكب وفيه: انما يحتاج الى امثال هذه التاويلات لما ثبت من بعض الصحابة شرب امثالها فعلم بفعله ان المنهى ليس مطلقا عاما اه او يو توجيه په پورته عبارت كښې القول بالموجب تيره شوه چه د هغې مطلب دا دې چه فريق ثانى كوم دليل پيش كوى مونږ هغه منو ځكه چه هغه هم زمونږ په حق كښې مفيد دې. پس مونږ وايو چه كوم مقدار د نبيذ د سړى په حق كښې مسكر وى هغه مطلقا حرام دې د هغې قليل هم او كثير هم او كوم مقدار چه مسكر نه دې په هغې باندې به د حرمت حكم هم نه شى لگولې كيدي، والله تعالى اعلم. په دې سلسله كښې امام نسائي رحمه الله هم د احنافو نه خفه دې پس هغوى د حديث «ابى وقاص ان النبى صلى الله عليه وسلم نهى عن قليل ما اسكر كثيرة» د لاندې فرمائى «وهذا الحديث دليل على تحريم المسكر قليله وكثيره، وليس كما يقول المخادعون بتحريمهم آخر الشربة دون ما تقدمها اذ لا خلاف بين اهل العلم ان السكر بكليته لا يحدث عن الشربة الاخرة فقط دون ما تقدمها اه (نصب الرايه ۴/۲۰۲) والحديث اخرجه البخارى ومسلم والترمذى والنسائى، قاله المنذرى.



[۳۶۷۰] (۱) حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ مُوسَى الْخُثَلِيُّ، أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ يَعْنِي ابْنَ جَعْفَرٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ عُمَرَ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، قَالَ: "لَمَّا نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ، قَالَ عُمَرُ: اللَّهُمَّ بَيِّنْ لَنَا فِي الْخَمْرِ بَيِّنَاتًا شِفَاءً، فَنَزَلَتْ آيَةُ الَّتِي فِي الْبَقَرَةِ: يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ سُورَةُ الْبَقَرَةِ آيَةُ ۲۱۹، قَالَ: قُدِّعِيَ عُمَرُ، فَقُرِئْتُ عَلَيْهِ، قَالَ: اللَّهُمَّ بَيِّنْ لَنَا فِي الْخَمْرِ بَيِّنَاتًا شِفَاءً، فَنَزَلَتْ آيَةُ الَّتِي فِي النَّسَاءِ: يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرُبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَى سُورَةُ النَّسَاءِ آيَةُ ۴۳، فَكَانَ مُنَادِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَقِمْتَ الصَّلَاةَ يُنَادِي: أَلَا لَا يَقْرَبَنَّ الصَّلَاةَ سُكَارَى، قُدِّعِيَ عُمَرُ فَقُرِئْتُ عَلَيْهِ، فَقَالَ: اللَّهُمَّ بَيِّنْ لَنَا فِي الْخَمْرِ بَيِّنَاتًا شِفَاءً، فَنَزَلَتْ هَذِهِ آيَةُ: فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْتَهَوْنَ سُورَةُ الْمَائِدَةِ آيَةُ ۹۱، قَالَ عُمَرُ أَنْتَهَيْنَا."

د عمر فاروق رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی کله چه د شرابو د حرمت متعلق ایت نازل شو نو خلقو او وئیل ای الله زمونږ دپاره د شرابو متعلق واضح حکم بیان کړي، کله چه هغه آیت نازل شو کوم چه په سورة بقره کښې دې یعنی: «يسألونك عن الخمر والميسر قل فيهما إثم كبير» آيۃ، نو عمر فاروق نه راوغوښتلې شو اود احکم ورته واورولې شو هغه او وئیل ای الله مونږ ته صاف صاف حکم بیان کړي نو په دې وخت کښې د سورة النساء دا ایت کریمه «يا أيها الذين آمنوا لا تقربوا الصلاة وأنتم سكارى» نازل شو کله چه به دمونځ دپاره تکبیر کیدو نودنې غلغلې اواز کونکي به وئیل چه نشي په حالت کښې دی څوک مونځ ته نه راځي اوبیا عمر فاروق راوغوښتې شو اودا ایت کریمه هم ورته واورولې شوه نو هغه بیا وئیل ای الله د شرابو په سلسله کښې واضح حکم بیان کړي نو په دې باندې دا ایت کریمه نازل شو «فهل أنتم منتهون» نو په دې وخت کښې عمر فاروق او وئیل مونږه د شرابو اود جوارې نه منع شو.

قوله: «عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ قَالَ لَمَّا نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ قَالَ عُمَرُ اللَّهُمَّ بَيِّنْ لَنَا فِي الْخَمْرِ بَيِّنَاتًا شِفَاءً الْخ» د دې حدیث مضمون په شروع کښې تیر شوې دې، والحديث أخرجه الترمذی والنسائي، وذكره الترمذی انه مرسل اصح، قاله المنذري

[۳۶۷۱] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنَا عَطَاءُ بْنُ السَّائِبِ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السَّلَمِيِّ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، "أَنَّ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ دَعَاهُ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ، فَسَقَاهُمَا قَبْلَ أَنْ تُحَرَّمَ الْخَمْرُ، فَأَمَّهُمْ عَلَى فِي الْمَغْرِبِ، فَقَرَأَ: قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ، فَخَلَطَ فِيهَا، فَنَزَلَتْ: لَا تَقْرُبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَى حَتَّى تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ سُورَةُ النَّسَاءِ آيَةُ ۴۳."

ابو عبد الرحمن سلی د علی نه روایت کوی فرمائی چه یو کس علی نه ته او عبد الرحمن بن عوف ته دعوت ورکړو او په دوی دواړو ئې شراب او څکل خو په هغه وخت کښې کله چه د شرابو د حرمت حکم نه وو نازل شوې اوبیا علی نه د ماښام په مونځ کښې د دوی امامت وکړو او «قل يا أيها الكافرون» به ولوستلو او په لوستلو کښې ئې گډ وډې وکړه نو په دې وخت کښې دا ایت کریمه نازل شو: «لا تقربوا الصلاة وأنتم سكارى حتى تعلموا ما تقولون».

(۱): سنن الترمذی/تفسیر سورة المائدة ۸ (۳۰۴۹)، سنن النسائي/الأشربة ۱ (۵۵۴۲)، (تحفة الأشراف: ۱۰۶۱۴)، وقد

أخرجه: مسند احمد (۵۳/۱) (صحيح)

(۲): سنن الترمذی/تفسیر سورة النساء ۱۲ (۳۰۲۶)، (تحفة الأشراف: ۱۰۱۷۵) (صحيح)





## بَابُ الْعَنْبِ يُعْصَرُ لِلْخَمْرِ

### د شرابو جوړولو دپاره د انگورو نچوړول

[۳۶۷۴] حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعُ بْنُ الْجَرَّاحِ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ أَبِي عُلَيْقَةَ مَوْلَاهُمَا، وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْقَافِي، أَنَّهُمَا سَمِعَا ابْنَ عُمَرَ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَعَنَ اللَّهُ الْخَمْرَ، وَشَارِبَهَا، وَسَاقِيَهَا، وَمُبْتَاعَهَا، وَعَاصِرَهَا، وَمُعْتَصِرَهَا، وَحَامِلَهَا، وَالْمَحْمُولَةَ إِلَيْهِ».

د عبد الله ابن عمر رضي الله عنهما نه روایت دې فرمائی چې رسول الله ﷺ لعنت وئیلې دې په شرابو اوددې په خکونکي اوددې په ساتي باندې اوددې په خرخونکي اوددې په اخستونکي اوددې په نچوړونکي اوددې په وړونکي اودچا دپاره چې شراب وړلې شي په هغه باندې یعنی د انگورو شیر و یستل د خمر جوړولو دپاره. **قوله:** « قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ » لَعَنَ اللَّهُ الْخَمْرَ وَشَارِبَهَا وَسَاقِيَهَا وَمُبْتَاعَهَا وَعَاصِرَهَا وَمُعْتَصِرَهَا وَحَامِلَهَا وَالْمَحْمُولَةَ إِلَيْهِ »

### شرح الحديث :

دا حدیث په روایت د انس بن مالک رضي الله عنه په ترمذی شریف کښې هم شته په کتاب البیوع کښې چې په هغې کښې داسې دی « لعن رسول الله ﷺ فی الخمر عشرة ۱: عاصرها، ۲: معتصرها، ۳: وشاربها، ۴: وحاملها، ۵: والمحمولة اليه، ۶: وساقياها، ۷: وبائعها، ۸: وأكل ثمنها، ۹: والمشتري لها، ۱۰: والمشتراة له » یعنی رسول الله ﷺ د شرابو په باره کښې په لسو کسانو باندې لعنت فرمائیلې دي: یعنی انگور لره د شرابو دپاره نچوړونکي، او معتصر د چا دپاره چې نچوړولې شي، او ښکاره خبره ده چې د عاصر نه مراد هغه سړي دي کوم چې نه بل دپاره نچوړوي او د معتصر نه مراد هغه دي کوم چې نه د خان دپاره نچوړوي (من الکوکب) او د شرابو په خکلو والا باندې، او د هغې په اوچتونکي باندې، د چا دپاره چې اورلې شي په هغه باندې، او په هغه چا چې په بل نې خکوي، او د هغې په خرخونکي باندې، او د هغې په گټه خوړونکي باندې او د شرابو په اخستونکي باندې او د چا دپاره چې اخستلې شي. په دې باندې دا ترجمه د ترمذی د روایت د ترتیب په اعتبار سره ده، او د ابوداؤد په روایت کښې صرف نه ذکر شوې دي چې په هغې کښې یو خپله خمر دي « لعن الله الخمر » علامه سندی رحمته الله فرمائی په هر یو څیز باندې لعنت د هغې په اعتبار سره وی لهذا په خمر باندې د لعنت مطلب د هغې د خکلو د حرامولې او په هغې باندې د نجاست حکم لگول دي. اه والحدیث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى

## بَابُ مَا جَاءَ فِي الْخَمْرِ تَحْلِيلُ

د شرابو نه د سرکې جوړولو بیان

تخلیل خمر (یعنی د شرابو نه سرکه جوړولو) والا مسئله مختلف فیه ده د امام احمد رحمته الله په نزد جائز نه ده، د هغوی په نزد په تحلیل سره نه حلالیږي او د احنافو په نزد جائز ده، او د

۱: سنن ابن ماجه/الأشربة ۶ (۳۳۸۰)، (تحفة الأشراف: ۷۲۹۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۲۵، ۷۱) (صحيح)

امام شافعی رحمہ اللہ په نزد که ایخودلې شوې شراب خپله سرکه شوه نو بیا خو حلال دې گڼي نه دې، او د امام مالک رحمہ اللہ په نزد دا کار خو ناجائز دې خو د تحلیل نه پس د هغې خوراک جائز دې. (عون عن النہل)

[۳۶۷۵] (۱) حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ السَّيِّدِيِّ، عَنْ أَبِي هُبَيْرَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ أَبَا طَلْحَةَ سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "عَنْ أَيَّتَامٍ وَرَثُوا خُمْرًا؟ قَالَ: أَهْرِقُهَا، قَالَ: أَفَلَا أَجْعَلُهَا خَلًّا؟ قَالَ: لَا."

دانس بن مالک رحمہ اللہ نه روایت دې فرمائی چه ابو طلحه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه دیتیمانو په باره کښې تپوس او کړو چاته چه شراب په وراثت کښې پاتې شوي وو، نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل دا واپوئ دوئ او وئیل ایاسرکه ورنه جوړه نکړو؟ نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل د دینه سرکه هم مه جوړوئ. قوله: «عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ أَبَا طَلْحَةَ سَأَلَ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَنْ أَيَّتَامٍ وَرَثُوا الْخَمْرَ» یعنی د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نه تپوس او کړې شو چه د بعض یتیم ماشومانو په حصه کښې په میراث کښې شراب راغلې دې نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د هغې د تویولو حکم ورکړو او د سرکې د جوړولو اجازت ئې ورنکړو. دا حدیث د حنابلہ په نزد خو په خپل ظاهر باندې دې تاویل ته حاجت نشته او د احنافو په نزد په ابتداء زمان باندې محمول دې ځکه چه هغه خلق د دې عادت وو او د کوم خیز چه عادت پیدا شی د هغې نه بچ کیدل د هغوی دپاره گران وی په دې وجه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم احتیاطا او تنزیها د تخلیل خمر نه هم منع او فرمائیله چه د هغې نفرت ئې په زړه کښې کینی او دلیل د اباحت په نورو روایتونو کښې دې لکه «نعم الا دام الخل» او په یو روایت کښې دې «خير خلکم خل خمرکم» (کما فی حاشیة الترمذی، والحديث أخرجه مسلم والترمذی، قاله المنذری

### باب الخمر ممأه شراب دڅه نه جوړیږي؟

[۳۶۷۶] (۲) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مُهَاجِرٍ، عَنْ الشَّعْبِيِّ، عَنْ الثُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ مِنَ الْعَنْبِ خُمْرًا، وَإِنَّ مِنَ الْعَسَلِ خُمْرًا، وَإِنَّ مِنَ الْبُرِّ خُمْرًا، وَإِنَّ مِنَ الشَّعِيرِ خُمْرًا."

دنعمان بن بشیر رحمہ اللہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائيلي دي شراب دانگورونه جوړیږي او دکجوړو اودشهدو او غنمو او وربشونه هم جوړیږي. قوله: «عَنِ الثُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «إِنَّ مِنَ الْعَنْبِ خُمْرًا... الخ» په دې حدیث کښې د هغه پنځو خیزونو ذکر دې د کومو چه د کتاب الاشریة په اول حدیث کښې ذکر دې چه د دې ټولو نه خمر جوړیږي، او د دې نه په روستو روایت کښې د ذرة یعنی جوارو ذکر هم دې او هم دغه شان د زبیب.

۱: صحیح مسلم/الأشربة ۲ (۱۹۸۳)، سنن الترمذی/البیوع ۵۸ (۱۲۹۴)، (تحفة الأشراف: ۱۶۶۸)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱۱۹/۳، ۱۸۰، ۲۶۰)، سنن الدارمی/الأشربة ۱۷ (۲۶۶۱) (صحیح)  
۲: سنن الترمذی/الأشربة ۸ (۱۸۷۲، ۱۸۷۳)، سنن ابن ماجه/الأشربة ۵ (۳۳۷۹)، (تحفة الأشراف: ۱۱۶۲۶)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۲۶۷/۴، ۲۷۳) (صحیح)



## توجيه الحديث على مسلك الحنفية :

په حاشیه د بذل کښې د الارشاد الرضی (۱) نه منقول دی چه دا حدیث اگر چه په ظاهر کښې د احنافو خلاف دې خو په حقیقت کښې د دې نه د هغوی تائید کیږي ځکه چه لفظ خمر که دې ټولو څیزونو ته شامل وي لغة او استعمالاً نو رسول الله ﷺ ته به د دې تفسیر په دې عنوان سره حاجت نه راتلو، ځکه چه هر کله په قرآن کریم کښې د تحریم ذکر راغلو نو د هغې عموم هغه څیزونو ته هم شامل شوی وی او اهل لسان هم پرې پوهه شو، لهذا معلومه شوه چه د رسول الله ﷺ غرض په دې تفسیر سره بیان د حکم دې اهد او د باب په دریم حدیث کښې کوم چه د ابو هریره رضی الله عنه نه روایت دې هغه دا دې «الخمر من هاتین الشجرتین : النخلة والعنبه» دې باره کښې په کوکب او بذل دواړو کښې دا لیکلې دی چه په دې سره مقصود حصر نه دې خو صاحب د نتائج الافکار میلان د حصر طرف ته کړې دې، فقال بعد البحث : والحق ان المراد بالحکم الذی ارید بیانه بالحديث هو حرمة قليلة وكثیره، وهذا المعنى لا يتحقق فی المتخذ من غیر تینک الشجرتین فصیح الحصر المستفاد من ذلك الحديث بلا غیاراه.....

زه وایم ځکه چه د احنافو په نزد د شرابو اقسام ثلاثه کښې چه کوم قسم ثانې دې د هغې تعلق صرف هم د دې دواړو سره دې زمونږ په نزد د دې حکم هم دا دې چه د دې قلیل او کثیر په حرمت کښې برابر دی، لهذا وئیلې کیدې شی چه خپله په دې احادیثو کښې تنوع اشریه او دهغې دا اختلاف اقسام ته اشاره موجود ده کومه چه احنافو اختیار کړې ده.

[۳۶۷۷] (۱) حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ عَبْدِ الْوَاحِدِ أَبُو غَسَّانَ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، قَالَ: قَرَأْتُ عَلَى الْقُضَيْلِ بْنِ مَيْسَرَةَ، عَنْ أَبِي حَرِيْزٍ، أَلْعَامِرَ حَدَّثَهُ، أَنَّ النُّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: "إِنَّ الْخَمْرَ مِنَ الْعَصِيرِ، وَالزَّبِيبِ، وَالنَّمْرِ، وَالْحِنْطَةِ، وَالشَّعِيرِ، وَالذَّرَةِ، وَإِنِّي أَنَهَاكُمْ عَنْ كُلِّ مُسْكِرٍ".

دنعمان بن بشیر رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه د نبی ﷺ نه مې اوریدلی دی چه فرمائیل ئې شراب دانگورو درس نه تیاریږي، اودوچو انگورونه اودوریښونه اودجوارو نه هم جوړیږي، اوزه تاسولره دهر نشه کونکي څیزنه منع کوم.

[۳۶۷۸] (۲) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبَانُ، حَدَّثَنِي يَحْيَى، عَنْ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "الْخَمْرُ مِنَ الشَّجَرَتَيْنِ: النُّخْلَةِ، وَالْعِنْبَةِ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: اسْمُ أَبِي كَثِيرٍ الْغُبَرِيُّ يَزِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَفِيلَةَ السَّحْمِيِّ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: أَذْيَنَةُ، وَالصَّوَابُ: عُفَيْلَةُ.

د ابو هریره نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائیلې دی شراب ددوه ونونه جوړیږي یعنی کجورې او انگور.

(۱) د ا د،، الکوکب الدرې،، په شان د گنگوهی ﷺ هغه تقرير ترمذی دې کوم چه زمونږ د شیخ د ترور خاوند مولانا رضی الحسن جمع فرمائیلې وو.

(۲) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۱۶۲۶) (صحیح)

(۳) صحیح مسلم للأشربة ۴ (۱۹۸۵)، سنن الترمذی للأشربة ۸ (۱۸۷۵)، سنن النسائي للأشربة ۱۹ (۵۵۷۵)، سنن ابن ماجه للأشربة ۵ (۳۳۷۸)، (تحفة الأشراف: ۱۴۸۴۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۷۹/۲، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۷۴، ۴۹۶، ۵۱۸، ۵۲۶)، سنن الدارمي للأشربة ۷ (۲۱۴۱) (صحیح)

حدیث النعمان بن بشیر رضی اللہ عنہ الاول اخرجہ الترمذی والنسائی وابن ماجہ، وحدیث ابی ہریرۃ رضی اللہ عنہ اخرجہ مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجہ، قالہ المنذری

### باب النہی عن المسکر دھر نشہ کونکی خیزد ممانعت بیان

سکر پہ معنی د مسکر ﴿ وفي بعض النسخ " باب النہی عن المسکر " ﴾

[۳۶۷۹] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى فِي آخِرِينَ، قَالُوا: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "كُلُّ مُسْكِرٍ خَمْرٌ، وَكُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ، وَمَنْ مَاتَ وَهُوَ يَشْرَبُ الْخَمْرَ يَدْخُلُ مِنْهَا لَمْ يَشْرَبْهَا فِي الْآخِرَةِ".

دعبد اللہ ابن عمر رضی اللہ عنہ نہ روایت دی فرمائی چہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمایلی دی دھرنشہ کونکی خیز حکم دشرابو دی اوھرنشہ کونکی خیز حرام دی او خوک چہ مہ شی پہ داسی حال کنسی چہ شراب بہ ئی ہمیشہ خکل نودقیامت پہ ورخ بہ دی دجنت دشرابونہ محروم کرے شی

﴿ کُلُّ مُسْكِرٍ خَمْرٌ ﴾ یعنی پہ حکم د خمر کنس، چہ د کوم خمر بیان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم پہ مخکنسی جملہ کنسی بیان فرمائی ﴿ وَكُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ وَمَنْ مَاتَ وَهُوَ يَشْرَبُ الْخَمْرَ يَدْخُلُ مِنْهَا لَمْ يَشْرَبْهَا فِي الْآخِرَةِ ﴾ یدمن د ادمان نہ دی یعنی یو کار پہ دوام سرہ کول، کوم انسان چہ ہمیشہ شراب خکی یعنی د خکلو نہ ئی توبہ نہ کوی نو ہغہ تہ بہ پہ جنت کنسی شراب طہور کوم چہ بہ تولو جنتیانو تہ ملاویری نہ ملاویری۔ والحدیث اخرجہ مسلم والترمذی والنسائی، وحدیث النسائی مختصر، قالہ المنذری۔

﴿ کُلُّ مُخْمَرٍ خَمْرٌ ﴾ د تخمیر معنی تغطیہ دہ، نشہ چونکہ د انسان عقل پتوی پہ دی وجہ خمر تہ مخمر وائی۔

[۳۶۸۰] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ النَّيْسَابُورِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ عُمَرَ السُّنْعَانِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ النُّعْمَانَ، يَقُولُ: عَنْ طَاوُوسٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "كُلُّ مُخْمَرٍ خَمْرٌ، وَكُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ، وَمَنْ شَرِبَ مُسْكِرًا بَخَسَتْ صَلَاتُهُ أَرْبَعِينَ صَبَاحًا، فَإِنْ تَابَ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِ، فَإِنْ عَادَ الرَّابِعَةَ كَانَ حَقًّا عَلَى اللَّهِ أَنْ يَسْقِيَهُ مِنْ طِينَةِ الْخَبَالِ، قِيلَ: وَمَا طِينَةُ الْخَبَالِ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: صَدِيدُ أَهْلِ النَّارِ، وَمَنْ سَقَاةً صَغِيرًا لَا يَعْرِفُ حَلَالَهُ مِنْ حَرَامِهِ كَانَ حَقًّا عَلَى اللَّهِ أَنْ يَسْقِيَهُ مِنْ طِينَةِ الْخَبَالِ".

دعبد اللہ ابن عباس رضی اللہ عنہ نہ روایت دی فرمائی چہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمایلی دی دھر عقل ختمونکی خیز حکم دشرابو دی اوھرنشہ کونکی خیز حرام دی خوک چہ داسی شی وخی کوم چہ نشہ راولی نرددہ دخلوبیننتو ورخو مونخونہ بہ برباد کرے شی بیاکچری دی توبہ اوباسی نواللہ تعالیٰ بہ ئی قبولہ کرے اوکہ چرے دی پہ خلورم خل باندے بیا وخی نواللہ تعالیٰ بہ خپلہ ذمہ واری واپس واخلی ددی خبرے نہ چہ پہ دی شرابی بہ طینہ الخبال وخیولی شی

(۱) صحیح مسلم/الأشربة ۸ (۲۰۰۳) سنن الترمذی/الأشربة ۱ (۱۸۶۱)، سنن النسائی/الأشربة ۴۶ (۵۶۷۷، ۵۶۷۶)، (تحفة الأشراف: ۷۵۱۶)، وقد أخرجہ: صحیح البخاری/الأشربة ۱ (۵۵۷۵)، سنن ابن ماجہ/الأشربة ۱ (۳۳۷۷)، مسند احمد (۱۹/۲، ۲۲، ۲۸، ۳۵، ۱۹۸، ۱۲۳) سنن الدارمی/الأشربة ۳ (۲۱۳۵) (صحیح)

(۲) تفرد بہ أبو داود، (تحفة الأشراف: ۵۷۵۸)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۱/۲۷۴) (صحیح)



صحابه کرامو عرض وکړو د طینه الخبال نه څه مراد دي؟ نبی ﷺ او فرمائیل طینه الخبال د دوزخیانو نوونه دي اویا ئې او فرمائیل څوک چه په یو داسې ماشوم شراب وڅکوي دکوم چه عمر کم ري اود حلال او حرام تمیز نشي کولی نودابه الله تعالی باندې لازم دي چه په ده باندې به طینه الخبال څکوي.

قوله: ﴿وَمَنْ شَرِبَ مُسْكِرًا بُخَسَتْ صَلَاتُهُ أَرْبَعِينَ صَبَاحًا﴾ او کوم سړې چه یو کړت شراب او څکی نو د هغه د څلویښتو ورځو مونځونه ناقص او بې برکته کیږي، پس که بنده توبه او کړي نو الله پاک توبه قبلوي، او کوم سړې چه په څلورم کړت شراب او څکی نو الله پاک به په هغه باندې ضرور د طینه الخبال نه او څکوي. د طینه الخبال تفسیر په حدیث کښې په صدید اهل النار سره فرمائیلې شوې دي، د دوزخیانو وینې زوې، وړاندې په حدیث کښې دی چه کوم سړې یو نابالغ ماشوم باندې شراب او څکوي نو دې څکونکي ته به هم ضرور الله پاک طینه الخبال او څکوي.

[۳۶۸۱] حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ يَعْنِي ابْنَ جَعْفَرٍ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ بَكْرِ بْنِ أَبِي الْفَرَاتِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَا أَسْكَرَ كَثِيرَةً فَقَلِيلُهُ حَرَامٌ".

د جابر بن عبد الله رضی الله عنه نه روایت دي فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائیلى دی هریوشې چه نشه راوړي هغه حرام دي لږ وي او که ډیروي.

قوله: ﴿مَا أَسْكَرَ كَثِيرَةً فَقَلِيلُهُ حَرَامٌ﴾ دا حدیث د امام محمد او ائمه ثلاث په نزد په خپل ظاهر او عموم باندې دي، او د شیخینو په نزد څنگه چه مخکښې په تفصیل سره تیر شوې دی موړل دي.

والحدیث أخرجه الترمذی وابن ماجه، قاله المنذرى.

[۳۶۸۲] حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: "سَبَّلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْبَيْتِ؟ فَقَالَ: كُلُّ شَرَابٍ أَسْكَرَ فَهُوَ حَرَامٌ". قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَرَأْتُ عَلَى يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ رَبِّهِ الْجُرْجِسِيِّ، حَدَّثَكُمْ مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، عَنْ الزُّبَيْدِيِّ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الْحَدِيثِ بِإِسْنَادِهِ، زَادَ: وَالْبَيْتُ: نَبِيذُ الْعَسَلِ، كَانَ أَهْلُ الْيَمَنِ يَشْرَبُونَهُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: سَمِعْتُ أَحْمَدَ بْنَ حَنْبَلٍ، يَقُولُ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مَا كَانَ الْبَيْتَ مَا كَانَ فِيهِمْ مِثْلُهُ يَعْنِي فِي أَهْلِ جَمْعٍ يَعْنِي الْجُرْجِسِيِّ.

فرمائی چه د نبی ﷺ نه تپوس او کړې شو دبتع نوي شراب په باره کښې، نووئې فرمائیل هریوشراب چه نشته پیدا کوي هغه حرام دي، امام ابو داود فرمائی مادا حدیث یزید بن عبدربه ته واورولو او هغه دا حدیث دزبیدی نه او هغه دزهري نه په دې طریقه نقل کړې دي البتہ په دې کښې دا اضافه ده چه تبع دشهدو شرابو ته وئیلې شي راوی وائی دین خلقيبوه

۱: سنن الترمذی / الأشربة ۳ (۱۸۶۵)، سنن ابن ماجه / الأشربة ۱۰ (۳۳۹۳)، (تحفة الأشراف: ۳۰۱۴)، وقد أخرجه: مسند

احمد (۳۴۳/۳) (حسن صحيح)

۲: صحيح البخاري / الوضوء ۷۱ (۲۴۲)، والأشربة ۴ (۵۵۸۵)، صحيح مسلم / الأشربة ۷ (۲۰۰۱)، سنن الترمذی / الأشربة ۲ (۱۸۶۳)، سنن النسائي / الأشربة ۲۳ (۵۵۹۴)، سنن ابن ماجه / الأشربة ۹ (۳۳۸۶)، (تحفة الأشراف: ۱۷۷۶)، وقد أخرجه:

موطا امام مالك / الأشربة ۴ (۹)، مسند احمد (۲۲۶، ۱۹۰، ۹۷، ۳۸۷)، سنن الدارمي / الأشربة ۸ (۲۱۴۲) (صحيح)

دا شراب خکل، امام ابوداؤد فرمائی مادامام احمد بن حنبل نه اوریدلی دی چه فرمائیل ئی «لا إله إلا الله» هغه خومره معتبر او ثقه سرې وو په قبيله حمص کښې د سرجسی نظیر نشته. **قوله:** «قَالَ أَبُو دَاوُدَ قَرَأْتُ عَلَى يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ رَبِّهِ الْجُرْجُسِيِّ حَدَّثَكُمْ مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ»

په پورته حدیث مذکور چه په هغې کښې البتغ ذکر دې دا مصنف رحمه الله ته په دوه طریقو سره رارسیدلې دې یو په طریق د تحدیث یعنی سماع من لفظ الشیخ او دویم په طریق د قراءت علی الشیخ، قراءت علی الشیخ بعض وخت په طریق د استفهام وی څنگه چه دلته دې حدیثکم محمد بن حرب، په اول طریق کښې د مصنف رحمه الله استاد قعنبی دې، او په دویم طریق کښې علی بن یزید، په دې دویم طریق کښې د بتغ د تفسیر زیادت دې، بتغ نوم دې د نبیذ العسل، بله دا چه دا اهل یمن خکی.

**قوله:** «قَالَ أَبُو دَاوُدَ سَمِعْتُ أَحْمَدَ بْنَ حَنْبَلٍ يَقُولُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مَا كَانَ أَثْبَتَهُ» امام احمد رحمه الله د جرجسی توثیق فرمائی په طریق د تعجب چه اوگورئ هغه خومره ثقه او ثبت دې. په اهل حمص کښې دهغوی برابر هیڅوک نشته، د تعجب دپاره خلق عام طور لفظ د سبحان الله استعمالوی او کله کلمه توحید هم استعمالوی لکه چه دلته استعمال شوې ده. (۱)

والحدیث أخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

[۳۶۸۳] (۱) حَدَّثَنَا هَنَادُ بْنُ السَّرِيِّ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ مُحَمَّدٍ يَعْنِي ابْنَ إِسْحَاقَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ مَرْثَدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْبَزْزِيِّ، عَنْ دَيْلَمِ الْحَمِيرِيِّ، قَالَ: "سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّا بَارِضٌ بَارِدَةٌ نَعَالِجٌ فِيهَا عَمَلًا شَدِيدًا، وَإِنَّا نَتَّخِذُ شَرَابًا مِنْ هَذَا الْقَمْعِ نَتَّقَوِي بِهِ عَلَى أَعْمَالِنَا وَعَلَى بَرْدِ بِلَادِنَا، قَالَ: هَلْ يُسْكِرُ؟ قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: فَاجْتَنِبُوهُ، قَالَ: قُلْتُ: فَإِنَّ النَّاسَ غَيْرَ تَارِكِيهِ، قَالَ: فَإِنْ لَمْ يَتْرَكُوهُ فَقَاتِلُوهُمْ".

د ديلم الحميري رحمه الله نه روايت دې فرمائی چه دښی عليه السلام نه مې تپوس اوکړو عرض مې اوکړوای دالله رسوله مونږ په بیخ ملک کښې اوسېږو او هلته کاروبارکوو او مونږ دځان دپاره دغنمونه شراب جوړوو نبی عليه السلام او فرمائیل ایا دغه شراب نشه پیداکوي؟ ماعرض اوکړو هو، هغه شراب نشه پیداکوي نبی عليه السلام او فرمائیل بیاخوددینه ځان وساتئ ماعرض اوکړو خلق ددې پریخودونکي نه دي نبی عليه السلام او فرمائیل که چرې خلق شراب نه پریږدی نو تاسو ورسره جنگ وکړئ.

**قوله:** «عَنْ دَيْلَمِ الْحَمِيرِيِّ قَالَ سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم الخ»

شرح الحديث :

ديلم حمیری جیشانی عليه السلام رسول الله عليه السلام ته عرض اوکړو یا رسول الله عليه السلام مونږ په داسې زمکه باندې اوسېږو چه هلته یخنی ده. په ظاهر کښې د یمن زمکه مراد ځکه چه جیشان د

(۱) زمونږ دلته په سهارنپور کښې په محله شاه ولایت کښې یو پخواني حکیم صاحب وو (حکیم مختار صاحب مرحوم) چه عالم هم وو د هغوی عادت هم دا وو چه کله به ئې یو خبره د تعجب په طور بیانوله نو هغه به ئې په «لا اله الا الله» سره بیانوله یغفر الله لنا وله

(۲) \* تخریج: تفرد به ابوداود، (تحفة الأشراف: ۳۵۴۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۳۱/۴، ۲۳۲) (صحیح)



یمن قبیلہ ده هلته مونږ په محنت او مشقت سره کار کوو او هلته مونږ د اوربشو نه شراب جوړوو چه څکو ئې د طاقت دپاره او د یخنی نه د بچ کیدو دپاره، رسول الله ﷺ تپوس اوکړو چه د هغې نه سکر پیدا کیږي؟ هغوی عرض اوکړو او جی رسول الله ﷺ او فرمائیل: د هغې نه پرهیز کوو، ما عرض اوکړو چه هغه خلق خو هغې لږه پریخودونکی نه دی، رسول الله ﷺ او فرمائیل چه که هغوی ئې نه پریږدی نو د هغوی سره قتال اوکړه.

[۳۶۸۴] (۱) حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ بَقِيَّةَ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ كَلْبٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ: "سَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ شَرَابٍ مِنَ الْعَسَلِ؟ فَقَالَ: ذَاكَ الْبَيْتُ، قُلْتُ: وَيَنْتَبِذُ مِنَ الشَّعِيرِ وَالْذَّرَّةِ، فَقَالَ: ذَلِكَ الْيَزْرُ، ثُمَّ قَالَ: أَخْبِرْ قَوْمَكَ أَنْ كُلَّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ."

د ابو موسی نه روایت دې فرمائی چه د نبی ﷺ نه مې دشهدو دشرابو په باره کنبې تپوس اوکړو نووئې فرمائیل دشیدو دشرابو نوم بتع دې، ما عرض اوکړو دجواریو او وربشونه هم شراب جوړیږي نبی ﷺ او فرمائیل هو، هغې ته مزر وئیلې شي اوبیا ئې او فرمائیل تاسو خپل قوم خبرکړئ چه هر نشته کونکی څیز حرام دې.

﴿عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ سَأَلْتُ النَّبِيَّ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- عَنْ شَرَابٍ مِنَ الْعَسَلِ الْخ﴾

ابو موسی اشعری رضی الله عنه فرمائی چه ما د رسول الله ﷺ نه د شراب عسل په باره کنبې سوال اوکړو، رسول الله ﷺ او فرمائیل هغې ته بتع وائی ما تپوس اوکړو چه خلق د اوربشو او جواریو نیب دهم جوړوی، رسول الله ﷺ او فرمائیل د هغې نوم مزر دې او بیا ئې د هغې ټولو په باره کنبې او فرمائیل ﴿کل مسکر حرام﴾

ذرة په ضم د ذال سره او د را مخففه د فتحې سره یعنی جوار (۲) کومه چه یوه مشهوره غله ده د باجرې په شکل کنبې خو سپینه.

والحديث أخرجه البخاري ومسلم بنحوه من حديث سعيد بن أبي بردة عن أبيه، قاله المنذري

[۳۶۸۵] (۲) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ الْوَلِيدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، "نَهَى عَنِ الْخَمْرِ، وَالْمَيْسِرِ، وَالْكُوبَةِ، وَالْغُبَيْرَاءِ، وَقَالَ: كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَالَ ابْنُ سَلَامٍ أَبُو عُبَيْدٍ: الْغُبَيْرَاءُ: السُّكَّرَةُ تُعْمَلُ مِنَ الذَّرَّةِ، شَرَابٌ يَعْمَلُهُ الْحَبَشَةُ.

د عبد الله ابن عمرو رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ منع فرمائیلې ده دشرابو او جواریو اودکوبه (۳) ول غږول اودغیبراء (دجواریو شراب نه او فرمائیلې یې دي هر نشه کونکی څیز حرام دې.

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۱۰۶)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/المغازي ۶۰ (۴۳۴۳)، الأدب ۸۰ (۶۱۲۴)، الأحكام ۲۲ (۷۱۷۲)، صحيح مسلم/الأشربة ۷ (۱۷۳۳)، سنن النسائي/الأشربة ۲۳ (۵۵۹۸)، سنن ابن ماجه/الأشربة ۹ (۳۳۹۱)، مسند احمد (۴/۴۱۰، ۴۱۶، ۴۱۷) (صحيح)

(۲): كذا في البذل وهو المشهور وفي هامش البذل عن المحيط الاعظم ۸ ۳/۲ بضم المعجمة وتشديد المهملة المفتوحة وسكون المثناة الفوقية وقال اسمه في الهندية جواراه وضبطه في المجمع بضم معجمة وخفة راء وقال هاوه عوض عن واو كذا في الاوجز اهـ

(۳): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۹۴۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۵۸/۲، ۱۷۱) (صحيح)

قوله: «عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - نَهَى عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَالْكُوبَةِ وَالْغُبَيْرَاءِ وَقَالَ «كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ»»

میسر یعنی جواری او کوبه یعنی طبل (دهول) او غبیراء د جوارو شراب چه هغی ته سکرکه هم وائی، د کوبه تفسیر په طبل سره خپله په کتاب کښې د خو روایتونه پس راروان دې او په بذل کښې لیکلې دی: الکوبه بالضم هی الرد او الطبل او البربط اه بربط یعنی سارنگی.

[۳۶۸۶] (۱) حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا أَبُو شَهَابٍ عَبْدُ رَيْهِ بْنُ نَافِعٍ، عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عَمْرِو الْقُتَيْبِيِّ، عَنْ الْحَكَمِ بْنِ عُتَيْبَةَ، عَنْ شُعْبَةَ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ كُلِّ مُسْكِرٍ وَمُفْتَرٍ".

دام سلمه رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائیلې ده داستعمالولو دهر نشه راوستونکي خیز او دهر سستی پیدا کونکي خیزنه.

قوله: «أُمُّ سَلَمَةَ قَالَتْ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَنْ كُلِّ مُسْكِرٍ وَمُفْتَرٍ»

مفتر یعنی فتور پیدا کونکې خیز، فتور مقدمه د سکر وی، په بدن کښې سستی، کمزوری او بیهوشی شان، په حاشیه د ابوداؤد کښې دی: حافظ عراقی رحمته الله د دې حدیث نه د حشیش (بهنګ) په حرمت باندې استدلال کړې دې. اه د بهنګو په شان یو بل خیز وی چه هغی ته د هتوره وائی هغه هم بعض خلق خکی دا هم د مفضی الی السکر کیدو د وجې نه ناجائز دې. (۲)

[۳۶۸۷] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، وَمُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَا: حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ يَعْنَى ابْنُ مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عُمَانَ، قَالَ مُوسَى، هُوَ عَمْرُو بْنُ سَلَمٍ الْأَنْصَارِيُّ، عَنْ الْقَاسِمِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ، وَمَا أَسْكَرَمِنَهُ الْفَرْقُ قِيلَ الْكَفِّ مِنْهُ حَرَامٌ".

دام المومنین عائشة رضی الله عنها نه روایت دې فرمائی چه د نبی صلی الله علیه و آله نه مې اوریدلې دی چه فرمائیل نې هر نشه کونکو خیز حرام دې او کوم یوشې چه د فرق (یوه پیمانه) په مقدار نشه پیدا کړي نو دهغې یو چونګ هم حرام دې.

قوله: «كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ وَمَا أَسْكَرَمِنَهُ الْفَرْقُ قِيلَ الْكَفِّ مِنْهُ حَرَامٌ»

د دې حدیث ذکر مونږ سره د فریق ثانی د دلیل په شروع کښې شوې دې. والحديث أخرجه الترمذی وقال هذا حديث حسن، قاله المنذرى.

## بَابُ فِي الدَّاذِي

د داډی (شرابو) د حرمت بیان

د داډی په باره کښې لیکلې دی چه هغه د یو خیز تخم وی کوم چه په نیبذ کښې اچولې شی چه د هغې په وجه باندې په نیبذ کښې سختی او نشه پیدا کیرې کذا فی المجمع، او په

(۱) تفرد به ابوداؤد، (تحفة الأشراف: ۱۸۱۶۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۹۵/۸، ۲۹۴، ۳۰۹) (ضعيف)

(۲) بعض جاهل صوفیاء او مجاور قسم خلق هم دا خکی لکه رسول شاهي وغيره، صاحب د عون المعبود د دې په حرمت باندې تفصیلی کلام کړې دې په خو پانړو کښې بما لا مزید علیه،

(۳) سنن الترمذی ۳/۱۸۶۶، (تحفة الأشراف: ۱۷۵۶۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۷۱/۸، ۷۲، ۱۳۱) (صحيح)



قاموس کښې ئې د داډی په باره کښې لیکلې دی شراب الفساق کیدې شی دا هم هغه وی چه هغې ته تاري وئیلې شی، د تار او د کهجوري د اونې نه اوبه راوخی چه هغه څکی، تاري هم که تازه او څکلې شی نو په دې کښې څه باک نشته، خو د ایخودلو د وجې نه زیات وخته پورې په دې کښې زگ او سختی پیدا شی بیا دا ناجائز کیږی.

[۳۶۸۸] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ الْحَبَابِ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ صَالِحٍ، عَنْ حَاتِمِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ، قَالَ: دَخَلَ عَلَيْنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ غَنَمٍ، فَتَذَاكِرْنَا الطَّلَاءَ، فَقَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو مَالِكٍ الْأَشْعَرِيُّ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَيُشْرَيْنَ نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي الْخَمْرُ يُسْمَوْنَهَا بِغَيْرِ اسْمِهَا».

د مالک بن ابی مریم نه روایت دې فرمائی چه مونږه عبدالرحمن بن غنم ته راغلو او مونږه د تلاذکرو کړو عبدالرحمن او وئیل ماته ابو مالک اشعريه حدیث بیان کړې دې چه نبی ﷺ به فرمائیل یقینا زما په امت کښې به څه خلق شراب څي اودي لره به بل نوم ږدي (یعنی نوم به ئې بدلوي).

﴿ دَخَلَ عَلَيْنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ غَنَمٍ فَتَذَاكِرْنَا الطَّلَاءَ فَقَالَ حَدَّثَنِي أَبُو مَالِكٍ الْأَشْعَرِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَقُولُ « لَيُشْرَيْنَ نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي الْخَمْرُ يُسْمَوْنَهَا بِغَيْرِ اسْمِهَا » ﴾

مطلب دا دې چه په نوم بدلولو کښې هېڅ فرق نه راځی که حقیقه یو شراب مسکر وی نو هغه به د خمر په حکم کښې داخل وی اگر که د هغې نوم هر څه کیخودلې شی، د حقیقت او د مسمی اعتبار به وی د اسم نه.

### د طلاء تفسیر :

په دې روایت کښې د طلاء ذکر دې، دلته په شروح کښې په بذل المجهود او عون المعبود وغیره کښې د دې تفسیر په ما طبخ من عصير العنب حتی ذهب لثاه سره کړې شوې دې خو د کوم عصیر دوه ثلثه چه سوزیدلې وی هغه حرام نه دې خو د کوم عصیر چه د دوه ثلث نه کم سوزیدلې وی هغه د حرامو شرابو نه دې ﴿ فمقتضى المقام ان يفسر حتى ذهب اقل من ثلثيه ﴾ هسې خو اطلاق د طلاء په دې دواړو قسمونو باندې کیږی لکه چه د کتاب الاشربه په شروع کښې په حاشیه کښې تیر شوې دی، فتنه.

والحديث اخرجه ابن ماجه اثم من هذا، قاله المنذرى

[۳۶۸۹] (۲) حَدَّثَنَا شَيْخٌ مِنْ أَهْلِ وَاسِطٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مَنْصُورٍ الْحَارِثُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: سَمِعْتُ وَسِيلَ سَفْيَانَ الثَّوْرِيَّ عَنِ الدَّادِيِّ؟ فَقَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيُشْرَيْنَ نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي الْخَمْرُ يُسْمَوْنَهَا بِغَيْرِ اسْمِهَا»، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَقَالَ سَفْيَانُ الثَّوْرِيُّ: الدَّادِيُّ شَرَابُ الْفَاسِقِينَ.

امام ابوداؤد وائی دحارث بن منصور نه روایت دې دسفيان ثوري نه مې اوریدلی دی کله چه دهغه نه دداني شرابوپه باره کښې تپوس او شو هغه او وئیل رسول الله فرمائيلي دي خامخا څکي به څه خلق زما دامت نه شرابو لره او په دې باندې به بل نوم ږدي، امام ابوداؤد وائي سفيان ثوري وئیلی دی چه داډی د فاسقانو شراب دي.

(۱): سنن ابن ماجه/الفتن ۲۲ (۴۰۲۰)، (تحفة الأشراف: ۱۲۱۶۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳/۴۲۵) (صحيح)

(۲): تفرد به أبو داود (صحيح)

## باب فی الأوعية

د شرابو د لوښو بیان

[۳۶۹۰] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ، حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ حَيَّانَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، وَابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَا: نَشْهَدُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنِ الدُّبَاءِ، وَالْحَتَمِ، وَالْمُرْقَةِ، وَالنَّقِيرِ".

د عبد الله بن عمر او عبد الله ابن عباس رضي الله عنهما نه روایت دې دوی وئیلی دی مونږ گواهی ورکړو چه نبی صلی الله علیه و آله منع فرمالیل وه داستعمالولو دکدوارد چاتئ نه اود حرمني دگودي (غږکئ) اود لرگي نه دجوړشوي لوخي داستعمالولونه.

﴿ عَنْ ابْنِ عُمَرَ وَابْنِ عَبَّاسٍ قَالَا نَشْهَدُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- نَهَى عَنِ الدُّبَاءِ وَالْحَتَمِ وَالْمُرْقَةِ وَالنَّقِيرِ ﴾

په شروع کښې د تحریم خمر نه مخکښې چه په کومو لوښو کښې شراب جوړولې شو په دې باب کښې دهغې بیان دې، په دې لوښو کښې به شراب زر تیاریدل.  
په مشکیزه کښې د شرابو جوړولو مصلحت :

په شروع کښې رسول الله صلی الله علیه و آله په دې لوښو کښې د نیبذ جوړولو نه هم منع فرمائیلی وه او هدایت کړې شوې وو چه نیبذ دې په اسقیه یعنی مشکیزه کښې جوړ کړې شی مشکیزه هم داسې چه د هغې خوله د بره نه په څه خیز باندې اوتړلې شی. پس په وړاندې روایت کښې راروان دی ﴿علیکم باسقیة الادم التي یلاث علی افواها﴾ ددې مصلحت دا وو چه کوم نیبذ په مشکیزو کښې جوړولې شی خصوصاً هغه چه د پورته نه ئې خوله بند کړې شی نو په دې قسم مشکیزه کښې که د اشتداد او سکر آثار پیدا کیدل شروع شی نو د هغې به فوراً پته لگی، د گیس د وجې نه به هغه مشکیزه پرسیدل شروع شی، او په دې صورت کښې به سړې د دھوکې خوړلو او د نشائی شرابو نه بچ شی، په خلاف د هغه لوښو په کوم کښې چه د نیبذ جوړولو نه رسول الله صلی الله علیه و آله منع فرمائیلی ده هغوی فرمائی په دې لوښو کښې که نیبذ جوړولې شی نو څه ظاهري نخښه د اشتداد او نشې په هغې کښې ښکاره نه وی نو د هغې د وجې نه خطر وی د دې چه کیدې شی په دې نیبذ کښې نشه پیدا شوې وی چه د هغې احساس به جوړونکی ته نه وی او هغه به دې لره غیر مسکر گنړلو سره ځکل شروع کړی اصل وجه ددې منع داده چه د هغې حاصل احتیاط او عدم اعترار دې گینې اصل بنیاد د حرمت په لوښو وغیره باندې نه دې بلکه په سکر باندې دې نیبذ که په لوښی کښې جوړ کړې شی او که په مشکیزه کښې که په هغې کښې سکر پیدا نه شی نو حلال دې او که پیدا شوې وی نو حرام دې لکه چه په بعض روایتونو کښې رسول الله صلی الله علیه و آله د دې تصریح فرمائیلی ده نن غرض دا چه د شرابو د حرمت په ابتدائی زمانه کښې رسول الله صلی الله علیه و آله د دې لوښو د استعمال نه هم منع او فرمائیله خو بیا چه صحابه کرامو رضی الله عنهم عرض او کړو چه یا رسول

۱: صحیح مسلم/الأشربة ۶ (۱۹۹۷)، سنن النسائي/الأشربة ۳۶ (۵۶۴۶)، (تحفة الأشراف: ۵۶۲۳)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۳۵۲/۱) (صحیح)



الله ﷺ مونږ سره د دې نه علاوه نور لوښی نشته نو په دې باندې رسول الله ﷺ د هغه لوښو د استعمال اجازت او فرمائیلو پس د جمهورو په نزد د هغه لوښو په باره کښې چه کوم د منع روایات دی هغه منسوخ دی، بیا هم پکښې څه اندازه اختلاف باقی دي.

### د اوعیه اربعه وضاحت :

اوس وړاندې تاسو ددې اوعیه مذکوره فی الحدیث تفسیر واورئ. (الدباء) اوچ کدو چه د هغې نه دننه مغز اوباسی او د پیالې په شکل کښې شی. (الحنتم) الجرة الخضراء د خاورې نه جوړ شته مټکه، (المزفت) د خاورې هغه لوښی چه په هغې باندې زفت لگیدلې وی، زفت د تارکولو په شان یو تور خیز وی کوم چه په کشتی وغیره باندې هم لگوی چه هغې ته اوبه دننه داخل نه شی، په بعضو روایاتو کښې (مقیر) راغلې دي او دا دواړه یوه معنی لری، (مقیر) چه په کوم باندې قیر لگیدلې شوې وی قار هم وئیلې شی زفت ته دا دواړه یو خیز دي. (النقیر) د فعیل په وزن په معنی د مفعول یعنی منقور د کهجورې د تنې یوه ټکره چه د هغې نه مغز ویستلو سره هغه ډډه کړې شی، لکه چه زمونږ په علاقو کښې چه د لرگی چټو وی د چهنټی (دهنیا) میده کولو دپاره، په بعض روایاتو کښې د مزفت نه پس د نقیر په ځانې مقیر راغلې دي، دا صحیح نه دي، دا به تکرار شی ځکه چه مقیر او مزفت خو یو خیز دي په دې اوعیه کښې د نهی علت څه دي؟ په مزفت کښې د تیلو د لگیدو د وجې نه چونکه په هغې کښې د هوا سوری بند شی چه د هغې د وجې نه په هغې کښې اشتداد زر پیدا کیږی، دویم دا چه د دې لوښو خوله کهلاؤ وی او پلنه وی په خلاف د مشکیزه چه د هغې خوله ډیره تنګه وی چه په هغې کښې د اشتداد په وخت انتفاخ پیدا کیږی چه په هغې سره انسان ته پته لگی په خلاف د دې لوښو کښ، خو دا نهی په شروع کښې روستو د رسول الله ﷺ د طرف نه اجازت ملاؤ شو لکه چه د هم دې باب د څو روایتونو نه پس راځی (کنت نهیتکم عن ثلاث وانا امرکم بهن الحدیث) او د دې نه په روستو روایت کښې دی (لما نهی رسول الله ﷺ عن الاوعیه قالت الانصار انه لا بد لنا قال فلا اذا) یعنی انصارو عرض اوکړو چه زمونږ د دې لوښو نه بغیر گزاره نه کیږی نو په دې باندې رسول الله ﷺ او فرمائیل هیڅ باک نشته، پس په ائمه کښې د احنافو په نزد دا نهی منسوخ ده، او هم دغه شان د حنابلہ په راجح قول کښ، او د امام شافعی رحمه الله په نزد کراهت باقی دي اگر که تحریم نه دي باقی، او د امام مالک رحمه الله په نزد په دې څلورو کښې په دوو کښې کراهت دي په دباء او مزفت کښ، هسی خو عام طور شراح د جمهورو مسلک نسخ نقل کوی. والحدیث اخرجه مسلم والنسائی، قاله المنذری

[۳۶۹۱] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، وَمُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ الْمَعْنَى، قَالَا: حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ يَعْلَى يَعْنِي ابْنَ حَكِيمٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ، يَقُولُ: "حَرَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَبِيدًا"

۱: صحیح مسلم للأشربة ۶ (۱۹۹۷)، سنن النسائي للأشربة ۲۸ (۵۶۲۲)، (تحفة الأشراف: ۵۶۴۹)، وقد أخرجه: حم ۳۴۸/۱، ۴۸۷/۲، ۱۰۴، ۱۱۲، ۱۱۵، ۱۵۳ (صحیح)

الْحَجْرُ، فَخَرَجْتُ فَرَعًا مِنْ قَوْلِهِ حَرَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيذَ الْحَجْرِ، فَدَخَلْتُ عَلَى ابْنِ عَبَّاسٍ، فَقُلْتُ: أَمَا تَسْمَعُ مَا يَقُولُ ابْنُ عُمَرَ؟ قَالَ: وَمَا ذَاكَ؟ قُلْتُ: قَالَ: حَرَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيذَ الْحَجْرِ، قَالَ: صَدَقَ، حَرَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيذَ الْحَجْرِ، قُلْتُ: وَمَا الْحَجْرُ؟ قَالَ: كُلُّ شَيْءٍ يُصْنَعُ مِنْ مَذْرٍ.

د سعید بن جبیر نه روایت دې فرمائی چه د عبد الله ابن عمر رضی اللہ عنہما نه مې واوریدل چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم هغه نبیذ حرام کړي دي کوم چه دخاورو په لوبښي کښې جوړیږي ماچه دا واوریدل نو ابن عباس ته لارم او ورته مې وویل ایاتا اوریدلی دی چه ابن عمره وائی هغه تپوس او کړو ابن عمر خه وائی ما ورته اوویل هغه وائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم د منګي نبیذ حرام کړيدي ابن عباس اوویل هغه رښتیاوئيلي دي نبی صلی اللہ علیہ وسلم د منګي نبیذ حرام کړي دي ماعرض اوکړو «جر»، خه شي دې؟ هغه اوویل جر دخاورو لوبښي ته وئيلي شي.

﴿حَرَّمَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- نَبِيذَ الْحَجْرِ. قُلْتُ مَا الْحَجْرُ قَالَ كُلُّ شَيْءٍ يُصْنَعُ مِنْ مَذْرٍ﴾  
يعنى د خاورې مټکه، خو په بذل کښې دى اى ما يښد فى الجرار<sup>(۱)</sup> (الجرار جمع جرة) ولعل المراد من الجرار المدهونة، يعنى د لرګى لوبښي. والحديث اخرجه مسلم والنسائي، قاله المنذرى.

[۳۶۹۲] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ عَبَّادٍ، عَنْ أَبِي جَمْرَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ، يَقُولُ: وَقَالَ مُسَدَّدٌ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، وَهَذَا حَدِيثُ سُلَيْمَانَ، قَالَ: "قَدْ مَوْفَدُ عَبْدِ الْقَيْسِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّا هَذَا الْحَيُّ مِنْ رِبْعَةٍ قَدْ حَالَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ كِفَارٌ مُضَرٌّ، وَلَسْنَا نَخْلُصُ إِلَيْكَ إِلَّا فِي شَهْرِ حَرَامٍ، فَمَرْنَا بِشَيْءٍ نَأْخُذُ بِهِ وَنَدْعُو إِلَيْهِ مِنْ وَرَاءِنَا، قَالَ: "أَمَرَكُمْ بِأَرْبَعٍ، وَأَنْهَاكُمْ عَنْ أَرْبَعٍ: الْإِيمَانُ بِاللَّهِ، وَشَهَادَةُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَعَقْدُ يَدَيْهِ وَاحِدَةً، وَقَالَ مُسَدَّدٌ: الْإِيمَانُ بِاللَّهِ؟ ثُمَّ فَسَّرَهَا لَهُمْ "شَهَادَةُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَأَنْ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ، وَإِقَامُ الصَّلَاةِ، وَإِيتَاءُ الزَّكَاةِ، وَأَنْ تُوَدَّوا الْخَمْسَ مِمَّا غَنِمْتُمْ، وَأَنْهَاكُمْ عَنْ: الدَّبَاءِ، وَالْحَنْتَمِ، وَالْمَرْقَةِ، وَالْمَقْيَرِ"، وَقَالَ ابْنُ عُبَيْدٍ: النَّقِيرُ: مَكَانُ الْمَقْيَرِ، وَقَالَ مُسَدَّدٌ: وَالنَّقِيرُ وَالْمَقْيَرُ لَمْ يَذْكُرِ الْمَرْقَةَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَبُو جَمْرَةَ نَصْرَبْنُ عُمَرَ بْنَ الْضُبَيْعِيِّ.

د ابن عباس رضی اللہ عنہما نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته د عبد القیس قبیلې رفد راغي او هغوی عرض اوکړو اي د الله رسوله مونږيو داسې قبيله يو چه زمونږه اوستا په مینځ کښې دمظير کافران حائل دي اود عزتمندو میاشتونه علاوه مونږ ستا سره ملاقات نشو کولي مونږ ته داسې خيز وښابه چه مونږ پخپله هم په هغې باندې عمل کوو اود خان نه علاوه نورو خلقونه هم په هغې باندې حکم وکړو نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل زه تاسوله په خلود خبریاندې حکم کوم اود خلورو خیزولونه مومنع کرم (۱) حدي خیري گواهی ورکول چه د الله نه علاوه بل

(۱) الجبر بفتح الجیم وتشديد الراء جمع جرة کتمر جمع نمرة وهو بمعني الجرار الواحدة جرة، ويدخل فيه جميع انواع الجرار من الحتم وغيره، وقوله من نذر بفتح الميم والذال الطین المجتمع الصلب، کذا في النهاية وهذا تصريح ان الجبر يدخل فيه جميع انواع الجبر المتخذة من المدر الذي هو التراب والطين آه، من العون.

(۲) صحيح البخاري/الإيمان ۴۰ (۵۳)، العلم ۲۵ (۱۸۷)، المواقيت ۲ (۵۲۳)، الزكاة ۱ (۱۳۹۸)، المناقب ۵ (۳۵۱۰)، المغازي ۶۹ (۴۳۶۹)، الأدب ۹۸ (۶۱۷۶)، خبر الواحد ۵ (۷۲۶۶)، التوحيد ۵۶ (۷۵۵۶)، صحيح مسلم/الإيمان ۶ (۱۷)، الأشربة ۶ (۱۹۹۵)، سنن الترمذي/السير ۳۹ (۱۵۹۹)، الإيمان ۵ (۲۶۱۱)، سنن النسائي/الإيمان ۲۵ (۵۰۳۴)، الأشربة ۵ (۵۵۵۱)، (تحفة الأشراف: ۶۵۲۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۱۲۸، ۲۷۴، ۲۹۱، ۳۰۴، ۳۳۴، ۳۵۲، ۳۶۱)، سنن الدارمي/الأشربة ۱۴ (۵۶۶۲)، ويأتي بعضه في السنة (۴۶۷۷) (صحيح)



څوك د عبادت لائق نه لو خپل لاس مبارك به اشاره وكړه دمسد د په روايت كښې دى موبى  
عليه السلام او فرمايل په الله تعالى باندې ايمان راوړل او بيا ئې ددې داسې تفسير وكړو ﷺ نه  
دى خبرې گواهي وركول چه د الله تعالى نه علاوه بل څوك حقدار د بندگى نشته. (۲) مونځ  
قائمول (۳) زكوة وركول (۴) د غنيمت د مال نه خمس جدا كول، اوزه تاسو د څلور تسمه لوبو  
داستعمالولونه منع كوم. (۱) داستعمالولو دكدونه (۲) اود جاتئ نه (۳) اود څرمني درودي  
(غركئ نه (۴) اود لرگي نه د جوړشوي لوخي داستعمالولونه. ابن عبید دمقير لفظ په ځانې  
باندې نقير ذكر كړې دي اومسد دپه خپل روايت كښې منير او نقير ذكر كړي دي اومزفت ئې نه  
دى ذكر كړي، امام ابوداؤد وائى دا بوجمره نوم نصر بن عمران دې.

قوله: ( قَدْ قَدِمَ عَبْدُ الْقَيْسِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا هَذَا  
الْحَيَّ مِنْ رَبِيعَةَ )

### د وفد عبدالقيس والا حديث شرح :

دې خلقو عرض او كړو يا رسول الله ﷺ زمونږ چه كومه قبيله ده قبيله ربيعه دهغې ترمينځه  
او ستاسو ترمينځه د قبيله مضر كفار حائل دى په دې وجه مونږ تاسو ته صرف په اشهر  
حرم كښې راتلې شو، ځكه چه په هغه مياشتو كښې د كفارو په نزد هم قتال ممنوع دې. پس  
تاسو مونږ ته د داسې څيز حكم او هدايت وفرمايئ چه هغه مونږ په مضبوطيا سره  
اونيولې شو او دهغې طرف ته خپل قوم له هم دعوت وركړو كوم چه مونږ د ځان نه روستو  
پريخودلې دى، رسول الله ﷺ وفرمايل چه زه تاسو ته د څلورو څيزونو حكم كوم او د  
څلورو څيزونو نه مو منع كوم، وړاندې د هغه څلورو څيزونو حكم دې يو ايمان بالله يعنى  
شهادة ان لا اله الا الله وان محمدا رسول الله، او دويم مامور اقامة الصلوة، او دريم زكوة  
وركول او څلورم اداء الخمس، دا څلور پوره شو،

(اشكال)

په دې حديث كښې د حج او صوم ذكر نشته، خو په نورو رواياتونو كښې د صوم ذكر دې،  
لكه بخارى وغيره كښ، خو د حج ذكر د صحاح په روايت كښې نشته (۱) نو يا خو په دې  
وجه چه هغه دغه وخت كښې يا خو فرض شوې نه وو او يا په دې وجه چه ..... د حج  
فرضيت د يو قول مطابق په ۹ هجرى كښې شوې دې او د وفد عبدالقيس راتلل په ۸ هجرى  
كښې وو خو مشهوره دا ده چه د حج فرضيت په شپږمه هجرى كښې شوې دې نو كيدې شى  
چه د حج د ذكر ترك كولو بل څه وجه وي مثلا د هغه كفارو د وجې نه ئې په هغې باندې  
قدرت نه وى يا دهغې فرضيت على التراخى دې، يا دا چه د رسول الله ﷺ مقصد د ټولو  
احكاماتو نه خبرول نه وو بلكه د بعض احكاماتو نه وغيره وغيره.

(د مامور به اشياؤ سره متعلق بل سوال او دهغې جوابونه)

خو د صوم ذكر د ابوداؤد نه علاوه په نورو كتابونو كښې شته نو بيا دا امور په ځانې د  
څلورو پنځه شو.

(۱) اگر چه په مسند احمد او سنن كبرى د بيهقى كښې شته.

(پوهېې جواب): د دې يو جواب کوم چه د بيضاوی نه نقل دې هغه دا دې چه دلته خومره خيزونه نقل دی هغه ټول د ايمان بالله تفسير دی لهذا مذکور امر واحد شو او باقی راوی اختصارا یا نسيانا حذف کړل، خو حافظ رحمه الله په دې توجيه باندې دا اشکال کړې دې چه په بعض روايتونو کښې د «شهادة ان لا اله الا الله» نه پس «وعقد بيده واحدة» ذکر دې چه د هغې نه معلومېږي چه د دې نه روستو چه کوم امور ذکر شوې دی هغه د شهادت تفسير نه دې بلکه مستقل دې په دې وجه د بيضاوی توجيه صحيح نه ده لهذا د دې نه علاوه بل څه جواب باندې غور کول پکار دی،

(دويم جواب): يو جواب دا ورکړې شوې دې چه دا حضرات چونکه د کفار مضر گاونډ کښې اوسيدل او د اهل جهاد وغنائم نه وو نو د هغوی د حال مناسبت سره رسول الله ﷺ د امر خامس زيادت هم او فرمائيلو. يا دې داسې اوښلې شي چه ادا خمس د ايتاء زکوة په عموم کښې داخل نه دې د دواړو تعلق د مال معين سره دې او يو جواب دا ورکړې شوې دې چه د «وان تودوا الخمس» عطف په ايمان باندې نه دې بلکه د دې عطف په اربع باندې دې «ای امرهم باربع وباعطاء الخمس» يعنی رسول الله ﷺ هغوی ته د دې خلورو خيزونو حکم اوکړو او د اداء خمس امر من القسطلانی ۱۳۶/۱

قوله: «وَأَنهَآكُمْ عَنِ الدُّبَاءِ وَالْحَنْتَمِ وَالْمَرْفَتِ وَالْمُقَيْرِ». وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ النَّقِيرُ مَكَانَ الْمُقَيْرِ  
صرف د ابن عبيد روايت صحيح دې گڼې بيا به تکرار لازم شی ځکه چه مزفت او مقير دواړه يو دی لکه چه مخکښې تير شو.

«قَالَ أَبُو دَاوُدَ أَبُو جَمْرَةَ نَصْرُ بْنُ عِمْرَانَ الضُّبَعِيُّ» دا ابو جمره د ابن عباس رضي الله عنه په شاگردانو کښې دې او يو بل راوی ابو حمزه دې بالحاء المهمله والزاي المعجمة هغه هم د ابن عباس رضي الله عنه په شاگردانو کښې دې د هغوی نوم (عمران بن ابي عطاء، دې «ذکره الامام الترمذی فی عدة مواضع من جامعه»)

والحديث اخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي، قاله المنذري

[۳۶۹۳] حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ بَقِيَّةَ، عَنْ نُوحِ بْنِ قَيْسٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَوْنٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ لَوْ قَدِ عَبْدُ الْقَيْسِ: «أَنهَآكُمْ عَنِ النَّقِيرِ، وَالْمُقَيْرِ، وَالْحَنْتَمِ، وَالِدُّبَاءِ، وَالْمَزَادَةِ الْمَجْبُوبَةِ، وَلَكِنْ اشْرَبْ فِي سِقَابِكَ وَأُوكِهِ».

د ابو هريره رضي الله عنه نه روايت دې فرماني چه نبی ﷺ د عبد القيس وفد ته وښلي وو چه زه تاسو لره د لرگي دلوښود استعمالولونه منع کوم اودهغه لوبښي نه کوم چه دونې دبيح نه جوړشي اوهمدارنگې دغوړ کړې شوي دلوښي داستعمال نه اودچاتئ اوديدونه دجوړ کړې شوي لوبښي داستعمال نه اودهغه مشک داستعمال نه دکوم چه لاندینی حصه بنده کړې شوي نه وي لیکن تاسو دمشک نه اوبه څکي اوددې خوله به بنده ساتئ.

۱: صحيح مسلم الأشربة ۶ (۱۹۹۲)، سنن النسائي الأشربة ۳۸ (۵۶۴۹)، (تحفة الأشراف: ۱۵۰۹۳، ۱۴۴۷۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۹۱/۲، ۴۱۴) (صحيح)



(والمزادة المجبوبة) هغه لویه مشکیزه چه د هغې خوله د پورته نه پرې کولو سره پلنه کړې شوې وی چه د پورته نه ئې اوبه راویستلې شی او د هغې دپاره عزلاء نه وی یعنی د مشکیزې لاندې طرف ته خوله، په داسې مشکیزه کښې رسول الله ﷺ د نیبذ جوړولو نه منع او فرمائیله ځکه چه د هغې د خولې بندیدلو د وجې نه که په هغې کښې اشتداد پیدا شی نو د هغې انتفاخ به نه کیږي چه په هغې سره د سکر پته لگيږي. اوس دا چه په څنگه مشکیزه کښې نیبذ جوړ کړې شی؟ دې باره کښې په روستو روایت کښې راروان دی (عليکم بالاسقية الا دم التي يلا ث على افواهها) یعنی داسې دڅرمنې مشکونه چه د هغې خولې د بره نه اوتړلې شی او د دې هم معنی دې هغه لفظ کوم چه د دې نه روستو روایت کښې دې (واشربوا في الجلد الموكى عليه) یعنی د کومې مشکیزې په خوله باندې چه مزې تړلې شوې وی، د خولې د بندوالي د وجې نه د انتفاخ په وجه باندې د اشتداد فوراً پته لگي.

[۳۶۹۴] (حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبَانُ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ عِكْرَمَةَ، وَسَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ فِي قِصَّةِ وَقْدِ عَبْدِ الْقَيْسِ، قَالُوا: فِيمَ تَشْرَبُ يَا نَبِيَّ اللَّهِ؟ فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "عَلَيْكُمْ بِأَسْقِيَةِ الْأَدَمِ الَّتِي يَلَاثُ عَلَى أَفْوَاهِهَا".

د عبدالله بن عباس رضی اللہ عنہما نه په واقعہ دوند د عبدالقیس کښې مروي دي چه هغوی عرض او کړوچه زمونږ دپاره په کوم لوبښي کښې اوبه څکل پکار دي؟ نبی ﷺ ورته او فرمائیل دچرې په مشکونو کښې اوبه څکئ د کوموچه خوله بندیدلې شي.

[۳۶۹۵] (حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ بَقِيَّةَ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ عَوْفٍ، عَنْ أَبِي الْقَمُوحِ زَيْدِ بْنِ عَلِيٍّ، حَدَّثَنِي رَجُلٌ كَانَ مِنَ الْوُقْدِ الَّذِينَ وَقَدُوا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ عَبْدِ الْقَيْسِ يَحْسَبُ عَوْفٌ، أَنَّ اسْمَهُ قَيْسُ بْنُ النُّعْمَانِ، فَقَالَ: "لَا تَشْرَبُوا فِي نَقِيرٍ وَلَا مَرْقَبٍ وَلَا دَبَاءٍ وَلَا حَنْتَمٍ، وَاشْرَبُوا فِي الْجِلْدِ الْمُوكَى عَلَيْهِ، فَإِنْ اشْتَدَّ فَاكْسِرُوهُ بِالْمَاءِ، فَإِنْ أَغْيَاكُمْ فَأَهْرِيقُوهُ".

د زيد بن علی نه روایت دې فرمائی چه د عبدالقیس په وفد کښې یوکس ماته بیان کړې دې کوم چه د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شوې وو، د عوف گمان دې چه ددغه کس نوم قیس بن نعمان وو هغه به وئیل چه نبی ﷺ فرمائیلی دی تاسو دلرگي په لوبښو کښې څکل مه کوی اونه په کدو کښې اونه په چاتی کښې لیکن دڅرمنې په مشک کښې اوبه څکئ کله چه په نیبذ کښې سختوالي پیدا شي نو په اوبو باندې ددې سختوالي کم کړئ که چرې بیا هم نرم نه شي نو دا ضایع کړئ.

(فَإِنْ اشْتَدَّ فَاكْسِرُوهُ بِالْمَاءِ فَإِنْ أَغْيَاكُمْ فَأَهْرِيقُوهُ) یعنی دې قسم مشک کښې هم که په نیبذ جوړولو سره اشتداد پیدا شی نو په هغې کښې دې اوبه یو ځایې کړې شی او د هغې تیزی دې ختم کړې شی. او که په هغې کښې دومره ډیر اشتداد پیدا شو چه په اوبو ملاولو سره نه کمیږي او تاسو عاجز کړی نو بیا هغه او غورځوی.

(۱): تفرد به أبو داود، انظر رقم: (۳۶۹۲)، (تحفة الأشراف: ۵۶۶۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۱۱/۱) (صحيح)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۱۰۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۰۷۶) (صحيح)

## د حديث نه د مسلک حنفی تائید :

د دې حديث نه معلومه شوه چه د خمر او باقی اشربه مسكره په حكم كښې فرق دې، ځكه چه حقيقي خمر په اوبو اچولو سره نه پاكېږي او نه ئې څكل جائز كيدي شي ځكه چه ناپاك خيز په اوبو گډولو سره نه پاكېږي. په خلاف د نورو انبذه مسكره چه كه په هغې كښې سكر او اشتداد پيدا شي نو هغه د اصلاح نه پس څكل جائز دي معلومه شوه چه د هغې حرمت لعينها دې. هم هغه وخت دې چه كله هغه حد اسكار ته اورسيږي، په خلاف د خمر چه د هغې حرمت لعينها دې. (كذا في البذل)

حديث ابی هريرة رضي الله عنه أخرجه مسلم والنسائي، وحديث ابن عباس رضي الله عنهما أخرجه النسائي مسنداً ومرسلاً، وقد أخرج مسلم في الصحيح حديث ابی سعيد رضي الله عنه في وفد عبد القيس وفيه..... قاله المنذري.

[۳۶۹۶] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، حَدَّثَنَا سَفْيَانُ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ بَذِيمَةَ، حَدَّثَنِي قَيْسُ بْنُ حَبْرٍ التَّمَشْلِيُّ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ وَفْدَ عَبْدِ الْقَيْسِ، قَالُوا: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، فِيمَ تَشْرَبُ؟" قَالَ: لَا تَشْرَبُوا فِي الدُّبَاءِ، وَلَا فِي الْمَرْقَةِ، وَلَا فِي النَّقِيرِ، وَانْتَبِذُوا فِي الْأَسْقِيَةِ، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَإِنْ اشْتَدَّ فِي الْأَسْقِيَةِ؟ قَالَ: فَصُبُّوا عَلَيْهِ الْمَاءَ، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَقَالَ لَهُمْ فِي الثَّالِثَةِ أَوِ الرَّابِعَةِ: أَهْرِيقُوهُ، ثُمَّ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَى أَوْحَرِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَالْكُوبَةِ، قَالَ: وَكُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ"، قَالَ سَفْيَانُ: فَسَأَلْتُ عَلِيَّ بْنَ بَذِيمَةَ عَنِ الْكُوبَةِ، قَالَ: الطَّبْلُ.

د عبد الله ابن عباس رضي الله عنه نه روايت دې چه د قبيله عبد القيس وفد عرض وكړو اي د الله رسوله مونږ به څكل په كومولوښو كښې كروښې عليه السلام او فرمائيل دندونه جوړ شوي لوبښي اونه دخاورو په لوبښو كښې اونه دلرگي په لوبښي كښې بلكه په مشكونو كښې نبيذ جوړ دوى عرض او كړو اي د الله رسوله كه چرې په مشكونو كښې جوش وكړي؟ نبى عليه السلام او فرمائيل بيا په كښې اوبه واچوئ هغوى بيا عرض او كړو اي د الله رسوله كه چرې په دريم يا څلورم ځل بيا جوش او كړي؟ نبى عليه السلام او فرمائيل بيا ئې واړوئ او د دينه پس ئې فورا او فرمائيل يقينا الله تعالى په ماباندې شراب، جواړي، او ډول غږول حرام كړيدي، نبى عليه السلام او فرمائيل هريونشه راوستونكو خيز حرام دې، سفيان وائى مادعلى بن حزيمة نه دلفظ كوبه په باره كښې تپوس او كړو هغه او وئيل كوبه ډول ته وئيلي شي.

[۳۶۹۷] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ سَمِيعٍ، حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ عَمِيْرٍ، عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: "مَهَانَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الدُّبَاءِ، وَالنَّقِيرِ، وَالْجَعَةِ".

دعلى نه روايت دې فرمائى چه مونږه نبى عليه السلام منع كړي وو دكدو دلوبښي داستعمال نه اودچاتى داستعمال نه اودلرگي دلوبښي داستعمال نه او د وربشو دشرابونه.

(۱) تقرده ابو داود، تنظر حديث رقم: (۳۶۹۰)، (تحفة الأشراف: ۱۳۳۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/ ۲۷۴، ۲۸۹، ۳۵۰) (صحيح)

(۲) سنن النسائي للزينة ۴۳ (۵۱۸۰)، (تحفة الأشراف: ۱۰۲۶۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/ ۱۱۹، ۱۳۸) (صحيح)



[۳۶۹۸] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا مُعَرِّفُ بْنُ وَاصِلٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ دِنَارٍ، عَنْ ابْنِ بَرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "نَهَيْتُكُمْ عَنْ ثَلَاثٍ، وَأَنَا أَمْرُكُمْ بِهِنَ: نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُورِ فزُورُوهَا فَإِنَّ فِي زِيَارَتِهَا تَذْكَرَةً، وَنَهَيْتُكُمْ عَنِ الْأَشْرِيَةِ أَنْ تَشْرَبُوا إِلَّا فِي طُرُوفِ الْأَدَمِ فَاشْرَبُوا فِي كُلِّ وَعَاءٍ غَيْرَ أَنْ لَا تَشْرَبُوا مُسْكِرًا، وَنَهَيْتُكُمْ عَنِ الْخُومِ الْأَضَاحِيِّ أَنْ تَأْكُلُوها بَعْدَ ثَلَاثٍ فَكُلُوا وَأَسْتَمْتَعُوا بِهَا فِي أَسْفَارِكُمْ".

دبریده عليه السلام نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلى دى ماتاسو د درې خیزونونه منع کړي یی خو اوس درته ددې اجازت درکوم (۱)، ماتاسو دقبرونو دزیارت کولونه منع کړي وی اوس زیارت کولې شی ځکه چې دقبرونوپه زیارت کولوسره ددنیا په رغبتی اوداخرت یاد پیدا کیری (۲)، ماتاسو منع کړي وی د چمتی نه علاوه په نورو لوبو کښې دنیبذ داستعمالولونه اوس تاسو په هر قسم لوبې کښې ځکل کولې شی لیکن دنشی والاخیز مه ځکئ (۳)، ماتاسو منع کړي وی د درې ورځونه زیات دقربانی دغوښودساتلونه اوس تاسو دقربانی غوښه د درې ورځونه پس خوړلې شی اودسفر په حالت کښې ددینه فائده اخستلی شی.

[۳۶۹۹] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنِي مَنْصُورٌ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "لَمَّا نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْأَوْعِيَةِ، قَالَ: قَالَتِ الْأَنْصَارُ: إِنَّهُ لَا يَبْدُلُنَا، قَالَ: فَلَا إِذَا".

دجابر بن عبد الله عليه السلام نه روایت دې فرمائی کله چې نبی صلی الله علیه و آله ددې لوبو استعمال منع کړونو راوی وائی چې انصار دنبی صلی الله علیه و آله په خدمت کښې حاضر شول او عرض ئې وکړو مونږ ته ددې دیر ضرورت پېښیږي نبی صلی الله علیه و آله دوی ته اوفرمائیل اوس تاسو نه منع کوم.

[۳۷۰۰] (۳) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ زِيَادِ بْنِ قِيَاضٍ، عَنْ أَبِي عِيَّاضٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: "ذَكَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْأَوْعِيَةَ الذَّبَاءَ، وَالْحَتْمَ، وَالْمَزْقَ، وَالنَّقِيرَ، فَقَالَ أَعْرَابِيٌّ: إِنَّهُ لَا طُرُوفَ لَنَا، فَقَالَ: اشْرَبُوا مَا حَلَّ".

دعبد الله بن عمرو هدیو روایت دې چې نبی صلی الله علیه و آله دلوبو په باره کښې اوفرمائیل یو دكدونه جوړ کړي شوي لوبې اوبله چاتی اوبل دلرگي نه جوړ کړي شوي لوبې، په دې وخت کښې یوبانده چی عرض وکړو چې بیاخوژمونږ دپاره یو لوبی هم جائز پاتې نه شونې صلی الله علیه و آله اوفرمائیل کوم خیز چې حلال وي هغه په هر قسم لوبې کښې ځکلی شی.

[۳۷۰۱] (۴) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا شَرِيكٌ بِإِسْنَادِهِ، قَالَ: اجْتَنِبُوا مَا أَسْكُرَ.

امام ابوداؤد وائی چې اوحدیث بیان کړي شوي دي ماته په شان د روایت دشریک فرمائی چې

(۱): صحیح مسلم/الجنائز ۳۶ (۹۷۷)، الأضاحی ۵ (۱۹۷۷)، الأشربة ۶ (۱۹۹۹)، سنن النسائي/الجنائز ۱۰۰ (۲۰۳۴)، الأضاحی ۳۱ (۴۴۳۴)، الأشربة ۴۰ (۵۶۵۴، ۵۶۵۵)، (تحفة الأشراف: ۲۰۰۱)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/الأشربة ۶ (۱۸۶۹)، سنن ابن ماجه/الأشربة ۱۴ (۳۴۰۵)، مسند احمد (۳۵۰/۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۶۱) (صحیح)

(۲): صحیح البخاري/الأشربة ۸ (۵۵۹۲)، سنن الترمذي/الأشربة ۶ (۱۸۷۰)، سنن النسائي/الأشربة ۴۰ (۵۶۵۹)، (تحفة الأشراف: ۲۲۴۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۰۲/۳) (صحیح)

(۳): صحیح البخاري/الأشربة ۸ (۵۵۹۴)، صحیح مسلم/الأشربة ۶ (۲۰۰۰)، (تحفة الأشراف: ۸۸۹۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۱۱/۲) (صحیح) (كلاهما باللفظ: "فأرخص له في الجر غير المزقت")

(۴): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۸۸۹۵) (صحیح)

نبی ﷺ فرمائیلى دى تاسو دنشه راوستونكى خيز داستعمال نه خان وساتئ.

[۳۷۰۲] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّقِيُّ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "كَانَ يُنْبِذُ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سِقَاءٍ، فَإِذَا الْمُرْجِدُ وَاسِقَاءُ نُبِذَ لَهُ فِي تَوْرٍ مِنْ حِجَارَةٍ".

د جابر بن عبدالله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې د نبی صلی الله علیه و آله دپاره به په مشک کښې نبيذ تیاریدل او کچري مشک به ملاو نه شو نویابه دکانري په لوبني کښې دهغه د دپاره به جوړولې شو.

قوله: (عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ وَالْحِجَّةُ)

جعه هغه نبيذ کوم چه د اوربشو نه جوړولې شی. اخرجه النسائي، قاله المنذرى  
قوله: (عَنْ ابْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِيهِ « نَهَيْتُكُمْ عَنْ ثَلَاثٍ وَأَنَا أَمُرُكُمْ بِهِنَّ الْخ » د دې حديث ذکر هم اوس نزدې تیر شو. اخرجه مسلم والنسائي بمعناه، قاله المنذرى

(عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ كَانَ يُنْبِذُ لِرَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فِي سِقَاءٍ الْخ) یعنی د رسول الله صلی الله علیه و آله دپاره به د خرمنې په مشک کښې نبيذ جوړولې شو. که چرته به مشک نه وو نو بیا به د کانري په پیاله کښې جوړولې شو، د دې نه هم دا معلومه شوه چه نهی عن الاوعیه منسوخ ده. والحديث اخرجه البخاري والترمذي وابن ماجه، قاله المنذرى

### بَابُ فِي الْخَلِيطَيْنِ

د مخلوطو خيزونو نه د نبيذ جوړولوييان

يعنى د دوه خيزونو په يو خائې کولو سره چه کوم نبيذ جوړ کړې شی لکه زبيب او تمر، يا بسر او رطب.

### د کهجورو مختلف قسمونه او د هغې نومونه :

بسر يعنى هغه کهجوره چه د هغې څه حصه پخ شوې وى او څه باقى وى او رطب هغه چه پوره پخ شوې وى، او تمر هغه چه د رطب جوړيدو نه پس اوچه شى (چواره) او يو وى زهو چه د هغې ذکر په وړاندې حديث کښې راروان دې يعنى بسرملون، يعنى هغه بسر چه په هغې باندې رنگ راتلل شروع شى، او کومه چه بالکل کچه وى هغې ته بلح وائى، (۲)

(۱) صحيح مسلم/الأشربة ۶ (۱۹۹۹)، (تحفة الأشراف: ۲۷۲۲)، وقد أخرجه: سنن النسائي/الأشربة ۲۷ (۵۶۱۶)، ۳۸ (۵۶۵۰)، سنن ابن ماجه/الأشربة ۱۲ (۳۴۰۰)، مسند احمد (۳/۳۰۴، ۳۰۷، ۳۳۶، ۳۷۹، ۳۸۴)، سنن الدارمي/الأشربة ۱۲ (۲۱۵۳) (صحيح)

[۳۷۰۴] (۲) د دې اقسامو په تعين کښې په شروح د حديث کښې څه اختلافات هم په فهم کښې راځي، لاندې مونږ د لسان العرب ما حصل ليکو هغه دا چه د کهجورې د اونې د پيدا کيدو نه تر آخره پورې د هغې د تغيراتو په اعتبار سره چه کوم بيل بيل نومونه دى هغه دا دي: بالکل په شروع کښې د دې گل ته طلح وائى لکه چه د ام د ټولو نه اول حالت ته زمونږ په علاقه کښې پور وائى، د دې نه پس چه کله گل پرانيزى او ميوه پيدا کيدل شروع شى نو هغې ته خلال وائى بيا د دې نه پس د کهجورې شکل او صورت جوړيدو نه پس د هډوکى د سختيدو پورې دې ته بلح وائى، د دې نه پس چه کله په دې باندې زهو يعنى رنگ راشى احمرار يا اصفرار نو دې ته بسر وائى، بيا د دې د پخيدل شروع کيدو نه تر تماميدو پورې دې ته رطب وائى بيا د اوچيدو نه پس ورته تمر وائى اه.



[۳۷۰۳] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهُ "نَهَى أَنْ يُتْبَذَ الزَّيْبُ وَالثَّمَرُ جَمِيعًا، وَنَهَى أَنْ يُتْبَذَ الْبُسْرُ وَالرُّطْبُ جَمِيعًا".

د جابر بن عبد الله رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نه عليه السلام منع فرمائيلي ده چه دانگورو او کجورونه په یوځای نیښد جوړ کړې شي اود کچه او پخو اود وچو اود تازه کجورو نه په یوځای د نیښد جوړولونه منع فرمائيلي ده.

(۲) حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ مَوْسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبَانُ، حَدَّثَنِي يَحْيَى، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ: "نَهَى عَنْ خَلِيطِ الزَّيْبِ وَالثَّمَرِ، وَعَنْ خَلِيطِ الْبُسْرِ وَالرُّطْبِ، وَقَالَ: ائْتَبِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ عَلَى جِدَةٍ"، قَالَ: وَحَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِهَذَا الْحَدِيثِ.

قتاده دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه نبی عليه السلام منع فرمائيلي ده د دینه چه وځي او کجوري، اوا وهي کجوري اوتازه کجورې یوځای کړې شي اونید ورنه جوړ کړې شي اوفرمائيلي بردي چه تاسودهریونه جدا جدا نیښد تباروی، راوی وائی مادابوسلمه بن عبد الرحمن دلتاد به واسطه سره دا حدیث بیان کړې دې.

شرب الخلیطین د جمهورو په نزد ناجائز دې که مسکر وی او که نه وی ځکه چه په حدیث کښي د دې ممانعت راغلې دې، پس که هغه غیر مسکر وی نو د هغې حرمت صرف من وجه دې او که مسکر وی نو بیا من وجهین دې، اود احنافو په نزد که مسکر نه وی نو جائز دې گڼي حرام، مصنف رحمته الله په دې باب کښي د دواړو ډلو دلیل ذکر فرمائيلي دې، پس د باب د شروع روایتونه د جمهورو دلیل دې او د آخر دوه احادیث د احنافو مستدل دې.

وحدیث جابر رضی اللہ عنہ اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى. وحدیث ابی قتاده رضی اللہ عنہ ثانی حدیث الباب، اخرجه مسلم والنسائی وابن ماجه مسندا، قاله المنذرى.

[۳۷۰۵] (۳) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، وَحَفْصُ بْنُ غَمْرٍاءَ التَّمَرِيُّ، قَالَا: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ رَجُلٍ، قَالَ: حَفْصُ بْنُ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "نَهَى عَنِ الْبَلْعِ وَالثَّمَرِ، وَالزَّيْبِ وَالثَّمَرِ".

ابن ابی لیلی دیوکس نه روایت کوی، حفص رازی وئیلی دی چه دغه کس درسول الله دصحابه کرامونه دې فرمائيل ئې چه نبی کریم عليه السلام منع فرمائيلي ده دکچه او پخو کجورو دیوځای کولونه اودوځکو اردکجورو دیوځای کولونه چه نیښد جوړ کړې شي.

۱: صحيح مسلم للأشربة ۵ (۱۹۸۶)، سنن الترمذي للأشربة ۹ (۱۸۷۶)، سنن النسائي للأشربة ۹ (۵۵۵۸)، سنن ابن ماجه للأشربة ۱۱ (۳۳۹۵)، (تحفة الأشراف: ۲۴۷۸)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للأشربة ۱۱ (۵۶۰۱)، مسند احمد (۲۹۴/۳)، ۳۰۰، ۳۰۲، ۳۱۷، ۳۶۳، ۳۶۹ (صحيح)

۲: صحيح البخاري للأشربة ۱۱ (۵۶۰۲)، صحيح مسلم للأشربة ۵ (۱۹۸۸)، سنن النسائي للأشربة ۶ (۵۵۵۳)، سنن ابن ماجه للأشربة ۱۱ (۳۳۹۷)، (تحفة الأشراف: ۱۲۱۰۷)، وقد أخرجه: موطا امام مالك للأشربة ۳ (۸)، مسند احمد (۲۹۵/۵)، ۳۰۷، ۳۰۹، ۳۱۰، سنن الدارمي للأشربة ۱۵ (۲۱۵۶) (صحيح)

۳: سنن النسائي للأشربة ۴ (۵۵۴۹)، (تحفة الأشراف: ۱۵۶۲۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۱۴/۴) (صحيح)

[۳۷۰۶] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ ثَابِتِ بْنِ عُمَارَةَ، حَدَّثَنِي رِبْطَةُ، عَنْ كَبْشَةَ بِنْتِ أَبِي مَرْيَمَ، قَالَتْ: «سَأَلْتُ أُمَّ سَلَمَةَ، مَا كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهَى عَنْهُ؟» قَالَتْ: كَانَ "يَنْهَانَا أَنْ نَعْجُمَ النَّوَى طَبْخًا، أَوْ نَخْلِطَ الزَّيْبَ وَالْثَمَرَ".

د کبشه بنت ابی مریم نه روایت دې فرمائی چه مادام سلمه رضی الله عنها نه دهغه خیزونو په باره کښې تپوس او کړو دکومونه چه نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائیلې ده ام سلمه او فرمائیل نبی صلی الله علیه و آله دکجورو د پخولونه منع فرمائیلې ده اوددینه به ئې هم منع فرمائیله چه مونږه کجورې او وڅکي یوڅاني کړو (اونیږد ورنه جوړ کړو).

قوله: «سَأَلْتُ أُمَّ سَلَمَةَ مَا كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَنْهَى عَنْهُ قَالَتْ كَانَ يَنْهَانَا أَنْ نَعْجُمَ النَّوَى طَبْخًا أَوْ نَخْلِطَ الزَّيْبَ وَالْثَمَرَ»

### شرح الحديث :

په دې حدیث کښې دوه جزه دی جزء ثانی خو په خلیط پورې متعلق دې د کوم چه باب روان دي، او د جزء اول په مطلب کښې دوه احتمال له دی اول دا چه د کجورو نیږد دې زیات پوخ نه کړې شی که پخول مقصود وی، ځکه چه په زیات پخولو سره به د نیږد په ذائقه کښې تغیر راشی، د هډوکی مزه او د هغې تریخ والې به پکښې شامل شی، او دویم مطلب ئې دا دې چه د کجورې هډوکی دې پاڅه نه کړې شی، ځکه چه د کجورو هډوکی د څاروو اوبسانو او گډو بیزو خوراک وی نو د هډوکو په پخولو باندې به د هغوی خوراک ختم شی، د هډوکی د ټول رس وتلو د وجې نه.... ذکر المعینین شیخنا رحمه الله تعالی بین سطور کتابه.... د عجم معنی نضج یعنی د پخولو ده.

[۳۷۰۷] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دَاوُدَ، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ مُوسَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ امْرَأَةٍ مِنْ بَنِي أَسَدٍ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ "يُنْبِذُ لَهُ زَيْبٌ فَيُلْقِي فِيهِ تَمْرًا، وَتَمْرٌ فَيُلْقِي فِيهِ الزَّيْبَ".

د عائشه رضی الله عنها نه روایت دې فرمائی چه کله به د نبی صلی الله علیه و آله دپاره دوڅکونه. نیږد جوړیدل نوپه هغې کښې به ئې کجورې اچولې، او چه کله به دکجورونه دهغه دپاره نیږد جوړولې شو نوپه هغې کښې به ئې وڅکي اچولې.

«عَنْ امْرَأَةٍ مِنْ بَنِي أَسَدٍ عَنْ عَائِشَةَ رضی الله عنها أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - كَانَ يُنْبِذُ لَهُ زَيْبٌ فَيُلْقِي فِيهِ تَمْرًا، وَتَمْرٌ فَيُلْقِي فِيهِ الزَّيْبَ»

په دې حدیث کښې د زبیب او د تمر د خلیط ذکر دي او د رسول الله صلی الله علیه و آله هغې لره ځکل، د دې نه روستو حدیث کښې هم عائشه رضی الله عنها فرمائی «كَانَتْ آخِذُ قَبْضَةً مِنْ تَمْرٍ وَقَبْضَةً مِنْ زَيْبٍ فَأَلْقِيهِ فِي إِيَّائِ فَأَمْرُسُهُ ثُمَّ أَسْقِيهِ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -» چه ما به د رسول الله صلی الله علیه و آله دپاره داسې نیږد جوړولو چه یو موتې کجورې به مې واخستلې او یو موتې اوڅکې او بیا

(۱) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۲۸۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۹۶۷۱) (ضعيف الإسناد)

(۲) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۷۹۹۵) (ضعيف الإسناد)



به مي هغه د اوبو په لوبښي کښې واچولې او بيا به مي هغه اومړلې. د دې نه پس به مي په رسول الله ﷺ باندې ځکلي.

[۳۷۰۸] (۱) حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ يَحْيَى الْحَسَنِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرٍ، حَدَّثَنَا عَتَابُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ الْحَمَّانِيُّ، حَدَّثَنِي صَفِيَّةُ بِنْتُ عَطِيَّةَ، قَالَتْ: "دَخَلْتُ مَعَ نِسْوَةٍ مِنْ عَبْدِ الْقَيْسِ عَلَى عَائِشَةَ، فَسَأَلْنَاهَا عَنِ التَّمْرِ وَالزَّبِيبِ؟ فَقَالَتْ: كُنْتُ أَخْذُ قَبْضَةً مِنْ تَمْرٍ، وَقَبْضَةً مِنْ زَبِيبٍ، فَأَلْقِيَهُ فِي إِنَاءٍ، فَأَمْرُسُهُ، ثُمَّ أَسْقِيهِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ".

عتاب بن عبدالعزیز الحمانی وئیلی دی چه ماته صفیه بنت عطیه وئیلی دی چه زه د عبد القیس د زنانو په وفد کښې دعائشه راضي الله عنها په خدمت کښې حاضره شوم او مونږ دهغې نه د کجورو اودوځکو د نیب د باره کښې تپوس اوکړو، عائشه رضی الله عنها او وئیل مابه یوه لپه کجورې او یوه لپه وځکي راواخستلې او په یولوښي کښې به مي واچولې اوبیابه مي په لاسونو ومړلې اوبیابه مي په نبی ﷺ باندې وځکولې.

### باب فی نبیذ البسر

باب: د کچه کجورو نه نیب د جوړول څنګه دی؟

[۳۷۰۹] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ زَيْدٍ، وَعِكْرَمَةَ، أَنَّهُمَا كَانَا يَكْرَهُانِ الْبُسْرَ وَخَدَهُ وَيَأْخُذَانِ ذَلِكَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: "أَخْشَى أَنْ يَكُونَ الْمَرْءُ الَّذِي نَهَيْتُ عَنْهُ عَبْدِ الْقَيْسِ"، فَقُلْتُ لِقَتَادَةَ: مَا الْمَرْءُ؟ قَالَ: النَّبِذُ فِي الْحَنْتَمِ وَالْمَرْقُوتِ.

دابوقتاده رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه جابر بن زید او عکرمة رضی الله عنهما دواړو به د پخو او کچه کجورو نه نیب د جوړول مکروه گنړل اودابه ئې د ابن عباس تنه نقل کول چه ابن عباس فرمائیلی دی زه په دې ویرېږم چه چرته ددې نه مزاء جوړ نشي دوم نه چه د قبیله عبد القیس خلق منع کړې شوي وو، مادقتاده رضی الله عنه نه تپوس اوکړو چه مزاء څه شي دې؟ هغه او وئیل په چاتئ کښې یاد لرګي په لوبښي کښې نیب د جوړول.

﴿ عَنْ جَابِرِ بْنِ زَيْدٍ وَعِكْرَمَةَ أَلَّهْمَا كَانَا يَكْرَهُانِ الْبُسْرَ وَخَدَهُ وَيَأْخُذَانِ ذَلِكَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ أَخْشَى أَنْ يَكُونَ الْمَرْءُ الَّذِي نَهَيْتُ عَنْهُ ... الخ ﴾

### شرح الحديث:

په دې روایت کښې جابر بن زید او عکرمة نیبذ البسر اگر چه هغه ځانله جوړ کړې شوې وی مکروه گنړی او دا مسئله هغوی زده کړې وه د ابن عباس رضی الله عنه. او ابن عباس رضی الله عنهما فرمائی چه زه ویرېږم د دې خبرې نه چه د کوم مزاء نه وفد د عبد القیس منع کړې شوې وو هغه هم دا نه وی یعنی نیبذ البسر وحده، بیا په وړاندې روایت کښې راځي قتاده رضی الله عنه فرمائی چه د مزاء نه مراد هغه نیبذ دې کوم چه په حنتم یا مزفت کښې جوړ کړې شی د ابن عباس رضی الله عنه د کلام نه دا مستفاد کیږي چه وفد عبد القیس د مزاء نه منع کړې شوې وو او دا چه د هغې مصداق نیبذ البسر وحده دې خو زمونږ مخې ته چه د وفد عبد القیس کوم روایتونه دی په هغې کښې خو چرته هم د مزاء ذکر نشته، فالله اعلم بالصواب. او وړاندې د قتاده رضی الله عنه په کلام کښې راځي چه

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۷۸۶۹) (ضعيف الإسناد)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۵۳۸۵)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۴/۳۱۰، ۳۳۴) (صحيح الإسناد)

مراء وائی هغه نبیذ ته کوم چه د ختم او مزفت نه جوړ کړې شی. د دې دواړو روایتونو د یو ځای کولو نه به دا نتیجه راوځي چه بسر وحده د کوم چه په دې روایت کښې ذکر دې د هغې نه هغه نبیذ بسر مراد دې کوم چه په ختم یا مزفت کښې جوړ کړې شی گڼې بغیر د دې نه د بسر وحده په ممنوع کیدلو کښې هیڅ وجه نشته، واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب.

### باب فی صِفَةِ النَّبِیِّ

د نبیذ جوړولو طریقه

یعنی د نبیذ جوړولو او د هغې د څکلو طریقه.

[۳۷۱۰] (۱) حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هَمْرَةُ، عَنْ السَّيْبَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الدَّيْلَمِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: "أَتَيْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَدْ عَلِمْتَ مَنْ نَحْنُ وَمِنْ أَيْنَ نَحْنُ، فَأَلَى مَنْ نَحْنُ؟ قَالَ: بَلَى اللَّهُ وَإِلَى رَسُولِهِ، فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنْ لَنَا أَعْنَابًا مَا نَصْنَعُ بِهَا؟ قَالَ: زَيِّبُوهَا، قُلْنَا: مَا نَصْنَعُ بِالزَّيْبِ؟ قَالَ: أَتَيْدُوهُ عَلَى غَدَابِكُمْ وَأَشْرَبُوهُ عَلَى عَشَابِكُمْ، وَأَتَيْدُوهُ عَلَى غَدَابِكُمْ، وَأَتَيْدُوهُ فِي الشَّيْءَانِ وَلَا تَتَيْدُوهُ فِي الْقُلُلِ، فَإِنَّهُ إِذَا تَأَخَّرَ عَنْ عَصْرِهِ صَارَ خَلًا".

د دیلمی رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه مونږ د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضر شو او عرض موورته وکړو چه ای د الله رسول ته معلومه ده چه مونږ څوک یو؟ نبی صلی اللہ علیہ وسلم ورته او فرمائیل تاسو الله او دهغه رسول ته راغلې یې مونږ ورته عرض او کړوای د الله رسول له مونږه دانگورو مالکان یو په هغې باندې څه او کړو نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل وچ ئې کړئ مونږ عرض او کړو دانگورو دوچولو څه فائده ده؟ نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل د سحر په وخت کښې ئې په اوبو کښې لمدوی او ماښام ئې څکئ او کوم چه ماښام المده کړئ نو سحر ئې کی او تاسو ولره پکار دي چه د مړي په مشکونو کښې دا المده کړئ او یاد خاورو په منگو کښې او که چرې په دې کښې تاخیر وکړې شي نوییا د دینه سرکه جوړیږي.

قوله: (عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الدَّيْلَمِيِّ عَنْ أَبِيهِ) د دوی د پلار نوم فیروز دې، د دیلمی نه مراد هم هغه دې.

قوله: (قَالَ أَتَيْنَا النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ عَلِمْتَ مَنْ نَحْنُ وَمِنْ أَيْنَ نَحْنُ فَأَلَى مَنْ نَحْنُ قَالَ «إِلَى اللَّهِ وَإِلَى رَسُولِهِ»)

### شرح الحديث :

د دې په شرح کښې په بذل المجهود کښې لیکلې دی د مسند احمد د روایت په حوالې سره چه فیروز دیلمی رضی اللہ عنہ چه یمنی دې او د هغه قوم چه کله اسلام قبول کړو نو د هغوی قوم یو جماعت د وفد په طور د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې راولیږلو چه په هغوی کښې فیروز دیلمی رضی اللہ عنہ هم شامل وو. چا چه راتلو سره رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته د خپل اسلام خبر ورکړو، چه په هغې سره رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د هغوی اسلام قبول کړو، په دې موقع باندې دې وفد رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته هغه څه عرض کړل کوم چه دلته په دې کتاب کښې ذکر شوې دی، یعنی دا چه یا



رسول الله ﷺ تاسو ته معلومه ده چه مونږ څوک يو او د چرته نه ستاسو خدمت ته حاضر شوې يو او دا چه مونږ اسلام راوړې دې. اوس مونږ ستاسو نه دا تپوس کوو چه زمونږ ولی او يار او مددگار څوک دې؟ نو رسول الله ﷺ په جواب کښې وفرمائيل: ﴿الله ورسوله﴾ نو په دې اوریدو هغوی اووې ﴿حسبنا ورضينا﴾

قوله: ﴿فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ لَنَا أَعْتَابًا مَا نَصْنَعُ بِهَا الْخ﴾ هغوی عرض اوکړو يا رسول الله ﷺ! مونږ سره د انگورو باغونه دي يعنی هلته فراخی ده نو مونږ د هغه انگورو نه څنگه څنگه فائده اوچتولې شو؟ رسول الله ﷺ وفرمائيل ﴿د هغې نه زيبب (اوڅکې) جوړې کړئ. مونږ تپوس اوکړو بيا په زيبب باندې څه اوکړو؟ رسول الله ﷺ وفرمائيل: د هغې نبيذ جوړولو سره د سحر نبيذ د ماښام د خوراک نه پس څکئ. او د ماښام جوړ شوي نبيذ د سحر د خوراک نه پس څکئ، او بيا ئې وفرمائيل گورئ! دا نبيذ په مشکونو کښې جوړوئ او په منگو کښې ئې مه جوړوئ.

قوله: ﴿قَالَهُ إِذَا تَوَخَّرَ عَنْ عَصْرِهِ صَارَ خَلًا﴾ د دې جملې دوه مطلبه کيدې شي اول دا چه د دې تعلق د ﴿امر بالنبيذ في الشنان﴾ سره دې يعنی د دې حکمت هغه دا چه کوم نبيذ په مشکيزه کښې جوړولې شي که هغه په وخت باندې استعمال نه کړې شي بلکه په مشک کښې پريخودلې شي نو په وخت تيريدو سره به هغه نبيذ خل يعنی سرکه شي، او په هغې کښې به څه نقصان او اضعاف نه وي په خلاف د دې چه که په منگي وغيره کښې جوړ کړې شي او په هغې کښې ډير وخته پورې وي نو په دې صورت کښې به د هغه نبيذ نه شراب جوړ شي چه په هغې کښې د مال ضائع کول دي. او دويم احتمال دا دې چه د دې تعلق د ﴿نهى عن التبد في القل﴾ سره دې چه نبيذ په متکه کښې مه جوړ کړو ځکه چه په دې صورت کښې که هغه د ډير ساعته پورې هم په هغې کښې پروت وي نو د هغې نه به سرکه جوړه شي کوم چه خلاف مقصود دې اگر چه حلال دې، کذا في البذل نقلا عن تقرير حضرة الجناحوى قدس سره، والحديث اخرجه النسائي، قاله المنذرى

[۳۷۱۱] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنِي عَبْدُ الْوَهَّابُ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيدِ الثَّقَفِيُّ، عَنْ يُونُسَ بْنِ عَبْدِ الْحَسَنِ، عَنْ أُمِّهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: "كَانَ يُنْبَذُ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سِقَاءٍ يُوكَا أَغْلَاهُ، وَلَهُ عَزْلَاءُ يُنْبَذُ عُذْوَةً فَيَشْرَبُهُ عِشَاءً، وَيُنْبَذُ عِشَاءً فَيَشْرَبُهُ عُذْوَةً".

دعائشه رضی الله عنہا نه روایت دې فرمائی چه د نبی ﷺ دپاره به په مشک کښې نبيذ اچولې شول اودمشک پاڅنئ خوله به بندولې شوه اودنبی ﷺ مشک دوو خولو والارو، کوم نبيذ چه به سحر لمده کړې شول هغه به ئې په ماسخوتن کښې ځکل اوکوم چه به دسحر په وخت کښې په اوبو کښې واچولې شول هغه به ئې ماسخوتن ځکل.

قوله: ﴿عَنِ الْحَسَنِ عَنْ أُمِّهِ عَنْ عَائِشَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - قَالَتْ كَانَ يُنْبَذُ لِرَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فِي سِقَاءٍ يُوكَا أَغْلَاهُ وَلَهُ عَزْلَاءُ﴾

## شرح الحديث :

یعنی په بعض مشکونو کښې دوه خولې وی یو پورته طرف ته چه د هغې نه اوبه ډکوی، او لاندې طرف ته چه هغې ته عزلاء وائی. چه کله مشک زورند وی نو چه کله د هغې نه نیبډ ویستل وی نو په هغه خوله باندې ویستلې شی، چه د هغې مصلحت دا دې چه په مشک کښې چه کوم سکر پیدا کیدل شروع شوې وی نو هغه د لاندې طرف نه وی په دې وجه نیبډ چه کله څکلې شی نو هغه د لاندې والا خولې نه راویستلې شی چه د سکر پیدا کیدلو علم د شروع نه اوشی د څکلو نه مخکښې د رومبی حدیث مطلب دا دې چه د رسول الله ﷺ دپاره داسې مشک کښې نیبډ جوړولې شو چه د هغې پورته خوله به مزی سره تړلې شوه او د څکلو دپاره به نیبډ د عزلاء نه ویستلې شو کوم نیبډ چه به سحر جوړولې شو هغه به رسول الله ﷺ ماښام استعمالول او کوم نیبډ چه به د ماښام په وخت جوړولې شو هغه به رسول الله ﷺ سحر استعمالول.

د دې نه روستو روایت کښې دا زیادت دې چه په سحر والا نیبډ کښې د ماښام وخت کښې د څکلو نه پس که به څه پاتې شو نو هغه به غورځولې شو دغه شان د ماښام والا نیبډ سره به هم دغه شان کولې شو، مطلب دا چه دا بچ شوې نیبډ به ئې بل وخت نه استعمالول د نشې د ویرې نه چه چرته نشته پیدا نه شی، او دا مشک به په دواړو وختونو کښې خالی کولو سره په اوبو باندې وینځلې شو چه د مخکښې نیبډ څه اثر پکښې باقی پاتې نه شی.

[۳۷۱۲] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، قَالَ: سَمِعْتُ شَيْبَةَ بْنَ عَبْدِ الْمَلِكِ يُحَدِّثُ، عَنْ مُقَاتِلِ بْنِ حَيَّانَ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَمَّتِي عَمْرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، "أَنَّهَا كَانَتْ تُبِيدُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غُدُوَّةً، فَإِذَا كَانَ مِنَ الْعَشِيِّ فَتَعَشَى شَرِبَ عَلَى عَشَائِهِ، وَإِنْ فَضَلَ شَيْءٌ صَبَّغَتْهُ أَوْ قَرَعَتْهُ، ثُمَّ تُبِيدُ لَهُ بِاللَّيْلِ، فَإِذَا أَصْبَحَ تَغْدَى فَشَرِبَ عَلَى غَدَائِهِ، قَالَتْ: نَغْسِلُ السَّقَاءَ غُدُوَّةً وَعَشِيَّةً"، فَقَالَ هَذَا أَبِي: مَرَّتَيْنِ فِي يَوْمٍ، قَالَتْ: نَعَمْ."

دعائشه رضی الله عنها نه روایت دې فرمائی چه مابه د نبی ﷺ دپاره د سحر په وخت کښې د نیبډ انتظام شروع کړو کله چه به شپه راغله نو هغه به د خوراک نه پس حل او چه کوم به ورنه باقی پاتې شو نو هغه به یې واړول، او چه د شپې به مې کوم نیبډ تیار کړو او بیاباه سحر شونون ﷺ به سحر دناشتي نه پس څکل او مونږ به مشک سحر او ماښام وینځلو، مقاتل وئیلی دی چه زما پلار حیان ورته او وئیل په یوه شپه او ورځ کښې به مو دوه ځل وینکلوا ورته ئې اوفرمائیل چه هو، دوه پیري به مو وینځلو.

تشریح: مقاتل بن حیان رضی الله عنه فرمائی: چه زما پلار حیان د خپلې خور عمره نه تپوس او کړو چه آیا مشک به په یو ورځ کښې دوه کرته وینځلې شو؟ نو هغوی اوفرمائیل او دوه کرته به وینځلې شو.

(۱) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۷۹۵۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۱۲۴) (حسن الإسناد)



[۳۷۱۳] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي عُمَرَ يَحْيَى الْبَهْرَانِيُّ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "كَانَ يُنْبِذُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الزَّيْبُ، فَيَشْرِيهِ الْيَوْمَ وَالْغَدَ وَيَعْدُ الْغَدَ إِلَى مَسَاءِ الثَّالِثَةِ، ثُمَّ يَأْمُرُ بِهِ، فَيُسْقَى الْخَدَمُ أَوْ يَهْرَاقُ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: مَعْنَى يُسْقَى الْخَدَمُ: يَبَادِرُهُ الْفَسَادُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَبُو عُمَرَ يَحْيَى بْنُ عُبَيْدٍ الْبَهْرَانِيُّ.

د عبدالله بن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې د نبی صلی الله علیه و آله دپاره به د اوسکو نه نیبډ جوړیدل او په همدغه ورځ به ئې سکل او په دې پسي بله ورځ به ئې هم خکل د درې ورځي د مابښامه پورې، او حکم به ئې کولوچې کوم باقی پاتې شي هغه په خادمانو وځکوي پاتې واپوئ که چرې شدت په کښې پیدا شوې وي، امام ابوداؤد وئیلی دی چې د یسقی الخدم، مفهوم دادې چې د خرابیدو نه مخکښې.

قوله: (عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ كَانَ يُنْبِذُ لِلنَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - الزَّيْبُ فَيَشْرِيهِ الْيَوْمَ وَالْغَدَ وَيَعْدُ الْغَدَ إِلَى مَسَاءِ الثَّالِثَةِ الْخ) په دې روایت کښې دا دی چې د رسول الله صلی الله علیه و آله دپاره چې به کوم نیبډ جوړولې شو هغه به هغوی هم په هغه ورځ په کومه ورځ چې به جوړولې شو د هغې نه په بله ورځ او بیا د هغې نه په بله ورځ تر مابښام پورې ځکلو بیا که به د هغې نه روستو بچ شونو او به ئې فرمائیل چې په خادمانو باندې دې اوځکلې شي یا دې توتې کړې شي یعنې که څوک ځکلو والا ئې نه وی. امام ابوداؤد رحمته الله فرمائی چې خادمانو باندې د ځکلو به ئې ځکه حکم فرمائیلو چې د ایساریدو په وجه باندې خراب نه شي په دې وجه هم اوس دې استعمال کړې شي د خرابیدو نه مخکښ، د خرابیدو نه مراد نشه پیدا کیدل دی.

### (تطبیق بین الروایتین)

په دې روایت باندې دا اشکال پیدا کیږي چې د دې نه مخکښې په ډیرو روایتونو کښې راغلی دی چې د هغوی دپاره به کوم نیبډ جوړولې شونو رسول الله صلی الله علیه و آله به د سحر نیبډ مابښام او د مابښام نیبډ به ئې سحر ځکل او بیا به لوښې وینځلې شو. او د باب په دې آخری روایت کښې تر د درې ورځو پورې ځکل ذکر شوې دی. د دې جواب دا دی چې دا په اختلاف زمان باندې محمول دي، تیر روایت د گرمي په زمانه باندې محمول دي او دا روایت د یخنی په موسم. والحديث اخرجه مسلم والنسائي وابن ماجه، قاله المنذرى....

### باب فِي شَرَابِ الْعَسَلِ

د شهدود شربت ځکلو بیان

[۳۷۱۴] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ، عَنْ عَطَاءٍ، أَنَّهُ سَمِعَ عُبَيْدَ بْنَ عُمَيْرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى

۱: صحيح مسلم للأشربة ۹ (۲۰۰۴)، سنن النسائي للأشربة ۵۵ (۵۷۴۰)، سنن ابن ماجه للأشربة ۱۲ (۳۳۹۹)، (تحفة الأشراف: ۶۵۴۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۳۲/۱، ۲۴۰، ۳۵۵، ۲۸۷) (صحيح)

۲: صحيح البخاري/ تفسير سورة التحريم (۴۹۱۲) الطلاق ۸ (۵۲۶۷)، الأيمان ۲۵ (۶۶۹۱)، صحيح مسلم/ الطلاق ۳ (۱۴۷۴)، سنن النسائي/ عشرة النساء ۴ (۳۴۱۰)، الطلاق ۱۷ (۳۴۵۰)، الأيمان ۴۰ (۳۸۶۶)، (تحفة الأشراف: ۱۶۳۲۲)، وقد

أخرجه: مسند احمد (۲۲۱/۶) (صحيح)

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَمْكُثُ عِنْدَ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ، فَيَشْرَبُ عِنْدَهَا عَسَلًا، فَتَوَاصِيْتُ أَنَا وَحَفْصَةُ أَيُّنَا مَا دَخَلَ عَلَيْهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَلْتَقُلْ: إِنِّي أَجِدُ مِنْكَ رِيحَ مَغَافِيرٍ، فَدَخَلَ عَلَى إِحْدَاهُنَّ، فَقَالَتْ لَهُ ذَلِكَ، فَقَالَ: بَلْ شَرِبْتُ عَسَلًا عِنْدَ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ، وَلَنْ أَعُودَ لَهُ، فَتَزَلَّتْ: لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ تَبْتَغِي سُورَةَ التَّحْرِيمِ آيَةً، إِلَى إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ سُورَةَ التَّحْرِيمِ آيَةً، لِعَائِشَةَ وَحَفْصَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، وَإِذَا أَسَرَ النَّبِيُّ إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا سُورَةَ التَّحْرِيمِ آيَةً، لِقَوْلِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بَلْ شَرِبْتُ عَسَلًا.

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روايت دې فرمائي چه نبی کریم صلی الله علیه و آله به دزینب بنت جحش په کور کښې قیام کولو اودشهد و شربت به ئې څکلو، ما او ام المومنین حفصه رضي الله عنها مشوره وکړه چه کله نبی کریم صلی الله علیه و آله زمونږ خواته تشریف راوړي نوپه مونږ کښې دی ورته هره یوه دا خبره وکړي چه ستادخولي مبارکي نه دمغافیر (یوقسم چیردي دگوم نه چه بوي څي) بوي څي نوبیا چه به کله نبی صلی الله علیه و آله دهرې یوي خواته ورتلونو همدا خبره به ئې ورته کوله نبی صلی الله علیه و آله به ورته وئیل چه داسې نه ده مادزینب په کور کښې شهد څکلی دي اودنن نه پس به ئې هیڅ کله ونه څکم نوددې متعلق دا ایت کریمه نازل شو: «لم تحرم ما أحل الله لك تبتغي» تر «إن تتوبا إلى الله» پوري، وعائشه او حفصه رضي الله عنهما ته حکم اوشو چه دالله تعالی نه بخښنه او غواړئ، په دې باره کښې چه نبی صلی الله علیه و آله خپلې یوي بي بي ته پته خبره کړي وه چه ماشهد څکي دي.

#### شرح الحديث:

قوله: «أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَمْكُثُ عِنْدَ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ فَيَشْرَبُ عِنْدَهَا عَسَلًا» الخ دا د تحريم غسل والا مشهور حديث دې چه د هغې مضمون دا دې چه د رسول الله صلی الله علیه و آله عادت مبارکه اگر که عدل بين الزوجات وو، د هرې زوجې محترمي دپاره خپل نمبر مقرر وو خو روزانه به په څه نه څه وخت کښې اگر که د هرې يوې نمبر به وو رسول الله صلی الله علیه و آله به د سلام او ملاقات دپاره ازواج مطهراتو کښې هرې يوې ته په ولاړه ولاړه تشریف اوړولو. د هغوی په بيبيانو کښې زینب بنت جحش رضي الله عنها دا اوکړل چه کله به رسول الله صلی الله علیه و آله هغې کره لارو نو هغوی باندي ئې د شهد و شربت او څکلو چه د هغې يو مصلحت به دا هم وو چه هغې کره لږ زیات ایسار شی، عائشې رضي الله عنها ته چه کله دا معلومه شوه نو د دې په باره کښې عائشه رضي الله عنها فرمائي چه ما او حفصه رضي الله عنهما خپل مینځ کښې دا فیصله اوکړه چه مونږ کښې چاته هم رسول الله صلی الله علیه و آله راغلو نو هغوی ته دې داسې اوئی چه «انی اجد منك ریح مغافیر» چه ستاسو نه خو په مونږ د مغافیر بوئی راځی. پس هم داسې اوشوه نو رسول الله صلی الله علیه و آله د دې په جواب کښې اوفرمائیل «بَلْ شَرِبْتُ عَسَلًا عِنْدَ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ وَلَنْ أَعُودَ لَهُ» یعنی ما خو شهد څکلی دی نه مغافیر، خو د هغې سره رسول الله صلی الله علیه و آله دا هم اوفرمائیل (ځکه چه هغوی باندي خپله هم بدبوئی بده لگیدله) چه د بیا دپاره به زه دا هرگز نه څکم او دا خبره رسول الله صلی الله علیه و آله قسم خوړلو سره اوفرمائیل، د دې قصې په روایت کښې دا هم راځی چه رسول الله صلی الله علیه و آله هغوی ته دا هم فرمائیلې وو چه زما د دې تحريم ذکر چاته هم مه کوئ، خو هغوی د دې ذکر يو بل ته اوکړو په دې واقعه باندي دا آیات کریمه نازل شو «يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ» او د عائشې او حفصې رضي الله عنهما په باره کښې داسې اوفرمائیلې شو «إِنْ تَتُوبَا



إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا) چه تاسو دواړو لره هم توبه کول پکار دی چه تاسو یو نامناسب کار کړې دي. او د دې نه روستو روایت کښې دي (قَالَتْ سَوْدَةُ بَلْ أَكَلْتُ مَغْفِيرَ) او د رسول الله ﷺ دا جواب (سقتی حفصة) چه د هغې نه معلومیږي چه څکونکې خپله حفصة رضی الله عنها وه.

[۳۷۱۵] (حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا أَبُو سَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحِبُّ الْحُلَاءَ وَالْعَسَلَ، فَذَكَرَ بَعْضُ هَذَا الْخَبَرِ، وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَشْتَدُّ عَلَيْهِ أَنْ تُوَجَدَ مِنْهُ الرِّيحُ، وَفِي الْحَدِيثِ، قَالَتْ سَوْدَةُ: بَلْ أَكَلْتُ مَغْفِيرَ، قَالَ: بَلْ شَرِبْتُ عَسَلًا سَقَتْنِي حَفْصَةُ، فَقُلْتُ: جَرَسَتْ نَحْلُهُ الْعَرْفُطُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: الْمَغْفِيرُ مُقْلَةٌ وَهِيَ صَمْعَةٌ، وَجَرَسَتْ رَعَتْ، وَالْعَرْفُطُ نَبْتٌ مِنَ النَّحْلِ.

دام المومنین عائشة رضی الله عنها نه روایت دي فرمائي چه نبی کریم ﷺ به خواړه خیزونه او شهد ډیر خوښول او بیاني ددې حدیث څه حصه بیان کړه او اونې فرمائیل چه نبی ﷺ به دا بدگنول دجسم دڅه حصي نه ئې بوي لارشي، په یو حدیث کښې دي چه سوده رضی الله عنها او فرمائیل: چه تا مغفیر څکلی دي، نبی ﷺ او فرمائیل داسې نه ده ماشهد څکلي دي او حفصي راباندې څکولي دي ما ووئیل کيدي شي چه دشهدو مجئ د عرفطه په بوتې (د کوم نه چه بوي ځي) کیناستلی وي او ددې رس ئې څکلی وي ام المومنین عائشې رضی الله عنها هم او فرمائیل چه دشهدو دبدبویه کیدو وجه همدا کيدي شي.

(فَقُلْتُ جَرَسَتْ نَحْلُهُ الْعَرْفُطُ) (۱) یعنی چه کله رسول الله ﷺ او فرمائیل چه ما مغفیر نه دی څکلی بلکه شهد مې څکلی دی نو په دې باندې هغوی اووې چه بیا داسې کيدي شي چه د کومې مچې هغه شهد وو کوم چه تاسو څکلي وو هغې کيدي شي د عرفط اونې رس څکلي وی په دې وجه د هغې نه پیدا کیدونکی شهدو کښې د هغې بوئی راغلو، گویا زما خبره صحیح ده چه ستاسو د خولې نه د مغفیر بوئی راځي.

د شهدو مچې چه د کوم گل رس رابښکلو سره شهد جوړوی نو په هغه شهدو کښې د هغې بوئی راځي، مغفیر د مغفور جمع ده، مغفور د یو اونې د چیر نوم دي. د کومې اونې نه چه هغه راوځي هغې ته عرفط وائی دا اونه د ازغنو ډکه وی او د هغې په چیر کښې خوږوالې وی چه هغې لره په اوبو کښې گډولو سره بعض خلق څکی خو په دې کښې بدبوئی وی چه کله رسول الله ﷺ د هغې د څکلو نفی او فرمائیل نو د هغوی بی بی د هغې دغه شان توجیه او کړه کومه چه پورته ذکر شوې ده.

### په شرب عسل والا حدیث کښې اختلاف د روایاتو:

د ابوداؤد د دې ذکر کړی شوی روایت نه څو خبرې مستفاد شوې اول دا چه د سورة تحریم شان نزول د تحریم عسل واقعه ده، دویمه خبره دا چه په رسول الله ﷺ باندې شهد

(۱) صحیح البخاري/الأطعمة ۳۲ (۵۴۳۱)، الأضرية ۱۰ (۵۵۹۹)، ۱۵ (۵۶۱۴)، الطب ۴ (۵۶۸۲) (الحیل ۱۲ (۶۹۷۲)، صحیح مسلم/الطلاق ۳ (۱۴۷۴)، سنن الترمذي/الأطعمة ۲۹ (۱۸۳۱)، سنن ابن ماجه/الأطعمة ۳۱ (۳۳۲۳) (تحفة الأشراف: ۱۶۷۹۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۵۹/۶)، دي/الأطعمة ۳۴ (۲۱۱۹) (صحیح)

(۲) د دې په باره کښې امام ابوداؤد رحمه الله فرمائي (نبت من نبت النحل) یعنی دا یو قسم گیا ده کومه چه د شهدو مچې خوری او بیا د هغې نه شهد جوړوی

ځکونکي زينب بنت جحش رضي الله عنها ده لکه چه د ابوداؤد په رومي روايت کښې دی، او په دويم روايت کښې دا دی چه شهد ځکونکي حفصه رضي الله عنها وه او په هغوی باندې اشکال کونکې سوده رضي الله عنها وه. او په رومي روايت کښې دا دی چه اشکال کونکې عائشه او حفصه رضي الله عنها دي دواړو کښې يوه وه، د ابوداؤد دا دواړه مختلف روايتونه په صحيح بخاري کښې هم دي، د دي دواړو روايت کونکي خپله عائشه رضي الله عنها ده، اول حديث په طريق د عبيد بن عمير عن عائشه دي، او دويم په طريق د عروه عن عائشه دي.

اکثر شارحين علامه عيني حافظ ابن حجر او د قسطلاني رحمتهما الله ميلان دي طرف ته دي چه ځکونکي زينب بنت جحش رضي الله عنها وه ځکه چه حفصه رضي الله عنها خو خپله د عائشي رضي الله عنها په ډله کښې وه د زينب رضي الله عنها په خلاف کښې چه هغه په حزب مخالف کښې ده بلکه اصل مد مقابل هم هغه ده. او په روايت کښې د دي وضاحت دي چه ماته په دي مسئله کښې غيرت راغلو لهذا د هغې تقاضا هم دا ده چه ځکونکې دي د عائشي رضي الله عنها د حزب مخالف نه وي. سهارنپوری صاحب په بذل کښې هم دي ته ترجيح ورکړې ده بلکه دويم روايت ته ئې غلط وئيلي دي. فرمائي (وهذا غلط من احد الرواة، وانما كانت سقته زينب كما ذكره المؤلف في الرواية المتقدمة اه) دا کلام د امر ثاني سره متعلق شو.

### د ايت په شان نزول کښې د تحريم غسل او تحريم ماريه رضي الله عنها کښې اختلاف

او امر اول کوم چه مستفاد من الحديث دي يعنی دا چه د تحريم تعلق د غسل سره دي دا خبره هم مختلف فيده ده د دي په مقابل کښې دا ده چه د دي نه مراد تحريم د ماريه قبضيې رضي الله عنها دي، دا اختلاف هم د مفسرينو او د محدثينو په نزد مشهور دي، خو د تحريم غسل والا روايتونه د صحيحينو دي، او د تحريم ماريه والا روايتونه د غير صحيحينو، په دي اختلافاتو باندې مختصر کلام مگر جامع په الابواب والتراجمه/۱۳۷ کښې ذکر شوې دي هغې طرف ته دي رجوع اوکړې شي، په هغې کښې دا هم دی. قال ابن كثير: الصحيح انه كان في تحريمه العسل، وقال الخطابي: الاكثر على ان الآية نزلت في تحريم ماريه الى آخر ما فيه.....

د تحريم ماريه واقعه داسې ليکلې شوې ده چه يو کړت رسول الله ﷺ داسې حال کښې چه د حفصه رضي الله عنها په کور کښې ناست وو او حفصه رضي الله عنها د رسول الله ﷺ نه اجازت اخستلو سره د خه ضرورت په جه باندې بهر تلې وه رسول الله ﷺ ماريه رضي الله عنها هلته راطلب کړه او د هغوی سره ئې صحبت او فرمائيلو، چه کله په واپسې باندې حفصه رضي الله عنها دا اوليدل نو په دي باندې ئې د خفگان اظهار او فرمائيلو. په دي باندې رسول الله ﷺ ماريه په خان باندې حرامه کړه چه په هغې باندې د سورة تحريم آيتونه نازل شو، په جلالين کښې هم دا قول اختيار کړې شوې دي او په حاشيه د جمل کښې دا د تحريم واقعه په تفصيل سره نقل کړې شوې ده که غواړې نو هغې ته رجوع اوکړه..... دلته يوه بله واقعه ده يعنی د رسول الله ﷺ د ايلاء او د اعتزال عن النساء چه په هغې کښې دا دی چه رسول الله ﷺ د خپلو ازواج مطهراتو نه تريو مياشت پورې د خانله اوسيدو قسم کړې وو او بيا دا قسم رسول الله ﷺ پوره کړې هم وو او دا مياشت رسول الله ﷺ خانله په کمره کښې تيره کړې وه. د دي سبب څه شوې وو حافظ



فرمائی چه په دې کښې هم دغه شان اختلاف دې لکه چه څنگه پورته ذکر کړې شوې واقعہ د تحریم کښې اختلاف دې، د بعض روایتونو نه معلومېږي چه د اعتزال سبب د رسول الله ﷺ د بیبیانو نفقه کښې د زیادت طلب دې، او په یو قول کښې دا دی چه د دې سبب د راز ښکاره کول دی چه د تحریم غسل یا د ماریه رضاع نه پس رسول الله ﷺ د دې تحریم د اظهار نه منع او فرمائیلہ خو هغه بی بی هغې لره په ځانې د اخفاء هغه ښکاره کړو په دې باندې رسول الله ﷺ خفه کیدو سره تر یوې میاشتې پورې جدائی اختیار او فرمائیلہ خو د کوم تحریم د وجې نه چه په رسول الله ﷺ باندې عتاب اوشو هغه دا اعتزال عن النساء نه دې لکه چه د ترمذی د روایت نه دا شبه کیږي. کماحقه فی الکوکب الدرۃ فی کتاب التفسیر، فارجع الیه لو شئت.

حدیث الباب الاول اخرجہ البخاری ومسلم والنسائی، والثانی اخرجہ البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه مختصرا ومطولا، قاله المنذرى

### باب فی النبیز اذا غلی

کله چه په نبیز کښې سختوالي پیدا شي نو د دې استعمال څه حکم دې؟

[۳۷۱۶] حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عَمَّارٍ، حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ وَاكِدٍ، عَنْ خَالِدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُسَيْنٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: "عَلِمْتُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَصُومُ، فَتَحَيَّنْتُ فِطْرَةَ نَبِيِّهِ صَنَعْتُهُ فِي دُبَاءٍ، ثُمَّ أَتَيْتُهُ بِهِ فَإِذَا هُوَ يَنْشُ، فَقَالَ: اضْرِبْ بِهَذَا الْحَايِطَ، فَإِنَّ هَذَا شَرَابٌ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ."

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه ماته معلومه وه چه نبی ﷺ به اکثر وخت روژه نیوله په دې ورځ هم مانبي ﷺ ته نبیز پیش کړل کوم چه دندو په لوخي کښې وو ماچه ورته کله دا پیش کول نو نبیز جوش وهلي وو، نبی ﷺ او فرمائیل دا په دیوال اووله، اودا به هغه څوک څي د چاچه په الله او په ورځ د آخرت ایمان نه وي.

قوله: ﴿ فَتَحَيَّنْتُ فِطْرَةَ نَبِيِّهِ صَنَعْتُهُ فِي دُبَاءٍ ثُمَّ أَتَيْتُهُ بِهِ فَإِذَا هُوَ يَنْشُ الخ ﴾

ابوهريره رضي الله عنه فرمائی چه یو کړت داسې اوشوه چه د رسول الله ﷺ روژه وه نو ما د افطار د وخت انتظار کولو سره د افطار په وخت رسول الله ﷺ ته هغه نبیز یوړول کوم چه ما په دباء کښې جوړ کړې وو چه کله ما هغه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر کړل نو هغې هغه وخت جوش وهلو یعنی د فساد او نشې پیدا کیدو د وجې نه نو رسول الله ﷺ او فرمائیل ﴿ اضْرِبْ بِهَذَا الْحَايِطَ ﴾ دا نبیز په دیوال باندې او غورځوه ځکه چه دا د هغه خلقو شراب دی چه په الله او آخرت باندې ایمان نه لری. والحديث اخرجہ النسائی وابن ماجه، قاله المنذرى.

.....

۱. سنن النسائي للأشربة ٢٥ (٥٦١٣)، ٤٨ (٥٧٠٧)، سنن ابن ماجه للأشربة ١٥ (٣٤٠٩)، (تحفة الأشراف: ١٢٢٩٧)، (صحيح)

## بَابُ فِي الشَّرْبِ قَائِمًا

### په ولاړه داوبو څكلو بيان

[۳۷۱۷] حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى أَنْ يَشْرَبَ الرَّجُلُ قَائِمًا".

د انس بن مالك رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائيلى ده د دينه چه څوك دي په ولاړه اوبه وڅكى.

قوله: ﴿ نَهَى أَنْ يَشْرَبَ الرَّجُلُ قَائِمًا ﴾

د شرب قائما په باره كښې اختلاف د رواياتو:

د شرب قائما په باره كښې روايات دواړه قسم راغلي دي، د منع هم او د جواز هم، امام بخاري رحمه الله خو په صحيح بخاري كښې د شرب قائما باب تړلو سره صرف د جواز حديث يعنى حديث د علي رضي الله عنه كوم چه دلته په آبوداؤد كښې د دې نه روستو را روان دې ذكر فرمائيلى دې. د ابن بطال رائي خو دا ده چه د امام بخاري رحمه الله اشاره دې طرف ته ده چه د هغوى په نزد احاديث د منع ثابت نه دي، قاضى عياض رحمه الله فرمائي چه امام مالك او امام بخاري د نهى د احاديثو تخريج نه دې كړې، خو امام مسلم رحمه الله د هغې تخريج كړې دې پس د هغوى په يو روايت كښې دى مرفوعا ﴿ لَا يَشْرَبُ أَحَدُكُمْ قَائِمًا فَمَنْ نَسِيَ فَلْيَسْتَقِ ﴾ حافظ رحمه الله فرمائي چه د علماء كرامو رائي دې باره كښې مختلف دي، اول ترجيح او دا چه احاديث د جواز اثبت او اقوى دى د احاديث نهى نه، دويم قول دا چه احاديث د منع منسوخ دى په احاديث جواز سره په قرينه د عمل الخلفاء الراشدين ومعظم الصحابة والتابعين بالجواز، دريم قول په جمع بين الروايتين دې پس بعضو وئيلى دي چه د قيام نه مراد مشى ده او امام طحاوى رحمه الله فرمائي چه احاديث د نهى په عدم تسمية عند الشرب باندې محمول دي يعنى كوم سرې چه ئې په ولاړه باندې بغير د بسم الله نه څكى، او كه باقاعده بسم الله وئيلو سره ئې څكى نو په داسې څكلو كښې هيڅ باك نشته، دريمه رائي په دې كښې دا ده چه احاديث د نهى په كراهت تنزيه باندې محمول دي او احاديث د ثبوت په بيان د جواز باندې، وهذا احسن المسالك واسلمها..... او يو قول په دې كښې دا هم دې چه احاديث د نهى په طب باندې محمول دي او په شفقت باندې چه هسې نه چه په ولاړه باندې په تندئ سره څكلو باندې په مرئ كښې اونخلي، لهذا په اطمينان سره څكل پكار دى ا ه ملخصاً من الاوجز ۲/۳۹۹ او يو قول په دې كښې دا هم دې چه احاديث د جواز په زياتي اوبو د اودس يا زمزم باندې محمول دي او احاديث د نهى د هغې نه په علاوه باندې.

والحديث اخرجه مسلم والترمذي وابن ماجه بنحوه،

۱: صحيح مسلم للأشربة ۱۴ (۲۰۲۴)، (تحفة الأشراف: ۱۳۶۷)، وقد أخرجه: سنن الترمذي للأشربة ۱۱ (۱۸۷۹)، سنن ابن ماجه للأشربة ۲۱ (۳۴۲۴)، مسند احمد (۱۸۳، ۱۴۷، ۲۱۴)، سنن الدارمي للأشربة ۲۴ (۲۱۷۳) (صحيح)



[۳۷۱۸] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ مِسْعَرِ بْنِ كِدَامٍ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ مَيْسَرَةَ، عَنْ النَّزَالِ بْنِ سَبْرَةَ، أَنَّ عَلِيًّا دَعَا جَمَاعَ قَشِيرِيَّةٍ وَهُوَ قَائِمٌ، ثُمَّ قَالَ: "إِنَّ رَجُلًا يَكْرَهُ أَحَدَهُمْ أَنْ يَفْعَلَ هَذَا، وَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَفْعَلُ مِثْلَ مَا رَأَيْتُمُونِي أَفْعَلُهُ".

د نزال بن سبره نه روایت دې فرمائی چه علی نه اوبه راوغوښتلي اوبه ولاړه ئې وڅکلي اووئي فرمائيل بعضې خلق دا بدگنري يقينا ما نبی ﷺ په داسې کولو باندې ليدلې وو لکه څنگه چه تاسو زه وليدلې.

وحديث على رضي الله عنه ثاني حديثي الباب أخرجه البخاري والترمذي والنسائي، قاله المنذري.

### بَابُ الشَّرَابِ مِنَ فِي السَّقَاءِ

دمشک د خولې نه داوبو څکلو بيان

[۳۷۱۹] (۲) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، أَخْبَرَنَا قَتَادَةُ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الشَّرْبِ مِنَ فِي السَّقَاءِ، وَعَنْ رُكُوبِ الْجَلَالَةِ وَالْمُجْتَمَةِ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: الْجَلَالَةُ الَّتِي تَأْكُلُ الْعِدْرَةَ.

دعبدالله بن عباس رضي الله عنه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ منع فرمائيلې ده دمشق په خوله باندې داوبو څکلونه اودسورلي دمردار خور څاروي نه اوخوړلو دمرداري نه.

قوله: ﴿ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- عَنِ الشَّرْبِ مِنَ فِي السَّقَاءِ وَعَنْ رُكُوبِ الْجَلَالَةِ وَالْمُجْتَمَةِ الخ ﴾

### شرح الحديث :

يعني رسول الله ﷺ منع فرمائيلې ده د مشک په خوله باندې خوله لگولو سره د څکلو نه، چه د هغې علماء کرامو مختلف مصلحتونه ليکلي دي مثلاً دا چه ممکن ده چه په مشک کښې څه ضرري خيز وي، يا دا چه ناڅاپه اوبه په حلق کښې تلو سره حلق اولگي، يا په اوبو تويدلو سره د څکونکي جامې لوندې شي، بله دا چه هميشه يا بار بار داسې کولو سره په مشک کښې دننه ددې نه بوټي پيدا کيږي.

وراندې په حديث کښې د رکوب جلاله نه منع ده، جلاله هغه څاروي دې چه آزاد گريزو په وجه باندې پليت خيزونه خوري تردې چه د هغه په خوله کښې د نجاست بوټي راشي.

وراندې په حديث کښې دې ﴿ والمجتمه ﴾ مجتمه ته مبصوره هم وئيلې شي يعنې د مجتمه ځناور د خوراک نه رسول الله ﷺ منع فرمائيلې ده، مجتمه هغه ځناور (څاروي يا مرغی) ته وائي کوم چه په شرعي ذبح باندې د قدرت باوجود قيد کولو سره په غشي وغيره باندې ويشتلو سره مړ کړې شي.

۱: صحيح البخاري/الأشربة ١٦ (٥٦١٥)، سنن الترمذي/الشمائل ٣٢ (٢٠٩)، سنن النسائي/الطهارة ١٠٠ (١٣٠)، تحفة الأشراف: ١٠٢٩٣، وقد أخرجه: مسند احمد (٧٨١، ١٢٠، ١٢٣، ١٣٩، ١٥٣، ١٥٩) (صحيح)

۲: سنن الترمذي/الأطعمة ٢٤ (١٨٢٥)، سنن النسائي/الضحايا ٤٣ (٤٤٥٣)، سنن ابن ماجه/الأشربة ٢٠ (٣٤٢١)، تحفة الأشراف: ٦١٩٠، وقد أخرجه: صحيح البخاري/الأشربة ٢٤ (٥٦٢٩)، مسند احمد (٢٢٦١، ٢٤١، ٢٩٣، ٣٢١، ٣٣٩)، سنن الدارمي/الأشربة ١٩ (٢١٦٣) ١٣ (٢٠١٨) (صحيح)

والحديث أخرجه البخاري والترمذي والنسائي وابن ماجه، وليس في حديث البخاري وابن ماجه ذكر الجلالة والمجئمة، قاله المنذري.

### باب في اختناث الأسقية

دمشك خوله تاوول اوبيا ترې اوبه خشك

اسقيه جمع ده د سقاء يعنى مشك او د اختناث نه مراد د مشك خولې لره بهر طرف ته اړول چه په هغې كښې سختی او كلك والې راشی چه بيا په هغې باندي خوله لگولو سره اوبه او خشكې شی، دا ترجمه بلفظ الحديث ده، د حديث الفاظ هم داسې دي، په دې ترجمه الباب كښې او پورته كښې د غرض په اعتبار سره هيڅ فرق په نظر نه راځي، دواړه ابواب نزدې نزدې دي.

[۳۷۲۰] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سَفْيَانُ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، أَنَّهُ سَمِعَ عُبَيْدَ اللَّهِ ابْنَ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنِ اخْتِنَاثِ الْأَسْقِيَةِ".

د ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه پیغمبر پاک صلی اللہ علیہ وسلم منع فرمائیلي ده دمشك نه په داسې شان سره د ابو خشكونه چه خوله ئې تاو كړې شوي وي.

[۳۷۲۱] حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمرٍ، عَنْ عِيسَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "دَعَا بِأَذَاوَةٍ يَوْمَ أُحُدٍ، فَقَالَ: اخْنِثْ فَمَا الْإِذَاوَةُ، ثُمَّ شَرِبَ مِنْ فِيهَا".

عيسى بن عبد الله انصاري دخپل پلار عبد الله رضی اللہ عنہ نه روایت کوی فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم د احد په ورځ یو مشك اوبه راوغوښتلي اوبیا ئې حکم او کړو چه ددې خوله تاو کړئ او بیا ئې د دینه اوبه و خشکې.

د دې باب په دویم حدیث كښې د اختناث اسقيه جواز ذكر شوې دې چه د هغې مختلف توجیهات كیدلې شی : یو دا چه د منع تعلق د لوئې مشك سره دې یا دا چه د اباحت تعلق په احيانا باندي دې چه كله كله داسې كولې شی او د منع تعلق په كثرات او عادت باندي دې چه د هغې عادت واچولې شی، یا دا نهی محمول ده په شفقت او په ثبوت د اباحت او په جواز باندي. (بذل)

وحديث ابی سعيد رضی اللہ عنہ أخرجه مسلم والترمذي وابن ماجه، والحديث الثاني أخرجه الترمذي، قاله المنذري.

۱: صحيح البخاري/الأشربة ۲۳ (۵۶۲۴)، صحيح مسلم/الأشربة ۱۳ (۲۰۲۳)، سنن الترمذي/الأشربة ۱۷ (۱۸۹۰)، سنن ابن ماجه/الأشربة ۱۹ (۳۴۱۸)، (تحفة الأشراف: ۴۱۳۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۶۷، ۶۹، ۹۳) دي/الأشربة ۱۹ (۲۱۶۵) (صحيح)

۲: سنن الترمذي/الأشربة ۱۸ (۱۸۹۱)، (تحفة الأشراف: ۵۱۴۹) (منكر)



## بَاب فِي الشَّرْبِ مِنْ ثُلْمَةِ الْقَدَحِ

د پيالې د مات شوي ځانې نه داوبو څكلو بيان

هم دا الفاظ د حديث هم دي، ثلمة القدح د پيالې هغه ځانې چه مات شوې وي، موضع الانكسار، هلته خوله لگولو سره د څكلو نه د منع كولو مختلف مصلحتونه كيدي شي مثلاً دا چه هغه حصه پاكه نه وي د خيري د جمع كيدو د وجې نه، يا دا چه د هغې په شونډو كېني د ننوتلو خطر ده.

[۳۷۲۲] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَالِيحٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهَبٍ، أَخْبَرَنِي قُرَّةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّهُ قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الشَّرْبِ مِنْ ثُلْمَةِ الْقَدَحِ، وَأَنْ يُنْفَخَ فِي الشَّرَابِ".

د ابوسعيد خدری رضي الله عنه نه روايت دي فرمائي چه نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائيې ده د پيالې په مات ځانې باندې داوبو څكلونه، اود پوكي كولو نه اوبوته.

(وَأَنْ يُنْفَخَ فِي الشَّرَابِ) يعنى د څكلو په څيز كېني د پوكي وهلو نه رسول الله صلی الله علیه و آله منع فرمائيې ده، دا پوكي وهل كه د يو بسري وغيره د اوبو نه د لرې كولو دپاره وي او كه د هغې د يخولو په نيت باندې، ځكه چه دا د ادب او نظافت خلاف ده، پوكي سره په هغې كېني د لارو د غورځيدلو خطر ده، وړاندې مستقل يو باب را روان دي. باب في النفخ في الشراب، چه په هغې كېني دا حديث ذكر شوې دي. (نهى ان يتنفس في الاناء او ينفخ فيه)

## بَاب فِي الشَّرْبِ فِي آيَةِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ

د سپينوزرو يا سروزرو په لوبښ كېني د خوراكو څښاك بيان

[۳۷۲۳] (۲) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ الْحَكَمِ، عَنْ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، قَالَ: كَانَ حَدِيثُهُ بِالْمَدَائِنِ، فَاسْتَسْقَى، فَأَتَاهُ دُهْقَانٌ يَأْتَاهُ مِنْ فِضَّةٍ، فَرَمَاهُ بِهِ، وَقَالَ: إِنِّي لَمَأْرُومٌ بِهِ إِلَّا أَنِّي قَدْ نَهَيْتُهُ فَلَمْ يَنْتَهُ، وَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنِ الْحَرِيرِ، وَالذِّيَابِاجِ، وَعَنِ الشَّرْبِ فِي آيَةِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، وَقَالَ: هِيَ لَهْمٌ فِي الدُّنْيَا، وَلَكُمُ فِي الْآخِرَةِ".

د ابن ابی لیلی نه روايت دي فرمائي چه حذیفه نه په مدائن ښار كېني وو او هغه اوبه وغوښتلي نويوزميند ارورته د سپينو زرو په لوبښي كېني اوبه راوړلي، حذیفه هغه لوبښي او غورځولو اوونې وئيل چه مادالوبښي ځكه وغورځولو چه دازميندار ما ددې كار نه منع كړې وو ليكن دې منع نه شو، يقينانې صلی الله علیه و آله درېښمو د جامو اود ديباج (يو خاص قسم ريښم) داغوستلونه اود سرو زرو اود سپينوزرو د لوبښي داستعمال نه منع فرمائيې ده اودانې هم

۱: سنن الترمذي/الأشربة ۱۵ (۱۸۸۷)، (تحفة الأشراف: ۴۱۴۳)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/صفة النبي ۷ (۱۲)، مسند

احمد (۸۰/۳) (صحيح)

۲: صحيح البخاري/الأطعمة ۲۹ (۵۴۲۶)، الأشربة ۲۷ (۵۶۳۲)، ۲۸ (۵۶۳۳)، اللباس ۲۵ (۵۸۳۱)، ۲۷ (۵۸۳۷)، صحيح مسلم/اللباس ۱ (۲۰۶۷)، سنن الترمذي/الأشربة ۱۰ (۱۸۷۸)، سنن النسائي/الزينة من المجتبى ۳۳ (۵۳۰۳)، سنن ابن ماجه/الأشربة ۱۷ (۳۴۱۴)، (تحفة الأشراف: ۳۳۷۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۸۵/۵، ۳۹۰، ۳۹۶، ۳۹۸، ۴۰۰، ۴۰۸)،

دي/الأشربة ۲۵ (۲۱۷۶) (صحيح)

فرمائیلى دى چه داخيزونه په دنيا كښې د كافرانو دپاره دي اوستاسودپاره به په آخرت كښې وي.

قوله: ﴿كَانَ حَذِيفَةُ بِالْمَدَائِنِ فَاسْتَنْقَى فَأَتَاهُ دِهْقَانٌ يَأْنَاءَ مِنْ فِضَّةٍ فَرَمَاهُ بِهِ الْخ﴾

يعنى حذيفه عليه السلام چه په مدائن كښې اوسيدلو چا لره چه عمر عليه السلام د هغه ځانې امير جوړ كړې وو يو كرت هغوى اوبه طلب كړې نو هغوى ته يو زميندار يعنى چودهري د چاندې په پياله كښې اوبه راوړلې نو هغوى هغه اوغورخوله (۱) او وې فرمائيل ما دا هسې نه ده ويشتلې بلكه ما دې په دې كښې د راوړلو نه منع كړې وو خو دې منع نه شو حالانكه رسول الله صلى الله عليه وسلم منع فرمائيلې ده د لبس حرير او ديباج نه، يعنى سړى ئې منع كړى دى، او منع ئې فرمائيلې ده د سرو او سپينو زور په لوښى كښې د څكلو نه، يعنى مطلقا كه ښځې وى او كه سړى او فرمائيلې ئې دى چه دا په دنيا كښې صرف د كفارو دپاره دى او ستاسو دپاره صرف په آخرت كښ. والحديث أخرجه البخارى ومسلم والترمذى والنسائى وابن ماجه، قاله المنذرى.

## باب فى الكزء

د يولونښى نه په خوله باندې د څكلو بيان

د لوبښى يا لپې نه بغير براه راست په حوض يا نهر باندې خوله لگولو سره اوبه څكل.

[۳۷۲۴] (۲) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "دَخَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَدَجَلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ عَلَى رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ، وَهُوَ يُحَوِّلُ الْمَاءَ فِي حَاطِطِهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنْ كَانَ عِنْدَكَ مَاءٌ بَاتَ هَذِهِ اللَّيْلَةَ فِي شَنٍْ وَلَا كَرَعْنَا، قَالَ: بَلْ عِنْدِي مَاءٌ بَاتَ فِي شَنٍْ."

د جابر بن عبد الله عليه السلام نه روايت دې فرمائى چه بونښى عليه السلام دخپل يوملگري سره ديوانصاري خواته لاړو او هغه خپل باغ اوبه كولو نښى عليه السلام ورته وفرمائيل كه چرې ستا سره په مشك كښې بېگاني پاتې شوي اوبه وي نوبهتره ده ورنه زه به ئې دنهر په خوله باندې وڅكم هغه عرض او كړو هو، زما سره په مشك كښې بېگاني پاتې شوي اوبه موجود دي.

قوله: ﴿دَخَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَرَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ عَلَى رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ وَهُوَ يُحَوِّلُ الْمَاءَ فِي حَاطِطِهِ - إِنْ كَانَ عِنْدَكَ مَاءٌ بَاتَ هَذِهِ اللَّيْلَةَ فِي شَنٍْ وَلَا كَرَعْنَا﴾

يو كرت رسول الله صلى الله عليه وسلم سره د يو صحابى د يو انصاري باغ ته لاړو چه هغه خپل باغ ته اوبه وركولې نو رسول الله صلى الله عليه وسلم وفرمائيل: كه تا سره د شپې زړې اوبه په مشك كښې پرته وى (نور اوږه) گيڼې مونږ به په دې گودر باندې خوله اولگوو او اوبه به اوڅكو. هغوى

(۱) علامه عيني رحمته الله عليه د دې جملې ترجمه هم دا كړې ده ﴿ولفظه: فرمى بالقدح بالشراب او رمى الشراب بالقدح﴾ او حضرت په بذل كښې ليكلى دى ﴿فرما به اى فرمى حذيفه الدهقان بذلك الاناء﴾ يعنى حذيفه عليه السلام په هغه پياله باندې هغه دهقان ويشتلو او د حضرت شيخ په حاشيه د بذل كښې دى: ﴿ويؤيد ما الحاده الشيخ ما فى الفتح من اختلاف الروايات فى رواية فرمى به فى وجهه وفى اخرى ما بالوان يصيب به وجهه﴾ (اه)

(۲) صحيح البخاري ۲۰ الأثرية (۵۶۱۳)، سنن ابن ماجه ۲۵ الأثرية (۳۴۳۲)، تحفة الأشراف: ۲۲۵۰، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۲۸/۳، ۳۴۳، ۳۴۴)، سنن الدارمي ۲۲ الأثرية (۲۱۶۹) (صحيح)



عرض او کړو چه او یا رسول الله ﷺ ما سره د شپې په مشک کښې پرتې اوبه موجود دی. په دې واقعه کښې اگر چه د کرع ضرورت نه دې راغلې خو دا ده چه رسول الله ﷺ د هغې اراده او فرمائيله، بله ترې نه دا هم معلومه شوه چه رسول الله ﷺ به په مشک یا لوبڼو کښې د شپې پرتې زړې اوبه خوښولې.

د کتاب الاشربه د آخری باب په آخری حدیث کښې راروان دی چه «کان يستعذب [۳۷۲۳] یوې چینې نوم دې چه د مدینې طیبې نه د دوه ورځو په مزل لرې ده خوږې اوبه راوړلې شوې.

په دې باندې بذل کښې لیکلې دی: ځکه چه په هغه زمانه کښې د مدینې طیبې اکثر اوبه مالګینې او تروې وې.

### د حضرت حاجی صاحب رحمته یو معمول:

د سید الطائفه حضرت حاجی صاحب رحمته په باره کښې مشهوره ده او مونږ د حضرت شیخ نه ډیر کرته واوریده چه حاجی صاحب به ښه یخې اوبه څکلې او فرمائیل به ئې چه په یخو اوبو څکلو سره د زړه نه الحمد لله اوځی او په گرمو اوبو کښې دا خبره نه وی. خپله زمونږ شیخ هم د ډیرو یخو اوبو څکلو عادت وو او د خپل تائید دپاره به ئې د حاجی صاحب دا مقوله نقل فرمائيله. والحديث اخرجه البخاری وابن ماجه، قاله المنذرى

### باب فِي السَّاقِي مَتَى يَشْرَبُ

د اوبو تقسیمونکي به کله اوبه څکي؟

[۳۷۲۵] (حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي الْمُخْتَارِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «سَاقِي الْقَوْمِ آخِرُهُمْ شَرَبًا».

د عبد الله بن ابی اوفی نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائیلی دی ساقی لره پکار دي چه د ټولونه په اخر کښې اوبه اوځي.

«عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى أَنَّ النَّبِيَّ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- قَالَ «سَاقِي الْقَوْمِ آخِرُهُمْ شَرَبًا» خلقو لره اوبه ورکونکي د خپل څکلو په اعتبار سره د ټولو نه آخری وی.

په دې حدیث کښې د ادب او استحباب بیان دې چه داسې کیدل پکار دی، په خلاف د دې چه د اوبو ورکونکي که خپل نفس مقدم اوساتی نو دا به د هغه د حرص علامت وی (کذا فی البدل)، او په هغې کښې دا هم دی چه که څوک ساقی د خپل حصې په اندازه د مخکښې نه واخلی نو بیا هم څه باک نشته، جائز دی. ۱هـ

والحديث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه مختصراً، قاله المنذرى.

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۵۱۸۴)، وقد أخرجه: صحيح مسلم المساجد ۵۵ (۶۸۱)، سنن الترمذی الأشربة ۲۰ (۱۸۹۵)، سنن ابن ماجه (۳۴۳۴) كلاهما عن أبي قتادة، مسند احمد (۳۵۴/۴، ۳۸۲، ۳۰۳/۵) (صحيح)

[۳۷۲۶] حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، "أَتَى بَلْبَنَ قَدْ شِيبَ بِمَاءٍ، وَعَنْ يَمِينِهِ أَغْرَابِيٌّ، وَعَنْ يَسَارِهِ أَبُو بَكْرٍ، فَشَرِبَ، ثُمَّ أَعْطَى الْأَغْرَابِيَّ، وَقَالَ: الْإِيْمَنُ قَالَا يَمْنَنُ."

دانس بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته داسې شوده راوړلې شو چه اوبه په کښې اچولولې شوي وي او د نبی صلی اللہ علیہ وسلم یو جانب ته یابانیچې ناست وو او بل طرف ته ابوبکر فیناست وو نبی صلی اللہ علیہ وسلم چه شوده وڅکل او بیا ئې پیاله باندې چی ته ورکړه اوبیا ئې اوفرمائیل اول دښی طرف والحق دې پیاد چپ طرف والا.

قوله: «عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ النَّبِيَّ -صلى الله عليه وسلم- أَتَى بَلْبَنَ قَدْ شِيبَ بِمَاءٍ وَعَنْ يَمِينِهِ أَغْرَابِيٌّ وَعَنْ يَسَارِهِ أَبُو بَكْرٍ الْخ»

د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې لسی پیش کړې شوه په داسې حال کښې چه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ښی طرف ته یو اعرابی او گس طرف ته صدیق اکبر رضی اللہ عنہ وو، رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د هغې نه اول په خپله لسی اوڅکله، او وې فرمائیل «الایمن فالایمن» یعنی د ښی طرف والا راجح او مقدم دې په گس طرف والا باندې.... د دې حدیث په ظاهر کښې د ترجمه الباب سره مناسبت نشته، او په بذل کښې ئې د گنگوهی رحمۃ اللہ علیہ د تقریر نه دا نقل فرمائیلې دی چه مصنف رحمۃ اللہ علیہ دا حدیث په دې باب کښې ظاهرا په دې وجه راوړلې دې چه پورته قاعده «ساقی القوم آخرهم شربا» په هغه صورت کښې دې چه یو سرې مشترک خیز په خپلو ملگرو کښې تقسیموی، هلته هغه له پکار دی چه د خپلې حصې خیز روستو واخلی، او چرته چه کوم خیز خالص خپل حق وی یا خپل ملک وی د مخکښې نه، یا هغه ته هدیه کړې شوې وی د هغه دپاره دا ضروری نه ده چه هغه دې نور و لره په خپل ځان باندې مقدم کړی. اه فلله درالشیخ.

د شمائل ترمذی په یو روایت کښې دی، ابن عباس رضی اللہ عنہما فرمائی چه یو کورت زه او خالد بن الولید رضی اللہ عنہ دواړه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم سره میمونې رضی اللہ عنہما کړه لاړو، هغې مونږ ته په یو پیاله کښې پئ راوړل چه هغه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم اوڅکل، زه د هغوی ښی طرف ته اوم او خالد گس طرف ته، نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د بچ شوې پیو د تقسیم چه کله اراده اوفرمائیل نو ما ته ئې اوفرمائیل چه حق خو ستا دې، خو که ته غواړې نو زه به په دې کښې خالد ته ترجیح ورکړم، ما عرض اوکړو چه ستاسو جوته مبارکه داسې معمولی خیز نه دې چه په هغې کښې دې بل ته ترجیح ورکړې شی، لهذا هغه هغوی خپله اوڅکل.

ددې روایت نه پس امام ترمذی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چه میمون نه رضی اللہ عنہما خالد بن الولید او د ابن عباس رضی اللہ عنہما او دغه شان د یزید بن الاصم د دې درې واړو ترور وه. گویا هم په دې وجه باندې دوی وای دواړه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم سره کور ته داخل شوې دی د میمونې رضی اللہ عنہما د محرم کیدو د وجې نه.

۱: صحیح البخاری/الأشربة ۱۴ (۵۶۱۲)، ۱۸ (۵۶۱۹)، المساقاة ۱ (۲۳۵۲)، الهبة ۴ (۲۵۷۱)، صحیح مسلم/الأشربة ۱۷ (۲۰۲۹)، سنن الترمذی/الأشربة ۱۹ (۱۸۹۳)، سنن ابن ماجه/الأشربة ۲۲ (۳۴۲۵)، تحفة الأشراف: (۱۵۲۸)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/صفة النبي ۹ (۱۷)، مسند احمد (۱۱۰/۳، ۱۱۳، ۱۹۷)، سنن الدارمي/الأشربة ۱۸ (۲۱۶۲) (صحیح)



خبره اري : په دې حديث د انس رضي الله عنه كښې چه دا راغلي دي (وعن يمينه اعرابي) دا حديث چونكه په بخاري كښې هم شته په دې باندې حافظ په فتح الباري ۳۷/۵ (كتاب المساقاة) كښې ليكلي دي چه ابن التين د بعض شارحينو نه نقل كړې دې چه د دې اعرابي نه مراد خالد بن الوليد رضي الله عنه دې، په دې باندې دا اشكال كړې شوې دې چه د خالد بن الوليد رضي الله عنه په شان شخصيت ته خو اعرابي نه شي وئيلي كيدي، حافظ فرمائي : كيدي شي چه د دې تفسير باعث هغه حديث د ابن عباس رضي الله عنه وي كوم چه په ترمذي شريف كښې دې (قال دخلت انا وخالد بن الوليد على ميمونة الحديث المذكور قريبا) كيدي شي چه دې قائل دا گنرلې وي چه دا يوه قصه ده خو دا صحيح نه ده ځكه چه د ترمذي په روايت كښې چه كومه قصه ذكر ده هغه د بيت ميمونه ده او دا د انس رضي الله عنه قصه د انس رضي الله عنه په كور كښې راغلې ده، الى آخر ما بظ..... لهذا يو لره په بل باندې حمل كول غلط دي. والحديث اخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجه، قاله المنذري

[۳۷۲۷] (۱) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِي عَصَا، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا شَرِبَ تَنَفَّسَ ثَلَاثًا، وَقَالَ: هُوَ أَهْنَأُ وَأَمْرَأُ وَأَبْرَأُ.

د انس بن مالك رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه نبی صلی الله علیه و آله چه به كله اوبه څكلي نو په درې ساه گانو كښې به ئې څكلي او فرمائيل به ئې چه په اوبو څكلو كښې ساه اخستل تنده ختموي او خوراك ازموي او تندرستي پيدا كوي.

قوله: «كَانَ إِذَا شَرِبَ تَنَفَّسَ ثَلَاثًا وَقَالَ «هُوَ أَهْنَأُ وَأَمْرَأُ وَأَبْرَأُ»»

يعني د رسول الله صلی الله علیه و آله عادت مبارك د څكلو په څيز كښې دا وو چه رسول الله صلی الله علیه و آله به هغه په درې ساگانو باندې څكلو او فرمائيل به ئې چه دا درې كړته څكل ډير زيات مزيدار، په څكلو كښې اسان او په تالو كښې د اينختلو د ضرر نه پاك وي. د څكلو يو ادب خو په دې حديث كښې ذكر دې چه اوبه كم از كم په دوه يا درې ساگانو باندې څكل پكار دي، كما تقدم في كتاب الطهارة (واذا شرب فلا يشرب نفسا واحدا) او دويم ادب په روايت كښې دا راځي (واذا شرب احكمم فلا يتنفس في الاناء) چه د اوبو څكلو ترمينځه چه كله ساه اخلي نو لوښې دې د خولې نه جدا كړي، په لوښي كښې دې ساه نه اخلي. دې حديث د ترجمة الباب سره هيڅ خصوصي مناسبت نشته، بس دا ده چه دا هم د څكلو د ادب نه يو ادب دې. والحديث اخرجه مسلم والترمذي والنسائي، قاله المنذري.

.....

(۱) صحيح مسلم الأشربة ۱۶ (۲۰۲۸)، سنن الترمذي الأشربة ۱۳ (۱۸۸۴)، الشمايل (۲۱۰)، (تحفة الأشراف: ۱۷۲۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۱۸۳، ۱۱۹، ۱۸۵، ۲۱۱، ۲۵۱) (صحيح)

## بَابُ فِي النَّفْخِ فِي الشَّرَابِ وَالتَّنْفِيسِ فِيهِ

اوبوته دپوکي کولوبيان

[۳۷۲۸] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَبْدِ الْكَرِيمِ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُتَنَفَّسَ فِي الْإِنَاءِ أَوْ يُنْفَخَ فِيهِ".

۱ د عبد الله بن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائیلې ده د دینه چه ساه واخستلی شي په لوبسي کښې اود پوي کولونه په اوبو کښې.

قوله: ﴿ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- أَنْ يُتَنَفَّسَ فِي الْإِنَاءِ أَوْ يُنْفَخَ فِيهِ ﴾

د نفخ فی الشراب نه د نهی حدیث نزدې هم تیر شوې دې، دا احادیث خو واضح دی چه د هغې نه معلومېږي چه دا دواړه ادبونه دوه مستقل او ځانله ځانله دیني یعنی یو خو په یو ساه باندې د ځکلو نه منع، خو د بعض روایاتو الفاظ لږ گران دی تاویل ته محتاج دی لکه چه په یو روایت کښې دی کوم چه اکثر کتابونو د صحاح کښې دې چه د هغې الفاظ دا دی ﴿ ان رسول الله صلی الله علیه و آله کان يتنفس في الإناء ثلاثا ﴾ په دې حدیث سره هم مقصود د راوی تعدد د تنفس بیانول مقصود دې چه رسول الله صلی الله علیه و آله به په درې ساه گانو باندې اوبه ځکلي او د اوبو ځکلو ترمینځه به ئې ساه اخستله، دا مطلب نه دې چه په لوبسي کښې دننه به ئې ساه اخستله گڼي د نورو احادیثو خلاف به شی، په دې وجه حافظ منذری رحمته الله علیه د دې دواړو احادیثو د ذکر کولو نه پس فرمائی: ﴿ والجمع بينهما ظاهر ﴾

[۳۷۲۹] (۲) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ مُعْمِرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَسْرِ بْنِ سُلَيْمٍ، قَالَ: "جَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَبِي قَتْلَبٍ عَلَيْهِ، فَقَدَّمَ لَيْلِيهِ طَعَامًا، فَذَكَرَ حَيْسًا أَتَاهُ بِهِ، ثُمَّ أَتَاهُ بِشَرَابٍ، فَشَرِبَ قَنَازِلَ مَنْ عَلَى يَمِينِهِ، وَأَكَلَ تَمْرًا، فَجَعَلَ يُلْقِي النَّوَى عَلَى ظَهْرِ أَصْبَعِيهِ السَّبَابَةِ وَالْوُسْطَى، فَلَمَّا قَامَ قَامَ أَبِي فَأَخَذَ بِلِجَامِ دَابَّتِهِ، فَقَالَ: ادْعُ اللَّهَ لِي، فَقَالَ: اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيمَا رَزَقْتَهُمْ، وَاعْفُ عَنْهُمْ وَارْحَمَهُمْ".

د عبد الله بن بسر سلیمي نه روایت دې فرمائی چې نبی علیه السلام زما د پلار خواته تشریف راوړو اود هغه میلمه شو زما پلار ورته خوراک پیش کرو راوی وائی چه حلوائی ورته پیش کړه نبی صلی الله علیه و آله اوخوړله اوبیا ئې ورته اوبه راوړل هغه ئې هم وشکلي او د ځان نه بنی طف والا کس ته ئې ورکړي اوبیا ئې کجوروي اوخوړلې اود کجورو زړي به ئې دگوتو په شاگانو باندې غورځول، کله چه دتلو دپاره پاڅیدو نو زما پلار هم پاڅیدو اود نبی صلی الله علیه و آله د سورلي واگې ئې ونيولي او عرض ئې وکړو اې دالله رسوله زما دپاره دالله تعالی نه دعا وغواړه، نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل اې الله دوی ته برکت ورکړي په هغه خیز کښې کوم چه تادوی ته ورکړي دې او بخښنه وکړي دوی ته اورحم وکړي په دوی باندې.

۱: سنن الترمذي / الأثرية ۱۵ (۱۸۸۸)، سنن ابن ماجه / الأثرية ۲۳ (۳۴۲۹، ۳۴۳۰)، (تحفة الأشراف: ۶۱۴۹)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۲۲۰/۱، ۳۰۹، ۳۵۷)، سنن الدارمي / الأثرية ۲۷ (۲۱۸۰) (صحيح)

۲: صحيح مسلم / الأثرية ۲۲ (۲۰۴۲)، سنن الترمذي / الدعوات ۱۱۸ (۳۵۷۶)، (تحفة الأشراف: ۵۲۰۵)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱۸۷/۴، ۱۹۰)، سنن الدارمي / الأطعمة ۲ (۲۰۶۵) (صحيح)



## شرح الحديث :

قوله: « عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بُسْرِ - قَالَ جَاءَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - إِلَى أَبِي فَنْزَلٍ عَلَيْهِ فَقَدَّمَ إِلَيْهِ طَعَامًا الْخ » عبدالله بن بسر رضي الله عنه فرمائی چه یو کورت رسول الله ﷺ زما پلار ته تشریف راوړلو، زما والد صاحب د هغوی دپاره خوراک راوړلو «حیس» یعنی داسې خوراک کوم چه د کهجورو پښیر او کچو نه جوړیږي د دې نه پس ئې ورله د څکلو دپاره اوبه راوړلې چه رسول الله ﷺ او څکلي او باقی ئې ښی طرف والا ته ورکړې، د دې نه پس ئې کهجورې او خورلې، وړاندې په روایت کښې دی « فَجَعَلَ يُلْقِي النَّوَى عَلَى ظَهْرِ أَصْبَعِيهِ السَّبَابَةِ وَالْوُسْطَى » یعنی د کهجورو د خوارک په وخت باندې به ئې د هغې هډوکي د دوه گوتو سبابه او وسطی په شا باندې کیخودل، یعنی هډوکي به ئې په هغه لوبښی کښې نه اچول په کوم کښې چه کهجورې کیخودلې شوې وې چه هډوکي د کهجورو سره گډوډ نه شی چه د ادب خلاف ده، بیا دا چه د هغه هډوکو سره به ئې څه کول؟ نو جواب دا دی چه غورځول به ئې، یعنی اول ئې د لاس په شا کیخودل او بیا ئې او غورځول، یعنی رسول الله ﷺ هغه د کهجورو په پلیټ کښې څه ایخودل چه د لاس په تلی کښې ئې هم نه کیخودل په د کوم طرف نه چه خوراک کولې شی چه د ډیر نظافت خبره ده. کذا فی البذل عن فتح الودود بتوضیح.

د دې روایت الفاظ په کتب حدیث کښې مختلف دی، د ترمذی په روایت کښې دی (په کتاب الدعوات کښې) « يلقى النوى باصبعه » او په مشکوة کښې په روایت د مسلم « يلقى النوى بين اصبعيه » دې او په یو روایت کښې « فجعل يلقى النوى على ظهر اصبعه » څنگه چه دلته په ابوداؤد کښې دی، هم په دې وجه د دې مختلفو روایتونو د وجې نه په الکوکب الدرۍ ۲۰۷/۲ کښې د دې جملې په شرح کښې لیکلی دی: « ای کان یجمع الاصبعین فیضع من فیہ النواة علی ظهرهما فیفتح ما بین الاصبعین حتی یسقط النوى من بینهما علی الارض » یعنی اول به ئې دوه گوتې یو ځانې کړې او د هغې په شا باندې به ئې هډوکي کیخودل او بیا به ئې هغه گوتې پرانستلې چه په هغې سره به هغه هډوکي لاندې پریوتل، په دې صورت کښې « بین الاصبعین » او « علی ظهر الاصبعین » دواړه خبرې اوموندلې شوې. فلله در الشیخ رحمته الله ..... په حدیث الباب کښې دا هم ذکر دی چه رسول الله ﷺ هغه صحابی رضي الله عنه سره د خوراک کولو نه پس چه کله د واپسې اراده او فرمائیلو نو هغوی د رسول الله ﷺ نه د دعاء درخواست او کړو نو رسول الله ﷺ د هغوی دپاره دا دعاء اوکړه « اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيمَا رَزَقْتَهُمْ وَاعْفُزْ لَهُمْ وَارْحَمَهُمْ » چه ډیره مختصر او جامع دعا ده، مونږ او تاسو لره هم په دې باندې عمل کول پکار دی چه د چاکره خوراک او کړئ نو د هغوی دپاره داسې دعا کوئ. ایا د رسول الله ﷺ عادت مبارک د خوراک سره د اوبو څکلو وو؟ :

په دې روایت کښې « فقدم اليه طعاما » نه پس دی « ثم اتاه بشارب فشرب » په دې باندې حضرت شیخ په حاشیه د بذل کښې فرمائی « هذا نص في شربه عليه الصلوة والسلام ويخالفه ما قال ابن القيم : لم يكن من هديه ان يشرب على طعامه فيفسده اه » یعنی د دې حدیث نه د

خوراک سره سره د اوبو څکلو پته لگي گویا رسول الله ﷺ به د خوراک سره سره اوبه هم څکلي (یا کم از کم داسې اووایه چه هغه وخت کښې رسول الله ﷺ داسې اوکړل) خو حافظ ابن القيم رحمه الله په زاد المعاد کښې د دې خلاف لیکلي دي هغه دا چه د رسول الله ﷺ معمول د خوراک سره د اوبو څکلو نه وو ځکه چه دا ضرري څیز دې هغوی په زاد المعاد کښې صرف هم دومره لیکلي دي خود رسول الله ﷺ د دې معمول په ثبوت یا تائید کښې ئې د یو حدیث یا روایت حواله نه ده ورکړې بلکه صرف د دې په تائید کښې ئې د شاعر قول لیکلي دي ( )  
 په دې کښې د قدیم طبیبانو د رائي هم د معلومولو ضرورت دې د هغوی رائي په دې باره کښې څه ده مشهوره هم دا ده چه هغوی په دې کښې د تاخیر شرب قائل دي او دا چه هغه د طعام په هضم کښې مفید دې، زما والد صاحب حکیم محمد ایوب مرحوم مغفور باقاعده طبیب حاذق وو د هغوی معمول خود خوراک سره د اوبو څکلو وو دغه شان زمونږ د حضرت شیخ هم د دې حدیث په ظاهر کښې د ترجمه الباب سره هیڅ مناسبت نشته خو ډیر په مشکل سره، مثلاً چه داسې اوئيلي شی (فاتاه بشراب فشرَب) نه مراد دا دې چه رسول الله ﷺ د خپل عادت شریفه مطابق اوبه او څکلي او د هغوی عادت شریفه په څکلو کښې عدم النفخ فی الشراب وو. والحدیث اخرجه مسلم والترمذی والنسائي، قاله المنذری

## باب مَا يَقُولُ إِذَا شَرِبَ اللَّبَنَ

د پښتو څکلو په وخت کښې دعا بیا نیچ

[۳۷۳۰] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ، ح وَحَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ يَعْنِي ابْنَ سَلَمَةَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ حَرْمَلَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "كُنْتُ فِي بَيْتِ مَيْمُونَةَ، فَدَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَعَهُ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ، فَجَاءُوا بِضَبْنَيْنِ مَشُونَيْنِ عَلَى ثَمَامَتَيْنِ، فَتَبَرَّقَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ خَالِدٌ: إِخَالُكَ تَقْدَرُهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: أَجَلٌ، ثُمَّ أَتَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِلَبَنٍ فَشَرِبَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا أَكَلْتُمْ أَحَدَكُمْ طَعَامًا فَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَأَطْعِمْنَا خَيْرًا مِنْهُ، وَإِذَا سَقَيْتُمْ لَبَنًا فَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَزِدْنَا مِنْهُ فَإِنَّهُ لَيْسَ شَيْءٌ عَزِيزٌ مِنْ الطَّعَامِ وَالشَّرَابِ إِلَّا اللَّبَنُ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا الْفُطْرُ مُسَدَّدٌ.

د عبد الله بن عباس رضی الله عنه روایت دې فرمائی چه زه دام الحرمین میرنه ﷺ په کور کښې موجود وم چه نبی ﷺ دخالد بن ولید سره راغې او په دوه لرگو کښې ورته وریته کړي شوي هوسن راوړلي شوه نبی ﷺ چه ولیدله نوتوئي کړل خالد ووئیل داسې معلومیږي چه تا ددې نه نفرت وکړو؟ نبی ﷺ او فرمائیل هو، بیا ورته شوده راوړلي شول نودهغې نه ئې او څکل او وئې فرمائیل: کله چه په تاسو کښې یوکس خوراک وکړي نو هغه لره پکار دي چه

(۱) هغوی لیکي قال الشاعر:

لا تكن عند اكل سخن وبرد

فاذا ما اجتنبت ذلك حقا

ودخول الحمام تشرب بماء

لم تخف ما حبيت في الجوف داء

(۱) سنن الترمذی الدعوات ۵۵ (۳۴۵۵)، (تحفة الأشراف: ۶۲۹۸)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه/الأطعمة ۳۵ (۳۳۲۲)،

مسند احمد (۲۲۵/۱)، سنن النسائي/اليوم والليلة (۲۸۶) (حسن)



دا دعا او وائي: «اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَأَطْعِمْنَا خَيْرًا مِنْهُ». وَإِذَا قِيَّ بِأَقْلٍ «اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَزِدْنَا مِنْهُ» بَيَانِي عَلَيْهِ السَّلَامُ اَوْ فرمائیل په نعمتونو کښې بل داسې نعمت نشته چه د خوراک او خښاک دواړو دپاره کار ورکړی. امام ابو داؤد فرمائی چه داد مسدد د روایت الفاظ دي.

قوله: «عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ كُنْتُ فِي بَيْتٍ مَيْمُونَةٍ فَدَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- وَمَعَهُ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ فَجَاءُوا بِضَبَّيْنِ مَشْوِيَيْنِ عَلَى ثِمَامَتَيْنِ الْخ»

### شرح الحديث:

ابن عباس رضي الله عنه فرمائی چه زه د خپلې ترور ميموني رضي الله عنه په کور کښې ووم نو رسول الله صلى الله عليه وسلم هم هلته تشریف راوړلو هغوی سره خالد بن الوليد رضي الله عنه هم وو پس رسول الله صلى الله عليه وسلم د دوو ضب يعني د خادمي (غوبڼه چه هغه وريته کړې شوې وه، په دوه لرگو باندې کيخودلو سره راوړلې شوه، رسول الله صلى الله عليه وسلم هغې ته کتلو سره د نفرت د اظهار په طور لارې مبارک تهو کړې. په دې باندې خالد رضي الله عنه اوفرمائیل چه تاسو جوړې دا ناخوبڼه گنړۍ؟ هغوی اوفرمائیل او.

### يو اشکال او د هغې جواب:

په بذل کښې د حضرت گنگوهي رضي الله عنه د تقرير نه نقل کړې شوې دي چه کله د يو انسان مخې ته د خوراک خکاګ يو داسې خيز راوړلې شي د کوم نه چه د هغه نفرت وي نو د هغه کرکه پيدا کيږي او د هغې په وجه ئې خوله کښې اوبه راځي، کومې چه هغه تهو کي، هم دغه شان دلته هم شوې دي چه غير اختياري طور د رسول الله صلى الله عليه وسلم په خوله مبارکه کښې د کراهت د وجې نه اوبه شان راغلې. اوس ښکاره ده چه د هغې تيږول خود طبع سليم دپاره گرانه ده نو هغه به ضرور تهو کلي شي. دا خبره نه ده چه رسول الله صلى الله عليه وسلم قصداً د اظهار کراهت دپاره تهو کړې، چه د هغه حديث خلاف شي «كَانَ لَا يَذُمُ ذَوْاقًا وَلَا يَمْدَحُهُ» كما في التمهائل چه رسول الله صلى الله عليه وسلم به د خوراک خکاګ په خيز کښې نه عيب راويستلو او نه به ئې د هغې زيات تعريف کولو. اه او وړاندې په کتاب الاطعمه کښې حديث راوان دې «مَا عَابَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- طَعَامًا قَطُّ، اِنْ اَشْتَهَاهُ اَكَلَهُ وَاِنْ كَرِهَهُ تَرَكَهُ».

د ضب په باره کښې د ائمه اختلاف دې د ائمه ثلاث په نزد بغيرد کراهت نه جائز دې او د احنافو په نزد مکروه دې په کتاب الاطعمه کښې «بَابُ فِي أَكْلِ الضَّبِّ» مستقل باب راوان دې. وړاندې په حديث کښې دي چه رسول الله صلى الله عليه وسلم اوفرمائیل چه کله سرې د خوراک يو خيز خوري نو هغه له پکار دي چه داسې وائي: «اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَأَطْعِمْنَا خَيْرًا مِنْهُ» او کله چه پئ خکي نو داسې دې وائي «اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَزِدْنَا مِنْهُ» او «وَأَطْعِمْنَا خَيْرًا مِنْهُ» دې نه وائي خکه چه د خوراک خکاګ په خيزونو کښې د ټولو نه غوره پئ دي چه هغه د طعام او شراب دواړو کار کوي. په بذل کښې ليکلي دي چه گويا پئ هم په دې حيثيت سره فوقيت

(۱) دا د سمساره په شکل يو خنور دې چه په دشتو او صحراگانو کښې په زمکه کښې اوسيږي، د سمساره نه وړوکې وي او د کړيوږي يعني چرمخکۍ نه غټ وي، حکيمان ددې غوږي په دوايانو کښې استعمالوي. (مترجم).

لری په غوښه باندې، اگر چه د غوښې دپاره نورې خوبیانې دی چه د هغې په وجه هغې ته سید الطعام وائی. والحديث أخرجه الترمذی وقال حسن، قاله المنذری.

### باب فی ایگاء الآنیة

د لوښود سرونو د پتولویان

یعنی د لوښو خوله بنده ساتل او که مشک وی نو د هغې خوله په مزی وغیره باندې تړل او پرانستلې نه پریخودل خصوصاً د شپې په وخت.

[۳۷۳۱] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "أَغْلِقْ بَابَكَ وَادْكُرْ اسْمَ اللَّهِ، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لَا يَفْتَحُ بَابًا مَغْلَقًا، وَأَطْفِ مِصْبَاحَكَ وَادْكُرْ اسْمَ اللَّهِ، وَخَمِّرْ إِنْاءَكَ وَلَوْ يُعَوِّدُ نَعْرُضَهُ عَلَيْهِ وَادْكُرْ اسْمَ اللَّهِ، وَأَوْكِ سِقَاءَكَ وَادْكُرْ اسْمَ اللَّهِ."

د جابر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه ئي کریم صلی الله علیه و آله فرمائیلي دي: خپله دروازه بنده ساته اود الله نوم یاد کړه، یقیناً شیطان بندي دروازي نشي بیرته کولې او خپله ډیوه هم بله مه پرېږده اود الله نوم اخله اودلو خوسرونه پتوه اگر که په لرگي وي اوداوبو په لوخي باندې سرايخودلي ساته او د الله نوم یادوه.

په حدیث الباب کښې دی چه د شپې دروازه بسم الله لوستلو سره بندوي، ځکه چه شیطان بنده دروازه نه شی پرانستلې، او هم دغه شان بسم الله لوستلو سره ډیوه مړه کوي، او هم دغه شان د الله پاک نوم اخستلو سره لوښې پتوي اگر چه د یو لرگي په ذریعه وی کوم چه تاسو په دې لوښې باندې په پلن والی کیږدئ او هم دغه شان د مشک خوله هم تړئ دغه شان په روستو روایت کښې هم راروان دی چه شیطان ته د دې خبرې طاقت نه دي ورکړې شوي چه هغه بنده دروازه پرانستلې شی یعنی کومه چه په بسم الله وئیلو سره بنده کړې شوي وی، او هم دغه شان نه هغه غوټه پرانستلې شی او نه پټ کړې لوښې. او د ډیوي د مړې کولو حکمت رسول الله صلی الله علیه و آله دا بیان کړو چه ډیر کرته فویسقه یعنی مړه د خلقو په کور کښې اور لگوي یعنی د شپې که بله ډیوه پریخودلې شی نو کیدې شی چه مړه د بلې ډیوي باتي د تیلو په لالچ کښې راښکلو سره یو ځاني ته یوسي او بیا د هغې نه اور اولگي.

[۳۷۳۲] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بِهَذَا الْخَبَرِ وَلَيْسَ بِتَمَامِهِ، قَالَ: فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لَا يَفْتَحُ بَابًا مَغْلَقًا، وَلَا يَحُلُّ وَكَاءً، وَلَا يَكْشِفُ إِنْاءًا، وَإِنَّ الْفَوَيْسِقَةَ تُضْرَمُ عَلَى النَّاسِ بَيْتَهُمْ أَوْ يَوْمَهُمْ.

جابر بن عبد الله رضي الله عنه د نبی صلی الله علیه و آله نه د تیر شوي روایت په شان روایت نقل کړي دي او پوره په پوره ئې نه دی بیان کړي مگر دا اضافه ئې پکښې کړې ده چه شیطان بنده دروازه نه بیرته کوي اونه بند مشک بیرته کوي اونه بند لوخي بیرته کوي (اود چراغ بل پاتې کیدو په وجه) منبر کار دختر کورونه سوزوي.

(۱): صحيح البخاري/الأشربة ۲۲ (۵۶۲۳)، صحيح مسلم/الأشربة ۱۲ (۲۰۱۲)، (تحفة الأشراف: ۲۴۴۶)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/الأدب ۷۴ (۲۸۵۷)، سنن ابن ماجه/الأشربة ۱۶ (۳۴۱۰)، والأدب ۴۶ (۳۷۷۱)، مسند احمد (۳۵۵/۳) (صحيح)  
(۲): صحيح مسلم/الأشربة ۱۲ (۲۰۱۲)، سنن الترمذي/الأطعمة ۱۵ (۱۸۱۲)، (تحفة الأشراف: ۲۹۳۴) (صحيح)



په دې حديث كښې دا راغلي دي چه بنده دروازه شيطان نه شي پرانستلې، خو سوال دا دې چه پورته صحن چه آزاد دې كوم چه بنديدې نشي، په هغه ځانې خور اتلې شي د دې جواب دا دې چه په جامع الصغير كښې په روايت د امام احمد رحمه الله دا زيات دې ﴿انهم لم يؤذن لهم في التسور﴾ چه شيطانانو ته په ديوال باندې راوختلو سره د راتلو اجازت نشته، كه راځي نو صرف په دروازه به راځي.

حديث جابر رضي الله عنه الاول اخرج به البخاري ومسلم، والنسائي، وحديث الثاني اخرج به مسلم والترمذي وابن ماجه، قاله المنذري.

او هم په دې حديث د جابر رضي الله عنه په دريم طريق كښې دا زيات راروان دې چه خپل واره ماشومان مابښام كښې سنبهال ساتي بهر ته ئې مه پريږدي، ځكه چه د مابښام په وخت د جناتو انتشار وي هغوي شرارت كوي او اوچتول كوي.

[۳۷۳۳] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، وَفُضَيْلُ بْنُ عَبْدِ الوَهَّابِ السَّكْرِيُّ، قَالَا: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ كَثِيرِ بْنِ شَطِيرٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، رَفَعَهُ، قَالَ: "وَكَفِّتُوا صِبْيَانَكُمْ عِنْدَ الْعِشَاءِ"، وَقَالَ مُسَدَّدٌ: عِنْدَ الْمَسَاءِ فَإِنَّ لِلْجِنِّ اتِّشَارًا وَخُطْفَةً.

د جابر رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه نبی کریم صلی الله علیه و آله فرمائي دي: د ماخوستن په وخت كښې خپل ماشومان دخپل ځان سره كينوي اود مسدد په روايت كښې دعشاء په ځانې باندې لفظ لفظ منقول دي (يعني د مابښام په وخت كښې ماشومان بهر گرځيدو ته مه پريږدي ځكه چه په دې وخت كښې شيطانان راخوريږي).

د دې خبرې اهمام مونږ په خپل وړوكوالی كښې كتلي دي چه د كور زړو زنانو به د مابښامې بهر ته دوتلو نه منع كوله. او د دې نه روستو روايت كښې دي چه يو كرت رسول الله صلی الله علیه و آله اوبه طلب كړې نو يو سړي په منډه منډه راغلو او په يو پياله كښې ئې نبيذ راوړل، دې سړي دا پياله هم داسې پرانستلې راوړې وه. رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائيل: ﴿الا خمرته ولو ان تعرض عليه عودا﴾ چه تا دا پته ولي نه كړه اكر كه يو لرگي دې پرې كيخودلې وې.

والحديث الثالث سكت عنه المنذري، واخرجه البخاري في مواضع، والترمذي، ومسلم، وابن ماجه، قاله الشيخ محمد عوامه، والحديث الرابع اخرج به البخاري ومسلم بنحوه من حديث ابی صالح والی سفیان طلحة بن نافع عن جابر، واخرجه مسلم ايضا من حديث ابی صالح وحده، قاله المنذري.

[۳۷۳۴] (۲) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: "كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَاسْتَسْقَى، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: أَلَا تَسْقِيكَ نَبِيذًا؟ قَالَ: بَلَى، قَالَ: فَخَرَجَ الرَّجُلُ يَشْتَدُّ، فَجَاءَ بِقَدَرٍ فِيهِ نَبِيذٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلَا خَمْرَتُهُ وَلَوْ أَنَّ تَعْرِضَ عَلَيْهِ عُودًا"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَالَ الْأَضْمَعِيُّ: تَعْرِضُهُ عَلَيْهِ.

(۱): صحيح البخاري/ بدء الخلق ۱۶ (۳۳۱۶)، الاستذنان ۴۹ (۶۲۹۵)، سنن الترمذي/ الأدب ۷۴ (۲۸۵۷)، تحفة الأشراف:

(۲۴۷۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۸۸۳) (صحيح)

(۲): صحيح البخاري/ الأشراف ۱۲ (۵۶۰۶)، صحيح مسلم/ الأشراف ۱۲ (۲۰۱۱)، (تحفة الأشراف: ۲۲۳۳) (صحيح)

د جابر رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه مونږ د نبی کریم صلی الله علیه وسلم سره موجود ووجه اوبه ئې اوغوبستلي نوپه خلقو کښې یوکس ووئیل آیا نبیذ درته رانور و؟ نبی صلی الله علیه وسلم او فرمائیل ولي نه راوی وائی چه بیادغه کس روان شوپه تیزی سره او په یولوخي کښې ئې نبیذ راوړل، نبی صلی الله علیه وسلم او فرمائیل سردي ورله ولي نه پتولوکم ازکم بولرگي خوبه دي ورباندې ایخودلي وو. امام بوداود فرمائی چه د اصمعي دا الفاظ بیان کړې دې: تعرضه عليه.

[۳۷۳۵] (۱) حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ شَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ "يُسْتَعَذَّبُ لَهُ الْمَاءُ مِنْ بُيُوتِ السُّقْيَا"، قَالَ قُتَيْبَةُ: عَيْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ الْمَدِينَةِ يَوْمَانِ.

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روايت دې فرمائی چه د نبی صلی الله علیه وسلم دپاره به دسقيانوي خوږي چيني نه اوبه راوړلي شوي، قتيبه وئيلي دی چه دا يوه چينه وه چه د مدیني نه ددوه ورځوپه منزل لرې وه.

﴿عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - كَانَ يُسْتَعَذَّبُ لَهُ الْمَاءُ مِنْ بُيُوتِ السُّقْيَا﴾ د دې حديث حواله او مضمون هم په باب الكرع کښې تير شوې دې.

### آخر كتاب الاثرية

وهو آخر ما أردت إيراده في هذا الجزء وهو الجزء الخامس من الدر المنضود، وقد شرعت فيه العشرة الأخيرة من شهر رمضان ١٤٢٣ هـ الذي هو شهر الصبر والغفران الذي أنزل فيه القرآن، في المدينة المنورة (٢) على صاحبها ألف الف تحية وسلام، وقد كنت نازلاً في العوالي في بيت حبيب الله قربان على المظاهري، وهو الذي أعانني في جمع المواد والإملاء والتحرير حسب إعانتة في الجزء الرابع فجزاه الله تعالى وسائر من أعانني في هذا التأليف أحسن الجزاء وأنا أرجو من لطف الله تعالى وكرمه أن يتم هذا الشرح في ستة أجزاء فكانه بقي جزء واحد، وإسأل الله سبحانه وتعالى السداد والتوفيق لما يحب ويرضى وأن يكمل هذا الشرح ويجعله خالصاً لوجهه الكريم ولا حول ولا قوة إلا بالله العلي العظيم وصلى الله تعالى على خير خلقه سيدنا ومولانا محمد وآله وصحبه أجمعين. آمين.

محمد عاقل عفا الله عنه

(١) تفرد به أبوداود، (تحفة الأشراف: ١٧٠٣٨)، وقد أخرجه: مسند أحمد (١٠٠/٨، ١٠٨) (صحيح)  
(٢) إلا ثلاثة أحاديث من الباب الأخير فأنى كتبته بعد الرجوع إلى الهند في سهارنفور



## كِتَابُ الْأَطْعِمَةِ

### دخوراک د څیزونو د احکامو بیان

### بَابُ مَا جَاءَ فِي إِبَابَةِ الدَّعْوَةِ

### د دعوت قبلولو بیان

[۳۷۳۶] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "إِذَا دُعِيَ أَحَدُكُمْ إِلَى الْوَلِيمَةِ فَلْيَأْتِهَا".

د ابن عمر رضی الله تعالی عنهما نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلى دى كله چه ستاسو يو كس ته دوليمي دعوت وركړي شى نو پكارده چه ورته ورشى.

[۳۷۳۷] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَعْنَاهُ: زَادَ: فَإِنْ كَانَ مُفْطِرًا فَلْيَطْعَمْ، وَإِنْ كَانَ صَائِمًا فَلْيَدْعُ.

د ابن عمر رضی الله تعالی عنهما نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلى دى : باقى د تير شوى روایت په شان مگر په دې كښې دا زيادت دي چه كه چرې غير روژه دار وي نو خوراك دي و كړي او كه چرې روژه دار وي نو خوراك كول دي پريږدي.

قوله: ﴿إِذَا دُعِيَ أَحَدُكُمْ إِلَى الْوَلِيمَةِ فَلْيَأْتِهَا﴾ او هم د دې حديث په دويم طريق كښې دا دى ﴿فَإِنْ كَانَ مُفْطِرًا فَلْيَطْعَمْ وَإِنْ كَانَ صَائِمًا فَلْيَدْعُ﴾ چه كله په تاسو كښې څوك په وليمه كښې راطلب كړې شى نو هلته دې لار شى، پس كه روژه ئې نه وى نو خوراك دې او كړى، او كه روژه ئې وى نو د دعوت وركونكى دپاره دې دعا او كړى. په دې صورت كښې به ﴿فليدع﴾ د امر صيغه وى د دعا يدعو نه، او دا هم احتمال دې چه دا لفظ ﴿فليدع﴾ د ودع يدع نه وى يعنى خوارك دې پريږدى.

د كتاب الصلوة په شروع كښې تير شوې دى چه په يو روایت كښې داسې دى ﴿وان كان صائما فليصل﴾ او په يو بل روایت كښې دى ﴿فليجب﴾ او په بل روایت كښې دى ﴿وان كان صائما فليقل انى صائم﴾ په دې دواړو روایتونو كښې په ظاهره تعارض دې په دې باندې كلام په كتاب الصوم كښې تير شوې دى، د هغې طرف ته دې رجوع او كړې شى.

**د وليمي متعلق درې فوائد:**

په دې حديث كښې دوه مسئلې دى يو حكم د وليمي، دويم دعوت قبلول د وليمي، دريم څيز د وليمي تعريف او نور څيزونه د ميلمستوب او د هغې نومونه په كتاب النكاح كښې په ﴿باب قلة المهر﴾ كښې د ﴿اولم ولو بشاة الحديث﴾ د لاندې د وليمي حكم تير شوې دې چه اهل الظواهر د هغې د وجوب قائل دى او هم دا يو روایت د ائمه ثلاثه نه دې خو په

۱: صحيح البخاري/النكاح ۷۱ (۵۱۷۳)، صحيح مسلم/النكاح ۱۶ (۱۴۲۹)، (تحفة الأشراف: ۸۳۳۹، ۷۹۴۹)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه/النكاح ۲۵ (۱۹۱۴)، موطا امام مالك/النكاح ۲۱ (۴۹)، مسند احمد (۲۰/۲)، سنن الدارمي/الأطعمة ۴۰ (۲۱۲۷)، النكاح ۲۳ (۲۲۵۱) (صحيح)

۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۷۸۷۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۷/۲) (صحيح)

مشهور قول کښي ولیمه د ائمه اربعه په نزد سنت ده وړاندې یو مستقل باب راروان دې  
 «استحباب الولیمة» او د اجابت ولیمه په باره کښي روایات مختلف دی، قیل مستحبه، وقیل  
 واجبه وقیل فرض کفایه.<sup>(۱)</sup>

د اجابت دعوت په باره کښي نور اختلاف په وړاندې حدیث کښي هم راروان دې خو وجوب  
 د اجابت د دعوت په اعتبار سره دې د خوراک کولو په اعتبار سره نه دې هغه بیا هم  
 مستحب دې واجب نه دې. پس وړاندې په روایت کښي راځي «من دعی فلیجب فان شاء  
 طعم وان شاء ترک» دریم څیز یعنی د ولیمې تعریف: ولیمه د هغه خوراک نوم دې چه د  
 عرس یعنی د واده په موقع باندې تیار کړې شی، دا د ولم نه اخستلې شوې دې چه د هغې  
 معنی جمع ده دا خوراک چونکه د زوجینو د اجتماع یعنی د رخصت کیدو نه پس وی هم په  
 دې وجه دې ته ولیمه وائی.<sup>(۲)</sup>

### (د ضیافت اقسام)

علماء کرامو لیکلی دی چه د ضیافت اته قسمونه دی. ۱: الولیمة للعرس، ۲: والخرس بضم  
 الخاء المعجمة ويقال بالصاد المهملة ایضا للولادة یعنی د ماشوم د پیدا کیدو په موقع باندې  
 چه کوم دعوت اوکړې شی، ۳: والاعذار بکسر الهمزة والعین المهملة والذال المعجمة للختان د  
 ماشوم د سنت په وخت چه کوم دعوت کولې شی. ۴: والوکیره للبناء یعنی د نوې کور د تعمیر  
 په وخت چه کوم دعوت اوکړې شی، ۵: والنقیعة لقدم المسافر مأخوذة من النقع وهو الغبار  
 یعنی هغه دعوت چه سړې ئې د سفر نه په خیریت سره واپس کیدو باندې کوی د خپل طرف  
 نه، یا د بل د طرف نه د هغه دپاره اوکړې شی، وړاندې د دې مستقل باب راروان دې،  
 ۶: والعقیقة يوم سابع الولادة، ۷: والوضیمة بفتح الواو وكسر الضاد المعجمة..... الطعام عند  
 المصیبة.... خو دا قسم ضیافت په اسلام کښي جائز نه دې، ۸: والمادبة بضم الدال وفتحها  
 مطلق هغه ضیافت چه بغیر د څه خاص سبب نه اوکړې شی. د دې نه پس حافظ فرمائی چه  
 په دې مشهورو قسمونو کښي یو قسم بل هم باقی پاتې شو یعنی ۹: حذاق بکسر المهملة  
 وتخفيف الدال المعجمة الطعام الذي يتخذ عند حذاق الصبی.... یعنی هغه خوراک او دعوت  
 کوم چه د یو ماشوم په حذاقت باندې یعنی د هغه په عقل مند کیدو باندې اوکړې شی او دا  
 هم وئیلې شوی دی چه دا هغه دعوت دې کوم چه د ماشوم په ختم القرآن باندې اوکړې شی  
 یا د هغه د څه صناعت په تکمیل یا کامیابی باندې اوکړې شی. اه من تحفة الاخوذی ۱۲۰/۲.

<sup>(۱)</sup> وترجم البخاري باب حق اجابة الولیمة قال الحافظ یشير الي وجوب الاجابة وقد نقل ابن عبدالبر ثم عیاض ثم النووي الاتفاق  
 علي القول بوجوب الاجابة لولیمة العرس، وفيه نظر، نعم المشهور من اقوال العلماء الوجوب، وصرح جمهور الشافعية والحنابلة  
 بانها فرض عین، ونص عليه مالك، وعن بعض الشافعية والحنابلة انها مستحبة، وذكر اللخمي من المالكية انه المذهب، وكلام  
 صاحب الهداية يقتضي الوجوب مع تصريحه بانها سنة، فكأنه اراد انها وجبت بالسنة وليست فرضا كما عرف من قاعدتهم وعن  
 بعض الشافعية والحنابلة هي فرض كفاية اهمن الابواب والتراجم ۲۴۰/۵

<sup>(۲)</sup> وفي البذل: ويجوز ان يولم بعد النكاح او بعد الرخصة او بعد ان يبني بها والثالث هو الاولی



[۳۷۳۸] (۱) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا دَعَا أَحَدُكُمْ أَخَاهُ فَلْيُجِبْ عُرْسًا كَانَ أَوْ نَحْوَهُ".

د ابن عمر رضی الله تعالی عنهما نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی کله چه په تاسو کښې ستاسو یو مسلمان ورور چاته دعوت ورکړي نو هغه دي قبول کړي برابره خبره ده چه دولیمي دعوت وي یا دولیبي په شان کوم بل یو تقریب وي.

[۳۷۳۹] (۲) حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُصَفَّى، حَدَّثَنَا بَقِيَّةُ، حَدَّثَنَا الزُّبَيْدِيُّ، عَنْ نَافِعٍ بِإِسْنَادِ أَيُّوبَ وَمَعْنَاهُ.

نافع د ایوب په سند سره د ایوب د روایت په شان روایت بیان کړې دې  
﴿إِذَا دَعَا أَحَدُكُمْ أَخَاهُ فَلْيُجِبْ عُرْسًا كَانَ أَوْ نَحْوَهُ﴾

### د اجابت دعوت حکم شرعی:

د دې حدیث نه په ظاهر کښې مطلق د دعوت اجابت وجوب په فهم کښې راځي، هم دغه شان د دې نه روستو روایت کښې ﴿من دعى فلم يجب فقد عصى الله ورسوله﴾ خو امام خطابی رحمه الله فرمائی چه دا احادیث به هم په ولیمه باندې محمول کولې شی، د نورو دعوتونو دا حال نه دې، د ولیمې د خصوصیت وجه لامر النبي ﷺ بها ولما فی اتیان الولیمة من اعلان النکاح... امام نووی رحمه الله د قاضی عیاض رحمه الله نه د ولیمې نه علاوه د نورو دعوتونو په باره کښې د جمهورو مسلک عدم وجوب نقل کړې دې، په خلاف د اهل ظاهر او د بعض سلفو چه د هغوی په نزد د هر دعوت اجابت واجب دې. (عون)

حدیث ابن عمر رضی الله عنهما الاول اخرجہ البخاری ومسلم والنسائی، وحدیث الثانی اخرجہ مسلم وابن ماجه وحدیث الثالث اخرجہ مسلم، وحدیث جابر رضی الله عنه اخرجہ مسلم والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى.

[۳۷۴۰] (۳) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ دُعِيَ فَلْيُجِبْ، فَإِنْ شَاءَ طَعِمَ وَإِنْ شَاءَ تَرَكَ".

د جابر بن عبد الله رضی الله عنه روایت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائیلی دی چاته چه دعوت ورکړې شي نو هغه دي قبول کړي دده خوښه ده چه خوراک کوي او که خوراک نه کوي.

[۳۷۴۱] (۴) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا دُرُسْتُ بْنُ زِيَادٍ، عَنْ أَنَانَ بْنِ طَارِقٍ، عَنْ نَافِعٍ، قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ دُعِيَ فَلَمْ يُجِبْ فَقَدْ عَصَى اللَّهَ وَرَسُولَهُ، وَمَنْ دَخَلَ عَلَى غَيْرِ دَعْوَةٍ دَخَلَ سَارِقًا وَخَرَجَ مُغِيرًا"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَنَانَ بْنُ طَارِقٍ مُجْبُولٌ.

د عبد الله بن عمر رضی الله عنه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی چاته چه دعوت ورکړې شي او قبول ئې نکړي نوده د الله او د الله در رسول نافرمانی وکړه، او څوک چه بغیر

۱: صحيح مسلم / النکاح ۱۶ (۱۴۲۹)، (تحفة الأشراف: ۷۵۳۷)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۱۷۲، ۱۰۱، ۱۲۷، ۱۴۶) (صحيح)

۲: صحيح مسلم / النکاح ۱۶ (۱۴۲۹)، (تحفة الأشراف: ۸۴۴۲)

۳: صحيح مسلم / النکاح ۱۶ (۱۴۳۰)، (تحفة الأشراف: ۲۷۴۳)، وقد أخرجہ: سنن ابن ماجه / الصيام ۴۷ (۱۷۵۱)، مسند احمد (۳۹۲/۳) (صحيح)

۴: تقریبه أبو داود، (تحفة الأشراف: ۷۴۶۹) (ضعيف)

بلني يودعوت ته ورشي نو دې يرغل دې چه دغه كورته ور داخل شو او د لوت مار كولو نه پس به را واپس شي، امام ابو داؤد وئيلي دى ابان بن طارق مجهول راوى دې.

د ابن عمر رضي الله عنهما د حديث په يو طريق كښې دا هم دى «ومن دخل على غير دعوة دخل سارقا وخرج مغيرا» په سرقه كښې چونكه د اخفاء معنى ده او بغير د راغونښتلو نه چونكه په پټه باندې داخلېږي په دې وجه هغه ته سارق اوئيلي شو، او د داخليدو نه پس چه كله هغه د ټولو سره خوراك او كړو نو اوس چونكه د هغه پرده ختم شوه ټولو هغه اوليدو په دې وجه هغه ته مغير اوئيلي شو يعنى غاصب، لوت مار كونكي.

د دې نه روستو په حديث د ابو هريره رضي الله عنه كښې هم موقوفا راوان دى كوم چه د مسلم په روايت كښې مرفوعا دى چه رسول الله صلى الله عليه وسلم او فرمائيل: بدترين خوراك د هغه وليمې خوراك دې چه په هغې كښې صرف مالدارو ته دعوت وركړې شي او فقيران پريخودلي شي.

[٣٧٤٢] حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، عَنِ الْأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: "شَرُّ الطَّعَامِ طَعَامُ الْوَلِيمَةِ يَدْعَى لَهَا الْأَغْنِيَاءُ وَيُتْرَكُ الْمَسَاكِينُ، وَمَنْ لَمْ يَأْتِ الدَّعْوَةَ فَقَدْ عَصَى اللَّهَ وَرَسُولَهُ".

اعرج د ابو هريره رضي الله عنه نه روايت كوي فرمائى چه ابو هريره هند به وئيل دهغې وليي طعام په ټولو طعامونو كښې ډير بدترين دې كوي ته چه مالداره خلق رابللى شي او مسكينان پريخودلي شي، او خوك چه دعوت قبول نكړي نوده د الله او در رسول نافرمانې وكړه.

والحديث أخرجه البخاري ومسلم والنسائي وابن ماجه موقوفا ايضا، وأخرجه مسلم من حديث ثابت بن عياض عن أبي هريرة رضي الله عنه مسندا، قاله المنذرى.

### باب فِي اسْتِحْبَابِ الْوَلِيمَةِ عِنْدَ النِّكَاحِ د نكاح په وخت كښې د وليمې كولود استحباب بيان

[٣٧٤٣] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا حَمَادٌ، عَنْ ثَابِتٍ، قَالَ: "ذَكَرْتُ زَوْجَ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ عِنْدَ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، فَقَالَ: مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوْلَمَ عَلَى أَحَدٍ مِنْ نِسَائِهِ مَا أَوْلَمَ عَلَيْهَا أَوْلَمَ بِشَاةٍ".

د حماد بن ثابت نه روايت دى فرمائى چه انس بن مالك په وړاندي د زينب بنت جحش د نكاح ذكر وشو هغه او فرمائيل نبى صلى الله عليه وسلم دازواجو مطهراتو په نكاح داسې وليمه نه ده كړې څنگه چه ئې د زينب په نكاح كښې كړي وه نبى صلى الله عليه وسلم د زينب په نكاح كښې په يوه چيلئ باندې وليمه كړي وه.

قوله: «عن أنس بن مالك فقال ما رأيت رسول الله - صلى الله عليه وسلم - أَوْلَمَ عَلَى أَحَدٍ مِنْ نِسَائِهِ مَا أَوْلَمَ عَلَيْهَا أَوْلَمَ بِشَاةٍ»

يعنى په څومره اهتمام سره چه رسول الله صلى الله عليه وسلم د زينب بنت جحش رضي الله عنها وليمه كړې وه

<sup>(١)</sup>: صحيح البخاري/النكاح ٧٣ (٥١٧٧)، صحيح مسلم/النكاح ١٦ (١٤٣٢)، سنن ابن ماجه/النكاح ٢٥ (١٩١٣)، (٢١١٠)، (تحفة الأشراف: ١٣٩٥٥)، وقد أخرجه: مسند احمد (٢٤٠/٢)، سنن الدارمي/الأطعمة ٢٨ (٢١١٠) (صحيح)

<sup>(٢)</sup>: صحيح البخاري/النكاح ٦٨ (٥١٦٨)، صحيح مسلم/النكاح ١٣ (١٤٢٨)، سنن النسائي/الكبرى ٤ (٦٦٠٢)، سنن ابن ماجه/النكاح ٢٤ (١٩٠٨)، (تحفة الأشراف: ٢٨٧)، وقد أخرجه: مسند احمد (٢٢٧/٣) (صحيح)



داسې ئې د چا په نکاح باندې هم نه وه کړې وړاندې د هغې بیان دې چې رسول الله ﷺ بیزه ذبح کړه وه، او د دې نه روستوروايت کښې دې «اولم علی صفيه بسويق وتمر» چې د صفيه ﷺ په ولیمه کښې ئې په ستوانو او کهجورو سره د ولیمې دعوت اوکړو. په دې تقابل سره د زینب ﷺ د ولیمې فوقیت په فهم کښې راځي.

[۳۷۴۴] (۱) حَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا وَائِلُ بْنُ دَاوُدَ، عَنْ ابْنِهِ بَكْرِ بْنِ وَائِلٍ، عَنْ الزَّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "أَوْلَمَ عَلَى صَفِيَّةَ بِسَوِيقٍ وَتَمْرٍ".

د انس بن مالک ﷺ نه روایت دې فرمائی چې نبی ﷺ چې کله د صفيه ﷺ په نکاح کښې ولیمه کوله نو په ستوانو او کهجورو باندې ئې کړي وه.

حديث الباب الاول اخرجہ البخاری ومسلم والنسائي وابن ماجه بنحوه، والحديث الثاني اخرجہ الترمذی والنسائي وابن ماجه، وقال الترمذی: غريب، قاله المنذرى.

### باب الإطعام عند القدوم من السفر

د سفر نه د واپس په وخت کښې د خوراک صدقه کولو بيان

[۳۷۴۷] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ مُحَارِبِ بْنِ دِثَارٍ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: "لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ نَحَرَ جَزُورًا أَوْ بَقَرَةً".

ترجمه: د جابر ﷺ نه روایت دې فرمائی چې هر کله نبی ﷺ مدينې ته راغې نويو اوښ يا غوا ئې ذبح کړه.

قوله: «عَنْ جَابِرٍ قَالَ لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ نَحَرَ جَزُورًا أَوْ بَقَرَةً»

چې کله رسول الله ﷺ د سفر نه په واپس باندې مدينې طيبې ته راوړسيدلو (لعله من سفر غزوة تبوك كذا في البدل) نو رسول الله ﷺ يو اوښ يا غوا ذبح کړه، د دې دعوت نوم نقيعه دې کما تقدم قريبا في انواع الضيافة.

سكت عليه المنذرى، وعزاه المزي الى البخارى وهوفيه (٢٠٨) من رواية وكيعة به، قاله عوامة.

### باب مَا جَاءَ فِي الضِّيَافَةِ

باب د ميلهستيا ورکولو بيان

[۳۷۴۸] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ سَعِيدِ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي شَرِيحٍ الْكَعْبِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ كَانَ يَوْمٌ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ، فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ جَاهِزَتُهُ يَوْمَهُ وَلِبَلَتُهُ الضِّيَافَةُ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ وَمَا بَعْدَ ذَلِكَ فَهُوَ صَدَقَةٌ، وَلَا يَحِلُّ لَهُ أَنْ يَتَوَيَّ عِنْدَهُ حَتَّى يُخْرِجَهُ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قُرَأَ عَلَى الْحَارِثِ بْنِ مِسْكِينٍ وَأَنَا

۱: سنن الترمذی/النکاح ۱۰ (۱۰۹۵)، سنن النسائي/النکاح ۷۹ (۳۲۸۴)، سنن ابن ماجه/النکاح ۲۴ (۱۹۰۹)، تحفة

الأشراف: (۱۴۸۲)، وقد أخرجہ: صحيح مسلم/النکاح ۱۴ (۱۳۶۵)، الجهاد ۴۳ (۱۳۶۵) (صحيح)

۲: صحيح البخاري/الجهاد ۱۹۹، ۳۰۸۹، (تحفة الأشراف: ۲۵۸۱)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۲۹۹/۳، ۳۰۲، ۳۱۹، ۳۳۳)

(صحيح الإسناد)

۳: صحيح البخاري/الأدب ۳۱ (۶۰۱۹)، ۸۵ (۶۱۳۵)، الرقاق ۲۳ (۶۴۷۶)، صحيح مسلم/الإيمان ۱۹ (۴۸)، سنن

الترمذی/البر والصلة ۴۳ (۱۹۶۷)، سنن ابن ماجه/الأدب ۵ (۳۱۷۵)، (تحفة الأشراف: ۱۲۰۵۶)، وقد أخرجہ: موطا امام

مالك/صفة النبي ﷺ ۱۰ (۲۲) مسند احمد (۳۸۵، ۳۸۴/۶، ۳۱/۴)، سنن الدارمي/الأطعمة ۱۱ (۲۰۷۸) (صحيح)

شَاهِدٌ، أَخْبَرَكُمْ أَشْهَبُ، قَالَ: وَسُئِلَ مَالِكٌ عَنْ قَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: جَائِزَتُهُ يَوْمَ وَلِيلَتُهُ؟ فَقَالَ: يَكْرُمُهُ وَتُحْفُهُ، وَتُحْفُهُ يَوْمَ وَلِيلَتُهُ وَثَلَاثَةُ أَيَّامٍ ضِيَافَةً.

د ابوشريحه رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله به فرمائیل دچاچه په الله تعالى اوپه ورځ داخرت ایمان وي نو هغه لره پکار دي چې دخپل میلمه په بهتري طریقي سره عزت وکړي، اود میلمه جائزه یوه ورځ او یوه شپه ده او میلمستیا د درې ورځو اودرې شپو پورې وي اود دینه پس صدقه ده اود میلمه دپاره حلال نه دي چې په زیات اوسیدلو سره کوربه ته تکلیف ورسوي. ابوداؤد وائی: حادث بن مسکین ته اولوستلي شو او زه موجود ووم چې اشهب هغوی ته خبر ورکړې دې، ابوداؤد وائی: د امام مالک رحمته الله علیه نه د نبی کریم صلی الله علیه و آله ددې فرمان «جائزته يوم وليلة» باره کښې تپوس اوشو نو هغوی اووئیل: ددې مطلب دادې چې کوربه دې یوه ورځ او یوه شپه دهغه عزت اواکرام اوکړي، تحفې او هدیې دې ورکوي، اودهغه حفاظت دې کوي او درې ورځو پورې دې ورله ملستمستیا کوي.

### شرح الحديث :

قوله: (مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ جَائِزَتُهُ يَوْمُهُ وَلَيْلَتُهُ)

کوم سړې ایمان لری په الله پاک او د آخرت په ورځ باندې نو هغه له پکار دی چې ورکړي خپله میلمه ته د هغه جائزه د یوې ورځې او د یوې شپې، د جائزه په تفسیر کښې درې اقوال مشهور دی چې په هغې کښې یو قول امام مالک رحمته الله علیه د جائزه په تفسیر کښې دا فرمائیلې دې چې یو ورځ او یو شپه دې د میلمه ښه خیال اوساتلې شی، د هغه دپاره دې په خوراک کښې د وس مناسب تکلف اوکړې شی، او په باقی درې ورځو کښې دې صرف میلمستیا د ما حضر اوکړې شی. او دویم تفسیر دا دې چې د میلمه دپاره د هغه د واپسې په وخت د یوې شپې خوراک د هغه سره کړې شی، او دریم تفسیر دا کړې شوې دې چې د میلمه دوه قسمونه دی یو هغه چې قصدا د چا د ملاقات دپاره لارې شی او دویم هغه چې ضمنا په لاره کښې د چا سره د ملاقات گولو دپاره لارې شی او تلل بل خوا مقصود وي، د میلمه د اول قسم دپاره حق د میلمستیا درې ورځې دې او د دې دویم قسم دپاره حق د میلمستیا صرف یوه ورځ دې. (کذا فی هامش البذل)

د دې نه پس په حدیث کښې دی چې د میلمه د میلمستیا حق صرف درې ورځې دې د دې نه پس که هغه ایساریږي نو د د کوربه د طرف نه تبرع او صدقه ده، او دا چې د هغوی دپاره جائزه ده چې د چا سره دومره ایسار شی چې په هغې سره ملیمه په تنگسیا کښې اخته شی، د حدیث الباب نه معلومه شوه چې د میلمه میلمستوب کول د ایمان بالله وبالیوم الاخر د مقتضیاتو نه دې چې د هغې نه د دې ډیر لوڼې اهمیت فهمیږي هم په دې وجه علماء کرام فرمائی چې میلمستوب د شریعت د محاسنو او د ښکلي اخلاقو نه دې، او د بعض علماء کرامو په نزد لکه لیث بن سعد په نزد خو کم از کم د یوې شپې میلمستیا واجب منلې ده. والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والترمذی وابن ماجه، قاله المنذری



[۳۷۴۹] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ مُجُوبٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "الْضِّيَافَةُ ثَلَاثَةٌ أَيَّامٌ فَمَا يَوْمِي ذَلِكَ فَهُوَ صَدَقَةٌ".

ابوهريره رضي الله عنه وائي چه نبی کریم صلی الله علیه و سلم او فرمائیل: ملمستیا درې ورځو پورې ده، او کوم چه ددې نه علاوه وی هغه صدقه ده.

## باب فی کما تُستحبُّ الولیمةُ د ولیمې دعوت د څو ورځو پورې پکار دي؟

[۳۷۴۵] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا هَبَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ الْحَسَنِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْقُتَيْبِ، عَنْ رَجُلٍ أُعْزِرَ مِنْ ثَقِيفٍ كَانَ يَقَالُ لَهُ مَعْرُوفًا أَيْ يُثْنِي عَلَيْهِ خَيْرًا إِنْ لَمْ يَكُنْ اسْمُهُ زُهَيْرُ بْنُ عُمَرَ، فَلَا أُدْرِي مَا اسْمُهُ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "الْوَلِيمَةُ أَوَّلُ يَوْمٍ حَقٍّ، وَالثَّانِي مَعْرُوفٌ، وَالثَّلَاثُ سُمْعَةٌ وَرِيَاءٌ"، قَالَ قَتَادَةُ: وَحَدَّثَنِي رَجُلٌ: أَنَّ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ دُعِيَ أَوَّلَ يَوْمٍ فَأَجَابَ، وَدُعِيَ الْيَوْمَ الثَّانِي فَأَجَابَ، وَدُعِيَ الْيَوْمَ الثَّلَاثَ فَلَمْ يُجِبْ، وَقَالَ: أَهْلُ سُمْعَةٍ وَرِيَاءٍ.

د عبد الله بن عثمان ثقفی نه روایت دي فرمائي چه ماد قبيله ثقیف ديو کور سترگي کس نه اوریدلی دی څوک چه په معروف باندې مشهور وو که چېرې دده نوم عثمان بن زهیرنه وي نو بیا ماته معلومه نه ده چه دده څه نوم دي هغه به وئیل چه نبی صلی الله علیه و سلم فرمائیلی دی د ولیمې د اولنۍ ورځې خوراک حق دي اود دوی ورځې خوراک نیکی ده اود دریمې ورځې خوراک ریاکاری او نمائش دي، ابو قتاده وائي ماته یوکس وئیلی دی چه سعید بن مسیب ته چه کله د ولیمې په اوله ورځ دعوت ورکړې شو نو قبول ئې کړو او په دویمه ورځ ئې هم قبول کړو، خو البته په دریمه ورځ ئې قبول نکړو او وئې فرمائیل چه دا خلق ریاکاران دي.

یعنی دعوت ولیمه څومره ورځې مستحب دي؟ په حدیث الباب کښې دی چه رسول الله صلی الله علیه و سلم او فرمائیل «الْوَلِيمَةُ أَوَّلُ يَوْمٍ حَقٍّ وَالثَّانِي مَعْرُوفٌ وَالثَّلَاثُ سُمْعَةٌ وَرِيَاءٌ» چه ولیمه د رومبۍ ورځې حق ده یعنی ثابته او سنت موکده، او د دویمې ورځې هغه ښه کار دي یعنی صرف مستحب ده غیر موکده.... او په دریمه ورځ ثابت نه ده بلکه شهرت طلب کول او ریاکاری ده. وړاندې په روایت کښې دی چه د سعید بن المسیب رضي الله عنه د ولیمې په رومبۍ ورځ باندې دعوت اوکړې شو نو هغوی هغه منظور کړو او په دویمه ورځ ئې هم منظور کړو، او په دریمه ورځ چه دعوت کونکې راغلو نو هغوی منظوره نه کړه بلکه قاصد ئې په کانړی ویشتلو او وې فرمائیل: ریا کار دي.

## د ولیمې دعوت تر څو ورځو پورې کول مستحب دی:

د جمهورو په نزد لکه څنگه چه په حدیث الباب کښې دی ولیمه صرف دوه ورځې ده، او د امام مالک رحمته الله علیه په نزد اووه ورځې ده والیه میل البخاری، پس هغوی په خپل صحیح کښې ترجمه قائم کړې ده «باب حق اجابة الولیمة ومن اولم بسبعة ايام ونحوه ولم یوقت النبی صلی الله علیه و سلم یوما ولا یومین» او امام بخاری رحمته الله علیه په خپل تاریخ کښې د ابوداؤد د پورته بیان کړې شوی روایت په

(۱): تفرد به ابوداؤد، (تحفة الأشراف: ۱۲۸۰۸)، وقد أخرجه: حم (۳۵۴/۲) (حسن، صحيح الإسناد)

(۲): سنن الدارمي، الأطلعة ۲۸ (۲۱۰۹)، (تحفة الأشراف: ۱۸۷۱۹، ۳۶۵۱) (ضعيف)

باره کښې فرمائی «ولا یصح اسنادہ، ولا یصح له صحبة یعنی لزهیر الی آخر ما فی الابواب والتراجم ۲۴۰/۵ فارجع الیه لو شئت» او په هغې کښې دا هم دی چه په دریمه ورځ باندې د ولیمې اجابت مکروه دې او په دویمه ورځ هم د معمولی درجې استحباب دې واجب قطعاً نه دې، او بعض علماء لکه رویانی وغیره وائی چه په دریمه ورځ د ولیمې کراحت هله دې چه کله هغه سرې مدعو کړې شی چا ته چه مخکښې هم دعوت کړې شوې وو، او قاضی عیاض رحمته الله فرمائی: استحب اصحابنا لاهل السعة کونها اسبوعاً، قال وقال بعضهم: محله اذا دعی فی کل یوم من لم یدع قبله ولم یکرر علیهم» یعنی د مالکیانو په نزد د اووه ورځو پورې د استحباب صورت کښې دی چه کله هره ورځ نوې او بیل خلکو ته دعوت ورکړې شی، تکرار د دعوت مستحب نه دې. والحديث اخرجه النسائی مسنداً ومرسلاً، قاله المنذری.

[۳۷۶۱] (۱) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ بِهَذِهِ الْقِصَّةِ، قَالَ: قَدُعِيَ الْيَوْمَ الثَّالِثُ فَلَمْ يُجِبْ، وَحَصَّبَ الرَّسُولُ.

د سعید بن مسیب نه هم دا واقعہ نقل شوي ده او په دې کښې داسې دی چه په دریمه ورځ کله هغه ته دعوت ورکړې شي نو ورته لاړو بلکه قاصد ئې په گانړي وويشتو.

### باب مَا جَاءَ فِي الضِّيَافَةِ باب د میل مستیا ورکولو بیان

[۳۷۵۰] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، وَخَلْفُ بْنُ هِشَامٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ عَامِرٍ، عَنْ أَبِي كَرِيمَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَيْلَةُ الضِّيْفِ حَقٌّ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ، فَمَنْ أَصْبَحَ بِفَنَائِهِ فَهُوَ عَلَيْهِ دَيْنٌ، إِنْ شَاءَ اقْتَضَى وَإِنْ شَاءَ تَرَكَ".

د ابو کریمه نه روایت دې فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه وسلم فرمائیلی دی په هریو مسلمان باندې د میل مه دپاره یوه شپه تیروول حق دې اوڅوک چه کله دیو مسلمان په کور کښې پاتې شي نو گویا کښې یوه شپه میل مستیا کول ئې په کور والاباندې قرض دې که خوبه ئې وي نو پوره دي کړي یادي پریرې دي.

«عَنْ أَبِي كَرِيمَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- «لَيْلَةُ الضِّيْفِ حَقٌّ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ فَمَنْ أَصْبَحَ بِفَنَائِهِ فَهُوَ عَلَيْهِ دَيْنٌ إِنْ شَاءَ اقْتَضَى وَإِنْ شَاءَ تَرَكَ»»

د ابو کریمه یعنی مقدم بن معدیکرب رحمته الله نه روایت دې چه رسول الله صلی الله علیه وسلم او فرمائی: چه د میل مه د یوې ورځ میل مستیا په هر مسلمان باندې واجب ده، لهذا کوم سړې چه د کوم سړې په کور باندې شپه تیره کړي نو د هغه شپې میل مستوب د هغه په ذمه شو، که غواړي نو حیل حق دې ترې نه واخلي، او که نه اخلي نو ورته دې پریرې دي. د وړاندې روایت مضمون هم دا دې بلکه په هغې کښې دا اضافه ده چه د میل مه امداد (هغه ته د هغه په حق ورکولو کښ) په هر مسلمان باندې واجب دې که د کوربه د فصل نه وی او که د هغه د نقد مال نه.

(۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۳۶۵۱، ۱۸۷۱۹) (ضعيف)

(۲) سنن ابن ماجه/الأدب ۵ (۳۶۷۷)، (تحفة الأشراف: ۱۱۵۶۸) (صحيح)



علامه سیوطی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چې دا احادیث د ابتداء اسلام دی کوم وخت چې میل مستوب واجب وو. کوم چې روستو منسوخ شو چې هغې طرف ته امام ابو داؤد رحمۃ اللہ علیہ په راتلونکي باب کښې اشاره فرمائيلې ده، او دویم جواب د دې دا دې چې دا په حالت د اضطرار او احتیاج باندې محمول دی، کذا فی البذل، خو په دویم صورت کښې به روستو ضمان ورکول واجب وی، په حاشیه د بذل کښې د دې ډیر توجیحات بیان کړې شوي دي پس یو تاویل دا کړې شوي دي چې د دې حدیث تعلق د اهل ذمه نه دې یعنی د اهل ذمه سره د معاهدې په وخت که د عهد ضیافت عهد هم اخستلې شوي وی نو د هغوی نه به حق ضیافت اخستلې شي، روستو ذکر شوي حدیث کښې هم دې طرف ته اشاره ده او یو قول په دې کښې دا هم دې چې دا حدیث د عمال سره مخصوص دي چې کله هغوی د صدقاتو د اخستلو دپاره په یو ځای کښې شپه تیره کړي نو د هغوی دپاره حق ضیافت واجب دي. والحدیث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذری

[۳۷۵۱] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ شُعْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو الْجَوْدِي، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي الْمُهَاجِرِ، عَنِ الْمُقْدَامِ أَبِي كَرِيمَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَيُّمَا رَجُلٍ أَضَافَ قَوْمًا فَأَصْبَحَ الضَّيْفُ فَخْرًا فَإِنْ نَصَرَهُ حَقٌّ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ حَتَّى يَأْخُذَ بِقَرَى لَيْلَةٍ مِنْ زَرْعِهِ وَمَالِهِ".

د ابو کریمه رحمۃ اللہ علیہ نه روایت دي فرمائی چې رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم فرمائيلې دي څوک چې د چا خواته په میل مستیا ورشي او محروم پاتې شي (یعنی څه اکرام ئې ونه شي نو په ټولو مسلمانانو باندې دده امداد کول ضروري کیږي تردې پورې چې دغه میل د دغه خلقو د مال او فصل نه خپله میل مستیا وصول کولې شي.

[۳۷۵۲] (۲) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ، أَنَّهُ قَالَ: قُلْنَا: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّكَ تَبْعُنَا، فَتَنْزِلُ بِقَوْمٍ فَمَا يَقْرُونَنَا، فَمَا تَرَى؟" فَقَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنْ نَزَلْتُمْ بِقَوْمٍ فَأَمْرُوا الْكُفْرَ بِمَا يَنْبَغِي لِلضَّيْفِ فَأَقْبَلُوا، فَإِنْ لَمْ يَقْعِلُوا، فَخُذُوا مِنْهُمْ حَقَّ الضَّيْفِ الَّذِي يَنْبَغِي لَهُمْ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَذِهِ حُجَّةٌ لِلرَّجُلِ يَأْخُذُ الشَّيْءَ عَرَاكَانَ لَهُ حَقًّا.

د عقبه بن عامر نه روایت دي فرمائی چې مونږ نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته عرض وکړو اې د الله رسوله ته مونږ د جهاد په سلسله کښې اودنورو غرضونو دپوره کولو دپاره اکثر په سفر لیرې کله کله زمونږه ورتلل داسې خلقوته وشي څوک چې مونږ ته میل مستیانه راکوي نو په دې سلسله کښې زمونږ دپاره څه کول مناسب دي؟ نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائيلې که چېرې تاسو یو قوم ته ورشي او هغوی ستاسو دپاره هر رنگه انتظام وکړي څومره چې د میل دپاره کولې شي نو تاسو هغه قبول کړئ او که چېرې داني ونه کړي نو تاسو د هغوی نه د میل مستیاد حق هومره مال وصول کړئ.

(عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ أَنَّهُ قَالَ قُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّكَ تَبْعُنَا فَتَنْزِلُ بِقَوْمٍ فَلَا يَقْرُونَنَا فَمَا تَرَى الْخ) دا حدیث به په اهل ذمه باندې محمول کولې شي یا په عمال باندې لکه چې په مخکښې

۱: تفرده ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۱۱۵۶۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۳۱/۴، ۱۳۳)، دي/الأطعمة ۱۱ (۲۰۸۰) (ضعيف)

۲: صحيح البخاري/المظالم ۱۸ (۲۴۶۱)، الأدب ۸۵ (۶۱۳۷)، صحيح مسلم/اللقطة ۳ (۱۷۲۷)، سنن الترمذي/السير ۳۲

(۱۵۸۹)، سنن ابن ماجه/الأدب ۵ (۳۶۷۶)، (تحفة الأشراف: ۹۹۵۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۴۹/۴) (صحيح)

توجیهاتو کښې تیر شوې دی، خو د گنګوی رحمۃ اللہ علیہ په تقریر کښې دی چه د حدیث الباب مطلب دا دې چه هغه خلق نه خو زموږ میلستیا کوی او نه زموږ په لاس باندې د خوراک خکاک خیز خرخوی، بعض اهل ذمه عناد اداسې کوی، نو په دې باندې رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چه تاسو خپل حق د هغوی نه اخلئ یعنی بالقیمه ئې ترې نه په زبردستی اخلئ، هم دغه شان توجیه امام ترمذی رحمۃ اللہ علیہ هم فرمائیلې ده.

والحدیث أخرجه البخاری ومسلم وابن ماجه، وأخرجه الترمذی من حدیث ابن لهیعة وقال حسن، قاله المنذری.

## باب نَسْخِ الضَّيْفِ يَأْكُلُ مِنْ مَالِ غَيْرِهِ

د میلمه دپاره د بل چا د مال خوړلو د حکم د منسوخ کیدو بیان

د ترجمه الباب غرض او په هغې کښې اختلاف د نسخو:

په رومبې باب کښې چه د کوم حق الضیف ذکر وو په دې باب سره مصنف رحمۃ اللہ علیہ د هغې منسوخ کیدل بیانوی، په شروع کښې لکه چه اوس تیر شو چه حق الضیف واجب وو، تر دې چه ضیف ته دا حق هم وو چه بغیر د مالک د رضا نه د خپل ضیافت حق وصول کړی، روستو دا حکم د سورة النساء په آیت کریمه ﴿ لَا تَاْكُلُوا اَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ اِلَّا اَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِنْكُمْ ﴾ په ذریعه باندې منسوخ کړې شو چه د بل چا مال بغیر د اجازت نه خوړل جائز نه دی، حرام دی. د دې آیت کریمه د نزول نه پس بعض حضراتو په خپل اجتهد باندې دا اوگنړله چه مطلقا د بل مال خوړل ممنوع دی حال دا چه د سورة النساء د آیت کریمه دا مقصد نه دې. د دې غلط فهمی د لرې کولو دپاره د سورة النور دا

آیت کریمه نازل شو ﴿ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمَى حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرْجٌ وَلَا عَلَى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ اَوْ بُيُوتِ اَبَائِكُمْ اَوْ بُيُوتِ اُمَّهَاتِكُمْ اَوْ بُيُوتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوتِ اَخْوَاتِكُمْ اَوْ بُيُوتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ اَوْ بُيُوتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوتِ خَالَاتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكَتُمْ مِنْ فَاَتِحَةٍ اَوْ صَدِيقِكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوا جَمِيعًا اَوْ اشْتَاتًا ﴾

د دې آیت کریمه په نزول سره هغه غلط فهمی ختم شوه او مسئله واضح شوه چه خپل مینځ کښې په یو ځای خوراک کښې هیڅ باک نشته. (۱)

په کوم ترجمه الباب کښې چه مونږ بحث کوو په دې کښې مختلف نسخې دی، یو نسخه کښې دی ﴿ باب نسخ الیق فی الاکل من مال غیره ﴾ (یعنی د مال غیر د خوړلو په باره کښې چه صحابه کرام رضی اللہ عنہم په کومه (تنګسیا) کښې پریوتلې وو د هغې ختمیدل) زما په نزد دا نسخه راجح ده، پورته ذکر کړې شوې تقریر په دې باندې صحیح طریقې سره منطبق کیږی، وايضا لا برد علی هذا التقرير ایراد الطبری المذكور فی البدل، فتدبر وتشکر....

(۱) په اردو نسخه کښې د سورة النور آیت کریمه کښې غلطی وه په دې وجه مونږ پوره او صحیح را نقل کړو.... (مترجم)



[۳۷۵۳] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَرْوَزِيُّ، حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ الْحُسَيْنِ بْنِ وَقِيدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ يَزِيدَ النَّحْوِيِّ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: «لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِنْكُمْ» سورة النساء آية ۲۹، فَكَانَ الرَّجُلُ يُخْرِجُ أَنْ يَأْكُلَ عِنْدَ أَحَدٍ مِنَ النَّاسِ بَعْدَ مَا نَزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ، فَنَسَخَ ذَلِكَ الْآيَةَ الَّتِي فِي النُّورِ، قَالَ: لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا سُورَةَ النُّورِ آيَةَ ۱۱ مِنْ يَوْمِكُمْ إِلَى قَوْلِهِ أَشْتَاتًا سُورَةَ النُّورِ آيَةَ ۱۱، كَانَ الرَّجُلُ الْغَنِيُّ يَدْعُو الرَّجُلَ مِنْ أَهْلِهِ إِلَى الطَّعَامِ، قَالَ: إِنِّي لَا جُنْحَ أَنْ أَكُلَ مِنْهُ، وَاللَّجْنَةُ الْحَرَجُ، وَيَقُولُ: الْمُسْكِينُ أَحَقُّ بِهِ مِنِّي، فَأَجِلْ فِي ذَلِكَ أَنْ يَأْكُلُوا مِمَّا ذَكَرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ، وَأَجِلْ طَعَامَ أَهْلِ الْكِتَابِ».

عكرمه د عبد الله بن عباس رضي الله عنه نه روایت كوي چه فرمايل ئې چه دا ايت كريمه: «لا تاكلوا اموالكم بينكم بالباطل إلا أن تكون تجارة عن تراض منكم» چه كله نازل شو نو په دې وخت كښې هريوكس به دبل كس سره خورل گناه گنرله نوبباد سورة نور ايت: «ليس عليكم جناح أن تاكلوا من بيوتكم..... أشتاتا» نازل شو او رومښې حكم منسوخ شو يعنى په تاسو باندې گناه نشته كه چرې تاسو پخپلو كورونو كښې خوراك كوي يا دپلار په كور كښې خوراك كوي يا دخپلو خامنو او رونرو په كور كښې خوراك كوي يا دخويندو په كورونو كښې يا دترووريانو اوترونو اوماگانو په كورونو كښې يا په هغه كورونو كښې دكومو تالي او چايباني چه ستاسو سره دي ياددوستانو په كورونو كښې، دمخكنې زمانې دخلقو دا حالت وو چه مالداره كس به خلقو ته دخوراك دعوت وركولو نو خلقوبه وئيل مونږ ته ددنه خوراك كول گناه ښكاري بلكه مسكين زمونږ نه زيات مستحق دې چه داخوراك وكړي ددې ايت دنازليدونه پس دا حكم صحيح وگنرلې شو يعنى يومسلمان دبل مسلمان نه خوراك كول جائز كړې شول كله چه په هغې دالله نوم اخستلې شوې وي اوداهل كتابو خوراك هم درست وگرځولې شو.

قوله: «كَانَ الرَّجُلُ الْغَنِيُّ يَدْعُو الرَّجُلَ مِنْ أَهْلِهِ إِلَى الطَّعَامِ قَالَ إِنِّي لَا جُنْحَ (۲) أَنْ أَكُلَ مِنْهُ»

يعنى د سورة النساء د آيت د نزول نه پس د اكل مال غير په باره كښې دومره احتياط كول شروع شو چه يو سړى به چرته خپل خپلوانو ته د خوراك دعوت وركړو نو هغه به ددې نه هم انكار كولو او دا به ئې وئيل چه زه خو دا گناه او حرج گنرم، په چا مسكين او فقير باندې ئې اوخړه نوبيا د هغوى د دې خيال د لرې كولو دپاره د سورة النور آيت كريمه نازل شو، «لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا جَمِيعًا وَأَشْتَاتًا... (الخ)».

قوله: «فَأَجِلْ فِي ذَلِكَ أَنْ يَأْكُلُوا مِمَّا ذَكَرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ» يعنى د اكل مال غير اجازت وركړې شو د مال ك د اجازت نه پس په دې شرط چه هغه مال غير داسې وي چه په هغې باندې د الله پاك نوم اخستلې شوې وي يعنى حلال وي، او هم دغه شان د اهل كتاب طعام هم ناجائز كړې شو.

(۱) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۲۶۴) (حسن الإسناد)

(۲) اجنح د باب افعل نه د واحد متكلم صيغه ده چه د هغې اصل اتجنح دې مشتق من الجناح)

## باب فی طعام المتبارین

د فخر (ښودنې) دپاره په ضد باندې خلوته د خوراکوړکولو بیان

[۳۷۵۴] (۱) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ زَيْدٍ بْنُ أَبِي الزَّرْقَاءِ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ حَازِمٍ، عَنْ الزَّيْدِ بْنِ خُرَيْبٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ، يَقُولُ: كَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ، يَقُولُ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ طَعَامِ الْمُتَبَارِينَ أَنْ يُؤْكَلَ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَكْثَرُ مَنْ رَوَاهُ عَنْ جَرِيرٍ لَا يَذْكُرُ فِيهِ ابْنُ عَبَّاسٍ، وَهَارُونُ النَّحْوِيُّ ذَكَرَ فِيهِ ابْنُ عَبَّاسٍ أَيْضًا، وَحَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ لَمْ يَذْكُرْ ابْنَ عَبَّاسٍ.

د عبد الله بن عباس رضی اللہ عنہ روایت دې فرمائی چې نبی کریم ﷺ ددوه فخرکونکو ددوې خوړلو نه منع فرمائیلي ده. امام ابوداد فرمائی چې اکثر وراویانوددې روایت په سند کې د جریر بن ابن عباس نه دی ذکر کړي البته هارون نحوي ابن عباس ذکر کړي دي او همدارنگې حماد بن زید هم د جریر په سند کې ابن عباس نه دی ذکر کړي.

په حدیث الباب کې دې چې رسول الله ﷺ د متبارین یعنی د متفاخرین د خوراک نه منع فرمائیلي ده چې هغه دې او خوړلې شي، یعنی کوم دعوت چې د فخر او ریاء په طور او کړې شي د هغې خوړل جائز نه دی، هم د دې هم معنی حدیث په کتاب الاضحیه کې تیر شوي دي، ﴿نهی رسول الله ﷺ عن معاقرۃ الاعراب﴾

## باب الرَّجُلُ يُدْعَى فَيَرَى مَكْرُوهًا

کله چې څوک دعوت ته حاضر شي او هلته د شریعت خلاف عمل وويني

[۳۷۵۵] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، أَخْبَرَنَا حَمَّادٌ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُمَّاهَانَ، عَنْ سَفِينَةَ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ: "أَنَّ رَجُلًا أَصَافَ عَلَى بَنِي أَبِي طَالِبٍ فَصَنَعَ لَهُ طَعَامًا، فَقَالَتْ فَاطِمَةُ: لَوْ دَعَوْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَكَلْنَا مَعَهُ، قَدْ عَوَّ، فَجَاءَ فَوَضَعَ يَدَهُ عَلَى عِضَادَتِي الْبَابِ فَرَأَى الْقِرَامَ قَدْ ضَرَبَ بِهِ فِي نَاحِيَةِ الْبَيْتِ، فَرَجَعَ، فَقَالَتْ فَاطِمَةُ لِعَلِيٍّ: الْحَقُّ فَإِنْظُرْ مَا رَجَعَهُ، فَتَبِعْتُهُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، مَا رَدَّكَ؟ فَقَالَ: إِنَّهُ لَيْسَ لِي أَوْلِيٌّ أَنْ يَدْخُلَ بَيْتًا مَزُوقًا".

د ابو عبد الرحمن سفینه رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چې یوکس علی رضی اللہ عنہ میلمه کړ او دده دپاره یې د خوراک انتظام وکړو، فاطمه رضی اللہ عنہا او وئیل کاش چې مونږنې ﷺ راغوبستلي وي نو هغه به هم زمونږ سره خوراک کړي وو، نو ننې ﷺ یې را اوغوبستو، نبی ﷺ تشریف راوړو او خپل لاسونه یې د دروازي په چوکاټ باندې کیخودل په دې وخت کې نبی ﷺ د کور په یو گوټ کې یوه پرده ولیدله چې لگیدلي وه او تصویران ورباندې جوړ شوي وو، نبی ﷺ چې کله دا ولیدل نو واپس روان شو، علی رضی اللہ عنہ فرمائی چې زه ورپسې روان شوم او تپوس مې ورنه وکړو چې ته ولي واپس روان شوي؟ نبی ﷺ او فرمائیل دیو نبی دپاره داسې کورته تلل جائز نه دی چرته چې نقش ونگار شوي وي.

قوله: ﴿أَنَّ رَجُلًا أَصَافَ عَلَى بَنِي أَبِي طَالِبٍ فَصَنَعَ لَهُ طَعَامًا فَقَالَتْ فَاطِمَةُ لَوْ دَعَوْنَا رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- فَأَكَلْنَا مَعَهُ﴾

(۱) تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۶۰۹۱) (صحیح)

(۲) سنن ابن ماجه/الأطعمة ۵۶ (۳۳۶۰)، (تحفة الأشراف: ۴۴۸۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۲۰/۵، ۲۲۱، ۲۲۲)



یعنی یو سړې د علی عليه السلام میلنه شو. هغوی د هغه دپاره خوراک تیار کړو، چه کله د خوراک وخت راغلو نو فاطمې عليها السلام او وئیل چه که په دې خوراک باندې بابا جان یعنی رسول الله صلی الله علیه و آله هم راطلب کړې شی نو ښه به وی، پس رسول الله صلی الله علیه و آله ته هم دعوت ورکړې شو، چه کله رسول الله صلی الله علیه و آله دروازې ته راوړسیدلو نو خپل دواړه لاسونه ئې په دروازه باندې کیخودل او اودریدلو، ځکه چه رسول الله صلی الله علیه و آله اولیدل چه یوه نړۍ پرده د کور په یو طرف کښې زوړنده وه (په ظاهر کښې د ډول او ښکلا دپاره) نو رسول الله صلی الله علیه و آله واپس شو کور ته داخل نه شو، فاطمې عليها السلام علی عليه السلام ته او وئیل چه لږ لږ شی او اوگورئ چه هغوی ولې واپس شو، سیدنا علی عليه السلام فرمائی چه زه په رسول الله صلی الله علیه و آله پسې لارم او د دې وجه مې اوتپوسله نو هغوی اوفرمائیل «لیس لښی ان یدخل بیتا مزوقا» د یو نبي دپاره مناسب نه دی چه داسې کور ته داخل شی چه هغه ډولی کړې شوې وی.

دا حدیث د لږ ډیر اختلاف سیاق او سباق سره په کتاب اللباس «باب فی اتخاذ الستور» کښې هم راروان دې. چه په هغې کښې دا دی چه رسول الله صلی الله علیه و آله اوفرمائیل: «وما انا والدنيا وما انا والرقم» او په یو بل طریق کښې دی «قال وكان سترا موشيا» د دې حدیث نه ترجمه الباب ثابتیری چه که مدعو د داعی کور ته رسیدو سره څه ناجائز او منکر څیز اولیدو نو د هغه د خبردارۍ دپاره دې ترې نه واپس شی د حضرت گنگوهی عليه السلام په تقریر کښې دی چه ممکنه ده چه په دې قرام کښې تصویرونه وو، او یا دا چه دا بي خایه زوړند کړې شوې وو. په دیوال وغیره باندې چه په هغې باندې نکیر راغلې دې «ان الله لم یامرنا ان نکسوا الحجارة الحديث» والحديث اخرجه ابن ماجة، قاله المنذرى.

### باب إِذَا اجْتَمَعَ دَاعِيَانِ أَيْهَمَا أَحَقُّ

کله چه په یو وخت کښې دوه دعوت کونکي چاته دعوت ورکړي نو کوم یو ته تلل پکار دی؟  
یعنی که په یو وخت کښې د دوه سړو د طرف نه دعوت راشی نو د چا به منظور کولې شی؟  
په حدیث الباب کښې دی

[۳۷۵۶] حَدَّثَنَا هَنَادُ بْنُ السَّرِيِّ، عَنْ عَبْدِ السَّلَامِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ أَبِي خَالِدٍ الدَّالَانِيِّ، عَنْ أَبِي الْعَلَاءِ الْأَوْدِيِّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْجَمْدِيِّ، عَنْ رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "إِذَا اجْتَمَعَ الدَّاعِيَانِ، فَاجِبُ أَقْرَبَهُمَا بَابًا، فَإِنْ أَقْرَبَهُمَا بَابًا أَقْرَبَهُمَا جَوَارًا، وَإِنْ سَبَقَ أَحَدُهُمَا فَاجِبُ الَّذِي سَبَقَ."

حمید بن عبد الرحمن په صحابه گرامو کښې دیوکس نه روایت کوی فرمائی چه نبی کریم صلی الله علیه و آله فرمائیلي دي: کله چه په یو وخت کښې دوه دعوت کونکي جمع شي نو د کوم چه دروازه نژدې وي هغه زیات حق دار دي اویقیناد چاچه دروازه نژدې وي هغه په گاونډ کښې هم مخکښې وي او که چرې یو دبل نه مخکښې شي نو دمخکښې دعوت قبول زیات مناسب دي.  
«فَاجِبُ أَقْرَبَهُمَا بَابًا فَإِنْ أَقْرَبَهُمَا بَابًا أَقْرَبَهُمَا جَوَارًا وَإِنْ سَبَقَ أَحَدُهُمَا فَاجِبُ الَّذِي سَبَقَ»

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۵۵۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۰/۸۵) (ضعيف)

یعنی د کوم سړی دروازه چه تاته نژدې وی هغه زیات مستحق دې د اجابت دعوت د قرب او گاونډ د وجې نه، او که د دوه کسانو د طرف نه دعوت متعاقبا یعنی وړاندې روستوراشی نو د کوم د طرف نه چه پیغام مخکښی راشی هغه زیات مستحق دې.

### بَابُ إِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ وَالْعِشَاءُ

باب: کله چه د ماښام مونیخ او دودنی په یو وخت تیاره شی نوڅه به کوی؟

[۳۷۵۷] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، وَمُسَدَّدُ الْمَعْنَى، قَالَ أَحْمَدُ، حَدَّثَنِي يَحْيَى الْقَطَّانُ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «إِذَا وَضِعَ عِشَاءُ أَحَدِكُمْ وَأَقِيمَتِ الصَّلَاةُ فَلَا يَقُومُ حَتَّى يَفْرُغَ»، زَادَ مُسَدَّدٌ: «وَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ إِذَا وَضِعَ عِشَاءَهُ أَوْ حَضَرَ عِشَاءَهُ لَمْ يَقُمْ حَتَّى يَفْرُغَ، وَإِنْ سَمِعَ الْإِقَامَةَ، وَإِنْ سَمِعَ قِرَاءَةَ الْإِمَامِ».

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه وسلم فرمائیلى دی کله چه په تاسو کښې د یوکس د ماښام دودنی تیاره شي اود مونیخ دپاره تکبیر هم وشي نو تر هغې دې نه پاڅي ترڅو چه فارغ شوي نه وي. امام ابوداود فرمائی چه دمسدد په روایت کښې دا اضافه ده چه کله به ابن عمر فاته د ماښام دودنی کیخودې شوه نوچه ترڅو به د مونیخ نه فارغ شوي نه وو مونیخ ته به نه پاڅیدو، اگر که هغه به دقران تلاوت یاد امام دقرات اواز هم اوریدو.

قوله: «عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ «إِذَا وَضِعَ عِشَاءُ أَحَدِكُمْ وَأَقِيمَتِ الصَّلَاةُ فَلَا يَقُومُ حَتَّى يَفْرُغَ»» د دې حدیث شرح په کتاب الطهارة «باب ایصلى الرجل وهو حاقن» کښې تیره شوې ده، هغې ته دې رجوع او کړې شی.

والحدیث أخرجه البخاری ومسلم والترمذی، وليس فی حدیث مسلم فعل ابن عمر رضي الله عنه، قاله المنذرى.

[۳۷۵۸] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ يَعْنَى، عَنْ ابْنِ مَنصُورٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ مَيْمُونٍ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُؤَخِّرُ الصَّلَاةَ لِطَعَامٍ وَلَا لِبَعْزَةٍ».

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه وسلم فرمائیلى دی دطعام اود بل شي په وجه باندې مونیخ مه روسته کوی.

«عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «لَا تُؤَخِّرُ الصَّلَاةَ لِطَعَامٍ وَلَا لِبَعْزَةٍ»» د دې حدیث په باره کښې هم کلام مخکښی تیر شوې دې.

[۳۷۵۹] (۳) حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْلِمٍ الطُّوسِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ الْحَنْفِيُّ، حَدَّثَنَا الضَّحَّاكُ بْنُ عُثْمَانَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ، قَالَ: «كُنْتُ مَعَ أَبِي فِي زَمَانِ ابْنِ الزُّبَيْرِ إِلَى جَنْبِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَيْرِ بْنِ الزُّبَيْرِ:

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۲۱۲)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للأذان ۴۲ (۶۷۳)، الأطعمة (۵۴۶۳)، صحيح مسلم للمساجد ۱۶ (۵۵۹)، سنن الترمذي للصلاة ۱۴۵ (۳۵۴)، سنن ابن ماجه للإقامة ۳۴ (۹۳۴)، مسند احمد (۲۰/۲)، (۱۰۳) (صحيح)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۷۵۸) (ضعيف)

(۳): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۷۲۸۱) (حسن الإسناد)



إِنَّا سَمِعْنَا أَنَّهُ يُبْدَأُ بِالْعِشَاءِ قَبْلَ الصَّلَاةِ، فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ: وَنَحْنُ مَا كَانَ عِشَاءُ وَهُمْ أَتَرَاهُ كَانَ مِثْلَ عِشَاءِ أَبِيكَ".

د عبداللہ بن عبید بن عمیرہ رضی اللہ عنہ نه روایت دی فرمائی چه زه د عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما په دور کښې دهغه سره وم عباد بن عبداللہ او وئیل چه مونږه دا اوریدلی دی چه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په زمانه کښې به د ماښام دوخت خوراک په مونځ باندې مخکښې کولې شو، عبداللہ بن عمره او وئیل په تاسو باندې افسوس دی تاسو د دوی خوراک دخپل پلار د خوراک په شان گنړئ.

**د تقديم طعام على الصلوة سره متعلق يو ښکلي واقعه :**

قوله: « كُنْتُ مَعَ أَبِي فِي زَمَانِ ابْنِ الزُّبَيْرِ إِلَى جَنْبِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ فَقَالَ عَبَّادُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ إِنَّا سَمِعْنَا أَنَّهُ يُبْدَأُ بِالْعِشَاءِ قَبْلَ الصَّلَاةِ. فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ وَنَحْنُ مَا كَانَ عِشَاءُ وَهُمْ أَتَرَاهُ كَانَ مِثْلَ عِشَاءِ أَبِيكَ » يو سرې د عبداللہ بن زبیر رضی اللہ عنہ د دور خلافت خبره نقل کوی چه زه يو ورځ د عبداللہ بن زبیر رضی اللہ عنہ په خوا کښې ناست وو په يو مجلس کښې ذکر اوشو چه خوراک مخکښې کول پکار دی او که مونځ دواړه څيزونه نزدې وو، خوراک هم حاضر وو او د مانځه وخت هم وو نو عباد بن عبداللہ بن زبیر او وې چه مونږ دا اوریدلی دی چه په داسې صورت کښې خوراک په مانځه باندې مقدم کول پکار دی نو په دې باندې عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما او فرمائیل هلاک شې د هغه حضراتو خوراک (کوم چه د تقديم خوراک قائل دی) ستا د پلار د خوراک په شان خو نه وو يعنی مخکښې خلقو خو به د خوراک په څو نوالو باندې اکتفاء کوله، د داسې خلقو دپاره رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم دا قاعده جوړه کړه چه هغه دې خوراک په مانځه باندې مقدم کوی او کوم خلق چه د پوزې پورې څپته دکوی د هغوی دپاره خو دا قاعده نه ده (ځکه چه د زیات خوراک کولو په وجه باندې به زیات وخت لگی چه په هغې سره به مونځ کښې تاخیر راشي) او خپله د ابن عمر رضی اللہ عنہما دا عادت مبارک تیر شوې دې چه هغوی به په داسې صورت کښې خوراک لره په مانځه باندې مقدم کولو (وان سمع الا قامه وان سمع قراءة الامام) د دې وجه هم دا ده چه هغوی به په څو نمره باندې اکتفاء کوله. والحديث اخرجه الترمذی والنسائی، وقال الترمذی: حديث حسن، قاله المنذری

## باب فِي غَسْلِ الْيَدَيْنِ عِنْدَ الطَّعَامِ

**د خوراک په وخت کښې د لاسونو وینځلو بیان**

د دې نه پس دویم باب راروان دی « باب غسل الیدین قبل الطعام » په دې کښې په ظاهره تکرار دې اوس یا خو دې دا اوئیلې شی چه دلته نسخې مختلف دی پس په بعض نسخو کښې باب ثانی نشته لهذا هم دې نسخې ته به ترجیح ورکولې شی، او یا دې بیا دا اوئیلې شی چه په رومبې باب سره غرض نفی د غسل ده او په دویم سره غرض اثبات الغسل دې لکه چه د دواړو بابونو د احادیثو نه معلومېږي او حاصل د ترجمتینو به دا وی چه د خوراک نه مخکښې لاس وینځل ضروری نه دی لکه چه په اول باب کښې دی او که وینځلې شی نو غوره دی کهافي الباب الثانی، هسې د غسل الیدین بعد الطعام استحباب خو متفق علیه دې خو په غسل الید قبل الطعام کښې اختلاف دې جمهور خو دې ته هم مستحب وائی او

بعض علماء لکه سفیان الثوری دې ته مکروه وائی، پس په بعض نسخو کښې دې: ﴿وکان سفیان یکره الوضوء قبل الطعام﴾

[٣٧٦٠] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "خَرَجَ مِنَ الْخَلَاءِ، فَقَدِمَ عَلَيْهِ طَعَامٌ، فَقَالُوا: أَلَا نَأْتِيكَ بِوَضُوءٍ؟ فَقَالَ: إِنَّمَا أُمِرْتُ بِالْوَضُوءِ إِذَا قُمْتُ إِلَى الصَّلَاةِ".

د عبد الله بن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله دبیت الخلا نه راووتو او خوراک ورته پیش کړې شو خلقو عرض وکړو د اودس د پاره درته اوبه راوړو؟ نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل ماته صرف دمونځ دپاره داودس کولو حکم شوې دې.  
 قوله: ﴿عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- خَرَجَ مِنَ الْخَلَاءِ فَقَدِمَ عَلَيْهِ طَعَامٌ فَقَالُوا أَلَا نَأْتِيكَ بِوَضُوءٍ فَقَالَ «أُمِرْتُ بِالْوَضُوءِ إِذَا قُمْتُ إِلَى الصَّلَاةِ»﴾

### شرح الحديث:

يعني يو كرت رسول الله صلی الله علیه و آله د استنجاء كولو نه بهر تشریف راوړلو او چونكه د خوراك وخت وو په دې وجه خوراك راوړلې شو، بعض صحابه كرامو رضي الله عنهم عرض او كړو چه آيا د اودس دپاره اوبه راوړلې شې؟ نو رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائيل چه د اودس حكم خو د اقامت الصلوة په وخت دې.

د حضرت گنگوهي رحمته الله په تقرير كښې دې چه بيا هم احتمال دې چه دلته د اودس نه مراد شرعي اودس مراد وي ځكه چه صحابه كرامو رضي الله عنهم ته معلومه وه چه د رسول الله صلی الله علیه و آله عادت مبارك د مداومت على الطهارة دې، خو هغوى هغه وخت د شرعي اودس نه انكار او فرمائيلو چه د دې هر وخت كيدل ضرورى نه دى. پس په دې صورت كښې نفى د شرعي اودس اوشوه، د لغوى اودس نه يعنى غسل يدين..... د دې كار هغې سره هيڅ عرض نشته، نه نفيا او نه اثباتا، او دا احتمال هم شته چه د ويونكى مراد د اودس نه لغوى اودس مراد وي يعنى غسل يدين، بيا كه څوك داسې اوائى چه دا څنگه كيدي شې چه د اودس نه مراد به اودس لغوى وي، ځكه چه رسول الله صلی الله علیه و آله خو او فرمائيل چه ﴿إِنَّمَا أُمِرْتُ بِالْوَضُوءِ إِذَا قُمْتُ إِلَى الصَّلَاةِ﴾ د قيام الى الصلوة دپاره خو هم هغه شرعي اودس پكار دې نه لغوى اودس. پس د دې جواب به دا وي چه د صحابه كرامو رضي الله عنهم مراد خو د اودس نه لغوى اودس وو خو رسول الله صلی الله علیه و آله اودس لره په شرعي اودس باندې محمول كولو سره مسئله بيان او فرمائيله چه د شرعي اودس ضرورت خو د مانځه دپاره وي او د صحابه كرامو رضي الله عنهم چه كوم مراد وو په اودس سره يعنى د غسل يد د يادولو د هغې جواب رسول الله صلی الله علیه و آله په خپل عمل سره يعنى ترك غسل اليدين سره ظاهر او فرمائيلو. (بذل) والحديث اخرجه الترمذى والنسائى، وقال الترمذى: حديث حسن، وحديث سلمان اخرجه الترمذى، قاله المنذرى.

١: سنن الترمذى بالأطعمة ٤٠ (١٨٤٧)، سنن النسائى بالطهارة ١٠١ (١٣٢)، (تحفة الأشراف: ٥٧٩٣)، وقد أخرجه: صحيح مسلم بالحيفض ٣١ (٣٧٤)، مسند احمد (٢٨٢/١، ٣٥٩) (صحيح)



## باب فِي غَسْلِ الْيَدِ قَبْلَ الطَّعَامِ

د خوراک کولو نه مخکېني د لاسونو وینځلو بیان

[۳۷۶۱] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا قَيْسٌ، عَنْ أَبِي هَاشِمٍ، عَنْ زَادَانَ، عَنْ سَلْمَانَ، قَالَ: قَرَأْتُ فِي التَّوْرَةِ: أَنَّ بَرَكَةَ الطَّعَامِ الْوُضُوءَ قَبْلَهُ، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: بَرَكَةُ الطَّعَامِ الْوُضُوءُ قَبْلَهُ وَالْوُضُوءُ بَعْدَهُ، وَكَانَ سَفِيَّانَ يَكْرَهُ الْوُضُوءَ قَبْلَ الطَّعَامِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهُوَ ضَعِيفٌ.

د سلمان نه روایت دې فرمائی چه مایه تورات کنبې لوستلي وو چه په خوراک کنبې برکت د خوراک و نه مخکېني په اودس کولوسره حاصلېږي ماددې ذکر: نبي ﷺ ته وکړو نبي ﷺ او فرمائيل: په خوراک کنبې برکت په دې سره راځي چه مخکېني او روسته دي ورته اودس او کړې شي، صفیان به د خوراک نه مخکېني اودس کول نه خوښول، امام ابو داود فرمائی دا روایت ضعیف دې.

## باب فِي طَعَامِ الْفَجَاءَةِ

د تادی په وخت کنبې د لاسونو وینځلو نه بغیر د خوراک کولو بیان

[۳۷۶۲] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا عَمِي يَغْنِي سَعِيدُ بْنُ الْحَكَمِ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، أَخْبَرَنِي خَالِدُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّهُ قَالَ: "أَقْبَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ شُعْبٍ مِنَ الْجَبَلِ وَقَدْ قَضَى حَاجَتَهُ، وَبَيْنَ أَيْدِينَا مَرْمَرٌ عَلَى تَرِيٍّ أَوْ حَجَفَةٍ، فَدَعَوْنَاهُ، فَأَكَلَ مَعَنَا وَمَا مَسَّ مَاءٌ".

د جابر بن عبد الله ﷺ نه روایت دې فرمائی چه نبي ﷺ د قضاء حاجت نه فارغ شو اود یوې غونډې نه را واوریدو او تشریف ئې راوړو او زمونږ مخي ته په دې وخت کنبې په یوډال باندې کجورې پرتي وي یا پیالي پرتي وي مونږ نبي ﷺ ته دعوت ورکړو او زمونږ سره ئې کجورې وخورلي او لاسونه ئې اونه وینځل.

د فجاءه په بذل کنبې دوه تفسیرونه دی اول دا چه ناڅاپه چاته دعوت ورکول او چالره په خوراک باندې راغوښتل بغیر د څه تیاری او اهتمام نه، او دویم تفسیر دا چه عین د خوراک په وخت څوک مدعو کول، یعنی د اول نه هغه ته د خوراک خبر نه ورکول، کوم چه بعض خلق د خپل شان خلاف گنړی، او په داسې صورت کنبې هغه نه منظوروی، حال دا چه په حدیث شریف کنبې دی: جابر ﷺ فرمائی چه یو کړت رسول الله ﷺ د یو غرد طرف نه تشریف راوړلو د قضاء حاجت نه پس، چه کله هغوی زمونږ مخي ته تیر شو نو زمونږ مخي ته کهجورې پرتي وې په یو ډهال باندې (کوم چه د پلیت په شان وی) مونږ هغوی ته د کهجورو د خوراک دپاره دعوت ورکړو. رسول الله ﷺ مونږ سره کیناستلو او وې خورلي سبحان الله د رسول الله ﷺ د تواضع څه شان دې... صلوات الله وسلامه علیه.

دلته د فجاءه دواړه معنی چه کومې ذکر کړې شوې بیا موندې شی د دې واقعي نه د تواضع او سادگي اختیارولو سبق ملاویري.

(۱) سنن الترمذي/الأطعمة ۳۹ (۱۸۴۶)، (تحفة الأشراف: ۴۴۸۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۴۱/۵) (ضعيف)

(۲) تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۲۷۰۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۹۷/۳) (ضعيف الإسناد)

## باب فی گراهیه ذم الطعام

په خوراک کښې د عیب راوښکلو د مذمت بیان

[۳۷۶۳] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: "مَا عَابَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَعَامًا قَطُّ إِنْ اشْتَهَاهُ أَكَلَهُ وَإِنْ كَرِهَهُ تَرَكَهُ".

د ابو هريره رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چې رسول الله ﷺ هېڅ کله د خوراک یو څیز ته بدنه دي وئیل که زړه به ئې غوښتل نو اوبه ئې خوړلو او که زړه به ئې نه غوښتل نو نه به ئې خوړل. د دې باب او د دې حدیث مضمون او حواله مونږ سره په «باب ما يقول اذا شرب اللبن» کښې تیره شوې ده نو اعادي ته ئې حاجت نشته. والحديث أخرجه البخاري ومسلم والترمذي وابن ماجه، قاله المنذري.

## باب فی الإجتماع علی الطعام

په جمع د خوراک کولو د فضیلت بیان

[۳۷۶۴] (۲) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي وَحْشِيُّ بْنُ حَزْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ أَصْحَابَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالُوا: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّا نَأْكُلُ وَلَا نَشْبِعُ، قَالَ: فَلَعَلَّكُمْ تَفْتَرِقُونَ؟" قَالُوا: نَعَمْ، قَالَ: فَاجْتَمِعُوا عَلَى طَعَامِكُمْ، وَادْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ يُبَارِكْ لَكُمْ فِيهِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: إِذَا كُنْتُ فِي وَلِيْمَةٍ فَوَضِعَ الْعِشَاءَ فَلَا تَأْكُلُ حَتَّى يَأْذَنَ لَكَ صَاحِبُ الدَّارِ.

وحشی بن حرب دخپل پلار نه او هغه دده د نیکه نه روایت کوي فرمائی چې د نبی ﷺ صحابه کرامو عرض وکړو اي د الله رسوله مونږ خوراک کور لیکن مریږونه، نبی ﷺ او فرمائیل زما کمان دي چې تاسو ځانله ځانله خوراک کړئ هغوی او وئیل هو، نبی ﷺ ورته او فرمائیل تاسو یو ځانې خوراک شروع کړئ او د الله نوم اخلئ په دی کښې به برکت راځي، امام ابو داؤد فرمائی کله چې په تاسو کښې یو کس ته دو لیمي دعوت ورکړې شي او ډوډی ورته کیږي شي نو تر څو پورې چې مضبان اجازت نه وي کړې خوراک شروع کول نه دي پکار.

قوله: «قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا نَأْكُلُ وَلَا نَشْبِعُ. قَالَ «فَلَعَلَّكُمْ تَفْتَرِقُونَ» قَالُوا نَعَمْ. قَالَ «فَاجْتَمِعُوا عَلَى طَعَامِكُمْ وَادْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ يُبَارِكْ لَكُمْ فِيهِ»»

بعض صحابه کرامو رضي الله عنهم رسول الله ﷺ ته عرض وکړو چې يا رسول الله ﷺ! مونږ خوراک کوو خو مریږو نه، رسول الله ﷺ او فرمائیل کیدې شي چې تاسو ځانله ځانله خوراک کوئ؟ هغوی عرض وکړو چې بالکل هم دغه شان ده، رسول الله ﷺ او فرمائیل یو ځانې کیناستلو سره بسم الله وئیلو سره خوراک کوئ بیا به پکښې برکت وي.

والحديث أخرجه ابن ماجه، قاله المنذري

(۱) صحيح البخاري/المناقب ۲۳ (۳۵۶۳)، صحيح مسلم/الأشربة ۳۵ (۲۰۶۴)، سنن الترمذي/البر والصلة ۸۴ (۲۰۳۱)، سنن ابن ماجه/الأطعمة ۴ (۳۲۵۹)، (تحفة الأشراف: ۱۳۴۰۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۷۹، ۴۷۴/۲، ۴۸۱) (صحيح)  
(۲) سنن ابن ماجه/الأطعمة ۱۷ (۳۲۸۶)، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۹۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۵۰۱/۳) (حسن)



## بَابُ التَّسْمِيَةِ عَلَى الطَّعَامِ

د خوراک شروع کولو نه مخکې د بسم الله ونيولويان

د خوراک په شروع کېنې بسم الله ونيول د جمهورو په نزد سنت ده،

[۳۷۶۵] (۱) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ خَلْفٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: "إِذَا دَخَلَ الرَّجُلُ بَيْتَهُ فَذَكَرَ اللَّهَ عِنْدَ دُخُولِهِ وَعِنْدَ طَعَامِهِ قَالَ الشَّيْطَانُ: لَا مَبِيتَ لَكُمْ وَلَا عِشَاءَ، وَإِذَا دَخَلَ فَلَمْ يَذْكُرِ اللَّهَ عِنْدَ دُخُولِهِ قَالَ الشَّيْطَانُ: أَذْرَكْتُمُ الْمَبِيتَ، فَإِذَا لَمْ يَذْكُرِ اللَّهَ عِنْدَ طَعَامِهِ، قَالَ: أَذْرَكْتُمُ الْمَبِيتَ وَالْعِشَاءَ."

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دی فرمائی چې د نبی صلی الله علیه و آله نه مې اوریدلی دی چې فرمایل چې کله چې یو کس خپل کورته داخل شي او د داخلیدو په وخت کېنې او د خوراک په وخت کېنې الله تعالی یاد کړي نو شیطان ووايي دلته نه د خوراک دپاره څه پاتې شو اونه د شپې تیریدو دپاره څه پاتې شو، او کله چې یو کس خپل کورته داخل شي او د داخلیدو په وخت کېنې الله تعالی یاد نکړي نو شیطان ووايي اوس دلته دا وسیدو گنجائش پیدا شو بیا کچري د خوراک په وخت کېنې هم بسم الله ونه وای نو په دې وخت کېنې شیطان ووايي اوس د خوراک او دا وسیدو دواړو دپاره انتظام اوشو.

### مضمون حدیث:

د حدیث الباب مضمون دا دی چې کله یو سړي خپل کور ته په الله پاک د ذکر سره داخل شي (په ظاهر کېنې د دخول بیت دعا مراد ده کومه چې په حدیث کېنې راغلې ده) او د خوراک په وخت بسم الله لولی نو شیطان خپلو کشرانو ته وائي « لا مبيت لكم ولا عشاء » چې اوس به نه تاسو په دې کور کېنې شپه تیره کړئ او نه به په خوراک کېنې ستاسو حصه وي او که بغير د دعا نه کور ته داخل شي نو شیطان خپلو ملگرو ته وائي چې تاسو ته دلته د شپې تیروولو موقع خو ملاؤ شوه او د دې نه پس که هغه سړي په خوراک باندې هم بسم الله اونه لولی نو هغه ورته وائي چې اوس به تاسو ته مبيت او عشاء دواړه ملاویري. والحديث أخرجه مسلم والنسائي وابن ماجه، قاله المنذرى.

وراندې د حذیفه رضي الله عنه حدیث راوان دی چې د هغې مضمون دا دی چې کله مونږ رسول الله صلی الله علیه و آله سره په خوراک کېنې شرکت کولو نو په مونږ کېنې به چا مونږ هم د خوراک دپاره لاس نه ور اوږدلو تر څو چې به رسول الله صلی الله علیه و آله شروع نه فرمائیل (دا یو مستقل ادب شو) وړاندې یو بله واقعه بیانوی چې یو کړت مونږ د رسول الله صلی الله علیه و آله سره خوراک کولو چې ناڅاپه یو باندې چي راغلو په تیزی سره لکه چې هغه له څوک دیکې ورکوی او هغه د راتلو سره خوراک ته لاس راوږد کړو (یعنی بغير د بسم الله نه) رسول الله صلی الله علیه و آله د هغه لاس اونیولو، لږ ساعت پس هم په دغه تیزی سره یوه وینځه دسترخوان ته راغله او راتلو سره هغې هم د خوراک اراده اوکړه.

(۱) صحیح مسلم للأثرية ۱۳ (۲۰۱۸)، سنن ابن ماجه للدعاء ۱۹ (۳۸۸۷)، تحفة الأشراف: (۲۷۹۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۴۶۳، ۳۸۳) (صحیح)

رسول الله ﷺ د هغې هم لاس اونیولو او وې فرمائیل چه بیشکه شیطان د خپل ځان دپاره هغه خوراک حلالوی یعنی په هغې کښې خپله حصه پیدا کول غواړی په کوم باندې چه د الله پاک نوم نه وی اخستلې شوی او په تحقیق سره شیطان دا اعرابی راوستلې وو په خوراک کښې د خپلې حصې د پیدا کولو دپاره هم په دې وجه ما د هغه لاس اونیولو او هم دغه شان د دې وینځې هم، قسم دې په هغه ذات چه د چا په لاس کښې زما ساه ده چه یقینا د شیطان لاس هغه وخت زما په لاس کښې وو د دې دواړو د لاسونو سره،

[۳۷۶۶] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ الْأَعْمَشِ، عَنْ خَيْثَمَةَ، عَنْ أَبِي جُدَيْفَةَ، عَنْ جُدَيْفَةَ، قَالَ: "كُنَّا إِذَا حَضَرْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَعَامًا لَمْ نَضَعْ أَحَدًا يَدَهُ حَتَّى يَبْدَأَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَإِنَّا حَضَرْنَا مَعَهُ طَعَامًا، فَجَاءَ أَعْرَابِيٌّ كَأَنَّمَا يَذْفَعُ فَذَهَبَ لِيَضَعَ يَدَهُ فِي الطَّعَامِ، فَأَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَهُ، ثُمَّ جَاءَتْ جَارِيَةٌ كَأَنَّمَا يَذْفَعُ فَذَهَبَتْ لِيَضَعَ يَدَهَا فِي الطَّعَامِ، فَأَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَهَا، وَقَالَ: إِنَّ الشَّيْطَانَ لَيَسْتَحِلُّ الطَّعَامَ الَّذِي لَمْ يَذْكُرْ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ، وَإِنَّهُ جَاءَ بِهَذَا الْأَعْرَابِيَّ يَسْتَحِلُّ بِهِ فَأَخَذْتُ يَدَهُ، وَجَاءَ بِهَذِهِ الْجَارِيَةِ يَسْتَحِلُّ بِهَا فَأَخَذْتُ يَدَهَا، فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، إِنَّ يَدَهُ لَفِي يَدِي مَعَ أَيْدِيهِمَا".

د حذیفه رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه کله به مونږ د نبی ﷺ سره خوراک ته کیناستونوپه مونږ کښې به هیچا مخکښې خوراک نه شروع کولو ترخوچه به نبی کریم ﷺ شروع نه وه کړي، یوځل مونږ د نبی ﷺ سره خوراک ته کیناستو نوبانده چی په منډه راغې او هغه داسې په منډه را روان وولکه چه څوک ئې دوروسته نه دیکه کوي او په خوراک کښې ئې د شاملید و اراده اوکړه، نبی ﷺ د هغه لاس اونیولو بیا د دینه پس یوه ماشومه په منډه راغله او هغه داسې په منډه را روانه وه لکه چه څوک ئې دوروسته نه دیکه کوي او په خوراک کښې ئې د شاملید و اراده اوکړه، لیکن نبی ﷺ د هغې لاس اونیولو او اولي فرمائیل: شیطان په دې طریقې سره خوراک د ځان دپاره حلالوی په کوم باندې چه د الله تعالی نوم وانه خستل شي، شیطان اول باندې چی راوستو د دې دپاره چه د ځان دپاره خوراک حلال کړي نو په دې وجه مادهغه لاس اونیولو، بیا ئې د ماشومه راوستله چه د دې په ذریعه د ځان دپاره خوراک حلال کړي نو ما د دې لاس هم و نیولو، په هغه ذات مې دې قسم وي د چا په لاس کښې چه زما روح درد شیطان لاس د دوی دواړو د لاسونو سره زما په لاس کښې دې.

د دې حدیث نه چه د تسمیة علی الطعام کوم اهمیت او فائده معلومېږی هغه ښکاره ده، او دا خبره هم ترې نه مستفاد کیږی چه په یو فراخه دسترخوان باندې چه په هغې باندې څو کسان خوراک کوی په هغې کښې صرف دیو یا دوه کسو بسم الله لوستل کافی نه دی بلکه په دسترخوان کښې شریک هر یو لره بسم الله لوستل پکار دی که په دسترخوان کښې د شریک یو کس نه هم بسم الله پاتې شوه نو شیطان ته به د شرکت موقع ملاؤ شي، ځکه چه ښکاره ده چه رسول الله ﷺ او صحابه کرام رضی اللہ عنہم کوم چه د هغوی سره وو او د مخکښې نه ئې خوراک کولو هغوی ټولو بسم الله لوستلې وه.

(۱) صحیح مسلم الاثرية ۱۳ (۲۰۱۷)، (تحفة الأشراف: ۳۳۳۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۸۳/۵، ۳۸۸، ۳۹۷) (صحیح)



ددې حديث نه دا هم معلومه شوه چه شيطان او جنات خوراک کوي، لکه چه په دې باندې کلام په ابواب الاستنجاء کښې (لکم کل عظم لم يذكر اسم الله عليه) کښې تیر شوې دی. د دې نه پس د عائشې رضی اللہ عنہا حديث راروان دې چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چه کوم سرې د خوراک په شروع کښې بسم الله هیره کړی، او بیا ورته په مینځ کښې رایاد شی نو هغه له پکار دی چه داسې وائی: (بِسْمِ اللَّهِ أَوَّلُهُ وَآخِرُهُ).  
والحديث أخرجه مسلم والنسائي، قاله المنذرى.

[۳۷۶۷] (١) حَدَّثَنَا مُؤَمَّلُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ الدَّسْتَوَائِيِّ، عَنْ يَدَيْلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُبَيْدٍ، عَنْ أَمْرَأَةٍ مِنْهُمْ يُقَالُ لَهَا: أَمْرَأَتُهُمْ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "إِذَا أَكَلَ أَحَدُكُمْ فَلْيَذْكُرْ اسْمَ اللَّهِ تَعَالَى، فَإِنْ نَسِيَ أَنْ يَذْكُرَ اسْمَ اللَّهِ تَعَالَى فِي أَوَّلِهِ، فَلْيَقُلْ: بِسْمِ اللَّهِ أَوَّلُهُ وَآخِرُهُ".

دام المومنين عائشة رضی اللہ عنہا نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلي دي: کله چه یوکس په تاسو کښې خوراک شروع کړی نو هغه له پکار دي چه اول د الله تعالی نوم واخلې که چرې په دې وخت کښې دهغه نه د الله نوم اخستل هیرشي نویادي داسې ووائی بسم الله اوله و آخره یعنی د الله په نوم سره خوراک کوم په اول کښې او په اخر کښې.  
مضمون الحديث:

د دې نه پس د امیه بن مخشى رضی اللہ عنہ حديث راروان دې هغوی فرمائی چه یو کورت رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم تشریف فرما وو د هغوی مخې ته یو سرې خوراک کولو هغه بسم الله نه وه لوستلی، هغه هم دغه شان خوراک کولو، چه کله د هغه آخری نمړی پاتې شوه نو هغه (بِسْمِ اللَّهِ أَوَّلُهُ وَآخِرُهُ) اولوستلو، په دې باندې رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم مسکې شو او وې فرمائیل چه د دې سرې سره شيطان مسلسل خوراک کولو، چه کله هغه په اخیره کښې بسم الله اولوستله نو شيطان هغه هر څه چه هغه خوړلی وو هغه ئې قی کرل. یعنی د بسم الله د نه لوستلو د وجې نه چه کومه بې برکتی پیدا کیدله هغه برکت واپس راغلو. او دا هم وئیلې شوې دی چه دا په خپل حقیقت باندې محمول دې ځکه چه هرکله هغه حقیقه خوری نو په واقع کښې قی هم کولې شی. والحديث أخرجه الترمذی والنسائي، قاله المنذرى

[۳۷۶۸] (٢) حَدَّثَنَا مُؤَمَّلُ بْنُ الْفَضْلِ الْخَزَائِيُّ، حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا جَابِرُ بْنُ صَبْرٍ، حَدَّثَنَا الْمُتَنَّى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْخَزَاعِيُّ، عَنْ عَمِّهِ أُمَيَّةَ بْنِ مَخْشِيٍّ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسًا وَجَلَّ يَأْكُلُ، فَلَمْ يَسْمَعْ حَتَّى لَمْ يَبْقَ مِنْ طَعَامِهِ إِلَّا لُقْمَةٌ، فَلَمَّا رَفَعَهَا إِلَى فِيهِ، قَالَ: بِسْمِ اللَّهِ أَوَّلُهُ وَآخِرُهُ، فَضَحِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ قَالَ: مَا زَالَ الشَّيْطَانُ يَأْكُلُ مَعَهُ، فَلَمَّا ذَكَرَ اسْمَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ اسْتَقَاءَ مَا فِي بَطْنِهِ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: جَابِرُ بْنُ صَبْرٍ جَدُّ سَلِيمَانَ بْنِ حَرْبٍ مِنْ قَبْلِ أَقِيهِ.

دامیه بن مخشى نه روایت دې فرمایي چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم ناست وو او یو سرې خوراک کول او بسم

(١) سنن الترمذی/الأطعمة ۴۷ (۱۸۵۸)، (تحفة الأشراف: ۱۷۹۸۸)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه/الأطعمة ۷ (۳۲۶۴)، مسند احمد (۱۴۳/۸، ۲۰۷، ۲۴۶، ۲۶۵)، سنن الدارمی/الأطعمة ۱ (۲۰۶۳) (صحیح)

(٢) تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۶۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۲۷۴) (ضعیف)

الله کې ونه وئيله تردې پورې چې د خوراک نه يوه نورې باقی پاتې شوه کله چې هغه دغه د خورلو دپاره اوچته کړه نورې وئيل چې: بسم الله اوله وآخره «نبي ﷺ چې دا واوريدل نووې خندل اوبيا ئې او فرمايل ددی کس سره شيطان پوښان خوراک کولو کله چې ده دالله نوم واخستو نو شيطان ئې وکړو او دده په خيته کښې چې څه وو هغه يښې وگرځول. والحديث اخرجہ النسائي، قاله المنذرى.

## باب مَا جَاءَ فِي الْأَكْلِ مُتَكِنًا

### د دې وهلو په حالت کښې د خوراک کولو بيان

[۳۷۶۹] (١) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْأَقْمَرِ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا جُحَيْفَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا أَكُلُ مُتَكِنًا".

د ابو جحيفة رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې نبي کریم ﷺ فرمائیلى دی چې زه په داسې حال کښې خوراک نه کوم چې ده مې وهلي وي.

[۳۷۷۱] (٢) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، أَخْبَرَنَا وَكَيْعٌ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سُلَيْمٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا يَقُولُ: "بَعَثَنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَرَجَعْتُ إِلَيْهِ فَوَجَدْتُهُ يَأْكُلُ تَمْرًا وَهُوَ مُقْعٌ".

د مصعب بن سليم نه روایت دې فرمائی چې د انس بن نبي مالک نه مې اوریدلى دی فرمائیلى ئې چې چې يو ځل زه د نبي ﷺ چرته وليکلم نو هرکله چې ورته واپس راغلم نو ما وليد و چې د دې وهلو په حالت کښې ئې کجورې خوړلي.

قوله: (سَمِعْتُ أَنَسًا يَقُولُ بَعَثَنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَجَعْتُ إِلَيْهِ فَوَجَدْتُهُ يَأْكُلُ تَمْرًا مُقْعًا)

### شرح الحديث :

سیدنا انس رضي الله عنه فرمائی چې يو کړت رسول الله ﷺ زه د يو کار دپاره اوليېلم چې کله هغوی ته راواپس شوم نو ما هغوی په داسې حال کښې بيا موندل چې هغوی کججورې خوړلې په ملا باندې ده وهلو سره دخپلو په سرپه ناسته.

دا روایت په شمائل ترمذی کښې هم شته چې په هغې کښې داسې دی (وهو مقع من الجوع) د دې په شرح کښې علامه مناوی فرمائی:

(ای متساندا الی ما ورائه من الضعف الحاصل له بسبب الجوع، ففي القاموس: اقعى فى جلوسه تساند الی ما ورائه، وليس الاستناد من اداب الاكل لانه فعله للضرورة، وقال القارى: ای محتيا مستندا الی ما ورائه من الضعف الحاصل له بالجوع)

د دې حديث نه د رسول الله ﷺ ده وهل ثابت شو، د (اکل متکنا) په باره کښې رسول الله ﷺ خپله فرمائی (لا آکل متکنا) هم په دې وجه تکیه لگولو سره خورک کول

(١): صحيح البخاري/الأطعمة ١٣ (٥٣٩٨)، سنن الترمذي/الأطعمة ٢٨ (١٨٣٠)، سنن ابن ماجه/الأطعمة ٦ (٣٢٦٢)، تحفة الأشراف: ١١٨٠١، وقد أخرجه: مسند احمد (٣٠٩، ٣٠٨/٤)، سنن الدارمي/الأطعمة ٣١ (٢١١٥) (صحيح)  
(٢): صحيح مسلم/الأشربة ٢٤ (٢٠٤٤)، سنن الترمذي/الشمائل (١٤٢)، (تحفة الأشراف: ١٥٩١)، وقد أخرجه: مسند احمد (٢٠٣، ١٨٠/٣)، دي/الأطعمة ٢٦ (٢١٠٦) (صحيح)



خلاف ادب او خلاف سنت دی، خو په دې موقع باندې رسول الله ﷺ تکیه لگولو سره خوراک کولو د عذر جوع د وجې نه، چه د هغې طرف ته راوی خپله اشاره کړې ده، او شارحینو هم خپله د هغې وضاحت کړې دې. والحديث أخرجه البخاری، والترمذی، والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری.

د دې نه روستو روایت کښې دی ﴿ مَا رَأَى رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَأْكُلُ مُتَكِنًا قَطُّ وَلَا يَطْأُ عَقِبَهُ رَجُلَانِ ﴾

[۳۷۷۰] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ ثَابِتِ الْبُنَانِيِّ، عَنْ شُعَيْبِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: "مَا رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْكُلُ مُتَكِنًا قَطُّ، وَلَا يَطْأُ عَقِبَهُ رَجُلَانِ".

د عبد الله بن عمرو بن العاص رضی الله عنه روایت دې فرمائی چه هیڅکله نبی کریم ﷺ په داسې حالت کښې نه دې لیدلې شوې چه د ډډې وهلو په حال کښې ئې خوراک کړې وی او چه کله به دوه کسان ورپسې وو نود تواضع د وجې نه به دهغوی رضی الله عنه نه مخکښې کیدو.

### شرح الحديث :

یعنی رسول الله ﷺ کله هم په تکیه لگولو سره په خوراک باندې نه دې لیدلې شوې، او نه به د رسول الله ﷺ د خپو چاپونه وړانول دوه سړو... یعنی دوه سړی به په رسول الله ﷺ پسې شاته شاته نه تلل، یعنی د رسول الله ﷺ عادت مبارک د تلو په وخت د خپلو ملگرو نه د وړاندې تلو نه وو ﴿ اما ان یمشی خلفهم کما جاء او یمضی فیهم ﴾ بلکه یا خو به رسول الله ﷺ شاته روان وو یا د خپلو ملگرو سره یو ځای په ﴿ رجلان ﴾ کښې مشهوره دا ده چه ﴿ بفتح الراء وضم الجیم ﴾ دې لکه چه په ترجمه کښې اختیار کړې شوې ده دویم احتمال د راء د کسرې او د جیم د سکون دې. یعنی قدمین، ﴿ یعنی لا یمشی خلفه احد ذو رجلین ﴾ (بذل)

### د آکل متکنا مصداق او تفسیر :

د آکل متکنا خو تفسیرونه کړې شوې دی یو دا چه : ﴿ ان یتمکن فی الجلوس للاکل علی ای صفة کان ﴾ یعنی ښه کلک کیناستلو سره خوراک پکار دې هر څنگه چه وی، داسې ناستې سره به هم هغه سړې خوراک کوی چه د چا خوراک زیات وی، د زیات خوراک عادت وی، ﴿ وقیل ان یمیل علی احد شقیه ﴾ یعنی یو طرف ته ښکته کیدو سره خوراک کول، ښی یا گس طرف ته په څه څیز باندې تکیه لگولو سره، ﴿ وقیل ان یعتمد علی یده الیسری من الارض ﴾ یعنی په گس لاس باندې په زمکه باندې تکیه لگول چه په داسې ناسته باندې منع په بعضو روایتونو کښې مطلقا هم راغلي دې بغیر د خوراک نه، خطابي ﷺ فرمائی چه اکثر خلق دا گنړې چه د متکني معنی ښی یا گس طرف ته په ډډه باندې کیناستل دی حال دا چه داسې نه ده، بلکه متکني هغه سړې دې چه په گدئ کیناستلو یا په تکیه باندې کیناستلو سره خوراک کوی، خو ابن الجوزي ﷺ د اتکاء هم هغه معنی اخستلې ده د کوم د تخصیص نه چه خطابي انکار کړې دې یعنی ښی یا گس طرف ته ډډه وهل او ملا علی قاری ﷺ په

(۱) سنن ابن ماجه / المقدمة ۲۱ (۲۴۴)، (تحفة الأشراف: ۸۶۵۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۶۷، ۱۶۵/۲) (صحیح)

مرقاۃ کښې د بعضو محققینو نه نقل کړی دی چه د دې نه مراد پرلت وهلو سره خوراک کول دی ځکه چه دا هیئت هم هغه سرې اختیاری کوم چه د زیات خوراک عادت وی، او دا د تکبر علامت هم دې.

### د خوراک په وخت د ناستې غوره طریقه :

حافظ فرمائی : غوره په صفت د جلوس کښې دا ده چه د په دواړو کونډو او په ظهور د قدمین باندې کیناستلو سره خوراک اوکړی او یا ښی کونډی اودروی او گسه او غوروی، او حضرت په بذل کښې د حضرت گنگوهی د تقریر نه نقل کړی دی چه غوره او مقبول هیئت په خوراک کښې هم هغه دې چه په هغې کښې د خوراک طرف ته پوره توجه بیا موندلې شی (چه د الله پاک یو نعمت دې) او هغه هیئت داسې نه دی کیدل پکار چه په هغې کښې زیات خوراک کولې شی د خیتې د فراخه کیدو د وجې نه (لکه د پرلت وهلو په وخت کښ) او نه هغه هیئت د متکبرینو وی، پس په کوم هیئت کښې چه دا درې واړه صفات اوموندلې شی هغه به د ټولو نه افضل وی او په کوم کښې چه صرف دوه بیا موندلې شی یا یو هغه به د دې نه د کمې درجې وی. اهه زیاده، والحديث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى.

### بَابُ مَا جَاءَ فِي الْأَكْلِ مِنْ أَعْلَى الصَّحْفَةِ

د کاسې د مینځ نه د خوراک کولو بیان

[۳۷۷۲] (۱) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "إِذَا أَكَلْتَ أَحَدَكُمْ طَعَامًا فَلَا يَأْكُلُ مِنْ أَعْلَى الصَّحْفَةِ وَلَكِنْ يَأْكُلُ مِنْ أَسْفَلِهَا فَإِنَّ الْبَرَكَهَ تَنْزِلُ مِنْ أَعْلَاهَا".

د عبدالله بن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی کله چه په تاسو کښې یوکس خوراک کوي نو د کاسې د مینځ نه دي نه خوري بلکه دیو طرف نه دي خوري ځکه چه برکت د دې په مینځ کښې اچولې شي (اوبیا غاړو ته راخوریږي). په حدیث الباب کښې دا دی چه رسول الله صلی الله علیه و آله ارشاد او فرمائیلو چه کله په تاسو کښې څوک خوراک کوی نو د کاسې د پورته طرف نه دې کوی یعنی د مینځ نه دې نه خوری بلکه د هغې نه د لاندې حصې یعنی خپلې مخې نه دې خوری، روستو رسول الله صلی الله علیه و آله د دې حکمت ارشاد فرمائیلي دې چه دا په دې وجه چه په مینځ د کاسې کښې برکت نازلیري. لهذا د هغې تقاضا دا ده چه د مینځ حصه د خوراک نه خالی کیدل نه دی پکار دې دپاره چه په هغې باندې مسلسل برکت نازلیري.

والحديث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى.

(۱) سنن الترمذی / الأطلعة ۱۳ (۱۸۰۵)، سنن ابن ماجه / الأطلعة ۱۲ (۳۲۷۷)، (تحفة الأشراف: ۵۵۶۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۷۰/۱، ۳۰۰، ۳۴۳، ۳۴۵، ۳۶۴)، سنن الدارمي / الأطلعة ۱۶ (۲۰۹۰) (صحيح)



[۳۷۷۳] (۱) حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عُثْمَانَ الْحَمَصِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عِرْقٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بُسْرِ، قَالَ: "كَانَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَصْعَةٌ يُقَالُ لَهَا: الْغَرَاءُ، يَحْمِلُهَا أَرْبَعَةُ رِجَالٍ، فَلَمَّا أَضْحَوْا وَسَجَدُوا الضُّحَى أَتَى بِتِلْكَ الْقَصْعَةِ يَعْنِي وَقَدْ ثُرَ فِيهَا، فَالْتَفَتُوا عَلَيْهَا، فَلَمَّا كَثُرُوا جَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ أَعْرَابِي: مَا هَذِهِ الْجِلْسَةُ؟ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ جَعَلَنِي عَبْدًا كَرِيمًا، وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا عَنِيدًا، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كُلُوا مِنْ حَوْلِهَا وَدَعُوا ذُرْوَتَهَا يَبَارِكُ فِيهَا".

دعبدالله بن بسر رضی اللہ عنہ نه روایت دی فرمائی چه دنبی صلی اللہ علیہ وسلم د الغراء په نوم باندې یوه لویه کاسه وه کومه چه خلورو کسانو اوچتوله کله چه داشراق دمونځ وخت شونودرې صلاة الضحی وکړو اودا کاسه راوړي شوه او دثريد نه ډکه وه هرکله چه گټه جوړه شوه اودوی ورنه چاپیره شول نونبی صلی اللہ علیہ وسلم خپل زنگنونه سیده کرل اوکیناستو نو په دې وخت کښې یواعرابی ووثیل داد ناستی څرنگه طریقه ده نبی صلی اللہ علیہ وسلم اوفرمائیل یقینازه الله تعالی نیک بنده جوړ کړي یم اوالله تعالی تکبرکونکي نه یم جوړ کړي اوبیاني داهم اوفرمائیل چه دکاسې دغاړونه خوری او مینځ ئې پریرېدی.

قوله: ﴿كَانَ لِلنَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَصْعَةٌ يُقَالُ لَهَا الْغَرَاءُ يَحْمِلُهَا أَرْبَعَةُ رِجَالٍ فَلَمَّا أَضْحَوْا وَسَجَدُوا الضُّحَى أَتَى بِتِلْكَ الْقَصْعَةِ الْخ﴾

رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او صحابه کرام رضی اللہ عنہم چه به

یو ځای په کوم لونبی کښې خوراک فرمائیلو

یعنی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او د هغوی صحابه کرام رضی اللہ عنہم چه به په کوم لونبی کښې خوراک فرمائیلو هغه یو لویه پیاله وه کومه چه به خلورو کسانو راوړله او په هغې کښې به ثريد اچولې شوې وو. د دې بیالې نوم غراء وو، پس چه کله به د څابښت وخت شو او صحابه کرام رضی اللہ عنہم به د څابښت مونځ اوکړو نو دا پیاله به راوړلې شوه ټول حضرات به د هغې نه چاپیره د حلقې په شکل کښې کیناستل یو کړت چه کله خوراک کونکی زیات شونو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم راغونډ په دواړو کونډو باندې کیناستلو (ښکاره خبره ده چه دا ډیر د تواضع هیئت دې هم په دې وجه، یو اعرابی اووې. دا د ناستې څنگه هیئت دې؟ په دې باندې رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم اوفرمائیل ﴿إِنَّ اللَّهَ جَعَلَنِي عَبْدًا كَرِيمًا وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا عَنِيدًا﴾ چه الله پاک زه شریف الطبع انسان پیدا کړې یم، او متکبر او سخت خوئی والا ئې نه یم جوړ کړې. بیا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم اوفرمائیل د دې پیالې د خلورو واړو طرفونو نه خوراک کوئ، او د دې د مینځ حصه پریرېدی چه په دې کښې برکت نازلېږی.

په شمائل ترمذی کښې د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د قدح ذکر هم راخی چه په هغې باندې امام ترمذی رحمته اللہ علیہ مستقل باب تړلې دې چه په هغې کښې دا دی: ﴿عَنْ ثَابِتٍ قَالَ أَخْرَجَ الْإِنْسَانُ بَنَ مَالِكٍ قَدَحَ خَشَبٍ غُلِظَ مَضْبَا بِحَدِيدٍ الْحَدِيثُ﴾ یعنی د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د لرگی یو پیاله وه چه په هغې کښې د اوسپنې پتری لکیدلې وو، چه د هغې په باره کښې انس رضی اللہ عنہ دا هم

(۱) سنن ابن ماجه/الأطعمة ۶ (۳۲۶۳)، ۱۲ (۳۲۷۵)، (تحفة الأشراف: ۵۱۹۹)، وقد أخرجه: سنن الدارمي/الأطعمة ۱۶ (۲۰۹۰) (صحيح)

فرمائی چه رسول الله ﷺ به د خکلو ټول څیزونه په دې پیاله باندې خکل ﴿الماء والنیل والعسل واللبن﴾ او دا غراء د کوم چه په حدیث الباب کښې ذکر دې د یو لوڼې لوڼی نوم دې چه په هغې کښې به رسول الله ﷺ او صحابه کرامو رضی الله عنہم یو ځانې ثرید خوړلو. والحديث أخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى.

[۳۷۷۸] (۱) حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مَعْشَرٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تَقْطَعُوا اللَّحْمَ بِالسَّكِينِ فَإِنَّهُ مِنْ صَنِيعِ الْأَعَاجِمِ، وَأَنْتُمْ سَوَةٌ فَإِنَّهُ أَهْنَأُ وَأَمْرَأُ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَلَيْسَ هُوَ بِالْقَوِيِّ.

دام المومنين عائشة رضی الله عنها نه روایت دې فرمائی چه رسول الله فرمائیلی دی غوښه به په چاره نه پریکوي (د پخیدونه پس) ځکه چه دا د عجمیانو طریقه ده بلکه په غاښونو به ئې پریکوي ځکه چه په دې کښې لذت زیات وي او زر هضم کیږي. قوله: ﴿لَا تَقْطَعُوا اللَّحْمَ بِالسَّكِينِ فَإِنَّهُ مِنْ صَنِيعِ الْأَعَاجِمِ﴾

په قطع اللحم بالسکین کښې اختلاف د روایتونو:

په دې حدیث کښې په چرې سره د غوښې د پرې کولو نه منع کړې شوې ده چه دا د عجمیانو طریقه ده او رسول الله ﷺ فرمائی چه غوښه په خپلو غاښونو باندې راښکلو سره خورئ چه هغه ډیر مزیداره لگی.

د دې حدیث ذکر د الدر المنضود په مقدمه کښې راغلې دې چه دا په هغه احادیثو کښې دې په کوم باندې چه ابن الجوزي رحمه الله د وضع حکم لگولي دي، خو موضوعی وئیل خو گران دی او ضعیف ورته وئیلی کیدې شی، په صحاح سته کښې ان شاء الله سوا د ابن ماجه د بعض احادیثو نه هیڅ حدیث موضوعی نشته.

په چاره باندې د غوښې د پرې کولو ثبوت په روایاتو کښې موجود دې لکه چه په کتاب الطهارة ﴿باب فی ترک الوضوء مما مست النار﴾ کښې په حدیث تیر شوې دې. ﴿واخذ الشفرة فجعل يجزئ بها منه﴾ وقد تقدم الكلام هناك..... یو توجیه چه کومه هلته نه ده تیره شوې هغه دا ده چه منع د هغه غوښې سره متعلق ده چه ښه پخه شوې وي. ﴿قد تأمل نضجه﴾ ځکه چه هلته په چرې باندې د پرې کولو حاجت هم نه وي د نرمیدو د وجې نه په لاس باندې کار چلیدې شی.

بَاب مَا جَاءَ فِي الْجُلُوسِ عَلَى مَا بَدَأَ عَلَيْهَا بَعْضُ مَا يُكْرَهُ

په کوم دسترخوان چه نا جائزه څیزونه پراته وي هلته د کیناستلو بیان

[۳۷۷۹] (۲) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا كَثِيرُ بْنُ هِشَامٍ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ بُرْقَانَ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ مَطْعَمَيْنِ: عَنِ الْجُلُوسِ عَلَى مَا بَدَأَ يَشْرَبُ عَلَيْهَا الْخَمْرُ، وَأَنْ يَأْكُلَ الرَّجُلُ وَهُوَ مُنْبَطِحٌ عَلَى بَطْنِهِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا الْحَدِيثُ لَمْ يَنْمَعْهُ جَعْفَرُ بْنُ الزُّهْرِيِّ، وَهُوَ مُنْكَرٌ.

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۷۲۵۱) (ضعيف)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۶۸۰۹)، وقد أخرجه: سنن النسائي / الكبرى (۶۱۰۷)، سنن ابن ماجه / الأطلعة ۶۲

(۳۳۳۰) (حسن)



سالم دخپل پلار عبدالله رضي الله عنه نه روايت كوي فرمائي چه نبی عليه السلام د دوه قسمه خوراك كولونه منع فرمائيلې ده يو خوڼې په داسې دسترخوان باندې دخوراك كولونه منع فرمائيلې ده په كوم چه شراب استعمالېږي دويم په نسكوره باندې دخوراك كولونه، امام ابو داؤد نرمائي دا حديث منكر د دا حديث جعفر بن برقان د زهري نه نه دې اوريدلې.  
په حديث الباب كښې دا دى چه رسول الله صلى الله عليه وسلم د دوه قسمه خوراكونو نه منع فرمائيلې ده، يو په هغه دسترخوان باندې چرته چه شراب خكلې كيږي، او يو دا چه انسان داسې خوراك او كړي چه هغه په خپته باندې ملاست وي. والحديث اخرجه النسائي.

[۳۷۷۵] (۱) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ زَيْدٍ بْنُ أَبِي الزَّرْقَاءِ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا جَعْفَرُ، أَنَّهُ بَلَغَهُ عَنِ الزُّهْرِيِّ بِهَذَا الْحَدِيثِ.

د جعفر نه روايت دې فرمائي چه ماته د زهري نه د تير شوي حديث په شان حديث رارسيدلې دې.

### بَابُ الْأَكْلِ بِالْيَمِينِ

په ښي لاس باندې دخوراك كولوييان

[۳۷۷۶] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، عَنْ جَدِّهِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "إِذَا أَكَلَ أَحَدُكُمْ فَلْيَأْكُلْ بِيَمِينِهِ، وَإِذَا شَرِبَ فَلْيَشْرَبْ بِيَمِينِهِ، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَأْكُلُ بِشِمَالِهِ وَيَشْرَبُ بِشِمَالِهِ".

دا بن عمر رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه رسول الله صلى الله عليه وسلم فرمائيلې دى كله چه خوراك كوي يو كس په تاسو كښې نوخوري دي په ښي لاس باندې، او كله چه شكل كوي نو خكل دي كوي په ښي لاس باندې يقينا شيطان په چپ لاس باندې خوراك او خكل كوي.

﴿ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَأْكُلُ بِشِمَالِهِ وَيَشْرَبُ بِشِمَالِهِ ﴾ دا حديث د جمهورو په نزد په حقيقت باندې محمول دې، قال فى النيل ﴿ والذي عليه الجمهور من السلف والخلف من المحدثين وغيرهم أن أكل الشيطان محمول على ظاهره وأن للشيطان يدين ورجلين وفيهم ذكر وأنثى وأنه يأكل حقيقة بيده إذا لم يدفع وقيل إن أكلهم على المجاز والاستعارة وقيل أن أكلهم شم واسترواح ولا ملجى إلى شيء من ذلك ﴾ اه په ابواب الاستنجاء كښې تقريبا دا ټول مضمون تير شوې دې، دا چه تير شو چه دا حديث په مجاز باندې محمول دې يعنى معنى مجازى دا كيدې شى چه ﴿ انه يامر بذلك ويحرض عليه ﴾ يعنى په گس لاس باندې شيطان تيارول كوي. والحديث اخرجه مسلم والترمذى والنسائي قاله المنذرى.

[۳۷۷۷] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَانَ لَوْثْنٌ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلَالٍ، عَنْ أَبِي وَجْزَةَ، عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا نُبِئَ، فَسَمِّ اللَّهَ وَكُلْ بِيَمِينِكَ وَكُلْ مِمَّا يَلِيكَ".

(۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۶۸۰۹) (حسن لغيره)  
(۲) صحيح مسلم/الأشربة ۱۳ (۲۰۲۰)، سنن الترمذي/الأطعمة ۹ (۱۷۹۹)، (تحفة الأشراف: ۸۵۷۹)، وقد أخرجه: موطا  
امام مالك/صفة النبي ۴ (۶)، مسند احمد (۱۴۶، ۱۰۶، ۳۳، ۸/۲)، سنن الدارمي/الأطعمة ۹ (۲۰۷۳) (صحيح)  
(۳) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۶۸۹)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/الأطعمة ۲ (۵۳۷۶)، صحيح مسلم/الأشربة  
۱۳ (۲۰۲۲)، سنن الترمذي/الأطعمة ۴۷ (۱۸۵۷)، سنن ابن ماجه/الأطعمة ۷ (۳۲۶۷)، موطا امام مالك/صفة النبي ۱۰ (۳۲)،  
مسند احمد (۲۷/۴)، سنن الدارمي/الأطعمة ۱ (۲۰۶۲) (صحيح)

د ابوسلمه نه روایت دې فرمائی چې نبی کریم ﷺ فرمائیلی دی رانزدې شه ای بچورپه دالله نوم یاد کړه او په نبی لاس باندې خوره او خوراک کوه دهغه ځانې نه کوم چه تاته نزدې وي. قوله: «عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- «إِذْنُ مَنِي الْخ»»

په بعض نسخو کښې د دې نه پس د «یا بنی» زیادت دې، ځکه چه دا عمر بن ابی سلمه د ام المومنین ام سلمه رضی الله عنها ځونې دې د هغوی درومبې خاوند ابوسلمه رضی الله عنه، هم په دې وجه رسول الله ﷺ او فرمائیل «یا بنی»

په دې حدیث کښې دوه اداب ذکر دی یو «اکل باليمين» او د کاسې د غاړې نه کومه چه خوراک کونکې ته نزدې وی د هغې نه خوراک کول. کما تقدم باب الاكل من اعلى الصفحة. والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والنسائی وابن ماجه من حدیث ابی نعیم، وهب بن کيسان، عن عمر بن ابی سلمه بنحوه واخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه من حدیث عروة بن الزبير عن عمر بن ابی سلمه، قاله المنذرى.

## باب فِي أَكْلِ اللَّحْمِ

د غوښې خوړلو بیان

[۳۷۷۹] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى، حَدَّثَنَا ابْنُ عُثَيْمٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ إِسْمَاقٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مُعَاوِيَةَ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ أَبِي سُلَيْمَانَ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ أُمَيَّةَ، قَالَ: «كُنْتُ أَكُلُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَخَذَ اللَّحْمَ بِيَدَيْ مِنَ الْعَظْمِ، فَقَالَ: أَذِنَ الْعَظْمُ مِنْ فَيْكِ فَإِنَّهُ أَهْنَأُ وَأَمْرَأُ»، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: عُثْمَانُ لَمْ يَسْمَعْ مِنْ صَفْوَانَ وَهُوَ مُرْسَلٌ.

د صفوان بن امیه رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چې ما د نبی ﷺ سره خوراک کولو او مابه غوښه د هند وکونه جدا کوله نبی ﷺ او فرمائیل هډوکې خولې ته نزدې کړه ځکه چه په دې طریقې سره د غوښې په خوړلو کښې خوند زیات وي او زړهضم کیږي. په ظاهر کښې مراد صفة الاكل یعنی د غوښې د خوراک طریقہ بیانول دی. پس مضمون د حدیث دادې صفوان بن امیه رضی الله عنه فرمائی چې یو کړت ما د رسول الله ﷺ سره خوراک کولو داسې چه د هډوکې نه مې غوښه شوکوله او هغه مې خوړله، رسول الله ﷺ او فرمائیل داسې مه کوه بلکه هم دا هډوکې خولې ته نزدې کړه او په غاښونو باندې ئې راوشو کوه چه داسې ډیره مزیداره لگی.

[۳۷۸۰] حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، عَنْ زُهَيْرٍ، عَنْ أَبِي إِسْمَاقٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ عِيَّاضٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: «كَانَ أَحَبَّ الْعُرَاقِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عُرَاقُ الشَّاةِ».

د عبد الله بن مسعود رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چې په ټولو هډوکو کښې د نبی ﷺ د چیلې د غوښې هډوکې خوښ وو.

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۴۹۴۶)، وقد أخرجه: سنن الترمذی/الأطعمة ۳۲ (۱۸۳۵)، مسند احمد (۴۰۱/۳)،

۲: سنن الدارمی/الأطعمة ۳۰ (۲۱۱۴) (ضعیف)

۳: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۲۳۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۹۷/۱) (صحیح)



## مضمون حدیث :

قوله: «كَانَ أَحَبَّ الْفَرَاقِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- عُرَاقُ الشَّاةِ»

عراق د عرق جمع ده هغه هډوکي چه په هغې باندې غوښه وي، يعنې د رسول الله ﷺ بيزې هغه غوښه ډيره خوښه وه کومه چه په هډوکي باندې لگيدلې وي، بعض خلق خالصه د غوښې بوتې خوښوي او بعضو ته د هډوکي والا غوښه خوښه وي د رسول الله ﷺ هم دا قسم غوښه خوښه وه والحديث اخرجه النسائي، قاله المنذرى

او د دې نه روستو روايت کښې راځي « اَنَّ النَّبِيَّ -صلى الله عليه وسلم- يُفْجِئُهُ الذَّرَاعُ. قَالَ وَسَمَّ فِي الذَّرَاعِ وَكَانَ يَرَى أَنَّ الْيَهُودَ هُمْ سَمُوهُ»

يعنې د رسول الله ﷺ د لاس غوښه خوښه وه هم په دې وجه رسول الله ﷺ ته زهر ورکونکې هم په دې کښې زهر ورکړې وو ځکه چه هغه ته معلومه وه چه د رسول الله ﷺ ذراع خوښ دې او هغوی به هم دا خوري.

[۳۷۸۱] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ بِهَذَا الْإِسْنَادِ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْجِبُهُ الذَّرَاعُ، قَالَ: وَسَمَّ فِي الذَّرَاعِ وَكَانَ يَرَى أَنَّ الْيَهُودَ هُمْ سَمُوهُ.

امام ابوداؤد والي په دې سند سره د عبداللہ بن مسعود نه مروی دي چه د نبی ﷺ به د څنگل غوښه ډيره خوښه وه اونبې ﷺ ته د څنگل په غوښه کښې زهر ورکړې شوي وو اودهغه دا خیال وو چه په دې کښې زهر یهودیانو اچولي دي.

(زهر ورکونکې څوک وو؟)

رسول الله ﷺ ته زهر کوم یهودی ورکړې وو د هغې په باره کښې حدیث په کتاب الدیات کښې راروان دي. « باب فی من سقى رجلا سما او اطعمه فمات ایقاد منه » د لاندې... هلته د دې سلسلې ډیر روایتونه دی هلته دا هم دی: قال ابوداؤد هذه اخت محرب اليهودية... یعنی کومې یهودی زنانه چه رسول الله ﷺ ته زهر ورکړې وو هغه د مرحب خور وه، د چه نوم دهغې زینب بنت الحارث وو، « وذكر الزهري انها اسلمت اه » من المذل او د ابن الجوزي رحمه الله په تلخیص صفحه ۴۵ کښې دا هم دی چه دا زنانه د سلام بن مشکم ښځه وه. والحديث اخرجه الترمذی، وقد اخرج البخاری ومسلم من حديث ابی زرعه بن عمرو بن حمر عن ابی هريرة رضي الله عنهما ان رسول الله ﷺ رفع اليه الذراع وكانت تعجبه الحديث. قاله المنذرى.

باب فِي أَكْلِ الدُّبَاءِ

د کدو خوړلو بیان

د دبء ذکر په اوعیه د نیبذ کښې تیر شوې دي یعنی کدو کوم ته چه لوکی هم وئیلې شی، بعض په دې کښې مستطیل وی، بعض مستدیر، د نیبذ جوړولو دپاره خو زیات مناسب مستدیر وی چه د پیاله په شکل کښې وی، بهر حال هر یو چه وی دا د بهر نه شین وی او دننه سپین وی. ددې مغز نرم او نری وی. اطباء و د دې ډیرې فائدي لیکلې دي حضرت شیخ

(۱): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۹۲۳۳) (صحیح)

ﷺ په خصائل نبوی ﷺ کښې لیکي: د کدو فوائد علماء حدیث ډیر زیات لیکلي دي او د طب په کتابونو کښې هم د دې ډیر فوائد لیکلي شوي دي. د هغه ټولو نه دا هم ده چه عقل تیزوي، دماغو ته طاقت ورکوي. اه..... د کدو یو قسم بل دې چه د هغې د بهر نه رنګ ګلابی شان وي او دننه زیر کوم ته چه خوړې کدو وائی کوم چه دلته ( ) په حجاز کښې هم وی خو د کمی سره..... هغه د دې نه مراد نه دي، ځکه چه کوم کدو رسول الله ﷺ ته محبوب وو د هغې په باره کښې په یو روایت کښې دا راغلي دي «عن جابر بن طارق ؓ قال دخلت على النبي ﷺ فرأيت عنده دباء يقطع، فقلت ما هذا؟ قال نكث به طعامنا» (شمائل) د دې نه معلومیږي چه دا کدو به په غوښه وغیره نورو ترکارو کښې اچولې شو چه په هغې سره به په ترکاري کښې اضافه کیدله. دا خبره د کدو په دې دویم قسم کښې نه شی موندلې، دا خو مستقل پخولي شی. والله تعالی اعلم.

[۳۷۸۲] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ: "إِنَّ خِيَاطًا دَعَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَطْعَامٍ صَنَعَهُ، قَالَ أَنَسُ: قَدْ هَبْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى ذَلِكَ الطَّعَامِ، فَقَرَّبَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خُبْزًا مِنْ شَعِيرٍ، وَمَرَقًا فِيهِ دُبَّاءٌ وَقَدِيدٌ، قَالَ أَنَسُ: فَرَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَتَبَعُ الدُّبَّاءَ مِنْ حَوَالِي الصَّحْفَةِ، فَلَمْ أَزَلْ أَحِبُّ الدُّبَّاءَ بَعْدَ يَوْمَيْهِ".

دانس بن مالک ؓ نه روایت دې فرمائی چه یو درزی (خیات) یوه ورځ نبی ﷺ ته دعوت ورکړو انس وائی د نبی ﷺ سره ډغه دعوت ته زه هم لارم نبی ﷺ ته دوږشو ډوډی اوشورواه اوکدو اویشیدلې غوښه پیش کړې شوه انس ؓ وائی مانبي ﷺ اولیدو چه داسې په گوټونو کښې به ئې د کدو چندي لټولي نوزه دهغې ورځي نه د کدو خوړل خوښوم. قوله: «إِنَّ خِيَاطًا دَعَا رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- لَطْعَامٍ صَنَعَهُ»

یعنی یو درزی رسول الله ﷺ ته د خوراک دعوت ورکړو، انس ؓ فرمائی چه په دې دعوت کښې زه هم د هغوی سره لارم، دې داعی د رسول الله ﷺ مخې ته د اورېشو ډوډی او خوروا کیخودله چه په هغې کښې ئې کدو او غوښه پیش کړه، سیدنا انس ؓ فرمائی چه ما رسول الله ﷺ اولیدو چه رسول الله ﷺ به په تالی کښې د کدو ډکړې کتلې. «فَلَمْ أَزَلْ أَحِبُّ الدُّبَّاءَ بَعْدَ يَوْمَيْهِ»

د دې خیاط په باره کښې په یو روایت کښې دی چه هغه د رسول الله ﷺ غلام او آزاد کرده وو. والحديث أخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي، قاله المنذرى.

.....

(۱) دا لیکل چونکه په حجاز کښې شوي وو په دې وجه لفظ دلته اولیکلي شو.  
(۲) صحيح البخاري/البیوع ۳۰ (۲۰۹۲)، الأطعمة ۴ (۵۳۷۹)، ۲۵ (۵۴۲۰)، صحيح مسلم/الأشربة ۲۱ (۲۰۴۱)، سنن الترمذي/الأطعمة ۴۲ (۱۸۵۰)، سنن ابن ماجه/الأطعمة ۲۶ (۳۳۰۴)، (تحفة الأشراف: ۱۹۸)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/الانكاح ۲۱ (۵۱)، مسند احمد (۱۵۰/۳)، سنن الدارمي/الأطعمة ۱۹ (۲۰۹۴) (صحيح)



## بَابُ فِي أَكْلِ الثَّرِيدِ

### د ثريد (ماته شوې ډوډي) خوړلو بيان

[۳۷۸۳] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَسَّانَ السَّمْتِيُّ، حَدَّثَنَا الْمُبَارَكُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ رَجُلٍ مِّنْ أَهْلِ الْبَصْرَةِ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "كَانَ أَحَبَّ الطَّعَامِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الثَّرِيدُ مِنَ الْخُبْزِ، وَالثَّرِيدُ مِنَ الْحَنِيِّسِ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهُوَ ضَعِيفٌ.

د عبد الله بن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې د نبی صلی الله علیه و آله به ټولو خوراګونو کېنې ډوډي ترید او د حسیس ترید ډیر خوښ وو، امام ابو داود فرمائی دا روایت ضعیف دې. قوله: عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "كَانَ أَحَبَّ الطَّعَامِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الثَّرِيدُ مِنَ الْخُبْزِ، وَالثَّرِيدُ مِنَ الْحَنِيِّسِ"، ترید د خوراک یو خاص قسم دې مشهوره ده چې د ډوډي ټکړې په غوښه او خوروا کېنې ګډولې شي د دې حدیث نه معلومه شوه چې د ترید دوه قسمونه دي په یو کېنې صرف د غوښې او د ډوډي ټکړې وي، دا خو مالګین ترید شو. او یو ترید هغه دې کوم چې د ډوډي د ټکړو سره د کھجورو او پنیر او غوړو په یو ځایي کولو باندې جوړولې شي، دا ګویا خوړ ترید شو، په دې حدیث کېنې دا دی چې د رسول الله صلی الله علیه و آله دا دواړه خوښ وو. د ترید په احادیثو کېنې په کثرت سره تعریف راغلي دي، په دې کېنې ډیرې خوبیانې دي، د لذت سره سره په کېنې غذائیت او په خوراک کېنې ډیر زیات لطیف او نرم وی چې میده کول هم نه غواړي، په سهولت سره هضمیږي، یو مشهور حدیث دې ﴿فَضْلُ عَائِشَةَ عَلَى النَّسَاءِ كَفَضْلِ الثَّرِيدِ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ﴾ په دې باندې په حاشیه د خصائل کېنې لیکلې دي: یعنی کما ان الثريد جامع لفوائد شتى من الغذائية واللذة والقوة حتى قيل انه يعيد الشيخ الى صباه، كذلك هي تجمع بين فضائل شتى من الفضل، والفقه والفصاحة والفظانة وغيرها. اهـ

## بَابُ فِي كَرَاهِيَةِ التَّقَدُّرِ لِلطَّعَامِ

### په خوراک کېنې د نفرت (ناخوښي) کولو بیان

یعنی د خوراک د خیز نه کرکه کول او اظهار د کراهت

[۳۷۸۴] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا سِمَاكُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنِي قَبِيصَةُ بْنُ هَلَبٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَسَّأَلَهُ رَجُلٌ، فَقَالَ: "إِنَّ مِنَ الطَّعَامِ طَعَامًا أُخْرِجَ مِنْهُ؟" فَقَالَ: لَا يَخْلُجَنَّ فِي صَدْرِكَ شَيْءٌ عَصَا رَعَتْ فِيهِ النَّصْرَانِيَّةُ."

قبيصه بن هلب دخپل پلار نه روایت کوي فرمائی چې د نبی کریم نه مې اوریدلی دی چې بوکس ورنه تپوس او کړو د خوراک په خیزونو کېنې بعضې داسې دي چې زه ئې پاک نه ګنم نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل ستا په زړه کېنې دی داسې سوچ پیدا نشي په کوم باندې چې نصرانیان مبتلا وو (ځکه چې هغوی به په هر خیز کېنې شک کولو).

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۶۲۸۲) (ضعیف)

(۲): سنن الترمذي/السير ۱۶ (۱۵۶۵)، سنن ابن ماجه/الجهاد ۲۶ (۲۸۳۰)، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۳۴)، وقد أخرجه: مسند

احمد (۲۲۶۷۵) (حسن)

قوله: « عَنْ قَبِيصَةَ بِنْتِ هُلْبٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَسَأَلَهُ رَجُلٌ فَقَالَ إِنَّ مِنَ الطَّعَامِ طَعَامًا أَتَخْرُجُ مِنْهُ. فَقَالَ « لَا يَتَخَلَّجُنْ فِي صَدْرِكَ شَيْءٌ ضَارِعَتَ فِيهِ النَّصْرَانِيَّةُ » »

### شرح الحديث :

يعني یو سړی د رسول الله ﷺ نه د یو څیز د خوراک په باره کښې تپوس او کړو او داسې ئې اوتیل چه بعض خوراکونه داسې دی چه زه د هغې په باره کښې حرج محسوسوم نو په دې باندې رسول الله ﷺ او فرمائیل چه د یو حلال خوراک په باره کښې د ستا شک نه وی، بغير د وجې نه شک او تردد، گڼې ستا دا فعل به د نصرانیت او رهبانیت سره مشابه وی کوم چه په اسلام کښې مذموم او ممنوع دی، رهبانیت یعنی عبادت او تقوی کښې غلو او دنیا ترک کول. کوم چه بعض نصارو اختیار کړې وو. « ورهبانیه ابتدعوها ما کتبناها علیهم الایة » د دې حدیث یو مطلب خو دا دې کوم چه مونږ اولیکو او په ظاهر کښې مصنف ﷺ هم دې معنی ته په ترجمه الباب سره اشاره کړې ده، او دویمه معنی شارحینو د دې حدیث دا لیکلې ده کومه چه د اول معنی ضد دې هغه دا چه په کوم خوراک کښې تاسو ته د نصرانیت مشابهت او بوئی محسوسیږي یعنی په حلال والی کښې اشکال، د هغې په باره کښې شک مه کوئ چه دا اوخورو او که نه بلکه بالجزم د هغې خوړل پکار دی، د مضارعت معنی مشابهت، د رومبئ معنی حاصل منع عن ترک الاکل ده، او د دویمې معنی حاصل منع عن الاکل، د اول معنی په صورت کښې په ظاهره عبارت داسې دې « والا ضارعت فی النصرانیة » او د دویمې معنی مقتضی دا ده چه « ضارعت فی النصرانیة » صفت اومنلې شی د « شی » خو داسې هیڅ شارح د دې تصریح نه ده کړې، زما په فهم کښې پس د غور کولو نه هم داسې راځی فلیسنل (۱) روستو په الکوکب الدرې کښې د دې تصریح ملاؤ شوه. والحديث اخرجه الترمذی وابن ماجه وقال الترمذی حسن، قاله المنذری.

(۱) حضرت په بذل کښې اول معنی اختیار فرمائیلې ده او لیکلې ئې دی : والجملة الشرطية مستانفة لبيان سبب النهي والمعني لا يدخل في قلبك ضيق و حرج لانك علي الحنفية السمحة السهلة، فاذا شككت وشدت علي نفسك بمثل هذا شابهت فيه الرهبانية، د دې نه پس ئې د گنگوهي ﷺ د تقرير نه داسې نقل فرمائیلې دی : وكتب مولانا محمد يحيي المرحوم يحتمل أن تكون الجملة صفة لشي وان تكون جوابا لشرط محذوف، وإيما كان فالغرض منه النهي عن تحرز الطيبات من المأكّل لا لغرض صحيح عند الشرع اهد حضرت په دې تقرير کښې د عبارت حل او د هغې د ترکیب خوښه وضاحت او شو خو زموږ په خیال کښې چه د « وإيما كان » نه پس د متکلم کوم غرض لیکلې دې هغه د احتمال اول سره مربوط دې نه د هر دواړو احتمالونو سره احتمال ثاني یعنی چه « ضارعت فی النصرانیة » د شرط محذوف جواب اومنلې شی، په دې صورت کښې خو د دې عبارت نه دوه مذکوره معنو کښې معنی ثاني راوځی فتأمل .... دا حدیث چونکه په ترمذی کښې هم دې په دې وجه مونږ رجوع او کړه کوکب درې طرف ته، د هغې نه صفا معلومیږي چه د هر ترکیب معنی جدا جدا ده، په یو صورت کښې به معنی داوی او په دویمه معنی کښې به دویمه. فلله الحمد ..... امام ترمذی ﷺ دا حدیث په کتاب الجهاد کښې د باب طعام المشركين د لاندې ذکر کړې دې او په آخر کښې فرمائی « والعمل علي هذا عند اهل العلم من الرخصة في طعام اهل الكتاب » او هم دا معنی امام ابوداؤد ﷺ هم اختیار کړې ده لکه چه پورته مونږ لیکلې ده. او حضرت گنگوهي ﷺ هم په کوکب کښې دې معنی ته ترجیح ورکړې ده او دا معنی ئې استاذانو ته منصوب کړې ده، « والذي افاده الاساتذة في معناه ان الواجب عليه ان لا يتخلج في قلبك طعام ما لم تعلم حرمة او تظن فان فعلت ذلك ضارعت فيه النصرانية الي آخره ..... الکوکب (۱۶۷۱) »



## باب النہی عن أكل الجلالة، وألبانها دمردار خور خاروی د غوبنی او پینو خکلود ممانعت بیان

[۳۷۸۵] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ أَكْلِ الْجَلَالَةِ وَالْبَانِهَا".

د ابن عمر نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ منع فرمائیلې ده دمردار خور خاروی د غوبنی او شودو خکلونه.

[۳۷۸۶] (۲) عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ لَبَنِ الْجَلَالَةِ".

د عبداللہ بن عباس نه روایت دې فرمائی چه د نبی ﷺ د مردار خور خاروی د شودو خکلونه منع فرمائیلې ده.

جلاله هغه حیوان دې چه د نجاست خورلو عادت وی د پرانستی گرځیدو په وجه باندې، او منع په هغه صورت کبسي ده چه د هغې په خوراک سره د نجاست اثر د هغې په پیو او غوبنه کبسي ښکاره شی او تر څو چه ښکاره نه وی نو د هغې خوراک جائز دې، او د نجاست د اثر ښکاره کیدو نه پس د هغې د خوراک د جواز شکل دا دې چه هغه دې څو ورځې او ترلې شی تر دې چه د نجاست اثر ترې نه ختم شی.

[۳۷۸۷] (۳) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي سُرَيْجٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَبْرِ، حَدَّثَنَا عُثْمَرُ بْنُ أَبِي قَيْسٍ، عَنْ أَيُّوبَ السَّخْتِيَّانِي، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ الْجَلَالَةِ فِي الْإِبِلِ أَنْ يُرْكَبَ عَلَيْهَا، أَوْ يُشْرَبَ مِنْ أَلْبَانِهَا".

د ابن عمرو نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ منع فرمائیلې ده دمردار خور اوبس د سوری او د شودو خکلونه.

### د جلاله په حکم کبسي مذاهب ائمه :

د جلاله د خورلو په باره کبسي مذاهب په حاشیه د بذل کبسي داسې لیکلې دی چه د جمهورو په نزد دا کراهت مکروه تنزیهی دې، او د بعض شوافعو په نزد د تحریم دپاره دې او دا قول د حنابلہ هم دې، او د امام مالک رحمہ اللہ په نزد په دې کبسي هیڅ کراهت نشته، کما فی شرح الکبیر، او د خطابی په معالم السنن کبسي مذاهب دا لیکلې شوي دي: کره ذلک ابو حنیفه وأصحابه والشافعي وأحمد بن حنبل وقلوا لا یؤکل حتی تحبس أیاماً فإذا طاب لحمها فلا بأس بأکله. وقال إسحاق بن راهويه لا بأس أن یؤکل لحمها بعد أن یغسل غسلاً جيداً. وكان الحسن البصري لا یری بأساً بأکل لحوم الجلالة، وكذلك قال مالک بن انس. اهـ اول حدیث الباب حدیث ابن عمر رضی اللہ عنہما أخرجه الترمذی وابن ماجه وحدیث ابن عباس رضی اللہ عنہما أخرجه النسائي، قاله المنذري.

(۱) سنن الترمذی للأطعمة ۲۴ (۱۸۲۴)، سنن ابن ماجه للالبائع ۱۱ (۳۱۸۹)، (تحفة الأشراف: ۷۳۸۷) (صحیح)

(۲) سنن النسائي/الضحایا ۴۳ (۴۴۵۳)، (تحفة الأشراف: ۶۱۹۱)، وقد أخرجه: سنن الترمذی للأطعمة ۲۴ (۱۸۲۴)، سنن

ابن ماجه للأشربة ۲۰ (۳۴۲۰)، حم ۲۶۷۱، ۲۴۱، ۳۳۹، وانظر أيضاً رقم: (۳۷۱۹) (صحیح)

(۳) انظر حدیث رقم: (۲۵۵۸)، (تحفة الأشراف: ۷۵۸۹) (حسن صحیح)

## باب فی اکل لحوم الخیل

داس دغوبښي خوړلو بیان

د لحم خیل مسئله اختلافی ده، مصنف رحمته الله علیه هم په دې باب کښې دواړه قسم روایتونه راوړي دی د منع هم او د جواز هم، د امام احمد او د امام شافعی رحمته الله علیه په نزد بغیر د کراهت نه جائز دي، او د امام ابوحنیفه او د امام مالک رحمته الله علیه په نزد مکروه دي اوس دا چه دا کراهت د هغوی په نزد تنزیهی دي او که تحریمی؟ په بذل کښې لیکلې دي چه د امام صاحب نه په دې کښې مختلف روایات دي، د حسن بن زیاد په روایت کښې د هغوی نه تحریم منقول دي او ظاهر الروایة د امام صاحب نه د کراهت دي نه د تحریم. الی آخر ما بسط فی البذل. او په هدایه کښې دي ﴿ویکره لحم الفرس عند أبي حنيفة رحمته الله علیه وهو قول مالك وقال أبو يوسف ومحمد والشافعي رحمهم الله لا بأس بأكله، ثم قيل الكراهة عنده كراهة تحریم وقيل كراهة تنزیه والأول أصح وأما لبنة فقد قيل لا بأس به لأنه ليس في شربه تقليل آلة الجهاد اه مختصرا بحذف الدلائل وفي الجوهرة : يكره تحريما عند أبي حنيفة وعندهما لا بأس به وفي الكوكب واجتماع روايتي التحريم والحلة يرجح الحرمة ولذلك ذهب الى الحرمة ابوحنيفة ومالك والاوزاعي وغيرهم والله تعالى اعلم﴾ په ظاهر کښې حضرت چه د امام صاحب رحمته الله علیه نه د حسن بن زیاد کوم روایت کړې دي هغه ئې اختیار فرمائيلې دي، خو په ظاهر الروایة کښې نقل د امام صاحب نه مطلق کراهت دي نه تحریم لکه چه مخکښې د بذل نه ذکر شو. وكذا المذكور في الهداية كراهة تحریم لا الحرمة... د حضرت گنگوهی په تقرير ترمذی او ابوداؤد کښې فرق دا دي چه د اذن روایت لکه چه په روایت کښې د هغې تصريح ده د يوم خيبر دي، او د خالد رضي الله عنه روایت کښې تحریم ذکر دي او په دې کښې شک نشته چه هغه د خيبر نه پس اسلام قبول کړې دي، فلم تكن رواية التحريم الا متأخرة اه من البذل والكوكب.

[۳۷۸۸] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ غُرُوبٍ دِينَارٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "فَمَّا نَارَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ خَيْبَرَ عَنِ لَحْمِ الْخَيْلِ، وَأَذِنَ لَنَا فِي لَحْمِ الْخَيْلِ".

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دي فرمائي چه نبی صلی الله علیه و آله مونږ منع کړي وو دخوړلو دغوبښي دخرونه او اجازت ئې را کړي وو مونږ ته په غوبښو خوړلو داسونو کښې.

[۳۷۸۹] (۲) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَبِي الزَّيْبَرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "ذُبَحْنَا يَوْمَ خَيْبَرَ الْخَيْلَ، وَالْبُقَالَ، وَالْحَيْدِرَ، فَمَّا نَارَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْبُقَالِ وَالْحَيْدِرِ، وَلَمْ يَنْهَنَا عَنِ الْخَيْلِ".

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دي فرمائي چه دغزوہ خيبر په ورځ مونږ اسونه او قچري اوخړه ذبح کړل نو نبی صلی الله علیه و آله مونږ منع کړي وو دخوړلو دغوبښي دخروارد قچرنه او اجازت ئې

۱: صحيح البخاري/المغازي ۳۸ (۴۲۱۹)، الصيد ۲۷ (۵۵۲۰)، ۲۸ (۵۵۲۴)، صحيح مسلم/الصيد ۶ (۱۹۴۱)، سنن النسائي/الصيد ۲۹ (۴۳۳۲)، سنن ابن ماجه/للدبائح ۱۲ (۳۱۹۱)، (تحفة الأشراف: ۲۸۱۰، ۲۶۳۹)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/الأطعمة ۵ (۱۷۹۳)، مسند احمد (۳/۳۲۲، ۳۵۶، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۸۵)، دي/الصيد ۶ (۲۰۵۵) (صحيح) ۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۲۶۹۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۶۲، ۳۵۶۳) (صحيح)



راکړي وو مونږ ته په غوښو خوړلو داسونو کښي.

[۳۷۹۰] حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ شَيْبٍ، وَحَبِوَةُ بْنُ شَرِيحٍ الْجَمْعِيُّ، قَالَ حَبِوَةُ، حَدَّثَنَا بَقِيَّةُ، عَنْ ثَوْرِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ صَالِحِ بْنِ يَحْيَى بْنِ الْمِقْدَامِ بْنِ مَعْدِي كَرِبَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، عَنْ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ أَكْلِ لُحُومِ الْخَيْلِ، وَالْبِقَالِ، وَالْحَمِيرِ"، زَادَ حَبِوَةُ: وَكُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السَّبَاعِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهُوَ قَوْلُ مَالِكٍ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: لَا بَأْسَ بِلُحُومِ الْخَيْلِ وَلَيْسَ الْعَمَلُ عَلَيْهِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَذَا مَنْسُوخٌ، قَدْ أَكَلَ لُحُومَ الْخَيْلِ جَمَاعَةٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْهُمْ ابْنُ الزُّبَيْرِ، وَفَضَالَةُ بْنُ عُبَيْدٍ، وَأَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، وَأَسْمَاءُ بِنْتُ أَبِي بَكْرٍ، وَسُوَيْدُ بْنُ غَفْلَةَ، وَعَلْقَمَةُ، وَكَانَتْ قُرَيْشٌ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَذْبَحُهَا.

دخالد بن وليد رضی الله تعالی عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ داسونو اودقچرو اودخرو دغوښې دخوړلونه ممانعت فرمائیلي دي، دحيوه په روایت کښې دومره اضافه ده چه نبی ﷺ دهردار و والا ماتونکي ځناور دغوښې دخوړلونه ممانعت فرمائیلي دي، امام ابوداؤد وائی دادامام مالک قول دي، ابوداؤد وائی داسونو دغوښې په خوړلو کښې څه باک نشته او په دي روایت باندې عمل نشته، ابوداؤد وائی دا روایت منسوخ دي یقینا دنبی ﷺ په صحابه کرامو کښې یوي ډلي داسونو غوښه خوړلي وه چه یوپه هغوی کښې ابن زبیر، فضاله بن عبید، انس بن مالک، أسماء بنت ابی بکر، سويد بن غفله او علقمه، اوقريشوبه دنبی ﷺ په زمانه کښې اسونه ذبح کول.

﴿عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ نَهَانَا رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَوْمَ خَيْبَرَ عَنْ لُحُومِ الْخُمُرِ وَأَذِنَ لَنَا فِي لُحُومِ الْخَيْلِ﴾

مصنف ﷺ په دي باب کښې دوه احاديث ذکر فرمائیلي دي اول حديث د جابر ﷺ په دوه طرقو سره چه د هغې مضمون دا دي چه رسول الله ﷺ د خيبر د جنگ په موقع باندې د خچر او د خر د غوښې نه منع اوفرمايله او داسونو دغوښې اجازت ئې ورکړو. او بل حديث د خالد بن الوليد ﷺ دي مرفوعا ﴿نَهَى عَنْ أَكْلِ لُحُومِ الْخَيْلِ وَالْبِقَالِ وَالْحَمِيرِ وَكُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السَّبَاعِ﴾

د دي دواړو روايتونو متعلق كلام مخکښي تير شوې دي چه په هغې کښې دا تير شوې دي چه د خالد بن الوليد ﷺ روايت موخه دي د حديث جابر ﷺ نه، بله دا ده چه په مبيع او محرم کښې کله تعارض راشي نو محرم ته به ترجيح ورکولې شي، نور كلام دي په دلائلو باندې په بذل کښې اوکتلې شي، د حديث آخری جزء د ذی نَاب سبع سره متعلق دي چه د هغې وړاندې مستقل باب راروان دي،

حديث جابر ﷺ الاول اخرجہ البخاری ومسلم والنسائي، وحديثه الثاني اخرجہ مسلم بمعناه وحديث خالد ﷺ اخرجہ النسائي وابن ماجه، قاله المنذرى.

١: سنن النسائي/المصيد ٣٠ (٤٣٣٦)، سنن ابن ماجه/اللبائح ١٤ (٣١٩٨)، (تحفة الأشراف: ٣٥٠٥)، وقد أخرجہ: مسند احمد (٩٠، ٨٩/٤) (ضعيف)

## باب فی اکل الأرنب

دهوسی د غوښې خوړلو بیان

ارنب یعنې سویه دا د ائمه اربعه په نزد حلاله ده د بعض سلفو په دې کښې اختلاف نقل دي.

[۳۷۹۱] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: "كُنْتُ غُلَامًا خَزُورًا، فَصِدْتُ أَرْنَبًا فَشَوَيْتُهَا، فَبَعَثَ مَعِيَ أَبُو طَلْحَةَ بِعِجْزِهَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَتَيْتُهُ بِهَا فَقَبِلَهَا."

دانس بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دي فرماني چه زه يو طاقتور هلك وم او يوه دهوسي مي ښکار کړه او ماهغه غوښه زما په لاس باندې نبي صلی اللہ علیہ وسلم ته وليږله ماچه نبي صلی اللہ علیہ وسلم ته پيش کړه نو قبوله ئې کړه.

قوله: «عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ كُنْتُ غُلَامًا خَزُورًا فَصِدْتُ أَرْنَبًا فَشَوَيْتُهَا الْخ»

انس رضی اللہ عنہ فرماني چه کله زه چست هلك وم نو يو سویه مي ښکار کړه بيا مي په اور باندې ورته کړه نو زما پلار ابو طلحه رضی اللہ عنہ د هغې پنډې د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم خدمت ته اوليږله ما د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې هغه پيش کړه نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغه قبوله او فرمائيله.

[۳۷۹۲] (۲) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ خَلْفٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي خَالِدَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ، يَقُولُ: إِنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو كَانَ بِالصَّفَّارِ، قَالَ مُحَمَّدٌ: مَكَانٌ بِمَكَّةَ، "وَأَنَّ رَجُلًا جَاءَ بِأَرْنَبٍ قَدْ صَادَهَا، فَقَالَ: يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو، مَا تَقُولُ؟ قَالَ: قَدْ جِيءَ بِهَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا جَالِسٌ، فَلَمْ يَأْكُلَهَا وَلَمْ يَنْهَ عَنْ أَكْلِهَا، وَزَعَمَ أَنَّهَا تَحِيضٌ."

محمد بن خالد وائي ما دخپل پلار حارث بن حويرث نه بين اوريدلى دى چه عبدالله بن عمرو په صفاح (دمکې په خواکښې ديوڅانې نوم دي) کښې وو هغه ته بن يوکس دهوسي غوښه راوړه کومه چه هغه ښکار کړې وه او ونې وئيل اي ابن عمرو په دې باره کښې ستاڅه راي ده هغه او وئيل نبي صلی اللہ علیہ وسلم ته دهوسي غوښه راوړل شوي وه اوزه په هغه وخت کښې هلته موجود وم او نبي صلی اللہ علیہ وسلم ونه خوړله اونه ئې ددې دخوړلو نه ممانعت اوکړو دهغه داخيال وو چه په دې بيماري راځي.

د دې نه د روستو حديث مضمون دا دي چه يو سړي د عبدالله بن عمرو رضی اللہ عنہ په خدمت کښې سویه راوړله چه هغه ښکار کړې وه، او د هغوی نه ئې تپوس اوکړو چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د دې په باره کښې څه فرماني؟ نو هغوی او فرمائيل چه يو کړت د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې دا راوړلې شوه نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نه خو دا او خوړله او نه ئې د دې د خوراک نه منع اوکړه. په بذل کښې ليکلي دي چه حديث اول د اکل ارنب په جواز باندې دليل دي ځکه چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغه قبول او فرمائيله او حديث ثانی سره د ضعف نه په کراهت باندې دلالت نه کوي، د دې حديث په آخر کښې دا جمله ده «وزعم انه تحيض» په دې باندې د حضرت

(۱): صحيح البخاري/اللهبة ۵ (۲۵۷۲)، الصيد ۱۰ (۵۴۸۹)، ۳۲ (۵۵۳۵)، صحيح مسلم/الصيد ۹ (۱۹۵۳)، سنن الترمذي/الأطعمة ۲ (۱۷۹۰)، سنن النسائي/الصيد ۲۵ (۴۳۱۷)، سنن ابن ماجه/الصيد ۱۷ (۳۲۴۳)، (تحفة الأشراف: ۱۶۲۹)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۳/۱۱۸، ۱۷۱، ۲۹۱)، سنن الدارمي/الصيد ۷ (۲۰۵۶) (صحيح)  
(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۶۲۱) (ضعيف الإسناد)



گنګوهی ﷺ په تقریر کښې دی چه رسول الله ﷺ د سویی دا خاصه د تحریم یا د کراهت طرف ته د اشارې کولو دپاره نه دی فرمائیلی ځکه چه د حیض د بدن نه خارج کیدل دا خود باقی غوښې دپاره سبب د نظافت دې بلکه د رسول الله ﷺ دا ذکر فرمائیل د تعجب د اظهار دپاره دې چه په دې باندې هم د زنانه پشان حیض راځی. ادا امام ترمذی ﷺ د حدیث د تخریج نه پس فرمائیلی دی (هذا حدیث حسن صحیح والعمل علی هذا عند اکثر اهل العلم لا یرون باکل الارنب باسا، وقد کره بعض اهل العلم اکل الارنب وقالوا انها تدمی اها) د دې عبارت نه دا معلومیږی چه د دې بعض اهل علم په نزد کیدې شی چه وجه د کراهت هم دا وی یعنی په دې باندې حیض راتلل ..... اوس دا خبره چه په کومو کومو حیواناتو باندې حیض راځی د دې په باره کښې په حاشیه د بذل کښې دی: (تحیض من الحيوانات المرأة والضبع والخفاش والارنب، ويقال الکلبه ایضا، وقيل الناقة والوزغة ایضا کذا فی القسطلانی، واكتفى صاحب حياة الحيوان على الاربعة الاول)

حدیث انس رضی الله عنه أخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى.

## باب فی اکل الضَّبِّ

د خادمی د غوښې خوړلو بیان

[۳۷۹۳] (۱) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي بَشِيرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، "أَنَّ خَالَتَهُ أَهْدَتْ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمْنًا وَأَضْبًا وَأَقِطًا، فَأَكَلَ مِنَ السَّمْنِ وَمِنَ الْأَقِطِ، وَتَرَكَ الْأَضْبَ تَقْدَرًا، وَأَكَلَ عَلَى مَا يَدِيهِ وَلَوْ كَانَ حَرَامًا مَا أَكَلَ عَلَى مَا يَدِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ."

د عبد الله بن عباس رضی الله عنه روایت دې فرمائی چه زما ترور نبی ﷺ ته غوړي پنیر او دخادمی غوښه په هدیہ کښې ولیږله نو نبی ﷺ پنیر او غوړي او خوړل او خادمی ئې دطبعی کراهت په وجه پریخودله لیکن دخادمی غوښه د نبی ﷺ په دسترخوان باندې خوړلی شوي ده که چرې دا حرامه وي نو د نبی ﷺ په دسترخوان باندې به نه خوړل کیده.

[۳۷۹۴] (۲) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ بْنِ سَهْلٍ بْنِ جُنَيْفٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ، عَائِلِيدِ بْنِ الْوَلِيدِ، "أَنَّهُ دَخَلَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَبْتَئ مَيْمُونَةً، فَأَتَى بِضَبٍّ مَحْنُودٍ، فَأَهْوَى إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَهُ، فَقَالَ بَعْضُ النِّسْوَةِ اللَّاتِي فِي بَيْتِ مَيْمُونَةَ: أَخْبِرُوا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَا يَرِيدُ أَنْ يَأْكَلَ مِنْهُ، فَقَالُوا: هُوَ ضَبٌّ، فَرَفَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَهُ، قَالَ: فَقُلْتُ: أَحْرَامٌ هُوَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: لَا، وَلَكِنَّهُ لَمْ يَكُنْ بِأَرْضِ قَوْمِي فَأَجْدَنِي أَعَافُهُ"، قَالَ خَالِدٌ: فَأَجْتَرَدْتُهُ فَأَكَلْتُهُ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْظُرُ.

(۱): صحيح البخاري/الهيئة ۷ (۲۵۷۵)، الأطعمة ۸ (۵۷۸۹)، ۱۶ (۵۴۰۲)، الاعتصام ۲۴ (۷۳۵۸)، صحيح مسلم/الذبايح ۷ (۱۹۴۷)، سنن النسائي/الصعيد ۲۶ (۴۳۲۴)، (تحفة الأشراف: ۵۴۴۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۵۵/۱)، ۲۸۴، ۳۲۲، ۳۲۹، ۳۴۰ (صحيح)

(۲): صحيح البخاري/الأطعمة ۱۰ (۵۳۹۱)، ۱۴ (۵۴۰۰)، الذبايح ۳۳ (۵۵۳۷)، صحيح مسلم/الذبايح ۷ (۱۹۴۶)، سنن النسائي/الصعيد ۲۶ (۴۳۲۱)، سنن ابن ماجه/الصعيد ۱۶ (۳۲۴۱)، (تحفة الأشراف: ۳۵۰۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۸۷۴)، ۸۹، دي/الصعيد ۸ (۲۰۶۰) (صحيح)

عبدالله بن عباس رضي الله عنه دخالد بن ولید رضي الله عنه نه روایت کوی فرمائی چه هغه دنبی عليه السلام سره دمیمونې کورته داخل شو او پخه کړې شوي خادمی پیش کړې شوه نبی عليه السلام او غوښتل چه خپل لاس وروراندې کړي لیکن دمیمونې دکور یوې زنانه ورته او وئیل چه نبی عليه السلام ته او وایه چه داڅه شې دې ځکه چه هغه ددې خورل غواړي، چنانچه خلقو او وئیل ای دالله رسوله دا خادمی ده نبی عليه السلام چه دا واوریدل نو خپل لاس ټپ راوړاندې کړو خالد وائی ماعرض او کړو ای دالله رسوله ایا دا حرامه ده؟ نبی عليه السلام او فرمائیل حرامه نه ده بلکه دا زمونږ په ملک کښې نه وي په دې وجه باندې زه دانه خوښوم خالده وائی چه ما خپل خان ته رانزدې کړه او خورله مې او نبی عليه السلام راته کتل.

ضب یعنی سمساره مشهور صحرائی ځناور دې د گرگت په شان وی خو د هغې نه پلن او پیر په زمکه کښې سوره کولو سره اوسیدي، د راجهستان (انډیا) سنده او نجد په صحراء کښې ډیر زیات وی. د دې تیل هم ویستلې شی چه په علاج کښې پکاریږي دا ځناور ډیر قوی او گرم وی ډیر خلق دا خوری هم، اهل نجد ټپ ښه خوری، د احنافو په نزد حلال مع الکراهت دې، فقی الهدایة ۶۷/۴ ﴿ویکره اکل الضب والضب والسلحفاة والزنبور والحشرات كلها اما الضبع فلما ذکرنا واما الضب فلان النبي عليه الصلاة والسلام نهی عائشة رضي الله عنها حين سألته عن أكله وهي حجة على الشافعي في إباحته والزنبور من المؤذيات والسلحفاة من خبائث الحشرات ولهذا لا يجب على المحرم بقتله شيء وإنما تکره الحشرات كلها استدلالا بالضب لأنه (الضب) منها﴾ مصنف عليه السلام په دې باب کښې د ضب په باره کښې ډیر او مختلف روایتونه ذکر کړې دی چه په هغې کښې بعض دا دی چه د ضب غوښه خپله رسول الله عليه السلام خو او نه خورله خو د رسول الله عليه السلام په دسترخوان باندې او خورلې شوه، او بله دا چه رسول الله عليه السلام او فرمائیل دا حرامه خونه ده خو زما د دې نه کراهت طبعي دې، او د باب په آخری حدیث کښې دی:

[۳۷۹۶] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَوْفٍ الطَّائِيُّ، أَنَّ الْحَكَمَ بْنَ نَافِعٍ حَدَّثَهُمْ، حَدَّثَنَا ابْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ زُرْعَةَ، عَنْ شُرَيْحِ بْنِ عُبَيْدٍ، عَنْ أَبِي رَاشِدٍ الْخُبَرَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ شَيْلٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ أَكْلِ لَحْمِ الضَّبِّ".

د عبد الرحمن بن شبل نه روایت دې فرمائی چه نبی عليه السلام دخادمی دغوښې دخورلونه منع فرمائیلې ده.

قوله: ﴿أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- نَهَى عَنْ أَكْلِ لَحْمِ الضَّبِّ﴾

په بذل کښې د امام نووی رحمته الله نه نقل کړې شوې دې ﴿اجمع المسلمون على ان الضب حلال، ليس بمكروه الا ما حكى عن اصحاب ابي حنيفة من كراهته والا ما حكاه القاضي عن قوم انهم قالوا هو حرام- الى آخر ما في البذل من كلام النووي ونقد الحافظ عليه في نقل الاجماع- وفي هامش الموطاء للإمام محمد: اختلف العلماء في أكله فمنهم من حرّمه- حكاه عياض عن قوم ومنهم من كرهه- وهو رأي ابي حنيفة وابي يوسف ومحمد ونقله ابن المنذر على عليه السلام ومنهم من قال بإباحة أكله- وهو قول الجمهور الى آخر ما قال.



حدیث ابن عباس رضی اللہ عنہما اخرجہ البخاری ومسلم والنسائی، وحدیث خالد بن الولید رضی اللہ عنہ اخرجہ البخاری ومسلم والنسائی وابن ماجه.

د دې نه پس د ثابت بن وديعه رضی اللہ عنہ حدیث کښې دې چه :

[۳۷۹۵] (۱) حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَوْنٍ، أَخْبَرَنَا خَالِدٌ، عَنْ حُصَيْنٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهَبٍ، عَنْ ثَابِتِ بْنِ وَدِيعَةَ، قَالَ: "كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي جَيْشٍ فَأَصَبْنَا ضِيَابًا، قَالَ: فَشَوَّيْتُ مِنْهَا ضَبًّا، فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَضَعْتُهُ بَيْنَ يَدَيْهِ، قَالَ: فَأَخَذَ عُوْدًا فَعَدَّ بِهِ أَصَابِعَهُ، ثُمَّ قَالَ: إِنَّ أُمَّةً مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ مُسِخَتْ دَوَابٌّ فِي الْأَرْضِ، وَإِنِّي لَا أَذْرِي أَيُّ الدَّوَابِّ هِيَ، قَالَ: فَلَمْ يَأْكُلْ وَلَمْ يَنْهَ."

د ثابت بن وديعه نه روایت دې فرمائی چه مونږ په یولسکر کښې د نبی صلی اللہ علیہ وسلم سره موجود وو مونږ یوڅو خادمی و نیولي مادیوي خادمی نه شورواه جوړه کړه اونی صلی اللہ علیہ وسلم ته مې پیش کړه او دهغه په وړاندي مې گيخوده نبی صلی اللہ علیہ وسلم په یوه لخته باندې دهغې گوتي وشمیرلې او بیا ئې اوفرمائیل د بنی اسرائیلویوه ډله مېسح شوه او څاروي ورنه جوړشول او په زمکه کښې پریخودلې شول ماته معلومه نه ده چه کوم څاروي دهغوی نه جوړ شو، راوی وائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم اونه خوړله لیکن د دینه ئې منع هم اونه فرمائیل.

قوله: « إِنَّ أُمَّةً مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ مُسِخَتْ دَوَابٌّ فِي الْأَرْضِ وَإِنِّي لَا أَذْرِي أَيُّ الدَّوَابِّ هِيَ » یعنی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د سمسارې په باره کښې اظهار د تردد اوفرمائیلو چه دا د بنی اسرائیل دهغه قوم نه دې کوم چه مسخ کړې شوې وو یا بل څه دې. په دې باندې شارحینو لیکلې دې چه کیدې شی هغه حدیث چه په هغې کښې رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلی دی: « الممسوخ لا يعيش ثلاثة ايام ولا يعقب » دا د روستو وی، او حدیث الباب د دې نه مقدم وی. والحدیث اخرجہ النسائی وابن ماجه، قاله المنذرى

## باب فِي أَكْلِ لَحْمِ الْخُبَارَى

د حباری (مارغه) د خوړلو بیان

[۳۷۹۷] (۲) حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ سَهْمٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنِي بُرَيْدُ بْنُ عَمْرٍو بْنِ سَفِينَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: "أَكَلْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَحْمَ خُبَارَى."

د سفينه نه روایت دې فرمائی چه ما د نبی صلی اللہ علیہ وسلم سره د حباری لزانرې مارغه غوښه اوخوړله.

قوله: « أَكَلْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - لَحْمَ خُبَارَى »

سفينه رضی اللہ عنہ فرمائی چه ما د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم سره د حباری لزانرې غوښه خوړلې ده.

حباری څه شي دې؟

حباری د یوې مرغی نوم دې؟ په دې کښې مختلف اقوال دی بعضو د دې ترجمه تغدری کړې ده، بعض د مرز معنی کړې ده او د بعضو د په نزد سرخاب (زانرې). نور هم د دې ډیر

<sup>۱</sup> سنن النسائي/الصعيد ۲۶ (۴۳۲۵)، سنن ابن ماجه/الصعيد ۱۶ (۳۲۳۸)، (تحفة الأشراف: ۲۰۶۹)، وقد أخرجہ: مسند

احمد (۲۲۰/۴)، سنن الدارمي/الصعيد ۸ (۲۰۵۹) (صحیح)

<sup>۲</sup> سنن الترمذي/الأطعمة ۲۶ (۱۸۲۸)، (تحفة الأشراف: ۴۴۸۲) (ضعيف)

نومونه حضرت شیخ په خصائل نبوی ﷺ کښې ذکر کړې دی. او د ډیرو کتابونو حوالې په هغې کښې ذکر شوې دي. او ډیرو د لغت کتابونو او د طب کتابونو لره مخې ته کیځودلو سره ئې لیکلې دي چه اقرب هم دا ده چه سرخاب (زانړې) بل څه مارغه دې او صحیح هم دا ده چه د دې ترجمه تغذري ده.

دا یو صحرائی مرغی ده د اوږد ست و لاد خاورې په شان رنگ، چه ډیر تیز الوخی او د رزق په حصول کښې ډیر کوشش کوی تر دې چه ضرب المثل شو، پس وئیلې شی چه: فلان اطلب من الحباری.... والحديث أخرجه الترمذی، قاله المنذری.

## باب فی اکل حشرات الارض

په زمکه کښې د کړخیدونکو ځناورو د خوړلو بیان

یعنی واره دواب الارض، په زمکه باندې واره واره ځناور لکه شکونږ، شمشتی او مږه، یربوع او نور حشرات وغیره.

[۳۷۹۸] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا غَالِبُ بْنُ حَجْرَةَ، حَدَّثَنِي مِلْقَامُ بْنُ التَّلْبِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: "صَحِبْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّ أَسْمَعُ لِحَشْرَةِ الْأَرْضِ تَحْرِيماً".

ملقام بن التلب دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه زه د نبی ﷺ سره پاتې شوې بم او هغه د حشرات الارض حرمت نه دې بیان کړې.

قوله: ( فلم اسمع لحشرات الارض تحريما ) ملقام بن تلب د خپل پلار نه روایت کوی چه زه د رسول الله ﷺ سره اوم خو ما د رسول الله ﷺ نه د حشرات الارض په باره کښې تحریم نه دی اوریدلې.

امام خطابی رحمه الله فرمائی چه په دې کښې د دې خبرې دلیل نشته چه حشرات الارض مباح دی لجواز ان يكون غيره قد سمعه.

[۳۷۹۹] (۲) حَدَّثَنَا (ابو ثور) إِبْرَاهِيمُ بْنُ خَالِدٍ الْكَلْبِيُّ أَبُو ثَوْرٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ عِيسَى بْنِ نُمَيْلَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: "كُنْتُ عِنْدَ ابْنِ عُمَرَ، فَسُئِلَ عَنْ أَكْلِ الْقَنْفَذِ، فَقَالَ: قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أَوْحَى إِلَيَّ مُحَرَّمًا سِوَةَ الْأَنْعَامِ آيَةً ۚ قَالَ: قَالَ شَيْخٌ عِنْدَهُ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: ذَكَرَ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: خَبِيثَةٌ مِنَ الْخَبَائِثِ، فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: إِنْ كَانَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَذَا، فَهُوَ كَمَا قَالَ مَا لَمْ نُنْذِرْ".

عيسى بن نميله دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه زه د ابن عمر په سره موجود وم کله چه دهغه نه تپوس او کړې شو دقنفذ (شکونږ) (۳)، دخوړلو په باره کښې نو هغه دا ایت کریمه: (قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أَوْحَى إِلَيَّ مُحَرَّمًا) تلاوت کړو نو په دې وخت کښې یو بوډا او وئیل

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۲۰۵۱) (ضعيف الإسناد)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۴۹۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۳۸۱) (ضعيف)

(۳): د پيشو برابر يو ځناور دې په فارسي او اردو کښې ورته سیه او سیهی وائی پښتو کښې ورته شکونږ یا شیشکي وائی چه ددې وزرې د اوږدو اوږدو ازغو په شکل وی چه دهغې په ذریعه دخان حفاظت کوی دا اکثر په غرونو کښې اوسیږی.



مادابوهریره عليه السلام نه اوریدلی دی چه دنی عليه السلام په وړاندې ددې ذکر وشو نبی عليه السلام اوفرمائیل دا یوناپاکه څاروې دې په لویو ځناورو کښې عبدالله ابن عمر او وئیل که چرې نبی عليه السلام داسې وئیلې وي نو یقینا همداسې ده.

قوله: «كُنْتُ عِنْدَ ابْنِ عَمَرَ فَسُئِلَ عَنْ أَكْلِ الْقَنْفَلِ فَتَلَا (قُلْ لَا أَجِدُ فِيمَا أُوْحَىٰ إِلَيَّ مُحَرَّمًا) الْآيَةَ الْخ) د نميله فرازی نه روایت دې چه زه د ابن عمر عليهما السلام سره اوم چه د هغوی نه د قنفذ (شکونې) په باره کښې تپوس او کړې شو نو هغوی دا آیت ئې تلاوت اوفرمائیلو «قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوْحَىٰ إِلَيَّ مُحَرَّمًا» په دې باندې یو شیخ کوم چه هم هلته ناست وو هغه اووې چه ما د ابوهریره عليه السلام نه اوریدلې دی چه د رسول الله عليه السلام مخکښې د قنفذ (شکونې) ذکر راغلو نو رسول الله عليه السلام اوفرمائیل: «خَبِيئَةٌ مِنَ الْخَبَائِثِ» نو په دې باندې ابن عمر عليهما السلام اوفرمائیل چه رسول الله عليه السلام دا خبره بیان فرمائیلې ده نو څنگه چه هغوی فرمائیلې ده هم دغه شان ده.

د دې نه پس دلته په روایت کښې دا جمله ده: «ما لم ندر» په بذل کښې لیکلې دی چه زیادت په بعض نسخو کښې دې په بعضو کښې نشته او بیا حضرت د دې جملې دا معنی لیکلې ده «ما لم ندر صحته وثبوته بسند قوی» خو اکثر نسخې د دې زیادت نه خالی دی لکه د منذری نسخه او د معالم السنن نسخه، هم دغه شان په حیاة الحیوان کښې د ابوداؤد روایت نقل کړې شوې دې په هغې کښې هم دا لفظ نشته، پس دا لفظ که دلته صحیح دې نو کیدې شی چه د دې معنی دا وی «وان لم ندر» یعنی که رسول الله عليه السلام دا خبره بیان فرمائیلې وی نو بیا هم هغه صحیح ده که زموږ په فهم کښې راځی یا نه. والله تعالی اعلم

### د قنفذ مصداق او د هغې شرعی حکم:

قنفذ د دوه امامانو په نزد حلال دې او د دوه په نزد حرام، د شوافعو او مالکیانو په نزد حلال دې، او د احنافو او حنابلو په نزد حرام، په حیاة الحیوان کښې داسې دی «قال الشافعي: يحل أكل القنفذ لأن العرب تستطيه، وقد أفتى ابن عمر بإباحته وقال أبو حنيفة والإمام أحمد: لا يحل لما روى أبو داود وحده أن ابن عمر رضي الله تعالى عنهما إلى آخر الحديث» بیا هغوی د دې نه پس د شوافعو د طرف نه د دې حدیث جواب کړې دې. والجواب أن رواته مجهولون. قال البيهقي: ولم يرو إلا من وجه واحد ضعيف لا يجوز الاحتجاج به.... إلى آخر ما ذكر. ددې نه پس دا پیژندل پکار دی چه د قنفذ ترجمه بعضو شکونې کړې ده، په عون المعبود او صراح کښې هم داسې دی خو شکونې ترجمه خو د «سهي» ده لکه چه په فرهنگ آصفیه کښې دې، او په منجد کښې د شکونې شکل جوړولو (چه د هغه په ملا باندې حقیقت کښې ازغی وی) ئې د هغې نوم دلدل بیان کړې دې (۱) او د قنفذ شکل او صورت ئې په منجد کښې د هغه مړې جوړې کړې دې چه په هغې باندې ویښته وی او هم دغه شان په القاموس الجدید کښې د قنفذ ترجمه په ازغیژنه مړې سره کړې ده او هم دا اقرب الی الصواب معلومېږی ځکه

۱، یعنی قنفذ ئې نه دې لیکلې قلت وجاء ذكر الدلدل في النسائي في باب تزويج الزانية ولفظه قالت يا اهل الخيام هذا الدلدل الخ فليراجع الفيض السمانی

چه شکونږ لوڼې ځناور وی د پیشو برابر چه د هغه په ملا باندې ازغی وی (چه د هغې نه قلمونه هم جوړولې شی) په خلاف د قنفذ چه د هغه په ملا باندې ازغی نه وی بلکه پیر پیر وینسته وی کوم چه هغه د ویرې په وخت د خپل حفاظت دپاره اودروی او د بال په شان غونډې شی، لهذا د قنفذ ترجمه په شکونږ سره کولو کښې کلام دې. والله تعالی اعلم

د جاحظ تالیف کتاب الحیوان ۱/۳۶۳ او صفحه ۲۷۳ نه معلومیږي چه قنفذ یو جنس دې بعض قنفاذ لوڼې وی چه هغې ته دلدل وائی چه د هغې په شا باندې غټ غټ ازغی وی، هغوی د ټولو احوال او خواص بیل بیل لیکلې دی لهذا د شکونږ دا ترجمه د دلدل زیاته مناسب ده، مونږ ته د قنفذ په تحقیق او تتبع کښې د ډیرو کتابونو د مراجعت ضرورت پېښ شو، د حشرات الارض تفصیل او د هغې حکم د احنافو په مذهب کښې هغه په بذل المجهود کښې د بدائع الصنائع نه نقل کړې شوې دې که څوک غواړي په هغې کښې دې اوگوری. قوله: ﴿عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ النَّبِيَّ -صلى الله عليه وسلم- نَهَى عَنْ ثَمَنِ الْهَرِّ. قَالَ ابْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ عَنْ أَكْلِ الْهَرِّ وَأَكْلِ ثَمَنِهَا﴾

دا حدیث په اکثر نسخو کښې نشته لکه نسخه د عون المعبود او دغه شان نسخه د منذری، خطابی او کیدل هم نه دی پکار ځکه چه ترجمه الباب د حشرات الارض سره متعلق دې، او هره د حشراتو نه نه ده بلکه د سباع نه ده، د حشرات اطلاق په صغار دواب الارض باندې کیږي. کما تقدم فی اول الباب

## باب فی أَكْلِ الضَّبُعِ

باب د بجو (مړده خور ځناور) د خوړلو بیان

دلته دوه بحثونه دی اول د ضبع مصداق او د هغې تحقیق، بل د ضبع په حکم کښې د ائمه کرامو اختلاف سره د دلیل نه اودریم داچه که محرم ددې ښکار او کړی نوځه واجبیږي. بحث اول:

د ضبع په ترجمه کښې اختلاف دې، په عرف الشذی کښې لیکلې دی چه دې ته په اردو کښې هندار وائی او په فارسي کښې ورته گفتار او کومه ترجمه چه ئې د مولانا عبدالحی پلار په شکونږ سره کړې ده هغه سهو ده، او په حاشیه د بذل کښې دی چه صاحب محیط هم د دې ترجمه په هندار سره کړې ده. الخ، هم دې ته لگر بگر هم وائی، په نور اللغات کښې لیکلې دی چه صحیح لکر بهگا دې، دې ته په فارسي کښې چرغ وائی. په غیاث اللغات کښې هم گفتار او هوندار ته یو وئیلې شوې دی، د دې عبارت دا دې:

گفتار بالفتح جانور است صحرائی درنده که بهندی هوندار گوینداز لطائف وغیر آن. آه بیا بجو ( ) ته په عربی کښې څه وائی د هغې دې تحقیق او کړې شی، او د بجو په

( ) بجو یو مړده خور ځنگلی ځناور دې چه په جثه کښې د مړې نه غټ او د وړوکې پیشو برابر وی دې ته په عربی کښې ضبع، او په فارسي کښې گفتار وائی، په اردو کښې هندار او بجو وائی چرغ هم ورته وائی پښتو کښې ورته گورکخ او مړده خور وائی. دا قبرونه کنستلو سره مړې خوری.



باره کښې په فرهنگ اصفیه کښې لیکلې دی چه دا د یو ځناور نوم دې کوم چه اکثر په قبرستان کښې اوسیدلې او مړی راوباسی او خوری نې، داسې سخت او مضبوط وی چه د هاتی د خپې لاندې هم نه مړی اهد او د هندار په باره کښې مشهوره نه ده چه هغه په قبرستان کښې اوسیدلې او مړی راوباسی او خوری نې لهذا هندار او بجو دا دواړه بیل بیل ځناور دی، او د ضبع مصداق هندار دې بجو نه دې، د لغت د ډیرو کتابونو د تتبع نه پس دا لیکلې شوې دی وقد بقي فيه ما بقي.

[۳۸۰۱] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْخَزَاعِيُّ، حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُبَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمَّارٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الضَّبُعِ؟ فَقَالَ: هُوَ صَيْدٌ، وَيُجْعَلُ فِيهِ كَبْشٌ إِذَا صَادَهُ الْمُحْرِمُ".

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه دښې ضبع نه مې دباجونکي دخورلو په باره کښې تپوس وکړونو وئې فرمائیل چه دا یو ښکار دي او کله چه څوک ددې په حالت دا حرام کښې ښکار وکړي نو ددې په عوض کښې به یو گډه په حرم کښې ورکوي.

### بحث ثانی :

قوله: « سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَنِ الضَّبُعِ فَقَالَ « هُوَ صَيْدٌ وَيُجْعَلُ فِيهِ كَبْشٌ إِذَا صَادَهُ الْمُحْرِمُ » » د رسول الله ﷺ نه تپوس او کړې شو د ضبع په باره کښې نو رسول الله ﷺ او فرمائیل هغه ښکار دې چه په حالت د احرام کښې ممنوع دې او حضور ﷺ دا هم او فرمائیل چه که محرم د هغې ښکار او کړی نو د هغې جزاء گډه دې او د ترمذی رحمته الله علیه په روایت کښې داسې الفاظ دی: « عن ابن أبي عمارة قال: قلت لجابر الضبع أصيد هي؟ قال نعم قال قلت أكلها؟ قال نعم قال قلت أقاله رسول الله صلى الله عليه وسلم؟ قال نعم. قال أبو عيسى هذا حديث حسن صحيح » د ابوداؤد رحمته الله علیه روایت خو د حل ضبع په باره کښې صریح نه دې خو روایت د ترمذی په دې باره کښې صریح دې، خو هغه د جابر رضي الله عنه په اجتهاد باندې بناء دې د رسول الله ﷺ په کلام کښې د هغې د حلت تصریح نشته، رسول الله ﷺ او فرمائیل هغه ښکار دې، جابر رضي الله عنه د ښکاره کیدو نه دا او گنرله چه د دې خوراک حلال دې هم په دې بناء باندې هغوی د دې د حلال کیدو نسبت رسول الله ﷺ ته او کړو. باقی مونږ دا وایو چه ظاهره دا ده چه ضبع په سباع ذی ناب کښې دی لهذا ضبع د مشهور حدیث « نهی عن اكل كل ذي ناب من السباع » کښې د داخلیدو په وجه باندې غیر حلال دې، هسې د دې نه علاوه هم محرم او د مبيع د تعارض په وخت ترجیح محرم ته وی. (بذل)

مسئله مختلف فیه ده د امام شافعی او امام احمد په نزد ضبع حلال دې او د احنافو او جمهورو په نزد حرام دی کذا فی البذل عن الشوكاني، او د خطابی په کلام کښې دی: وکره

۱: سنن الترمذی/الحج ۲۸ (۸۵۱)، الأطنمة ۴ (۱۷۹۲)، سنن النسائي/الحج ۸۹ (۲۸۳۹)، الصید ۲۷ (۴۳۲۸)، سنن ابن ماجه/المناسك ۹۰ (۳۰۸۵)، الصید ۱۵ (۳۲۳۶)، (تحفة الأشراف: ۲۳۸۱)، وقد أخرجه: مستند احمد (۲۹۷/۳، ۳۱۸، ۳۲۲)، سنن الدارمي/المناسك ۹۰ (۱۹۸۴) (صحیح)

الثوري وابو حنيفة واصحابه، ومالك وروى ذلك عن سعيد بن المسيب، واحتجوا بانها سبع الى آخر ما ذكر.... او امام ترمذی رحمہ اللہ په حديث د جابر رضي الله عنه کښې کوم چه پورته تیر شوي دي د هغې نه پس فرمائي: «وقد ذهب بعض اهل العلم الى هذا ولم يروا باسا باكل الضبع، وهو قول احمد واسحاق، وروى عن النبي صلى الله عليه وسلم حديث في كراهية اكل الضبع وليس اسناده بالقوى» او د دي نه پس امام ترمذی رحمہ اللہ بيا دا حديث د منع ذکر کړې دي: عن خزيمة بن جزء قال: سألت رسول الله صلى الله عليه وسلم عن اكل الضبع فقال او ياكل الضبع احد، وسألت عن الذئب فقال او ياكل الذئب احد فيه خير؟ د دي نه پس امام ترمذی رحمہ اللہ د دي په سند باندې چه کوم جرح ده هغه ئې بيان کړې ده خو په حاشيه د کوکب ۴/۲ کښې د التعليق الممجد نه نقل کړې دي: وقد ورد النهي عن اكله في روايات عديدة اخرجها الترمذی وابن ابی شيبة واحمد واسحاق وابو يعلى وغيرهم كما بسط العيني في البنايه مع الجواب عما استدل به المخالفون اه

### بحث ثالث:

دويمه مسئله په دي حديث کښې د ضبع په ښکار کولو کښې په محرم باندې د جزاء ده هغه کبش دي د ائمه ثلاثه مذهب خو هم دا دي، د احنافو په نزد جزاء خو واجب ده خو په هغې کښې د قيمت اعتبار دي د کبش تعين نه دي، يعنى د ضبع قيمت چه هر څه وي د هغې په اندازه دي جزاء ورکړې شي، ممکنه ده چه هغه وخت د هغې قيمت د کبش برابر وو، هم په دي وجه هغه ذکر کړې شو.

والحديث اخرج الترمذی والنسائي وابن ماجه، وقال الترمذی: حسن صحيح، قاله المنذرى.

### باب النّهي عن أكل السباع

د درندگانو د غوښې د خوړلو د ممانعت بيان

[۳۸۰۲] حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ الْخَوْلَانِيِّ، عَنْ أَبِي ثَعْلَبَةَ الْخُسَنِيِّ: "أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ أَكْلِ كُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السَّبْعِ".

د ابو ثعلبه رضي الله عنه نه روايت دي فرمائي چه نبی کریم صلى الله عليه وسلم منع فرمائي چې ده د خوړلو د هر داپور ماتونکي ځناور نه.

قوله: «عَنْ أَبِي ثَعْلَبَةَ الْخُسَنِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- نَهَى عَنْ أَكْلِ كُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السَّبْعِ»

### شرح الحديث:

يعنى رسول الله صلى الله عليه وسلم منع فرمائي چې ده د هر هغه داپور ځناور د خوراک نه کوم چه د درندگانو نه وي، يعنى هغه ځناور چه په خپلو غاښونو سره ښکار کوي او ښکار لره شلوي. مطلق د ناب [دارې] اکيدل مراد نه دي، لکه شیر، زمري، لیوۀ او سپي وغيره چه په خلقو باندې

۱: صحيح البخاري/الصعيد ۲۹ (۵۵۳۰)، الطب ۵۷ (۵۷۸۰)، صحيح مسلم/الصعيد ۳ (۱۹۳۲)، الأطعمة ۳۳ (۱۹۳۲)، سنن الترمذی/الصعيد ۱۱ (۱۴۷۷)، سنن النسائي/الصعيد ۲۸ (۴۳۳۰)، ۳۰ (۴۳۴۸)، سنن ابن ماجه/الصعيد ۱۳ (۳۳۳۲)، (تحفة الأشراف: ۱۸۷۴)، وقد أخرجها: مسند احمد (۱۹۳/۴، ۱۹۴، ۱۹۵)، سنن الدارمي/الأصاحي ۱۸ (۲۰۳۳) (صحيح)



حمله کوی په خپلو غاښونو سره، او د «(من السبع)» قید ئې په دې وجه اولگولو چه اوبښ ترې اوځی ځکه چه ددې اگرچه ناب [دارې] وی خو هغه په سباع او وحوش کښې نه دی د کوم چه د انسان سره دشمنی وی، او د دې نه روستو حدیث چه په روایت د ابن عباس رضی الله عنهما دی، په هغې کښې دا هم دی «(وعن کل ذی مخلب من الطیر)» یعنی د هر داسې مارغه د خوراک نه رسول الله صلی الله علیه وسلم منع فرمائیلې ده چه د پنځې والا وی یعنی په پنځه ښکار کوی په الوتلو کښې هم لکه، باز، تپوس او چوکئ وغیره.

[۳۸۰۳] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ مَيْمُونِ بْنِ مِهْرَانَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ أَكْلِ كُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السَّبْعِ، وَعَنْ كُلِّ ذِي مَخْلَبٍ مِنَ الطَّيْرِ".

دعبد الله بن عباس رضی الله عنهما نه روایت دی فرمائی چه نبی صلی الله علیه وسلم منع فرمائیلې ده دخورلودخړ دارور ماتونکي ځناور اوهرپنځه لرونکي مرغئ نه.

حدیث ابی ثعلبه رضی الله عنه اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، وحدیث ابن عباس رضی الله عنهما اخرجه مسلم، قاله المنذری.

او د دې نه روستو حدیث کوم چه د مقدم بن معديکرب رضی الله عنه نه روایت دی په هغې کښې دا زیادت دی. «(وَلَا الْحِمَارُ الْأَهْلِيُّ وَلَا اللَّقْطَةُ مِنْ مَالٍ مُعَاهِدٍ إِلَّا أَنْ يَسْتَفْنِي عَنْهَا)» د حمر اهلیه وړاندې مستقل باب هم راروان دی، د معاهد نه مراد ذمی دی یعنی د ذمی لقطه اوچتولو سره کیخودل جائز نه دی، چه هر کله د ذمی جائز نه ده نو د مسلم په طریق اولی جائز نه ده، خو د تعریف دپاره اوچتول ئې جائز دی او بیا دې په دې صورت کښې څوک هم دهغې طلب کولو دپاره رانشی نو بیله خبره ده، هم دا مطلب دې د «(إلا ان يستغنى عنها)».

[۳۸۰۴] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُصَفَّى الْجَنْصِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، عَنْ الزُّبَيْدِيِّ، عَنْ مَرْوَانَ بْنِ رُوَيْتَةَ التَّغْلِبِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَوْفٍ، عَنْ ابْنِ الْقَدَامِ بْنِ مَعْدِيكَرِبٍ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "أَلَا يَجِلُّ ذُنَابُ مِنَ السَّبَاعِ، وَلَا الْحِمَارُ الْأَهْلِيُّ، وَلَا اللَّقْطَةُ مِنْ مَالٍ مُعَاهِدٍ إِلَّا أَنْ يَسْتَفْنِي عَنْهَا، وَإِنَّمَا رَجُلٌ ضَافَ قَوْمًا فَلَمْ يَقْرُوهُ فَإِنَّ لَهُ أَنْ يُعَقِّبَهُمْ بِمِثْلِ قِرَاءَةٍ".

دمقدم بن معدي کرب نه روایت دی فرمائی چه نبی صلی الله علیه وسلم فرمائیلې دی واورئ په ځناورو کښې د دارو والا ماتونکي ځناور غوښه حلاله نه ده اونه دکورني خراونه ددمي کافر مال مگر له چه کافر دغه مال پخپله پریخودلی وي، اوڅوک چه دچامیلمه شي او هغه ته میلستیا ورنکړي نودهغه دپاره جائز دي چه دخپلې میلستیا په اندازه مال په زبردستی سره وصول کړي.

«(وَإِنَّمَا رَجُلٌ ضَافَ قَوْمًا خ)» او کوم سړې چه د یو قوم میلمه شي او هغه خلق د هغه میلستوب اونکړی نو د دې میلمه دپاره جائز دی چه د خپل میلستوب په اندازه د هغوی

۱: صحیح مسلم/الصید ۳ (۱۹۳۴)، (تحفة الأشراف: ۶۵۰۶)، وقد أخرجه: سنن النسائي/الصید ۲۳ (۴۲۵۲)، سنن ابن ماجه/الصید ۱۳ (۳۲۳۴)، مسند احمد (۱/۲۴۴، ۲۸۹، ۳۰۲، ۳۲۷، ۳۳۲، ۳۳۹، ۳۷۳)، دي/الأصاحي ۱۸ (۲۰۲۵) (صحیح)

۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۵۷۱)، وقد أخرجه: سنن الترمذی/العلم ۱۰ (۲۶۶۳)، سنن ابن ماجه/الصید ۲ (۳۲۳۴)، مسند احمد (۱۳۲/۴) (صحیح)

په مال کښې واخلي، د دې آخری جملې تاویلات د کتاب الاطعمه په شروع کښې په باب فی الضیافه کښې تیر شوې دی.

والحدیث ذکره الدارقطني مختصرا و اشار الى غرابته، قاله المنذري.

[٣٨٠٥] (١) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، عَنْ ابْنِ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ ابْنِ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْحَكَمِ، عَنْ مَيْمُونِ بْنِ مِهْرَانَ، عَنْ عُسَيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ خَيْبَرَ عَنْ أَكْلِ كُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السَّبَاعِ، وَعَنْ كُلِّ ذِي مَخْلَبٍ مِنَ الطَّيْرِ".

د عبد الله بن عباس نه روایت دې فرمائی چه نبی علیه السلام د غزوه خیبر په ورځ باندې دخورلو د غوښې دهر دارور ماتونکي ځناور نه منع فرمائيلې ده

[٣٨٠٦] (٢) حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عُثْمَانَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ سُلَيْمَانُ بْنُ سُلَيْمٍ، عَنْ صَالِحِ بْنِ يَحْيَى بْنِ الْبَقْدَامِ، عَنْ جَدِّهِ الْبَقْدَامِ بْنِ مَعْدِ كَرِبٍ، عَنْ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ، قَالَ: "غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْبَرَ، فَأَتَتْ الْيَهُودُ فَشَكَّوْا أَنَّ النَّاسَ قَدْ أَسْرَعُوا إِلَى حَظَائِرِهِمْ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلَا لَا تَحِلَّ أَمْوَالُ الْمُعَاهِدِينَ إِلَّا بِحَقِّهَا، وَحَرَامٌ عَلَيْكُمْ حُمْرُ الْأَهْلِيَّةِ، وَخَيْلُهَا، وَبَقَاةُهَا، وَكُلُّ ذِي نَابٍ مِنَ السَّبَاعِ، وَكُلُّ ذِي مَخْلَبٍ مِنَ الطَّيْرِ".

د خالد بن ولید نه روایت دې فرمائی چه په غزوه خیبر کښې د رسول الله سره په جهاد کښې شریک وم چه یهودیان راغلل اونبې علیه السلام ته ئې شکایت وکړو چه خلقو په جلت سره زمونږه په چراگاه کښې ترلې شوي څاروي لوټ کړي دي، نبی علیه السلام او فرمائیل خبردار ستاسو سره چه کوم کافران معاهده وکړي نو ستاسو دپاره ددوی مال لوټ کول جائز نه دي مگر په حق سره او په تاسو باندې کورني خره اسونه قچري او هریو داړي لرونکي ځناور او پنجه لرونکې مرغی حرامه ده.

### مضمون الحديث :

قوله: ﴿ عَنْ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ قَالَ غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- خَيْبَرَ فَأَتَتْ الْيَهُودُ فَشَكَّوْا أَنَّ النَّاسَ قَدْ أَسْرَعُوا إِلَى حَظَائِرِهِمْ الْخ ﴾

خالد بن الوليد علیه السلام فرمائی چه زه د رسول الله ﷺ سره په غزوه خیبر کښې اوم پس هغوی ته څه یهودیان راغلل یعنی د معاهدې نه پس او هغوی راتلو سره دا شکایت اوکړو چه بعض خلقو زمونږ د څاروو په اخور باندې حمله کړې ده چرته چه زمونږ اوبښان او گدې بیزي ترلې شی او هغه ئې غلا کړې دی، نو په دې باندې رسول الله ﷺ وعید او فرمائیلو چه د معاهدینو او د ذمیانو د مال نه د خپل مقرر شوی حق نه علاوه نور اخستل جائز نه دی، او رسول الله ﷺ دا هم او فرمائیل چه په تاسو باندې کورنی خره او اسونه او خچر او هریو سبع ذی ناب او طیر ذی محلب حرام کړې شوې دي.

د مال معاهدین په باره کښې ناحق تصرف او د هغې په باره کښې د وعید روایات

(١) : سنن النسائي / الصيد ٣٣ (٤٣٥٣)، سنن ابن ماجه / الصيد ١٣ (٣٢٣٤)، (تحفة الأشراف: ٥٦٣٩)، وقد أخرجه: مسند احمد (٣٣٩/١) (صحيح)

(٢) : تفرد به أبو داود، انظر حديث رقم: ٣٧٩٠، (تحفة الأشراف: ٣٥٠٨)، وقد أخرجه: مسند احمد (٨٩/٤) (ضعيف منكر)



په كتاب الخراج\* باب في تعشير اهل الذمة اذا اختلفوا في التجارة\* د لاندې تير شوې دې، دلته خو دا روايت ضمنا راغلې دې، لهذا هغې طرف ته دې رجوع او كړې شې، ډير سخت وعيدونه دي. والحديث اخرجه النسائي وابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۸۰۷] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ، قَالَا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ عُمَرَ بْنِ زَيْدِ الصَّنَعَانِيِّ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى عَنْ ثَمَنِ الْهَرِّ"، قَالَ ابْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ: عَنْ أَكْلِ الْهَرِّ، وَأَكْلِ ثَمْمِهَا.

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائیل ده دقت اخستلو د پيشونه او د عبد الملك په روايت كښې دې چې د پيشو د خوړلو نه نې منع فرمائيلې ده او د پيشو د قيمت د خوړلو نه.

## باب في أكل لحوم الحمير الأهلية

د كورنو خړونو د خوړلو بيان

حمار اهلی د جمهور علماء ومنهم الائمة الثلاث په نزد حرام دې د احاديث صحيحه صريحه په وجه باندې، په دې كښې د ابن عباس رضي الله عنهما اختلاف روايت كړې شوې دې چې حرام نه دي، او د امام مالك رحمه الله نه درې روايتونه دي مشهور قول د هغوی دا دې چې مكره تنزيهي دي، دويم دا چې مباح دي، او دريم قول نې د جمهورو په شان د حرمت دي. كذا قال النووي ۴/۲. دا اختلاف په حمر اهليه كښې دي، او حمر وحشيه يعنى زيبړا بالاجماع حلال دي او په حاشيه د بډل كښې دي: «تكلم عليه في حياة الحيوان وفيه: قال الجمهور بالحرمة ومالك بالإباحة، قال ابن العربي نسخ لحوم الحمير مرتين اه» په كورمو خيزونو كښې چې تعدد د نسخ راغلې دې هغه مونږ سره په دوه ځايونو كښې تير شو يو په «باب في نكاح المتعة» او په كتاب الطهارة كښې «باب الوضوء مما مست النار» د لاندې هم، په دې باب كښې مصنف رحمه الله دواړه قسم روايتونه ذكر كړي دي د حلت هم او د حرمت هم د مخكښې باب په حديث كښې تير شوې دي «وحرام عليكم حمر الاهلية وخيلها وبغالها».

د بغال په حكم كښې اختلاف:

د امام مالك رحمه الله اختلاف چې څنگه په حمار اهلی كښې دې هم دغه شان نې په بغل كښې هم دي، پس په بداية المجتهد كښې دي چې د هغې مونږ دلته پوره عبارت ذكر كوو د مفيد او جامع كيدو د وجې نه: «وأما المسألة الثانية: وهي اختلافهم في ذوات الحافر الإنسي: أعني الخيل والبغال والحمير فإن جمهور العلماء على تحريم لحوم الحمير الإنسية إلا ما روي عن ابن عباس وعائشة أنهما كانا يبيعانها وعن مالك أنه كان يكرها رواية ثانية مثل قول الجمهور وكذلك الجمهور على تحريم البغال وقوم كرهوها ولم يحرموها وهو مروي عن مالك. وأما الخيل فذهب مالك وأبو حنيفة وجماعة إلى أنها محرمة وذهب الشافعي وأبو يوسف ومحمد وجماعة إلى إباحتها اه» د ابن

(۱): سنن الترمذي/الباب ۴۹ (۱۲۸۰)، سنن ابن ماجه/المصيد ۲۰ (۳۲۵۰)، (تحفة الأشراف: ۲۸۹۴) (ضعيف)

عباس رضي الله عنه راځي په دې باره كښې خپله په متن كښې راروانه ده د دې نه پس هغوی په دلائلو باندې كلام كړې دې وفي الهداية ص ٤٧ ج ٤: ﴿ولا يجوز أكل الحمر الأهلية والبغال لما روي خالد بن الوليد رضي الله عنه أن النبي صلى الله عليه وسلم نهى عن لحوم الخيل والبغال والحمير اه وفي هامشه: اخرج ابن ماجه﴾ خچر چونكه د خيل او د حمار د دوه مختلف جنسونو د اختلاط نه پيدا كيږي او د حمار دوه قسمونه دي يو اهلي چه حرام دې او دويم وحشي كوم چه بالاتفاق حلال دې په دې وجه د بغل د دې دواړو قسمونو په حكم كښې فرق دې پس قسم اول حرام دې او نوع ثاني حلال، پس په حياة الحيوان كښې دي: ﴿يحرم أكل المتولد منها بين الحمار الأهلي والفرس، لانه متولد بين ما يحل وما يحرم فغلب جانب التحريم، فان تولد بين حمار وحشي وفرس حل اه﴾ وفي الدر المختار ٢٢٩/٢ ﴿ولا يحل ذؤناب يصيد بنا به او مخلب يصيد بمخلبه من سبع بيان لذى مخلب او طير ولا الحشرات﴾ هي صغار دواب الارض واحدها حشرة والحمر الاهلية والبغل الذي امه حمارة فلو امه بقرة اكل اتفاقا، ولو فرسا فكاهه.... اه مختصرا دا كلام په ترجمة الباب باندې وو اوس احاديث الباب اوگوري.

[٣٨٠٩] حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ عُبَيْدِ أَبِي الْحَسَنِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ غَالِبِ بْنِ أَجَجٍ، قَالَ: "أَصَابَتْنَا سَنَةٌ فَلَمْ يَكُنْ فِي مَالِي شَيْءٌ أَطْعِمُ أَهْلِي إِلَّا شَيْءًا مِنْ حُمُرٍ، وَقَدْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَرَّمَ لَحُومَ الْحُمُرِ الْأَهْلِيَّةِ، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَصَابَتْنَا السَّنَةُ وَلَمْ يَكُنْ فِي مَالِي مَا أَطْعِمُ أَهْلِي إِلَّا سِمَانُ الْحُمُرِ، وَإِنَّكَ حَرَّمْتَ لَحُومَ الْحُمُرِ الْأَهْلِيَّةِ، فَقَالَ: أَطْعِمُ أَهْلَكَ مِنْ سَمِينٍ حُمْرِكَ فَإِنَّمَا حَرَّمْتُهَا مِنْ أَجْلِ جَوَالِ الْقَرْيَةِ يَعْنِي الْجَلَالَةَ"، قَالَ: "أَبُو دَاوُدَ: عَبْدُ الرَّحْمَنِ هَذَا هُوَ ابْنُ مَعْقِلٍ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَى شُعْبَةُ هَذَا الْحَدِيثَ، عَنْ عُبَيْدِ أَبِي الْحَسَنِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مَعْقِلٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ بَشِيرٍ عَنْ نَائِسٍ مِنْ مَزِينَةَ: أَنَّ سَيِّدَ مَزِينَةَ أَجَجَ، وَأَبْنَ أَجَجٍ سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

دغالب بن ابجرنه روايت دي فرمائي چه په مونږ باندې قحط سالي راغله اوزماپه مال كښې داسې خيزنه وو چه خپل بال بچ ته مې دخوراك دپاره وركړې وې مگريو خوخره اويقينانبي عليه السلام كورني خره حرام كړي وو نوزه دنبي عليه السلام په خدمت كښې حاضر شوم اوعرض مې وكړو اي دالله رسوله په مونږ باندې قحط سالي راغلې ده اوزماپه مال كښې داسې خيزنشته چه زه ئې دخوراك دپاره خپلوبچوته وركړم مگريو خو خاږبه خره راسره موجود دي نبي عليه السلام اوفرماښل پخپلوبچودي ددغه خړبو خرونه اوخوروه ځكه چه ما كورني خره دنپاكۍ په وجه باندې حرام كړي دي.

### مضمون الحديث:

قوله: ﴿عَنْ غَالِبِ بْنِ أَجَجٍ قَالَ أَصَابَتْنَا سَنَةٌ فَلَمْ يَكُنْ فِي مَالِي شَيْءٌ أَطْعِمُ أَهْلِي إِلَّا شَيْءًا مِنْ حُمُرٍ﴾ الخ ﴿غالب بن ابجر رضي الله عنه فرمائي چه مونږ يو كرت په تنگسيا اولوپه كښې اخته شو اوما سره بل هيڅ خيز په خپلو بچو باندې د خوراك دپاره نه وو سوا د څو خرونه خو د رسول الله صلى الله عليه وسلم د طرف نه د لحوم حمر اهليه تحريم راغلې وو په دې وجه د هغوی په خدمت كښې حاضر شوم او د خپلې لورې حال مې هغوی ته بيان كړو او هم دغه پوره خبره كومه چه پورته



راغله نو هغوی زما په خبره اوریدلو باندې اوفرمائیل ﴿أَطْعِمَ أَهْلَكَ مِنْ سَمِينِ حُمْرِكَ فَإِنَّمَا خَرَّمْتُهَا مِنْ أَجْلِ جَوَالِ الْقَرْيَةِ﴾ د خپل کور په خلقو باندې خپل خرب خر او خروه ځکه چه ما د مطلق حمر تحریم نه وو کړې بلکه د کوڅو د هغه حمر تحریم مې کړې وو کوم چه جلاله دی. د دې حدیث جواب دا دی چه دا بالاتفاق ضعیف دی. قال الحافظ: اسنادہ ضعیف والمتن شاذ مخالف للاحادیث الصحیحة فلا اعتماد علیه.... الی اخر ما فی البذل من الکلام علی الحدیث..... او په حیاة الحیوان کنسې دی: ولنا ما روی عن جابر وغيره ان النبی ﷺ نهی عن لحوم الحمر الالهیة واذن فی لحوم الخیل ﴿متفق علیه.....﴾ وحدیث غالب رواه ابوداؤد، واتفق الحافظ علی تضعیفه ولو بلغ ابن عباس احادیث النهی الصحیحة الصریحة فی تحریمه لم یصر الی غیره اه د دې نه پس هغوی فرمائی چه که دا حدیث ثابت اومنلې شی نو بیا به دا په حالت د اضطرار باندې حمل کولی شی. بله دا چه دا واقعه د حال لا عموم لها د قبیل نه ده. اه

[۳۸۰۸] (۱) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَسَنِ الْمَيْمُونِيُّ، حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ، عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، أَخْبَرَنِي رَجُلٌ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ خَيْبَرٍ، عَنْ أَنْ تَأْكُلَ لُحُومَ الْحُمْرِ، وَأَمَرَنَا أَنْ نَأْكُلَ لُحُومَ الْخَيْلِ"، قَالَ عَمْرُو: فَأَخْبَرْتُ هَذَا الْخَبَرَ أَبَا الشَّعْثَاءِ، فَقَالَ: قَدْ كَانَ الْحَكَمُ الْغَفَارِيُّ فِينَا يَقُولُ هَذَا، وَأَبَى ذَلِكَ الْبَحْرِيُّ دَاوُدَ بْنَ عَبَّاسٍ.

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله منع فرمائیلې ده دغزوه خیبر په ورځ باندې دخرو دغوبنې دخورلونه او حکم ئې وکړو مونږ ته په خورلو دغوبنې داسونو، ددې حدیث عمرو بن دینار وائی چه دا حدیث ما ابو الشعثاء ته بیان کړو هغه او وئیل چه په مونږ کنسې به حکم غفاری هم په دې طریقہ بیانولو لیکن دي علامه ابن عباس، ددینه انکار وکړو. قوله: ﴿عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَوْمَ خَيْبَرٍ عَنْ أَنْ تَأْكُلَ لُحُومَ الْحُمْرِ وَأَمَرَنَا أَنْ نَأْكُلَ لُحُومَ الْخَيْلِ الْخ﴾

دا حدیث پورته د حیاة الحیوان په حواله تیر شو.

مسلك د ابن عباس رضي الله عنه:

وړاندې دلته په روایت کنسې دی ابو الشعثاء فرمائی چه دلته په بصره کنسې حکم غفاری هم د دې قائل دی، یعنی د تحریم لحوم حمر..... ﴿وابی ذلک البحر یزید ابن عباس رضي الله عنه﴾ یعنی دا بحر العلم یعنی ابن عباس رضي الله عنه د تحریم حمر انکار کوی. والحديث أخرجه البخاري من حديث عمرو بن دينار عن أبي الشعثاء وليس عنده فيه عن رجل، قاله المنذري.

[۳۸۱۰] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ عُبَيْدٍ، عَنْ ابْنِ مَعْقِلٍ، عَنْ رَجُلَيْنِ مِنْ مَزِينَةَ أَحَدَهُمَا عَنْ الْآخَرِ أَحَدُهُمَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو بْنِ عَوْفٍ، وَالْآخَرُ غَالِبُ بْنُ الْأَبْجَرِ، قَالَ مِسْعَرٌ: أَرَى غَالِبًا

(۱): صحيح البخاري / الصيد ۲۸ (۵۵۲۹)، انظر حديث رقم: ۳۷۸۸، (تحفة الأشراف: ۳۴۲۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۱۳/۴) (صحيح)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۰۱۸) (ضعيف الإسناد)

الَّذِي أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِهَذَا الْحَدِيثِ.

دا روایت د تیرشوي روایت په شان دي.

[٣٨١١] (١) حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ بَكَّارٍ، حَدَّثَنَا وَهَيْبٌ، عَنْ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ خَيْبَرٍ، "عَنْ لُحُومِ الْحُمْرِ الْأَهْلِيَّةِ، وَعَنِ الْجَلَالَةِ عَنْ رُكُوبِهَا وَأَكْلِ لَحْمِهَا".

عمرو بن شعيب دخپل پلار نه او هغه دده د نیکه نه روایت کوي فرمائي چه نبی ﷺ د غزوه خیبر په ورځ باندې د کورنو خوړو د خوړلو نه منع فرمائي چې ده او د مردار خوړو د سوري کولو او د دې د غوښې خوړلو نه.

د باب آخری حدیث «عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ» چه په هغې کښې تحریم لحوم حمر ذکر دي. اخرجه النسائي قاله المنذرى.

## بَابُ فِي أَكْلِ الْجَرَادِ

د ملخ د خوړلو بیان

[٣٨١٢] (٢) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ الْأَمْرِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي يَعْفُورٍ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي أَوْفَى، وَسَأَلْتُهُ عَنْ الْجَرَادِ، فَقَالَ: غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سِتَّ أَوْ سَبْعَ غَزَوَاتٍ، فَكُنَّا نَأْكُلُهُ مَعَهُ.

د ابو يعفور نه روایت دي فرمائي چه د ابن ابی اوفی نه مې اوریدلي دي کله چه ما ور نه د ملخ د خوړلو په باره کښې تپوس کړې وو هغه راته او فرمائي چې د نبی ﷺ سره په شپږو یا اوه غزاگانو کښې شریک شوي يم او مونږ به دا دهغه سره خوړل.

«غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - سِتَّ أَوْ سَبْعَ غَزَوَاتٍ فَكُنَّا نَأْكُلُهُ مَعَهُ»

عبدالله بن ابی اوفی رضي الله عنه فرمائي چه زه د رسول الله ﷺ سره په شپږو یا اووه غزاواتو کښې شریک شوي يم نو مونږ به د رسول الله ﷺ سره دا خوړل یعنی ملخان، حافظ فرمائي چه کیدې شي د معیت تعلق صرف د غزوې سره وي، او دا هم احتمال دي چه د سفر سره د اکل جراد سره هم وي. او د احتمال ثانی تائید د ابونعیم د روایت نه کیږي د کوم نه چه دا زیادت معلومېږي «وياکله معنا» (بذل) خو دلته په کتاب کښې د دې نه پس په روایت کښې راځي چه رسول الله ﷺ او فرمائي: «لَا أَكْلُهُ وَلَا أَحْرَمُهُ» مگر دا چه داسې اوښلې شي چه د «لا اکله» نه مقصود درغبت نفی مراد ده نه د نفس اکل، او یا دي دا اوښلې شي کما قال القاری چه دا دویم روایت د سلمان والا د دې په سند کښې اختلاف دي چه بعضو دا مرسل ذکر کړې دي لکه چه مصنف رضي الله عنه فرمائي: رَوَاهُ حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَبِي الْقَوَّامِ عَنْ أَبِي عَثْمَانَ عَنِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - لَمْ يَذْكُرْ سَلْمَانَ.

(١): سنن النسائي/الضحايا ٤٢ (٤٤٥٢)، (تحفة الأشراف: ٨٧٦٢)، وقد أخرجه: مسند احمد (٢/٢١٩) (حسن صحيح)

(٢): صحيح البخاري/الصعيد ١٣ (٥٤٩٥)، صحيح مسلم/الصعيد ٨ (١٩٥٢)، سنن الترمذي/الأطعمة ١٠ (١٨٢١)، سنن

النسائي/الصعيد ٣٧ (٤٣٦١)، (تحفة الأشراف: ٥١٨٢)، وقد أخرجه: مسند احمد (٤/٣٥٣، ٣٥٧، ٣٨٠)، سنن الدارمي/الصعيد

٥ (٢٠٥٣) (صحيح)



د دې حديث نه د جراد حلال والې ثابتېږي مطلقا، پس د جمهورو مذهب هم دا دې چه جراد مطلقا حلال دې كه د هغه مرگ په ذبح كولو سره اوشې يا ښكار كولو سره يا هغه طبعي مرگ باندې مړ شي. په دې كښې د امام مالك رحمه الله اختلاف دې د هغوی مشهور قول او د امام احمد رحمه الله يو روايت دې چه كه د يو عارض او سبب په وجه باندې مړ شي نو بيا خو حلال دې او كه طبعي مرگ باندې مړ وي نو بيا حلال نه دې. (بذل عن النووي)

جراد د حلاليدو نه علاوه د سمك په شان بغير د ذبح كولو نه هم حلال دې لكه چه مشهور حديث دې «احلت لنا الميتان السمك والجراد» والحديث اخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي، قاله المنذري.

[۳۸۱۳] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفَرَجِ الْبَغْدَادِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ الزُّبَيْرِ قَانَ، حَدَّثَنَا سَلَمَانُ التَّيْمِيُّ، عَنْ أَبِي عُمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ سَلَمَانَ، قَالَ: "سُئِلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْجَرَادِ، فَقَالَ: أَكْثَرُ جُنُودِ اللَّهِ، لَا أَكُلُهُ، وَلَا أَحْرَمُهُ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَاهُ الْمُعْتَمِرُ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي عُمَانَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، لَمْ يَذْكُرْ سَلَمَانَ.

د سلمان نه روايت دې فرمائي چه در رسول الله صلی الله علیه و آله نه دملخ دخورلو په باره كښې تپوس او كړې شو. نووې فرمائيل د الله ډير لښكري دی، نه خوږې زه خورم اونه ئې حرام گنرم. امام ابوداؤد فرمائي چه دا روايت ابوالمعتمر دخپل پلار نه په واسطه د عثمان سره د نبی صلی الله علیه و آله نه ذكر كړې دې اود سلمان ذكر ئې په كښې نه دې كړې.

قوله: «عَنْ سَلَمَانَ قَالَ سُئِلَ النَّبِيُّ -صلى الله عليه وسلم- عَنِ الْجَرَادِ فَقَالَ: أَكْثَرُ جُنُودِ اللَّهِ لَا أَكُلُهُ وَلَا أَحْرَمُهُ»

يعنى ملخان د الله پاك د مخلوقاتو په لښكر كښې يو ډير لوښې لښكر دې، يعنى په زمكه باندې اوسيدونكو نه په ظاهر كښې مراد د «من اكثر جنود الله» نه دا نه دې چه د ټولو نه زيات هم دا دی. خو دا زه خو خپله نه خورم او د بل دپاره ئې حراموم هم نه.

ذكر انه روى مرسلًا... واخرجه ابن ماجه مسندًا، قاله المنذري.

[۳۸۱۴] حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، وَعَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَا: حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ يَحْيَى بْنِ عُمَارَةَ، عَنْ أَبِي الْعَوَامِ الْجَزَارِيِّ، عَنْ أَبِي عُمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ سَلَمَانَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ، فَقَالَ مِثْلَهُ، فَقَالَ: أَكْثَرُ جُنُودِ اللَّهِ، قَالَ عَلِيُّ: اسْمُهُ قَابِدٌ يَعْنِي أَبَا الْعَوَامِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَاهُ حَمَادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي الْعَوَامِ، عَنْ أَبِي عُمَانَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، لَمْ يَذْكُرْ سَلَمَانَ.

د سلمان نه روايت دې فرمائي چه در رسول الله و نه دملخ دخورلو په باره كښې تپوس او كړې شو نو داسې ئې اوفرمائيل، على بن عبد الله وئيلي دی چه د ابو العوام نوم فائد دې. امام ابوداؤد فرمائي دا روايت حماد په واسطه د ابو العوام سره د سلمان د ذكر نه بغير د ابو عثمان نه ذكر كړې دې او هغه د نبی صلی الله علیه و آله نه بيان كړې دې.

(۱) سنن ابن ماجه/الصعيد ۹ (۳۲۱۹)، (تحفة الأشراف: ۴۴۹۵) (ضعيف)

(۲) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۴۴۹۵) (ضعيف)

## بَابُ فِي أَكْلِ الطَّافِي مِنَ السَّمَكِ

دهغه کبانو (مهیا نو) د خوړلو بیان کوم چه د اویو په سر مړه روان وی

یعنی هغه مهیان کوم چه په اوبو کښې په طبعی مرگ باندې مړه شی او بیا پورته ګرزی

[٣٨١٥] (١) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمٍ الطَّائِفِيُّ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أُمَيَّةَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَا أَلْقَى الْبَحْرُ أَوْ جَزَرَ عَنْهُ فَكُلُّهُ، وَمَا مَاتَ فِيهِ وَطَقًا فَلَا تَأْكُلُوهُ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَى هَذَا الْحَدِيثَ سُفْيَانُ الثَّوْرِيُّ، وَأَيُّوبُ، وَحَمَّادٌ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ أَوْ قُفُوهُ عَلَى جَابِرٍ، وَقَدْ أُسْنِدَ هَذَا الْحَدِيثُ أَيْضًا مِنْ وَجْهِ ضَعِيفٍ عَنْ ابْنِ أَبِي ذُئْبٍ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلى دی کوم مهې چه دریاب ئې راوغورځوي یا د دریاب اوبه او درېزې نو دا خوړئ او کوم مهې چه دمړ کیدونه پس داوبو په سر روان وي نو دامه خوړی، امام ابوداؤد فرمائی دا روایت سفیان ثوري دایوب نه او هغه دحماد نه او هغه د جابر نه موقوف نقل کړې دې، اودا حدیث سنداهم دابن ابی زئب نه او هغه دابن ابی زبیر په واسطه بیان کړې دې لیکن دا واسطه ضعیفه ده.

قوله: ﴿ مَا أَلْقَى الْبَحْرُ أَوْ جَزَرَ عَنْهُ فَكُلُّهُ وَمَا مَاتَ فِيهِ وَطَقًا فَلَا تَأْكُلُوهُ ﴾

یعنی کوم مهې چه د دریاب چپه بهر راوغورځوی یا د مهې په دریاب کښې د کیدو سره اوبه د هغې نه لرې شی او بیا هغه په خشکۍ مړ شی، نو داسې قسم مهیان خو خوړئ او کوم چه په دې کښې طبعی مرگ سره مړ کیدو باندې پورته ګرزی هغه مه خوړئ.

د طافی خوراک د احنافو په نزد مکروه دې او د باقی ائمه ثلاثه او د اهل ظواهر په نزد حلال بغیر د کراهت نه دې، امام نووی رحمته الله علیه فرمائی چه دا حدیث ضعیف دې، مصنف رحمته الله علیه هم د دې په سند کښې اختلاف بیان کړې دې چه یو جماعت دا حدیث د ابو الزبیر نه موقوفا علی جابر روایت کړې دې. یعنی د دې حدیث موقوفا روایت کیدل زیات صحیح دی په نسبت د مرفوع. او نور کلام د فریقینو په دلائلو باندې په بذل کښې دې چه څوک کتل غواړی او دې ګوری او په حاشیه د بذل کښې دی ﴿ وروی ذلک ای الکراهة عن جابر وابن عباس رضي الله عنهما، ولا يضر من اوقفه فان الموقوف فی مثل هذا كالرفوع كما معروف كما فی المرقاة وفي الهداية عن جماعة من الصحابة مثل مذهبا وذكر الزيلعي الآثار وكذا فی الدر المنثور ولخصها فی "التعليق الممجد" وروی عن ابی بكر رضي الله عنه الطافی حلال علقه البخاری فی صحيحه اه ﴾ والحدیث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى.

(١): سنن ابن ماجه/الصید ١٨ (٣٢٤٧)، (تحفة الأشراف: ٢٦٥٧) (ضعیف)



## باب فِي الْمَضْطَرِ إِلَى الْمَيْتَةِ (١)

د مردارې خوړلو ته د مجبوره كيدو بيان

[٣٨١٦] (١) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، أَنَّ رَجُلًا نَزَلَ الْحَرَّةَ وَمَعَهُ أَهْلُهُ وَوَلَدُهُ، فَقَالَ رَجُلٌ: إِنَّ نَاقَةً لِي ضَلَّتْ فَإِنْ وَجَدْتَهَا فَأَمْسِكْهَا، فَوَجَدَهَا فَلَمْ يَجِدْ صَاحِبَهَا، فَمَرَضَتْ، فَقَالَتْ أَمْرَأَتُهُ: انْحَرِهَا، فَأَبَى، فَتَنَفَقْتُ، فَقَالَتْ: اسْلُخْهَا حَتَّى تُقَدِّدَ شَحْمَهَا وَنَحْمَهَا وَتَأْكُلَهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فَأَتَاهُ، فَسَأَلَهُ، فَقَالَ: "هَلْ عِنْدَكَ غَنَى يُغْنِيكَ؟" قَالَ: لَا، قَالَ: فَكُلُوهَا، قَالَ: فَجَاءَ صَاحِبُهَا فَأَخْبَرَهُ الْخَبَرَ، فَقَالَ: هَلَا كُنْتُ نَحَرْتُهَا، قَالَ: اسْتَحْيَيْتُ مِنْكَ".

د جابر بن سمره رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چې یو کس د مدینې سره نژدې حره مقام ته راغی او دده سره دده بال بچ هم وو یو کس ورته او وئیل زما اوښه ورکه شوي ده که چرې تا اوموندله نووئې نیسه نو دې کس ته دغه اوښه ملاو شوه لیکن داوښي مالک ملاو نه شو بیا هغه اوښه بيماره شوه نو ددې کس ښځې او وئیل چې دا ذبح کړه لیکن ده د ښځې خبره ونه منله او اوښه مرداره شوه په دې وخت کښې ددې کس ښځې او وئیل چې ددې اوښي نه خرمن اوباسه ددې دپاره چې مونږ ددې وازده استعمال کړو او غوښه ئې وچه کړو دې کس او وئیل زه به دښې عليه السلام نه تپوس او کړم، هغه دښې عليه السلام په خدمت کښې حاضر شو او د مسئلې تپوس ئې وکړو نبي عليه السلام ورته او فرمائیل ایا ستا سره دومره څه شته چې ته پرې د دینه بچ شي نو ده ورته او وئیل چې نشته نبي عليه السلام ورته او فرمائیل بیا دغه اوښه اوخوره، راوی وائی چې په دې دوران کښې داوښي مالک راوړسیدو او دغه ښځې خاوند ورته ټوله واقعہ بیان کړه مالک ورته او وئیل تا سوولې نه ده ذبح کړې؟ ده او وئیل چې ماته ستانه حیا راغله.

مضمون الحديث :

قوله: «عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ أَنَّ رَجُلًا نَزَلَ الْحَرَّةَ وَمَعَهُ أَهْلُهُ وَوَلَدُهُ فَقَالَ رَجُلٌ إِنَّ نَاقَةً لِي ضَلَّتْ فَإِنْ وَجَدْتَهَا فَأَمْسِكْهَا الْخ»

جابر بن سمره رضي الله عنه فرمائی چې یو مسافر سرې مدینې طیبې ته راتلو سره په مقام حره کښې دیره شو. د هغه سره د هغه اهل و عیال هم وو نو یو مقامی سرې هغه ته اووې چې زما یاو اوښه ورکه شوې ده که تاته ملاؤ شی نو هغه اونیسې، پس هغه ته یو اوښه ملاؤ شوه هغه اونیوله

(١) په مسئله د مضطر کښې مباحثه بهه ؟ په حاشیه د بذل کښې دلته اووه بحثونه او مسائل ذکر دی کوم چې بعینه دلته نقل کولې شی ..... فيه سبعة ابحاث في الاوجز : الاول في حقيقته وهي عند الجمهور ان يصل به الجوع الي الهلاك او الي مرض يفضي الي الهلاك وفي حكمه الاكراه ..... الثاني في مقدار الاكل وهو سد الرمق عندنا وهو المشهور عند الشافعي واحمد ورواية مرجوحة عن مالك، والراجح المعتمد عند مالك هو غير المشهور عنهما يجوز له الشبع ..... والثالث هل يجب الاكل او يباح ؟ ارجح روايتي احمد واصح وجهي الشافعي الوجوب، وبه قال مالك والحنفية الا ابا يوسف فقال بالاباحة وهو احد روايتي الشافعي واحمد ..... والرابع السفر والحضر سواء عند الجمهور ورواية عن احمد تختص بالسفر ..... والخامس لا يجوز للعاص في السفر عند الثلاثة خلافا للحنفية (فعندهم الرخصة عامة) ..... والسادس يجوز له التردد منه في اصح روايتي احمد وبه قال الشافعي ومالك والاخري لاحمد لا يجوز ..... والسابع الخمر كالميتة عندنا في هذه المسئلة ولا يجوز عند الشافعي ومالك اهـ

(٢) : تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ٢١٥٠)، وقد أخرجه: مسند احمد (٥/٨٧، ٨٨، ٨٩، ٩٧، ١٠٤) (حسن الإسناد)

خو هغه مالک ئې ملاؤ نه شو، اتفاقی هغه اوښه بيماره شوه نو د دې پردی مسافر سړی ښځې اووې دا ذبح کړه، هغه او نه منله تر دې چه هغه اوښه مړه شوه، بيا د هغه ښځې اووې چه اوس د دې خرمن اوباسه چه مونږ د دې غوښه او وازگه پرې کړو او اوښې خورو (چه هغوی سره د خوراک دپاره هيڅ نه وو) هغه سړی اووې چه تر څو پورې زه د رسول الله ﷺ نه معلومه نه کړم داسې نه شم کولې. پس هغه د رسول الله ﷺ نه دې باره کښې تپوس اوکړو نو هغوی ترې نه تپوس او فرمائيلو چه تاسره د دې نه علاوه بل څيز د خوراک شته کوم چه تا د دې مردارې نه مستغنی کړی؟ هغه عرض اوکړو نه جی داسې هيڅ څيز نشته، په دې اوریدو باندې رسول الله ﷺ هغه ته د خوراک اجازت ورکړو، د دې نه پس چه کله د هغې اوښې مالک راوړسیدلو او دې سړی ورته د اوښې حال بیان کړو، په دې باندې د هغې مالک اووې چه تا د مرگ نه مخکښې هغه ذبح ولې نه کړه؟ هغه اووې زه ستانه شرمیدم.....

[٣٨١٧] (١) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ دَكَيْنٍ، حَدَّثَنَا عَقْبَةُ بْنُ وَهَبٍ بْنُ عَقْبَةَ الْعَامِرِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يَحْدِثُ، عَنْ الْفَجَّيْعِ الْعَامِرِيِّ، أَنَّهُ أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: "مَا يَحِلُّ لَنَا مِنَ الْمَيْتَةِ؟" قَالَ: "مَا طَعَامُكُمْ؟" قُلْنَا: "نُفْتِيقُ وَنَضْطِيقُ" قَالَ أَبُو نَعِيمٍ: فَسَرَّهَ لِي عَقْبَةُ قَدْ حَرَّ غُدُوَّةً، وَقَدْ حَرَّ عَشِيَّةً، قَالَ: ذَلِكَ وَأَبَى الْجُوعُ، فَأَحَلَّ لَهُمُ الْمَيْتَةَ عَلَى هَذِهِ الْحَالِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: الْغُبُوقُ مِنْ آخِرِ النَّهَارِ، وَالصُّبُوحُ مِنْ أَوَّلِ النَّهَارِ.

د فجييع العامري نه روایت دې فرمائی چه زه دښې ﷺ په خدمت کښې حاضر شوم او عرض مې وکړو ای دالله رسوله زمونږ دپاره په کوم حال کښې مرداره خوړل جائز دي؟ نبی ﷺ او فرمائيل ستاسو خوراک څه شې دې؟ ده ورته اووئيل دماښام په وخت کښې دښودو يوه پياله اودسحر په وخت کښې دښودو يوه پياله، ابونعيم وائی عقبه ماته ددې حديث داسې تشریح کړې ده چه ددينه مراد دښودو يوه پياله سحر او يوه ماښام ځکل په دې خبره دي زما په خپل پلار قسم وي چه زه وگه گرځم نو په دې ښاښاندې نبی ﷺ ددغه کس دپاره مرداره جائز او گرځوله.

### شرح الحديث :

قوله: (عَنِ الْفَجَّيْعِ الْعَامِرِيِّ أَنَّهُ أَتَى رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- فَقَالَ مَا يَحِلُّ لَنَا مِنَ الْمَيْتَةِ؟ الخ) محل مجرد او مزید دواړه کیدې شی، دا استفهام دې یعنی (اما محل لنا الميتة؟) او د مزید په صورت کښې به ئې مطلب دا وی چه آیا تاسو میتة زمونږ دپاره نه جائز کوئ، رسول الله ﷺ او فرمائيل چه ستاسو خوراک څه دې، او تاسو ته د خوراک دپاره څه ملاویرې، (قُلْنَا نُفْتِيقُ وَنَضْطِيقُ) هغه اووې چه زمونږ خوراک د سحر او ماښام یو یو پياله ده. صبح وائی د سحر خوراک ته غبوق د ماښام خوراک ته. قال ذلك وأبى الجوع... رسول الله ﷺ او فرمائيل چه زما دې په پلار قسم وی دا خو ټوله لوږه ده او رسول الله ﷺ د هغوی دپاره د مردارې خوړل جائز کړل.

د اضطرار په وخت د مضطر دپاره د اکل میتة اجازت د احنافو په نزد (او هم دا قول راجح د حنابله او د شوافعو دې) په اندازه د سدرمق دې، په دې کښې د امام مالک رحمه الله

(١): تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ١١٠٢١) (ضعيف الإسناد)



اختلاف دي (فانه اجاز للمضطر الشيع وهو رواية عن الشافعي واحمد)

د دې حديث نه په ظاهر كښې د مالكيانو تائيد كيږي، په بذل كښې د گنگوهي د تقرير نه نقل كړې دي چه كيدې شي مصنف رحمه الله دا دواړه احاديث د خپل مذهب د ثبوت دپاره راوړي وي چه اضطرار د هلاكت په ويره باندې موقوف نه دي ځكه چه د رومي روايت نه د مطلق اكل اجازت ثابتيږي او هم دغه شان د دويم روايت نه ثابتيږي چه د حل ميتة بنياد د هلاكت په ويره باندې نه دي ځكه چه يو پياله سحر او يو پياله ماښام سړي ته ملاويږي نو په دې صورت كښې د هلاكت ويره چرته وي؟ خو د اول روايت جواب دا دي په كوم كښې چه مطلق اكل ذكر دي. چه دا مطلق به د آيت په ذريعه مقيد كولي شي چه په هغې كښې د مضطر دپاره اباحت د ميتة ذكر دي ځكه چه سړي په اندازه د رسد رمق د خوراك نه پس مضطر چرته پاتي كيږي چه د هغه دپاره اكل ميتة حلال شي، او د روايت ثانيه جواب دا دي (قدح غدوة وقدر عشية) مطلب به دا اخستلي شي چه هر پياله د هر سړي دپاره مراد نه ده بلكه د پوره كور والو دپاره، ځكه چه يو يو پياله سحر او ماښام هر سړي ته ملاؤ شي نو په دې صورت كښې خوراك ته حاجت نه پاتي كيږي پاتي لا حالت اضطرار.

قوله: په دې حديث كښې دا دي چه رسول الله ﷺ او فرمايل: (ذلك وابي الجوع) يعنى رسول الله ﷺ د خپل پلار قسم او خورلو، دغه شان د حضور ﷺ قسم د كتاب الصلوة په اول كښې تير شوي دي. (افلح وابه. ان صدق) د دې جواب هم هلته ذكر شوي دي، او كوم چه د كتاب الايمان والندور په يو حديث كښې د حضور ﷺ دا قسم تير شوي دي (لعمر الهك) په هغې كښې خو هيڅ اشكال نشته ځكه چه د عمر اضافت په دې كښې د اله طرف ته شوي دي.

## باب في الجمع بين لؤنين من الطعام

باب په يو وخت كښې د مختلف قسمه خوراكونو خورلو بيان

[۳۸۱۸] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ أَبِي رِزْمَةَ، أَخْبَرَنَا الْفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ حُسَيْنِ بْنِ وَقِيدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَدِدْتُ أَنْ عِنْدِي خُبْزَةٌ بَيْضَاءُ مِنْ بَرَقِ سَمَرَاءَ مُلَبَّقَةٌ بِسَمْنٍ وَلَبَنٍ، فَقَامَ دَجَلٌ مِنَ الْقَوْمِ، فَأَتَخَذَهُ لِحَاءً بِهِ، فَقَالَ: فِي أَيِّ شَيْءٍ كَانَ هَذَا؟ قَالَ: فِي عُكَّةٍ ضَبٍّ، قَالَ: أَرْفَعُهُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا أَحَدِيكَ مُنْكَرٌ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَأَيُّوبُ لَيْسَ هُوَ السَّخْتِيَانِيُّ.

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روايت دي فرمائي چه رسول الله ﷺ فرمائيلى دي دغنمو

(۱) په حاشيه د بذل كښې دي: هم دغه شان ترجمه امام بخاري هم قائم كړې ده، په دې باندې حافظ ابن حجر رحمه الله فرمائي چه شايد مصنف اشاره كړې ده د حضرت انس رضي الله عنه هغه ضعيف حديث طرف ته چه په هغې كښې دا دي چه يو ځل د نبی كريم ﷺ په خدمت كښې يو پليټ راوړلې شو چه په هغې كښې پي او شهد وو، نو په دې باندې نبی كريم ﷺ او فرمائيلى: (دمان في انا، لا اكله ولا احرمه) چه په يو لوڅي كښې دوه قسمه سالن (اينگولي)، زه دا نه خورم او بل چا دپاره نهې حرام كوم هم نه، اخرجه الطبراني وبيه راو مجهول.

(۲) سنن ابن ماجه ۴۷ (۳۳۴۱)، (تحفة الأشراف: ۷۵۵۱) (ضعيف)

دوړو سپینه ډوډۍ په غوړو کښې پخه کړي شوي زماډیره خوښه وي، په دې وخت کښې یوکس پاڅیدو اودا ډوډۍ ئې دښې عليه السلام دپاره تیاره کړه او پیش ئې کړه نبي کریم صلی الله علیه و آله ورته تپوس وکړوچه غوړي په څنگه لوبښي کښې پراته وو؟ عرض وکړي شودخادمی دڅرمني په مشکیزه کښې، نبي صلی الله علیه و آله او فرمائیل دا ډوډۍ پورته کړه.

امام بخاری رحمته الله هم قائم کړې ده په دې باندې حافظ ابن حجر رحمته الله فرمائی چې کیدې شی مصنف رحمته الله اشاره کړې ده د انس رضی الله عنه د حدیث ضعف ته چې په هغې کښې دی چې یو کرت د رسول الله صلی الله علیه و آله په خدمت کښې یو کاسه حاضره کړې شوه چې په هغې کښې پئ او شهد وو نو په دې باندې رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل: ادمان فی انا لا آکله ولا احرمه.... په یو لوبښی کښې دوه قسم خوراک دا زه نه خورم او د بل دپاره ئې نه حراموم. اخرجه الطبرانی وفیه راوهمبول، یعنی په یو وخت باندې دوه قسمه خوراک کول، یعنی د دې جواز، لکه چې د حدیث الباب نه معلومېږي.

### مضمون الحديث :

قوله: ﴿وَدِدْتُ أَنْ عِنْدِي خُبْزَةٌ بَيْضَاءُ مِنْ بَرَّةٍ سَفْرَاءَ مُلَبَّقَةً بِسَمْنٍ وَلَكِنْ﴾

سیدنا ابن عمر رضی الله عنهما فرمائی چې رسول الله صلی الله علیه و آله یو ورځ دا خواش بنکاره کړو چې که ما سره د سپینو اوربشو ډوډۍ وې په پیواو غوړو کښې گډه شوې (نو څومره به ښه وې) په دې باندې یو صحابی رضی الله عنه اودریدلو او هم د دې قسم یو ډوډۍ ئې راوړله. رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل دا کوم غوړی چې په دې پورې دی دا په څه کښې وو؟ ﴿قال فی عکة ضب﴾ هغه جواب ورکړو چې د ضب په څرمن کښ... رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل دا ډوډۍ زما د مخې نه اوچته کړئ او هغه ئې نه او نه خوړله.

په بذل کښې د حضرت گنگوهی رحمته الله د تقریر نه نقل کړې دی چې د دې حدیث نه د ضب عدم جواز په فهم کښې راځی ځکه چې که هغه حلال وې نو رسول الله صلی الله علیه و آله به د هغه خوراک د خوړلو نه انکار نه کولو. او که څوک داسې اوائی د شوافعو د طرف نه چې هغوی داسې د طبعی تنفر د وجې نه او کړل نه د عدم حل د ضب د وجې نه... نو د هغه جواب دا دې چې دا توجیه صحیح نه ده ځکه چې د ضب د څرمنې هېڅ اثر په غوړو کښې نه وو. (والحدیث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى)

### باب فی أَكْلِ الْجُبْنِ

د پنیر خوړلو بیان

په دې کښې دوه لغته دی یو بضم الجیم و سکون الباء، او دویم بضم الجیم والباء و تشدید النون، په وزن د عتل (بضمتین و تشدید مع التنوین) د خوراک معروف خیز دې چې هغې ته پنیر وائی.



[٣٨١٩] (١) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُوسَى الْبَلْخِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَنْصُورٍ، عَنْ الشَّعْبِيِّ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: "أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَجْنُونَةً فِي تَبُوكَ، فَدَعَا بِسَكِينٍ فَسَمَّى وَقَطَعَهُ".

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چې په غزوه تبوك كښې نبي صلی الله علیه و آله ته د پښيريوه توت په پيش كړې شوه نو چاره ئې را اوغوښتله او بسم الله ئې ووئيله او دائي پري كړه. په حديث الباب كښې دې چې كله رسول الله صلی الله علیه و آله په غزوه تبوك كښې وو نو د پښيريوه توكړه راوړلې شوه. رسول الله صلی الله علیه و آله چاره را اوغوښتله او هغه ئې بسم الله لوستلو سره كټ كړه.

## باب فی الخَلِّ

د سرکې خوړلو بيان

[٣٨٢٠] (٢) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُخَارِبِ بْنِ دِثَارٍ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "نِعْمَ الْإِدَامُ الْخَلُّ".

ترجمه: د جابر رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چې نبي كريم صلی الله علیه و آله فرمائيلى دي: چې سرکه ډيره ښه تر كاري ده.

قوله: ﴿نِعْمَ الْإِدَامُ الْخَلُّ﴾ رسول الله صلی الله علیه و آله د سرکې تعريف او فرمائيلى چې هغه خومره ښه تر كاري ده په دې اعتبار سره چې ددې په جوړولو كښې او حاصلولو كښې زيات مشقت نشته او نه پكښې زيات خرچ لهذا قناعت ته ډير نژدې دې. (بذل)

په شرح د حديث كښې د شارحينو اختلاف:

امام خطابي رحمته الله عليه فرمائی چې په دې كښې مدح ده په خوراك خكاك كښې د اقتصاد اختيارولو او نفس لره د خوندور خوراكونو نه د منع كولو په دې باندې امام نووي رحمته الله عليه فرمائيلى دي چې د اقتصاد فى المأكول والمشارب ترغيث خو په نورو روايتونو او قواعدو سره ثابت دې، دلته خومقصود د رسول الله صلی الله علیه و آله فى حد ذاته د سرکې تعريف كول دي، او حضرت په بذل كښې دا فرمائيلى دي چې د خطابي غرض د مدح خل نفى نه ده بلكه دا ده چې د اقتصاد د مدح په ضمن كښې د سرکې هم تعريف كړې شوې دې اه..... خو ظاهر د كلام د خطابي نه هم دا ده چې د هغوى په نزد په دې حديث سره مقصود مدح د خل نه ده بلكه د اقتصاد ترغيث دې هم په دې وجه امام نووي رحمته الله عليه د هغې په سختي سره انكار كړې دې. زما په نزد په دې كښې د امام نووي رحمته الله عليه رائي ډيره غوره ده د خطابي د رائي نه. ځكه چې دا حديث مختصر دې او پوره حديث هغه دې كوم چې په مسلم شريف كښې راغلې دې: ﴿يَقُولُ جَابِرُ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ أَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بِيَدِي ذَاتَ يَوْمٍ إِلَى مَنْزِلِهِ فَأَخْرَجَ إِلَيْهِ فَلَقَا مِنْ خُبْزٍ فَقَالَ «مَا مِنْ أَدَمٍ». فَقَالُوا لَا إِلَّا شَيْءٌ مِنْ خَلٍّ. قَالَ «فَإِنَّ الْخَلَّ نِعْمَ الْأَدَمُ». قَالَ جَابِرٌ فَمَا زِلْتُ أَحِبُّ الْخَلَّ مُنْذُ سَمِعْتُهَا مِنْ نَبِيِّ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَقَالَ طَلْحَةُ مَا زِلْتُ

١: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ٧١١٤)، وقد أخرجه: صحيح مسلم / الأثرية ٤٠ (٣٠٥٢)، ٢٠ (٣٨٢٧) (حسن الإسناد)

٢: سنن الترمذي / الأظعمة ٣٥ (١٨٤٢)، سنن ابن ماجه / الأظعمة ٣٣ (٣٣١٧)، (تحفة الأشراف: ٢٥٧٩)، وقد أخرجه:

صحيح مسلم / الأثرية ٤٠ (٣٠٥٢)، سنن النسائي / الأيمان ٢٠ (٣٨٢٧) مستند احمد (٣٠٤٣، ٣٧١، ٣٨٩، ٣٩٠)، سنن

الدارمي / الأظعمة ١٨ (٢٠٩٢) (صحيح)

أَجِبُ الْخَلَّ مُنْذُ سَمِعْتُهَا مِنْ جَابِرٍ) د دې حديث نه هم دا معلومېږي چه د رسول الله ﷺ اصل مقصود مدح د خل ده اگر چه د دې په ضمن كښې اقتصاد هم موندلې شى. والحديث اخرجه مسلم والنسائي، قاله المنذرى.

[٣٨٢١] (١) حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّلَيْسِيُّ، وَمُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، قَالَا: حَدَّثَنَا الْمُثَنَّى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ نَافِعٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "نِعْمَ الْإِدَامُ الْخَلَّ".

د جابر رضي الله عنه روايت دې فرمائی چه نبی کریم ﷺ فرمائيلي دي: چه سرکه ښه تر کاري ده.

## باب فِي أَكْلِ الثُّومِ

داوې خورلو بيان

[٣٨٢٢] (٢) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي عَطَاءُ بْنُ أَبِي رِبَاحٍ، أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: إِنْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ أَكَلَ ثُومًا أَوْ بَصَلًا، فَلْيَعْتَزَلْنَا أَوْ لِيَعْتَزِلْ مَسْجِدَنَا، وَلِيَقْعُدْ فِي بَيْتِهِ، وَإِنَّهُ أَتَى بِبَدْرٍ فِيهِ خَضِرَاتٌ مِنَ الْبُقُولِ، فَوَجَدَهَا رِيحًا، فَسَأَلَ فَأُخْبِرَ بِمَا فِيهَا مِنَ الْبُقُولِ، فَقَالَ: قَرَّبُوهَا إِلَى بَعْضِ أَصْحَابِهِ كَانَ مَعَهُ، فَلَمَّا رَأَاهُ كَرِهَ أَكْلَهَا، قَالَ: كُلْ فَإِنِّي أَنَا حَيٌّ مِنْ لَا تُنَاجِي"، قَالَ أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ بِبَدْرٍ: فَسَرَّةُ ابْنِ وَهْبٍ طَبَقٌ.

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه روايت دې فرمائی چه نبی کریم ﷺ فرمائيلي دي: چاچه اوگه يا پياز خورلي وي هغه دي مونږ ته نه رانزدې كيږي، ياد اچه زمونږ مسجد ته دي نه راځي، ياد اچه په کور کښې دي کيني، يوځل نبی کریم ﷺ ته يولونږي راوړي شوچه سبزي ساگ وغيره پکښې پراته وونو نبی ﷺ دهغې نه څه بري محسوس کړونو تپوس ئې وکړو بيا ورته ددې تفصيل بيان کړي شونې ﷺ او فرمائيل دا فلانی صحابي ته ورنزدې کړئ نو هغه هم خوښ نکړل نونې ﷺ او فرمائيل خوره زه دهغه ذات سره جرگه کوم دکوم سره چه تاسونه کوئ، احمد بن صالح وائي چه ابن وهب دبدر تشرېح په لوبښي سره کړي ده.

قوله: (مَنْ أَكَلَ ثُومًا أَوْ بَصَلًا فَلْيَعْتَزَلْنَا - أَوْ لِيَعْتَزِلْ مَسْجِدَنَا - الخ)

د جابر رضي الله عنه روايت دې چه رسول الله ﷺ او فرمائيل چه کوم سرې اوگه يا پياز خورلې وي، يعنی کچه چه پخ شوې نه وي. نو هغه دې زمونږ مجلس ته نه راځي، يعنی د دې دواړو خيزونو د خوراک نه پس، او يا ئې دا او فرمائيل چه زمونږ مسجد ته دې نه راځي او هغه له پکاردې چه په خپل کور کښې کيني. يعنی تر څو چه د هغې بدبوئی ختم شوې نه وي لکه چه په بل حديث کښې دي: (حتى يذهب منه ريحه).

وراندې په دې روايت کښې دي چه يو کړت رسول الله ﷺ ته يو طبق راوړلې شو چه په هغې کښې مختلف قسم سبزيانې وې، په رسول الله ﷺ باندې چه کله د هغې بوئی اولگيدو نو هغوی تپوس اوکړو چه دا څه دی؟ چه کله هغوی ته اوئيلي شو چه په دې کښې مختلف

(١): صحيح مسلم / الأظعمة ٣٠ (٢٠٥٢)، سنن النسائي / الأيمان ٢٠ (٣٨٢٧)، (تحفة الأشراف: ٢٣٣٨) (صحيح)

(٢): صحيح البخاري / الأذان ١٦٠ (٨٥٤)، الأظعمة ٤٩ (٥٤٥)، الاعتصام ٢٤ (٧٣٥٩)، صحيح مسلم / المساجد ١٧ (٥٦٤)،

(تحفة الأشراف: ٢٤٨٥)، وقد أخرجه: سنن الترمذي / الأظعمة ١٣ (١٨٠٦)، سنن النسائي / المساجد ١٦ (٧٠٨)، سنن ابن

ماجه / الأظعمة ٥٩ (٣٣٦٣)، مسند احمد (٣/ ٣٧٤، ٣٨٧، ٤٠٠) (صحيح)



سبزيانې دى نو هغوى بعضو حاضرينو ته او فرماييل چه دا فلانى صحابى ته اوليرئ كوم چه هغوى سره وو (خو هغه صحابى د هغې په خوراك كښې تامل او كړو د رسول الله ﷺ د نه خوراك په وجه باندې) پس چه كله رسول الله ﷺ اوليدل چه هغه صحابى ددې خوراك نه خوښوى نو رسول الله ﷺ ورته او فرماييل ته ئې اوخوره. او رسول الله ﷺ خپله د نه خوراك وجه دا بيان او فرماييله: «فانى اناجى من لا تناجى» يعنى زما د نه خوراك وجه خو دا ده چه ما سره ملائك خبرې كوي او هغوى د لطافت د انتها د وجې نه ادنى بوئى هم نه برداشت كوي. په دې حديث كښې د بعض اصحاب نه مراد ابو ايوب انصاري ؓ دې لكه چه د صحيح مسلم او ترمذى په روايت كښې په تفصيل سره راغلې دى د هجرت په ابتداء كښې چه د چا كور كښې حضور ﷺ قيام او فرماييلو. (كذا قال الحافظ في الفتح، وهكذا في البذل)

### د صحابى حديث لره روايت بالمعنى كول:

د دې حديث نه دا هم معلومه شوه چه ډير كرته به صحابه كرامو ؓ د رسول الله ﷺ د كلام روايت بالمعنى هم كولو. په دې وجه د رسول الله ﷺ الفاظ دا خو نه شى كيدي: «قربوا الى بعض اصحابه» ښكاره خبره ده چه رسول الله ﷺ به فرمايلى وى چه «قربوها الى فلان» د هغه صحابى نوم اخستلو سره، خو دلته راوى په روايت كښې داسې نقل او كړو «الى بعض اصحابه» دا تعبير د راوى خپل دې. (افادة الكرمانى ونقله في العون)

وړاندې په روايت كښې دى چه راوى د "بدر" تفسير په "طبق" سره او كړو په ظاهر كښې طبق لره د بدر سره په استداره كښې تشبيه وركولو سره بدر وئيلې شى، په حاشيه د بذل كښې حضرت شيخ يو بله خبره ليكلې ده هغه دا چه «فليعتزل مسجدا» دا مستقل حديث دې دا واقعه په غزوه خيبر كښې پيښه شوې وه. او د حديث په جزء ثانى كښې يعنى «وانه اتى بدر فيه حضرات» الى اخره... دا د هجرت د ابتداء واقعه ده چه كله رسول الله ﷺ د ابو ايوب انصاري ؓ په كور كښې ډيره وو.

والحديث أخرجه البخاري ومسلم والنسائي، قاله المنذرى....

[۳۸۲۳] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو، أَنَّ بَكْرَ بْنَ سَوَادَةَ حَدَّثَهُ، أَنَّ أَبَا الْحَبِيبِ مَوْلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَعْدٍ حَدَّثَهُ، أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ حَدَّثَهُ، أَنَّهُ ذَكَرَ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الثُّمُورَ وَالْبَصَلَ، وَقِيلَ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَأَشَدُّ ذَلِكَ كُلُّهُ الثُّمُورُ أَفْضَحُ مِمَّ؟" فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كُلُّوهُ، وَمَنْ أَكَلَهُ مِنْكُمْ فَلَا يَقْرَبْ هَذَا الْمَسْجِدَ حَتَّى يَذْهَبَ رِيحُهُ مِنْهُ."

د ابوسعيد خدرى ؓ نه روايت دې فرمائى چه د نبى ﷺ په وړاندي يوخل دپيازو او اوگي تذكره او كړي شوه، عرض او كړي شو چه اې د الله رسوله په دې ټولو كښې داوړي بوي ډير تيزوي ايا حراموي ئې اېښى او فرماييل خورئ ئې ليكن چاچه وخورله نوچه ترخوئې بوي ختم شوي نه وي مسجد ته دي نه راځي.

د دې نه پس په حديث د ابوسعيد ؓ كښې دى «قيل يا رسول الله ﷺ واشد ذلك كله

الثوم احرمه؟» په دې باندې په حاشیه د بذل کښې لیکلې دی قال النووی : اختلف اصحابنا هل كانت هذه الاشياء محرمة عليه عليه السلام، الاصح من انه مكروه تنزيها اه عليه السلام او علامه عینی رحمته الله فرمائی چه د ابن حزم نه علاوه د بعض اهل ظاهر په نزد دا خیزونه حرام دی « لافضائها الى ترك الجماعة وهي عندهم فرض الخ »

### د جماعت د مانځه په نه فرض کیدو باندې استدلال :

او په فتح الباری ص ۳۹۹ ج ۲ کښې دلته داسې لیکلې دی چه د احادیث الباب نه په دې خبره استدلال کړې شوې دې چه د جماعت مونځ فرض عین نه دې ځکه چه د دې خیزونو خوراک جائز دي او د دې د لوازمونه ترک د جماعت دي او د جائز لازم جائز وی.

[۳۸۲۴] ( ) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ الشَّيْبَانِيِّ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ حُبَيْشٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ أَظْنَهُ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «مَنْ تَقَلَّ تَجَاةَ الْقِبْلَةِ جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَقْلُهُ بَيْنَ عَيْنَيْهِ، وَمَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الْبُقْلَةِ الْحَبِيثَةِ فَلَا يَقْرَبَنَّ مَسْجِدَنَا ثَلَاثًا».

زربن حبیش د حذیفه نه روایت کوی فرمائی چه زما خیال دي چه حذیفه دا روایت د نبی صلی الله علیه و آله نه بیان کړي وو چه فرمائیلي ئي وو څوک چه قبلي ته مخامخ لاري (توکانري توگري نو د قیامت په ورځ به په داسې حال کښې راشي چه دده دغه لاري به دده د دواړه سترگو په مینځ پوري انختلي وي، او څوک چه دا بدبوداره سبزي (یعنی اومه اوږه) اوخوري نو زمونږ مسجد ته دي نه راځی، نبی صلی الله علیه و آله دا جمله دری ځله تکرار کړه.

قوله: « عَنْ حُذَيْفَةَ أَظْنَهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ « مَنْ تَقَلَّ تَجَاةَ الْقِبْلَةِ ... الخ » کوم سرې چه د قبلي طرف ته تهوکی نو هغه سرې به راشی د قیامت په ورځ باندې چه هغه لاري به د هغه د دواړو سترگو ترمینځه یعنی په تندي باندې وی، او رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمایل چه کوم سرې دا خبیثه سبزي اوخوري نو زمونږ مسجد ته دي نژدې نه راځی مراد ترې نه مساجد المسلمین دی چه په هغې کښې ټول مسجدونه شامل شو لکه چه په بل روایت کښې دی: « فلا یقرن المساجد » او د « ثلاثا » مطلب دا دي چه رسول الله صلی الله علیه و آله دا خبره درې کرته او فرمائیله او په فتح الباری کښې نقل کړې دی چه محدث ابن خزیمه په دې حدیث باندې دا باب ترلې دي: « توقیف النهی عن اتیان الجماعة لا کلی الثوم » چه د هغې تقاضا دا ده چه هغوی د « ثلاثا » معنی « ثلاث لیل » اخستلي ده. خو دا صحیح نه ده بلکه ظاهره دا ده چه د ثلاثا تعلق د قول سره دي « ای قال ذلک ثلاثا » ځکه چه علت د منع وجود د رانځه دي او ښکاره خبره ده چه د دې سبزیانو بوئی تر درې ورځو پوري باقی نه وی، او په بذل کښې د حضرت گنگوهی رحمته الله د تقریر نه نقل کړې دی چه د دې حدیث نه معلومه شوه چه د خبیث اطلاق همیشه په حرام او نجس باندې نه کیږی بلکه د دې اطلاق کله په غیر نظیف او مکروه طبعی باندې هم کیږی، « وبذلک ینحل کثیر من الاشکالات کقوله : لمن الکلب خبیث وکسب الحجام خبیث » حدیث حذیفه رحمته الله اخرجه ابن خزیمه کما تقدم عن الفتح قریباً.



[٣٨٢٥] (١) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ ثَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ فَلَا يَقْرَبَنَّ الْمَسَاجِدَ".

دعبدالله بن عمر رضی اللہ عنہ روایت دي فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی څوک چه دا بدبوداره سبزي (يعنی اومه اوږه)، اوخوري نو زمونږ مسجد ته دي نه راځي.

[٣٨٢٦] (٢) بَرْدَةُ، عَنْ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، قَالَ: "أَكَلْتُ ثُومًا، فَأَتَيْتُ مُصَلِّيَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ سُبِقَتْ بَرَكَةُ، فَلَمَّا دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ وَجَدَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رِيحَ الثُّومِ، فَلَمَّا قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاتَهُ، قَالَ: "مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ فَلَا يَقْرَبْنَا حَتَّى يَذْهَبَ رِيحُهَا أَوْ رِيحُهُ، فَلَمَّا قَضَيْتِ الصَّلَاةَ جِئْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَاللَّهِ لَتُعْطِيَنِي يَدَكَ، قَالَ: فَأَدْخَلْتُ يَدَهُ فِي كُمِي فَبَيَّسَ إِلَيَّ صَدْرِي، فَإِذَا أَنَا مَغْضُوبٌ الصَّدْرُ، قَالَ: إِنَّ لَكَ عُذْرًا".

دمغيره بن شعبه رضی اللہ عنہ نه روایت دي فرمائی چه ما اوږه خوړلي وه اودنبی ﷺ دمونځ ځانې ته ورغلم او يو رکعت رانه فوت شوي وو، هرکله چه مسجد ته داخل شوم اودنبی ﷺ بوي محسوس کړو، نوچه کله ئې مونځ پوره کړونو اوئې فرمائيل څوک چه ددې بوتې نه اوخوري نوهغه دي زمونږ ځوانه نه راځي ترڅوچه ددې بوي ورنه ختم شوي نه وي، نوچه کله مي خپل مونځ پوره کړونوئې ﷺ ته ورغلم او عرض مي وکړوچه اي دالله رسوله ستادي په الله قسم وي ماته به خپل لاس.. خامخارا کوي مغيره وائی چه مادنبي ﷺ لاس مبارک په خپل نستونږي کښې دننه کړواوپه خپله سينه مي کړخودر نوزما زړه بندشوي وو، نبی ﷺ اوفرمائيل ته معذورتې.

### شرح الحديث :

قوله: «عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ أَكَلْتُ ثُومًا فَأَتَيْتُ مُصَلِّيَ النَّبِيِّ -صلى الله عليه وسلم- وَقَدْ سُبِقَتْ بَرَكَةُ الْخ» مغيره بن شعبه رضی اللہ عنہ فرمائی چه زه يو ورځ د اوگې د خوړلو نه پس مسجد ته راغلم هغه وخت مونځ کيدلو. زه د يو رکعت نه مسبوق شوې اوم، په رسول الله ﷺ باندې د اوږې بوټی اولگيدو چه کله هغوی د مانځه نه فارغ شو نو وې فرمائيل چه څوک په تاسو کښې دا سبزي اوخوري نو مونږ ته دي نه رانزدې کيږي ترڅو چه ترې بوټی زائل شوې نه وي، ما چه کله خپل مونځ پوره کړو نو د هغوی په خدمت کښې حاضر شوم او عرض مي اوکړو يا رسول الله ﷺ والله تاسو ماته خپل لاس مبارک راکړئ، پس ما د هغوی لاس مبارک په لستونږي کښې خپلې سينې ته يوړو «فَإِذَا أَنَا مَغْضُوبٌ الصَّدْرُ قَالَ «إِنَّ لَكَ عُذْرًا»» يعنی تاسو اوکتل چه زما سينه ترلې شوې ده په څه پتې وغيره سره، نو رسول الله ﷺ اوفرمائيل بيشکه ستا دپاره عذر دي.

د حضرت گنگوهی په تقرير کښې دی چه هغوی په سينه باندې څه پتې يا کپړه وغيره ترلې وه د سينې د تکليف د وجې نه چه د هغې په ليدلو باندې رسول الله ﷺ اوفرمائيل بيشکه

(١): صحيح البخاري/الأذان ١٦٠ (٨٥٣)، صحيح مسلم/المساجد ١٧ (٥٦١)، (تحفة الأشراف: ٨١٤٣)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه/إقامة الصلاة ٥٨ (١٠١٦)، مسند احمد (٢٠/٢)، سنن الدارمي/الأطعمة ٢١ (٢٠٩٧) (صحيح)  
(٢): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ١١٥٣٩)، وقد أخرجه: مسند احمد (٢٤٩/٤، ٢٥٢) (صحيح)

ستادپاره عذر دې..... یعنې د اوږدې خوراک معقول دې تا د علاج په طور خوړلې ده. بس رسول الله ﷺ دومره او فرمائیل او د هغوی مقصد دې دا اونه گنرلې شی چه که څوک د عذر د وجې نه اوږه او خوری نو د هغه دپاره مسجد ته راتلل جائز دی، هغه نهی په خپل ځانې باندې قائم ده، او د حضرت په تقریر کښې دا هم دی چه بعض شارحینو چه دا وئیلې دی چه د سینې تړل د لوږې د غلبې د وجې نه وو نو دا خبره په فهم کښې نه راځی، ځکه چه په دې صورت کښې خو مناسب دا وه چه خپته تړلې شوې وه نه سینه.

د دې نه پس په حدیث د معاویه بن قره عن ابیه کښې دی: «فَأَمِيتُوهُمَا طَبَخًا» چه که یو سړې ثوم او بصل خوری نو هغه له پکار دی چه د هغې بوټی ختم کړی او بیایې او خوری، یعنې په تیلو وغیره کښې دې پاخه کړی، پس د باب په آخری حدیث کښې راځی د عائشې رضی الله عنها چه د پیازو په باره کښې تپوس او کړو نو هغوی او فرمائیل چه آخری خوراک کوم چه رسول الله ﷺ خوړلې دې

[۳۸۲۷] (۱) حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْعَظِيمِ، حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عَمْرٍو، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مِيسِرَةَ يَعْنِي الْعَطَّارَ، عَنْ مَعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةَ، عَنْ أَبِيهِ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنَى عَنْ هَاتَيْنِ الشَّجَرَتَيْنِ، وَقَالَ: "مَنْ أَكَلَهُمَا فَلَا يُقَرِّبَنَّ مَسْجِدَنَا، وَقَالَ: إِنْ كُنْتُمْ لَا بُدَّ أَكْلِهِمَا، فَأَمِيتُوهُمَا طَبَخًا"، قَالَ: يَعْنِي الْبَصَلَ وَالثُّومَ.

معاویه بن قره دخپل پلار نه روایت کوی چه نبی ﷺ ددې دوه بوتو دخوړلو نه منع فرمائیلې ده، اودانې فرمائیلې دی څوک چه داو خوری نو مسجد ته دي نه راځی اوبیایې او فرمائیل که چرې ددې خوړلو ته ستاسو ضرورت پېښ شي نو په پخولو سره ددې بوفی ختم کړئ او بیایې خوری اوددې دوه بوتو نه مراد پیاز او اوگه ده.

[۳۸۲۸] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا الْحَرَّاسُ أَبُو وَكَيْعٍ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ شَرِيكَ، عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: "نَهَى عَنْ أَكْلِ الثُّومِ إِلَّا مَطْبُوخًا"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: شَرِيكَ بْنُ حَنْبَلٍ.

د علی رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه داوگي دخوړلو نه منع راغلي ده مگر کله چه پخه کړې شي، امام ابوداؤد وائی دشريک دپلار نوم حنبل وو.

[۳۸۲۹] (۳) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا ح حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ شُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا بَقِيعَةُ، عَنْ بَحِيرٍ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي زِيَادٍ خِيَارِ بْنِ سَلَمَةَ، أَنَّهُ "سَأَلَ عَائِشَةَ عَنِ الْبَصْلِ فَقَالَتْ: إِنْ أَخْرَطَ طَعَامٌ أَكَلَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَعَامٌ فِيهِ بَصْلٌ".

د ابو زياد خیار بن سلمه نه روایت دې فرمائی چه دام المومنین عائشة رضی الله عنها نه مې د پیاز په باره - کښې تپوس او کړو هغې او فرمائیل د نبی ﷺ په اخرنی خوراک کښې پاخه پیاز موجود وو.

حدیث عائشة رضی الله عنها اخرجه النسائی، قاله المنذرى

(۱): تفرد به ابوداؤد، (تحفة الأشراف: ۱۱۸۰)، وقد أخرجه: سنن النسائي / الكبرى (۶۸۱)، مسند احمد (۱۹/۴) (صحیح)

(۲): سنن الترمذي / الأطلعة ۱۴ (۱۸۰۹)، (تحفة الأشراف: ۱۰۱۲۷) (صحیح)

(۳): تفرد به ابوداؤد، (تحفة الأشراف: ۱۶۰۶۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۸۹/۶) (ضعيف)



## باب فی الثمر د کجورو خوړلو بیان

[٣٨٣٠] (١) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا عُمرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي يَحْيَى، عَنْ يَزِيدَ الْأَعْوَرِ، عَنْ يُونُسَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ، قَالَ: "رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَذَ كِسْرَةً مِنْ خُبْزِ شَعِيرٍ فَوَضَعَ عَلَيْهَا ثَمْرَةً، وَقَالَ: هَذِهِ إِذَا مَرَّ هَذِهِ".

د یوسف بن عبدالله بن سلام نه روایت دې فرمائی چه مانبي علیه السلام اولیدو چه د وربشو د وږی یوه قطره ئې راخستلې وه او کجورې ئې ورباندې ایخودلي وي او فرمائل ئې دا کجوري د دې وږی ترکاری ده.

قوله: ﴿ عَنْ يُونُسَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ قَالَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ -صلى الله عليه وسلم- أَخَذَ كِسْرَةً مِنْ خُبْزِ شَعِيرٍ فَوَضَعَ عَلَيْهَا ثَمْرَةً وَقَالَ « هَذِهِ إِذَا مَرَّ هَذِهِ » ﴾

دا حدیث په کتاب الایمان والنذور ﴿باب الرجل یحلف ان لا یاتدم﴾ کښې تیر شوې دې د دې حدیث نه دا هم معلومیږي چه د یوسف بن عبدالله بن سلام علیه السلام د پاره صحبت ثابت دې. د امام بخاری علیه السلام رائي خو هم دا ده، خو ابو خاتم رازی دا فرمائی چه د هغوی د پاره صحبت نه صرف رویت ثابت دې. والحديث أخرجه الترمذی، قاله المنذری.

[٣٨٣١] (٢) حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ عُثْبَةَ، حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ، حَدَّثَنِي هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "بَيْتٌ لَا تَمُرُّ فِيهِ جِئَاعُ أَهْلِهِ".

دام المومنین عائشة رضی الله عنها نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم صلی الله علیه وسلم فرمائلې دې په کوم کور کښې چه کجورې نه وي نو د دغه کور اوسیدونکي اوگي دې

قوله: ﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - « بَيْتٌ لَا تَمُرُّ فِيهِ جِئَاعُ أَهْلِهِ » ﴾

په کوم کور کښې چه کجورې نه وي نو د هغه کور خلق اوږې دې. په بذل المجهود کښې دې چه د رسول الله ﷺ دا فرمان د مدینې په شان ښهرونو اعتبار سره دې چرته چه کجورې ډیرې زیاتې وي او هغه بالاستقلال خوړلې هم شي، د هر ښهر په اعتبار سره نه دې، او په کوکب دری کښې دا دی چه مقصد دا دې چه په کوم کور کښې کجوره وي او یو څیز د خوراک یعنی غله وغیره پکښې نه وي نو دا د کور خلق اوږې نه دې، یعنی د حدیث لازمی معنی مراد ده او دا مطلب نه دې چه په کور کښې هر قسم څیزونه شته او په هغې کښې صرف کجورې نه وي نو د هغه کور خلق اوږې دې.

دا دواړه فائدي جدا جدا دی، په دې کښې خپل مینځ کښې هیڅ تدافع نشته، د کوکب والا خبره هم د مدینې طبیی په شان ښهرونو په اعتبار سره ده چه که په هغه کور کښې صرف کجور وي نو هغه سړې دې خان غریب او اوږې نه گنړې بلکه د الله پاک شکر

(١): انظر حديث رقم: (٣٢٥٩)، (تحفة الأشراف: ١١٨٥٤) (ضعيف)

(٢): صحيح مسلم الأشرية ٢٦ (٢٠٤٦)، سنن الترمذی الأظعمة ١٧ (١٨١٥)، سنن ابن ماجه الأظعمة ٣٨ (٣٣٢٧)، (تحفة الأشراف: ١٦٩٤٢)، وقد أخرجه: سنن الدارمي الأظعمة ٢٦ (٢١٠٥) (صحيح)

ورله ادا كول پكار دى، چه هر كله په كور كښې كجهورې شته نو هرڅه شته. والحديث اخرجه مسلم والترمذى وابن ماجه، قاله المنذرى.

## باب فى تفتيش التمر المسوس عند الأكل

د كجورو خوړلو په وخت ددې د پاكولو بيان

او په بعض نسخو كښې د التمر صفت هم ذكر شوې دې «التمر المسوس» يعنى هغه كهجورې چه په هغې كښې چينجې پيدا شى په حديث الباب كښې دى، انس رضي الله عنه فرمائى چه يو كرت رسول الله صلى الله عليه وسلم ته زړې كهجورې راوړلې شوې نو رسول الله صلى الله عليه وسلم به د هغې د خوراك نه مخكښې د هغې چينجې لټولو سره راويستل.

[٣٨٣٢] (١) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو بْنِ حَبْلَةَ، حَدَّثَنَا سَلَمٌ بْنُ قَتِيْبَةَ أَبُو قَتِيْبَةَ، عَنْ هَمَّامٍ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: "أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِتَمْرٍ عَتِيقٍ، فَجَعَلَ يَفْتِشُهُ يُخْرِجُ السُّوسَ مِنْهُ".

د انس بن مالك رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم صلى الله عليه وسلم ته زړې كهجورې راوړې شوي نبی صلى الله عليه وسلم ورته په غور سره كتل او چينې به به ورنه غورځول.

د دې حديث نه معلومه شوه كه په زړو كهجورو كښې سرسرى وغيره راشي نو هغه ضائع كول نه دى پكار بلكه خوړل ئې پكار دى خو ورسره دا هم دى چه د هغې چينجې لټولو سره غورځول پكار دى، سره د هغې دې او نه خوړلې شى د هغې وجه دا ده چه چينجې د خباثتو نه دى، وقال تعالى ﴿ويحرم عليهم الخبائث﴾ (٢).

د دوه متعارض احاديثو جواب:

خو د طبرانى په يو روايت كښې مرفوعا راغلى: «نهى ان يفتش التمر عما فيه» د دې حديث محمل د تازه كهجورو دې چه په هغې كښې دې فضول لتون اونكړې شى، په دې سره مقصود دفعه د وسوسې ده (او په رومبى سره مقصود دفع د سوس ده)، او په حاشيه د بذل كښې د علامه دميرى نه د حياة الحيوان په ٣٣/٢ كښې په دې مسئله باندې مختلف اقوال او مذاهب جمع كړې شوې دى فارجع لو شنت .... والحديث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى.

[٣٨٣٣] (٢) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا هَمَّامٌ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُؤْتِي بِالتَّمْرِ فِيهِ دُودٌ، فَذَكَرَ مَعْنَاهُ.

د اسحق بن عبدالله بن ابى طلحه رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلى الله عليه وسلم ته به چينجنې كهجورې پيش كولې شوي اوباقى حديث ئې د تير شوي په شان بيان كړو.

(١): سنن ابن ماجه/الأطعمة ٤٢ (٣٣٣٣)، (تحفة الأشراف: ٢١٥) (صحیح)

(٢): وفي هامش البذل: ويشكل عليه ما في تفسير البقرة من تفسير العزري انه يجوز اكل الديدان في التمر تبعا ولا يجوز بعد الخروج اصالة ١- او په بذل كښې حضرت ليكلې دى چه كه په كهجوره كښې ظن غالب وي چه په دې كښې چينجې دې نو بيا خو بغير د تفتيش نه د هغې خوړل جائز نه دى او د عدم غلبه ظن په صورت كښې چه صرف وهم وي د تفتيش حاجت نشته.

(٣): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ٢١٥) (صحیح)



## بَابُ الْإِقْرَانِ فِي الثَّمَرِ عِنْدَ الْأَكْلِ

دوه دوه او درې درې کجورې په یو ځای خوړل

[٣٨٣٤] (١) حَدَّثَنَا وَاصِلُ بْنُ عَبْدِ الْأَعْلَى، حَدَّثَنَا ابْنُ فَضِيلٍ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ جَبَلَةَ بْنِ سُحَيْمٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْإِقْرَانِ، إِلَّا أَنْ تَسْتَأْذِنَ أَصْحَابَكَ".

ابن عمرو نه روایت دې فرمائی چې رسول الله ﷺ د دوه دوه کجورو په یو ځای خوړلو نه منع فرمائیلې ده مگر کله چې دخپل ملګري نه اجازت واخلي

﴿عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- عَنِ الْإِقْرَانِ إِلَّا أَنْ تَسْتَأْذِنَ أَصْحَابَكَ﴾  
یعنی چې کله څو ملګري په یو ځای باندې ناست کجورې خوری نو ادب دا دې چې یو کجوره دې اوچتولو سره اوخوړلې شی یو سرې دې په یو ځای دوه نه خوری، مگر دا چې دخپلو ملګرو نه اجازت واخلي

شارحینو لیکلې دی چې په ملګرو کښې د یو کس دوه دوه اوچتول دا د حرص او بې صبرۍ عادت دې او د کونکي په حق کښې معیوب څیز دې وغیره وغیره مصالح، که صرف ذکر کړې شوې مصلحت مخې ته کیځودلې شی نو وئیلې شی چې د استیذان قید په اصل کښې د دې حرکت د منع کولو دپاره دې، ځکه چې په استیذان کښې خپله د بد خصلت ښکاره کول دی چې سرې ئې چرته خوښوی. په دې حدیث باندې شارحینو ډیر څه لیکلې دي خو مونږ هغې ته حاجت او نه گنړلو.

والحدیث أخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى.

## بَابُ فِي الْجَمْعِ بَيْنَ لَوْثَيْنِ فِي الْأَكْلِ

په یو ځای دوه قسمه خوراکونه خوړل

داسې ترجمه اوس نژدې تیره هم شوه، خو د مخکښې تعلق د ترکارو د قسمونو سره وو او د دې باب تعلق د فواکه سره دې.

[٣٨٣٥] (٢) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ الْأَمْرِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَعْفَرٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ "يَأْكُلُ الْقِثَاءَ بِالرُّطْبِ".

د عبد الله بن جعفر نه روایت دې فرمائی چې نبی ﷺ به تري د کجورو سره خوړلې  
﴿كَانَ يَأْكُلُ الْقِثَاءَ بِالرُّطْبِ﴾ چې رسول الله ﷺ به د رطب سره خټکې یو ځای خوړلو، او د دې نه روستو روایت کښې دی ﴿يَأْكُلُ الْبُطِخَ بِالرُّطْبِ فَيَقُولُ «يَكْسِرُ خُرَّ هَذَا يَبْزِدُ هَذَا وَيَبْزِدُ هَذَا يَحْزِرُ هَذَا»﴾

(١): صحيح البخاري/الشركة ٤ (٢٤٩٠)، صحيح مسلم/الأشربة ٢٥ (٢٠٤٥)، سنن الترمذي/الأطعمة ١٦ (١٨١٤)، سنن ابن ماجه/الأطعمة ٤١ (٣٣٣١)، (تحفة الأشراف: ٦٦٦٧)، وقد أخرجه: مسند أحمد (٧/٢، ٤٤، ٤٦، ٦٠، ٧٤، ٨١، ١٠٣، ١٣١)،

سنن الدارمي/الأطعمة ٢٥ (٢١٠٣) (صحيح)

(٢): صحيح البخاري/الأطعمة ٣٩ (٥٤٤٠)، صحيح مسلم/الأشربة ٢٣ (٢٠٤٣)، سنن الترمذي/الأطعمة ٣٧ (١٨٤٤)، سنن ابن ماجه/الأطعمة ٣٧ (٣٣٢٥)، (تحفة الأشراف: ٥٢١٩)، وقد أخرجه: مسند أحمد (٢٠٣/١)، سنن الدارمي/الأطعمة ٢٤ (٢١٠٢) (صحيح)

[۳۸۳۶] (۱) حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ نُصَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أَسَامَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "يَأْكُلُ الْبَطِيخَ بِالرُّطْبِ، فَيَقُولُ: تَكْسِرُ حَرَهُذَا يَبْرُدُ هَذَا وَيَبْرُدُ هَذَا يَجْرُ هَذَا".

دام المومنین عائشة رضی اللہ عنہا نہ روایت دی فرمائی چہ رسول اللہ بہ ہندوانہ د کجوروسرہ خورلہ اوفرمائیل بہ ئی چہ ددی خوالی د کجوروپہ گرموالی سرہ اود کجورو گرموالی ددی پہ یخوالی باندی ماتوو۔

### شرح الحديث:

د شارحینو پہ دی کنبی اختلاف دی چہ د بطیخ نہ خہ مراد دی؟ آیا بطیخ اخضر یعنی تربوز [ہندوانہ]، یا بطیخ اصفر یعنی خربوزہ، کہ احضر مراد وی لکہ چہ ہم دا مشہورہ دہ نو بیا خو ہیخ اشکال نشته، او کہ د دی نہ مراد خربوزہ دہ نو بیا بہ دا اشکال وی چہ ﴿یکسر هذا يبرد هذا﴾ څنگہ دی، ځکہ چہ خربوزہ ہم حار (بتشديد الرأء) وی، بیا د دی مختلف توجیہات کړې شوې دی د حضرت گنگوهی پہ تقریر کنبی دی چہ د برودت نہ مراد برودت حسی دی یعنی پہ لاس لگولو کنبی یخ، کہ خربوزہ د پرې کولو نہ پس لږ ساعت پرانستلې پریخودلی شی نو هغه یخہ شی، او بعض شارحینو لکہ صاحب د مجمع البحار او شارحینو د شمائل دا توجیہ کړې دہ چہ د دی نہ کچہ خربوزہ مراد دہ هغه پہ خاصیت کنبی یخہ وی، خود پخیدو نہ پس ئی خاصیت بدل شی او گرمہ شی (لکہ چہ د ام پہ بارہ کنبی مشہورہ دہ چہ هغه شین خو یخ وی او د پخیدو نہ پس گرم) او د حافظ رائی دا دہ چہ برودت د امور اضافیہ نہ دی، د بطیخ برودت د رطب پہ اعتبار سرہ دی ځکہ چہ رطب شدید الحرارة دی د دی نہ پس حضرت شیخ لیکي چہ دا ټول اشکالات او جوابات د معروف قول مطابق دی گینې صاحب د محیط اعظم د شیخ بو علی سینا نہ نقل کړې دی چہ خربوزہ ہم یخہ وی۔ اھ (من هاشم البذل) او د شمائل پہ روایت کنبی دی ﴿کان یجمع بین الخربز والرطب﴾ خربز خو اصفر یعنی خربوزې ته وائی، او دلته پہ مدینہ طیبہ کنبی د اخضر او اصفر دواړو پیدوار کیری۔

حدیث عبداللہ بن جعفر رضی اللہ عنہما اخرجہ البخاری ومسلم والترمذی وابن ماجہ، وحدیث عائشہ رضی اللہ عنہا اخرجہ الترمذی والنسائی، مختصراً، وقال الترمذی حسن غریب وذكر انه روی مرسلًا وذكره النسائی ايضا مرسلًا، قاله المنذرى۔

او د باب پہ آخری حدیث کنبی دی ﴿دَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- فَقَدَمْنَا زُبْدًا أَوْ ثَمْرًا وَكَانَ يُحِبُّ الزُّبْدَ وَالثَّمَرَ﴾ چہ رسول اللہ ﷺ مونږ ته تشریف راوړلو نو مونږ د هغوی مخي ته کچ او کهجورې پیش کړې کومې چہ د هغوی خوښې وې۔

[۳۸۳۷] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْوَزِيرِ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مَزِيدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ جَابِرٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمُ بْنُ عَامِرٍ، عَنْ ابْنِ بُسْرِ السُّلَمِيِّ، قَالَ: "دَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَدَمْنَا زُبْدًا وَثَمْرًا، وَكَانَ يُحِبُّ الزُّبْدَ وَالثَّمَرَ".

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۶۸۵۳)، وقد أخرجہ: سنن الترمذی والأطعمه ۳۶ (۱۸۴۳) (حسن)  
(۲): سنن ابن ماجہ والأطعمه ۴۳ (۳۳۳۴)، (تحفة الأشراف: ۵۱۹۲) (صحيح)



د بسر د دوه ځامنونه روایت دي فرمائي چه نبی ﷺ زمونږ خواته تشریف راوړو مونږ ورته کوچ او کجورې پیش کړي اونبی ﷺ به کرج او کجورې ډیري خوشولي  
والحدیث اخرجه ابن ماجه، و ذکر عن محمد بن عوف انهما (ابن یس) عبد الله وعطية بن محمد، قاله المنذرى.

## باب الْأَكْلِ فِي آيَةِ أَهْلِ الْكِتَابِ

د اهل کتابو په لوبنو کښې د خوراک کولو بیان

[۳۸۳۸] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى، وَإِسْمَاعِيلُ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ سِنَانٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: "كُنَّا نَغْزُو مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَتُصِيبُ مِنْ آيَةِ الْمُشْرِكِينَ وَأَسْقِيَتِهِمْ فَتَسْمِيَتُهُمْ بِهَا، فَلَا يَعْيبُ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ".

توجه: د جابر رضی الله عنه نه روایت دي فرمائي چه مونږ د نبی ﷺ په ملگرتیا کښې جهاد ته تلي وو او مونږ ته د اهل کتابو لوبني ملاو شول او مونږ به د هغې نه فائده اخستله اونبی ﷺ به بدنه گنرل.

تشریح: د باب په رومبی حدیث کښې دی: سیدنا جابر رضی الله عنه فرمائي چه مونږ به د رسول الله ﷺ سره په غزواتو کښې شریکیدلو چه په هغې کښې به مونږ ته د مشرکینو لوبني او مشکونه حاصلیدل په مال غنیمت کښ، نو مونږ به هغه استعمالولو سره د هغې نه فائده اوچتوله، په استعمالونکو باندې به چا هیڅ عیب نه لگولو یعنی انکار به پرې نه کیدلو. امام خطابی رحمه الله فرمائي چه دا اباحت د مشرکینو د لوبنو په دې شرط سره مقید دي کوم چه د دې نه روستو حدیث کښې دي او د راتلونکي حدیث مضمون دا دي: ابو ثعلبه الخشني رضي الله عنه د رسول الله ﷺ نه تپوس او کړو چه مونږ خلق په سفر کښې د اهل کتابو په آبادو باندې تیریدو چه په خپلو کتوو کښې خنزیر پخوي او په خپلو لوبنو کښې شراب څکي رسول الله ﷺ او فرمائیل که د دغې لوبنو نه علاوه تاسو نور بیا مومئ نو په هغې کښې خوراک ځکاک کوي، او که د هغې نه علاوه نور لوبني نه وي نو بیا د مشرکینو لوبني وینځي او هغه استعمالوي.

[۳۸۳۹] (۲) حَدَّثَنَا نَعْرَبُ بْنُ عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ شُعَيْبٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْعَلَاءِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَبِي عُبَيْدٍ اللَّهِ مُسْلِمِ بْنِ مَشْكَمٍ، عَنْ أَبِي ثَعْلَبَةَ الْخَشَنِيِّ، أَنَّهُ سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "إِنَّا نَجَاوِرُ أَهْلَ الْكِتَابِ، وَهُمْ يَطْبَخُونَ فِي قُدُورِهِمُ الْخَنَزِيرَ، وَيَشْرَبُونَ فِي آيَتِهِمُ الْخَمْرَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنْ وَجَدْتُمْ غَيْرَهَا فَكُلُوا فِيهَا وَاشْرَبُوا، وَإِنْ لَمْ تَجِدُوا غَيْرَهَا فَارْحَضُوا بِالْمَاءِ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا".

د ابو ثعلبه الخشني نه روایت دي فرمائي چه د نبی ﷺ نه مي تپوس او کړو او عرض مي وکړو چه مونږ په اهل کتابو تیریدو او هغوی پخپلو دیگونو کښې خنزیران پخوي او پخپلو لوبنو کښې شراب څي، رسول الله او فرمائیل که چرې ددوی د لوبنو نه علاوه نور لوبني موندلي شی نو خوراک څښاک په کښې وکړئ او که چرې د دینه علاوه نور لوبني نه

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۲۴۰۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳/۳۲۷، ۳۴۳، ۳۷۹، ۳۸۹) (صحیح)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۸۷۲)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للصيد ۴ (۵۴۷۸)، ۱۰ (۵۴۸۸)، ۱۴ (۵۴۹۶)،

صحيح مسلم للصيد ۱ (۱۹۳۰)، سنن الترمذي للصيد ۱ (۱۶۶۴)، سنن ابن ماجه للصيد ۳ (۳۲۰۷) (صحیح)

شيء موندلې نو په اوبوئې ووينځئ او بيا په كښې خوراك او خښاك وكړئ.  
په بذل كښې دى (اى اذا غلب الظن بنجاستها) يعنى د وينځلو حكم د نجاست د غلبه ظن  
په وخت دې، امام خطاى رحمه الله فرمائى: (فاما مياههم وثيابهم فانها على الطهارة كمياه المسلمين  
وثيابهم) يعنى د مشركينو اوبه او جامې د مسلمانانو د اوبو او جامو په شان پاكي دى.  
مگر دا چه هغه مشركين داسې خلق وى چه د هغوى په باره كښې معلومه وى چه هغوى د  
نجاستونو نه پرهيز نه كوى يا د هغوى عادت د بولو وغيره د استعمال وى (لكه چه بعض  
مشركين كوى، نو په داسې صورت كښې به د هغوى جامې استعمالول جائز نه وى بغير د  
پاكولو نه مگر دا چه يقينى طور معلومه شى چه په دې كښې نجاست نشته.  
والحديث اخرجه البخارى ومسلم فى صحيحيهما، مطولا واخرجه ايضا الترمذى وابن  
ماجه، قاله المنذرى (بتغير)

### باب فى دواب البحر

د سمندر د ځناورو بيان

[۳۸۴۰] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزَّيْتِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: "بَعَثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَمَرَ عَلَيْنَا أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ تَلْقَى عِيرَ الْقُرَيْشِ، وَزَوْدًا جَرَّابًا مِنْ تَمْرٍ لَمْ يُحْدَلْهُ غَيْرُهُ، فَكَانَ أَبُو عُبَيْدَةَ يُعْطِينَا تَمْرَةً تَمْرَةً كُنَّا نَمُصُّهَا كَمَا نَمُصُّ الْعَصِي، ثُمَّ نَشْرَبُ عَلَيْهَا مِنَ الْمَاءِ، فَتَكْفِينَا يَوْمَنَا إِلَى اللَّيْلِ، وَكُنَّا نَغْرِبُ بِعَصِينَا الْخَبَطَ، ثُمَّ نَبْلُهُ بِالْمَاءِ، فَنَأْكُلُهُ، وَالتَّلَقُّنَا عَلَى سَاحِلِ الْبَحْرِ، فَرَفَعَ لَنَا كَهَيْئَةِ الْكُثِيبِ الضَّخْمُ، فَأَتَيْنَاهُ فَإِذَا هُوَ دَابَّةٌ تُدْعَى الْعَنْبَرُ، فَقَالَ أَبُو عُبَيْدَةَ: مَيْتَةٌ وَلَا تَحِلُّ لَنَا، ثُمَّ قَالَ: لَا، بَلْ نَحْنُ رُسُلُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ، وَقَدْ اضْطُرُّرْتُمْ إِلَيْهِ فَكُلُوا، فَأَقَمْنَا عَلَيْهِ شَهْرًا، وَنَحْنُ ثَلَاثٌ مِائَةٍ حَتَّى سَمِعْنَا، فَلَمَّا قَدِمْنَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَكَرْنَا ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ: هُوَ رِزْقُ أَخْرَجَهُ اللَّهُ لَكُمْ، فَهَلْ مَعَكُمْ مِنْ كُنْهٍ شَيْءٍ فَتَقْطَعُوْنَا مِنْهُ؟ فَأَرْسَلْنَا مِنْهُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَكَلَ."

د جابر رضي الله عنه نه روايت دې فرمائى چه مونږ نبي صلی الله علیه و آله د ابو عبیده : په مشرئ کښې د قريشو  
ديوي قافلي دنيولو دپاره اوليرلو اودلاري دخوراك دپاره ئې يوه بوجگئ كجورې هم  
راكړي اوددينه علاوه زمونږ سره نورهېڅ نه وو، ابو عبیده به مونږ ته ددې كجورونه يوه يوه  
دانه راكوله مونږ به دا يوه كجوره داسې چوپله لكه ديوماشوم دچوپلوپه شان اوددينه پس  
به مونږ اوبه خكلې دغه يوه كجوره او اوبه به زمونږ دتولي ورځي دپاره كافي وي مونږ به  
پخپلو لڅترباندي دونونه پانړي راځنډلي او په اوبو كښې به مو خوشتولي اوبيابه  
موخورلي تردې چه مونږ دسمندر كناري ته اورسيدو مونږ ته دلري نه دشر ويوه ډيركئ  
بنكاره شوه كله چه ورته مونږ ورنزدې شونو هغه يو ځناوروو اونوم ئې عنبر وو (دايوداسې  
معې دې چه دخرمني نه ئې دال جوړيږي) ابو عبیده اووئيل داخو مردارشوي دې اوزمونږ  
دپاره حلال نه دې بيا ئې اووئيل نه، مونږ دنبى صلی الله علیه و آله استاذي يو اودالله په لاره كښې وتلي  
يو اوسخت مجبوره شوي يوخوري يې، د جابر بيان دې چه مونږ هلته يوه مياشت تيره كړه  
او مونږ درې سوه كسان وو همدابه موخورله تردې چه مونږ څاربه شو كله چه مونږه دنبى

(۱) صحيح مسلم/الصعيد ۴ (۱۹۳۵)، (تحفة الأشراف: ۲۷۲۴، ۵۰۴۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳/۳۱۱، ۳۷۸) (صحيح)



ﷺ په خدمت کښې واپس حاضر شو نوموړې نبي ﷺ ته ددې ذکر اوکړو نبي کریم اوفرمائیل دغه ستاسورزق وو کوم چه الله تعالی ستاسو دپاره رالیرلې وو ایا اوس ستاسو سره دهغه څه غوښه باقی شته چه په مائي وخوروئ مونږه دهغه مهې غوښه نبي ﷺ ته پیش کړه او وبې خوړله.

قوله: ﴿عَنْ جَابِرٍ قَالَ بَعَثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَمَرَ عَلَيْنَا أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ نَتَلَّقَى عَيْرًا لِقُرَيْشٍ وَزَوَّدَنَا جِرَابًا مِنْ تَمْرٍ لَمْ نَجِدْ لَهُ غَيْرَهُ الْخ﴾

### د غزوه سيف البحر تذکرة:

د دې سريه نوم کوم چه په دې حديث کښې ذکر ده سريه ابو عبیده ﷺ دې ځکه چه هم هغه د دې سريه امير وو او دې ته غزوه سيف البحر هم وائی ځکه چه د هغوی دا سفر د سمندر په غاړه باندې وو، پس په صحيح البخاری کښې هم داسې دی ﴿باب غزوة سيف البحر﴾ او بيا ئې په هغې کښې دا روايت مطولا ذکر کړې دې.

سیدنا جابر ﷺ فرمائی چه رسول الله ﷺ مونږ لیرلې وو د قریش قافلې د کتلو دپاره کومه چه د شام نه راروانه وه، او د تلو په وخت رسول الله ﷺ مونږ ته یو تهیلې د کهجورو راکړه مونږ سره د دې نه علاوه هیڅ توبښه نه وه، پس زمونږ امیر ابو عبیده ﷺ به مونږ ته د سفر دوران کښې یوه کهجوره راکوله او هغه به مونږ داسې چوپله لکه څنگه چه ئې وړوکې ماشوم چوپۍ، او بیا به مو په هغې دپاسه اوبه څکلې پس دا یو کهجوره به زمونږ دپاره تر د شپې پورې کافی وه (دلته په روايت کښې اختصار دې لکه څنگه چه د بخاری د روايت نه معلومیري، صرف په یو کهجوره باندې د اکتفاء کولو ضرورت روستو راغلې وو) او مونږ به په خپلو هسماگانو او ډنډو باندې د اونیو پانږې راځنډلې او بیا به مو هغه په اوبه کښې نرمولې او بیا به مو خوړلې. هغوی فرمائی چه مونږ د دریاب په غاړه باندې روان وو پس د دریاب په غاړه مونږ ته د کمر په شان یو لوئې وجود ښکاره شو. چه مونږ هغې ته نزدې راغلو نو هغه یو دریابی ځناور وو چه هغې ته عنبره وائی. دا عنبره د یو لوئې مهې قسم دې چه د هغې اوږدوالې پنځوس ذراعو ته رسیږي، بعض وائی چه دا کوم عنبر چه مشهور خوشبوئی ده، دا هم د دغه ځناور د خولې رجیع (جوئیلې لارې) وی او د بخاری په یو روايت کښې دی ﴿فاذا حوت مثل الظرب﴾ بیا چه کله ورته مونږ نزدې راغلو نو معلومه شوه چه دا عنبره دې، نو ابو عبیده ﷺ اوفرمائیل دا خو مرداره ده چه حلال نه ده بیا ئې اووې چه نه بلکه مونږ د رسول الله ﷺ رالیرلې شوې یو او د الله پاک لاره کښې یو او د اضطرار کیفیت دې لهذا دا خورئ ﴿فَأَقَمْنَا عَلَيْهِ شَهْرًا وَنَحْنُ ثَلَاثُمِائَةٍ حَتَّى سَمِعْنَا﴾ نو مونږ هلته تر یوې میاشتې پورې پاتې شو او حال دا چه زمونږ د درې سوو کسانو لښکر وو مونږ د هغې په خوراک باندې خاربه شو. د بخاری په یو روايت کښې دی ﴿نصف شهر﴾ او په یو روايت کښې ﴿ثمان عشرة ليلة﴾ دې، او د هغه په یو روايت کښې ﴿شهر﴾ هم دې. حافظ ابن حجر ﷺ ﴿ثمان عشرة ليلة﴾ والا روايت ته ترجیح ورکړې ده او نصف شهر او د شهر روايت ئې په الغاء د کسر او په جبر د کسر باندې محمول کړې دی. او د بخاری په روايت

کښې دا زیادت هم دې «ثم امر ابو عبیده بضلعین من اضلاعه فنصبا ثم امر براحلة فرحلت ثم مرت تحتها» چه د دې مهی دوه پختی اودرولې شوې او په یو اوښ باندې یو لوړ سرې سور د هغې نه لاندې تیر کړې شو چه بغیر د تکلف نه تیر شو چه په دې سره د هغه پختی د اوږدوالی حال معلوم شو، حافظ دا هم لیکلې دی چه دا واقعه د رجب ۸ هجری ده او نقل ئې د ابن سعد نه کړې دې. د دې نه پس حافظ خپل تحقیق اولیکلو چه دا واقعه د شپږمې هجری ده یاد هغې نه مخکښې دصلح حدیبیه نه هم مخکښې واقعه ده. کذا قال فی المغازی وکتب بعده فی کتاب الذبائح والصيد: باب احل لکم صید البحر چه دا واقعه د دویمې هجری ده په کومه زمانه کښې چه غزوه بواط پېښه شوې وه او هغه په دویمه هجری کښې وه.

قوله: «فَلَمَّا قَدِمْنَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- ذُكِّرْنَا ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ «هُوَ رِزْقُ أَخْرَجَهُ اللَّهُ لَكُمْ» یعنی چه کله مونږ د دې سفر نه واپس کیدو سره د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او د دې مهی ذکر مو هغوی ته اوکړو نو په دې اوریدو باندې رسول الله ﷺ اوفرمائیل چه دا د الله پاک د طرف نه ستاسو دپاره رزق وو، که تاسو سره د هغې غوښه باقی وی نو په مونږ باندې هم د هغې نه اوخوړئ. پس مونږ رسول الله ﷺ ته د هغې غوښه اولیرله او هغوی اوخوړله.

د دې نه پس دا پیژندل پکار دی چه دا عنبره میتة البحر ده، او په میتة البحر کښې چه د ائمه کوم اختلاف دې هغه په کتاب الطهارة کښې د «هو الطهور ماؤه والحل میتة» د لاندې تیر شوې دې.

تفصیه: کتب الشيخ فی هامش البذل: ولا يذهب عليك ان لجابر رضي الله عنه حديثا اخر في هذا المعنى ونبه الزيلعي في نصب الراية ٢٠٤/٤ على انهما قصتان اه قلت لم يرض به الحافظ في الفتح ومال الى واحدة القصة وقال الاصل عدم التعدد، قال في كتاب الذبائح والصيد في باب قول الله تعالى «احل لکم صید البحر» فارجع اليه لو شئت التفصيل... والحديث اخرجه مسلم والنسائي، قاله المنذرى.

### باب فی الفارة تقم فی السمین

باب مېړه چه په غوړو کښې پریوخی نو د دې څه حکم دې؟

[٣٨٤١] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سَفْيَانُ، حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ مَيْمُونَةَ، أَنَّ فَارَةً وَقَعَتْ فِي سَمْنٍ، فَأَخْبَرَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: «الْقَوْمَا حَوَّلَاهَا وَكُلُوا».

دام المومنین ميمونة رضي الله عنها نه روايت دې فرمائی چه يوخل يوه مړه په غوړو کښې پریوتله اونبې عليه السلام به اطلاع ورکړې شوه نبی صلی الله علیه وسلم اوفرمائیل دمري گیر چاپیره غوړي اوغورخوئ اوباقی خوړلي شئ.

قوله: «عَنْ مَيْمُونَةَ أَنَّ فَارَةً وَقَعَتْ فِي سَمْنٍ فَأَخْبَرَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ «الْقَوْمَا حَوَّلَاهَا وَكُلُوا»

١: صحيح البخاري/الوضوء ٦٧ (٢٣٥)، والذبائح ٣٤ (٥٥٣٨)، سنن الترمذي/الأطعمة ٨ (١٧٩٨)، سنن النسائي/الفرع والغنيرة ٩ (٤٢٦٣)، (تحفة الأشراف: ١٨٠٦٥)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/الاستبذان ٧ (٢٠)، مسند احمد (٣٢٩/٦)، سنن الدارمي/الطهارة ٦٠ (٧٦٥) (صحيح)



يعني د رسول الله ﷺ نه د هغه غوړو په باره كښې تپوس او كړې شو چه په هغې كښې مړه پريوتلو سره مړه شوې وي نو هغوی او فرمائيل چه د غوړو هغه حصه كومه چه د مړې نه چاپيره وه هغه راوباسئ او وې غورخوئ او باقی اوخوړئ.  
دا غوړی جامد وو لكه چه د نسائی په روایت كښې دی او دا مسئله په هغه صورت كښې ده چه كله غوړی جامد وي پس د دې نه روستو روایت كښې راځي ﴿ فَإِنْ كَانَ جَامِدًا فَأَلْقُوهَا وَمَا حَوْلَهَا وَإِنْ كَانَ مَائِعًا فَلَا تَقْرُبُوهُ ﴾

والحديث أخرجه البخاري والترمذي والنسائي، قاله المنذرى.

[٣٨٤٢] (١) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، وَالْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، وَاللَّفْظُ لِلْحَسَنِ، قَالَا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا وَقَعَتِ الْفَارَقَةُ فِي السَّمَنِ فَإِنْ كَانَ جَامِدًا فَأَلْقُوهَا وَمَا حَوْلَهَا، وَإِنْ كَانَ مَائِعًا فَلَا تَقْرُبُوهُ"، قَالَ الْحَسَنُ: قَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: وَرَبَّمَا حَدَّثَ بِهِ مَعْمَرٌ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ مَيْمُونَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

د ابوهريره رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم ﷺ فرمائیلى دی كله چه مړه په غوړو كښې پريوخي نوكه چرې جامد وي نو دا اوددې گیر چاپيره غوړي او غورخوئ او باقی غوړي پاك دي او كه چرې غوړي اوبه وي نوبيا ورته مه ورنزدې كيږي او حسن د عبد الرزاق نه نقل كړي دي چه دا حديث به معمر د زهري نه او هغه به د عبد الله بن عبد الله او هغه به د ابن عباس نيمه نه او هغه به ميموني نه او هغې به د نبی ﷺ نه نقل كولو.

[٣٨٤٣] (٢) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ بُذَوَيْهٍ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ مَيْمُونَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمِثْلِ حَدِيثِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ ابْنِ الْمُسَيَّبِ.

ترجمه: ميمونه رضی اللہ عنہا د نبی کریم ﷺ نه د زهري وسعيد بن المسيب د حديث په شان حديث بيان كړې دې.

## باب فِي الدُّبَابِ يَقَعُ فِي الطَّعَامِ

باب: كله چه په تركاړی كښې مچ پريوخي نوڅه حكم دي؟

[٣٨٤٤] (٣) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ ابْنِ عُثْمَانَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا وَقَعَتِ الدُّبَابُ فِي إِثْنَاءِ أَحَدِكُمْ فَاْمَقْلُوهُ فَإِنْ فِي أَحَدٍ جَنَاحَيْهِ دَاعَوْهُ فِي الْآخِرِ شِفَاعًا وَإِلَّا يَتَّقِي بِجَنَاحَيْهِ الَّذِي فِيهِ الدَّاءُ فَلْيَغْسِئْهُ كُلَّهُ".

د ابوهريره رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم ﷺ فرمائیلى دی كله چه مچ دچا په لوبښي كښې پريوخي نوپكښې ئې غوپه كړئ يقينادده په يوزر كښې بيماري او په بل

١: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ١٣٣٠٣، ١٨٠٦٥) (شاذ)

٢: تفرد به أبو داود، أي بهذا السياق، (تحفة الأشراف: ١٨٠٦٥) (شاذ)

٣: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ١٣٠٤٩)، وقد أخرجه صحيح البخاري لهذه الخلق ١٧ (٣٣٢٠)، الطب ٥٨ (٥٧٨٢)، سنن ابن ماجه/الطب ٣١ (٣٥٠٥)، سنن الدارمي/الأطعمة ١٢ (٢٠٨١) (صحيح)

کښې شفاده اودي هغه وزر مخکښې کوي په کوم کښې چه بيماري وي نو تاسو ټول غوپه کړئ

قوله: ﴿إِذَا وَقَعَ الذُّبَابُ فِي إِنَاءٍ أَحَدِكُمْ فَاْمَقْلُوهُ فَإِنَّ فِي أَحَدِ جَنَاحَيْهِ دَاءٌ وَفِي الْآخَرِ شِفَاءٌ﴾ الخ رسول الله ﷺ فرمائی چه کله ستاسو نه د يو تن په خوراک کښې مچ او غورځيرې نو هغه په ښه طريقه باندې ډوب کړئ او بيا ئې راوباسئ. ځکه چه د هغې په وزرو کښې په يو کښې بيماري وي او په بله کښې شفا، او د مچ عادت دا دې چه هغه د پريوتلو په وخت خپل ځان بچ کوي په هغه وزر باندې چه په هغې کښې بيماري ده پس پکار دی چه هغه پوره طريقې سره ډوب کړې شي چه هغه دويم وزر هم په کوم چه شفا ده د هغې په يو ځانې کيدو باندې تلافی اوشي.

دا حديث چه په هغې کښې د طب يو مسئله ذکر ده د طب النبی ﷺ د قبيل نه شو. کتاب الطب اوس نزدې راروان دې چه په هغې کښې د رسول الله ﷺ د طرف نه د ډيرو علاجونو او دوايانو بيان راروان دې.

حضرت شيخ نور الله مرقده د مازيگر نه پس کيدونکې مجلس کښې په کوم کښې چه به چائې هم څکلې شوه چه په هغې کښې به کله کله مچ هم پريوتلو، يو کرت چه کله په دې موقع باندې حضرت جی انعام الحسن ﷺ هم په دې مجلس کښې موجود وو، هغوی اوفرمائيل چه په فيض الباری کښې د شاه صاحب رائې دا ليکلې شوې ده چه هغه خوراک چه په هغې کښې مچ پريوځي که هغه گرم وي نو هغه په دې حکم کښې داخل نه دې ﴿فَانِ الْقَمَسَ حِينَئِذَا لَا يَزِيدُهُ إِلَّا شَرًّا﴾ په دې باندې شيخ ﷺ اوفرمائيل چه په حديث کښې خو مطلقا راغلی دی. والحديث أخرجه البخاري وابن ماجه بنحوه من حديث عبيد بن حنين عن أبي هريرة ؓ وأخرجه النسائي وابن ماجه من حديث أبي سعيد الخدري ؓ، قاله المنذري.

### بَابُ فِي اللَّقْمَةِ تَسْقُطُ

باب د خوراک په وخت چه کله نورې پريوځي نوڅه پکار دی؟

[۳۸۴۵] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ "إِذَا أَكَلَ طَعَامًا لَعِقَ أَصَابِعَهُ الثَّلَاثَ، وَقَالَ: إِذَا اسْقَطْتَ لَقْمَةً أَحَدَكُمْ فَلْيَمْطَعْهَا الْأَذَى وَلْيَاكُلْهَا وَلَا يَدْعُهَا لِلشَّيْطَانِ، وَأَمَرَنَا أَنْ نُسَلِّتَ الصَّحْفَةَ، وَقَالَ: (إِنْ أَجَدَكُمْ لَا يَذْرَى فِي أَيِّ طَعَامٍ يَبَارِكُ لَهُ)".

دانس بن مالک ؓ نه روايت دې فرمائی کله چه به نبی ﷺ د خوراک نه فارغ شو نو خپلې درې ګوتي به ئې خټلي اوفرمائيل به ئې کله چه په تاسو کښې ديوکس نه نورې پريوځي نو پکار دي چه ددينه گرد غبار لري کړي او ويسې خوري اودادي شيطان ته نه پريږدي اودابه ئې هم فرمائيل په تاسو کښې چاته معلومه نه ده چه دده دپاره دخوراک په کومه يوه حصه کښې برکت اچولې کيږي.

۱: صحيح مسلم/الأشربة ۱۸ (۲۰۳۴)، سنن الترمذي/الأطعمة ۱۱ (۱۸۰۲)، (تحفة الأشراف: ۳۱۰)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱۷۷/۳، ۲۹۰)، سنن الدارمي/الأطعمة ۸ (۷۰۷۱) (صحيح)



(د روټی خوړلو یو څو ادا)

قوله: ﴿كَانَ إِذَا أَكَلَ طَعَامًا لَعِقَ أَصَابِعَهُ الثَّلَاثَ﴾

چه کله به رسول الله ﷺ خوراک کولو نو په آخر کښې به ټپ خپلې درې ګوټې مبارکې اوختلې، ابهام، مسبحه او وسطی ځکه چه رسول الله ﷺ به په درې ګوټو باندې خوراک فرمائیلو لکه چه وړاندې په باب المندیل کښې راوان دی. ﴿كَانَ يَأْكُلُ بِثَلَاثِ أَصَابِعٍ وَلَا يَمْسَحُ يَدَهُ حَتَّى يَلْفَقَهَا﴾ دویم ادب په دې حدیث کښې دا ذکر شوې دې چه د یو سړی نه د خوراک کولو په وخت نمړی او غورځیرې یا د خوراک څه ذره نو هغه له پکار دی چه د هغې نه ګردو غبار وغیره لرې کړي او بیا هغه اوخوری او هغه دې پرېږدي نه ځکه چه د هغه دا پرېخودل علامت دې د تکبر او تکبر د شیطان عمل دې. وړاندې دریم ادب په حدیث کښې ذکر دې چه د خوراک نه په فارغیدلو باندې کاسه په ګوټو سره پاکول پکار دی.

د ترمذی رحمه الله په یو روایت کښې دی چه کوم انسان په کاسه کښې د خوراک کولو په پس هغه په ګوټو باندې صفا کړي نو هغه کاسه د هغه د پاره استغفار کوي.

قوله: ﴿مَنْ أَكَلَ قِصْعَةً ثُمَّ لَحَسَهَا اسْتَغْفَرَتْ لَهُ الْقِصْعَةُ﴾

او دا ټپ هم او فرمائیل چه بیشکه په تاسو کښې څوک نه پوهیږي چه د هغه دپاره د خوراک په کومه حصه کښې برکت دې.

والحدیث أخرجه مسلم والترمذی والنسائی، قاله المنذری.

## بَابُ فِي الْخَادِمِ يَأْكُلُ مَعَ الْمَوْلَى

خادم د ځان سره دوه ټپ ته د کینولو بیان

[۳۸۴۶] حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ قَيْسٍ، عَنْ مُوسَى بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا صَنَعَ لِأَحَدِكُمْ خَادِمُهُ طَعَامًا ثُمَّ جَاءَهُ بِهِ وَقَدْ وَلِيَ حَرَةً وَدُخَانَهُ، فَلْيَقْعِدْهُ مَعَهُ لِيَأْكُلْ، فَإِنْ كَانَ الطَّعَامُ مَشْفُوعًا فَلْيَضَعْ فِي يَدِهِ مِنْهُ أَكْلَةً أَوْ اكْلَتَيْنِ."

د ابوهریره رحمه الله نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ دې کله چه دچا دپاره دهغه خادم خوراک تیارکړي او دخوړلو دپاره ټپ ورته راوړي او په دغه خادم باندې کړي او لوگې تیرشوې وي نوده لره پکاردي چه دغه خادم هم د ځان سره کینوي او ورباندې وخوړوي، او کچري خوراک کم وي نوده ته دي په لاس کښې یوه یا دوه نوړې ورکړي.

په حدیث الباب کښې دی چه کله په تاسو کښې دچا خادم د هغه دپاره خوراک تیار کړي او بیا هغه راوړي او هغه د هغې گرمی او سختی برداشت کړې ده نو هغه لره پکار دی چه هغه خادم د ځان سره خوراک ته کینوي، او که خوراک لږ وي نو بیا دې یوه یا دوه نمړې د هغه په لاس کښې ورکړي.

او په یو روایت کښې دا دی ﴿فَانِ ابِي فَلْيَاخُذْ لِقْمَةً فَلْيَطْعَمْهُ اِيَّاهَا﴾ یعنی که د مولی نه دا نه شی کیدې په څه وجه باندې چه هغه د ځان سره کینوي نو هغه ته دې یو دوه نمړې ورکړي،

(۱) صحیح مسلم/الایمان ۱۰ (۱۶۶۳)، (تحفة الأشراف: ۱۴۶۲۸)، وقد أخرجه: سنن الترمذی/الأطعمة ۴۴ (۱۸۵۳)، مسند احمد (۲۷۷/۲، ۲۸۳) (صحیح)

او یا مطلب دا چه خادم د یو ځای کیناستلو نه انکار اوکړی نو بیا دې داسې اوکړی  
والحدیث اخرجه مسلم، قاله المنذری.

### باب فی المندیل په رومال باندې د لاسونو وچولو بیان

[٣٨٤٧] (١) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا أَكَلَ أَحَدُكُمْ فَلَا يَمْسَحَنَّ يَدَهُ بِالْمِنْدِيلِ حَتَّى يَلْعَقَهَا أَوْ يُلْعَقَهَا".

د عبد الله بن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه رسول الله و فرمائیلى دى كله چه په تاسو كښې يو كس خوراك او كړي نو په رومال دي لاس نه وچوي ترخوچه ختلي ئې نه وي او يا ورله ختلي شوي نه وي.

په حديث الباب كښې دى چه سپرى لره پكار دى چه د خوراك كولو نه پس خپل لاس په رومال وغيره باندې نه پاكوى ترخوچه ئې هغه ختلي نه وي يا ئې په بل باندې اونه ختلى په خپل يو خادم يا شاگرد يا خپلوان وغيره باندې. والحدیث اخرجه البخاری و مسلم والنسائی وابن ماجه، ليس في حديثهم ذكر المنديل، واخرجه مسلم من حديث ابى الزبير عن جابر رضي الله عنه :: «ولا يمسح يده بالمنديل حتى يلعق اصابعه» قاله المنذرى.

[٣٨٤٨] (٢) حَدَّثَنَا النُّفَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ ابْنِ كَعْبٍ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِيهِ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ "يَأْكُلُ بِثَلَاثِ أَصَابِعٍ، وَلَا يَمْسَحُ يَدَهُ حَتَّى يَلْعَقَهَا".

د كعب بن مالك رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم به په درې گوتو خوراک کولو اولاسونه به ئې ترهغه وخته پورې نه وچول ترخوچه به ئې ختلي نه وو.

### باب مَا يَقُولُ الرَّجُلُ إِذَا طَعِمَ د خوراک نه پس د دعا کولو بیان

[٣٨٤٩] (٣) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ ثَوْرٍ، عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "إِذَا رُفِعَتِ الْمَائِدَةُ، قَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ غَيْرَ مَكْفَى وَلَا مُودَعٍ وَلَا مُسْتَغْنَى عَنْهُ رَبَّنَا".

د ابو امامه باهلي رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه كله به د دسترخوان داوچتيدو وخت راغې نونبى عليه السلام به دا دعا فرمائيله: «الحمد لله كثيرا طيبا مباركا فيه غير مكفى ولا مودع ولا مستغنى عنه ربنا» يعنى دالله شكر دې ډير پاك اوزيات شكر نه داسې شكر كوم يوخل وي

١: صحيح مسلم/الأشربة ١٨ (٢٠٣١)، (تحفة الأشراف: ٥٩١٦)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/الأطعمة ٥٢ (٥٤٥٦)، سنن ابن ماجه/الأطعمة ٩ (٣٢٦٩)، مسند احمد (٢٩٣/١، ٣٤٦، ٣٧٠، ٣٠١/٣)، سنن الدارمي/الأطعمة ٦ (٢٠٦٩) (صحيح)  
٢: صحيح مسلم/الأشربة ١٨ (٢٠٣٢)، سنن الترمذي/الشمائل (١٣٧، ١٤١)، (تحفة الأشراف: ١١١٤٦)، وقد أخرجه: مسند احمد (٤٥٤/٣، ٣٨٦٦)، دي/الأطعمة ١٠ (٢٠٧٦) (صحيح)  
٣: صحيح البخاري/الأطعمة ٥٤ (٥٤٥٨)، سنن الترمذي/الدعوات ٥٦ (٣٤٥٦)، سنن ابن ماجه/الأطعمة ١٦ (٣٢٨٤)، (تحفة الأشراف: ٤٨٥٦)، وقد أخرجه: مسند احمد (٢٥٢/٥، ٢٥٦، ٢٦١، ٢٦٧) سنن الدارمي/الأطعمة ٣ (٢٠٦٦) (صحيح)



اوبيا پريخودلې شي اودهغې څه ضرورت باقی پاتې نشي، اې زمونږ پروردگار ته د تعريف لائق ئې.

په حديث الباب كښې دې چه د رسول الله ﷺ عادت شريفه دا وو چه كله به دسترخوان اوچت كړې شو نو رسول الله ﷺ به دا وئيل ﴿الحمد لله كثيرا وفي نسخة حمدا كثيرا﴾ طيبا مباركا فيه غير مكفى ولا مودع ولا مستغنى عنه ربنا ﴿

(د ربنا اعراب)

بالنصب د منادى كيدو د وجې نه يا بالجرد لفظ الله نه د بدل كيدو د وجې نه... ﴿غير مكفى ولا مودع ولا مستغنى عنه﴾ په دې كښې دوه احتمال له دې چه دا درې واړه د طيبا په شان د حمد صفت وي، يعنى د بنده حمد كه هر څومره وي ناكافى او لږ دې او د هغې باوجود قابل ترك هم نه دې چه د هغې نه بې پرواهى او كړې شى بلكه د ناكافى كيدو باوجود كول پكار دى، او دويم احتمال دا دې چه دا صفتونه د الله پاك دى، يعنى د الله پاك كفايت نه شى كولې بلكه هغه د نورو دپاره كفايت كوى او كافى دې ﴿كما قال تعالى وهو يطعم ولا يطعم﴾ او نه الله پاك داسې دې چه په څه حال كښې د هغه نه رغبت او طلب ترك كړې شى، او نه هغه داسې دې چه يو وخت د هغه نه بې پرواهى او كړې شى، بلكه هر وخت بنده هغه ته محتاج دې. والاحتمال الاول اختاره العلامة السندی فى فتح الودود. والاحتمال الثانى اختاره الخطابى وكلاهما مذكوران فى البذل.

والحديث اخرجه البخارى والترمذى والنسائى وابن ماجه، قاله المنذرى.

او د دې نه په روستو روايت كښې دا دعا ذكر ده ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِى أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِينَ﴾ او په دريم حديث كښې دا دعاء ذكر ده ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِى أَطْعَمَ وَسَقَى وَسَوَّغَهُ وَجَعَلَ لَهُ مَخْرَجًا﴾

[٣٨٥٠] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، حَدَّثَنَا وَكَيْعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي هَاشِمٍ الْوَاسِطِيِّ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ رَافِعٍ، عَنْ أَبِيهِ أَوْ غَيْرِهِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخَدْرِيِّ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ "إِذَا قَرَعَ مِنْ طَعَامِهِ، قَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِى أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِينَ".

د ابوسعيد خدرى رضي الله عنه نه روايت دې فرمائى كله چه به نبى ﷺ د خوراك نه فارغ شو نو دا دعا به ئې وئيله: «الحمد لله الذي أطعمنا وسقانا وجعلنا مسلمين». دهغه الله شكر دې چاچه مونږ ته خوراك څښاك راکړو او مونږ ئې اطاعت گزار جوړ کړو.

[٣٨٥١] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَالِيحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي عَقِيلٍ الْغُرَشِيِّ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحُبَلِيِّ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيِّ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا أَكَلَ أَوْ شَرِبَ، قَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِى أَطْعَمَ وَسَقَى، وَسَوَّغَهُ، وَجَعَلَ لَهُ مَخْرَجًا".

<sup>١</sup>: سنن الترمذى/الشمائل (١٩١)، سنن النسائى/اليوم والليلة (٢٨٩، ٢٩٠) (تحفة الأشراف: ٤٠٣٥)، وقد أخرجه: مسند احمد (١٥/٣، ٣٢، ٩٨) (ضعيف)

<sup>٢</sup>: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ٣٤٦٧)، وقد أخرجه: سنن النسائى/الكبرى (٦٨٩٤)، اليوم والليلة (٢٨٥) (صحيح)

د ابو ایوب انصاري نه روایت دې فرمائی کله چه به نبی ﷺ خوراک وکړو نو دا دعابه ئې وئيله «الحمد لله الذي أطعم وسقى، وسوغه، وجعل له مخرجاً» يعنى دالله تعالى دپاره ټول تعريفونه دي چاچه مونږ ته خوراک څښاک راکړو او دا ئې زمونږ دخلق نه تيرکړو اوددې دپاره ئې دو تلوار جوړه کړي.

حديث ابى سعيد الخدرى رضي الله عنه أخرجه الترمذى والنسائى وذكره البخارى فى تاريخه الكبير وساق اختلاف الرواة فيه (وحديث ابى سعيد ضعيف) وحديث ابى ايوب الانصارى أخرجه النسائى، قاله المنذرى.

## باب فى غسل اليدين من الطعام

د خوراک نه پس د لاسونو وينځلو بيان

[٣٨٥٢] (١) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا سُهَيْلُ بْنُ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ نَامَ وَفِي يَدِهِ غَمَزٌ وَلَمْ يَغْسِلْهُ فَأَصَابَهُ شَيْءٌ فَلَا يَلُومَنَّ إِلَّا نَفْسَهُ".

د ابو هريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائيلى دى څوك چه په داسې حال كښې اوده شي چه دخوراک په وجه ئې لاسونه څليښت كوي او وينځلي ئې نه وي كه چرې په دې وخت كښې ده ته نقصان ورسېږي نوددې به صرف دې پخپله ذمه وار وى.

﴿ مَنْ نَامَ وَفِي يَدِهِ غَمَزٌ وَلَمْ يَغْسِلْهُ فَأَصَابَهُ شَيْءٌ فَلَا يَلُومَنَّ إِلَّا نَفْسَهُ ﴾ كوم سرې چه د خوراک كولو نه پس بغير د لاس وينځلو نه اوده شو او حال دا چه د هغه په لاس كښې د خوراک بوټى او غوړوالې وى او بيا يو څيز هغه ته ضرر وركړى مثلاً مږه د هغه نه گوته اوخورى نو دې سرې له پكار دى چه صرف خپل ځان ملامته كړى. دا حديث په ترمذى كښې هم شته، د هغې په شروع كښې دا زيات دې ﴿ قال رسول الله ﷺ ان الشيطان حساس لحاس فاحذروه على انفسكم ﴾ يعنى د شيطان حس او ادراك ډير زيات دې او هغه ډير ضررى دې د هغه نه ځان بچ كړئ. والحديث أخرجه ابن ماجه، وأخرجه الترمذى معلقاً وأخرجه أيضاً من حديث ابى هريرة من طريقين قاله المنذرى (مختصراً)

## باب ما جاء فى الدعاء لرب الطعام إذا أكل عنده

د خوراک نه پس د خوراک مالک ته دعا کولو بيان

[٣٨٥٣] (٢) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ يَزِيدَ أَبِي حَالِدٍ الدَّالَانِي، عَنْ رَجُلٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "صَنَعَ أَبُو الْهَيْثَمِ بْنُ تَيْهَانَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَعَامًا، فَقَدَّعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابَهُ، فَلَمَّا قَرَعُوا، قَالَ: أَيُّبُوا أَخَاكُمْ، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَمَا إِثَابُكَ؟ قَالَ: إِنْ الرَّجُلُ إِذَا دَخَلَ بَيْتَهُ، فَأَكَلَ طَعَامَهُ وَشَرِبَ شَرَابَهُ، فَقَدَّعَا لَهُ فَذَلِكَ إِثَابُكَ".

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه ابو الهيثم بن تيهان د نبی ﷺ دپاره خوراک تيارکړو هغه نبی ﷺ او م. حابه کرامرته دعوت وركړو کله چه ټول خلق دخوراک نه فارغ

(١): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ١٢٦٥٦)، وقد أخرجه: سنن الترمذى/الأطعمة ٤٨ (١٨٦٠)، سنن ابن ماجه/الأطعمة ٢٢ (٣٢٩٦)، مسند احمد (٢٦٣/٢، ٥٣٧)، سنن الدارمي/الأطعمة ٢٧ (٢١٠٧) (صحيح)

(٢): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ٣١٧٠) (ضعيف)



شول نونبی ﷺ او فرمائیل تاسودی خپل ورور ته ددې عوض ورکړئ عرض اوکړې شو دعوض نه مراد څه دي؟ نبی ﷺ او فرمائیل کله چه څوک دچاکورته داخل شي او خوراک اوکړي او اوبه وڅکي نوبیادي دهغه دپاره دعا وغواړي نو همدا ددې معاوضه ده.

قوله: (عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ صَنَعَ أَبُو الْهَيْثَمِ بْنُ التَّيْهَانِ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَعَامًا الْخ) په دې حدیث کښې دا دی چه رسول الله ﷺ خپلو ملگرو ته او فرمائیل چه خپل ورور ته ددې خوراک بدله ورکړئ، هغوی عرض اوکړو چه هغه څه بدله ده؟ رسول الله ﷺ او فرمائیل چه د کوم کور نه خوراک اوکړې شی د هغه دپاره دعا کول د هغه اثابت او بدله ده.

[۳۸۵۴] (١) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "جَاءَ إِلَى سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ، فَجَاءَ بِخَبْزٍ وَزَيْتٍ فَأَكَلَ، ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَفْطَرَ عِنْدَكُمْ الصَّائِمُونَ وَأَكَلَ طَعَامَكُمْ الْأَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمْ الْمَلَائِكَةُ".

د انس رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه یو ځل نبی ﷺ د سعد بن عباده خواته تشریف یووړ نو هغه ورته ډوډی او دزیتون تیل پیش کړل نبی ﷺ او خورل او بیا ئې او فرمائیل ستا سره دي روژه دار روژه ماته کړي اوستاخوراک دي نیکان خلق او خوري او په تادي فرشتي رحمتونه نازل کړي.

د باب په آخری روایت کښې دی چه رسول الله ﷺ سعد بن عباده رضی الله عنه ته تشریف یووړو هغوی د رسول الله ﷺ دپاره ډوډی او دزیتون تیل راوړل هغه رسول الله ﷺ او خورل او د هغوی دپاره ئې دعا او فرمائیله ( أَفْطَرَ عِنْدَكُمْ الصَّائِمُونَ وَأَكَلَ طَعَامَكُمْ الْأَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمْ الْمَلَائِكَةُ ) د دعاء مضمون دا دې چه الله پاک دې د صائمینو د افطار توفیق درکړی، او همیشه دې ستاسو خوراک نیکان خلق او خوری او ملائک دې ستاسو دپاره د مغفرت او استغفار دعاگانې اوکړی، په دې کښې ضمنا د رزق حلال دعا هم راغله ځکه چه په نیکانو خلقو باندې الله پاک حلاله روزی خوری پس په یو روایت کښې دی چه رسول الله ﷺ او فرمائیل ( لَا يَأْكُلُ طَعَامُكَ إِلَّا تَقَى ) چه سړی له پکار دی چه هغه خپل خوراک په متقیانو باندې او خوری. په دې دعاء کښې هم دې طرف ته اشاره ده.

### باب فِي تَمَرَةِ الْعَجْوَةِ

باب د عجوه کجور و بیان

[۳۸۷۴] (٢) عَيَّاشٍ، عَنْ ثَعْلَبَةَ بْنِ مُسْلِمٍ، عَنْ أَبِي عَمْرَانَ الْأَنْصَارِيِّ، عَنْ أَمْرِ الدَّرْدَاءِ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ الدَّاءَ وَالذَّوَاءَ وَجَعَلَ لِكُلِّ دَاءٍ دَوَاءً فَتَدَاوَوْا وَلَا تَدَاوَوْا بِحَرَامٍ".

د وائل بن حجر رضی الله عنه روایت دې فرمائی چه طارق بن سوید یا سوید بن طارق د نبی ﷺ نه دشرابود څکلو متعلق تپوس وکړو نو نبی ﷺ ده لره منع کړو بیا ئې تپوس وکړو نوبیاني

(١): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۴۷۶)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱۱۸۳، ۱۳۸، ۲۰۱)، سنن الدارمي للصوم ۵۱ (۱۸۱۳) (صحيح)

(٢): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۰۰۷) (ضعيف)

منع کړو نو عرض شي وکړو چه زما غرض د علاج دپاره شکل دي نبی ﷺ ورته وفرمائیل شراب دوا نه ده دا پخپله یوه بیماری ده.

د ترجمه او حدیث په کتاب الطب کښې راروان دی او دلته په اکثر نسخو کښې نشته. (بذل)

## بَاب مَا لَمْ يُذْكَرْ تَحْرِيمُهُ

د داسې څیزو نوییان چه دهغې حرمت مذکور نه دي

[٣٨٠٠] (١) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ دَاوُدَ بْنِ صَبِيحٍ، حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ دَكَيْنٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ يَعْنِي ابْنَ شَرِيكَ الْمَكِّي، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ أَبِي الشَّعَثَاءِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "كَانَ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ يَأْكُلُونَ أَشْيَاءَ وَيَتْرَكُونَ أَشْيَاءَ تَقْدَرُ، فَبَعَثَ اللَّهُ تَعَالَى نَبِيَّهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَنْزَلَ كِتَابَهُ، وَأَجَلَ حَلَالَهُ، وَحَرَّمَ حَرَامَهُ، فَمَا أَحَلَّ فَهُوَ حَلَالٌ، وَمَا حَرَّمَ فَهُوَ حَرَامٌ، وَمَا سَكَتَ عَنْهُ فَهُوَ عَفْوٌ، وَتَلَا: قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا سِوَةَ الْأَنْعَامِ آيَةً ٣٥ إِلَى آخِرِ الْآيَةِ".

عبد الله بن عباس رضی اللہ عنہما وائی چه په زمانه د جاهلیت کښې به خلقو بعضې څیزونه خوړل او بعضې څیزونه به ئې ناخوښه گڼل نه به ئې خوړل، نو الله تعالی خپل نبی کریم ﷺ راولیرلو، خپل کتاب ئې نازل کړو او حلال او حرام ئې بیان کړل، نو کوم څیز چه الله تعالی حلال کړې هغه حلال دي او کوم څیز ئې چه حرام کړې هغه حرام دي، او د کوم څیز نه ئې چه سکوت کړې (د حلت او حرمت ذکر ئې نه دي کړې) هغه معاف دي، بیان ابن عباس رضی اللہ عنہما آیت کریمه «قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا» تاسو او وایی: زه خپل طرف ته نازل کړې شوې وحی کښې حرام نه بیا مومم تر آخره پورې.

قوله: ﴿عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ كَانَ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ يَأْكُلُونَ أَشْيَاءَ وَيَتْرَكُونَ أَشْيَاءَ... الخ﴾

یعنی مشرکینو به د جاهلیت په زمانه کښې په خپله رائي او اختیار سره څیزونه خوړل او ډیر څیزونه به ئې د کراهت طبعی د وجې نه پرېخودل، یعنی د حلت او حرمت هیڅ معیار د هغوی په نزد نه وو سوا د خپلې خوښې او کراهت طبعی نه، پس الله پاک خپلو بندگانو ته په خپل رحمت سره توجه او کړه او رسول الله ﷺ ئې راولیرلو په چا ئې چه قرآن کریم نازل کړو او بعض څیزونه ئې حلال او بعض ئې حرام کړل. پس اوس چه کوم څیز الله پاک حلال کړې دي هغه به حلال وي او کوم چه الله پاک حرام کړې دي هغه به حرام وي، یعنی د تحلیل او تحریم بنیاد په قرآن او وحی باندې وي. ﴿وَمَا سَكَتَ عَنْهُ فَهُوَ عَفْوٌ﴾ او د کوم څیز نه چه الله پاک سکوت فرمائیلې دي نو هغه حلال او معاف او گنړي.

د دې حدیث حواله مونږ سره د کتاب البیوع په شروع کښې د ﴿باب فی اجتناب الشبهات﴾ د لاندې تیره شوې ده، او هلته دا حدیث هم تیر شوې دي، ﴿الحلال بین والحرام بین، وینهما امور مشبهات، فمن اتقى الشبهات استبرا لديه وعرضه﴾ او هلته دا هم تیر شوې دي چه په دواړو احادیثو کښې صوره او ظاهرا تعارض معلومیږي، او بیا د هغې جواب هم.

د دې نه پس زمونږ په نسخه د ابوداؤد کښې د عمر رضی اللہ عنہ د خارج حدیث راځي چه په



هغې کښې په یو لیونی باندې د سورة الفاتحه د دم کولو ذکر دې او د هغه په ښه کیدو باندې په طور د انعام د سلو گډو بیزو د ورکړې.....

[۳۸۹۶] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ زَكْرِيَّا، قَالَ: حَدَّثَنِي عَامِرٌ، عَنْ خَارِجَةَ بِنِ الصَّلْتِ التَّيْمِيَّةِ، عَنْ عَمِّهِ، "أَنَّهُ أَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَسْلَمَ، ثُمَّ أَقْبَلَ رَاجِعًا مِنْ عِنْدِهِ فَمَرَّ عَلَى قَوْمٍ عِنْدَهُمْ رَجُلٌ فَمَجْنُونٌ مُوثِقٌ بِالْحَدِيدِ، فَقَالَ أَهْلُهُ: إِنَّا حَدَّثْنَا أَنَّ صَاحِبَكُمْ هَذَا قَدْ جَاءَ بِغَيْرِ قَهْلٍ عِنْدَكَ شَيْءٌ تُدَاوِيهِ، فَرَقِيقَتُهُ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ، فَبَرَأ فَأَعْطَوْنِي مِائَةَ شَاةٍ، فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: هَلْ إِلَّا هَذَا؟" وَقَالَ مُسَدَّدٌ فِي مَوْضِعٍ آخَرَ: هَلْ قُلْتُ غَيْرَ هَذَا؟ قُلْتُ: لَا، قَالَ: خُذْهَا فَلَعْنِي لِمَنْ أَكَلَ بِرُقِيَّةٍ بَاطِلٍ، لَقَدْ أَكَلَتْ بِرُقِيَّةٌ حَقًّا.

خارجہ بن صلب دخپل تره نه روایت کوی فرمائی چه هغه دښې عليه السلام په خدمت کښې حاضر شو او اسلام ئې قبول کړو کله چه هغه دښې عليه السلام نه واپس روانیدو نوپه لار کښې د یو قوم سره مخامخ شو چه دهغوی سره یوکس په زنخیرونو تړلې شوې پروت وو ددې لیونی وارثانو او وئیل چه مونږ ته دا معلومه شوي ده چه ستاسو مشر (ښې عليه السلام) یولونی خیر راوړې دې اناستاسو سره داسې څه شې شته چه په هغې باندې د لیونی روغ شي دې وائی ماسورة فاتحه اولوستله او چوپ مې ورباندې اوکړو هغه مریض روغ شو ددغه لیونی وارثانو ماته سل چیلی را کړي زه چه دښې عليه السلام په خدمت کښې حاضر شوم نوددې واقعي ذکرې ورته اوکړو ښې عليه السلام او فرمائیل ایا د سورة فاتحه نه دي علاوه بل دم نه وو وئیلی،

[۳۸۹۷] (۲) حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي. ۳ وَحَدَّثَنَا ابْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي السَّفَرِ، عَنْ الشَّعْبِيِّ، عَنْ خَارِجَةَ بِنِ الصَّلْتِ، عَنْ عَمِّهِ أَنَّهُ مَرَّ قَالَ فَرَأَاهُ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ غَدَوَةً وَعَشِيَّةً كُلَّمَا خَمَمَهَا جَمَعَ بِرَأَاهُ، ثُمَّ تَقَلَّ فَكَأَنَّمَا أُنْشِطَ مِنْ عِقَالٍ فَأَعْطُوهُ شَيْئًا، فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ ذَكَرَ مَعْنَى حَدِيثِ مُسَدَّدٍ.

خارجہ بن صلت دخپل تره نه روایت کوی فرمائی چه هغه ده درې ورځو پورې سحر او ماښام الحمد لله وئيله او په دې لیونی باندې به ئې چپ کولو کله چه به د الحمدو دوئیلونه فارغ شونولاري به ئې په خوله کښې جمع کړي او په ده باندې به ئې ونوکل لیونی داسې روغ شو چه دپرونه پرانیستل شو نودغه خلقو په عوض کښې چیلی ورکړي دې چه دښې عليه السلام په خدمت کښې حاضر شو، باقی حدیث کې دمسدد دحدیث په شان بیان کړو دا حدیث په کتاب البیوع کښې په (باب کسب الاطباء) کښې تیر شوې دې او وړاندې په کتاب الطب کښې په (باب کیف الرقی) کښې هم راوان دې.

د بذل المجهود شریف د جلد رابع اختتام:

او بیا د دې نه روستو په بعض نسخو کښې آخر کتاب الاطعمه ذکر دې او هم په دې باندې د بذل المجهود څلورم جلد پوره شوې دې او د کتاب الطب نه دهغې پنځم جلد شروع کیږی.

(۱): انظر حديث رقم: (۳۴۲۰)، (تحفة الأشراف: ۱۱۰۱۱) (صحیح)

(۲): انظر حديث رقم: (۳۴۲۰)، (تحفة الأشراف: ۱۱۰۱۱) (صحیح)

بسم الله الرحمن الرحيم

## کتاب الطب

د طب متعلق بیان

د دې کتاب د ماقبل سره مناسبت ښکاره دې. مخکښې اطعمه او اشریه تیر شو او مرضونه ډیر گړته په خوراک خکاګ کښې د بې احتیاطۍ او د ترک حمیه د وجې نه وی په دې وجه ضرورت پېښ شو د طب او د علاج د بیانولو.

## د طب تعریف او د هغې تقسیم او انواع :

طب یو مستقل علم دې چې د هغې تعریف دا دې: ﴿هو علم يعرف به احوال بدن الانسان من المرض والصحة﴾ طب لغه په اضدادو کښې دې د دې معنی علاج او تداوی هم ده او په معنی د بیمارۍ هم دې، هم دغه شان په معنی د سحر هم دې، مطبوب یعنی مسحور بیا په دې باندې هم ځان پوهه کول پکار دی چې د طب دوه قسمونه دی یو طب القلوب او بل طب الابدان (ځکه چې د مرضونو دوه قسمونه دی یو روحانی او بل بدنی) طب القلوب خو د رسول الله ﷺ راوړې تعلیمات دی یعنی د شریعت اتباع کول، او د طب الابدان بیا دوه قسمونه دی یو هغه چې کومه د رسول الله ﷺ نه نقل ده، پس په بعض احادیثو کښې بعض بیماریانې او د هغې علاج ذکر شوې دې او د هغې نوم الطب النبوی دې. د بعض محدثینو په باندې مستقل تصنیفات او کتابونه دی لکه د علامه سیوطی رحمه الله المنهج السوی فی الطب النبوی او د امام ذهبی رحمه الله الطب النبوی او هم دغه شان د ابونعیم کتاب الطب النبوی رحمه الله وغیره.

او قسم ثانی کوم چې منقول دې د حکماء او اصحاب تجارب نه مثلاً د حکیمانو د یونان نه چې کوم منقول دې هغې ته طب نبوی وائی، د دې نه علاوه د نور طبیبانو نه مثلاً هغه چې د هند د حکماء نه منقول دې هغې ته آیوریدک وائی او کوم چې د حکماء عرب نه منقول دې هغې ته طب عربی وائی لکه حارث ابن کله مشهور طبیب کوم چې د رسول الله ﷺ په زمانه کښې وو د چا ذکر چې وړاندې په یو حدیث کښې هم راروان دې.

## باب فی الرجل یتداوی

باب د هغه کس بیان چې هغه علاج کول غواړي

[۳۸۵۵] (۱) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ التَّمَرِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ زِيَادِ بْنِ عِلَاقَةَ، عَنْ أَسَامَةَ بْنِ شَرِيكٍ، قَالَ: "أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابَهُ كَأَمَّا عَلَى رُءُوسِهِمُ الطَّيْرُ، فَسَلَّمْتُ ثُمَّ قَعَدْتُ، فَجَاءَ الْأَعْرَابُ مِنْ هَاهُنَا وَهَهُنَا، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَتَدَاوِي؟ فَقَالَ: فَإِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ لَمْ يَضَعْ دَاءً إِلَّا وَضَعَ لَهُ دَوَاءً غَيْرَ دَاءٍ وَاحِدٍ الْهَرَمُ".

د اسامه بن شریک رحمه الله نه روایت دې فرمائی چې د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شوم په

(۱) • تخریج: سنن النسائي/الكبرى الطب، ۴۳ (۷۵۵۳)، سنن الترمذي/الطب ۲ (۲۰۳۸)، سنن ابن ماجه/الطب ۱ (۳۴۳۶)، (تحفة الأشراف: ۱۲۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۷۸/۴) (صحيح)



دې وخت کښې صحابه کرام په داسې طريقه ناست وو گویا کښې ددوی په سرونو باندې مرغی ناستي دي يعنی په خاموشی سره ئې سرونه ښکته کړي وو، ما سلام اوکړو او کښیناستم په دې وخت کښې باند چيان داخوا ديخوانه راوړسیدل اووئې وئیل اي دالله رسوله ايامونږه علاج وکړو؟ نبی ﷺ او فرمائیل علاج کوئ يقینا الله تعالی داسې مرض نه دې پیدا کړې دکوم دپاره چه علاج نه وي علار دیوی بیماری نه او هغه بوډاوالې دې.

قوله: ﴿عَنْ أَسَمَةَ بْنِ شَرِيكٍ قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَأَصْحَابُهُ كَانُوا عَلَى رُءُوسِهِمُ الطَّيْرُ﴾ دا صحابی رضی الله عنه فرمائی چه زه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شوم په داسې حال کښې چه د رسول الله ﷺ صحابه کرام د هغوی په مجلس کښې په داسې سکون او وقار سره ناست وو صامت او ساکت لکه چه د هغوی په سرونو باندې مرغی ناسته وی. دا د تشبیه په طور ده، که د یو سړی په سر باندې مرغی کښي او هغه غواړي چه هغه دې هم دغه شان ناسته وی او پاسی دې نه، نو ښکاره خبره ده چه هغه وخت به دا سړی ډیر په سکون سره کښي سر ته به حرکت هم نه ورکوي او نه به ئې پورته اوچتوي. دا صحابی فرمائی چه ما سلام اوکړو او د هغوی په مجلس کښې کښاستم نو زما په موجودگي کښې د مختلفو طرفونو نه اعراب د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او د هغوی نه ئې تپوس اوکړو ﴿يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلْتَدَاوَى فَقَالَ: تَدَاوَا﴾ يعنی آیا مونږ خپل علاج او دوائی کولې شو؟ (دا د توکل خلاف خو نه ده؟) نو رسول الله ﷺ او فرمائیل او اجازت دې کوئ. ځکه چه الله پاک داسې یو بیماری هم نه ده پیدا کړې چه د هغې دپاره ئې دوائی نه وی پیدا کړې سوا د یوې بیماری يعنی بوډا والی نه.

### د علاج او تداوی حکم :

په دې کښې اختلاف دې چه د بیماری دوائی او علاج کول مستحب دی یا صرف مباح، د اکثر ورائي په دې کښې د اباحت ده او یو قول د استحباب هم دې، اکثر علماء هم دالیکي چه د رسول الله ﷺ د تداوی بیان د جواز دپاره وو اوس که هم په دې کښې څوک د اتباع نیت اوکړی نو د اجر او ثواب امید ئې شته. امام خطابی رحمته الله فرمائی: *فيه ان الطب مباح لا كما قال بعضهم انه مكروه....* او علامه عینی رحمته الله فرمائی چه په دې کښې رد دې په هغه بعضو صوفیاء باندې کوم چه وائی چه د یو ولی ولایت هغه وخته پورې نه شی کامل کیدې، چه تر څو پورې په نازلیدونکی هر مصیبت او بلا باندې راضی نه شی، او دا چه د هغه دپاره علاج جائز نه دې، هغوی فرمائی چه دا خبره د دې حدیث خلاف ده.

### د توکل مراتب ثلاثه:

او د کوکب دری نه معلومیږي چه بعض قسمونه خو ئې ټول حرام دی، يعنی کوم چه د نص په مقابله کښې وی لکه د زهر و څکل په الله پاک باندې د توکل د وجې نه او بعض قسمونه د دې اعلی دی، ترک تداوی هم په هغې کښې ده..... او بعض مراتب د دې بالکل ادنی دی لکه ترک د رقیه چه دا په قسم ثالث کښې دې. د دې نه کم درجه د توکل بالکل نشته، لهذا تعویذونه کول دا د توکل خلاف دی، کذا فی هامش المذلل..... او په دې کښې

دا هم دی چه حافظ په فتح الباری کښې په دې باندې تفصیلا کلام کړې دې چه ایا رقیه اختیارول د توکل منافی دی یا نه، د رقیه متعلق خو ابواب وړاندې راوړان دی. والحديث أخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، وقال الترمذی، حسن صحيح، قاله المنذرى.

## باب فی الحُمیة

### د پرهیز کولو بیان

په سنن ترمذی کښې هم د ابواب الطب د ټولو نه مخکښې باب هم دا دې، «باب ما جاء فی الحمیة» یعنی د ضرری خیزونو نه پرهیز کول چه د هغې ثبوت د قرآن کریم او د حدیث الباب نه کیږي، حدیث الباب خو په دې کښې صریح دې او په قرآن کریم کښې آیت د اودس کښې دی «وان كنتم مرضی او علی سفر» یعنی د عذر د وجې نه الله پاک د اوبو د استعمال نه د احتیاط حکم او د تیمم جواز فرمائیلي دي. مشهوره مقوله ده چه «الحمیة راس كل دواء».

[۳۸۵۶] (۱) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، وَأَبُو عَامِرٍ، وَهَذَا الْقُطَيْبِيُّ عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَيُّوبَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ صَعْصَعَةَ الْأَنْصَارِيِّ، عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ أَبِي يَعْقُوبَ، عَنْ أُمِّ الْمُنْذِرِ بِنْتِ قَيْسِ الْأَنْصَارِيَّةِ، قَالَتْ: "دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَعَهُ عَلَى رَضَى اللَّهُ عَنْهُ، وَعَلَى نَاقَةٍ وَلَنَا دَوَالِي مُعَلَّقَةٌ، فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْكُلُ مِنْهَا، وَقَامَ عَلَيَّ لِيَأْكُلَ، فَطَفِقَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ لِعَلَيٍّ: مَهْ إِنَّكَ نَاقَةٌ، حَتَّى كَفَّ عَلَيٌّ رَضَى اللَّهُ عَنْهُ، قَالَتْ: وَصَنَعْتُ شَعِيرًا وَسَلَقًا، فَجِئْتُ بِهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا عَلِيُّ أَصِيبْ مِنْ هَذَا فَمَا أَتَقَرُّ لَكَ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَالَ هَارُونُ الْعَدَوِيَّةُ.

دام المنذر بنت قيس الأنصارية رضي الله عنها نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ زماخواته تشریف راوړو او علی کرم الله وجهه ورسره موجود وو کوم چه دبیماری په وجه باندې کمزورې شوې وو اوزمونږ کره دکجورو غونچکونه زوړند کړې شوي پراته وو نبی ﷺ ددې دراختودپاره ورباخیدو او علی ع دخورلودپاره ورباخیدونبی ﷺ ورته اووئیل ته مه خوره اوس ته تیک نه یې، تردې پورې چه علی دخورلونه منع کړې شو، ام المنذر وائی چه مادورېشو دودئ اودچقندرو شورواه پخه کړي وه دامې راواخستل اونبی ﷺ ته مې پیش کړل نبی ﷺ اوفرمائیل ای علی ددینه اوخوره داستادپاره فائده مند دي امام

ابوداؤد فرمائی چه دهارون نه هغه هارون مراد دې کوم چه عدوی دې.

قوله: «عَنْ أُمِّ الْمُنْذِرِ بِنْتِ قَيْسِ الْأَنْصَارِيَّةِ قَالَتْ دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَمَعَهُ عَلَيٌّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَعَلَيُّ نَاقَةٌ وَلَنَا دَوَالٍ مُعَلَّقَةٌ الْخ»

### مضمون الحديث :

ام المنذر رضي الله عنها چه د هغې نوم سلمی بنت قيس دې د رسول الله ﷺ د تروريانو نه ده، هغه فرمائی چه يو مگرت رسول الله ﷺ زمونږ کور ته تشریف راوړو، علی رضي الله عنه هم د هغوی سره وو چه هغه وخت ناقة وو، یعنی د بيماری نه د پاسيدو د وجې نه پکښې نقاهاهت وو، زمونږ په

(۱) سنن الترمذی / الطب ۱ (۳۰۳۷)، سنن ابن ماجه / الطب ۳ (۳۴۴۲)، (تحفة الأشراف: ۱۸۳۶۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۶۴، ۳۶۳/۱) (حسن)



کور کښې د کهجورو غونچې زورېدې وې، رسول الله ﷺ اودریدلو، د هغې د خوراک دپاره، علی رضی الله عنه هم په دې غرض باندې اودریدلو نو رسول الله ﷺ او فرمائیل چه په تا کښې نقاهت او کمزوری ده تر دې چه هغه منع شو. هغه فرمائی چه ما د اورېشو او د چقدر سبزی هم پخ کړې وه کومه چه ما هغوی ته راوړله. نو رسول الله ﷺ او فرمائیل: «يَا عَلِيُّ أَصَبَ مِنْ هَذَا فَهُوَ أَنْفَعُ لَكَ» دا اوخوره ستا دپاره مفید دي.

کهجورې گرمې وې چه دهغې نه رسول الله ﷺ هغه منع کړو او سبزی یخه وې کومه چه د هغوی په حق کښې فائده منده وه، په دې حدیث کښې د خوراک خکاګ په څیزونو کښې د احتیاط او پرهیز کولو ثبوت دې لکه چه مصنف رحمه الله ترجمه قائم کړې ده، په بدل کښې دی چه د دې حدیث نه د علم طب فضیلت او دا چه د طبیب خبره منل پکار دی ثابت شو. والحديث أخرجه الترمذی وابن ماجه، قاله المنذرى.

### بَابُ فِي الْحِجَامَةِ د ښکر لګولو بیان

[۳۸۵۷] (١) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "إِنْ كَانَ فِي شَيْءٍ مِمَّا تَدَاوَيْتُمْ بِهِ خَيْرٌ فَالْحِجَامَةُ".

د ابوهريره رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم ﷺ فرمائیلی دی که چېرې ستاسو په ټولو دواګانو کښې خپروي کوم چه تاسو کوئ نو هغه حجامت یعنی ښکر لګول دي. قوله: «إِنْ كَانَ فِي شَيْءٍ مِمَّا تَدَاوَيْتُمْ بِهِ خَيْرٌ فَالْحِجَامَةُ»

کوم علاج او دارو وغیره چه تاسو کوئ په هغې کښې که په څه کښې خیر شته نو هغه په حجامت کښې دې یعنی ښکر لګول.

بعض شارحینو (سفاقي) په دې حدیث باندې لیکلې دی چه ممکن ده رسول الله ﷺ دا خبره هغه وخت فرمائیلې وې چه کله هغوی ته دا علم نه وو چه الله پاک د هرې بیماری دپاره دوائی هم پیدا کړې دي. اهدې شارح دا حدیث حمل کړې دي په نفی د افادې باندې په نورو څیزونو او دوايانو کښې او د دې نه غوره خبره هغه ده کومه چه علامه سندی رحمه الله لیکلې ده چه په دې سره مقصود د رسول الله ﷺ د غیر حجامت نه د فائدي اوچتولو نفی نه ده مراد بلکه د مبالغې او تحقیق په طریقه باندې د حجامت فائدي لره بیانول مقصود دی. والحديث أخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى.

[۳۸۵۸] (٢) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْوَزِيرِ الدِّمَشْقِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَعْنَى ابْنِ حَسَّانَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي الْمَوَالِي، حَدَّثَنَا قَابِدُ مَوْلَى عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَلِيٍّ بْنِ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ مَوْلَا عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَلِيٍّ بْنِ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ جَدِّهِ سَلَمَى خَادِمِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَتْ: "مَا كَانَ أَحَدٌ يَشْتَكِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، إِلَّا شَفَّاهُ بِمِثْلِ ذَلِكَ".

(١) سنن الترمذي/الطب ١ (٢٠٣٧)، سنن ابن ماجه/الطب ٢٠ (٣٤٧٦)، (تحفة الأشراف: ١٥٠١١)، وقد أخرجه: مسند احمد (٤٢٣، ٣٤٢/٢) (صحيح)

(٢) سنن الترمذي/الطب ١٣ (٢٠٥٤)، سنن ابن ماجه/الطب ٢٩ (٣٥٠٢)، (تحفة الأشراف: ١٥٨٩٣)، وقد أخرجه: مسند احمد (٤٦٢/٨) (حسن)

وَسَلَّمَ وَجَعَفَى رَأْسَهُ إِلَّا قَالَ: احْتَجِمُوا، وَلَا وَجَعَفَى رَجُلِيهِ إِلَّا قَالَ: اخْضِبُوهَا."

د نبی ﷺ د خادمي سلمیٰ ﷺ نه روایت دي فرمائی چه داسې هېڅ يو کس نه وو چه د درد د وجې نه به ئې نبی ﷺ ته شکایت وکړو مګر نبی ﷺ به ورته او فرمائیل چه ښکر اولګوه او چا چه به نبی ﷺ ته دخپو درد شکایت وکړو نو نبی ﷺ به ورته فرمائیل چه نکريزي ورباندې اولګوه.

قوله: «عَنْ جَدَّتِهِ سَلْمَى خَادِمِ رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم»

د خادم اطلاق په غلام او جاريه دواړو باندې کيږي، او په دې کښې د تا استعمال يعنې خادمه قليل دي، سلمیٰ ﷺ چه د رسول الله ﷺ وينځه او خادمه ده فرمائی چه کوم سړی به هم رسول الله ﷺ ته د سر د درد شکایت کولو نو رسول الله ﷺ به هغه ته د حجامت حکم فرمائيلو او چا چه به رسول الله ﷺ ته د خپو تکليف بيانولو نو رسول الله ﷺ به هغه ته د خضاب بالحناء مشوره ورکوله، يعنې د خپو په تلو باندې د نکريزو لګولو.

شارحينو ليکلې دي چه په دهغه زمانه کښې زيات تر د سر درد او تکليف د وينې د غلبې او دهغې د جوش (بله پريشر) د وجې نه وو او حجامت هم د هغه بيماريانو علاج دي کوم چه د غلبه دم په وجه باندې وي. (والحديث أخرجه الترمذی وابن ماجه مختصر في الحناء، قاله المنذرى)

### باب فِي مَوْضِعِ الْحَجَامَةِ

باب د ښکر لګولو د ځای بيان

[۳۸۵۹] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّمَشْقِيُّ، وَكَثِيرُ بْنُ عُبَيْدٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، عَنْ ابْنِ ثَوْبَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي كَبْشَةَ الْأَنْمَارِيِّ، قَالَ كَثِيرٌ إِنَّهُ حَدَّثَهُ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ "يَخْتَجِمُ عَلَى هَامَتِهِ وَيَبَيِّنُ كَتِفَيْهِ، وَهُوَ يَقُولُ: مَنْ أَهْرَاقَ مِنْ هَذِهِ الدَّمَاءِ فَلَا يَضُرُّهُ أَنْ لَا يَتَدَاوَى بِشَيْءٍ لَشَىءٍ".

د ابو كبشه الانماري نه روایت دي چه نبی ﷺ به په خپله گوپړي کښې ښکر لګولو اودا وګوپه مينځ کښې به يې هم لګولو او فرمائيل به ئې: خوک چه ددې دوه ځايونونه وينه اوباسي نو کچري داسې کس دڅه مرض دپاره دوا استعمال نکري نو نقصان ورته نشي رسيدی.

قوله: «أَنَّ النَّبِيَّ -صلى الله عليه وسلم- كَانَ يَخْتَجِمُ عَلَى هَامَتِهِ وَيَبَيِّنُ كَتِفَيْهِ وَهُوَ يَقُولُ «مَنْ أَهْرَاقَ مِنْ هَذِهِ الدَّمَاءِ فَلَا يَضُرُّهُ أَنْ لَا يَتَدَاوَى بِشَيْءٍ لَشَىءٍ»

يعنې د رسول الله ﷺ عادت مبارک د احتجام په باره کښې دا وو چه اکثر به ئې د خپل سر په تالو باندې او د خپلو اوږو په مينځ کښې لګولو او فرمائيل به ئې چه کوم سړی دا وينه اوبهيوی، يعنې د حجامت په ذريعه، او د «هذه الدماء» اشاره هم هغې وينې ته ده کومه چه د ښکر لګولو په ذريعه اوځی نو بيا د هغه د بيماري دپاره د بل څه علاج ضرورت نشته. د احاديثو نه د حجامت د اهميت ثبوت:

په احاديثو کښې د حجامت ډير تعريف راغلې دي تر دې چه په حديث المعراج کښې راځي

(۱) سنن ابن ماجه للطب ۲۱ (۳۴۸۴)، (تحفة الأشراف: ۱۲۱۴۳) (ضعيف) (الضعيفة: ۱۸۶۷، وتراجع الألباني: ۱۹۴)



چه رسول الله ﷺ به په کوم آسمان باندې هم تیر شو نو د هغه ځانې ملائکو به رسول الله ﷺ ته عرض او کړو «مرامتک بالحجامة» ..... ما د خپل وړوکوالی په زمانه کښې څلویښت پنځوس کاله مخکښې او کتل چه د گرمۍ په زمانه کښې د غرمې په وخت داسې ځنگلیان قسم سړی په لاس کښې تهیلئ وغیره نیولې په سرکونو او کلو کوڅو کښې آواز لگولو او په خپله خاص لهجه کښې به ئې وئیل ښکر اولگوئ ..... چه د هغوی د آواز نه به ماشومان ویریدل هم چه کله به هغوی راتلل خو اوس خو د هغوی راتلل تقریبا بند شو، کله کله څوک راشی، او اوریدلې مې دې چه دلته په حجاز کښې یعنی په مکه مدینه (زادهما الله شرفا) کښې اوس هم د دې رواج او معمول دې او معلومه شوه چه مخکښې خو به دا خلق د حرم په خوا کښې چرته د سرک په غاړه باندې ناست وو د خپلو آلاتو سره. خو اوس د دې ځانې حکومت د هغوی داسې د سرکونو په غاړو باندې د کیناستلو په ځانې د هغوی دپاره معقول ځانې او د صفائی لازم کړې ده. چه کله په حدیث کښې دومره تاکید کړې شوې دې نو بیا د دې اهتمام کیدل پکار دی، خو اوس په دنیا کښې نوې علاونه شروع شو، انگریزی قسم خلق هغه کوی. والحديث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۸۶۰] (۱) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ يَعْنِي ابْنَ حَازِمٍ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "اِحْتَجَمَ ثَلَاثًا فِي الْأَخْدَعَيْنِ وَالْكَاهِلِ"، قَالَ مُعَمَّرٌ: اِحْتَجَمْتُ قَدْ هَبَ عَقْلِي حَتَّى كُنْتُ الْقَرْنُ فَاتِحَةً الْكِتَابِ فِي صَلَاتِي وَكَانَ اِحْتَجَمَ عَلَى هَامَتِهِ.

ترجمه: انس بن مالک رضی الله عنه روایت دې فرمائی چه رسول الله و دمرئ په رگونو او ددواړو او گوپه مینځ کښې درې پیري ښکر لگولو، معمروئیلی دي مادخپل سر په مینځ کښې ښکر ولگولو نو عقل مې ختم شو تر دې پورې چه مابه دخلقو په وینا باندې په مونځ کښې سورة فاتحه لوستله.

قوله: «عَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ -صلى الله عليه وسلم- اِحْتَجَمَ ثَلَاثًا فِي الْأَخْدَعَيْنِ وَالْكَاهِلِ»  
یعنی رسول الله ﷺ د بدن په درې ځایونو کښې ښکر اولگولو دواړه اخدغینو کښې کوم چه د ست طرف ته د دوه رگونو نوم دې. او په کاهل یعنی مابین الکتفین کښې. یعنی په یو موقعه باندې رسول الله ﷺ داسې اوکړل، او د دې دریو نه علاوه د بدن په نورو حصو باندې لگول هم ثابت دی لکه چه په کتاب الحج کښې د دې سلسلې ډیر روایتونه تیر شوې دی «احتجم وهو محرم في راسه من داء كان به»، «احتجم وهو محرم على ظهر القدم من وجع كان به» او یو روایت دلته په راروان باب کښې راځی، «احتجم على وركه من ولى كان به» ښکر په مجامع العروق باندې عام طور سره لگولې شی د بدن په کومه حصه کښې چه هم وی چرته چه رگونه جمع شوې وی هغه ځانې اول په غشی باندې زخمی کولې شی او بیا ښکر لگولو سره حجام د ساه په ذریعه باندې وینه راکارې.

(۱) سنن الترمذي/الطب ۱۲ (۲۰۵۱)، سنن ابن ماجه/الطب ۲۱ (۳۴۸۳)، (تحفة الأشراف: ۱۱۴۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۹۲، ۱۱۹/۳) (صحيح)

وړاندې حديث كښي معمر فرمائي چه ما يو كرت ښكر اولگولو نو زما عقل خراب شو، په سورة الفاتحه لوستلو كښي هم اينختمه، په هغې كښي هم لقمه راكولو ته حاجت راغلو، يو راوی وائي چه هغوی د خپل سره په تالو باندې ښكر لگولې وو، نو يا خو ترې نه په محل د تعين كښي غلطی اوشوه، يا د مرض په تشخيص كښي چه د هغې په وجه باندې نقصان پيدا شو، دا هم كيدې شي چه هغوی د هامه په ځانې په يافوخ باندې لگولې وى دا دواړه ځايونه نژدې نژدې دي، هامه لږ مقدم الراس طرف ته وى او يافوخ لږ شاته. والحديث اخرجه الترمذی وابن ماجه، قاله المنذرى.

### باب مَتَى تُسْتَعَبُّ الْحِجَامَةُ

باب ښكر لگول كله مستحب دى؟

[۳۸۶۱] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو تَوْبَةَ الرَّيِّعُ بْنُ نَافِعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْجَمْعِيُّ، عَنْ سُكَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ احْتَجَمَ لِسَبْعَ عَشْرَةَ، وَتِسْعَ عَشْرَةَ، وَإِحْدَى وَعِشْرِينَ، كَانَ شِفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ".

دا ابو هريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه رسول الله ﷺ فرمائيلى دى چاچه په ولسم او نولسم او يويشتم تاريخونو (دمياشتي) باندې ښكرو لگوو نو داسې كس ته به دهر مرض نه شفا حاصل شي.

يعنى په كومو تاريخونو كښي ښكر لگول پكار دى، په حديث الباب كښي دى چه رسول الله ﷺ ارشاد او فرمائيلى چه كوم سړى د مياشتې يه اولسم او نولسم او يويشتم باندې ښكر اولگولو نو په هغې كښي د هرې بيمارۍ نه شفاء ده. علماء كرامو ليكلي دي چه حكمت په دې كښي دا دې چه د مياشتې په شروع حصه كښي د انسان وينه جوش كوى او په آخير كښي ډير سپكه شي، لهذا د مينځ وخت د دې دپاره ډير مناسب دى. امام بخارى رحمه الله هم په كتاب الطب كښي د حجامت متعلق ډير ابواب قائم كړي دي، يو ترجمه دا هم ده «اي ساعة يحتجم» او په هغې كښي ئې دا حديث مرفوع ذكر كړې «احتجم النبي ﷺ وهو صائم» او په يو روايت كښي تعليقا داسې دى «احتجم ابو موسى ليلا» ذكر كړې دې په بخارى كښي د تعين اوقات هيڅ روايت نشته خو په سنن ابوداؤد او ابن ماجه كښي داسې روايات شته، او په فيض الباري كښي دى «لعل البخارى يشير الى حديث عند ابى داؤد فيه تفصيل الايام للاحتجام» اه الاواب والتراجم.

### باب فِي قَطْعِ الْعِرْقِ وَمَوْضِعِ الْحَجْمِ

باب ډرگه كټ كولو او د ښكر لگولو د ځاى بيان

په دې ترجمه كښي دوه اجزاء دي يو موضع الحجامه، خو د هغې باب پورته تير شوې دې په دې وجه په بعض نسخو كښي د ترجمې دا جزء نشته، او دويم جزء يعنى قطع العرق يعنى د يو خاص رگ خوله پرانستل يعنى فصد.



[۳۸۶۴] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سُلَيْمَانَ الْإِنْبَارِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سَفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: "بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَبِي طَبِيْبٍ فَقَطَعَ مِنْهُ عِرْقًا".

د جابر رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم ابی بن کعب رضی اللہ عنہ ته یو طیب ور ولیکلو اردو رگ ئې ورله پریکړو.

قوله: (عَنْ جَابِرٍ قَالَ بَعَثَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - إِلَى أَبِي طَبِيْبٍ فَقَطَعَ مِنْهُ عِرْقًا) یعنی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ابی بن کعب رضی اللہ عنہ ته یو طیب اولیرلو چا چه د هغوی فصد اوکړو. او د مسلم په روایت کښې دا هم دی (ثم بعد ذلك كواه ليرقا الدم) یعنی د فصد کولو نه پس ئې هغه زخم او داغلو چه وینه راتلل بند شی.

والحديث أخرجه مسلم، وابن ماجه بنحوه، قاله المنذرى

[۳۸۶۲] (۲) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، أَخْبَرَنِي أَبُو بَكْرَةَ بَكَارُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، أَخْبَرَنِي عَمَّتِي كَبْشَةُ بِنْتُ أَبِي بَكْرَةَ، وَقَالَ غَيْرُ مُوسَى: كَبْشَةُ بِنْتُ أَبِي بَكْرَةَ، أَنَّ أَبَاهَا كَانَ "يَنْهَى أَهْلَهُ عَنِ الْحِجَامَةِ يَوْمَ الثَّلَاثَاءِ، وَيَزْعُمُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّ يَوْمَ الثَّلَاثَاءِ يَوْمُ الدِّمِ وَفِيهِ سَاعَةٌ لَا يَرُقُّ".

د کبشه بنت ابوبکره نه روایت دې اود موسی نه علاوه نورو راویانو وئیلی دی چه د کبسه بنت ابی بکره نه روایت دې فرمائی چه زما پلار به دخپل خاندان خلق دسه شنبی په ورځ دښکر لگولونه منع کول او داگمان به ئې کولو چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم په دې ورځ دښکر لگرلنه منع کړې ده اردا چه ده شنبی ورځ دوینو ویستلو ورځ ده او په دې ورځ کښې یو داسې ساعت دې چه په دې کښې په وینو ویستلو سره سرې نه روغیږي.

(أَخْبَرَنِي عَمَّتِي كَبْشَةُ بِنْتُ أَبِي بَكْرَةَ) زمونږ په نسخه کښې هم دغه شان دی، کبشه..... او په بعض نسخو کښې (کبسه) دې او هم دا صحیح دې. په دې حدیث کښې دا دی چه په یوم الثلاثاء کښې ښکر نه دی لگول پکار، دا ورځ یوم الدم ده یعنی دا ورځې د وینې د غلبې دی په بدن کښې دننه، او په دې ورځ کښې یو ساعت داسې دې چه که په هغې کښې حجامت یا فصد او کړې شی نو بیا وینه او درېږي نه.

دا حدیث ابن الجوزی رحمته اللہ علیہ په موضوعاتو کښې شمار کړې دې او بیا سیوطی رحمته اللہ علیہ په دې باندې د هغوی تعاقب کړې دې.

[۳۸۶۳] (۳) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "أَحْتَجَمَ عَلَى وَرِكَيْهِ مِنْ وَثْءٍ كَانَ بِهِ".

د جابر رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د پخوانی درد په بناباندې په خپل کوناتې باندې ښکر لگولې وو.

(۱) صحیح مسلم/السلام ۲۶ (۲۲۰۷)، سنن ابن ماجه/الطب ۲۴ (۳۴۹۳)، (تحفة الأشراف: ۲۲۹۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۰۳/۳، ۳۰۴، ۳۱۵، ۳۷۱) (حسن)

(۲) تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۰۷) (ضعيف)

(۳) تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۲۹۷۸)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه/الطب ۲۱ (۳۴۸۵)، مسند احمد (۳۰۵۳، ۳۵۷، ۳۸۲) (صحیح)

قوله: «اَخْتَجَمَ عَلَى وَرِكِهِ مِنْ وَثْءٍ كَانَ بِهِ» یعنی په خپل ورک (د پتون نه لږ ږه ځانې) باندې ټپ ښکر اولگولو او د زخمی کیدو د وجې نه د وټو دادې چه په هډوکي باندې زخم اولگي خو هغه زخمی نه شی، کیدې شی چه دا مختصر وی هم د حدیث نه په کوم کښې چه د رسول الله ﷺ د سقوط عن الفرس مشهور واقعه ذکر شوې ده، حضرت په بذل کښې د هغې طرف ته اشاره کړې ده. والحديث أخرجه النسائي، قاله المنذري.

## باب فی الکی

بابه د داغ لگولو بیان

(د کی تعریف):

کی د علاج یو خاص طریقه ده چه په هغې کښې اوسپنې لږه گرمولو سره د بدن په کومه حصه کښې چه تکلیف وی هلته په هغې باندې داغ ورکولې شی،  
(تطبیق بین الروایتین)

د دې په باره کښې دواړه قسم روایتونه راغلي دی د منع هم او د جواز هم لکه چه خپله هم د دې باب په دواړو احادیثو کښې دی، په رومبی روایت کښې منع او دویم روایت کښې د هغې ثبوت دې چه رسول الله ﷺ د سعد بن معاذ رضی الله عنه علاج بالکی اوکړو کله چه هغوی د غشی د لگیدو په وجه باندې زخمی شوې وو. جمع د روایتینو بعضو خو داسې کړې ده چه په اصل کښې دا علاج سخت قسم دې، دا اوگنړی چه دا آخری علاج دې چه په هغې کښې تعذیب بالنار دې. نو که د دې نه علاوه په معمولی یا سپک شان علاج باندې کار کیدلې شی نو دا نه دی اختیارول پکار، او چرته چه یو بله دوائی مفید ثابته نه شی هلته بیا دا کول پکار دی. او بعضو شارحینو داسې لیکلې دی چه که دا علاج صرف د بیماریانو نه د بچ کیدلو دپاره او د تحفظ دپاره وی نو بیا خو منع دې او که حقیقت کښې دې ضرورت راشی نو بیا داسې کول جائز دی، دا دویمه توجیه په حاشیه کښې د عزالدین ابن عبد السلام نه نقل کړې ده.

[۳۸۶۵] حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حُمَادٌ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ مُطَرِّفٍ، عَنْ عُمَرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ: "نَهَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْكِيِّ، فَانْكُتُونَا فَمَا أَفْلَحْنَا وَلَا أُنْجَحْنَا"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَكَانَ يَسْمَعُ تَسْلِيمَ الْمَلَائِكَةِ، فَلَمَّا اكْتَوَى النُّقْطَةَ عَنْهُ، فَلَمَّا تَرَكَ رَجَعَهُ إِلَيْهِ.

د عمران بن حصین رضی الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی کریم ﷺ منع فرماتیلې ده د داغ لگولو نه مونږ به داغونه لگول خوم ونړنه څه فائده حاصله کړه اونه څه کامیابی. امام ابوداؤد فرمائی چه د فرشتو سلام به ټپ اوریدو خو چه کله ټپ داغونه شروع کړل بیابه ټپ نه اوریدو خو چه کله ټپ داغ لگول پریښودل نو بیابه ټپ اوریدو.  
د باب په رومبی حدیث کښې دی چه عمران بن حصین رضی الله عنه فرمائی چه رسول الله ﷺ مونږ د

(۱): تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۸۴۵)، وقد أخرجه: سنن الترمذي للطب ۱۰ (۲۰۹۴)، سنن ابن ماجه للطب ۲۳ (۳۴۹۱)، مسند احمد (۴/۴۴۴، ۴۴۶) (صحيح)



علاج بالکئی نه منع کړې وو، خو مونږ دا علاج اوکړو نو په دې کښې کامیابی حاصله نه شوه. ﴿فَمَا أَفْلَحْنَا وَلَا أُنْجَحْنَا﴾ او په بعض نسخو کښې داسی دی ﴿فَمَا أَفْلَحْنَا وَلَا أُنْجَحْنَا﴾ د جمع متکلم په صیغې سره په رومبی صورت کښې به ضمیر راجع وی کیات طرف ته چه زمونږ دپاره دا علاجونه فائده مند ثابت نه شو، او په دویم صورت کښې به مطلب دا وی چه مونږ په دې علاج کښې ناکام شو.

په بعض نسخو کښې د اول حدیث نه پس دی: امام ابوداؤد رحمته الله فرمائی چه دې صحابی عمران بن حصین رضی الله عنه به د دې علاج نه مخکښی تسلیم ملائکه اوریدله. چه کله هغوی دا علاج اوکړو نو دا اوریدل منقطع شو، بیا چه کله هغوی دا علاج ترک کړو نو بیا ئې اوریدل شروع کړل.

[۳۸۶۶] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَبِي الزَّيْتَرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "كَوَى سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ مِنْ رَمِيَّتِهِ".

ترجمه: د جابر رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم صلی الله علیه و آله په سعد بن معاذ رضی الله عنه باندې د زخم په بناء باندې داغ لگولو.

حدیث عمران رضی الله عنه اخرجه الترمذی و ابن ماجه، و حدیث جابر رضی الله عنه اخرجه مسلم و ابن ماجه. قاله المنذرى.

### بَابُ فِي السَّعُوطِ

په پوزه کښې د دوائی اچولو بیان

سعو ط په فتح د سین سره او هم دغه شان لدود په فتح د لام سره او هم دغه شان وجور په فتح د واؤ سره د علاجونو نومونه دی، سعوط په پوزه کښې دوائی اچول (په پوزه کښې د دوائی اچولو طریقه هم شارحینو لیکلې ده (۲)، او لدود د خولې په یو طرف کښې دوائی اچول او وجور په حلق کښې اچول.

[۳۸۶۷] (۳) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا وَهَيْبٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، "أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْتَعَطَّ".

ترجمه: د عبد الله بن عباس رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله په پوزه کښې دوائی اچولي وه.

د لدود ذکر دلته د ابوداؤد په روایت کښې نشته، د صحاح په نورو کتابونو (بخاری او ترمذی) وغیره کښې شته.

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۲۶۹۴)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/السلام ۲۶ (۲۲۰۸)، سنن ابن ماجه/الطب ۲۴ (۳۴۹۴)، مسند أحمد (۳/۳۶۳) (صحيح)

(۲): ففي هامش الكوكب عن الحافظ: بان يستقي الرجل علي ظهره ويجعل بين كتفيه ما يرفعهما ليخدر راسه ويقطر في اذنه ماء او دهن فيه دواء مفرد او مركب ليتمكن بذلك من الوصول الي دماغه لاستخراج ما فيه من الداء بالمعطاس له)

(۳): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۵۷۲۳)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/السلام ۲۶ (۱۲۰۲)، سنن الترمذی/الطب ۹ (۲۰۴۷) (صحيح)

قوله: ﴿عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- اسْتَقَطَ﴾

معلومه شوه چه د رسول الله ﷺ نه سعوط ثابت دې، خپله دا کړې دې.

د رسول الله ﷺ په مرض کښې د لدود واقعہ:

او د لدود په باره کښې دا راځي د ترمذی په روایت کښې دی:

﴿إن خير ما تداويتم به السعوط واللدود والحجامة والمشي فلما اشتكى رسول الله صلى الله عليه و

سلم لده أصحابه فلما فرغوا قال لدوهم قال فلدوا كلهم غير العباس ؓ﴾ یعنی د رسول الله ﷺ

د کور خلقو هغوی سره لدود او کړو حال دا چه رسول الله ﷺ د دې نه منع فرمائیلې وه خو د

کور خلقو په دې سوچ چه مریض خو دوائی ضرور ناخوښه گنړی داسې ځکه او کړل... ﴿ففي

حديث عائشة رضي الله تعالى عنها عند الشخين لَدَدْنَا رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- فِي مَرَضِهِ

فَأَشَارَ أَنْ لَا تَلْدُونِي. فَقُلْنَا كَرَاهِيَةَ الْمَرِيضِ لِلدَّوَاءِ. الحديث﴾ او د طبرانی په یو روایت کښې

دی ﴿انهم اذا بوا قسطا... ای بزیت فلدوه به﴾ یعنی په قسط هندي لره گرمولو سره ئې د

زیتونو په تیلو کښې خوتکولو سره په هغې باندې د هغوی لدود او کړو یعنی د حضور ﷺ

په حلق کښې ئې واچولو، په بعض روایاتو کښې دی چه خلقو دا گنړله چه رسول الله ﷺ ته

د ذات الجنب تکلیف دې هم په دې وجه هغوی دا علاج کړې وو. بیا روستو دا اوشوه چه

رسول الله ﷺ د سزا په طور په ټولو باندې لدود او کړو بغیر د عباس ؓ نه چه د هغوی په

باره کښې رسول الله ﷺ داسې اوفرمائیل چه ﴿انه لم يشهدكم﴾ چه هغوی د لدود په وخت

موجود نه وو. (اگر چه د لدود مشوره ورکونکې هم هغوی وو)

(اشکال): دلته دا سوال واردیږي چه د رسول الله ﷺ عادت مبارک د خپل ځان دپاره د انتقام

اخستلو نه وو..... بیا رسول الله ﷺ انتقام ولې واخستلو؟

(جواب): د دې جواب دا ورکړې شوې دې چه د رسول الله ﷺ د امر د مخالفت د وجې نه، او

د رسول الله ﷺ امر د وحی په ذریعه وو، گویا هغوی د وحی مخالفت او کړو،

(په جواب باندې اشکال): بیا دا سوال واردیږي چه اهل بیت خو دا خطاء اجتهدی کړې وه او په

هغې باندې سزا نه ملاویږي،

(جواب): د دې جواب حضرت گنګوهی دا ورکړې دې چه د هغوی دپاره دا اجتهد جائز کله

وو، د نص د کیدو په وخت کښې اجتهد جائز نه دې، هم دغه شان د رسول الله ﷺ په

موجودگي کښې هم اجتهد جائز نه دې، دا سوال او جواب د حضرت سهارنپوری او د

حضرت گنګوهی ترمینځه د خط او کتابت په ذریعه شوې وو کوم چه په تذکرة الخلیل

کښې نقل کړې شوې دی. په کوکب دری کښې هم تقریبا هم دغه شان راغلې دی.

د ترمذی، په پورته ذکر شوې روایت کښې د مشی ذکر هم راغلې دې یعنی دوا

مسهل سنامکی وغیره.

والحديث اخرجه البخاري ومسلم اتم منه، قاله المنذري.



## باب فی النُّشْرَةِ

د شیطانانو په نوم باندې د یو قسم دم کولو بیان

[۳۸۶۸] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا عَقِيلُ بْنُ مَعْقِلٍ، قَالَ: سَمِعْتُ وَهْبَ بْنَ مُنْبِيهٍ يُحَدِّثُ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: "سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ النُّشْرَةِ؟ فَقَالَ: هُوَ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ".

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دی فرمائی چې د نبی کریم صلی الله علیه و آله نه د شیطانانو په نوم باندې د دم کولو په باره کښې تپوس وکړي شو، نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل د ايو شیطاني عمل دی.   
تشریح: په حدیث الباب کښې دی چې د رسول الله صلی الله علیه و آله نه د نشره په باره کښې تپوس او شو «فَقَالَ «هُوَ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ»» په بذل کښې دی چې دا د رقیه یو قسم دی او دا هم وئیلې شوې دی چې سحر دی. رسول الله صلی الله علیه و آله دې ته د شیطان عمل او فرمائیلو کیدې شی چې دا په نومونو د شیطانانو باندې مشتمل وی چې د هغې په وجه ئې منع فرمائیلې وی.

## باب فی التَّرْيَاقِ

بابه د تریاق د استعمال بیان

د زهر و دوائی ته تریاق وائی، بعض تریاقونه مرکب وی چې په هغې کښې لحوم افاعی یعنی د مار د بدن درمیانی حصه د سر او وینې نه علاوه بیلولو سره اچولې شی، نور خیزونه به هم وی، دا حرام دې د نجس کیدو د وجې نه، او که تریاق د پاکو خیزونو نه جوړ کړې شی نو د هغې په څکلو کښې هیڅ باک نشته (کذا فی البذل) وفيه ومن اباح فیما فیهِ شی من لحوم الافاعی مالک لانه یری اباحه لحوم الحیاة ویقتضیه مذهب الشافعی لاباحه التداوی ببعض المحرمات، قاله ابن رسلان... (بذل)

[۳۸۶۹] (۲) حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ مَيْسَرَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، حَدَّثَنَا شُرَحْبِيلُ بْنُ يَزِيدَ الْمُعَاوِرِيُّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ رَافِعٍ التَّوَحُّجِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "مَا أَبَالِي مَا أَتَيْتُ إِنْ أَنَا شَرِبْتُ تَرْيَاقًا أَوْ تَعَلَّقْتُ تِمِيمَةً أَوْ قُلْتُ الشَّعْرَ مِنْ قَبْلِ نَفْسِي"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا كَانَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَاصَّةً وَقَدْ رَخَّصَ فِيهِ قَوْمٌ يَعْنِي التَّرْيَاقَ.

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دی فرمائی چې د نبی صلی الله علیه و آله نه مې اوریدلی دی چې فرمائیل ئې زه هیڅ قسم خوف او اندېښنه نه کوم که چرې زه تریاق او خورم یا تعویذ او یزان کرم یاد خواش نفساني اشعار ووايم امام ابوداؤد فرمائی چې دا د نبی صلی الله علیه و آله خصوصیت وو او یو قوم د تریاق خوړلو اجازت ورکړي دي.

«سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَقُولُ « مَا أَبَالِي مَا أَتَيْتُ إِنْ أَنَا شَرِبْتُ تَرْيَاقًا أَوْ تَعَلَّقْتُ تِمِيمَةً أَوْ قُلْتُ الشَّعْرَ مِنْ قَبْلِ نَفْسِي »»

(۱): تفرد به ابوداؤد، (تحفة الأشراف: ۳۱۳۳)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۲۹۴/۳) (صحيح)  
(۲): تفرد به ابوداؤد، (تحفة الأشراف: ۸۸۷۸)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱۶۷/۲، ۲۲۳) (ضعيف)

## شرح الحديث :

﴿ ما ابالي ما اتيت ﴾ جزاء مقدم ده وړاندې د دې شرط راروان دې، رسول الله ﷺ فرمائی چې که زه ترياق استعمال کړم يا تعليق تميمه يا د خپل طرف نه شعر او اثم نو د دې مطلب به دا وي چې زه څه غواړم هغه کوم او پرواه نه کوم، يعنې د جائز کيدو او د ناجائز کيدو حاصل دا چې دا کار زما دپاره قطعاً جائز نه دې.

قوله: ﴿ قَالَ أَبُو دَاوُدَ هَذَا كَانَ لِلنَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - خَاصَّةً ﴾

مصنف ﷺ فرمائی چې د ترياق حراميدل خاص د رسول الله ﷺ دپاره دی گينې بعض علماء کرامو ترياق ته جائز وئيلې دی، او دا هم احتمال دې چې د مصنف په کلام کښې په هذا سره اشاره د ﴿ او قلت الشعر من قبل نفسي ﴾ طرف ته وي او ﴿ وقد رخص قوم ﴾ دا جمله د ماقبل سره متعلق نه وي، بلکه مستقل د ترياق سره متعلق وي.

په دې حديث کښې د تعليق تميمه هم ذکر دې، د تعليق التمايم وړاندې مستقل باب راروان دې.

## باب في الأدوية المكروهة

باب دهغه دوايا نوبيان کوم چه استعمالول مکروه دی

[۳۸۷۴] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادَةَ الْوَاسِطِيُّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ ثَعْلَبَةَ بْنِ مُسْلِمٍ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْأَنْصَارِيِّ، عَنْ أَمْرِ الدَّرْدَاءِ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ الدَّاءَ وَالذَّوَاءَ وَجَعَلَ لِكُلِّ دَاءٍ دَوَاءً فَتَدَاوَوْا وَلَا تَدَاوَوْا بِحَرَامٍ".

د وائل بن حجر رحمه الله نه روایت دې فرمائی چې طارق بن سوید یا سوید بن طارق د نبی ﷺ نه د شرابود څکلو متعلق تپوس وکړونو نبی ﷺ ده لره منع کړو بیا ئې تپوس وکړو نوبياني منع کړو نو عرض ئې وکړو چه زما غرض د علاج دپاره څکل دي نبی ﷺ ورته وفرمائيل شراب دوا نه ده دا پخپله يوه بيماري ده.

﴿ قال رسول الله صلى الله عليه وسلم إِنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ الدَّاءَ وَالذَّوَاءَ وَجَعَلَ لِكُلِّ دَاءٍ دَوَاءً فَتَدَاوَوْا وَلَا تَدَاوَوْا بِحَرَامٍ ﴾

د دې حديث مضمون د کتاب الطب په شروع کښې تیر شوي دې چه بيماري هم د الله پاک پيدا کړې ده او د هغې دپاره دوا ئې هم الله پاک پيدا کړې ده او بيا وړاندې رسول الله ﷺ او فرمائيل چه دوا ئې کوئ خو په حرام او نجس خيز باندې نه.

د دې حديث د سياق نه د علاج او تداوی ترغيب معلومېږي چه دوا ئې خو د الله پاک يو نعمت دې او د دې نه فائده او چتول پکاردی، او څوک چه وائی دوا ئې د توکل خلاف ده هغه به د لویو خلکو په حق کښې وی کوم چه د رضا او تسليم اعلى مقام ته رسيدلې وی.



[۳۸۷۰] (۱) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشِيرٍ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ أَبِي اسحاق، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الدَّوَاءِ الْخَبِيثِ".

د ابو الدرداء رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه رسول الله ﷺ فرمائيلى دى چه الله تعالى بيماري او علاج دواړه نازل كړي دي اودهر مرض دپاره ئې علاج پيدا كړي دي دمرضونو دپاره علاجونه كوي خو په حرام خيز باندې علاج مه كوي.

[۳۸۷۱] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ ابْنِ أَبِي ذئبٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ خَالِدٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عُثْمَانَ، "أَنَّ طَبِيبًا سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ضِفْدَعٍ يَجْعَلُهَا فِي دَوَاءٍ، فَنَهَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ قَتْلِهَا".

د عبد الرحمن بن عثمان نه روايت دې فرمائي چه يوطبيب د نبی كريم ﷺ نه تپوس وكړود چندينس په باره كښې چه په دوا كښې واچولي شي نونبى ﷺ ددې دوزلو نه منع اوفرماييله.

قوله: (أَنَّ طَبِيبًا سَأَلَ النَّبِيَّ - صلى الله عليه وسلم - عَنْ ضِفْدَعٍ يَجْعَلُهَا فِي دَوَاءٍ فَنَهَاهُ النَّبِيُّ - صلى الله عليه وسلم - عَنْ قَتْلِهَا)

هر كله چه د (چيندخ) قتل منع شو نو تداوى بالضفدع هم منع شوه ځكه چه تداوى د هغه په قتل باندې موقوف ده يا خو په دې وجه منع دې چه هغه نجس دې يا كم از كم مستقذر (يعنى كرك ژن خين) كذا فى البذل عن فتح الودود...

د دې حديث نه شوافعو استدلال كړې دې چه په ميتة البحر كښې صرف ضفدع حرام دې، لكه دا اختلاف مخكښې په كتاب الطهارة كښې تير شوې دې. والحديث أخرجه النسائي، قاله المنذرى.

[۳۸۷۲] (۳) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ حَسَا سُمًّا فَسَمَّهُ فِي يَدِهِ بِحَسَاةٍ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا".

د ابو هريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه نبى ﷺ د حرامي اونجسي دوا استعمال نه منع فرمائيلى ده.

قوله: (قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ حَسَا سُمًّا فَسَمَّهُ فِي يَدِهِ بِحَسَاةٍ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا)

(۱): سنن الترمذي/الطب ۷ (۲۰۴۵)، سنن ابن ماجه/الطب ۱۱ (۳۴۵۹)، (تحفة الأشراف: ۱۴۳۴۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۰۵/۲، ۴۷۸، ۴۴۶، ۴۷۸) (صحيح)

(۲): سنن النسائي/الصيد ۳۶ (۴۳۶۰)، (تحفة الأشراف: ۹۷۰۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۵۳۳/۳، ۴۹۹)، سنن الدارمي/الأضاحي ۲۶ (۲۰۴۱)، ويأتي هذا الحديث في الأدب (۵۲۶۹) (صحيح)

(۳): سنن الترمذي/الطب ۷ (۱۰۴۴)، (تحفة الأشراف: ۱۲۵۲۶)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/الطب ۵۶ (۵۷۷۸)، صحيح مسلم/الإيمان ۴۷ (۱۷۵)، سنن النسائي/الجنائز ۶۸ (۱۹۶۷)، سنن ابن ماجه/الطب ۱۱ (۳۴۶۰)، مسند احمد (۲۵۴/۲، ۴۷۸، ۴۸۸)، سنن الدارمي/الديات ۱۰ (۲۴۰۷) (صحيح)

## شرح الحديث :

يعنى كوم سرې چه په دنيا كښې د زهرو په خورلو سره مړ شو نو په آخرت كښې به د هغه سره دا معامله كيږي چه هغه زهر به د هغه په لاس كښې وي كوم چه به هغه هم هغه شان څكي په جهنم كښې هميشه هميشه دپاره، كه حديث په خلود په ظاهرياندي كيخودلې شي نو بيا خودا حديث په مستحل باندي محمول دي اويا خود خلودنه مراد مكث طويل دي.

او يو جواب هغه دي كوم چه امام ترمذي رحمه الله فرمائيلې دي : هغوى دا حديث په مختلفو طرقو سره ذكر كړې دي چه په هغې كښې بعض طرق داسې هم دي چه په هغې كښې د « خالدا مخلدا » لفظ نشته بلكه صرف دا دي « عذب في نار جهنم » امام ترمذي رحمه الله هم دي طريق ته ترجيح وركړې ده او فرمائي : « وهذا أصح لأن الروايات إنما تجيء بأن أهل التوحيد يعذبون في النار ثم يخرجون منها ولا يذكر أنهم يخلدون فيها الخ »

والحديث أخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجه أتم منه، قاله المنذرى....

[۳۸۷۳] (۱) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ يَمَّاك، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَاثِلٍ، عَنْ أَبِيهِ، ذَكَرَ طَارِقُ بْنُ سُوَيْدٍ أَوْ سُوَيْدُ بْنُ طَارِقٍ سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْخَمْرِ؟ فَتَنَاهَا، ثُمَّ سَأَلَهُ؟ فَتَنَاهَا، فَقَالَ لَهُ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ إِنَّمَا دَوَاءٌ، قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا وَلَكِنَّهَا دَاءٌ".

دابوهريره رحمه الله نه روایت دي فرمائي چه نبی ﷺ فرمائيلي دي: خوك چه زهر او څكي نودقيامت په ورځ به دغه زهر ورسره وي او دجهنم په اور كښې به ناست وي اودابه څكي او په دي كښې به هميشه وي.

قوله: «عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَاثِلٍ عَنْ أَبِيهِ ذَكَرَ طَارِقَ بْنَ سُوَيْدٍ أَوْ سُوَيْدَ بْنَ طَارِقٍ»

## شرح السند :

دا حديث علقمه د خپل پلار واثل بن حجر رحمه الله نه روایت كوي او واثل ئې د طارق به سويد صحابی نه، شعبه واثي چه زما استاد سماك د « عن ابيه » نه پس طارق بن سويد هم ذكر كړې دي. لهذا د دي حديث راوی طارق بن سويد شو. (فهذا رواية الصحابي عن الصحابي) چرته چه راوی ته د استاد الفاظ په ښه طريقه ياد نه وي نو هلته هم دغه شان تعبير كولې شي، دلته شعبه ته خودا ياد وو چه د واثل نه پس په سند كښې طارق دي خودا ورته ياد نه دي چه د هغوی نه روایت په صيغه د تحديث دي يا اخبار يا عنعنه... هم په دي وجه ئې دغه شان اووي، بله دا چه دلته يو راوی ته دا شك هم دي چه صحيح نوم طارق بن سويد دي يا ددي عكس سويد بن طارق، خو صحيح طارق بن سويد دي لكه چه د كتب الرجال نه معلومه ده. خو په كتبو د حديث كښې دا سند مختلف دي د ابن ماجه په سند كښې « عن علقمه بن واثل عن طارق بن سويد » دي. په مينځ كښې ئې د « عن ابيه » واسطه نشته، خو په مسلم او ترمذي كښې د ابوداؤد په شان د « عن ابيه » واسطه ذكر كړې شوې ده.

۱: سنن ابن ماجه/الطب ۲۷ (۳۵۰۰)، (تحفة الأشراف: ۴۹۸۰)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/الأشربة ۳ (۱۹۸۴)، سنن الترمذي/الطب ۸ (۲۰۴۶)، مسند احمد (۳۱۱/۴، ۲۹۳/۵)، سنن الدارمي/الأشربة ۶ (۲۱۴۰) (صحيح)



د حدیث مضمون دا دی چه سوید د رسول الله ﷺ نه د خمر د جوړولو په باره کښې اجازت طلب کړو، رسول الله ﷺ ترې نه منع کړو، هغوی بیا سوال اوکړو چه دا خو زه د دوايې دپاره جوړول غواړم، د مسلم په روایت کښې هم داسی دی.... (انما اصنعها للدواء) رسول الله ﷺ او فرمائیل هغه دوائی نه ده بلکه بیماری ده. بعض خلق شراب دوائی گنړی او ذریعه د شفاء.... رسول الله ﷺ د هغې نفی اوکړه، پس په یو روایت کښې دی (ان الله لم يجعل شفاء امتی فیما حرم علیها) والحدیث اخرجه ابن ماجه عن طارق بن سوید من غیر شک....

واخرجه مسلم والترمذی من حدیث وائل بن حجر، قاله المنذری.

### بَابُ فِي ثَمَرَةِ الْعَجْوَةِ

باب د عجوه کجورود فضیلت بیان

[۳۸۷۵] (۱) حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ سَعْدٍ، قَالَ: "مَرَضْتُ مَرَضًا أَتَانِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُوذُنِي قَوْضَعُ يَدَهُ بَيْنَ كَتِفَيْ حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَهَا عَلَى قَوَادِي، فَقَالَ: إِنَّكَ رَجُلٌ مَقْنُودٌ، أَنْتَ الْحَارِثُ بْنُ كَلْدَةَ أَخَا ثَقِيفٍ فَإِنَّهُ رَجُلٌ يَتَطَبَّبُ، فَلْيَأْخُذْ سَبْعَ ثَمَرَاتٍ مِنْ عَجْوَةِ الْمَدِينَةِ، فَلْيَجَاهُنْ بِنَوَاهُنْ، ثُمَّ لِيْلَكَ بِهِنَّ."

د سعد رضی الله عنه نه روایت دی فرمائی چه زه بیمار شوم اونبی ﷺ زما بیمار پرسئ و خپل دواړه مبارک لاسونه ئې زما په تشوکیخودل تردې چه دهغه د لاسونو یخوالې زما زړه ته ورسیدو اوبیا ئې او فرمائیل ته د زړه مریض ئې، ته د قبیله ثقیف والا حارث بن کلدۀ ته لار شه هغه ددې علاج کوي د مدینې د عجوه کجورونه دي اوه کجورې واخلي او هغه دي د زړو سره وتکوي او د دینه دي مالده جوړه کړي اوبیادي ستا په خوله کښې واچوي.

(عَنْ سَعْدٍ قَالَ مَرَضْتُ مَرَضًا أَتَانِي رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم الخ)

#### شرح الحديث :

سعد بن ابی وقاص رضی الله عنه فرمائی چه زه یو کړت بیمار شوم، رسول الله ﷺ زما د بیمار پرسئ دپاره تشریف راوړلو، هغوی خپل لاس مبارک زما په سینه باندې کیخودلو چه د هغې یخ والې ما په خپل زړه کښې محسوس کړو، رسول الله ﷺ او فرمائیل: (انک رجل مقنود) ستا په فواد یعنی زړه کښې تکلیف دی.... (انت الحارث بن کلدۀ أَخَا ثَقِيفٍ فَإِنَّهُ رَجُلٌ يَتَطَبَّبُ فَلْيَأْخُذْ سَبْعَ ثَمَرَاتٍ مِنْ عَجْوَةِ الْمَدِينَةِ فَلْيَجَاهُنْ بِنَوَاهُنْ ثُمَّ لِيْلَكَ بِهِنَّ) رسول الله ﷺ مشوره ورکړه حارث بن کلدۀ ثقفی ته د ورتلو، او وې فرمائیل چه هغه طبیب دی علاج کوی، بیا د رسول الله ﷺ په ذهن کښې خپله د هغې علاج راغلو او هغوی حضور ﷺ په خپله دوائی تجویز کړه چه حارث بن کلدۀ له پکار دی چه د مدینې منورې اووۀ عجوه کجورې واخلي اوبیا د هډوکو سره هغه میده کړی (۲) یعنی د هډوکو سره به ئې میده کړی اوبیا به ورسره

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۹۱۶) (ضعیف)

(۲): د حدیث لفظ (لجامن) دی چه د هغې معنی د میده کولو ده پس په بذل کښې دی..... له

اوبه یوځائی کړې چه نرمې شی نو پکار دی چه په خوله کښې ئې ورته اوڅسوی. ددې حدیث هم دا معنی په ډیرو شروحاتو کښې لیکلې ده چه عجوه کهجورې سره د هلوکو میده کړې، اوبه ورسره یوځائی کړې اوبه حلق کښې به ئې ورته اوڅسوی، د څکلو په ځای د لدود مشوره یا خو حضور ﷺ ځکه ورکړه چه د مریض حالت دڅکلو نه وو، د کمزورۍ یا بل څه په وجه، او یا داچه ددې دوائی د استعمال طریقه هم دغه ده.

[۳۸۷۶] (جَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ هَاشِمٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ تَصَبَّحَ سَبْعَ مَرَّاتٍ عَجْوَةً لَمْ يَضُرَّهُ ذَلِكَ الْيَوْمَ سَمٌ وَلَا سِحْرٌ".

ترجمه: د سعد بن ابی وقاص نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائیلى دى څوك چه هر سحر د مدينې اوه عجوه کهجورې خوري نودغه کس ته په دې ورځ باندې جادو اوزهر نقصان نشي رسولې.

قوله: (مَنْ تَصَبَّحَ سَبْعَ مَرَّاتٍ عَجْوَةً لَمْ يَضُرَّهُ ذَلِكَ الْيَوْمَ سَمٌ وَلَا سِحْرٌ)

کوم سړې چه سحر په نهره اووه دانې عجوه کهجورې اوخوری نو رسول الله ﷺ فرمائی چه دې سړى ته به په هغه ورځ زهر یا جادو نقصان او نه رسوی. یا خود عجوه د خاصیت د وجې نه، یا د رسول الله ﷺ د برکت د وجې نه، وقال الخطابي (ذلك ببركة دعائه لا بخاصيته في التمر) (بذل) والحديث أخرجه البخاري ومسلم والنسائي، قاله المنذرى.

## باب فى العلاق

باب د علاق یعنې د ژبې (جبین) متعلق بیان

عذره یو بیماری ده (په پښتو کښې ورته ژبې وائی خلق وائی په ماشوم ژبې راغلې ده) چه د وړو ماشومانو په تالو کښې درد پیدا شی، د دې حل ا و علاج به د هغې زمانې زنانو د علاق په ذریعه کولو، چه د هغې معنی د لاندې کولو ده چه گوته به ئې د ماشوم په خوله کښې داخله کړه او دا ځانې به ئې اوزورلو هغه په حلق کښې د غوښې یو تکره شان زورنده وى څه ته چه د تالو جبین وائی (عربى کښې ورته لهآة وائی) ممکنه ده چه دا تکلیف هم په هغې کښې وى، د دې زورلو نام علاق دې څه ته چه اعلاق او غمز او دغر سره هم تعبیر کولې شی، او دا ټول هر څه په معنی واحده دی، او د کومې بیماری چه دا علاج دې یعنې ورم د هغې نه په حدیث کښې په عذره سره تعبیر کړې شوې دې، په داسې کولو سره ماشوم

۴۶ ..... (ای برضهن) او په عون المعبود کښې دى: قال في النهاية فليجاهن اي فليدقهن.. او په كتاب النكاح کښې تیر شوى دى چه (فان الصوم له وجاء) د دې معنی رض الخصيتين ده دغه شان دلته هم مراد ده چه دا هلوکى دې میده کړې شی چه د هغې لدود (خته) تیا رکړې شی او په لاس باندې مړل نه دې مراد د دې دپاره بل لفظ راځي (مرس) لکه چه د نبیذ په بیان کښې تیر شوي دې. كُنْتَ أَخَذَ قُبْضَةً مِنْ ثَمَرٍ وَقُبْضَةٌ مِنْ زَيْبٍ قَالَتْ فِي إِثْنَاءِ فَأَمْرَتْهُ

(۱): صحيح البخاري/الأطعمة ۱۲ (۵۴۴۵)، الطب ۵۲ (۵۷۹۹)، صحيح مسلم/الأشربة ۲۷ (۲۴۰۶)، (تحفة الأشراف: ۳۸۹۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۸۱/۱) (صحيح)



ته تکلیف وی هغه ژاړی هم په دې وجه په حدیث کښې ددې علاج نه منع کړې شوي ده.

[۳۸۷۷] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، وَحَامِدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَا: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أُمِّ قَيْسٍ بِنْتِ مَحْصَنٍ، قَالَتْ: "دَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَبْنٍ لِي قَدْ أَعْلَقْتُ عَلَيْهِ مِنَ الْعُدْرَةِ، فَقَالَ: عَلَامَ تَذْغَرْنَ أَوْلَادَكُمْ بِهَذَا الْعِلَاقِ، عَلَيْكُمْ بِهَذَا الْعُودِ الْهِنْدِيِّ، فَإِنْ فِيهِ سَبْعَةٌ أَشْفِيَةٌ، مِنْهَا ذَاتُ الْجَنْبِ، يُسْعَطُ مِنَ الْعُدْرَةِ، وَيُلْدُ مِنْ ذَاتِ الْجَنْبِ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: يَعْنِي بِالْعُودِ الْقُسْطَ.

دام قيس بنت محصن نه روايت دې فرمائی چه ماخپل بچې دښې عليه السلام په خدمت کښې حاضر کړو او دهغه حلق مې په گوته دباو کړې وود غدره (دادماشومانويوه بيماري ده چه اکثر دگرمۍ په موسم کښې مرئ درد کوي او پرسيرې) په وجه باندي، نبی عليه السلام او فرمائيل ته په دې بيماري کښې دخپل ماشوم حلق ولې دباو کوي؟ بلکه ته دخپل ماشوم دپاره عود هندي پيدا کړه په دې کښې داره مرضونو دپاره شفاده او ذات الجنب (يومرض دې) هم ددې په وجه باندي ختميري، په غدره مرض کښې په پوزه کښې اچولې شي او په ذات الجنب مرض کښې به ددينه لدود (کپه) جوړ کړې شي او دخوراک په ذريعه دي استعمال کړې شي. امام ابوداود فرمائی دعود نه مراد قسط دې.

### تشریح الحديث:

سبحان الله! اوگورئ رسول الله عليه السلام د ماشومانو په حق کښې دهغوی دمياندو نه هم زيات شفيق ثابت شو... صلى الله عليه وسلم شرف وکرم..... او هغه زنانو ته ئې خطاب کولو سره اوفرمائيل ﴿ عَلَامَ تَذْغَرْنَ أَوْلَادَكُمْ بِهَذَا الْعِلَاقِ عَلَيْكُمْ بِهَذَا الْعُودِ الْهِنْدِيِّ ﴾ يعنى د خپل اولاد سره دا عمل يعنى دغراو علاق ولې کوئ، عود هندي لازم اونيستې کوم ته چه قسط هندي وائى، ځکه چه په دې کښې د اووه سوو بيمارو نه شفاء ده، خو طريقه د استعمال ئې بيله بيله ده، که غدره بيماري وي نو د هغې طريقه علاج او استعمال سعوط دې، او که ذات الجنب بيماري وي نو د هغې طريقه استعمال لدود دې. والحديث اخرجه البخارى ومسلم وابن ماجه، قاله المنذرى.

## باب فِي الْأَمْرِ بِالْكُحْلِ

درانجود استعمال بيان

[۳۸۷۸] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُثْمَانَ بْنِ حُثَيْمٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "الْبَسُوا مِنْ ثِيَابِكُمُ الْبَيَاضَ، فَإِنَّهَا مِنْ خَيْرِ ثِيَابِكُمْ، وَكَفِّنُوا فِيهَا مَوْتَكُمْ، وَإِنْ خَيْرَ أَكْعَالِكُمْ الرَّثْمُ يَجْلُو الْبَهْرَ، وَيَنْبِتُ الشَّعْرَ".

دعبدالله بن عباس رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه نبی کریم صلى الله عليه وسلم فرمائيلی دی تاسولره پکار دي چه سپين لباس استعمال کړئ ځکه چه دا ستاسوپه لباسونو کښې

(۱): صحيح البخاري/الطب ۲۱ (۵۷۱۳)، صحيح مسلم/السلام ۲۸ (۲۲۱۴)، سنن ابن ماجه/الطب ۱۷ (۳۴۶۲)، (تحفة الأشراف: ۱۸۳۴۳) (صحيح)

(۲): سنن الترمذي/الجنائز ۱۸ (۹۹۴)، سنن ابن ماجه/الجنائز ۱۲ (۱۴۷۲)، الطب ۲۵ (۳۴۹۷)، اللباس ۵ (۳۵۶۶)، (تحفة الأشراف: ۵۵۳۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۳۱/۱، ۲۴۷، ۲۷۴، ۳۲۸، ۳۵۵، ۳۶۳) (صحيح)

بهترین لباس دې او تاسوپه دې سپین لباس کښې خپل مړي هم دفن کوي، او ستاسو دپاره ائمد بهترین رانجه دې کوم چه دسترگو نظر تیزوي اود وروزو او بنړو ویخته رازرغونوي.

﴿إِنْ خَيْرٌ أَمْحَالِكُمْ الْإِئْمَدُ يَجْلُو الْبَصَرَ، وَيُنْبِتُ الشَّعْرَ﴾ غوره رانجه ائمد دی یعنی د اصفهان رانجه... (هم دا رانجه کوم چه زمونږ په علاقه کښې ملاویږي) کوم چه سترگې پاکوي او بانړه غټوي. والحديث أخرجه الترمذی وابن ماجه مختصر الیس فيه ذکر الکحل، قاله المنذری.

## باب مَا جَاءَ فِي الْعَيْنِ

باب: دبد نظر بیان

[۳۸۷۹] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ: هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "الْعَيْنُ حَقٌّ".

د ابو هريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه و سلم فرمائیلى دی بدنظر لگیدل حق دي.

شرح الحديث:

﴿العین حق﴾ یعنی د نظر لگیدل حق دی، او دا خلقو کښې مشهوره ده، دا حق خبره ده غلطه نه ده، امام نووی رحمته الله علیه فرمائی چه یو جماعت د عین انکار کړې دي او د دې نه چه د هغې هیڅ اثر نشته او په هغې سره هیڅ نه کیږي. خو دا قول فاسد دي ځکه چه اول خو عقلا دا خبره ممکن ده، دویم په دې وجه چه مخبر صادق رضي الله عنه د دې د وقوع خبر ورکړې دي چه د هغې تکذیب جائز نه دي، وړاندې لیکي چه د عین دوه قسمونه دي عین انسی او عین جنی یعنی انسانی او جناتی..... لکه چه د سهل رضي الله عنه په حدیث کښې به راشی بله دا چه څنگه نظر په کتلو سره لگي او نقصان رسوي هم دغه شان بغیر د کتلو نه په وصف یعنی حال اوریدلو سره هم لگیږي، ﴿قال الله تعالى وان کادوا لیزلقونک بابصارهم لما سمعوا الذکر﴾ یعنی من غیر رویت..... اوس پاتې شوه ده چه نظر څنگه لگیږي د دې په باره کښې بعض علماء کرامو وئیلې دي چه د عاین د سترگو نه یو قوت سمیه او چتیرې چه د معین سره لگي چه په هغې سره هغه ته نقصان رسیږي لکه چه بعض قسم ماران وی چه د هغې خاصیت په حدیث کښې راځي ﴿یلتمسان البصر ویسقطان الحبل﴾ او مسلک د اهل سنت دا دي چه دا تاثیر ضرور د سترگو دپاره ذاتی نه دي بلکه جریا علی العادة دي یعنی د الله پاک عادت هم دغه شان جاری دي چه هغه دا د تقابل په وخت ضرور پیدا کوي، یعنی اصل خو په دې کښې دا دي یعنی د عادة الله جاری کیدل، او هغه د بعضو نه نقل دي چه د عاین د سترگو نه د قوت سمیه او چتیدل او د معین سره د هغې لگیدل دا هم امر ممکن دي. (بذل عن ابن رسلان) یو وجه د دې دا هم په فهم کښې راځي چه عاین د معین څه خوبئ لره د هغه کمال ذاتی او گنډې په ځانې د صحیح تصور کولو ځکه چه بعض وخت د هغې هغه وصف سلب کړې شی هم دا وجه ده چه د ماشاء الله وئیلو په صورت کښې ضرر نه وی. والله اعلم

(۱) صحیح البخاري/الطب ۳۶ (۵۷۴۰)، صحیح مسلم/السلام ۱۶ (۲۱۸۷)، (تحفة الأشراف: ۱۴۶۹۶)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه/الطب ۳۲ (۳۵۰۶)، مسند احمد (۳۱۹/۲) (صحیح متواتر)



[۳۸۸۰] حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الْأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: "كَانَ يُؤْمَرُ الْعَائِنُ فَيَتَوَضَّأُ ثُمَّ يَغْتَسِلُ مِنْهُ الْمَعِينُ".

د ام المومنین عائشة رضی اللہ عنہا نه روایت دې فرمائی چه د نبی ﷺ په زمانه کښې به داسې کسانوته حکم کولې شو د چاچه نظر لگي چه اودس او کړي بياچه به په چاباندې ددې نظر لگيدلې وي هغه دي په دې اوبو باندې غسل او کړي.

### د بد نظر علاج :

په حديث کښې د بد نظر د اثر زائله کولو طريقه هم ښودلې شوې ده پس د ابن ماجه په بل حديث کښې دى: « كان يومر العائن فيتوضاء ثم يغتسل من المعين » د چاچه پرې نظر لگى هغه ته عاين او په چاچه لگى هغه ته معين وائى، او په يو روایت کښې دى (كما مر فى الترمذى ومسلم) « واذا استغسلتم فاغسلوا » يعنى چه کله د عاين چه د چاچه نظر لگيدلې دې غساله طلب کړې شى يا غسل طلب کړې شى نو هغه دې دا کار او کړي. عائشه صديقۀ ﷺ فرمائی چه عاين ته به وئيلې شو چه اودس او کړه (او دا ماء مستعمل په يو لوبښى کښې جمع کړه)، بيا به د دې اودس په اوبو باندې يعنى په غساله سره به معين غسل کولو. يعنى په داسې کولو باندې به بد نظر ختم شو. په بذل کښې د غسل يو خاص طريقه نقل کړې ده د يوې واقعې نه کومه چه په مسند احمد کښې ده د سهل بن حنيف ﷺ د سفر يوه قصه... چه هغوى چرته غسل او کړو او هغوى ډير زيات حسن والا او ښکلې وو يو سړى چه د هغه نوم عامر بن ربيعه وو د هغوى نظر په هغوى باندې دې وخت کښې پريوتلو « فقال ما رايت كاليوم ولا جلد مخابة » الحديث.....

پوره قصه په بذل کښې ذکر ده، هغوى په عامر بن ربيعه باندې ناراض شو او دا ئې اوفرمائيل چه د هغې حاصل دا دې چه سړى له پکار دى چه کله داسې يو خيز اووينى کوم چه د هغه خوښ شى نو هغه له پکار دى چه دا دعا اولولى « اللهم بارك عليه » او هم دغه شان « ماشاء الله لا قوة الا بالله » نو بيا به انشاء الله د نظر نقصان نه وى او په دې مفصل روايت کښې د اودس د اندامونو سره سره د لنګ د وينځلو ذکر هم شته چه د هغې نه مراد وئيلې شوې دې چه شرمګاه ده او وئيلې شوې دى چه د لنګ هغه متصل حصه چه په بدن پورې متصل وى. (۱)

حديث ابى هريرة ؓ اخرجه البخارى ومسلم من حديث عبد الله بن عباس ؓ عن النبى ﷺ اتم منه، قاله المنذرى...

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۹۶۵) (صحيح الإسناد)

(۲): (پورته قصه په مشکوة کښې د شرح السنة په حوالې سره ذکر شوې ده) « وفيه فغسل عامر وجهه ويديه ومرفقيه وركبتيه واطراف رجله وداخله ازاره في قدح ثم صب عليه الخ » (التعليق الصحيح ۴۱/۵) « اختلفوا في داخله الازار فلذهب بعضهم الي المذاكير وبعضهم الي الافخاذ، وقال ابو عبيد اراد به ازاره الذي يلي جسده مما يلي الجانب الايمن فهو الذي ليغسل اده مختصرا... او په مظاهر حق کښې دى او په اعضاء د ازار کښې دننه يعنى د پندوى ستر او کوناتې اده.

## باب فِي الْغِيلِ

باب: دتی ورکونکې بشخې سره د جماع نه کولو بیان

چه هغې ته غيله هم وائی د دې تفسیر وړاندې راځی ﴿ قَالَ مَالِكُ الْغِيلَةُ أَنْ يَمَسَّ الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ وَهِيَ تَرْضَعُ ﴾ یعنی د هغه زنانه سره صحبت کول په کومې پورې چه پئی خورونکې بچي وی، ځکه چه د وطی نه پس که هغه زنانه حامله شوه نو په حمل سره به پئی فاسد شی نو که هم هغه پئی دا زنانه په دې ماشوم باندې ځکی نو دا به د هغه په حق کښې ضرر وی او که نه ئې پرې ځکی نو بیا به اورې وی.

[۳۸۸۱] حَدَّثَنَا الرَّبِيعُ بْنُ نَافِعٍ أَبُو تَوْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَهَاجِرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيدَ بْنِ السَّكَنِ، قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: «لَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ سِرًّا فَإِنَّ الْغِيلَ يُدْرِكُ الْفَارِسَ فَيَذَعُ غَيْرَهُ عَنْ قَرَسِهِ».

د اسماء بنت یزید بن السکن رضی اللہ عنہا نه روایت دې فرمائی چه در رسول پاک صلی اللہ علیہ وسلم نه مې اوریدلی دی چه فرمائیل ئې خپل اولاد په پټه مه وژني ځکه چه جماع کول د رضاع په موده کښې شهبسوار داس نه راغورځوي (یعنی په دې سره ماشوم کمزوري کیږي).  
﴿ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيدَ بْنِ السَّكَنِ قَالَتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَقُولُ « لَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ سِرًّا فَإِنَّ الْغِيلَ يُدْرِكُ الْفَارِسَ فَيَذَعُ غَيْرَهُ عَنْ قَرَسِهِ » ﴾

دا د اسماء بنت یزید رضی اللہ عنہا حدیث دې چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چه خپل اولاد مه هلاکوی د فعل مخفی په ذریعه، د دې نه مراد هم غیل دې، پس وړاندې فرمائی چه غیل داسې ضرری څیز دې چه هغه په اس باندې سور انسان د خپل اس نه راغورځوی. یعنی په ماشوم کښې دننه د غیل اثر د هغه د غتیدو نه پس هم موندلې شی، د هغې په اثر سره ناڅاپه څه خاص کمزوری پیدا شی چه د هغې په وجه باندې هغه ناڅاپه د سورلی نه راپریوځی. لکه چه د مرگی مریض چه ناڅاپه بیهوشه کیدو سره راپریوځی.

د دې نه پس چه کوم حدیث راروان دې هغه حدیث د جدامه رضی اللہ عنہا دې ﴿ عَنْ جَدَامَةَ الْأَسَدِيَّةِ أَنَّهَا سَمِعَتْ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَقُولُ « لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ أَنْهِيَ عَنِ الْغِيلَةِ حَتَّى ذُكِرْتُ أَنَّ الرُّومَ وَفَارِسَ يَفْعَلُونَ ذَلِكَ فَلَا يَضُرُّ أَوْلَادَهُمْ » ﴾ د دې مضمون د هغه حدیث اسماء خلاف دې.

[۳۸۸۲] حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ تَوْقَلٍ، أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، عَنْ جَدَامَةَ الْأَسَدِيَّةِ، أَنَّهَا سَمِعَتْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: «لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ أَنْهِيَ عَنِ الْغِيلَةِ حَتَّى ذُكِرْتُ أَنَّ الرُّومَ، وَفَارِسَ يَفْعَلُونَ ذَلِكَ فَلَا يَضُرُّ أَوْلَادَهُمْ»، قَالَ مَالِكُ: الْغِيلَةُ أَنْ يَمَسَّ الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ وَهِيَ تَرْضَعُ.

۱: سنن ابن ماجه/النكاح ۶۱ (۲۰۱۲)، (تحفة الأشراف: ۱۵۷۷)، وقد أخرجه: مسند احمد ۴/۵۵۳، ۵۵۷، ۵۵۸ (حسن)

(تراجع الألباني ۳۹۷، وصحيح ابن ماجه: ۱۶۴۸)

۲: صحيح مسلم/النكاح ۲۴ (۱۴۴۲)، سنن الترمذي/الطب ۲۷ (۲۰۷۶)، سنن النسائي/النكاح ۵۴ (۳۳۲۸)، سنن ابن

ماجه/النكاح ۶ (۲۰۱۱)، (تحفة الأشراف: ۱۵۷۸۶)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/الرضاع ۳ (۱۶)، مسند احمد ۶/۳۱۱،

۴۳۴، سنن الدارمي/النكاح ۳۳ (۲۲۶۳) (صحيح)



د جدامه اسديه عليه السلام نه روايت دې فرمائی چه د نبی عليه السلام نه ئې اوریدلی دی چه فرمائیل ئې زما دا اراده وه چه زه خلق دغلیه نه منع کړم خوبیاراته رایادشول چه دروم اودفارس خلق داسې داسې کوي اوددوی اولاد ته څه نقصان نه رسیږي. امام ابوداؤد فرمائی چه دغلیه معنی درضاع (تي ورکولو په موده کښي جماع کولو ته وئیل شي).

ځکه چه د دې مضمون دا دې رسول الله عليه السلام فرمائی چه ما اراده کړې وه د غیل د ممانعت خو بیا زما په ذهن کښې دا راغلل چه اهل روم او اهل فارس خو داسې کوی او د هغوی اولاد ته هېڅ ضرر نه رسیږي. (په دې وجه مې د نهی اراده ملتوی کړه).

### په حدیث د اسماء او حدیث د جدامه کښې تعارض او د هغې توجیه

دلته دوه احادیث دی یو حدیث د اسماء او بل حدیث د جدامه، په دې دواړو کښې په دوه حیثیتونو سره اختلاف او تعارض دي، اول دا چه حدیث د اسماء نه معلومیږي د غیل مضر کیدل د اولاد دپاره، او د حدیث د جدامه نه معلومیږي د هغې غیر مضر کیدل، دویم په دې حیثیت سره چه په حدیث د اسماء کښې نهی عن الغیل موجود ده، او د حدیث جدامه نه د نهی منتفی کیدل معلومیږي. (یعنی دا چه رسول الله عليه السلام د منع صرف اراده فرمائیلي وه چه هغې ته ضرورت رانغلو) او په دواړو کښې تطبیق داسې کړې شوې دي چه حدیث د جدامه مقدم دي، هغه د شروع زمانی دي چه په هغې کښې رسول الله عليه السلام عرب مخې ته راوستلو کښې دا سوچ او کړو چه غیل مضر دي، بیا چه کله هغوی په روم او فارس باندې نظر واچولو نو هغوی دا اندازه اولگوله چه مضر نه دي بیا روستو د الله پاک د طرف نه هغوی خبر کړې شو چه داسې نه ده بلکه دا مضر دي خو په بعض وختونو کښې په اعتبار د مزاجونو او طبیعتونو..... په دې وجه رسول الله عليه السلام روستو د دې نه منع اوفرمائیله تنزیها... د دې تقریر په وجه باندې د دې دواړو احادیثو ترمینځه تطبیق پیدا کیږي. (بذل عن ابن رسلان) حدیث اسماء اخرجه ابن ماجه، وحدیث جدامه اخرجه مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه قاله المنذرى.

### باب فی تعلیق التّائیم

#### باب په غاړه کښې د تعویذ اچولویان

[۳۸۸۳] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَرْثَدَةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ الْحَزَّارِ، عَنْ ابْنِ أَخِي زَيْنَبَ امْرَأَةِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ زَيْنَبَ امْرَأَةِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "إِنَّ الرُّقَى وَالتَّأْيِمَ وَالتَّوَلَةَ يَبْرُكُ"، قَالَتْ: قُلْتُ: لِمَ تَقُولُ هَذَا، وَاللَّهِ لَقَدْ كَانَتْ عَيْنِي تَقْدِفُ، وَكُنْتُ أَخْتَلِفُ إِلَى فُلَانِ الْيَهُودِيِّ يَرْقِيَنِي، فَإِذَا رَقَانِي سَكَنْتُ، فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ: إِنَّمَا ذَلِكَ عَمَلُ الشَّيْطَانِ كَانَ يَنْفُسُهَا بِيَدِهِ فَإِذَا رَقَاهَا كَفَّ عَنْهَا إِنَّمَا كَانَ يَكْفِيكَ أَنْ تَقُولِي كَمَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: أَذْهَبَ الْبَاسُ رَبَّ النَّاسِ، أَشْفَى أَنتَ الشَّافِي، لَا شِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ، شِفَاءٌ لَا يَغَادِرُ سَقَمًا".

(۱) سنن ابن ماجه للطب ۳۹ (۳۵۳۰)، (تحفة الأشراف: ۹۶۴۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۸۱/۱) (ضعيف) (الصحيحه:

۲۹۷۲، وتراجع الألباني: ۱۴۲)

د عبداللہ بن مسعود نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ نه مې اوریدلی دی چه فرمائیل ئې (غیر شرعي) دمونه اچول، اوتعويز زورندول اوپه تار کښې غوتې اچول (بند) جوړول «داسې اکثر په جادو کښې کيږي، شرک دې زينب وائی ما او وئیل ته داسې ولي وائی په الله مې دې قسم وي ډير درد په وجه زماسترگي وتلې اوزه به فلانی يهودي ته د دم دپاره تلمه کله چه به هغه په ما باندې دم واچولو نودرد به ختم شو عبداللہ له ورته او وئیل دا خود شيطان کار رو شيطان به پخپل لاس باندې ستاسترگه ښوگوله نوچه کله به تادم کړه نوده به بيانه ښوگوله اوستاد ئې لاري کولو دپاره دا کافي وه لکه څنگه چه به نبی ﷺ فرمائیل : اي دانسانانو پروردگار مرضونه ختم کړي اوشفانازل کړي اوصرف ته شفا ورکونکې پي ته داسې شفا را کړي چه هيڅ مرض باقی پاتې نشي.

تمائم د تمیمة جمع ده کما قيل ﴿واذا المنية انشبت اظفارها :: الفيت كل تمیمة لا تنفع﴾

### شرح الحديث :

قوله: ﴿عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَقُولُ «إِنَّ الرُّقَى وَالْتَّمَائِمَ وَالْتَّوَلَةَ شِرْكَ»﴾ رقی د رقیة جمع ده... په فیض الباری کښې لیکلې دی او د هغه ځانې نه په الابواب والتراجم کښې نقل کړې شوې دی چه کومه رقیه د شریعت مطابق وی د هغې په باره کښې وئیلې شی دم کول او کوم چه د شریعت خلاف وی هغې ته وئیلې شی منتر کول او تمیمة هغه د کاغذ ټکړې ته وائی چه په هغې باندې څه لیکلې شوې وی او په مرئ کښې اچولې شی څه ته چه زمونږ خلق تعویذ وائی... او توله دا یو خاص قسم سحر یا منتر دې په زوجینو کښې د محبت پیدا کولو دپاره، عمل الحب، په حدیث کښې دې ټولو ته شرک وئیلې شوې دې، یعنی د مشرکانو افعال دی، ځکه چه د هغوی په معاشره کښې ددې څیزونو ډیر زور وو، یا دا دې په حقیقت باندې محمول کړې شی کله چه په دې څیزونو کښې د تاثیر اعتقاد اولرلې شی، او یو قول دا دې چه د شرک نه مراد شرک خفی دې او ترک توکل.....

وراندې په روایت کښې دی چه د حدیث راویه د عبداللہ بن مسعود رضی الله عنه زوجة محترمه زينب رضی الله عنها چا چه دا حدیث د هغوی نه روایت کړې دې هغه فرمائی چه کله هغوی ماته دا حدیث واورولونو ما هغوی ته اووې چه تاسو دا خبره ولې کوئ یعنی دې څیزونو ته ناجائز او شرک ولې وایئ، قسم په الله یو کرت زما سترگه خوږیدله چه د هغې نه به اوبه تللې د تکلیف د وجې نه نوزه به فلانی يهودي ته تلم چا چه به دا سترگه دموله چه کله به زه هغه دم کړم نو سترگو کښې به مې سکون پیدا شو په دې باندې عبداللہ بن مسعود رضی الله عنه وفرمائیل دا ټول د شيطان حرکت وو. شيطان به ستا په سترگو کښې خپلې گوتې وهلې، بیا چه به کله هغه يهودي ته دم کړې نو «شيطان به ستا د عقیدې د خرابولو دپاره» خپلې گوتې اودرولې او بیا هغوی اوفرمائیل چه که ته په دې دعاء باندې دم اچوې نو کافی به شی کومه چه د رسول الله ﷺ نه نقل ده :

﴿اذهب الباس رب الناس، اشف انت الشافي لا شفاء الى شفاؤک لا يغادر سقما﴾



### د رقی او تمائم سره متعلق د روایاتو تجزیه او د هغې تشریح

مصنف رحمۃ اللہ علیہ یو باب د تمائم او دوه بابونه د رقی قائم کړي دي، دا باب خو د تمائم په باره کښې دې د کوم په حدیث کښې چه تمائم او رقی دواړه ذکر شوي دي، د دې نه روستو باب راروان دې **(باب ما جاء فی الرقی)** او د هغې نه پس بیا یو بل باب راروان دې **(باب کیف الرقی)** په رومبی باب کښې مصنف رحمۃ اللہ علیہ دواړه قسم روایات ذکر او فرمائیل د منع هم او د جواز هم، منع خو پورته ذکر شوه او د باب په دویم حدیث کښې دی: **(عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ كُنَّا نَرْقِي فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ تَرَى فِي ذَلِكَ فَقَالَ «اغْرَضُوا عَلَيَّ رِقَائَكُمْ لَا بَأْسَ بِالرَّقِيِّ مَا لَمْ تَكُنْ شِرْكًا»)**

یعنی عوف بن مالک اشجعی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چه مونږ خلقو به د جاهلیت په زمانه کښې په کثرت سره منتري لوستلې نو په اسلام کښې د داخلیدو نه پس مونږ رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته عرض او کړو چه تاسو د دې منترو (دمونو) په باره کښې څه فتوی راکوئ... (یعنی د جواز او که د عدم جواز؟) نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چه خپل دموڼه په ما باندې پیش کړئ، یعنی پس د کتلو نه به فیصله کولې شی چه کوم جائز دې او کوم ناجائز، او هم هغه وخت رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د قاعدې په طور دا خبره ارشاد او فرمائیله چه په دموڼو کښې هیڅ باک نشته چه په هغې کښې د شرک څه خبره نه وی، د دې حدیث نه معلومیږي، او علماء کرامو هم لیکلې دي چه دموڼه په دوه قسمه دي، د جاهلیت دموڼه او اسلامي دموڼه، اول قسم ممنوع دې او دویم قسم جائز، په کومو دموڼو کښې چه استعانت د شیاطینو په نومونو وغیره یا د څاروو نوکونه او هډوکی وغیره اچولې شی د تاثیر په عقیده باندې د هغې شرک کیدل ښکاره دی. هم د داسې دموڼو په حدیث کښې بدی او ممانعت راغلي دي او په کومو دموڼو کښې چه استعانت بالاسماء الحسنی او آیات قرانیه وغیره وی هغه اسلامي دموڼه دي د هغې خو په حدیث کښې ترغیب راغلي دي، هم دغه شان عم خارجه او د ابوسعید خدری رحمۃ اللہ علیہ په احادیثو کښې د رقیه تقسیم حق او باطل ته په صراحت سره شوي دي... **(فلعمری لمن اکل بظفیه باطل لقد اكلت برقیة حق)** پس دویم باب کوم چه مصنف رحمۃ اللہ علیہ قائم کړې دې **(باب کیف الرقی)** د هغې مقصد هم د دې چه هر کله د تیر باب نه دا خبره معلومه شوه چه دموڼه په دوه قسمه وی ممنوع او غیر ممنوع، جائز او ناجائز نو بیا هغه رقی چه کومه جائز ده اختیارول پکار دی هغه څه دی، په دې دویم باب کښې هم د هغې بیان دې چه په هغې کښې مصنف رحمۃ اللہ علیہ د دې سلسلې اذکار مسنونو او ادعیه ماثوره بیان فرمائیلې دي.

### د تعلیق تمائم حیثیت :

هم دغه شان اسماء حسنی او ادعیه ماثوره او هم دغه شان د قرآن کریم آیاتونه چه ماده ده د اسلامي دموڼو، په دې کښې هم اصل ذکر او قرأت دې یعنی په ژبي سره وئیل، ادا کول، زورپندول نه، یعنی لیکلو سره په غاړه کښې اچول، قاضی عیاض رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چه تعلیق سنت نه دې، اصل خیز ذکر او قرأت دې. مگر دا چه یو سړې په لوستلو باندې قادر نه وی

یا ماشومان نو د هغوی په حق کښې تعلیق هم ثابت دې پس په (باب کیفی الرقی) کښې په دریم حدیث کښې دی چه د عبدالله بن عمرو بن العاص رضی الله عنه نه روایت دې (أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - كَانَ يُعَلِّمُهُمْ مِنَ الْفَرْعِ كَلِمَاتٍ «أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهِ وَشَرِّ عِبَادِهِ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَخْضُرُونَ» . وَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو يُعَلِّمُهُنَّ مَنْ عَقَلَ مِنْ بَنِيهِ وَمَنْ لَمْ يَغِقْلَ كَتَبَهُ فَأَغْلَقَهُ عَلَيْهِ) یعنی رسول الله صلی الله علیه و آله به د ویری نه د بچ کیدلو دپاره دا دعا تعلیم فرمائیلله کومه چه پورته ذکر شوه په دې باره کښې به دې صحابی عبدالله بن عمرو بن العاص رضی الله عنه داسې کول چه خپلو مشرانو بچو ته خو به ئې دا دعا یادوله او کوم چه به واره وو د هغوی په غاړه کښې به ئې اچوله... په دې سلسله کښې زمونږ مشائخ او اکابر هم دا فرمائی چه اصل کښې خو دا دعا گانې دی کومې چه په قرآن او حدیث کښې راغلې دی، د هغې لوستل اصل دې، د تعویذ وغیره د هغې محکمې هیڅ حیثیت نشته خو د ضرورت د وجې نه لهذا د دې اذکار او ادعیه ماثوره د لوستلو اهتمام کول پکار دی، رسول الله صلی الله علیه و آله د هر مصیبت نه د بچ کیدلو دپاره، او د هرې موقعې او محل په اعتبار سره مناسب دعاگانې تعلیم فرمائیلې دی چه د هغې په اهتمام کولو کښې د انسان خپله فائده ده.

د مولانا تهانوی رحمته الله علیه په ملفوظات کښې دی د تعویذاتو په باره کښې چه کله څوک طلب او کړی نو زه خو ئې اولیکم خو داسې معلومیږی چه لیکل کوم او قلم رانه روستو روستو کیږی، دا ده د ایمان او اعتقاد د مضبوطوالی انتهاء خو د اعتدال سره... یعنی لیکي ئې هم په نه لیکلو باندې اصرار هم نه کوی خو دتنه ئې زړه نه منی، اصل څیز دا دې چه اتباع سنت په اعتدال سره وی، تشدد د سنت طریقه نه ده لکه چه بعض خلق په دې تعویذاتو باندې مطلق د کفر او شرک حکم لگوی... والله المستعان...

والحدیث اخرجه ابن ماجه عن ابن اخت زينب عنها، قاله المنذرى.

[۳۸۸۴] (حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دَاوُدَ، عَنْ مَالِكِ بْنِ مِقْوَلٍ، عَنْ حُصَيْنٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «لَا رُقِيَّةَ إِلَّا مِنْ عَيْنٍ أَوْ حُمَةٍ» .

د عمران بن حصین نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی دم اچول نشته مگر دنظر لگیدو په وجه او یا دزهریله څیز د چيچلو په وجه.

قوله: (عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ «لَا رُقِيَّةَ إِلَّا مِنْ عَيْنٍ أَوْ حُمَةٍ» ) یعنی دم نه شی اچولې مگر د بد نظر نه یا د یو زهریله ځناور د چيچلو د وجې نه، مطلب دا دې چه په دې څیزونو کښې ډیر موثر په ځانې د علاج او دوايې دم اچول دی والحدیث اخرجه الترمذی، قاله المنذرى.

۱: سنن الترمذی/الطب ۱۵ (۲۰۵۷)، (تحفة الأشراف: ۱۰۸۳۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۳۷۴، ۴۳۸، ۴۴۶)، صحيح البخاري/الطب ۱۷ (۵۷۰۵)، موقوفاً (صحيح)



## باب مَا جَاءَ فِي الرَّقِيّ

### باب ددم چف کولو بیان

[۳۸۸۵] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، وَابْنُ السَّرْحِ، قَالَ أَحْمَدُ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، وَقَالَ ابْنُ السَّرْحِ: أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى، عَنْ يُونُسَ بْنِ مُحَمَّدٍ، وَقَالَ ابْنُ صَالِحٍ، مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ بْنِ ثَابِتِ بْنِ قَيْسِ بْنِ شَمَّاسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى ثَابِتِ بْنِ قَيْسٍ، قَالَ أَحْمَدُ: وَهُوَ مَرِيضٌ، فَقَالَ: اكْشِفِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ، عَنْ ثَابِتِ بْنِ قَيْسٍ ثُمَّ أَخَذَ ثَرَاتًا مِنْ بَطْحَانَ فَجَعَلَهُ فِي قَدَحٍ، ثُمَّ نَفَثَ عَلَيْهِ بِمَاءٍ وَصَبَّهَ عَلَيْهِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَالَ ابْنُ السَّرْحِ يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ: وَهُوَ الصَّوَابُ.

يوسف بن محمد دخپل پلار نه او هغه دده دنيکه نه روايت کوي فرمائي چه نبی کریم ﷺ د ثابت بن قيس خواته تشریف یورو، امام احمد وئيلي دی کله چه هغه مريض وو، نبی ﷺ او فرمايل: اي دتولو انسانانو پرورش کونکيه دامرض د ثابت بن قيس نه لرې کړي، اوبيائي دبطحان مقام نه خاوره راواخستله په يولونبي کښې ئې واچوله اوبيائي پري اوبه وربو کړلي اوبيائي هغه اوبه په ثابت بن قيس باندې وشيندلي امام ابوداؤد فرمائي چه ابن سرح يوسف بن محمد وئيلي دی او همدا صحيح قول دې.

قوله: ﴿عَنْ رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى ثَابِتِ بْنِ قَيْسِ الْخ﴾

يعنى رسول الله ﷺ ثابت بن قيس ﷺ ته تشریف یورو چه کله هغه مريض وو نو رسول الله ﷺ دا دعا او فرمايله ﴿اكْشِفِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ عَنْ ثَابِتِ بْنِ قَيْسِ بْنِ شَمَّاسٍ﴾ د دې نه پس په دې حديث کښې دی چه رسول الله ﷺ د بطحان د ميدان نه لږه شان خاوره واخستله چه هغه ئې په يو پيال کښې واچوله، او بيا رسول الله ﷺ په هغه خاوره کښې اوبه اچولو سره څه دم واچولو (۲) او د دې نه پس ئې دا اوبه او خاوره په مريض باندې چرکاؤ کړه. والحديث اخرجه النسائي مسندا ومرسلا، قاله المنذرى.

د دې نه پس هم هغه د عوف بن مالک الشجعي ﷺ حديث دې ﴿اعرضوا على رقاكم﴾ د کوم حواله چه مخکښي تيره شوه ده. اخرجه مسلم قاله المنذرى.

[۳۸۸۶] (۳) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي مُعَاوِيَةُ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: كُنَّا نَرُقِي فِي الْجَاهِلِيَّةِ، فَقُلْنَا: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، كَيْفَ تَرَى فِي ذَلِكَ؟" فَقَالَ: اَعْرِضُوا عَلَى رِقَاكُمْ لَا بَأْسَ بِالرَّقِيِّ مَا لَمْ تَكُنْ شِرْكَاءَ.

د عوف بن مالک ﷺ نه روايت دې فرمائي چه مونږ به د جاهليت په زمانه کښې دمونه اچول مونږ او وئيل اي دالله رسوله ددې په باره کښې ستاڅه خيال دې نبی ﷺ او فرمايل خپل دمونه ماته پيش کړي په دم اچولو کښې څه باک نشته ترڅو چه شرک په کښې نه وي.

(۱): سنن النسائي / اليوم والليلة، (۱۰۱۷، ۱۰۴۰) (تحفة الأشراف: ۲۰۶۶) (ضعيف الإسناد)

(۲): وفي هامش البذل: اختلفوا في جواز النفث كما في العيني ۱۵۸۲ والفتح ۱۶۳/۱۰

(۳): صحيح مسلم / السلام ۲۲ (۲۲۰۰)، (تحفة الأشراف: ۱۰۹۰۳) (صحيح)

[۳۸۸۷] (۱) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مَهْدِيٍّ الْبُصَيْصِيُّ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ بْنِ سَلَمَانَ بْنِ أَبِي حَتْمَةَ عَنِ الشَّافِعِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَتْ: "دَخَلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا عِنْدَ حَفْصَةَ، فَقَالَ لِي: «أَلَا تُعَلِّمِينَ هَذِهِ رُقِيَّةَ النَّمْلَةِ كَمَا عَلَّمْتِيهَا الْكِتَابَةَ»."

د شفاء بنت عبد الله رضی اللہ عنہا نه روایت دې فرمائی چه زماخواته نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم راغې اوزه د حفصه رضی اللہ عنہا سره وم نبی صلی اللہ علیہ وسلم ماته اوفرمائیل تا دنمله بیماری علاج حفصی ته ولی نه دې ښودلې لکه څنگه چه تاورته لیکل ښودلې دي.

قوله: «عَنِ الشَّافِعِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَتْ دَخَلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- وَأَنَا عِنْدَ حَفْصَةَ فَقَالَ لِي «أَلَا تُعَلِّمِينَ هَذِهِ رُقِيَّةَ النَّمْلَةِ كَمَا عَلَّمْتِيهَا الْكِتَابَةَ»»

شفاء بنت عبد الله رضی اللہ عنہا فرمائی د چا نوم چه لیلې لیکلې شوې دې، هغه فرمائی چه یوه ورځ زه د حفصه رضی اللہ عنہا سره اوم چه د بهر نه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم تشریف راوړلو، رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ماته اوفرمائیل چه دې ته یعنی حفصه رضی اللہ عنہا ته رقیة النملة ولی نه ور زده کوي. څنگه چه تا دیته لیکل اوښودل.

نمله یو بیماری ده چه د سړی په اړخونو کښې نرئ نرئ داني وی، د دې په هغه زمانه کښې خاص علاج په دم کولو سره وو چه هغې ته به ئې رقیة النملة وئیلو. د هغې الفاظ ئې په بذل کښې دا لیکلې دي «العروس تحتفل وتختضب وتکتحل وكل شی تفتعل غیر ان لا تعصى الرجل»

### د زنانه دپاره لیکل زده کول څنگه دي؟

ددې حدیث نه معلومیږي چه زنانو ته کتابت ښودل جائز دی او دا حدیث د «لا تعلمونهن الكتابة» په هغه صورت کښې دې چه کله په تعلیم د کتابت کښې د څه فساد ویره وی (بذل) او په حاشیه د بذل کښې دی چه په فتاوی حدیثیه کښې ابن حجر هیثمی رحمته اللہ علیہ په دې مسئله باندې تفصیل سره کلام کړې یعنی تعلیم الكتابة للنساء او ترجیح هغوی عدم اولویت ورکړې ده.

[۳۸۸۸] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ حَكِيمٍ، حَدَّثَنِي جَدَّتِي، قَالَتْ: سَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ حَنْفِيٍّ، يَقُولُ: مَرَرْنَا بِسَيْلٍ فَدَخَلْتُ فَأَغْتَسَلْتُ فِيهِ فُخِرْتُ فَمُومًا فَنَمِي ذَلِكَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: "مُرُوا أَبَا ثَابِتٍ بِتَعَوُّدٍ، قَالَتْ: فَقُلْتُ: يَا سَيِّدِي، وَالرُّقَى صَالِحَةٌ؟، فَقَالَ: لَا رُقِيَّةَ إِلَّا فِي نَفْسٍ أَوْ حِمَّةٍ أَوْ لَدَغَةٍ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: الْحِمَّةُ مِنَ الْحَيَّاتِ وَمَا يَلَسُّ.

دسهل بن حنيف رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه زه دیوخوړ په غاره تیریدم زه ورکوز شوم اوغسل مې وکړو کله چه دغسل نه فارغ شوم نوتبه راباندې راغله بیانیې کریم ددینه خبرشو او وئې فرمائیل ده ته دشيطان نه د پناه غوښتلو حکم وکړئ ماعرض اوکړو ایا دم کول هم فائده لري؟ نبی صلی اللہ علیہ وسلم اوفرمائیل دم اچول خود درې افتونودپاره وي یو دبدنظرنه دحفاظت دپاره اودویم دتي دپاره او دریم د مارلرم چیچلي دپاره.

(۱) : تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۹۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۷۲/۸) (صحیح)  
(۲) : تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۴۶۶۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۸۷۳) (ضعیف الإسناد)



قوله: «سَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ حَنْفٍ يَقُولُ مَرَرْنَا بِسَبِيلٍ فَدَخَلْتُ فَأَغْتَسَلْتُ فِيهِ فَخَرَجْتُ مَحْمُومًا خ»  
سهل بن حنيف رضي الله عنه فرمائی چه یو کرت زه په یو سیلاب باندې راتیر شوم چه په هغې کښې داخلیدو سره ما غسل اوکړو، چه کله زه د هغې نه بهر راووتلم نو تبه مې شوه. دا خبره رسول الله ﷺ ته اوسیدله، رسول الله ﷺ او فرمائیل سهل بن حنيف ته اووايه چه هغه د دې دپاره دم وغیره او کړی.

قوله: «قَالَتْ فَقُلْتُ يَا سَيِّدِي وَالرَّقْيَ صَالِحَةً فَقَالَ « لَا رُقِيَّةَ إِلَّا فِي نَفْسٍ أَوْ حِمَةٍ أَوْ لَذْغَةٍ »»  
رباب وائی چه ما اووې یعنی سهل ته یا سیدی آیا دم وغیره جائز دې؟ نو سهل بن حنيف او فرمائیل چه د هغې حاصل دا دې چه او جائز دې ځکه چه دم خو زیات تر په بد نظر یا ازهریله خیز د وجې نه اچولې کیږی.

### اختلاف دنسخو او د نسخه صحیحه تحقیق

د سنن ابو داؤد په ټولو نسخو کښې دا عبارت هم دغه شان دې چه د هغې هم هغه مطلب دې کوم چه لیکلې شوې دې، چه د هغې تقاضا دا ده چه د یا سیدی مصداق سهل بن حنيف وی، او په متن د حدیث کښې « لا رقية الا فی نفس او حمة » دا د سهل بن حنيف قول دې په دې صورت کښې به دا حدیث موقوف شی، حال دا چه داسې نه ده بلکه دا حدیث مرفوع دې، مونږ د مسند احمد طرف ته رجوع او کړه په دې کښې لفظ د فقالت نه دې بلکه داسې دی « فقال مروا ابا ثابت يتعوذ فقلت يا سیدی والرقی صالحة قال لا رقية الا فی حمة... الحديث » په دې صورت کښې د « فقلت » قائل سهل بن حنيف رضي الله عنه دې، او د سیدی مصداق به رسول الله ﷺ وی، او په دې صورت کښې به دا حدیث مرفوع وی او کیدل هم داسې پکار دی، لهذا د ابو داؤد په نسخه کښې لفظ د قالت صحیح نه دې یا خو به بالکل دا وی نه، او که وی نو قال کیدل پکار دی (من البذل) شیخ محمد عوامه په خپل تعلیق کښې د حضرت د رائي تصویب کړې دې او د نسائی د روایت ئې هم حواله ورکړې ده په هغې کښې هم لفظ د قالت نشته، او صاحب د عون المعبود د قلت قائل خو سهل حساب کړې دې، او د یا سیدی مصداق ئې رسول الله ﷺ خو هغوی د ابو داؤد په روایت کښې چه کوم لفظ د قالت دې هغه هم باقی ساتلې دې او د فقلت نه مخکښې ئې قال مقدر منلې دې (۱) چه د فقلت، قائل سهل رضي الله عنه پاتې شی، گینې د ظاهر عبارت تقاضه دا ده چه د فقلت قائل رباب وی، خو په ځانې د دې تاویل غوره دا ده چه داسې اوئیلې شی چه د ابو داؤد په روایت کښې لفظ قالت من غلط الناسخین دې چه د هغې قرینه دا ده چه د مسند احمد او نسائی په روایت کښې لفظ د قالت نشته.

(۱) او په دې تاویل باندې په ظاهر کښې په دې وجه مجبور شو چه د هغوی په ذهن کښې دا ده چه لفظ د قالت څنگه چه په ټولو نسخو د ابو داؤد کښې دې هم دغه شان د مسند احمد په روایت کښې هم دې حال دا چه داسې نه ده، حضرت په بذل کښې فرمانی چه زمونږ مخې ته د مسند احمد نسخه موجود ده په دې کښې لفظ د قالت بالکل نشته او پرې دیاسه شیخ محمد عوامه لیکلې دی په خپل تعلیق کښې چه د نسائی په روایت کښې هم د قالت لفظ نشته، لهذا په ځانې د دې چه د صاحب عون تاویل او کړې شی داسې دې اوئیلې شی چه په دې روایت کښې لفظ د قالت بالکل شته نه.

### د رسول الله ﷺ په حق کښې د لفظ سیدنا ثبوت :

ډیر حضرات د رسول الله ﷺ د نوم مبارک سره لفظ سید زیاتی کولو سره تامل کوی او وائی چه د صحابه کرامو ﷺ نه د رسول الله ﷺ په حق کښې د سید استعمال نه دې منقول او گوری په دې حدیث کښې د رسول الله ﷺ په حق کښې د سهل بن حنیف رضی الله عنه په کلام کښې یا سیدی موجود دې (۱) والحديث أخرجه النسائي، قاله المنذرى.

[۳۸۸۹] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ، حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، حَدَّثَنَا الْعَبَّاسُ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ، عَنِ الْعَبَّاسِ بْنِ ذَرِيحٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، قَالَ الْعَبَّاسُ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا رُقِيَّةَ إِلَّا مِنْ عَيْنٍ أَوْ حُمَةٍ أَوْ دَمٍ يَرْقَأُ"، لَمْ يَذْكُرِ الْعَبَّاسُ الْعَيْنَ وَهَذَا لَفْظُ سُلَيْمَانَ بْنِ دَاوُدَ.

دانس بن مالک رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائیل دي دبدنظرنه علاوه دبل څه دپاره دم اچول نشته پادزهرو چیچلي دپاره اویا دویني بهیدلیو دپاره اودا الفاظ دسلیمان بن داود د روایت دې.

د باب په آخری حدیث کښې دې چه «لَا رُقِيَّةَ إِلَّا مِنْ عَيْنٍ أَوْ حُمَةٍ أَوْ دَمٍ يَرْقَأُ» د دم نه مراد رعاف دې، نکسیر یعنی د نکسیر دپاره چه کله رقیه کولې شی نو هغه وینه اودریږی.

### باب کيف الرُقَى

باب: ددمونویان

#### د حصول صحت او مرضونو د لرې کولو دپاره څه مخصوص دعا گاني

په دې باندې کلام په شروع کښې شوې دې په دې باب کښې مصنفه ﷺ بعضې منتخب احادیث چه په هغې کښې ډیرې مفید او جامع دعاگانې دي او د دردونو او مرضونو دپاره ئې جمع کړې دي. دا ټولې یادول پکار دی مونږ دلته صرف هغه دعاگانې رانقل کوو.

[۳۸۹۰] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ، قَالَ: قَالَ أَنَسٌ يَعْنِي لِثَابِتٍ: "إِلَّا أَرْقِيكَ بِرُقِيَّةِ رَسُولِ اللَّهِ؟ قَالَ: بَلَى، قَالَ: فَقَالَ: اللَّهُمَّ رَبَّ النَّاسِ، مُذْهِبَ الْبَاسِ، اشْفِ أَنْتَ الشَّافِي، لَا شَافِيَ إِلَّا أَنْتَ اشْفِهِ شِفَاءً لَا يَغَادِرُ سَقَمًا".

دعبدالعزیز بن صهیب نه روایت دې فرمائی چه انس که ثابت ته اووئیل ایا هغه دم درباندي وانه چرم کوم چه به نبی ﷺ اچولو؟ ثابت اووئیل ولی نه انس اووئیل : «اللَّهُمَّ رَبَّ النَّاسِ مُذْهِبَ الْبَاسِ اشْفِ أَنْتَ الشَّافِي لَا شَافِيَ إِلَّا أَنْتَ اشْفِهِ شِفَاءً لَا يَغَادِرُ سَقَمًا» یعنی ای الله دټولو خلقو پالونکیه دمرض لري کونکیه شفا ورکونکیه هم ته شفا ورکونکې پي ستانه علاوه څوک صحت نه شي ورکولې، دې داسې صحت مند جوړ کړي چه هیڅ قسم مرض په

(۱) په دې مسئله باندې د خلیل احمد سهانپوری رضی الله عنه په مدینه طیبه کښې د قاضی القضاة عبد الله بن بلیهد سره د ملک عبدالعزیز په موجودگي کښې په حرم شریف کښې مباحثه شوي وه، حضرت په روایاتو سره ثابته کړې وه کوم چه بادشاه هم تسلیم کړې وه دا واقعه په تذکرة الخلیل کښې ذکر ده.  
(۲) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۳۹) (ضعیف)

(۳) صحیح البخاري/الطب ۳۸ (۵۷۴۲)، سنن الترمذي/الجنائز ۴ (۹۷۳)، سنن النسائي/اليوم والليلة (۱۰۲۲)، (تحفة الأشراف: ۱۰۳۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۵۱/۳) (صحیح)



کښی باقی پاتې نه شي.

﴿لَلّٰهُمَّ رَبَّ النَّاسِ مُذْهَبِ النَّاسِ اَشْفِ اَنْتَ الشَّافِي لَا شَافِيَ اِلَّا اَنْتَ اَشْفِهِ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا﴾

[۳۸۹۱] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ خُصَيْفَةَ، أَنَّ عَمْرَو بْنَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ السُّلَمِيَّ أَخْبَرَهُ، أَنَّنَا فَعْرَنُ بْنُ جَبْرِ، أَخْبَرَهُ، عَنْ عُمَانَ بْنِ أَبِي الْعَاصِ، أَنَّهُ أَمَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ عُمَانُ: "وَيْبَى وَجَعٌ قَدْ كَادَ يَهْلِكُنِي، قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: امْسَحْهُ بِيَمِينِكَ سَبْعَ مَرَّاتٍ، وَقُلْ أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ، قَالَ: فَفَعَلْتُ ذَلِكَ فَأَذْهَبَ اللَّهُ عِزَّوَجَلَّ مَا كَانَ بِي فَلَمْ أَزَلْ أَمْرُهُ أَهْلِي وَغَيْرَهُمْ".

د عثمان بن ابی العاص رضی الله عنه نه روایت دي فرمائی چه زه د نبی کریم ﷺ په خدمت کښې حاضر شوم او په ما باندې داسې درد وو نژدې وه چه زه ئې ملاک کړي وې عثمان وائی چه نبی کریم ﷺ او فرمائیل په متاثره خائې باندې خپل ښی لاس او پري راکاږه اودا دعاء: «أعوذ بعزة الله وقدرته من شر ما أجد» ووايه، دې واني ماچه دا دعا اولوستله نوالله تعالی رانه هغه درد ختم کړو، او هميشه به مې خپل اهل ته او هر دردمند کس ته ددې دعا دوئیلو حکم کولو. قوله: «أعوذ بعزة الله وقدرته من شر ما أجد» او د ترمذی په روایت کښې «وسلطانه» هم دې «من شر ما أجد» د دې دعاء په باره کښې په حدیث کښې دا دی چه د بدن په کومه حصه کښې درد او بیماری وی په هغې باندې دې ښی لاس راکاږی او اووه کرته دې دا دعا اولولی.

[۳۸۹۲] (۲) حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ خَالِدٍ بْنُ مَوْهَبٍ الرَّمْلِيُّ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ زِيَادَةَ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ كَعْبٍ الْقُرْظِيِّ، عَنْ فُضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: "مَنْ اشْتَكَى مِنْكُمْ شَيْئًا أَوْ اشْتَكَاهُ آخَرُهُ، فَلْيَقُلْ: رَبَّنَا اللَّهُ الَّذِي فِي السَّمَاءِ تَقْدَسَ اسْمُكَ أَمْرُكَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ كَمَا رَحِمْتَكَ فِي السَّمَاءِ فَاجْعَلْ رَحْمَتَكَ فِي الْأَرْضِ اغْفِرْ لَنَا حُوبَنَا وَخَطَايَانَا أَنْتَ رَبُّ الطَّيِّبِينَ أَنْزِلْ رَحْمَةً مِنْ رَحْمَتِكَ وَشِفَاءً مِنْ شِفَائِكَ عَلَى هَذَا الْوَجَعِ فَيَبْرَأَ".

د ابو الدرداء رضی الله عنه نه روایت دي فرمائی چه د نبی کریم ﷺ نه ئې اوریدلی دی چه فرمائیل في: په تاسو کښې چه څوک مریض وي یاده بل یو مسلمان ورور ورته خپل مرض بیان کړي نو دا دعاء دي وائی «ربنا الله الذي في السماء تقدس اسمك أمرك في السماء والأرض كما رحمتك في السماء فاجعل رحمتك في الأرض اغفر لنا حوبنا وخطايانا أنت رب الطيبين أنزل رحمة من رحمة رحمتك وشفاء من شفاك على هذا الوجع» اي زمونږه هغه ربه چه په اسمان کښې ئې اونوم دي پاک دي، اي الله ستا اختيار دي په زمکه او اسمان کښې لکه څنگه چه په اسمان کښې ستا رحمت دي نو په زمکه باندې هم خپل رحمت نازل کړي او زمونږ گناهونه معاف کړي، اي الله ته پاک ئې دخلغو پروردگاري دخپل رحمت نه په مونږ نازل کړي، اود خپلې شفاء به شفاء راکړي ددې تکليف نه نوکه د الله خوښه وي مریض به جوړ شي.

(۱): صحيح مسلم للسلام ۲۴ (۲۲۰۲)، سنن الترمذي للطب ۲۹ (۲۰۸۰)، سنن ابن ماجه للطب ۳۶ (۳۵۲۲)، (تحفة الأنراف: ۹۷۷۴)، وقد أخرجه: موطا امام مالك للعين ۴ (۹)، مسند احمد (۲۱۷، ۲۱/۴) (صحيح)  
(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأنراف: ۱۰۹۵۷) (ضعيف)

قوله: ﴿ رَبَّنَا اللَّهُ الَّذِي فِي السَّمَاءِ تَقْدُسَ اسْمُكَ أَمْرُكَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ كَمَا رَحِمْتَكَ فِي السَّمَاءِ فَاجْعَلْ رَحِمَتَكَ فِي الْأَرْضِ اغْفِرْ لَنَا خُوبَتَنَا وَخَطَايَانَا أَنْتَ رَبُّ الطَّيِّبِينَ أَنْزِلْ رَحْمَةً مِنْ رَحِمَتِكَ وَشِفَاءً مِنْ شِفَائِكَ عَلَيَّ هَذَا الْوَجَعُ ﴾

د بدن په کومه حصه کښې درد وی په هغې باندې دې لاس کیخودلو سره دا دعا اووئیلې شی، ﴿ فیبرا ﴾ انشاء الله هغه به جوړ شی.

[۳۸۹۳] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ "يُعَلِّمُهُمُ مِنَ الْقَزَعِ كَلِمَاتٍ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهِ وَشَرِّ عِبَادِهِ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَخْضُرُونَ" وَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو يُعَلِّمُهُنَّ مَنْ عَقَلَ مِنْ بَنِيهِ وَمَنْ لَمْ يَعْقِلْ كَتَبَهُ فَأَعْلَقَهُ عَلَيْهِ.

عمرو بن شعيب دخپل پلار نه اوهغه دده دنيکه نه روايت کوي فرمائي چه نبی ﷺ به دويري په وخت کښې خلقوته داکلمات خودل: «أعوذ بكلمات الله التامة من غضبه وشر عباده ومن همزات الشياطين وأن يحضرون» يعنى زه دالله تعالى په ټولو کلماتوسره پناه غواړم دهغه دغضب اودهغه د بندگانو د شر نه اودوسوسو دشيطان نه اوددې نه چه شيطان زماخواته راشي، دعبداالله بن عمر رضی الله عنه په اولاد کښې چه به څوک دهوربنياريد وخته ورسيدو نودادعاء به ئې ورته زده کوله اوچه څوک چه دهوربنياريد وخته نه وو رسيدلي نودا دعاء به ئې اوليکله او په غاړه کښې به ئې ورته واچوله.

قوله: ﴿ أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهِ وَشَرِّ عِبَادِهِ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَخْضُرُونَ ﴾

د دې دعاء په باره کښې دا دی چه د ويرې په وخت کښې دا لوستل پکار دی، لکه چه بعض وخت ماشومان يا لوئې هم د شپې په څه وخت کښې اويريږي نو دا دې اولوستلې شی او که ماشوم وی نو د هغه په غاړه کښې دې دا دعا ليکلو سره په طور د تعويذ واچولې شی، دا مضمون په شروع د حديث کښې هم تير شوي دي.

[۳۸۹۴] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي سُرَيْجٍ الرَّازِيُّ، أَخْبَرَنَا مَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ، قَالَ: "رَأَيْتُ أَثَرَ ضَرْبَةٍ فِي سَاقِي سَلَمَةَ، فَقُلْتُ: مَا هَذِهِ؟" قَالَتْ: أَصَابَتْهُ يَوْمَ خَيْبَرَ، فَقَالَ النَّاسُ: أُصِيبَ سَلَمَةُ فَأَتَى بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَتَفَعَّتْ فِي ثَلَاثِ نَفَثَاتٍ فَمَا اسْتَكْبَتْهَا حَتَّى السَّاعَةِ".

د يزيد بن ابی عبيد نه روايت دې فرمائي چه مادلسمه په پندئ کښې دگذار نشان وليدو ماورنه نپوس اوکړو چه داڅه دي؟ هغه اووئيل دغزوه خيبر په ورځ باندې زه زخمي شوې وم خلقو وئيل شروع کړل چه سلمه زخمي شوې دې بيازه نبی ﷺ ته بوتلې شوم هغه په ما باندې درې چپه اوکړل بيا دهغې ورځې نه ترننه ورځې پورې زما پندئ درد نه دې کړې.

(۱) سنن الترمذي للدعوات ۹۳ (۸۷۸۱)، (تحفة الأشراف: ۸۷۸۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۸۱/۲) (حسن)  
(۱) صحيح البخاري/المغازي ۳۸ (۴۲۰۶)، (تحفة الأشراف: ۴۵۴۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۸/۴) (صحيح)



[۳۸۹۵] حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعُمَرَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَا: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَبْدِ رَبِّهِ يَعْنِي ابْنَ سَعِيدٍ، عَنْ عُمَرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: «لِلْإِنْسَانِ إِذَا اشْتَكَى يَقُولُ بِرِيقِهِ، ثُمَّ قَالَ بِهِ فِي التُّرَابِ تُرْبُهُ أَرْضُنَا بِرِيقِهِ بَعْضُنَا يُشْفَى سَقِيمُنَا بِإِذْنِ رَبِّنَا».

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روايت دې فرمائی چه نبی کریم ته به کله یو مریض شکایت وکړو نو نبی صلی الله علیه و آله به په خاوره باندې لاري توکړي او فرمائیل به ئې: «تربة أرضنا بریقه بعضنا یشفی سقیمنا بإذن ربنا»

### شرح الحیث :

قوله: «عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَقُولُ لِلْإِنْسَانِ إِذَا اشْتَكَى يَقُولُ بِرِيقِهِ ثُمَّ قَالَ بِهِ فِي التُّرَابِ «تُرْبُهُ أَرْضُنَا بِرِيقِهِ بَعْضُنَا يُشْفَى سَقِيمُنَا بِإِذْنِ رَبِّنَا»» عائشة رضي الله عنها فرمائی چه کله به یو انسان ته څه شکایت یا تکلیف وو د یو مرض یا زخم وغیره په وجه، نو رسول الله صلی الله علیه و آله به هغوی دا طریقه ښودله چه د خپل شهادت په گوته باندې دې د خپلې خولې لارې اولگوي او هغه دې په خاوره باندې کیږدي. چه کله په هغې باندې خاوره پریوځي نو بیا دې هغه د تکلیف په ځانې باندې راکاږي او دا دعا دې اولوستلې شي، کومه چه پورته ذکر شوه. او د بخاری په روایت کښې د دې دعا په شروع کښې بسم الله هم ده.

امام نووی رحمته الله د دې حدیث هم دا شرح کړې ده کومه چه مونږ لیکلې ده او په گوته باندې خاوره لگول غالباً دې خبرې ته اشاره ده چه یا الله ستا قدرت خو ډیر لوڼې دې چه تا لوڼې انسان د دې خاورې نه جوړ کړو، بیا ستا دپاره شفاء ورکول څه گران دی.

### تخریج الاحادیث :

الحديث الاول اخرج البخاري، والترمذي والنسائي، والثاني اخرج مسلم والترمذي والنسائي وابن ماجه بنحوه والثالث اخرج النسائي، والرابع اخرج الترمذي والنسائي، وقال الترمذي حسن غريب، والخامس اخرج البخاري ومسلم والنسائي، وابن ماجه، قاله المنذري.

[۳۸۹۶] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ زَكْرِيَّا، قَالَ: حَدَّثَنِي عَامِرٌ، عَنْ خَارِجَةَ بِنِ الصَّلْتِ التَّيْمِيَّةِ، عَنْ عَمِّهِ، أَنَّهُ أَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَسْلَمَ، ثُمَّ أَقْبَلَ رَاجِعًا مِنْ عِنْدِهِ فَبَرَّ عَلَى قَوْمٍ عِنْدَهُمْ رَجُلٌ مُجَنُّونَ مُوتِقٌ بِالْحَدِيدِ، فَقَالَ أَهْلُهُ: إِنَّا حَدَّثْنَا أَنَّ صَاحِبَكُمْ هَذَا قَدْ جَاءَ بِخَيْرٍ فَهَلْ عِنْدَكَ شَيْءٌ تُدَاوِيهِ، فَرَقِيْتُهُ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ، فَبَرَّ أَفَاعُطُونِي مِائَةَ شَاةٍ، فَاتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: هَلْ إِلَّا هَذَا، وَقَالَ مُسَدَّدٌ فِي مَوْضِعٍ آخَرَ: هَلْ قُلْتُ غَيْرَ هَذَا؟ قُلْتُ: لَا، قَالَ: خُذْهَا فَلْعَمْرِي لَمَنْ أَكَلَ بِرُقِيَّةٍ بَاطِلٍ، لَقَدْ أَكَلْتُ بِرُقِيَّةً حَقًّا.

خارجہ بن صلب دخپل تره نه روايت کوي فرمائی چه هغه د نبی صلی الله علیه و آله په خدمت کښې حاضر شو او اسلام ئې قبول کړو کله چه هغه د نبی صلی الله علیه و آله نه واپس روانیدو نو په لار کښې دیو قوم سره مخامخ شو چه دهغوی سره یوکس په زنځیرونو تړلې شوې پروت وو ددې لیونی

(۱): صحيح البخاري/الطب ۳۸ (۵۷۴۵)، صحيح مسلم/السلام ۲۱ (۲۱۹۴)، سنن ابن ماجه/الطب ۳۶ (۳۵۲۱)، تحفة الأشراف: ۱۷۹۰۶، وقد أخرجه: مسند احمد (۹۳/۱) (صحيح)

(۲): انظر حديث رقم: (۳۴۲۰)، (تحفة الأشراف: ۱۱۰۱۱) (صحيح)

وارثانو او وئیل چه مونږ ته دا معلومه شوي ده چه ستاسو مشر (نبي ﷺ) يولوني خير او پرې دې اناستاسوسره داسې څه شې شته چه په هغې باندې داليوني روغ شي دې وائي ماسوره فاتحه اولوستله او چوپ مې ورباندې اوکړو هغه مريض روغ شو ددغه ليوني وارثانو ماته سل چيلی راکړي زه چه دنبي ﷺ په خدمت کښې حاضر شوم نوددې واقعي ذکرې ورته اوکړو نبي ﷺ او فرمايل ايا دسوره فاتحي نه دي علاوه بل دم نه وو وئيلي،

د دې نه پس په کتاب کښې د عم خارجه حديث او بيا د هغې نه پس د ابو سعيد خدری (رضي الله عنه) حديث ذکر دې، د رومي حديث تعلق د رجل مجنون موثق بالحديد سره دې او د دويم تعلق د لديغ سره دې چه په هغې کښې په سورة الفاتحه دمول ذکر دې، او بيا د هغې دواړو صحت ياب کيدل او بيا د دې دواړو صحابه کرام (رضي الله عنهم) په هغه دم باندې دهغوی نه معاوضه اخستل، او بيا د حضور ﷺ ددغه معاوضي داخستلو اجازت ورکول ذکر دې، دا دواړه احاديث په کتاب الاجاره کښې په باب اجرة الطبيب کښې تير شوې دي. په دې حديث کښې دې ﴿ فَلَعْمَرَى لَمَنْ أَكَلَ بِرُقِيَّةً بَاطِلًا لَقَدْ أَكَلَتْ بِرُقِيَّةً حَقًّا ﴾ په دې باندې ابن رسلان شارح د ابوداؤد ليکی چه په دې حديث کښې دليل دې په دې خبره باندې چه رقيه په دوه قسمه ده حق او باطله، حق هغه ده کومه چه په کتاب او سنت او ذکر الله باندې وي، او کومه چه د دې نه علاوه د بل څه څيز نه وي يا د يو داسې څيز نه وي چه د هغې معنی معلومه نه وي نو هغه جائز نه دې ځکه چه په هغې کښې د کفر احتمال وي. (بذل)

په دم اچولو باندې د اجرت اخستلو جواز :

﴿ وقال ايضا : وفي الحديث اعظم دليل على انه يجوز الاجرة على الرقي والطب كما قاله الشافعي ومالك وابو حنيفة واحمد، واما الاجرة على تعليم القرآن فاجازها الجمهور بهذا الحديث وبرواية البخاري ان احق ما اخذتم عليه اجرا كتاب الله، وحرمة ابو حنيفة ١٥٠ هـ. قلت ولكن اجازة متأخروا الحنفية للضرورة (بذل) قلت وقد تقدم دليل ابي حنيفة (رضي الله عنه) في كتاب الاجارة من حديث عبادة بن صامت (رضي الله عنه) وفيه : ان كنت تحب ان تطوق طوقا من نار فاقبلها وترجم عليه المصنف... باب اجر المعلم... فتذكر. وحديث عمر جاريه (رضي الله عنها) اخرجه النسائي وحديث ابي سعيد الخدري (رضي الله عنه) اخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجه، قاله المنذري. ﴾

[۳۸۹۷] (١) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي. ۴ وَحَدَّثَنَا ابْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي السَّفَرِ، عَنْ الشَّعْبِيِّ، عَنْ خَارِجَةَ بْنِ الصَّلْتِ، عَنْ عَمِّهِ أَنَّهُ مَرَّ قَالَ فَرَقَاةً بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ غُدُوَّةً وَعَشِيَّةً كُلَّمَا خَتَمَهَا جَمَعَ بَرَاقَهُ، ثُمَّ تَقَلَّ فَكَأَنَّمَا أُنْشِطَ مِنْ عِقَالٍ فَأَعْطَوْهُ شَيْئًا، فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ ذَكَرَ مَعْنَى حَدِيثِ مُسَدَّدٍ.

خارجه بن صلت دخپل تره نه روايت کوي فرمائي چه هغه ده درې ورځو پورې سحر او ماښام الحمد لله وئيله او په دې ليوني باندې به ئې چپ کولو کله چه به د الحمد و د وئيلونه فارغ شونولاري به ئې په خوله کښې جمع کړي او په ده باندې به ئې ونوکل ليوني داسې روغ شو



چه دپرونه پرانیستل شو نودغه خلقو په عوض کښې چیلې ورکړې دې چه دښې ﷺ په خدمت کښې حاضر شو، باقی حدیث کې دمسدد دحدیث په شان بیان کړو.

[۳۸۹۸] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا سُهَيْلُ بْنُ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: سَمِعْتُ رَجُلًا مِّنْ أَسْلَمَ، قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَاءَ رَجُلٌ مِّنْ أَصْحَابِهِ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، لِدُعَتِ اللَّيْلَةِ فَلَمْ أُنْمَ حَتَّى أَصْبَحْتُ، قَالَ: "مَاذَا؟" قَالَ: عَقْرَبٌ، قَالَ: "أَمَا إِنَّكَ لَوَقُلْتَ حِينَ أُمْسَيْتَ أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ الثَّمَاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، لَمْ تَضُرَّكَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ".

مسدد په یوبل ځانې کښې وئیلې دی چه نبی ﷺ او فرمائیل ایاددینه دي علاوه نور څه ورته وئیلې وو ماعرض اوکړو نه، نبی ﷺ او فرمائیل ته داچیلې واخله زما دې په خپل عمر قسم وي خلق په باطل جادو باندي عوض اخلي تاخو په حق دم باندي عوض اخستلې دې

(عن سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ سَمِعْتُ رَجُلًا مِّنْ أَسْلَمَ الْخ)

ابوصالح فرمائی چه ما د قبيله اسلم د یو سړی نه واوریدل چه زه د رسول الله ﷺ په مجلس کښې ناست اوم، یو صحابی ﷺ راغلو او هغه عرض اوکړو چه د شپې زه یو زهریله ځناور چیچلې یم چه د هغې د وجې نه ماله تر سحره پورې خوب رانغلو، رسول الله ﷺ ترې نه تپوس اوکړو څه ځناور وو، هغوی عرض اوکړو لرم وو. رسول الله ﷺ او فرمائیل: خبردار که تا د ماښام په وخت دا دعاء وئیلې وې (أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ الثَّمَاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ) نو تاته هیڅ خیز ضرر نه شو درکولی.....

[۳۸۹۹] (۲) حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ شَرِيحٍ، حَدَّثَنَا بَقِيعٌ، حَدَّثَنَا الزُّبَيْدِيُّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ طَارِقِ بْنِ يَعْنَى ابْنِ قَحَّاشٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: أُنِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَلْدِي لَدَغْتُهُ عَقْرَبٌ، قَالَ: فَقَالَ: "لَوْ قَالَ أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ الثَّمَاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ لَمْ يَلْدَغْ أَوْ لَمْ يَضُرَّهُ".

دابوهریره رضی الله تعالی عنه نه روایت دې فرمائی چه یولرم چیچلې نبی ﷺ ته راوستلې شو، ابوهریره والي چه نبی ﷺ او فرمائیل که چرې ده دا دعا وئیلې وې: «أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ الثَّمَاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ» نولرم به نه وو چیچلې.

او هم د دې حدیث په دویم طریق کښې دې (لم یلدغ او لم یضره) د راوی په شک سره چه رسول الله ﷺ یا خو داسې او فرمائیل چه هغه زهریله ځناور بیا چک هم نه لگوي او یا ئې دا او فرمائیل چه ضرر نه رسوي. په دې دواړو کښې احتمال دې یو خو دا چه هغه ټک نه ورکوي او که ورکوي نه ضرر نه رسیږي.

الطریق الاول من هذا الحديث أخرجه مسلم، والنسائي مسندا ومرسلا، وابن ماجه، قاله المنذرى والطريق الثاني أخرجه النسائي من طرق، قاله المنذرى (مختصرا)

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۵۶۴)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۴۴/۸۳، ۴۳۰/۵) (صحيح)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۳۵۱۶)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه/الطب ۳۵ (۳۵۱۸)، مسند أحمد (۳۷۵/۲) (ضعيف الإسناد)

[۳۹۰۰] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ أَبِي بَشِيرٍ، عَنْ أَبِي الْمُتَوَكِّلِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، "أَنَّ رَهْطًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ انْطَلَقُوا فِي سَفَرَةٍ سَافَرُوهَا، فَتَزَلُّوا بِحَيٍّ مِنْ أَحْيَاءِ الْعَرَبِ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ سَيِّدَنَا لُدِغٌ قَهْلٌ عِنْدَ أَحَدٍ مِنْكُمْ شَيْءٌ يَنْفَعُ صَاحِبِنَا؟ فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: نَعَمْ وَاللَّهِ إِنِّي لَأُرْقِي وَلَكِنْ اسْتَصَفْنَاكُمْ فَأَيُّتُمْ أَنْ تُضَيِّفُونَا مَا أَنَا بِرَاقٍ حَتَّى تَجْعَلُوا لِي جُعْلًا تَجْعَلُونَهُ قَطِيعًا مِنَ الشَّاءِ، فَأَتَاهُ فَقَرَأَ عَلَيْهِ أَمْرَ الْكِتَابِ وَتَنَقَّلَ حَتَّى بَرَأَ كَأَنَّمَا أُنْشِطَ مِنْ عَقَالٍ، قَالَ: فَأَوْفَاهُمْ جُعْلَهُمُ الَّذِي صَاحَبُوهُمْ عَلَيْهِ، فَقَالُوا: اقْتَسِمُوا، فَقَالَ: الَّذِي رَقِيَ لَا تَفْعَلُوا حَتَّى تَأْتِيَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَتَسْتَأْمِرُهُ فَقَدَّوْا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرُوا لَهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مِنْ أَيْنَ عَلِمْتُمْ أَنَّهَا رَقِيَّةٌ أَحْسَنْتُمْ اقْتِسِمُوا وَافْرَبُوا لِي مَعَكُمْ بِسَهْمٍ".

د ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه د صحابه کرامویوه ډله په سفر روانه شوه اود عربو بوي قبیل ته ورسیدل اودهغوی نه ئې د میل مستیا مطالبه وکړه لیکن هغوی د میل منو قبلولونه انکار وکړو بیا ددغه قبیلې سردار مار یالهم وچپل دهغه د علاج دپاره خلقو هر قسم کوشش او کړولیکن هغه نه جوړیدو په دوی کښې یوکس او وئیل کوم کسان چه په میل مستیار اغلې دي هغوی ته خوک ولیري کیدې شی چه دهغوی سره د زهرو دپاره څه علاج ري، په کومه باندې چه به ده ته فائده ورسیري بیا په دوی کښې یو خوکسان صحابه کراموته ورغلل او ورته ئې او وئیل چه زمونږ سردار ماریالهم چپچلې دې ایا په تاسو کښې خوک دم گرې شته؟ یوکس او وئیل هو، زه به ورباندې دم واچوم، لیکن مونږه ستاسونه د میل مستیا مطالبه اوکړه اوتاسو انکار وکړو اوس زه دم نه اچوم ترخوچه تاسوماته ددې اجرت رانکړئ، نوددغه علاقې خلقو ددرې دپاره دچیلویوه رمه مقررکړه بیا دغه کس ورغې او سورة فاتحه ئې ولوستله او توکانري پري توکري تردې چه هغه جوړ شو اوداسې روغ شولکه غوټه چه کولاو کړې شي، بیاچه هغوی کومه معاوضه مقررکړي وه هغه ئې ورکړه صحابه کرامو عرض اوکړو رانې وړئ چه مونږ ئې تقسیم کړو مگرچاچه دم اچولې وو هغه او وئیل نه تاسو صبر وکړئ چه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه تپوس اوکړو بیادنی علیه السلام په خدمت کښې حاضر شول او واقعه ئې ورته بیان کړه ئې علیه السلام اوفرمائیل داخبره تاسو دکوم څانې نه معلومه کړې ده چه سورة فاتحه دم دې ډیر ښه کارموکړې دې اوزمادپاره دخپلو ځانونو سره حصه مقررکړئ.

[۳۹۰۱] (۲) حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي. ۳ وَحَدَّثَنَا ابْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي السَّفَرِ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ خَارِجَةَ بِنِ الصَّلْتِ التَّيْمِيَّةِ، عَنْ عَمِّهِ، قَالَ: "أَقْبَلْنَا مِنْ عِنْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَتَيْنَا عَلَى حَيٍّ مِنَ الْعَرَبِ، فَقَالُوا: إِنَّا أَنْبِئُكَ أَنَّكُمْ جِئْتُمْ مِنْ عِنْدِ هَذَا الرَّجُلِ بِخَيْرٍ، قَهْلٌ عِنْدَكُمْ مِنْ دَوَاءٍ أَوْ رُقِيَّةٍ فَإِنْ عِنْدَنَا مَعْتُوها فِي الْقُبُودِ؟ قَالَ: فَقُلْنَا: نَعَمْ، قَالَ: فَجَاءُوا بِمَعْتُوهِ فِي

(۱) صحيح البخاري للإجازة ١٦ (٢٢٧٦)، الطب ٣٣ (٥٧٣٦)، صحيح مسلم للسلام ٢٣ (٢٢٠١)، سنن الترمذي للطب ٢٠ (٢٠٦٣)، سنن ابن ماجه للتجارات ٧ (٢١٥٦)، (تحفة الأشراف: ٤٢٤٩، ٤٣٠٧)، وقد أخرجه: مسند احمد (٤٤/٣) (صحيح)  
(۲) انظر حديث رقم: (٣٤٢٠)، (تحفة الأشراف: ١١٠١١) (صحيح)



الْقِيُودُ، قَالَ: فَقَرَأْتُ عَلَيْهِ فَاتِحَةَ الْكِتَابِ ثَلَاثَةَ أَثَامٍ غُدُوءَةً وَعَشِيَّةً كُلَّمَا خَتَمْتُهَا أَجْمَعُ بِرَأْفِي، ثُمَّ أَنْفُلُ فَكَأَنَّمَا نَشَطُ مِنْ عِقَالٍ، قَالَ: فَأَعْطُونِي جُعَلًا، فَقُلْتُ: لَا حَتَّى أَسْأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: كُلُّ فَلَعْمَرِي مَنْ أَكَلَ بِرُقِيَّةً بَاطِلًا لَقَدْ أَكَلَتْ بِرُقِيَّةً حَقًّا.

خارجہ بن الصلت دخپل تره نه روایت کوی فرمائی چه مونږ د نبی ﷺ دخوانه روان شو او په عربو کښې په یو قوم باندې تیریدو هغوی ووئیل چه مونږ ته خبر رارسیدلې دي چه تاسو د دغه کس یعنی نبی ﷺ نه خیر راوړي دي اناستاسو سره کومه دوا یا گوم عمل شته؟ ځکه چه په مونږ کښې یو کس لیونې شوي دي او په زنجیرونو تړلي شوي دي مونږ ورته ووئیل هو نو هغوی هغه لیونې راوستو، راوی وائی چه مادرې ورځې په سورت فاتحه دم کړو او په خپله خوله کښې به مې لاري جمع کړي او په ده باندې مې توکړي، راوی وائی چه هغه کس بیا داسې جوړ شو لکه چه د قید نه خلاص شي هغوی او غوښتل چه ماته مزدوري راکړي ما ورته ووئیل چه زه تر هغه وخته پورې معاوضه نشم اخستلې ترڅو چه مې د نبی ﷺ نه تپوس نه وي کړي کله چه ماد نبی ﷺ نه تپوس وکړو نوراته ئې اوف: مائیل: دا چیلې واخله زما دې پخپل عمر قسم وي خلق خو په دروغو د مونو باندې رزق خوري تاخو په صحیح دم باندې خوراک کړې دي.

[۳۹۰۲] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "كَانَ إِذَا اشْتَكَى: يقرأ في نفسه بالمعوذات، وينفث، فلما اشتد وجعه كُنْتُ أقرأ عليه وأمسح عليه بيده رجاء بركتها".

دعائشه ﷺ نه روایت دې فرمائی کله چه نبی ﷺ بیمار شو نو په خپل زړه کښې به ئې معوذتین وئیل او خپل ځان به ئې ورباندې دمولو، کله چه دهغه په مرض کښې شدت راغې نومابه معوذتین وئیل د نبی ﷺ په جسم باندې به ئې دهغه لاس مبارک راځکلود هغه د برکت په امید باندې.

د باب په آخری حدیث کښې دی: سیده عائشه صدیقه ﷺ فرمائی چه د رسول الله ﷺ طبیعت چه کله ناسازه شو نو هغوی به معوذتین پټ پټ وئیلو او وئیلو سره به ئې دم کولو په خپل ځان باندې (او په یو بل روایت کښې دی چه په خپلو لاسونو مبارکو باندې به ئې دم کولو سره په بدن مبارک باندې رابښکل، هغوی فرمائی چه کله رسول الله ﷺ ته په آخری وخت کښې تکلیف سخت شو نو ما به داسې کول چه معوذات به مې لوستل او د هغوی په لاس مبارک باندې به مې دمول او هغه به مې په هغوی باندې رابښکل، په ځانې دخپل لاس رابښکلو د رسول الله ﷺ د لاس مبارک د برکت دپاره. والحديث أخرجه البخاري ومسلم والنسائي وابن ماجه، قاله المنذرى.

.....

(۱): صحيح البخاري للفضائل القرآن ١٤ (٥٠١٦)، صحيح مسلم للإسلام ٢٠ (٢١٩٢)، سنن ابن ماجه للطب ٣٨ (٣٥٢٩)، تحفة الأشراف: (١٦٥٨٩)، وقد أخرجه: موطا امام مالك للعين ٤ (١٠)، مسند احمد (١٠٤/٦، ١٨١، ٢٥٦، ٢٦٣) (صحيح)

## باب فی السَّمْنَةِ باب د خرب کیدو بیان

[۳۹۰۳] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ قَارِسٍ، حَدَّثَنَا نُوحُ بْنُ يَزِيدَ بْنِ سَيَّارٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: "أَرَادَتْ أَنِّي أَنْ تُسَمِّنَنِي لِدُخُولِي عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ أَقْبَلْ عَلَيْهَا بِشَيْءٍ مِمَّا تُرِيدُ حَتَّى أَطْعَمَتْنِي الْقَيْثَاءُ بِالرُّطْبِ فَسَمِنْتُ عَلَيْهِ كَأَحْسَنِ السَّمَنِ".

د عائشه رضی اللہ عنہا نه روایت دې فرمائی چه زما مور غوښتل چه زه خربه شم خكه چه زما واده دښی سره کیدو والا ووهغې هر ممکن کوشش وکړولیکن زه خربه نشوم تردې چه هغې په ماباندې تري دتازه کجوروسره خورول شروع کړل نوزه په بهتره طریقي سره غټه شوم. سمنه یعنی خرب کونکې دوائی یا خوراک .... د حدیث مضمون دا دې : عائشه صدیقہ رضی اللہ عنہا فرمائی چه زما د رخصتۍ نه مخکښې زما مور زما د صحت مند کیدلو ښه کوششونه او تدبیرونه او کړل خو زما طبیعت هیڅ تدبیر قبول نه کړو، بیا په آخر کښې هغې په ماباندې بادرنګ او رطب (کهجورې) او خورلې، دا علاج زما طبیعت قبول کړو چه په هغې سره زه ښه غټه شوم.

جینۍ که د نکاح نه پس د رخصتۍ نه مخکښې کمزورې وی او نرۍ وی نو د هغې مور فکرمنده وی او د هغې دپاره داسې تدبیرونه کوی چه په هغې سره په هغې کښې خرب والې راشی، زموږ په طرفونو کښې دا خبره مشهوره ده چه د دې دپاره پرې پی او خلوبی خورلې شی. والحديث أخرجه النسائي وابن ماجه، قاله المنذرى (مختصرا)

## كِتَابُ الْكَهَانَةِ وَالتَّطِيرِ

کهافت اور بد فالي سره متعلق احکام او مسائل

## باب فی الْكَاهِنِ باب د فال کتلو بیان

په بعض نسخو کښې د دې نه مخکښې ( کتاب الکهانة والتطير ) دې

[۳۹۰۴] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ حَكِيمِ الْأَثَرِ، عَنْ أَبِي تَمِيمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ أَتَى كَاهِنًا، قَالَ مُوسَى فِي حَدِيثِهِ: فَصَدَّقَهُ بِمَا يَقُولُ ثُمَّ اتَّفَقَا أَوْ أَتَى امْرَأَةً، قَالَ مُسَدَّدٌ: امْرَأَتُهُ حَابِضًا أَوْ أَتَى امْرَأَةً، قَالَ مُسَدَّدٌ: امْرَأَتُهُ فِي دُبُرِهَا فَقَدْ بَرَّ عَمَّا أَنْزَلَ عَلَى مُحَمَّدٍ".

د ابوهريره رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائیلي دي څوك چه كاهن ته لار

(۱) : تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۷۱۸۲)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه/الاطعمة ۳۷ (۳۳۲۴)، سنن النسائي/الكبرى (۶۷۲۵) (صحيح)

(۲) : سنن الترمذي/الطهارة ۱۰۲ (۱۳۵)، سنن ابن ماجه/الطهارة ۱۲۲ (۶۳۹)، (تحفة الأشراف: ۱۳۵۳۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۸۷۱، ۸۷۲، ۴۰۸/۲، ۴۷۶، ۳۰۵/۶)، سنن الدارمي/الطهارة ۱۱۳ (۲۵۹) (صحيح)



شي، موسی پخپل روایت کښې اضافه کړې ده چه نبی ﷺ او فرماتیل اوییا دهغه خبرې ریښتونی وگړي یا دکومې ښځې سره صحبت وکړي، مسدد پخپل روایت کښې وئیلی دی چه په بیماری په حالت کښې اومسددپه خپل روایت کښې وئیلی دی چه باخپلې ښځې ته دشادطرف نه راتلل وکړي نودغه کس دهغه دین نه خارج شو کوم چه په محمد باندې نازل شوي دي.

قوله: «مَنْ أَتَى كَاهِنًا فَصَدَّقَهُ بِمَا يَقُولُ أَوْ أَتَى امْرَأَةً خَالِصًا أَوْ أَتَى امْرَأَةً فِي ذُبْرٍهَا فَقَدْ بَرَّئَ مِمَّا أُنْزِلَ اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ ﷺ»

د دې حدیث درې اجزاء دی کاهن ته تلو سره د هغه تصدیق کول، او خپلې ښځې سره په حالت د حیض کښې وطی کول او دریم وطی فی الدبر او د دې درې وارو په باره کښې رسول الله ﷺ ډیر سخت وعید او فرماتیلو چه دې سړی د قرآن او وحی انکار او کړو په بذل کښې دی «وهذا محمول علی المستحل او التغلیظ»..... وطی په حالت د حیض کښې دا مسئله په کتاب الطهارة کښې او د وطی فی الدبر مسئله په کتاب النکاح کښې تیره شوې ده، په کوکب الدرۍ ۸۳/۱ کښې لیکلې دی: قوله من اتی کاهنا الی آخره... کاهن ته د تلو نه مراد هغه دې کوم چه د غیب خبرونه بیانوی د هغه تصدیق کول دی، صرف هغه ته ورتلل مراد نه دی، مثلاً یو سړی د څه ضرورت په بناء هغه ته لار شی یا د هغه د تکذیب یا تبکیت دپاره، یا په هغه پورې د توقو کولو دپاره نو دا په دې کښې داخل نه دي، بلکه که په دې اعتقاد لار شی چه جنات دي کاهنانو ته خبر ورکوی، او بعض خبرونه د هغوی رښتیا وی او بعض دروغ، نو بیا به هم په دې وعید کښې داخل نه وی. والحديث أخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى....

### باب فی النجوم

د علم نجوم د احکامو بیان

[۳۹۰۵] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُسَدَّدُ الْمَعْنَى، قَالَا: حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ الْأَخْنَسِ، عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ يُونُسَ بْنِ مَاهَكَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ اقْتَبَسَ عِلْمًا مِنَ النُّجُومِ، اقْتَبَسَ شُعْبَةً مِنَ السَّحَرِ زَادَ مَا زَادَ".

دعبدالله ابن عباس رضی الله عنه نه روایت دي فرمائی چه رسول پاک فرماتیلی دی چاچه کوم قسم علم نجوم زده کړو نوده دجادویوه لاره ازده کړله بیاچه په دې کښې چاڅومره اضافه وکړه نوهغه هومره ئې په جادو کښې اضافه وکړه.

قوله: «مَنْ اقْتَبَسَ عِلْمًا مِنَ النُّجُومِ اقْتَبَسَ شُعْبَةً مِنَ السَّحَرِ زَادَ مَا زَادَ»

کوم انسان چه د علم نجوم څه حصه حاصل کړه نو هغه د سحر یو حصه حاصله کړه. اوس چه هغه انسان د علم نجوم په حصول کښې څومره زیادت کوی گویا په علم سحر کښې زیادت کوی. او دا ښکاره خبره ده چه تعلم د سحر او عمل بالسحر دواړه حرام دی. بس دغه شان

(۱) سنن ابن ماجه/الأدب ۲۸ (۳۷۲۶)، (تحفة الأشراف: ۶۵۵۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۲۲۷، ۳۱۱) (حسن)

تعلیم د علم نجوم هم حرام دي. د دې علم نجوم نه په کوم چه وعید دي هغه علم مراد دي چه د هغې په وجه باندې انسان د حوادثو د علم دعوی کوی چه لا واقع شوې نه وی او بیا دپاره کیدونکی دی، د هواگانو چلیدل یا د باران خبر ورکول او د خیزونو په نرخ کښې کمی زیادت وغیره وغیره او څنگه چه دا اهل نجوم دعوی کوی چه هغوی دا خیزونه د کواکب په سیر سره پیژنی، حال دا چه د راتلونکي کارونو علم د الله پاک نه سوا چا سره هم نشته، او داسې علم نجوم چه په هغې سره د اوقاتو علم راشی، یعنی د زوال او یا د جهت قبله نو هغه په دې کښې داخل نه دي. (بذل عن ابن رسلان) والحديث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى.

[۳۹۰۶] حَدَّثَنَا الْقُعْنُبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ، أَنَّهُ قَالَ: "صَلَّى لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةَ الصُّبْحِ بِالْحَدِيثِ فِي إِثْرِ سَمَاءٍ كَانَتْ مِنَ اللَّيْلِ، فَلَمَّا انْصَرَفَ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ، فَقَالَ: "هَلْ تَذَرُونَ مَاذَا قَالَ رَبِّكُمْ؟" قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: قَالَ: أَصْبَحَ مِنْ عِبَادِي مُؤْمِنٌ بِي وَكَافِرٌ، فَأَمَّا مَنْ قَالَ: مُطِرْنَا بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ، فَذَلِكَ مُؤْمِنٌ بِي كَافِرٌ بِالْكُوكَبِ، وَأَمَّا مَنْ قَالَ: مُطِرْنَا بِنُوءٍ كَذَا أَوْ كَذَا، فَذَلِكَ كَافِرٌ بِي مُؤْمِنٌ بِالْكُوكَبِ."

دزید بن خالد الجهنی نه روایت دي فرمائی چه رسول الله مونږ ته دسحر مونږ په سندییه مقام کښې په سخت باران کښې راکړو کوم چه دشپې شوې وو، نبی کریم و دسحر دمونږ نه دفارغیدونه پس خلقو طرف ته مخ راوړو او د متوجه کیدونه بس ئې او فرمائیل ایاتاسوته معلومه ده چه ستاسو پروردگار څه فرمائیلې دي؟ خلقو عرض اوکړو الله اودهغه رسول ښه پوهیږي نونبی ﷺ او فرمائیل الله تعالی فرمائیلې دي زما بعضې بندگان دسحر په وخت کښې ایماندار شول او بعضې کافر شول پس هر هغه چا چه او وئیل دالله په فضل سره اودهغه په رحمت سره په مونږ باندې باران وشو نو هغه کسان به ایمانداران اور دستورونه انکار کونکي وشمیرل شي، او هر هغه چا چه او وئیل چه په مونږ باندې دفلانی فلانی ستوري په وجه باران وشونوده زمانه انکار وکړو اوبه ستورو ئې یقین وکړو.

قوله: ﴿عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ أَنَّهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- صَلَاةُ الصُّبْحِ بِالْحَدِيثِ فِي إِثْرِ سَمَاءٍ كَانَتْ مِنَ اللَّيْلِ الْخ﴾

### مضمون الحديث :

رسول الله ﷺ د حدیبیه په موقع باندې د سحر مونږ ورکړو او د شپې باران هم شوې وو د مانځه نه چه فارغ شو نو خلقو ته متوجه شو او وې فرمائیل: تاسو ته معلومه د چه الله پاک څه او فرمائیل، بیا حضور ﷺ پخپله او فرمائیل چه الله پاک فرمائی ﴿أَصْبَحَ مِنْ عِبَادِي مُؤْمِنٌ بِي وَكَافِرٌ﴾ چه زما په بندگانو کښې بعضو په کفر سره صبا کړو او بعضو په ایمان سره، کومو خلقو چه د باران په وریدلو باندې داسې اووې چه ﴿مُطِرْنَا بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ﴾ نو دا سړې په ما باندې ایمان لرونکې دي او د کوکب انکار کونکې دي او کوم سړی چه داسې

۱: صحيح البخاري بالأذان ۱۵۶ (۸۴۶)، الاستسقاء ۲۸ (۱۰۳۸)، المغازي ۳۵ (۱۴۷)، التوحيد ۳۵ (۷۵۰۳)، صحيح مسلم بالإيمان ۳۲ (۱۲۵)، سنن النسائي بالاستسقاء ۱۶ (۱۵۲۶)، عمل اليوم والليلة ۲۶۷ (۹۲۴)، (تحفة الأشراف: ۳۷۵۷)، وقد أخرجه: موطا امام مالك بالاستسقاء ۳ (۴)، مسند احمد (۱۱۷، ۱۱۶، ۱۱۵/۴) (صحيح)



اووي چه ﴿مُطِرْنَا بِنُوءٍ كَذَا وَكَذَا﴾ چه په مونږ باندې باران اوشو د فلانی ستوری په غروب او طلوع سره، نو دا سرې په ما کافر دي او په کوکب مومن. دا وعید په هغه صورت کښې دي چه د کوکب په باره کښې هم دا اعتقاد لرونکې وي چه د باران هم د هغې په وجه باندې شوي دي. لکه چه بعض جاهل منجمين داسې گنړي، او که په دي اعتقاد سره نه وي بلکه خالق د باران صرف الله پاک گنړي او د دي باوجود ئي دا خبره د نورو نه په اوریدلو سره د هغوی په شان اوکره نو بیا به کافر نه وي دا به صرف خطا وي.

د دي حديث شرح امام نووي رحمته الله علیه په دي تفصيل سره کړې ده ﴿مُطِرْنَا بِنُوءٍ كَذَا وَكَذَا﴾ د نوء جمع انواء راځي د دي اطلاق په نجم (ستوری) باندې هم کيږي خو د اصل لغت په اعتبار سره دا نوء مصدر دي د ناء ينوء نواء نه... چه د هغې معنی غروب او طلوع دواړه راځي دا اتويشت ستوری دي چه د هغې اتويشت مطالع دي چه د هغې نه هغه ټول کال طلوع کيږي. علماء د هیئت وائي چه په دي ستورو کښې هر يو ستوري په هره دیارلسمه شپه باندې د نمر د راختلو په وخت مغرب طرف ته ډوييږي او هم دغه شان فوراً د هغې بالمقابل په مشرق کښې دویم ستوري راخيږي او بل په مغرب کښې غروب شي، غروب کیدونکو ته انواء وائي او طلوع کیدونکو ته بوارج وائي، نو په کوم وخت چه دا ستوري په دیارلسمه شپه کښې طلوع کيږي نو که په اتفاق سره هغه وخت باران اوشي نو هغې لره هم هغه ستوري ته منسوب کولې شي بعض نسبت د طلوع کیدونکی طرف ته کوي او بعض د غروب کیدونکی طرف ته. والله تعالی اعلم قاله النووي في شرح مسلم. (تحفة الاخوذی ۱۳۵)

والحديث اخرجه البخاري ومسلم والنسائي نحوه، قاله المنذري

### باب فِي الْخَطِّ وَزَجْرِ الطَّيْرِ

درمل په خبرو یقین کول اود مرغوپه آوازو نو باندې د بد فالي کولو د ممانعت بیان

[۳۹۰۷] (١) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا عَوْفٌ، حَدَّثَنَا حَيَّانٌ، قَالَ غَيْرُ مُسَدَّدٍ، حَيَّانُ بْنُ الْعَلَاءِ، حَدَّثَنَا قَطْنُ بْنُ قَبِيصَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: «الْعِيَافَةُ وَالطَّيْرَةُ وَالطَّرْقُ مِنَ الْجَنِّبِ»، «الطَّرْقُ: الزَّجْرُ، وَالْعِيَافَةُ: الْخَطُّ».

قطن بن قبيصة دخپل پلار نه روايت کوي فراماني چه رسول الله نه مې اوریدلی دی چه فرمایل ئي عیافت اوبد فالي نیول او طرق دبت پرست قسمونه دي، طرق، مرغی الوزولوته وئيلي شي او عیافت په زمکه باندې د کرخو رابښکلوته وئيلي شي.

[۳۹۰۸] حَدَّثَنَا ابْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ عَوْفٌ: «الْعِيَافَةُ زَجْرُ الطَّيْرِ وَالطَّرْقُ الْخَطُّ يُخَطُّ فِي الْأَرْضِ».

ابن بشار د محمد بن جعفر نه نقل کوي چه د عیافت نه مراد د مرغوشړل دي اود طرق نه مراد هغه کرخي دي کوي چه په زمکه باندې رابښکلي شي.

قوله: «سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَقُولُ «الْعِيَافَةُ وَالطَّيْرَةُ وَالطَّرْقُ مِنَ الْجَنِّبِ».

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۰۶۷)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۴/۷۷، ۶۰/۵) (ضعيف)

الطَّرْقُ الزَّجَرُ وَالْعِيَاةُ الْخَطُّ» دا تفسیر د امام ابوداؤد رحمہ اللہ د طرف نه دې چه د طرق نه مراد زجر یعنی زجر الطیر دې، ناستې مرغی پاسبول د فال اخستلو دپاره، او د عیافه نه مراد خط یعنی علم رمل، او د دې نه روستو روایت کښې دا تفسیر د دې برعکس راروان دې. والحديث اخرجه النسائي، قاله المنذرى

### بَابُ فِي الطَّيْرِ وَالْخَطِّ بَابُ بَدْفَالِي نِيُولُ بِيَان

[۳۹۱۰] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كَهِيلٍ، عَنْ عَيْسَى بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ زُرَيْبِ بْنِ حُبَيْشٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «الطَّيْرَةُ شِرْكُ الطَّيْرِ شِرْكُ ثَلَاثًا، وَمَا مِنَّا إِلَّا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُذْهِبُهُ بِالتَّوَكُّلِ».

د عبد الله بن مسعود رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلى دى: بدفالي نیول شرک دي بدفالي نیول شرک دي درې پيري او په مونږ کښې هریوکس ته خامخا څه حادثه پېښیږي لیکن الله تعالی هغه دتوکل کولو په وجه رفعه کوي.

قوله: «الطَّيْرَةُ شِرْكُ الطَّيْرِ شِرْكُ ثَلَاثًا، وَمَا مِنَّا إِلَّا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُذْهِبُهُ بِالتَّوَكُّلِ»

یعنی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم درې کرته ارشاد اوفرمائیلى «الطيرة شرک» چه بدفالی شرک دې. او بیا ئې وړاندې اوفرمائیل چه په مونږ کښې څوک هم داسې نشته چه هغه ته څه اندازه د بدفالی خیال نه راځي، لږ لږ خیال په شروع کښې راځي یعنی قبل التامل، خو کوم چه مومن وی د هغه چونکه په الله پاک باندې توکل وی په دې وجه د هغه توکل هغه لره د هغه د خیال نه لرې کړی، یعنی هغه په خپل فال باندې نه چلیږي، «وما منا» د دې عبارت خبر مقدر دې ای وما منا احد الا ويعتريه شی منه، اعتراء یعنی پېښیدل.

والحديث اخرجه الترمذی وابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۹۰۹] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ الْحَجَّاجِ الصَّوَّافِ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ هِلَالِ بْنِ أَبِي مَيْمُونَةَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ الْحَكَمِ السَّلْمِيِّ، قَالَ: قُلْتُ: «يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَمِنَّا رَجُلٌ يَخْطُونَ؟» قَالَ: «كَانَ نَبِيٌّ مِنَ الْأَنْبِيَاءِ يَخْطُ فَمَنْ وَافَقَ خَطُّهُ فُذِّكَ».

د معاويه بن حکم السلمي رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه ماعرض وکړو اي دالله رسوله په مونږ کښې بعضې داسې خلق دي چه کرښي اوکارې پيغمبر پاک صلی اللہ علیہ وسلم اوفرمائیل په انبياؤ کښې هم يودالله يو نبی داسې ووچه کرښي به ئې رابښکلی نودچا کرښي چه دهغه دکرښو سره مطابق شي نوباک نشته.

قوله: «عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ الْحَكَمِ السَّلْمِيِّ قَالَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمِنَّا رَجُلٌ يَخْطُونَ الخ» دا حديث په كتاب الصلوة کښې تیر شوي دې، والحديث اخرجه مسلم والنسائي بطوله، قاله المنذرى.

(۱) سنن الترمذی/السير ۴۷ (۱۶۱۴)، سنن ابن ماجه/الطب ۴۳ (۳۵۳۸)، (تحفة الأشراف: ۹۲۰۷)، وقد أخرج: مسند احمد (۱۳۸۹، ۴۳۸، ۴۴۰) (صحيح)

(۲) انظر حديث رقم: (۹۳۰)، (تحفة الأشراف: ۱۱۳۷۸) (صحيح)



[۳۹۱۱] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُتَوَكِّلِ الْعَسْكَلَانِيُّ، وَالْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، قَالَا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا عَدُوَّ وَلَا طَيْرَةَ وَلَا صَفْرَ وَلَا هَامَةَ». فَقَالَ أَعْرَابِيٌّ: مَا بَالُ الْإِبِلِ تَكُونُ فِي الرَّمْلِ كَأَنَّهَا الطَّبَاءُ، فَيُخَالِطُهَا الْبَعِيرُ الْأَجْرَبُ، فَيُجْرِبُهَا، قَالَ: فَمَنْ أَغْدَى الْأَوَّلَ، قَالَ مَعْمَرٌ: قَالَ الزُّهْرِيُّ: لِحَدَّثَنِي رَجُلٌ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا يُوْرَدَنَّ مَرَضٌ عَلَى مُصِيبٍ»، قَالَ: فَرَأَجَعَهُ الرَّجُلُ، فَقَالَ: أَلَيْسَ قَدْ حَدَّثَنَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «لَا عَدُوَّ وَلَا صَفْرَ وَلَا هَامَةَ؟» قَالَ: لَمْ أَحِدْ لَكُمْوه؟ قَالَ الزُّهْرِيُّ: قَالَ أَبُو سَلَمَةَ: قَدْ حَدَّثَ بِهِ وَمَا سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ لَيْسَ حَدِيثًا قَطْعًا غَيْرَهُ.

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه نبی کریم صلی الله علیه و آله فرمائیلى دى نه ديوکس نه بل کس ته مرض لگي اونه دسفري مياشت سپيره ده اونه دکوم مري دکوپړئ نه هامة مرغى سپيره ده چه دچاپه کور راپريوخي، په دې وخت کښې يوباند چې عرض وکړو رهې وئيل چه اي دالله رسوله بيابة ددې اوبنانوخه حال وي کوم چه دهوسيوپه شان حاربه اوصحت مند وي په سحرا کښې گرځي کله چه په دوى کښې بويمن اوبن تنوخي نوپه نوروهم خاربن لگي نبی صلی الله علیه و آله دي کس ته اوفرمايل اولنې اوبن چا پمن کړې دې؟ زهري وئيلي دى چه ماته يوکس دابوهريره په واسطې سره روايت بيان کړې دې چه نبی صلی الله علیه و آله اوفرمايل چه مريض اوبن دي د اوبو څکلو دپاره هغه ځانې ته نشي بوتلې چرته چه روغ څاروي اوبه څي بيادغه کس دابوهريره په خدمت کښې حاضر شو اوعرض ئې وکړو ابابنې رضي الله عنه دانه دې فرمائيلى چه نه خوديوييماري بل ته لگي اونه دسفري مياشت سپيره ده، ابوهريره اوفرمايل ما دا روايت نه دې بيان کړې ابوسلمه واني ابوهريره پخپله دا روايت بيان کړې وو او مادانه دي اوريدلي چه ددې حديث نه علاوه دابوهريره رضي الله عنه نه بل حديث هيرشوې دې.

#### مضمون الحديث :

قوله: «عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- «لَا عَدُوَّ وَلَا طَيْرَةَ وَلَا صَفْرَ وَلَا هَامَةَ». فَقَالَ أَعْرَابِيٌّ مَا بَالُ الْإِبِلِ تَكُونُ فِي الرَّمْلِ كَأَنَّهَا الطَّبَاءُ فَيُخَالِطُهَا الْبَعِيرُ الْأَجْرَبُ فَيُجْرِبُهَا قَالَ «فَمَنْ أَغْدَى الْأَوَّلَ» د عدوى معنى د يوې بيماري بل ته لگيدل، لکه چه د بعض مرضونو په باره کښې خلق گنړى چه دا مرض متعدى دې د يو نه بل ته لگيږي. مثلاً خاربن..... نورسول الله صلی الله علیه و آله فرمائي چه دا خبره غلطه ده داسې نه ده په دې باندې يو اعرابي د رسول الله صلی الله علیه و آله نه تپوس اوکړو چه مونږ خو گورو چه ډير اوبنان کوم چه په صحراگانو کښې گرځي د صفا ستهره هو سو په شان ښکلې، نو که په هغې کښې يو خاربنستى اوبن حاضر شى نو په ټولو باندې خاربن لگوى، رسول الله صلی الله علیه و آله د دې سائل په جواب کښې اوفرمايل هغه اوبن د چا د اختلاط د وجې نه چه په نورو خاربن لگيدلې دې هغه ته د چا نه خاربن لگيدلې وو؟ هغه ته خو د چا نه هم نه وو لگيدلې، د خاربن ابتداء خو د هغه نه شوې وه، په دې باندې هغه سائل خاموش شو.

(۱): صحيح البخاري/الطب ۲۵ (۵۷۱۷)، ۴۵ (۵۷۵۷)، ۵۳ (۵۷۷۰)، ۵۴ (۵۷۷۲)، (تحفة الأشراف: ۱۵۲۷۳، ۱۵۵۰۲)، وقد أخرج: صحيح مسلم/السلام ۳۳ (۲۲۲۳)، مسند احمد (۲۶۷/۲، ۳۲۷، ۳۹۷) (صحيح)

قوله: « قَالَ مَعْمَرُ قَالَ الزُّهْرِيُّ فَحَدَّثَنِي رَجُلٌ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَقُولُ « لَا يُورَدَنَّ مُفْرَضٌ عَلَى مُصْبِحٍ ». قَالَ فَرَأَيْتُ الرَّجُلَ الْخ »

هغه حديث کوم چه ابوهريره رضي الله عنه نه د بيانولو نه پس هير شو

امام زهري رحمته الله فرمائي چه يو سري ماته بيان اوکړو چا چه د ابوهريره رضي الله عنه نه حديث اوريدلې وو. « لا يوردن » الخ چه د هغې مطلب دا دې چه د کوم سري اوبن بيمار وي نو هغه له پکار دي چه خپل اوبنان د هغه سري په اوبنانو کښې نه گډوي د چا اوبنان چه صحت مند دي، هغه سري د ابوهريره رضي الله عنه نه د دې حديث د اوريدلو نه پس تپوس اوکړو په طور د اشکال چه تاسو خو ماته دا حديث مخکښې بيان کړې وو: « لا عدوى ولا صفر ولا هامة » مطلب دا دې چه تاسو چه ماته اوس کوم حديث بيانوي دا ستاسو د بيان کړې مخکښې حديث خلاف دې، نو په دې باندې ابوهريره رضي الله عنه او فرمايل چه دا حديث ما تاسو ته نه دې بيان کړې، يعنې د « لا عدوى ولا صفر » حال دا چه واقعۀ دا ده چه دا حديث هم د هغوي بيان کړې شوې دې لکه چه پورته په متن کښې تير شوې دي، هم په دې وجه وړاندې امام زهري رحمته الله د ابوسلمه نه نقل کوي: « وَمَا سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ نَسِيَ حَدِيثًا قَطُّ غَيْرُهُ » يعنې د ابوهريره رضي الله عنه نه يو حديث هم نه دې هير شوې سوا د دې حديث نه « لا عدوى ولا صفر ».

په دې حديث کښې درې اجزاء دي اول لا عدوى کوم چه مونږ پورته بيان کړې دي، دويم « لا صفرا » او دريم « لا هامة » د دې دويم او دريم جزء تفسير په وړاندې روايت کښې راوړان دي. والحديث اخرجه البخاري، ومسلم مطولا ومختصرا، قاله المنذري.

په دوه متعارض احاديثو کښې تطبيق:

د « لا عدوى » په باره کښې مشهور اشکال دا دې چه دا د هغه دويم حديث خلاف دې چه په هغې کښې دي « فر من المجدوم فرارک من الاسد » چه د هغې نه معلومېږي چه د جذام مرض د امراض متعديه نه دې، د يو نه بل ته لگېږي لهذا د دې نه خان بچ کول پکار دي، د دې دوه جوابونه دي اول دا چه د « لا عدوى » نه مقصود د مطلق اعداء نفی نه ده بلکه د تاثير نفی مقصود ده، يعنې د يو سري مرض بل سري ته پخپله نه لگېږي بلکه د الله پاک په اذن باندې لگېږي، هغه چه کله غواړي هله لگېږي، او د بعضو مرضونو په باره کښې د الله پاک عادت دا جاري دې چه هغه ئې لگوي او جذام هم په هغې کښې يو دې لهذا د الله پاک د تقدير نه ويږه کولو سره د هغې نه بچ کيدل پکار دي، او دويمه توجيه دا کړې شوې ده چه د « لا عدوى » والا حديث خو په خپل عموم باندې دې مطلقا يو بيماري بل ته نه لگي، او دا دويم حديث د جذام والا په سد ذرائع باندې حمل دې يعنې د مجذوم نه د تختيدلو حکم په دې وجه نه شي ورکولې چه د جذام بيماري بل ته لگېږي بلکه د عقيدې د فساد نه د بچ کيدلو دپاره وئيلې شي چه هغه ته نژدې مه ورځئ، هسې نه چه څوک په تقدير الهی سره په جذام کښې اخته شي او هغه دا اوگنږي چه زه چونکه د مجذوم خواله تلې اوم په دې وجه ما ته دا بيماري اولگيده.



دا تعارض او د جواب بحث تاسو په شرح نخبه الفكر کښې هم لوستلې دې او يو جواب د دې تعارض دا هم ورکړې شوې دې، کما ذکره المنذرى فى المختصر: چه د احتياط او د احتراز روايت «لا يوردن» او «فر من المجدوم» وغيره منسوخ دى، او د «لا عدوى» والا حديث نې ناسخ دې.

[۳۹۱۲] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ، عَنِ الْعَلَاءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا عَدْوَى وَلَا هَامَةٌ وَلَا نَوْءٌ وَلَا صَفَرٌ».

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه نبی کریم صلی الله علیه و آله وسلم فرمائیلى دى نه ديو کس نه بل کس ته مرض لگي اونه دخاروي په شکل کښې دمړي روح دنيا ته راځي، اونه دصفري مياشت سپيره ۵۵.

[۳۹۱۳] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ بْنِ الْبَرَقِيِّ، أَنَّ سَعِيدَ بْنَ الْحَكَمِ، حَدَّثَهُمْ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي حَبْشَةَ، حَدَّثَنِي ابْنُ عُجْلَانَ، حَدَّثَنِي الْقَعْقَاعُ بْنُ حَكِيمٍ، وَعَبِيدُ اللَّهِ بْنُ مِقْسَمٍ، وَزَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: «لَا غَوْلٌ».

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه نبی کریم صلی الله علیه و آله وسلم فرمائیلى دى: بت چاته دنقصان رسولواختيار نه لري.

قوله: «عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- قَالَ «لَا غَوْلٌ»»

غول چه د هغې معنی غیلان راځي د جناتو يو قسم دې چه د هغوی په باره کښې به اهل جاهليت اعتقاد ساتلو چه د هغه دپاره په اضلال او اهلاک کښې تاثیر دې يعنی په ځنگل کښې ځانله سرې د لارې نه لرې کول او ورک کول او دا چه هغه په مختلف صورتونو کښې متشکل کيږي په هندوستان کښې خو دا اوس هم د غول بياباني په نوم باندې مشهور دې او د دې نه خلق ويریږي. خو مقصود په حديث کښې د هغوی د وجود نفی نه ده بلکه د تاثیر نفی ده پس په بعضو رواياتو کښې دى چه هغوی د اذان نه تختی، او د هغه نه د بچ کيدلو دپاره اذان کولي شی.

[۳۹۱۴] (۳) قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قُرِءَ عَلَى الْحَارِثِ بْنِ مَسْكِينٍ وَأَنَا شَاهِدٌ، أَخْبَرَكُمْ أَشْهَبُ، قَالَ: سَمِعْتُ مَالِكًا: عَنْ قَوْلِهِ: لَا صَفَرٌ، قَالَ: إِنَّ أَهْلَ الْجَاهِلِيَّةِ كَانُوا يُجْلَوْنَ صَفَرًا يُجْلَوْنَ عَامًا، وَيُخْرَمُونَ عَامًا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا صَفَرٌ.

امام ابوداؤد فرمائی چه دا حديث حارث بن مسكين ته واورولې شواوزه هلته موجود وم چه اشهب خبر ورکړو او وي فرمائيل چه دامام مالک نه د لا صفر په باره کښې تپوس وکړي شو هغه او فرمائيل چه د جاهليت په زمانه کښې به کله کله دصفر مياشت حلاله گنرلې شوه او کله کله به ئي دصفري مياشت حرامه او گرځوله او محرم به ئي حلال گنرلو، نوددې درد دپاره نبی صلی الله علیه و آله وسلم او فرمائيل چه دصفري په مياشت کښې هيڅ تاثیر نشته.

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۴۰۶)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/الطبع ۲۳ (۲۲۲۰)، مسند احمد (۳۹۷/۲) (صحيح)

۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۲۳۲۲، ۱۲۸۲۹، ۱۲۸۶۸) (حسن صحيح)

۳: تفرد به أبو داود (صحيح)

قوله: « قَالَ أَبُو دَاوُدَ قُرِئَ عَلَى الْحَارِثِ بْنِ مَسْكِينٍ وَأَنَا شَاهِدٌ أَخْبَرَكُمْ أَشْهَبُ قَالَ سُلَيْلٌ مَا لَكَ عَنْ قَوْلِهِ « لَا صَفَرٌ » الْخ » امام ابو داود رحمته الله د خپل استاد حارث بن مسکین نه په خپل سند سره نقل کوی چه د امام مالک رحمته الله مشهور شاگرد اشهب فرمائی: د امام مالک رحمته الله نه تپوس او کړې شو د « لا صفر » په باره کښې نو هغوی او فرمائیل چه اهل جاهلیت به محرم ته د صفر میاشت وئیله او دا به ئې حلالوله یعنی هم هغه د کوم نه چه په نسې سره تعبیر کولې شی نو رسول الله صلی الله علیه و آله د هغې نفی فرمائی چه دا غلطه ده او نسې ناجائز ده.

قوله: « قُرِئَ عَلَى الْحَارِثِ بْنِ مَسْكِينٍ » په کتاب الخراج کښې هم په بعض ځایونو کښې راغلې دې دا هم هغه حارث بن مسکین دې د چا نه چه امام نسائی رحمته الله په کثرت سره روایت کوی، او په یو خاص طریقې سره روایت کوی، یعنی د اخبار او تحدیث نه علاوه په داسې طریقه چه د حارث بن مسکین مخکښې دا حدیث اولوستلې شو کوم وخت چه په مجلس کښې زه هم موجود اوم. د هغوی په باره کښې دا واقعه هم مشهوره ده چه دې د امام نسائی رحمته الله نه خفه وو هغوی سره ئې خفگان وو په دې وجه به ئې امام نسائی رحمته الله په مجلس کښې مخامخ نه راتلو، په یو گوټ کښې به ئې د هغوی نه اوریدل کول زما دلته دا خیال راځی چه د امام ابو داود رحمته الله سره هم د هغوی هم دغه شان خفگان وو او هم په دې وجه به قرأت کونکې بل څوک وو او امام ابو داود رحمته الله به صرف اوریدونکې وو. والله تعالی اعلم

[۳۹۱۵] (١) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا عَدُوِّي وَلَا طَيْرَةٌ، وَيُعْجِبُنِي الْقَالُ الصَّالِحُ وَالْقَالُ الصَّالِحُ الْكَلِمَةُ الْحَسَنَةُ".

دانس رحمته الله نه روایت دې فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل دیوکس نه بل کس ته مرض نه لگي اوبد فالي نیول ئې بنیاده خبره ده اوزمانیک فال خوښ وي اونیک فال مطلب یوه ښه خبره ده (یعنی دیوار په کولو کښې دچادخولي نه ښه خبره اوریدل او په هغې باندی قیاس کول چه انشاء الله زما شروع کړې شوې کار به انجام ته ورسیرې نو دا جائز دي).

قوله: « وَالْقَالُ الصَّالِحُ الْكَلِمَةُ الْحَسَنَةُ » یعنی په اسلام کښې بد فالي خو نشته خونیک فالي پکښې شته، لکه چه یو انسان د کور نه اوځی او څوک داسې سرې ئې مخې له راشی چه د هغه نوم سهیل دې نو د هغه نه د سهولت فال نیول چه د کوم کار دپاره د کور نه وتلې دې په هغې کښې به انشاء الله سهولت وی. والحديث أخرجه البخاري ومسلم والترمذي وابن ماجه، قاله المنذري.

[۳۹۱۶] (٢) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُصَفَّى، حَدَّثَنَا بَقِيَّةٌ قَالَ: قُلْتُ لِمُحَمَّدٍ يَعْنِي ابْنَ رَاشِدٍ، قَوْلُهُ هَامٌ، قَالَ: كَانَتْ الْجَاهِلِيَّةُ تَقُولُ: لَيْسَ أَحَدٌ يَمُوتُ، فَيَدْفَنُ، إِلَّا خَرَجَ مِنْ قَبْرِهِ هَامَةٌ، قُلْتُ: فَقَوْلُهُ "صَفَرٌ" قَالَ: سَمِعْتُ أَنَّ أَهْلَ الْجَاهِلِيَّةِ يَسْتَشْمُونَ بِصَفَرٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا صَفَرٌ"، قَالَ مُحَمَّدٌ: وَقَدْ سَمِعْنَا مَنْ يَقُولُ هُوَ وَجَعٌ يَأْخُذُ فِي الْبَطْنِ، فَكَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ هُوَ يُعْدِي، فَقَالَ: "لَا صَفَرٌ".

(١): صحيح البخاري/الطب ٤٤ (٥٧٥٦)، ٥٤ (٥٧٧٦)، سنن الترمذي/السير ٤٧ (١٦١٥)، (تحفة الأشراف: ١٣٥٨)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/السلام ٣٤ (٢٢٢٤)، مسند احمد (١١٨٣، ١٥٤، ١٧٨) (صحيح)  
(٢): تفرده أبو داود (صحيح)



د بقیه نه روایت دې فرمائی چې د محمد ابن راشد نه مې تپوس اوکړو چې د نبی ﷺ ددې قول وهام، نشته څه مطلب دې؟ هغه او فرمائیل د جاهلیت په زمانه کښې به خلقو وئیل هریوکس چې وفات کیږي اوبیا هغه په قبر کښې دفن کولې شي نو دهغه کوپړی د قبر نه بهر راوځي او راځی، مابیا تپوس اوکړو چې د لاصفر څه معنی ده هغه او وئیل د جاهلیت په زمانه کښې به خلقو د صفر میاشت سپیره گنډله نو په دې وجه باندې نبی ﷺ او فرمائیل د صفری میاشتي څه تاثیر نشته، محمد بن راشد او وئیل چې ما د بعضو کسانو نه اوریدلی دی چې وئیل ئې چې صفر په خپته کښې دیو درد نوم دې اهل عربو به وئیل چې دا درد دیوکس نه بل کس ته لگي نو په دې مناسبت باندې نبی ﷺ او فرمائیل صفر نشته.

### شرح الحديث :

قوله: « قُلْتُ لِمُحَمَّدٍ - ابْنِ رَاشِدٍ - قَوْلُهُ « هَامَةٌ » قَالَ كَانَتْ الْجَاهِلِيَّةُ تَقُولُ لَيْسَ أَحَدٌ يَمُوتُ فَيُدفَنُ إِلَّا خَرَجَ مِنْ قَبْرِهِ هَامَةٌ » هامة په لغت کښې هغه مارغه ته وائی د کوم نوم چې گونگې دې، او د هامة معنی په لغت کښې د کهوپړئ هم راځی، د جاهلیت په زمانه کښې د خلقو دا خیال وو چې د کوم مقتول قصاص او خون بها نه شی اخستلې نو د هغه د دفن کیدو نه پس د هغه په سر کښې گونگې راوځي (قبر خیرلو سره) او ښهر ته په راتلو سره د یو اوچت کور په جهت باندې کینی او چغې وهی، او گویا هغه په خپله ژبه کښې دا وائی چې « اسقونی اسقونی » په ما باندې د قاتل وینه اوڅکئ، گویا تر څو چې د هغه قصاص نه وی اخستلې شوې زه به د دې ځانې نه واپس نه شم، دې ځناور ته صدی هم وائی په مصباح اللغات کښې لیکلې دی چې د گونگې یو قسم دې چې د هغه سر لوټې وی او هغه په خوشو ځایونو کښې اوسېږي، د هغې نوم هامة هم دې څنگه چې هامة په معنی د کهوپړئ راځی د صدی ئې هم یو لغوی معنی د دماغ لیکلې ده د دې نه په روستو روایت کښې راځی چې ابن جریج د خپل استاد عطاء نه تپوس اوکړو: « قُلْتُ فَمَا الْهَامَةُ ؟ قَالَ يَقُولُ النَّاسُ الْهَامَةُ الَّتِي تَصْرُخُ هَامَةٌ النَّاسِ وَلَيْسَتْ بِهَامَةِ الْإِنْسَانِ إِنَّمَا هِيَ ذَابَّةٌ » یعنی دا خلق چې وائی چې دا گونگې چغې وهی د کوم نوم چې هامة دې دا هامة الناس دې یعنی د سړی کهوپړئ (الهامة التي تصرخ) موصوف سره د صفت نه مبتدا او « هامة الناس » ئې خبر ..... حال دا چې دا د انسان کهوپړئ نه ده دا خو یو ځناور او یو مارغه دې.

بیا وړاندې په دې روایت کښې د هغه صفر په باره کښې سوال دې نو هغوی یعنی محمد بن راشد جواب ورکړو چې مونږ دا اوریدلې دی چې بعض اهل جاهلیت به د صفر د میاشتي نه بدفالی نیوله او دا به ئې نامبارکه گنډله په دې وجه رسول الله ﷺ او فرمائیل « لا صفر » چې په اسلام کښې داسې نشته، دا میاشت نامبارکه نه ده، بیا محمد بن راشد د دې یو بل تفسیر نقل کړو چې بعض خلق د صفر په باره کښې دا وائی چې دا د خپتې د یو تکلیف نوم دې چې د هغې په باره کښې د خلقو دا خیال وو چې دا تکلیف نورو ته لگي نو په دې باندې رسول الله ﷺ او فرمائیل چې « لا صفر »

[۳۹۱۷] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وَهَيْبٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ رَجُلٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، "أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمِعَ كَلِمَةً فَأَعْجَبَتْهُ، فَقَالَ: أَخَذْنَا فَالْكَ مِنْ فَيْكِ".

د ابو هريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله یوه خبره واوریده کومه چې هغه ښه وگڼله نووئي فرمائیل ماستاسو فال ستاسو دخولي نه واوریدو (یعنی ددې انجام به بهتروي).

[۳۹۱۸] (۲) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ خَلْفٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، عَنْ عَطَاءٍ، قَالَ: يَقُولُ: "وَجَعَلْتُ أَخَذُ فِي الْبَطْنِ، النَّاسُ الصَّغَرُ، قُلْتُ: فَمَا الْهَامَةُ؟ قَالَ: يَقُولُ النَّاسُ: الْهَامَةُ الَّتِي تَصْرُخُ هَامَةً النَّاسِ وَلَيْسَتْ بِهَامَةِ الْإِنْسَانِ إِمَّا هِيَ دَابَّةٌ".

د عطاء نه روایت دې فرمائی چې خلقوبه وئیل صفر دیو درد نوم دې کوم چې په خيته کښې وي، ابن جريج وئیلی دی بیاما دهامه تپوس او کړو چې هامه څه شي دې عطاء او وئیل هامه یو څاروي دې او څوک چې دا وائی چې دا دانسان کوپړی وي حالانکه هغه دانسان کوپړی نه وي بلکه هغه یو څاروي وي.

[۳۹۱۹] (۳) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ شَيْبَةَ الْمَعْنَى، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكَيْعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ عَامِرٍ، قَالَ أَحْمَدُ، الْقُرَشِيُّ قَالَ: "ذَكَرَتِ الطَّيْرَةُ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: أَحْسَنُهَا الْقَالَ وَلَا تَرُدُّ مُسْلِمًا فَإِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ مَا يَكْرَهُ، فَلْيَقُلْ اللَّهُمَّ لَا يَأْتِي بِالْحَسَنَاتِ إِلَّا أَنْتَ، وَلَا يَذْفَعُ السَّيِّئَاتِ إِلَّا أَنْتَ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِكَ".

د احمد قرشي نه روایت دې فرمائی چې د نبی صلی الله علیه و آله په وړاندي د بدفالي نیولو ذکر وشو نووئي فرمائیل ددې په بهترینو اقسامو کښې فال دې اوبد فالي نیول دکوم مسلمان دپاره دکار نه منع کوي او په تاسو کښې چې کله څوک گوم داسې شي او ویني کوم چې بد گنځي نو دا کلمات دي او وائي: «اللَّهُمَّ لَا يَأْتِي بِالْحَسَنَاتِ إِلَّا أَنْتَ وَلَا يَذْفَعُ السَّيِّئَاتِ إِلَّا أَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِكَ». یعنی اې الله ستانه علاوه څوک خیر نشي رسولې اوستانه علاوه څوک ضرر نشي لري کولې اود بدئ نه دمنع کیدو طاقت اود نیگي کولو طاقت صرف ستا په توفیق سره حاصلیږي؟؟

قوله: ﴿أَحْسَنُهَا الْقَالَ وَلَا تَرُدُّ مُسْلِمًا﴾ طیره د جنس درجه ده مطلق فال راویستلو ته وائی که ښه وی او که بد وی، او د فال استعمال د نوع په طور په ښه فال کښې هم کیږي په دې وجه چې کله د رسول الله صلی الله علیه و آله په مخکښې د طیره ذکر راغلو نو رسول الله صلی الله علیه و آله د فال حسن تحسین او فرمائیلو چې هغه ښه څیز دې اسلام هغې لره خوښوی په خلاف د بد فال، او بیا فرمائی ﴿وَلَا تَرُدُّ مُسْلِمًا﴾ چې انسان دې په خپل بد فال باندي نه چلیږي، او یو مسلمان لره د بد فال په وجه باندي د خپل کار نه منع کیدل نه دی پکار، یعنی اول خو بد فال نیول نه دی پکار او که د هغې خیال په زړه کښې راشي بې اختیاره نو بیا هغه د هغه کار نه مانع کیدل نه دی

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۵۰۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۸۸۷۲) (صحیح)

(۲): تفرد به أبو داود (صحیح)

(۳): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۸۹۹) (ضعیف)



پکار کوم چه کول دی لکه چه مخکښې تیر شو: ﴿ وَمَا مِنَّا إِلَّا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُدْهِبُهُ بِالتَّوَكُّلِ ﴾ بیا وړاندې په حدیث کښې دی چه که د یو سړی مخکښې څه ناخوښه څیز راشی (نود هغې د ضرر نه د بچ کیدو دپاره، دا لوستل پکار دی:

﴿ اللَّهُمَّ لَا يَأْتِي بِالْحَسَنَاتِ إِلَّا أَنْتَ وَلَا يَذْفَعُ السَّيِّئَاتِ إِلَّا أَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِكَ ﴾

[۳۹۲۰] (۱) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَرِيدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "كَانَ لَا يَتَطَيَّرُ مِنْ شَيْءٍ، وَكَانَ إِذَا بَعَثَ عَامِلًا سَأَلَ عَنْ اسْمِهِ، فَإِذَا أُعْجِبَهُ اسْمُهُ فَرَحَ بِهِ وَدَبَّى بِشَرِّ ذَلِكَ فِي وَجْهِهِ، وَإِنْ كَرِهَ اسْمَهُ رُبِيَ كَرَاهِيَّةَ ذَلِكَ فِي وَجْهِهِ، وَإِذَا دَخَلَ قَرْيَةً سَأَلَ عَنْ أَسْمِهَا، فَإِنْ أُعْجِبَهُ اسْمُهَا فَرَحَ وَدَبَّى بِشَرِّ ذَلِكَ فِي وَجْهِهِ، وَإِنْ كَرِهَ اسْمَهَا رُبِيَ كَرَاهِيَّةَ ذَلِكَ فِي وَجْهِهِ."

عبد الله بن بريده دخپل پلار نه روايت كوي فرمائي چه نبي ﷺ به په كوم څيز باندي بدفالي نه نيوله او چه كله به ئې څوك كوي عهدي ته دانجام وركولو دپاره ليرلو نونبي ﷺ به دهغه دنوم معلومات وكړو كه چرې دهغه نوم به ئې خوښ شو نو نونبي ﷺ به ورنه خوشحاله شو اودغه خوشحالي به دهغه په مخ باندي سرگنده شوه او كه چرې دهغه نوم به ئې خوښ نه شو نودناخوښي اثار به ئې په مخ مبارك باندي سترگند شول او كله چه به نونبي ﷺ يو كلي ته داخليدو نوددغه كلي دنوم تپوس به ئې وكړو كه چرې ددغه كلي نوم به ئې خوښ شو نو نونبي ﷺ به خوشحاله شو اودغه خوشحالي به دهغه په مخ باندي سرگنده شوه او كه چرې دهغه كلي نوم به ئې خوښ نه شو نودناخوښي اثار به ئې په مخ مبارك باندي سرگند شول.

قوله: ﴿ وَكَانَ إِذَا بَعَثَ عَامِلًا سَأَلَ عَنْ اسْمِهِ فَإِذَا أُعْجِبَهُ اسْمُهُ فَرَحَ بِهِ وَرُبِيَ بِشَرِّ ذَلِكَ فِي وَجْهِهِ وَإِنْ كَرِهَ اسْمَهُ رُبِيَ كَرَاهِيَّةَ ذَلِكَ فِي وَجْهِهِ ﴾ يعنى كله چه به رسول الله ﷺ يو عامل چرته ليرلو نو د هغه د ليرلو نه مخكښې به ئې د هغه نوم تپوسلو، كه د هغه نوم به ښه وو نو په دې باندي به رسول الله ﷺ خوشحاليدو او هغه خوشحالي به د هغوى د مخ مبارك نه ښكاره كيده (دا خو نيك فالى شوه، او كه د رسول الله ﷺ به د هغوى نوم خوښ نه شو نو دا ناخوښى به د هغوى په مخ مبارك باندي ښكاره كيده، دا په ظاهره بدفالى ده، خو شارحينو د دې مطلب دا ليكلي دي چه دا اثر د بدفالى د وجې نه نه و بلكه د نيك فالى د حاصليدو دا اثر وو.

وړاندې په حدیث کښې هم دغه شان د هغه كلي په باره کښې راغلې دی چه په هغې کښې به هغوى د سفر دوران کښې داخليدل، په دې باندي بعض علماء کرامو ليکلي دي چه سړى له پکار دی چه د خپل اولاد او خادمانو دپاره ښه نوم تجويز کړى چه نيك فالى حاصل شى. والحديث أخرجه النسائي، قاله النووى

[۳۹۲۱] (۲) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبَانُ، حَدَّثَنِي يَحْيَى، أَنَّ الْخَضْرَمِيَّ بْنَ لَاحِقٍ، حَدَّثَهُ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ سَعْدِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: "لَا هَامَةَ وَلَا عَدْوَى وَلَا طَيْرَةَ، وَإِنْ تَكُنُ الطَّيْرَةُ فِي شَيْءٍ، فَفِي الْفَرَسِ وَالْمَرْأَةِ وَالْدَّارِ."

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۹۳)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۳۴۷/۵) (صحيح)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۸۶۱)، وقد أخرجه: حم (۱۸۰، ۱/۱۸۶) (صحيح)

د سعید بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه رسول الله به فرمائیل نه هامه شته اونه عدوی اونه سپیره والې په کوم شي کښې اوکه چرې سپیره والې اوبد فالي وې نو په درې خیزونو کښې به وې په اس کښې او په بنځه کښې او په کور کښې.

قوله: «عَنْ سَعْدِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- كَانَ يَقُولُ «لَا هَامَةَ وَلَا عَدَوَى وَلَا طَيْرَةً وَإِنْ تَكُنِ الطَّيْرَةُ فِي شَيْءٍ فِي الْفَرَسِ وَالْمَرْأَةِ وَالْدَّارِ»»

دا حدیث خود سعد بن ابی وقاص رضی اللہ عنہ دې، وړاندې په حدیث د ابن عمر رضی اللہ عنہما کښې هم داسې راروان دی.

[۳۹۲۲] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ حَمْزَةَ، وَسَالِمٍ ابْنَيْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "الشُّؤْمُ فِي الدَّارِ وَالْمَرْأَةِ وَالْفَرَسِ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قُرِءَ عَلَى الْحَارِثِ بْنِ مُسْكِينٍ وَأَنَا شَاهِدٌ، أَخْبَرَكَ ابْنُ الْقَاسِمِ، قَالَ: سُئِلَ مَالِكٌ عَنِ الشُّؤْمِ فِي الْفَرَسِ وَالْأُورِ، قَالَ: كَمِ مِنْ دَارٍ سَكَنَهَا نَاسٌ، فَهَلَكُوا ثُمَّ سَكَنَهَا آخَرُونَ، فَهَلَكُوا؟ فَهَذَا تَفْسِيرُهُ فِيمَا تَرَى وَاللَّهُ أَعْلَمُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: حَصِيرٌ فِي الْبَيْتِ خَيْرٌ مِنْ أَمْرَأَةٍ لَا تَلِدُ.

د عبد الله رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم ق فرمائیلی دی سپیره والی په درې خیزونو کښې وي یو په کور بل په بنځه کښې اودریم په اس کښې. ابوداود فرمائی دامام مالک نه تپوس اوکړې شو چه ایا په کور او په اس کښې سپیره والې وي؟ هغه اووئیل یوڅو کورونه داسې وو چه په هغې کښې خلق اوسیدل اوبیا هغوی مړه شول نو هلته نور خلق آباد شول بیا هغوی هم مړه شول نو دا د کور سپیره والې شو الله تعالی ښه پوهیږي.

قوله: «قَالَ أَبُو دَاوُدَ.... أَخْبَرَكَ ابْنُ الْقَاسِمِ قَالَ سُئِلَ مَالِكٌ عَنِ الشُّؤْمِ فِي الْفَرَسِ وَالْأُورِ قَالَ كَمِ مِنْ دَارٍ سَكَنَهَا نَاسٌ فَهَلَكُوا ثُمَّ سَكَنَهَا آخَرُونَ فَهَذَا تَفْسِيرُهُ الْخ»

**په روایت الباب کښې دوه حیثیتونو سره تعارض او د دواړو جواب:**

په دې دواړو احادیثو کښې اولاد مطلق طیره د نفی نه پس د درې خیزونو استثناء کړې شوې ده، فرس، مرأة او دار.... خو په رومبی حدیث کښې استثناء په طور د تعلیق ده یعنې «وان تكن الطيرة في شيء» او په دویم حدیث کښې بغیر د تعلیق نه ده «الشؤم في ثلاثة» په ظاهر کښې دا تعارض دې د دې جواب خو هم دا ورکړې شوې دې چه چرته تعلیق نشته هلته هم دا حکم هم په طور د تعلیق دې یعنې که بدفالی په یو خیز کښې وې نو هغه به په دې دریو خیزونو کښې وې، خو چونکه په اسلام کښې بدفالی په یو خیز کښې هم نشته لهذا په دې دریو خیزونو کښې هم نشته او د امام قرطبی رحمته الله علیه رائي دا ده چه د تعلیق والا

(۱): صحيح البخاري/الجهاد ٤٧ (٢٨٥٨)، النكاح ١٧ (٥٠٩٣)، الطب ٤٣ (٥٧٥٣)، ٥٤ (٥٧٧٢)، صحيح مسلم/السلام ٣٤ (٢٢٢٥)، سنن الترمذي/الأدب ٥٨ (٢٨٢٤)، سنن النسائي/الانجيل ٤ (٣٥٩٩)، سنن ابن ماجه/النكاح ٥٥ (١٩٩٥)، (تحفة الأشراف: ٦٦٩٩، ١٨٢٧٦، ٦٨٦٤)، وقد أخرجه: موطا امام مالك للاستئذان ٨ (٢٢)، مسند احمد (١٢٦، ١١٥، ٣٦، ٨٧٢) (صحيح)



روایت مقدم دې دې وخته پورې رسول الله ﷺ ته په دې څیزونو کښې د تحقق شوم علم نه وو شوې، بیا روستو چه هغوی ته د دې علم اوشو چه په دې دریو کښې وی نو هغوی بالجزم او فرمائیل چه «الشوم فی الثلاثة»، او یو جواب دا ورکړې شوې دې چه «ان تکن الطیرة» سره مقصود اظهار د تردد او شک نه دې بلکه په دې سره مقصود اثبات په طریقه د مبالغې، لکه چه څوک داسې اوایی چه په دنیا کښې که څوک دوست دې نو هغه زید دې دغه شان دلته هم په دې حدیث کښې مقصود دا دې چه په دې درې واړو کښې طیره بالضرور او بالیقین ده دا خو جواب شو د هغه دوه مختلفو روایتونو خو دویم اختلاف اوس هم باقی دې چه «لا عدوی ولا طیرة» کښې د شوم علی الاطلاق نفی ده او په دې حدیث کښې په دې اشیاء ثلاثه کښې شوم ثابت دې، د دې جواب دا دې چه دا درې د دې نفی د عموم نه مستثنی دی، خو د اهل جاهلیت د مسلک موافق نه چه په دې درې څیزونو کښې تاثیر او منلې شی فی حد ذاتها، بلکه د اهل اسلام د مسلک په طریق باندې چه الله پاک مسبب الاسباب دې هم هغه په بعض څیزونو کښې د نفع او ضرر تاثیر پیدا کوی نو هم هغه په دې دریو کښې اثر ضرور پیدا کړې دې، دې رائي لره بالتصریح اختیار کونکې امام مالک رحمته الله علیه دې لکه چه مخکښې په متن کښې ذکر شوچه هغوی او فرمائیل تاسو گورئ نه چه څومره ډیر کورونه داسې دی چه هغې ته خلق راغلل او استوگنه ئې پکښې اختیار کړه خو هغه تباہ شو او خراب شو بیا چه نور خلق هغې ته راشی نو د هغوی هم دا حال شی یعنی بعض کورونه داسې وی (۱)، خو د امام مالک رحمته الله علیه قول کوم چه دلته په ابوداؤد کښې ذکر دې په اواخر دموطاء کښې چه کوم باب دې «ما يتقى من الشوم» په عنوان سره هلته هغوی دا د اشیاء ثلاثه والاحديث خو ذکر کړې دې خود هغوی رائي هلته د موطاء په موجوده نسخه کښې نشته بلکه دابه غالباً دموطاء چه کوم روایت د ابن القاسم نه دې په هغې کښې به وی. امام ترمذی رحمته الله علیه په کتاب الادب «باب ما جاء فی الشوم» کښې اول حدیث د ابن عمر رضی الله عنهما «الشوم فی الثلاثة الحديث» په باره کښې فرمائیلې دی «هذا حديث حسن صحيح» وفي تحفة الاخوذی : واخرجه الشيخان... د دې نه پس ترمذی کښې دی : «وقد روى عن النبی انه قال ان كان الشوم فی شی ففی المرأة والدابة والمسكن» په دې باندې په تحفة الاخوذی ۹۵/۸ کښې دی رواة الشيخان (۲)، عن ابن عمر، وكذا عن سهل بن سعد اهـ.

(۱) دا خو شوم فی الدار شو خو شوم فی الفرس والمرأة هغوی نه دې بیان فرمائیلې، بعض علماء کرامو وئیلې دی چه د زنانه دپاره شوم دا دې چه هغه شنده شی د هغې اولاد نه وی او دا چه د خاوند مخکښې بدزبانی کوی او شوم الفرس دا دې چه په هغې باندې جهاد اونکړې شی.  
(۲) معلومه شوه چه دا دواړه روایتونه د تعلیق او بغیر د تعلیق نه د صحیحینو دی، لهذا په دې کښې یو ته هم ضعیف نه شی وئیلې کیدی او د تطبیق بین الحدیثین شکلونه هم هغه دی کوم چه پورته ذکر شو.

[۳۹۲۳] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، وَعبَّاسُ الْعَنْبَرِيُّ، قَالَا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَحِيرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي مَنْ سَمِعَ فَرَوَةَ بْنَ مُسَيْكٍ، قَالَ: قُلْتُ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَرْضٌ عِنْدَنَا يُقَالُ لَهَا أَرْضُ أَبْنَيْنَ هِيَ أَرْضُ رِفْنَا وَمِيرْتَنَا وَإِنَّمَا وَبْنَةُ، أَوْ قَالَ: وَبَاؤُهَا شَدِيدٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: دَعَهَا عَنْكَ فَإِنَّ مِنَ الْقَرْفِ الثَّلَفَ".

د فروه بن مسيک نه روايت دې دې وائی ماعرض اوکړو اي دالله رسوله زمونږ سره زمکه ده کومي ته چه مونږه ايبن وايو اودغه زمکه زرغونه او د فصلونو زمکه ده او زمونږه دغلي خائي دې هلته هميشه افتونه راځي، ياداچه راوی اووئيل ددغه خائي وباډيره سخته وي نونبي ﷺ اوفرماييل په دې زمکه کښې اوسيدل پريږده، دوباپه زمکه کښې په اوسيدوسره انسان هلاکيږي.

قوله: ﴿ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرْضٌ عِنْدَنَا يُقَالُ لَهَا أَرْضُ أَبْنَيْنَ هِيَ أَرْضُ رِفْنَا وَمِيرْتَنَا وَإِنَّمَا وَبْنَةُ الْخ ﴾

يو صحابي رسول الله ﷺ ته عرض اوکړو چه زمونږ يوه زمکه ده چه د هغې نوم ارض ايبن دې هغه زمونږ د فصل او غلي زمکه ده خو هغه خائي وبائي دې يعنې بيماري په هغې کښې زياتې وي نو رسول الله ﷺ اوفرماييل هغه زمکه پريږدئ.

قوله: ﴿ فَإِنَّ مِنَ الْقَرْفِ الثَّلَفَ ﴾ قرف يعنې د بيماري نزديکت او د هغې سره خلط ملط کيدل، يعنې د بيماري په قرب کښې هلاکت دې. دا حديث دې د ﴿ لا عدوى ﴾ خلاف او نه گنرلي شي بلکه دا من باب الطب دې يعنې د آب وهوا ناموافققت....

[۳۹۲۴] (۲) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا يَشْرُبُنْ غَمَرٌ، عَنْ عِكْرَمَةَ بْنِ عَمَّارٍ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّا كُنَّا فِي دَارٍ كَثِيرٍ فِيهَا عَدَدُنَا، وَكَثِيرٌ فِيهَا أَمْوَالُنَا، فَتَحَوَّلْنَا إِلَى دَارٍ أُخْرَى فَقَلَّ فِيهَا عَدَدُنَا وَقَلَّتْ فِيهَا أَمْوَالُنَا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ذَرُوهَا ذَمِيمَةً".

د انس بن مالک ﷺ نه روايت دې فرمائي چه يوکس نبي ﷺ ته عرض وکړو مونږه په يوکور کښې وو په کوم کښې چه زمونږ تعداد زيات وو او مال هم ډير وو بيا مونږ ددغه کور نه بل کور ته لاړو نو په دې بل کور کښې زمونږ مال هم کم شو اوتعداد هم کم شو (يعنې مړه شو) نونبي ﷺ اوفرماييل دغه کور ددې بدحالي سره پريږدئ.

قوله: ﴿ إِنَّا كُنَّا فِي دَارٍ كَثِيرٍ فِيهَا عَدَدُنَا وَكَثِيرٌ فِيهَا أَمْوَالُنَا فَتَحَوَّلْنَا إِلَى دَارٍ أُخْرَى الْخ ﴾

يو سړی رسول الله ﷺ ته عرض اوکړو چه په کوم کور کښې مونږ مخکښې اوسيدو په هغې کښې مونږ ښه خوشحاله او آباد وو زمونږ د افرادو تعداد هم زيات وو او مالونه مو هم ډير وو، د دې نه پس چه مونږ بيا کوم کور ته منتقل شونو هلته زمونږ د افرادو تعداد

۱: تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۰۲۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۵۱/۳) (ضعيف الإسناد)

۲: تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۳) (حسن)



کیمیدل شروع شو او په مالونو کښې هم رسول الله ﷺ او فرمائیل: «ذَرُوهَا ذَمِيمَةٌ» د دې توجیه هم هغه کړې شوې ده کومه چه د پورته حدیث وه.

[۳۹۲۵] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا مُفَضَّلُ بْنُ فَضَالَةَ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ الشَّهِيدِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "أَخَذَ يَدَ مَجْذُومٍ فَوَضَعَهَا مَعَهُ فِي الْقَصْعَةِ، وَقَالَ: كُلْ ثِقَةً بِاللَّهِ وَتَوَكَّلًا عَلَيْهِ".

د جابر بن عبد الله رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی کریم و دیو جذای لاس و نیولواو دخپل ځان سره ئې په پلټ کښې کیخودو (یعنی دشریک خوړلو دپاره) او وئې فرمائیل دالله تعالی په ذات باندې په اعتماد او توکل کولو سره شریک خوراک کوو.  
قوله: «عَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- أَخَذَ يَدَ مَجْذُومٍ فَوَضَعَهَا مَعَهُ فِي الْقَصْعَةِ وَقَالَ «كُلْ ثِقَةً بِاللَّهِ وَتَوَكَّلًا عَلَيْهِ»»

یو کړت رسول الله ﷺ یو مجذوم د لاس نه اونیولو او ځان سره ئې په خوراک کښې شریک کړو او وې فرمائیل چه په الله پاک باندې یقین کولو سره او خوره.  
(اشکال):

دلته دا سوال واردیږی چه د توکل حکم رسول الله ﷺ دې مجذوم ته ولې اوکړو، ځکه چه که په دې کښې احتیاط ته حاجت وې نو رسول الله ﷺ ته وو هغه مجذوم ته خونه وو،  
(جواب):

د دې جواب دا دې چه د رسول الله ﷺ خو یقین وو چه هغه سره په خوراک باندې به ماته هیڅ نقصان نه وی، خو د هغه خوراک کونکی مجذوم تردد کیدې شو چه چرته ما سره په خوراک باندې رسول الله ﷺ ته تکلیف او نه رسی پس رسول الله ﷺ د توکل هدایت هم هغه ته اوکړو (یعنی زما فکر مه کوه) کذا فی هامش المذلل عن الکوکب.

والحدیث اخرجه الترمذی وابن ماجه، قاله المنذری.... آخر کتاب الطب

[الحمد لله! اووم جلد ختم شو]

(۱): سنن الترمذی/الأطعمة ۱۹ (۱۸۱۷)، سنن ابن ماجه/الطب ۴۴ (۳۵۴۲)، تحفة الأشراف: ۳۰۱۰ (ضعیف)